Registered No. A—210.

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों का बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम का बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़िबत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिए

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की कीमत सिर्फ़ ढाई रुपये डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیاہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے. اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیس کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے.

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قران کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے. اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاھئے.

کتاب ہندستانی زبان میں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ- ڈاک خرچ الگ -

منیجر 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वग़ैरह का छापाना

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेंसों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों मे आपस मे मेल बढ़ाना

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, वाइस प्रसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी प० सुन्दरलाल;—

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मन्ज़ूर अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, प० विशम्भर नाथ महात्मा भगवान दीन, सेठ पूनम चन्द राका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिए

सुन्दर लाल

सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसा

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

(١) ایک ایسی ہندوستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں -

(٢) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا -

(٣) پڑھائی گھروں' کتب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا -

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ— مسٹر عبد المجید خواجہ' وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس-اور ڈاکٹر عبدالحق گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ - ڈاکٹر بھگوان داس' سکریٹری پنڈت سندلال'

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند - مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی - جی - کھیر مسٹر ایس- کے- رودرا' پنڈت بشمبھر ناتھ'مہاتمابھگوان دین' سیٹھ پونم چند راکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال'؛

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے -

سندر لال

سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی

٣٨ بائی کا باغ' الہ آباد

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा लग अलग मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے - '' نیا ہند '' کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا-الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک روپیہ

नया हिन्द हमारी राय जून सन '५०

को यह सलाह देंगे कि वह अनीति के जगल मे भटक गई है. अब उसके लिये यही वेहतर है कि वह अपनी बुद्धि को जनता की बुद्धि के हाथो में सौप दे और हमें उम्मीद है और पूरा भरोसा है कि अमरीका की जनता वहाॅ की सरकार को हाइड्रोजन बम और मौत किरनो जैसी झाडियो से बचाती हुई बहुत जल्दी उसे नीति के महल तक ले जायगी जो सचमुच अमरीकनो और वहाॅ की सरकार का असली महल है.

ता० १५-६-५० भगवान दीन

نیا ہند ہماری رائے جون سن ۵۰'

کو یہ صلاح دینگے کہ وہ انیتی کے جنگل میں بھٹک گئی ہے اب اسکے لئے یہی بہتر ہے کہ وہ اپنی بدھی کو جنتا کی بدھی کے ہاتھوں میں سونپ دے اور ہمیں امید ہے اور پورا بھروسہ ہے کہ امریکہ کی جنتا وہاں کی سرکار کو ہائیڈروجن بم اور موت کرنوں جیسی جھاڑیوں سے بچاتی ہوئی بہت جلدی اُسے نیتی کے محل تک لے جائیگی جو سچ مچ امریکنوں اور وہاں کی سرکار کا اصلی محل ہے

۱۵-۶-۵۰ بھگوان دین

लोक शाही को जिन्दा नहीं रहने दे सकता जनता मे जान नहीं पड़ने दे सकता और जिस दिन जनता मे जान पड़ गई और जगह जगह जनता राज कायम हो गया उस दिन हाइड्रोजन बम का भूत ही नहीं मर जायगा अगर वह सचमुच बन चुका होगा तो सिताबा चाट कर रह जायगा और हमेशा के लिये बेकार हो जायगा.

बीस मई को अमरीका के प्रेसाडेन्ट ट्रूमैन साहब ने अमरीका की फौजी ताकत की सराहना की है. यह ठीक ही है कि उन्होंने यह कहा है कि जो मुक्के मे विश्वास रखते है उनके लिये ही हमने यह फौजी ताकत तैयार कर रखी है और उन्हो ने यह भी कहा है कि हम तो इस फौजी ताकत से दुनिया मे सिर्फ शान्ति बनाये रखना चाहते है पर उन्होंने यह सोचने की तकलीफ उठाना पसन्द नहीं किया कि जिस तरह ठंडे पानी के घड़े की रक्षा के लिये उसके चारो तरफ आग जलाने से उल्टा पानी गरम हो कर आग बन जाता है, वैसे ही शान्ति पसन्द जनता की रक्षा करने के लिये उसके चारो तरफ अशान्ति पसन्द फौज खड़ी करने से शान्ति पसन्द जनता भी अशान्ति पसन्द बन जाती है हाइड्रोजन बम, मौत-किरने और अग्नि किरने आग की लपट की तरह शान्ति के घड़े को गरम कर देती हैं और जैसे घड़े का पानी उबलने लगता है वैसे ही शान्ति पसन्द जनता उबल उबल कर यह शोर मचाने लगती है 'फौजें और ज्यादा करो, फौजें और ज्यादा करो सारे अमरीका वासियो को फौजी सिपाही बना दो.' इस आवाज का नतीजा इसके सिवाय क्या हो सकता है कि तीसरी बड़ी लड़ाई जिसे दुनिया दूर भगाने का कोशिश कर रही हैं. और पास आजाय.

होशियार घुड़सवार जगल मे रास्ता भूलने पर घोड़े की बाग को ढीला छोड़ देता है और अपनी बुद्धि को घोड़े की बुद्धि के हाथ मे सौंप देता है और फिर घोड़ा बड़ी सफाई से उसे अपने घर पहुंचा देता है. नीति के इसी असूल के बल पर हम अमरीका की सरकार

لوک شاہی کو زندہ نہیں رہنے دے سکتا۔ جنتا میں جان نہیں پڑنے دے سکتا اور جسدن جنتا میں جان پڑگئی اور جگہ جگہ جنتا راج قایم ہوگیا اُس دن ہائیڈروجن بم کا بھوت ہی نہیں مرجائیگا اگر وہ سچ مچ بن چکا ہوگا تو ستاپا چاٹ کر رہ جائیگا اور ہمیشہ کے لئے بیکار ہوجائیگا۔

۲۰ مئی کو امریکہ کے پریزیڈنٹ ٹرومین صاحب نے امریکہ کی فوجی طاقت کی سراہنا کی ہے یہ ٹھیک ہی ہے کہ اُنہوں نے یہ کہا ہے کہ جو مکے میں وشواس رکھتے ہیں اُن کے لئے ہی ہم نے یہ فوجی طاقت تیار کر رکھی ہے۔ اور اُنہوں نے یہ بھی کہا ہے کہ ہم تو اس فوجی طاقت سے دنیا میں صرف شانتی بنائے رکھنا چاہتے ہیں پر اُنہوں نے یہ سوچنے کی تکلیف اُٹھانا پسند نہیں کیا کہ جسطرح ٹھنڈے پانی کے گھڑے کی رکشا کے لئے اُس کے چاروں طرف آگ جلانے سے اُلٹا پانی گرم ہوکر آگ بن جاتا ہے، ویسے ہی شانتی پسند جنتا کی رکشا کرنے کے لئے اس کے چاروں طرف اشانتی پسند فوج کھڑا کرنےسے شانتی پسند جنتا بھی اشانتی پسند بن جاتی ہے۔ ہائیڈروجن بم، موت کرنیں اور اگنی کرنیں آگ کی لپٹ کی طرح شانتی کے گھڑے کو گرم کردیتی ہے اور جیسے گھڑے کا پانی اُبلنے لگتا ہے ویسے ہی شانتی پسند جنتا اُبل اُبل کر یہ شور مچانے لگتی ہے، فوجیں اور زیادہ کرو فوجیں اور زیادہ کرو سارے امریکہ باسیوں کو فوجی سپاہی بنادو، اس آواز کا نتیجہ اسکے سوائے کیا ہوسکتا ہے کہ تیسری بڑی لڑائی جسے دنیا دور بھگانیکی کوشش کر رہی ہے اور پاس آجائے۔

ہوشیار گھڑ سوار جنگل میں راستہ بھولنے پر گھوڑے کی باگ کو ڈھیلا چھوڑ دیتا ہے اور اپنی بدھی کو گھوڑے کی بدھی کے ہاتھ میں سونپ دیتا ہے اور پھر گھوڑا بڑی صفائی سے اُسے اپنے گھر پہونچا دیتا ہے۔ نیتی کے اس اصول کے بل پر ہم امریکہ کی سرکار

बम के भूत ने अमरीका के प्रजा राज को नाम के लिये भी प्रजा राज नहीं रहने दिया. उसने अमरीका के प्रेसीडेन्ट को वह सब ताकते दिलादी है जो कभी किसी राजा के हाथ मे सपने मे भी नहीं आई थीं पन्द्रह आदमियों के नाम से हाल ही मे. अमरीका जो एक नोट क्रिश्चियन साइन्स मानीटर पत्रिका मे निकला है वह इस बात का सबूत है कि वहा की जनता हाइड्रोजन बम को कितना मार्के का समझती है और वह किस तरह रूसी जनता के साथ दोस्ती करने के लिये तैयार है. उस नोट से यह भी पता चलता है कि अमरीका की साधारन जनता इस हाइड्रोजन बम के भूत मे कितनी दुखी है नोट भले ही पन्द्रह आदमियों के नाम से हो पर वह पन्द्रह आदमी तो कई करोड़ आदमियों के मन की बात कह रहे हैं और वह कहते यह है कि "हम जीना चाहते है, हम यह चाहते है कि हमारे बच्चे जीते रहे और हमारे बच्चों के बच्चे भी जी सके ऐ अमरीका के छोटे बड़े आदमियो, क्या तुम भी जीते रहना नहीं चाहते ? अगर चाहते हो तो हमारी मदद करो. और हम यह कहते है कि कुछ न कुछ जरूर करना चाहिये, कम से कम उनसे, जिन के हाथ मे अमरीका की बागडोर है, यह जरूर कह देना चाहिये कि रूसी भले ही व्यवहार में कड़े हो पर मरना रूसी भी नहीं चाहते. और उनसे कोई समझौता करना असम्भव जचता भले ही हो असम्भव है नहीं हाँ, दाँव जरा ऊँचा लगाना होगा." उन्हीं पन्द्रह आदमियों का यह भी कहना है कि "हम मामूली आदमी जरूर है और हम इधर उधर किराये के मकानो मे रहते है और रेलो और बसो से जाजा कर कारखानो मे काम करते हैं. हम मे से कुछ ऐसे भी है जो कुछ पैसा बचा कर अपना छोटा मोटा मकान भी बना सकते है पर मुश्किल तो यह है कि हाइड्रोजन बम गिरेगा तो हमारे ही मकानो पर और मरेंगे तो हम ही. और हम मरना नहीं चाहते" यह है प्रजा शाही अमरीका की प्रजा की आवाज ! हाइड्रोजन बम का भूत

بم کے بھوت نے امریکہ کے پرجا راج کو نام کے لئے بھی پرجا راج نہیں رہنے دیا اس نے امریکہ کے پریزیڈنٹ کو وہ سب طاقتیں دلادی ہیں جو کبھی کسی راجہ کے ہاتھ میں سپنے میں بھی نہیں آئی تھیں . پندرہ آدمیوں کے نام سے حال ہی میں امریکہ میں جو ایک نوٹ کرسچین سائنس مانیٹر پترکا میں نکلا ہے وہ اسی بات کا ثبوت ہے کہ وہاں کی جنتا ہائیڈروجن بم کو کتنا مارکہ کا سمجھتی ہے اور وہ کسطرح روسی جنتا کے ساتھ دوستی کرنے کیلئے تیار ہے اس نوٹ سے یہ بھی پتہ چلتا ہے کہ امریکہ کی سادھارن جنتا اس ہائیڈروجن بم کے بھوت سے کتنی دکھی ہے . نوٹ بھلے ہی پندرہ آدمیوں کے نام سے ہو پر وہ پندرہ آدمی تو کئی کروڑ آدمیوں کی من کی بات کہ رہے ہیں اور وہ کہتے یہ ہیں کہ " ہم جینا چاہتے ہیں کہ ہمارے بچے جیتے رہیں اور ہمارے بچوں کے بچے بھی جی سکیں اے امریکہ کے چھوٹے بڑے آدمیوں' کیا تم بھی جیتے رہنا نہیں چاہتے ؟ اگر چاہتے ہو تو ہماری مدد کرو . اور ہم یہ کہتے ہیں کہ کچھ نہ کچھ ضرور کرنا چاہئیے کم سے کم ان سے جن کے ہاتھ میں امریکہ کی باگ ڈور ہے یہ ضرور کہ دینا چاہئیے کہ روسی بھلے ہی بیوہار میں کڑے ہوں پر مرنا روسی بھی نہیں چاہتے اور ان سے کوئی سمجھوتہ کرنا اسمبھو جچتا بھلے ہی ہو اسمبھو ہے نہیں ہاں داؤں ذرا اونچا لگانا ہوگا " انہی پندرہ آدمیوں کا یہ بھی کہنا ہے کہ " ہم معمولی آدمی ضرور ہیں اور ہم ادھر ادھر کرایہ کے مکانوں میں رہتے ہیں اور ریلوں اور بسوں سے جا جا کر کارخانوں میں کام کرتے ہیں . ہم میں سے کچھ ایسے بھی ہیں جو کچھ پیسہ بچاکر اپنا چھوٹا موٹا مکان بھی بنا سکتے ہیں پر مشکل تو یہ ہے کہ ہائیڈروجن بم گریگا تو ہمارے ہی مکانوں پر اور مرینگے تو ہم ہی اور ہم مرنا نہیں چاہتے ." یہ ہے پرجا شاہی امریکہ کی پرجا کی آواز! ہائیڈروجن بم کا بھوت

हो सकता है हमारा यह नोट कुछ पत्र कारों को अखरे, पर हम आई बात कह डालने की सीख बड़े बूढ़ दे गये हैं इसलिये कह देते हैं और रिवाज के अनुसार माफी मांगे लेते हैं.

ता० १५-६-५०   भगवान दीन

हाइड्रोजन बम और अमरीका

संत महात्मा बेहद जोर लगा कर भी भूत, जिन और चुड़ैलों से जनता का पीछा न छुटा सके. जब तक एक समझदार दल ऐसा तैयार होता है जिसे भूतों में कोई विश्वास नहीं रह जाता तब तक दूसरा उससे भी ज्यादा समझदार दल पैदा होजाता है और पहले से ज्यादा जोर के साथ भूत प्रेतों को मानने लगता है और उनसे मानने के लिये कहता रहता है जो उसके असर में रहते आये हैं या रह रहे हैं. असल में बात यह है कि सच्चा या झूठा, सही या ग़लत असली या नक़ली जो भी विचार एक बार दुनिया में फैल गया वह मिटाये नहीं मिटता, किसी न किसी का सहारा लिये हुए जिन्दा बना रहता है. हाइड्रोजन बम भी इसी तरह अभी कोरा विचार है, पर कोरा विचार है सिर्फ उन बीच के कुछ आदमियों के लिये जो न साइन्स के माहिर हैं और न ऐसे ही हैं कि साइन्स बिलकुल न जानते हों. साइन्स के माहिर आइन्सटाइन को हाइड्रोजन बम ऐसा दिखाई देता है मानो उसके पास ही बना हुआ रखा हो. इस लिये यह बीच के आदमी जब उस माहिर के मुँह से हाइड्रोजन बम की बात सुनते हैं तो कॉप जाते हैं और ऐसे ही डरने लगते हैं जैसे अच्छा खासा समझदार आदमी अंधेरी कोठरी में भूत के खयाल से कॉपने लगता है. हाइड्रोजन बम अगर नहीं बना है तो भूत की शकल में तो वह बन ही गया है. उसके लिये साइन्सी माहिरों की भले ही जरूरत न हो पर जादू टोना करने वालों की ज़रूर जरूरत है. हाइड्रोजन

ہو سکتا ہے ہمارا یہ نوٹ کچھ پترکاروں کو اکھرے، پر منہ آئی بات کہ ڈالنے کی سیکھ بڑے بوڑھے دے گئے ہیں اسی لئے کہہ دیتے ہیں اور رواج کے انوسار معافی مانگے لیتے ہیں۔

۱۵-۶-۵۰   بھگوان دین

ہائیڈروجن بم اور امریکہ

سنت مہاتما بے حد زور لگاکر بھی بھوت، جن اور چڑیلوں سے جنتا کا پیچھا نہ چھڑاسکے۔ جب تک ایک سمجھدار دل ایسا تیار ہوتا ہے جسے بھوتوں میں کوئی وشواس نہیں رہ جاتا تب تک دوسرا اُس سے بھی زیادہ سمجھدار دل پیدا ہوجاتا ہے اور پہلے سے زیادہ زور کے ساتھ بھوت، پریتوں کو ماننے لگتا ہے اور ان سے ماننے کے لئے کہتا رہتا ہے جو اس کے اثر میں رہتے آئے ہیں یا رہ رہے ہیں۔ اصل میں بات یہ ہے کہ سچا یا جھوٹا، صحیح یا غلط، اصلی یا نقلی جو بھی وچار ایک بار دنیا میں پھیل گیا وہ مٹائے نہیں مٹتا۔ کسی نہ کسی کا سہارا لئے ہوئے زندہ بنا رہتا ہے۔ ہائیڈروجن بم بھی اسیطرح ابھی کورا وچار ہے، پر کورا وچار ہے صرف ان بیچ کے کچھ آدمیوں کے لئے جو نہ سائنس کے ماہر ہیں اور نہ ایسے ہی ہیں کہ سائنس بالکل نہ جانتے ہوں۔ سائنس کے ماہر آئنسٹائن کو ہائیڈروجن بم ایسا دکھائی دیتا ہے مانو اُس کے پاس ہی بنا ہوا رکھا ہو۔ اسلئے یہ بیچ کے آدمی جب اُس ماہر کے منہ سے ہائیڈروجن بم کی بات سنتے ہیں تو کانپ جاتے ہیں اور ایسے ہی ڈرنے لگتے ہیں جیسے اچھا خاصہ سمجھدار آدمی اندھیری کوٹھری میں بھوت کے خیال سے کانپنے لگتا ہے۔ ہائیڈروجن بم اگر نہیں بنا ہے تو بھوت کی شکل میں تو وہ بن ہی گیا ہے۔ اُس کے لئے سائنسی ماہروں کی بھلے ہی ضرورت نہ ہو پر جادو ٹونا کرنیوالوں کی ضرور ضرورت ہے۔ ہائیڈروجن

इस से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि किसी को दान देने के लिये कीचड़ में से अव्वल तो कोई रुपया उठाता ही नहीं, दूसरे अगर उठाता है तो उसे धो कर देने की तो कभी परवाह नहीं करता. उसे तो वह निकालते ही उसकी तरफ़ फेंकता है जिसे वह देना चाहता है. फिर भले ही वह रुपया लेने वाले के कपड़ो पर जाकर गिरे या नाक या मुंह से जा टकराये या लेने वाला इसी तरह की किसी और आफ़त में फंसे कभी कभी तो ऐसा भी होते देखा गया है. कि लेने वाले ने उसे धो साफ़ कर अगर उस रुपये से कुछ आम खरीद लिये हों तो देने वाला भी शरीक हो बैठना है और इस मामले में जिस का पत्रो मे इतना शोर मच रहा है अगर किसी को ऐसी गंध आने लगे तो हम दोष देने की हिम्मत भी कैसे कर सकते हैं ?

खैर, इसे छोड़िये. यह नोट हम इस लिये नहीं लिखने बैठे थे. हम लिखना चाहते है यह:—

" कि अगर इसी तरह का पत्र व्यवहार किसी मामूली आदमी और सरकार के बीच हुआ होता तो क्या अखबार वाले अपने पत्रो में इसी तरह जगह देते ? इस पत्र व्यवहार ने तो यह साबित कर दिया कि हमारे पत्रकार लोक शाही और लोक राज की इतनी परवाह नहीं करते जितनी पूंजी राज और पूंजी शाही की परवाह करते हैं. लोक शाही मे होना तो यह चाहिये था कि वह कहावत सारे भारत में घूम रही होता जिसे हम अपने लुटपन में बिरादरी की पंचायत में सुना करते थे कि " मूंग में मुंग कौन बड़ी. " पर आज इस लोक शाही वाले भारत में सुनने को मिलरहा है " कहाँ गंगुआ तेली और कहाँ राजा भोज. "

اس سے کوئی انکار نہیں کر سکتا کہ کسی کو دان دینے کے لئے کیچڑ میں سے اول تو کوئی روپیہ اُٹھاتا ہی نہیں' دوسرے اگر اُٹھاتا ہے تو اُسے دھوکر دینے کی تو کبھی پرواہ نہیں کرتا . اُسے تو وہ نکالتے ہی اسکی طرف پھینکتا ہے جسے وہ دینا چاہتا ہے پھر بھلے ہی وہ روپیہ لینے والے کے کپڑوں پر جاکر گرے یا ناک یا منھ سے جا ٹکرائے یا لینے والا اسی طرح کی کسی اور آفت میں پھنسے . کبھی کبھی تو ایسا بھی ہوتے دیکھا گیا ہے کہ لینے والے نے اُسے دھو صاف کر اگر اُس روپیہ سے کچھ آم خرید لئے ہوں تو دینے والا بھی شریک ہو بیٹھتا ہے اور اس معاملہ میں جس کا پتروں میں اتنا شور مچ رہا ہے اگر کسی کو ایسی گندھ آنے لگے تو اُسے ہم دوش دینے کی ہمت بھی کیسے کر سکتے ہیں ؟

خیر اسے چھوڑئیے . یہ نوٹ ہم اسلئے لکھنے نہیں بیٹھے ہے . ہم لکھنا چاہتے ہیں یہ .—

"کہ اگر اُسیطرح کا پتر ویوهار کسی معمولی آدمی اور سرکار کے بیچ ہوا ہوتا تو کیا اخبار والے اپنے پتروں میں اسیطرح جگہ دیتے ؟ اس پتر ویوهار نے تو یہ ثابت کر دیا کہ همارے پترکار لوک شاہی اور لوک راج کی اتنی پرواہ نہیں کرتے جتنی پونجی راج اور پونجی شاہی کی پرواہ کرتے ہیں لوک شاہی میں ہونا تو یہ چاہئے تھا کہ وہ کہاوت سارے بھارت میں گھوم رہی ہوتی ہے جسے ہم اپنے چھٹپن میں برادری کی پنچایت میں سنا کرتے تھے کہ " مونگ میں مونگ کون بڑی" پر آج اس لوک شاہی والے بھارت میں سننے کو مل رہا ہے "کہاں گنگوا تیلی اور کہاں راجہ بھوج"

बदनाम होने के लिये तैयार रहे. और हमे तो कुछ ऐसा ही मालूम होता है कि हमारी सरकार की मदद से जो रुपया गांधी-निधि के लिये इकट्ठा हुआ है उस रुपये के इकट्ठा करने मे सचमुच कुछ लोगो ने चिमटे से काम लिया है जिस की वजह से कुछ बदबू तो उड़ी है पर यह बदबू है उस कुरेदन की जिस के किये बग़ैर ऐसी जगह से रुपया निकल हो नही सक्ता था. बुरी या ख़तरे की जगह पड़े हुए रुपये के साथ एक बात और होती है और उसे हम सब जानते हैं. वह यह कि अगर मेरा रुपया बुरी जगह या ख़तरे की जगह पड़े तो मै ख़ुद उठाते हुए शर्माता या डरता हूँ और अगर अकेले मे हिम्मत करके उठा ही लूँ और उठाते कोई देख ले तो मै उसी को देने लगता हूँ और वह भी उस को लेने से इनकार करता है. लेकिन मेरे रुपये को मेरे कहने पर कोई दूसरा उठा ले और वह धोधा कर उससे काम लेने लगे तो मै शोर मचाने लगता हूं और उस वक्त सिवाय इसके मेरे पास क्या चारा रह जाता है कि मै उस आदमी को जिसने मेरे कहने से अपने किसी काम के लिये रुपया उठाया था इस बात के लिये मजबूर करूँ कि वह उस रुपये से वह काम ले जो मै चाहता हूँ. मुझ मे त्याग की भावना थोड़ी बहुत जभी तक रहती है जब तक वह रुपया बुरी जगह पड़ा है या ख़तरे की जगह पड़ा हुआ है. पर जैसे ही वह उन जगहो से हटा वैसे ही मेरा त्याग कम हो जाता है और मुझमे मोह जाग जाता है अब मोह मे पड़ कर मेरे पास सिवाय इस के क्या चारा रह जाता है कि मैं उठाने वाले को बदनाम करूँ और यह कहूँ कि इन शर्तो के साथ मैने उसको रुपया उठाने दिया था.

हमारे पास इस मामले को तोलने के लिये हमारे मन की तराज़ू के सिवा और कोई तराज़ू नहीं है और उसमे तोलने पर तो यह मामला भी इतना ही भारी उतरता मालूम होता है जितना भारी वह मामला है जिस को अभी हमने ऊपर कहा है.

بدنام هونے کے لئے تیار رهے اور همیں تو کچھ ایسا هی معلوم هوتا هے که هماري سرکار کی مدد سے جو روپیه گاندهی ندهی کے لئے اکٹھا هوا هے اُس روپیه کے اکٹھا کرنے میں سچ مچ کچھ لوگوں نے چمٹے سے کام لیا هے جسکي وجه سے کچھ بدبو تو اُڑی هے پر یه بدبو هے اُس کریدن کی جس کے بغیر ایسي جگه سے روپیه نکل هی نهیں سکتا تها . بري یا خطرے کی جگه پڑے هوئے روپیه کے ساتھ ایک بات اور هوتي هے اور اُسے هم سب جانتے هیں . وه یه که اگر میرا روپیه بری جگه یا خطره کی جگه پڑے تو میں خود اُٹھاتے هوئے شرماتا یا ڈرتا هوں اور اور اگر اکیلے میں همت کرکے اُٹھا هی لوں اور اُٹھاتے کوئي دیکھ لے تو میں اُسی کو دینے لگتا هوں اور وه بھی اُسکو لینے سے انکار کرتا هے لیکن میرے روپیه کو میرے کہنے پر کوئی دوسرا اپنے لئے اُٹھا لے اور وه دهو دھا کر اُس سے کام لینے لگے تو میں شور مچانے لگتا هوں اور اس وقت سوائے اس کے میرے پاس کیا چاره ره جاتا هے که میں اس آدمی کو جس نے میرے کہنے سے اپنے کسي کام کے لئے روپیه اٹھایا تھا اسبات کے لئے مجبور کروں که وه اُس روپیه سے وه کام لے جو میں چاهتا هوں . مجھ میں تیاگ کی بھاونا تھوڑی بہت جبھي تک رهتي هے جب تک وه روپیه بری جگه پڑا هے یا خطرے کی جگه پڑا هوا هے . پر جیسے هی وه اُن جگهوں سے هٹا ویسے هی میرا تیاگ کم هو جاتا هے اور مجھ میں جاتا هے . اب موه میں پڑ کر میرے پاس سوائے اس کے کیا چاره ره جاتا هے که میں اُٹھانیوالے کو بدنام موه جاگ کروں اور یه کهوں که اِن شرطوں کے ساتھ میں نے اسکو روپیه اٹھانے دیا تھا .

هارے پاس اِس معاملے کو تولنے کے لئے همارے من کی ترازو کے سوا اور کوئی ترازو نهیں هے اور اُسمیں تولنے پر تو یه معامله بھي اتنا هی بھاري اُترتا معلوم هوتا هے جتنا بھاری وه معامله هے جسکو ابھی هم نے اوپر کہا هے .

हमारी राय

ہماری رائے

नये ढंग का पत्र-व्यवहार

कुछ दिनो से पत्रो मे एक नये ढंग का पत्र-व्यवहार छप रहा है और उसका संबध है गांधी-निधि से. ।उसमे एक तरफ है कोई एक करोडपति सेठ और दूसरी ओर है सरकार. उस पत्र व्यवहार मे यह तो मालूम होता है कि एक दूसरे पर कुछ उलीच रहे हैं पर यह पता नही चलता कि वह उलीच होली के सुबह की उलीच है या दस ग्यारह बजे की उलीच जब हमारी यह समझ में हो नहीं आता तो हम इस मामले पर कोई राय क्या कायम करे. हाँ, इतनी बात हमारी समझ में जरूर आती है कि अगर कीचड मे पड़ा हुआ रुपया उठाया जायगा तो हाथ मैले हुए बिना न रहेंगे. फिर अगर कोई उठाने वालो के मैले हाथो की शिकायत करने लगे तो बुरा मानने की जरूरत ? और अगर बदबूदार चीज मे पडा हुआ रुपया उठाया जायगा तो हाथ मे थोडी बहुत बदबू भी जरूर लगेगी और उड़े बग़ैर न रहेगा. उठाने वाले को उस बदबू की वजह से होने वाली बदनामी के लिये भी तैयार रहना चाहिये. अच्छा तो यही है कि उठाने वाले को चाहिये कि वह कीचड़ या बदबूदार चीज में पड़े हुए रुपये को चिमटे की मदद से उठाये पर थोड़ा बहुत फिर भी

نئے ڈھنگ کا پتر ویوھار

کچھ دنوں سے پتروں میں نئے ڈھنگ کا پتر ویوھار چھپ رھا ھے اور اُسکا سمبندھ ھے گاندھی ندھی سے اُس میں ایک طرف ھے کوئی ایک کروڑ پتی سیٹھ اور دوسري اُور ھے سرکار اُس پتر ویوھار میں یہ تو معلوم ھوتا ھے کہ ایک دوسرے پر کچھ اُلیچ رھے ھیں پر یہ پتہ نہیں چلتا کہ وہ اُلیچ ھولی کے صبح کی اُلیچ ھے یا دس گیارہ بجے کی اُلیچ جب ھماری سمجھ میں ھی نہیں آتا تو اس معاملہ پر کوئی رائے کیا قائم کریں. ھاں' اتنی بات ھماری سمجھ میں ضرور آتي ھے کہ اگر کیچڑ میں پڑا ھوا روپیہ اُٹھایا جائیگا تو ھاتھ میلے ھوئے بنا نہ رھینگے. پھر اگر کوئی اُٹھانے والوں کے میلے ھاتھوں کی شکایت کرنے لگے تو برا ماننے کی ضرورت ؟ اور اگر بدبو دار چیز میں پڑا ھوا روپیہ اُٹھایا جائیگا تو ھاتھ میں تھوڑي بہت بدبو بھي ضرور لگیگي اور اُڑے بغیر نہ رھیگی. اُٹھانے والوں کو اُس بدبو کیوجہ سے ھونے والی بدنامی کے لئے بھی تیار رھنا چاھئے. اچھا تو یہي ھے کہ اُٹھانے والے کو چاھئے کہ وہ کیچڑ یا بدبو دار چیز میں پڑے ھوے روپیہ کو چمٹے کی مدد سے اُٹھانے پر تھوڑا بہت پھر بھي

सारा क़िस्सा अपनी माँ को सुनाने लगा. वह सुना ही रहा था कि उसने देखा कि मोती को उसका असली मालिक पकड़ कर लिये जा रहा है. वह रोने लगा और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगा—" अरे—अरे—रे मेरा मोती. मेरा मोती यह कौन लिये जा रहा है...... पकड़ो—पकड़ो—उसे पकड़ो—आजा मेरे मोती आजा."

उसके रोने की आवाज सुन कर उसकी माँ उसके पास दौड़ी दौड़ी आई और कहने लगी—" कहो बेटा—क्या ख्वाब देखा है तुम ने. उठो सवेरा हो गया है."

असलम ने आँखे खोल दीं और माँ से लिपट कर रोने लगा " माँ—मेरा मोती कहाँ है. मेरा सुन्दर मोती .... " और वह दीवाने की तरह फटी फटी आँखो से अपने हाथ मे अंगूठी को देखने लगा पर न तो वहाँ अगूठी थी और न मोती यह सब तो उसे सपने मे दिखाई पडा था

माँ ने कहा —" बेटा यह सब खयाल ही खयाल है बात यह है कि आदमी दिन भर जो कुछ सोचता है वही रातो को सोते में सपना बन कर दिखाई पडता है तुम इस जादू की अंगूठी से सबक़ जरूर ले सकते हो. तुम समझ लो कि वह अगूठी मेहनत थी. क्यो कि मेहनत भी किसी जादू से कम नहीं है मेहनत कर के तुम हर कठिन काम को पूरा कर सकते हो. अच्छा उठो मुँह हाथ धो डालो. स्कूल जाने का वक्त हो रहा है."

असलम को अपना सपना टूट जाने का बहुत दुख था. पर जब उसने माँ की बात पर ध्यान दिया तो उसका दुख दूर होगया उसने तय कर लिया कि अब वह मेहनत से जी न चुरायेगा. वह खूब मेहनत से पढ़ने लगा और स्कूल के अच्छे लड़को मे उसकी गिनती होने लगी.

سارا قصہ اپنی ماں کو سنانے لگا . وہ سنا ھی رھا تھا کہ اس نے دیکھا کہ موتی کو اُسکا اصلی مالک پکڑ کر لئے جارھا ھے . وہ رونے لگا اور چلا چلا کر کہنے لگا " ارے— رے— رے— میرا موتی' میرا موتی ..... یہ کون لئے جا رھا ھے . پکڑو . .... پکڑو... . اُسے پکڑو آجا میرا موتی آجا .

اُس کے رونے کی آواز سنکر اُس کی ماں اُس کے پاس دوڑی دوڑی آئی اور کہنے لگی " کہو بیٹا — کیا خواب دیکھا ھے تم نے . اُٹھو سویرا ھوگیا ھے .

اسلم نے آنکھیں کھول دیں اور ماں سے لپٹ کر رونے لگا " ماں .... میرا موتی کہاں ھے . میرا سندر موتی . ' اور وہ دیوانے کی طرح پھٹی پھٹی آنکھوں سے اپنے ھاتھ میں انگوٹھی کو دیکھنے لگا . پر نہ تو وھاں انگوٹھی تھی اور نہ موتی . یہ سب تو اُسے سپنے میں دکھائی پڑا تھا .

ماں نے کہا — " بیٹا یہ سب خیال ھی خیالی ھے' بات یہ کہ آدمی دن بھر جو کچھ سوچتا ھے وھی راتوں کو سوتے میں سپنا بن کر دکھائی پڑتا ھے . تم اس جادو کی انگوٹھی سے سبق ضرور لے سکتے ھو تم سمجھ لو کہ وہ انگوٹھی محنت تھی . کیونکہ محنت بھی کسی جادو سے کم نہیں ھے . محنت کرکے تم ھر کٹھن کام کو پورا کرسکتے ھو . اچھا اُٹھو' منہ ھاتھ دھو ڈالو . اسکول جانے کا وقت ھو رھا ھے . "

اسلم کو اپنا سپنا ٹوٹ جانے کا بہت دکھ تھا پر جب اُس نے ماں کی بات پر دھیان دیا تو اُسکا دکھ دور ھوگیا اُس نے طے کرلیا کہ اب وہ محنت سے جی نہ چرائیگا . وہ خوب محنت سے پڑھنے لگا اور اسکول کے اچھے لڑکوں میں اُسکی گنتی ھونے لگی .

स्कूल मे असलम की गिनती अच्छे बच्चों में न थी. वह हर काम देर से करता, और बात बात पर पिटता था. जब वह स्कूल पहुँचा तो हिसाब का घटा शुरू हो चुका था मास्टर जी ने उसे एक सवाल हल करने को दिया उसे हिसाब बिलकुल ही न आता था. वह हाथ पर हाथ रख कर बैठ गया फिर वह किसी बहाने बाहर गया और अंगूठी से जवाब पूछ आया फिर लिख कर मास्टर जी को बताया. मास्टर जी ने उसकी बहुत तारीफ की. अब वह हर काम अंगूठी की मदद से ठीक करने लगा था और स्कूल भर मे उसके गुन गाये जाने लगे थे. आखिर इम्तहान आ गया और वह अच्छे नम्बरों से पास हो गया.

× × × ×

एक दिन असलम स्कूल से घर की तरफ आ रहा था कि रास्ते मे उसे एक कुत्ता मरा हुआ दिखाई दिया इस कुत्ते के पास एक आदमी खडा था. असलम ने पूछा ' क्या यह आपका कुत्ता है ? "

" हाँ ! " उस आदमी ने जवाब दिया

" इस कुत्ते का नाम क्या है ? " असलम ने पूछा.

" मोती "

" क्या यह कुत्ता आप मुझे देंगे ? " असलम ने कहा.

" हाँ दे तो दूंगा पर तुम इस मुरदा कुत्ते को ले कर करोगे क्या ? "

" मुझे चाहिये, आप को इससे क्या कि मैं क्या करूँगा. "

उस आदमी ने बिगड़ कर रास्ता चलते एक भंगी से कहा कि यह कुत्ता उठा कर दूर फेंक दो.

जब कुत्ते का मालिक चला गया तो असलम ने अंगूठी से कहा कि जाओ कुत्ते को ज़िन्दा कर लाओ.

थोड़ी देर मे वही सुन्दर मोती असलम के पास खड़ा हुआ खेल रहा था असलम खुशी खुशी उसे अपने घर ले गया और

اسکول میں اسلم کی گنتی اچھے بچوں میں نہ تھی وہ ہر کام دیر سے کرتا، اور بات بات پر پٹتا تھا جب وہ اسکول پہنچا تو حساب کا گھنٹہ شروع ہوچکا تھا ماسٹر جی نے اُسے ایک سوال حل کرنے کو دیا . اُسے حساب بالکل ھی نہ آتا تھا وہ ھاتھ پر ھاتھ رکھکر بیٹھ گیا پھر وہ کسی بہانے باھر گیا اور انگوٹھی سے جواب پوچھ آیا . پھر لکھکر ماسٹر جی کو بتایا . ماسٹر جی نے اُسکی بہت تعریف کی اب وہ ہر کام انگوٹھی کی مدد سے ٹھیک کرنے لگا تھا، اور اسکول بھر میں اس کے گن گائے جانے لگے تھے آخر امتحان آگیا اور وہ اچھے نمبروں سے پاس ہوگیا .

× × × ×

ایک دن اسلم اسکول سے گھر کی طرف آرھا تھا کہ راستے میں اُسے ایک کتا مرا ھوا دکھائی دیا . اُس کتے کے پاس ایک آدمی کھڑا تھا اسلم نے پوچھا " کیا یہ آپکا کتا ھے ؟ "

" ھاں " — اُس آدمی نے جواب دیا .

" اس کتے کا نام کیا ؟ " — اسلم نے پوچھا

" موتی "

" کیا یہ کتا آپ مجھے دینگے ؟ " اسلم نے کہا

" ھاں دے تو دونگا، پر تم اس مردہ کتے کو لے کر کروگے کیا ؟ "

" مجھے چاھئیے — آپ کو اس سے کیا کہ میں کیا کرونگا "

اُس آدمی نے بگڑ کر راستہ چلتے ایک بھنگی سے کہا کہ " کتا اُٹھاکر دور پھینک دو "

جب کتے کا مالک چلا گیا تو اسلم نے انگوٹھی سے کہا کہ " جاؤ کتے کو زندہ کر لاؤ "

تھوڑی دیر میں وھی سندر " موتی " اسلم کے پاس کھڑا ھوا کھیل رھا تھا . اسلم خوشی خوشی اُسے اپنے گھر لے گیا اور

सकता. मैं स्कूल जा रहा था कि रास्ते मे तुम मिल गईं पता नहीं तुम्हारा मालिक कौन है ? ''

अंगूठी बोली—''तुम ने मुझे उठा लिया है बस अब मैं तुम्हारी हूँ, मैं एक नारी हूँ और बद क़िस्मती से एक डाइन के फन्दे में फँस गई थी. उसने नाराज़ हो कर अपने जादू के ज़ोर से मुझे अंगूठी बना दिया और कहा कि 'अगर कोई आदमी तुझे उठा कर साफ़ करने के लिये रगड़ेगा. तो तू बडी हो कर नारीबन जायगी और उसकी सेवा तेरा धर्म होगा. जब काम ख़तम होगा तो फिर तू अंगूठी बन जायगी. ''

असलम यह सुन कर बहुत ही ख़ुश हुआ और उस ने अगूठी से कहा—'' अभी तो तेरी सेवा की ज़रूरत नहीं. जब ज़रूरत होगी तब बताऊँगा. ''

अगूठी अपने पहले रूप मे आ गई और असलम उसे उंगली मे पहन कर स्कूल की ओर चल पडा

चलते चलते उसे ध्यान आया कि भूक तो लगी है क्यो न इस अगूठी से काम लिया जाय. यह सोच कर उसने अगूठी को घिसना शुरू किया. लेकिन अगूठी वैसी ही रही. असलम समझा कि वह सब धोका था उसने गुस्से से अगूठी को दूर फेंक दिया और चलता बना. चलते चलते उसके पैर की रगड़ अगूठी को लगी और वह बडी हो गई. यह देख कर असलम को बडा अचम्भा हुआ. उसने कहा—'हाय ! यह क्या माजरा है ? '

तब अंगूठी ने उसे बताया कि मुझे उंगली से उतार कर घिसना चाहिये. अब कहो क्या चाहते हो ?

असलम ने कहा—' मुझे भूक लगी है खाना ले आओ. ''

अगूठी छन भर मे भाँति भाँति के खाने ले आई. असलम ख़ुशी ख़ुशी ख़ूब खा कर सेर हो गया इसके बाद अगूठी को उंगली में डाल कर स्कूल की तरफ चला

× × × ×

میں اسکول جا رہا تھا کہ راستے میں تم مل گئیں . پتہ نہیں تمہارا مالک کون ھے ؟''

انگوٹھی بولی—''تم نے مجھے اُٹھا لیا ھے بس اب میں تمہاری ہوں' میں ایک ناری ھوں اور بد قسمتی سے ایک ڈائن کے پھندے میں پھنس گئی تھی اُس نے ناراض ھوکر اپنے جادو کے زور سے مجھے انگوٹھی بنا دیا اور کہا کہ '' اگر کوئی آدمی تجھے اُٹھاکر صاف کرنے کے لئے رگڑیگا تو' تو بڑی ھوکر ناری بن جائیگی اور اس کی سیوا تیرا دھرم ھوگا' جب کام ختم ھوگا تو پھر تو انگوٹھی بن جائیگی .''

اسلم یہ سنکر بہت ھی خوش ھوا اور اُس نے انگوٹھی سے کہا ''ابھی تو تیری سیوا کی ضرورت نہیں جب ضرورت ھوگی تب بتاؤنگا .''

انگوٹھی اپنے پہلے روپ میں آگئی . اور اسلم اُسے انگلی میں پہن اسکول کی اور چل پڑا

چلتے چلتے اُسے دھیان آیا کہ بھوک تو لگی ھے کیوں نہ اس انگوٹھی سے کام لیا جائے یہ سوچ کر اس نے انگوٹھی کو گھسنا شروع کیا لیکن انگوٹھی ویسی ھی رھی . اسلم سمجھا کہ وہ سب دھوکہ تھا اس نے غصہ سے انگوٹھی کو دور پھینک دیا . اور چلتا بنا چلتے چلتے اس کے پیر کی رگڑ انگوٹھی کو لگی اور وہ بڑی ھوگئی یہ دیکھکر اسلم کو بڑا اچنبھا ھوا اس نے کہا '' ھائیں ! یہ کیا ماجرا ھے ؟ ''

تب انگوٹھی نے اسے بتایا کہ مجھے انگلی سے اُتار کر گھسنا چاھئے . اب کہو کیا چاھتے ھو ؟

اسلم نے کہا — '' مجھے بھوک لگی ھے' کھانا لے آؤ . ''

انگوٹھی چھن بھر میں بھانتی بھانتی کے کھانے لے آئی . اسلم خوشی خوشی خوب کھاکر سیر ھوگیا . اس کے بعد انگوٹھی کو انگلی میں ڈالکر اسکول کی طرف چلا

× × × ×

बच्चों की दुनिया



بچوں کی دنیا

असलम का ख़्वाब

(भाई नसीर अख़तर सिद्दक़ी)

असलम स्कूल जा रहा था. उसे रास्ते मे एक डिबिया पडी मिली असलम ने उसे खोला तो उसमे से एक अगूठा निकली. अगूठी धूल और मिट्टी लगने से मैली हो गई थी. असलम अगूठी पाकर बहुत ख़ुश हुआ और उछलने कूदने लगा

उसने मैल छुड़ाने के लिये अगूठी को पास पड़े हुए एक पत्थर पर घिसना शुरू किया घिसते घिसते अगूठी उसके हाथ से छूट गई असलम यह देख कर हैरान रह गया कि अब अगूठी पहले से कई गुना बडी हो चली है देखते देखते उस के हाथ पैर मुंह और आँखे सब कुछ आदमी की तरह बन गई है वह डर कर भागने ही को था कि अगूठी ने कहा—" प्यारे बच्चे ! डरो नहीं. कहो मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकती हूँ ? "

असलम ने डरते डरते कहा—" पहले तुम यह तो बताओ कि तुम हो कौन ? "

अंगूठी ने जवाब दिया—" मै एक दासी हूँ और सेवा मेरा काम है, तुम मेरे मालिक हो. "

असलम ने जवाब दिया—" नही नहीं, यह कभी नही हो

اسلم کا خواب

(بھائی نصیر اختر صدیقی)

اسلم اسکول جا رہا تھا . اُسے راستے میں ایک ڈبیا پڑی ملی . اسلم نے اسے کھولا تو اسمیں سے ایک انگوٹھی نکلی . انگوٹھی دھول اور مٹی لگنے سے میلی ہو گئی تھی . اسلم انگوٹھی پاکر بہت خوش ہوا اور اُچھلنے کودنے لگا .

اُس نے میل چھڑانے کے لئے انگوٹھی کو پاس پڑے ہوئے ایک پتھر پر گھسنا شروع کیا . گھستے گھستے انگوٹھی اس کے ہاتھ سے چھوٹ گئی اسلم یہ دیکھ کر حیران رہ گیا کہ اب انگوٹھی پہلے سے کئی گنا بڑی ہو چلی ہے دیکھتے دیکھتے اُس کے ہاتھ پیر منہ اور آنکھیں سب کچھ آدمی کی طرح بن گئی ہیں . وہ ڈر کر بھاگنے ہی کو تھا کہ انگوٹھی نے کہا— 'پیارے بچے ! ڈرو نہیں . کہو' میں تمہاری کیا سیوا کر سکتی ہوں ؟ '

اسلم نے ڈرتے ڈرتے کہا "پہلے تم یہ تو بتاؤ کہ تم ہو کون ؟"

انگوٹھی نے جواب دیا— "میں ایک داسی ہوں اور سیوا میرا کام ہے ، تم میرے مالک ہو ."

اسلم نے جواب دیا— "نہیں نہیں ! یہ کبھی نہیں ہو سکتا .

हिन्दुस्तान के इस रुख से दक्खिन पूरबी ऐशिया मे रूस और कम्युनिज्म के खिलाफ कोइ जथा बन्दी नही हो सकी है और इसी रुख को साफ करने के लिये प्रधान मंत्री नेहरू दक्खिन पूरबी ऐशिया के दौरे पर गये हुए है अभी वह इन्डोनेशिया मे है और वहाँ उन्होंने कम्युनिज्म को रोकने और मिटाने की नहीं बल्कि ग़रीबी और ग़ुलामी को खतम करने और दुनिया मे शान्ति कायम करने की बाते की है.

नसली साम्राज और उसके साथी

यह ग़ुलामी दो तरह की है. एक वह जो मलाया और इन्डोचीन मे दिखाई देती है और दूसरी वह जो दक्खिनी अफरीका की सरकार वहाँ रहने वाले हिन्दुस्तानी और एशियाई लोगों पर लादना चाहती है उसने हाल मे एक ऐसा कानून बनाया जिस के जरिये अफरीकी, एशियाई और योरुपी नस्ल के लोग अलग अलग इलाकों मे रहने पर मजबूर किये जायेंगे. हिन्दुस्तान ने इस पर एतराज किया है और दक्खिनी अफरीकी सरकार के साथ उसकी जो कानफ्रेन्स होने वाली थी उसमे शरीक होने से इनकार कर दिया

दक्खिनी अफरीकी सरकार का यह रुख पूरे एशिया के लिये अपमान जनक है मगर अमरीका और योरप के राष्ट्र इसे महसूस नहीं करते या महसूस करते है तो टाल जाते है और ऐसी हालत मे वह एशिया की आजादी सुधार और तरक्की की जो बाते करते है वह बिलकुल खोखली बन जाती है और उनके पीछे ईमानदारी से ज्यादा खुदगरज़ी झलकती है

ھندستان کے اِس رخ سے دکھن پوربی ایشیا میں روس اور کمیونزم کے خلاف کوئی جتھ بندی نہیں ھو سکی ھے. اور اسی رخ کو صاف کرنے کے لئے پردھان منتری نہرو دکھن پوربی ایشیا کے دورے پر گئے ہوئے ھیں. ابھی وہ انڈونیشیا میں ھیں اور وھاں انھوں نے کمیونزم کو روکنے اور مٹانے کی نہیں بلکہ غریبی اور غلامی کو ختم کرنے اور دنیا میں شانتی قائم کرنے کی باتیں کی ھیں

نسلی سامراج اور اس کے ساتھی

یہ غلامی دو طرح کی ھے. ایک وہ جو ملایا اور انڈو چین میں دکھائی دیتی ھے اور دوسری وہ جو دکھنی افریقہ کی سرکار وھاں رھنے والے ھندستانی اور ایشیائی لوگوں پر لادنا چاھتی ھے. اس نے حال میں ایک ایسا قانون بنایا ھے جس کے ذریعے افریقی، ایشیائی اور یورپی نسل کے لوگ الگ الگ علاقوں میں رھنے پر مجبور کئے جائیں گے. ھندستان نے اس پر اعتراض کیا ھے اور دکھنی افریقی سرکار کے ساتھ اسکی جو کانفرنس ھونے والی تھی اس میں شریک ھونے سے انکار کر دیا ھے.

دکھنی افریقی سرکار کا رخ پورے ایشیا کے لئے اپمان جنک ھے مگر امریکہ اور یورپ کے راشٹر اسے محسوس نہیں کرتے یا محسوس کرتے ھیں تو ٹال جاتے ھیں. اور ایسی حالت میں وہ ایشیا کی آزادی، سدھار اور ترقی کی جو باتیں کرتے ھیں وہ بالکل کھوکھلی بن جاتی ھیں اور ان کے پیچھے ایمانداری سے زیادہ خود غرضی جھلکتی ھے.

इस्लाम और कम्युनिज्म

इन शिकायतों का असल इलाज यह है कि बरतानिया और अमरीका उन कारवाइयों को खतम करदें जिन से यह शिकायतें पैदा होती हैं मगर पच्छिमी राष्ट्रों के पास इतना बड़ा दिल नहीं है वह अपने को अच्छा साबित करने के बजाय रूस को बुरा और खतरनाक साबित करने की और इस्लाम को कम्युनिज्म से लड़ाने की कोशिश कर रहे हैं. शायद उनके इस रुख को देख कर पाकिस्तान के प्रधान मंत्री लियाक़त अली खाँ साहब ने अमरीका में कई जगह कहा है कि इस्लाम को मानने वाले कम्युनिज्म को क़बूल नहीं कर सकते ऐसी बातों से पच्छिमी राष्ट्रों को रूस के खिलाफ़ अपनी ठन्डी लड़ाई में बड़ी मदद मिलेगी और हो सकता है कि वह पाकिस्तान को इस मदद का कुछ बदला दे दें मगर इस्लामी मुल्कों और खुद पाकिस्तान के कुछ अखबार अन्तर राष्ट्री मसलों पर जिस तरह राय देते हैं उस से मालूम होता है कि वह पच्छिमी राष्ट्रों की चालों से वाक़िफ़ हैं और इस्लाम को एक मजहब और कम्युनिज्म को एक राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक सिस्टम समझते हैं

हिन्दुस्तान और जथा बन्दी

यही रुख हिन्दुस्तान का भी है. वह खुद कम्युनिज्म को पसन्द नहीं करता. मगर जब चीन की जनता ने कम्युनिज्म को पसन्द कर लिया तो उसने वहाँ की कम्युनिस्ट सरकार का अधिकार मान लिया. और जब कम्युनिज्म को कुचलने के बहाने फ़्रान्स ने इन्डो चीन मे एक कठपुतली सरकार बनाई तो उसे मानने से इनकार कर दिया.

اسلام اور کمیونزم

ان شکایتوں کا اصل علاج یہ ہے کہ برطانیہ اور امریکہ ان کارروائیوں کو ختم کردیں جن سے یہ شکایتیں پیدا ہوتی ہیں مگر پچھمی راشٹروں کے پاس اتنا بڑا دل نہیں ہے وہ اپنے کو اچھا ثابت کرنے کے بجائے روس کو برا اور خطرناک ثابت کرنے کی اور اسلام کو کمیونزم سے لڑانے کی کوشش کر رہے ہیں شاید ان کے اس رخ کو دیکھکر پاکستان کے پردھان منتری لیاقت علی خاں صاحب نے امریکہ میں کئی جگہ کہا ہے کہ اسلام کو ماننے والے کمیونزم کو قبول نہیں کرسکتے ایسی باتوں سے پچھمی راشٹروں کو روس کے خلاف اپنی ٹھنڈی لڑائی میں بڑی مدد ملیگی اور ہوسکتا کہ وہ پاکستان کو اس مدد کا کچھ بدلہ دیدیں۔ مگر اسلامی ملکوں اور خود پاکستان کے کچھ اخبار انتر راشٹری مسئلوں پر جسطرح رائے دیتے ہیں اس سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ پچھمی راشٹروں کی چالوں سے واقف ہیں اور اسلام کو ایک مذہب اور کمیونزم کو ایک راج نیتک آرتھک اور سماجک سسٹم سمجھتے ہیں

ہندستان اور جتھہ بندی

یہی رخ ہندستان کا بھی ہے وہ خود کمیونزم کو پسند نہیں کرتا مگر جب چین کی جنتا نے کمیونزم کو پسند کر لیا تو اس نے وہاں کی کمیونسٹ سرکار کا ادھیکار مان لیا۔ اور جب کمیونزم کو کچلنے کے بہانے فرانس نے انڈو چین میں ایک کٹھ پتلی سرکار بنائی تو اسے ماننے سے انکار کردیا۔

देशों के सामने इससे बड़ा सवाल फिलस्तीन का है और उनका ध्यान आपस के झगड़ों पर लगा हुआ है सब से बड़ा झगड़ा मिस्र और जार्डन का है. और जब से जार्डन के बादशाह अब्दुल्ला ने फिलस्तीन के अरब इलाके को अपने मुल्क में शामिल कर लिया है तब से मिस्र इस बात की कोशिश कर रहा है कि उसे अरब लीग से निकाल दिया जाये. अबदुल्ला बरतानिया के पुराने दोस्त है और इसी लिये मिस्र बरतानिया की बातों को भी शक की निगाह से देखता है

मिस्र और बरतानिया

इस शक के दो कारन है. एक यह कि बरतानिया. अमरीका और फ्रान्स जो मदद देंगे वह अरब मुल्कों के अलावा इसराईल को भी मिलेगी और मिस्री अखबारों ने लिखा है कि इस तरह पच्छमी राष्ट्र इसराईल को ताकतवर बनाना चाहते हैं और इस का तोड़ यह है कि अरबों के सब देश अपने बचाव के लिये आपस में समझौता कर ले शक का दूसरा कारन यह है कि बरतानिया ने अपनी फौजें मिस्र में टिका रखी है और वह इन फौजों को सिर्फ इस शर्त पर हटाने के लिये तय्यार है कि मिस्र अपने बचाव के लिये उससे मदद लेने का वायदा कर ले मतलब यह है कि मिस्र रूस के खिलाफ जथाबन्दी में पच्छिमी राष्ट्रों के साथ मिल जाये. और यह बात मिस्र और दूसरे अरब देशों के कुछ समझदार लोगों को खटक रही है. मिस्र को बरतानिया से एक और शिकायत यह है कि वह सूडान पर, जिसे मिस्र अपने मुल्क का एक सूबा समझता है, कब्जा किये हुए है और उसे मिस्र से अलग करा देना चाहता है.

دیشوں کے سامنے اس سے بڑا سوال فلسطین کا ھے اور ان کا دھیان آپس کے جھگڑوں پر لگا ھوا ھے سب سے بڑا جھگڑا مصر اور جارڈن کا ھے . اور جب سے جارڈن کے بادشاہ عبداللہ نے فلسطین کے عرب علاقے کو اپنے ملک میں شامل کرلیا ھے تب سے مصر اسبات کی کوشش کر رھا ھے کہ اسے عرب لیگ سے نکال دیا جائے عبداللہ برطانیہ کے پرانے دوست ھیں اور اسی لئے مصر برطانیہ کی باتوں کو بھی شک کی نگاہ سے دیکھتا ھے .

مصر اور برطانیہ

اس شک کے دو کارن ھیں ایک یہ کہ برطانیہ' امریکہ اور فرانس جو مدد دینگے وہ عرب ملکوں کے علاوہ اسرائیل کو بھی ملیگی اور مصری اخباروں نے لکھا ھے کہ اسطرح پچھمی راشٹر اسرائیل کو طاقتور بنانا چاھتے ھیں . اور اسکا توڑ یہ ھے کہ عربوں کے سب دیش اپنے بچاؤ کے لئے آپس میں سمجھوتہ کرلیں . شک کا دوسرا کارن یہ ھے کہ برطانیہ نے اپنی فوجیں مصر میں ٹکا رکھی ھیں . اور ان فوجوں کو صرف اس شرط پر ھٹانے کے لئے تیار ھے کہ مصر اپنے بچاؤ کے لئے اس سے مدد لینے کا وعدہ کرلے . مطلب یہ ھے کہ مصر روس کے خلاف جتھ بندی میں پچھمی راشٹروں کے ساتھ مل جائے . اور یہ بات مصر اور دوسرے عرب دیسوں کے کچھ سمجھدار لوگوں کو کھٹک رھی ھے . مصر کو برطانیہ سے ایک اور شکایت یہ ھے کہ وہ سوڈان پر' جسے مصر اپنے ملک کا ایک صوبہ سمجھتا ھے' قبضہ کئے ھوئے ھے اور اسے مصر سے الگ کرا دینا چاھتا ھے .

रूस और बीच पूरब

बहर हाल सही तरीक़े से हो या गलत तरीक़े से, पच्छिमी राष्ट्रों ने दक्खिन पूरबी एशिया में रूस की राह रोक ली है और उसके ख़िलाफ़ मोरचा बन्दी कर रहे हैं. इसके लिये उनके पास काफ़ी से ज्यादा माल मसाला मौजूद है और इसी लिये एक ख़याल यह पैदा हो रहा है कि रूस अपना ध्यान दूर पूरब से बीच पूरब की तरफ़ फेरदेगा. इस बात की पहले से रोक थाम करने के लिये पच्छिमी राष्ट्रों के विदेश मन्त्रियों की लन्दन कानफ़रेन्स में रूस को आगाही दी गई है कि वह बीच पूरब वाले मुल्कों को हाथ न लगाये. इसके साथ साथ इन मुल्कों को हथियार देने का फ़ैसला भी किया गया है. अलबत्ता पहले उन से यह वायदा ले लिया गया है कि वह इन हथियारों को आपस में लड़ कर या यहूदियों के मुल्क इसराईल से टक्कर लेकर बरबाद नहीं करेंगे.

अभी इस इलाक़े के पानी या तेल में, जिस की यहाँ बहुत बड़ी मिक़दार मौजूद है, रूस की दाल गलने की कोई सम्भावना नहीं है. इसलिये कि उन देशों में जो लोग राज करते हैं वह इस बात से डरते हैं कि अगर उन्होंने रूस से मेल जोल बढ़ाये तो उन के देश में कम्युनिस्टों को आज़ादी से काम करने का मौक़ा मिल जायगा और फिर उनकी जनता उनके ख़िलाफ़ हो जायगी. इसी लिये जब कभी यह सवाल उठेगा कि रूस और पच्छिमी राष्ट्रों में से किसका साथ दिया जाये और किस से मदद ली जाये तो बीच पूरब के मुल्क पच्छिमी राष्ट्रों की तरफ़ झुक जायेंगे. मगर अभी इस्लामी

روس اور بیچ پورب

بہرحال صحیح طریقے سے ہو یا غلط طریقے سے، پچھمی راشٹروں نے دکھن پوربی ایشیا میں روس کی راہ روک لی ہے اور اس کے خلاف مورچہ بندی کر رہے ہیں. اس کے لئے ان کے پاس کافی سے زیادہ مال مسالہ موجود ہے اور اسی لئے ایک خیال یہ پیدا ہو رہا ہے کہ روس اپنا دھیان دور پورب سے بیچ پورب کی طرف پھیر دے گا. اس بات کی پہلے سے روک تھام کرنے کے لئے پچھمی راشٹروں کے ودیش منتریوں کی لندن کانفرنس میں روس کو آگاہی دی گئی ہے کہ وہ بیچ پورب والے ملکوں کو ہاتھ نہ لگائے. اس کے ساتھ ساتھ ان ملکوں کو ہتھیار دینے کا فیصلہ بھی کیا گیا ہے. البتہ پہلے ان سے یہ وعدہ لے لیا گیا ہے کہ وہ ان ہتھیاروں کو آپس میں لڑکر یا یہودیوں کے ملک اسرائیل سے ٹکر لے کر برباد نہیں کریں گے.

ابھی اس علاقے کے پانی یا تیل میں، جس کی یہاں بہت بڑی مقدار موجود ہے، روس کی دال گلنے کی کوئی سمبھاونا نہیں ہے. اس لئے کہ ان دیشوں میں جو لوگ راج کرتے ہیں وہ اس بات سے ڈرتے ہیں کہ اگر انہوں نے روس سے میل جول بڑھائے تو ان کے دیش میں کمیونسٹوں کو آزادی سے کام کرنے کا موقع مل جائیگا اور پھر ان کی جنتا ان کے خلاف ہوجائے گی. اسی لئے جب کبھی یہ سوال اٹھے گا کہ روس اور پچھمی راشٹروں میں سے کسکا ساتھ دیا جائے اور کس سے مدد لی جائے تو بیچ پورب کے ملک پچھمی راشٹروں کی طرف جھک جائیں گے. مگر ابھی اسلامی

जायगा और फौजी बचाव का प्रोग्राम बनाया जायगा. यह फिलिपाइन की बड़ी पुरानी आशा थी और उसके प्रधान ने कानफरेन्स की कारवाई शुरू करते समय अपनी तकरीर में जब " दुनिया के सर पर मन्डलाते हुए जबरदस्त खतरे " का जिक्र किया तो उन के जेहन मे कम्युनिज्म का फैलाव था. मगर कानफरेन्स मे हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और सीलौन के प्रतिनिधियों ने कोई राजनैतिक समझौता करने या किसी फौजी जत्था बन्दी मे जाने से इनकार कर दिया. और इस तरह कोई ठोस बात तय नहीं हो सकी

बाकियो कानफरेन्स मे खास खास मामलो मे मिल जुल कर काम करने का उसूल तय हुआ है और सलाह मशविरा जारी रखने के लिये एक मुस्तकिल बन्दोबस्त का भी जिक्र किया गया है मगर यह बात पूरी तरह साफ नहीं की गई है और ऐसी ही गोल गोल बात इन्डोचीन और मलाया के बारे मे भी कही गई है कानफरेन्स की राय मे जब कभी दक्खिन पूरबी एशिया के मसलो पर सोच विचार किया जाये तो उन दोनो देशो की जनता को सामने रखा जाये और उस पूरे इलाके की सरकारो से मशविरा कर लिया जाय इतनी बात भी शायद हिन्दुस्तान की कोशिश से कही गई है नहीं तो मलाया मे बरतानिया की साम्राजी हरकतो मे आस्ट्रेलिया उसका साथ दे रहा है और इन्डोचीन मे फ्रान्स ने जो कठपुतली सरकार बना रखी है उसे आम तौर पर मान लिया गया है. अमरीका इस सरकार को कायम रखने के लिये फ्रान्स को पैसे और हथियार की जो मदद दे रहा है उस पर कोई एतराज नहीं किया जाता.

جائے گا اور فوجی بچاؤ کا پروگرام بنایا جائیگا . یہ فلپائین کی بڑی پرانی آشا تھی اور اس کے پردھان نے کانفرنس کی کاروائی شروع کرتے سمے اپنی تقریر میں جب '' دنیا کے سر پر منڈلاتے ہوئے زبردست خطرے '' کا ذکر کیا تو ان کے ذہن میں کمیونزم کا پھیلاؤ تھا مگر کانفرنس میں ہندستان' پاکستان اور سیلون کے پرتی ندھیوں نے کوئی راج نیتک سمجھوتہ کرنے یا کسی فوجی جتھہ بندی میں جانے سے انکار کردیا اور اسطرح کوئی ٹھوس بات طے نہیں ہوسکی .

باقیو کانفرنس میں خاص خاص معاملوں میں مل جل کر کام کرنے کا اصول طے ہوا ہے اور صلاح مشورہ جاری رکھنے کیلئے ایک مستقل بندوبست کا بھی ذکر کیا گیا ہے . مگر یہ بات پوری طرح صاف نہیں کی گئی ہے اور ایسی ہی گول گول بات انڈوچین اور ملایا کے بارے میں بھی کی گئی ہے . کانفرنس کی رائے میں جب کبھی دکھن پوربی ایشیا کے مسئلوں پر سوچ بچار کیا جائے تو اُن دونوں دیشوں کی جنتا کو سامنے رکھا جائے اور اس پورے علاقے کی سرکاروں سے مشورہ کرلیا جائے اتنی بات بھی شاید ہندستان کی کوشش سے کہی گئی ہے . نہیں تو ملایا میں برطانیہ کی سامراجی حرکتوں میں آسٹریلیا اسکا ساتھ دے رہا ہے اور انڈو چین میں فرانس نے جو کٹھ پتلی سرکار بنا رکھی ہے اسے عام طور پر مان لیا گیا ہے امریکہ اس سرکار کو قائم رکھنے کے لئے فرانس کو پیسے اور ہتھیار کی جو مدد دے رہا ہے اس پر کوئی اعتراض نہیں کیا جاتا .

आर्थिक और टैकनिकल माहर भेजे जायें और इन मुल्कों के आदमियों को इस तरह के काम सिखाये जायें. इस फ़ैसले के बारे में एक बात यह कहा जा मकती है की अगर इसकी बदौलत एशियाई देशो की आर्थिक हालत सुधर गई और जनता की बेचैनी का इलाज हो गया तो फिर कम्युनिज्म का पौदा परवान नहीं चढ़ सकेगा. मगर ८० लाख पौंड का यह फन्ड या डेढ़ करोड़ पौंड का वह प्रोग्राम, जो सितम्बर की कामन वैल्थ कानफ्रेन्स में बनाया जाने वाला है, वह काम नहीं कर सकता जिस के लिये यू० एन० ओ० के एक आर्थिक कमीशन ने १२ अरब डालर का तखमीना लगाया है. इसके अलावा आर्थिक प्रोग्राम चाहे जितना बड़ा हो उससे उस राजनतिक बेचैनी का इलाज नहीं हो सकता जो मलाया और इन्डो-चीन की जनता को कम्युनिज्म की तरफ़ खींचे लिये जाती है.

बागियो में नाकामी

सिडनी कानफ्रेन्स के फ़ौरन ही बाद फिलिपाइन के शहर बागियो मे दक्खिन पूरबी एशिया के ग़ैर कम्युनिस्ट मुल्कों की एक और कानफ्रेन्स हुई, न मालूम क्यों. इसलिये कि सिडनी कानफ्रेन्स में सिर्फ़ कामन वेल्थ के मुल्कों के शरीक होने के बवाजूद पूरे दक्खिन पूरबी एशिया के आर्थिक मसलों पर सोच विचार किया गया था और किसी नई बात या सिडनी के समझौते पर बातचीत किये बग़ैर इन मसलों पर दोबारा ग़ौर करने से कोई फ़ायदा न होगा. इससे एक शक यह पैदा हुआ था कि बागियो कानफ्रेन्स में सोच विचार किया

آرتھک اور تکنیکل ماہر بھیجے جائیں اور ان ملکوں کے آدمیوں کو اسطرح کے کام سکھائے جائیں . اس فیصلے کے بارے میں ایک بات یہ کہی جا سکتی ہے کہ اگر اِس کی بدولت ایشیائی دیسوں کی آرتھک حالت سدھر گئی اور جنتا کی بے چینی کا علاج ہو گیا تو پھر کمیونزم کا پودا پروان نہیں چڑھ سکے گا . مگر اسی لاکھ پونڈ کا یہ فنڈ یا ڈیڑھ کروڑ پونڈ کا وہ پروگرام جو ستمبر کی کامن ویلتھ کانفرنس میں بنایا جانے والا ھے' وہ کام نہیں کرسکتا جس کے لئے یو . این . او . کے ایک آرتھک کمیشن نے ۱۲ ارب ڈالر کا تخمینہ لگایا ھے . اس کے علاوہ آرتھک پروگرام چاہے جتنا بڑا ہو اس سے اس راج نیتک بے چینی کا علاج نہیں ہو سکتا جو ملایا اور انڈو چین کی جنتا کو کمیونزم کی طرف کھینچے لئے جاتی ھے .

باگیو میں ناکامی

سڈنی کانفرنس کے فوراً ھی بعد فلپائین کے شہر باگیو میں دکھن پوربی ایشیا کے غیر کمیونسٹ ملکوں کی ایک اور کانفرنس ہوئی ' نہ معلوم کیوں . اس لئے کہ سڈنی کانفرنس میں صرف کامن ویلتھ کے ملکوں کے شریک ھونے کے باوجود پورے دکھن پوربی ایشیا کے آرتھک مسئلوں پر سوچ بچار کیا گیا تھا اور کسی نئی بات یا سڈنی کے سمجھوتے پر بات چیت کئے بغیر اُن مسئلوں پر دوبارہ غور کرنے سے کوئی فائدہ نہ ھوتا . اس سے ایک شک یہ پیدا ھوا تھا کہ باگیو کانفرنس میں سوچ بچار کیا

जमाने में इस समझौते वाले मुल्कों की भी एक कानफ्रेन्स हुई जिस मे फौजी और आर्थिक मसलों पर सोच विचार करके एक मिला जुला हाई कमान्ड बनाने का फैसला किया गया. इस सिलसिले की एक कड़ी फ्रान्स के विदेश मन्त्री शूमान की यह तजवीज है कि पच्छिमी योरप में कोयला और लोहे की पैदावार और तकसीम को अलग अलग मुल्कों के हाथ से निकाल कर एक मरकजी कमेटी के सुपुर्द कर दिया जाय. इस तरह फ्रान्स को जर्मनी के लोहे और कोयले के गलत इस्तेमाल का डर नहीं रहेगा और सब देशों को इस दौलत में हिस्सा मिल जायगा. मगर बरतानिया के पास अपनी दौलत पहले ही से मौजूद है और वह उसे दूसरों के साथ मिलाते डरता है इसलिये कि उसे देना ज्यादा होगा और मिलेगा कम. यही मुश्किल बचाव के समझौते के सिलसिले मे भी पैदा होती है. मगर अभी रूस का डर दूसरी डर वाली बातों पर छाया हुआ है.

सिडनी मे समझौता

यही डर कामनवेल्थ की सलाहकार कमेटी के सिडनी (आस्ट्रेलिया) वाले इजलास पर भी छाया हुआ था मगर इस कमेटी को एक और डर इस बात का था कि कहीं हिन्दुस्तान इस से अलग न हो जाय. इस लिये कम्युनिज्म के विरोध मे आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैन्ड के प्रतिनिधियों की धुआँधार तकरीरों के बावजूद सिडनी कानफ्रेन्स इस फैसले पर खतम हो गई कि ८० लाख पौन्ड का एक फन्ड खोला जाय जिससे दक्खिन पूरबी एशिया के मुल्कों को सामाजिक,

زمانے میں اس سمجھوتے والے ملکوں کی بھی ایک کانفرنس ہوئی جس میں فوجی اور آرتھک مسئلوں پر سوچ وچار کرکے ایک ملا جلا ھائی کمانڈ بنانے کا فیصلہ کیا گیا۔ اسی سلسلے کی ایک کڑی فرانس کے ودیش منتری شومان کی یہ تجویز ھے کہ پچھمی یورپ میں کوئلہ اور لوھے کی پیداوار اور تقسیم کو الگ الگ ملکوں کے ھاتھ سے نکال کر ایک مرکزی کمیٹی کے سپرد کر دیا جائے۔ اس طرح فرانس کو جرمنی کے لوھے اور کوئلے کے غلط استعمال کا ڈر نہیں رھے گا اور سب دیشوں کو اس دولت میں حصہ مل جائیگا مگر برطانیہ کے پاس اپنی دولت پہلے ھی سے موجود ھے اور وہ اسے دوسروں کے ساتھ ملاتے ڈرتا ھے۔ اس لئے کہ اسے دینا زیادہ ھوگا اور ملے گا کم یہی مشکل بچاؤ کے سمجھوتے کے سلسلہ میں بھی پیدا ھوتی ھے مگر ابھی روس کا ڈر دوسری ڈر والی باتوں پر چھایا ھوا ھے

سڈنی میں سمجھوتہ

یہی ڈر کامن ویلتھ کی صلاح کار کمیٹی کے سڈنی (آسٹریلیا) والے اجلاس پر بھی چھایا ھوا تھا۔ مگر اس کمیٹی کو ایک اور ڈر اس بات کا تھا کہ کہیں ھندستان اس سے الگ نہ ھوجائے۔ اسی لئے کمیونزم کے ورودھ میں آسٹریلیا اور نیوزی لینڈ کے پرتی ندھیوں کی دھواں دھار تقریروں کے باوجود سڈنی کانفرنس اس فیصلے پر ختم ھوگئی کہ اسی لاکھ پونڈ کا ایک فنڈ کھولا جائے جس سے دکھن پوربی ایشیا کے ملکوں کو سماجک،

कि इस तरह " कम्युनिस्ट साम्राज " को हराया जा सकेगा. यही मकसद इस कानून का भी है जो आजकल अमरीकी पार्लियामेन्ट के सामने पेश है और जिस के पास हो जाने पर योरप और एशिया के गैर कम्युनिस्ट मुल्कों को हथियार भेजे जायेंगे

जर्मनी का मसला

इसी मकसद को लेकर अमरीका के विदेश मन्त्री मई मे लन्दन आये थे जहाँ बरतानिया और फ्रान्स के विदेश मन्त्रियों के साथ उनकी कानफ्रेन्स हुई इस कानफ्रेन्स मे पच्छिमी राष्ट्रों ने पूरबी जर्मनी मे जहाँ रूस का कब्जा या निगरानी है, पुलिस के नाम से फौज भरती किये जाने पर एतराज किया है और अपने कब्जे पच्छिमी के इलाके की जनता को इतमीनान दिलाने के लिये तय किया है कि इस इलाके को पूरबी बिरादरी मे बराबर का दर्जा दे दिया जाये, मगर इसके साथ उन्होंने दो शर्तें रक्खी हैं. एक यह कि पच्छिमी जर्मनी की सरकार वहाँ की जनता को अपने साथ रक्खे और दूसरे यह कि यह सरकार खुद उनके भरोसे का हो

योरप मे भेद भाव

पच्छिमी जर्मनी को योरपी बिरादरी मे शामिल करने का फैसला एक तरह से रूस के लिये इस बात की आगाही है कि अगर उसने पूरबी जर्मनी के कम्युनिस्टों के जरिये पच्छिमी जर्मनी या बर्लिन के पच्छिमी हिस्से पर कब्जा करने की कोशिश की तो योरप के वह तमाम मुल्क जो एटलांटिक समझौते मे शरीक हैं एक दल होकर इसका मुकाबला करेंगे. विदेश मन्त्रियों की कानफ्रेन्स के

کہ اس طرح ''کمیونسٹ سامراج'' کو ہرایا جاسکے گا ۔ یہی مقصد اس قانون کا بھی ہے جو آج کل امریکی پارلیمنٹ کے سامنے پیش ہے اور جسکے پاس ہوجانے پر یورپ اور ایشیا کے غیر کمیونسٹ ملکوں کو ہتھیار بھیجے جائینگے ۔

جرمنی کا مسئلہ

اسی مقصد کو لے کر امریکہ کے ودیش منتری مئی میں لندن آئے تھے جہاں برطانیہ اور فرانس کے ودیش منتریوں کے ساتھ اُن کی کانفرنس ہوئی اس کانفرنس میں پچھمی راشٹروں نے پوربی جرمنی میں جہاں روس کا قبضہ یا نگرانی ہے پولس کے نام سے فوج بھرتی کئے جانے پر اعتراض کیا ہے اور اپنے قبضہ کے پچھمی علاقے کی جنتا کو اطمینان دلانے کے لئے طے کیا ہے کہ اس علاقے کو یوروپی برادری میں برابر کا درجہ دے دیا جائے مگر اس کے ساتھ انہوں نے دو شرطیں رکھی ہیں ایک یہ کہ پچھمی جرمنی کی سرکار وہاں کی جنتا کو اپنے ساتھ رکھے اور دوسرے یہ کہ یہ سرکار خود ان کے بھروسے کی ہو ۔

یورپ میں بھید بھاؤ

پچھمی جرمنی کو یوروپی برادری میں شامل کرنے کا فیصلہ ایک طرح سے روس کے لئے اس بات کی آگاہی ہے کہ اگر اس نے پوربی جرمنی کے کمیونسٹوں کے ذریعے پچھمی جرمنی یا برلن کے پچھمی حصے پر قبضہ کرنے کی کوشش کی تو یوروپ کے وہ تمام ملک جو اٹلانٹک سمجھوتے میں شریک ہیں ایک دل ہوکر اسکا مقابلہ کریں گے ۔ ودیش منتریوں کی کانفرنس کے

आपस में कोई समझौता नहीं कर पाते और जब किसी को मदद देते हैं तो उससे तरह तरह के वायदे लेते हैं.

सूझ की कमी

मोसियो ली ने सच कहा है कि जब तक इन राष्ट्रों मे यह सूझ पैदा नहीं होती कि दुनिया में एक से ज्यादा राजनैतिक और आर्थिक सिस्टम एक साथ रह सकते हैं और आपस में मेल जोल रख सकते हैं उस वक़्त तक उनकी बात चीत से कोई नतीजा नही निकल सकता. इस लिये कि इस सूझ के बिना हर राष्ट्र हथियारों के कन्ट्रोल और कमी पर समझौता करने के बजाये उनको छिपाता और बढ़ाता रहेगा ताकि लड़ाई छिड़ने पर अपने मुख़ालिफ को हरा दे. इस तरह यू० एन० ओ० में नये राष्ट्रों को दाख़िल करने से पहले यह देखा जायगा कि वह किस गिरोहका साथ देगें. हर गिरोह ऐसे राष्ट्र के दाख़िले को रोकेगा जिस के बारे मे उसे अपनी हॉ मे हॉ मिलाने का यकीन नही होगा. यही बात यू० एन० ओ० के ज़रिये मदद देते समय सामने आयगी. इस मामले मे एक और मुशिकल यह है कि अमरीका. जिसके पास दुनिया मे सब से ज्यादा दौलत है, यू० एन० ओ० के ज़रिये मदद देने के बजाय ख़ुद अपनी तरफ से डालर और हथियार बॉट रहा है. मतलब यह है कि जो कुछ दिया जाय वह अपने ही आदमियों को मिले और अपने मुख़ालिफो के ख़िलाफ इस्तेमाल किया जाय. इसी लिये अमरीका के प्रधान ट्रूमैन ने दूसरे मुल्को की मदद के लिये ३ अरब १२ करोड़ १४ लाख ५० हज़ार डालर की मन्ज़ूरी के क़ानून पर दस्तख़त करते हुए कहा है

آپس میں کوئی سمجھوتہ نہیں کرپاتے اور جب کسی کو مدد دیتے ہیں تو اُس سے طرح طرح کے وعدے لیتے ہیں ۔

سوجھ کی کمی

موسیو لی نے سچ کہا ہے کہ جب تک ان راشٹروں میں یہ سوجھ پیدا نہیں ہوتی کہ دنیا میں ایک سے زیادہ راج نیتک اور آرتھک سسٹم ایک ساتھ رہسکتے ہیں اور آپس میں میل جول رکھ سکتے ہیں اس وقت تک ان کی بات چیت سے کوئی نتیجہ نہیں نکل سکتا ۔ اِسلئے کہ اس سوجھ کے بنا ہر راشٹر ہتھیاروں کے کانٹرول اور کمی پر سمجھوتہ کرنے کے بجائے ان کو چھپاتا اور بڑھاتا رہے گا تاکہ لڑائی چھڑنے پر اپنے مخالف کو ہرا دے ۔ اسی طرح یو ۔ این ۔ او ۔ میں نئے راشٹروں کو داخل کرنے سے پہلے یہ دیکھا جائے گا کہ وہ کس گروہ کا ساتھ دینگے ۔ ہر گروہ ایسے راشٹر کے داخلے کو روکے گا جس کے بارے میں اسے اپنی ہاں میں ہاں ملانے کا یقین نہیں ہوگا ۔ یہی بات یو ۔ این ۔ او ۔ کے ذریعے مدد دیتے سمے سامنے آئے گی ۔ اِس معاملہ میں ایک اور مشکل یہ ہے کہ امریکہ' جسکے پاس دنیا میں سب سے زیادہ دولت ہے' یو ۔ این ۔ او ۔ کے ذریعے مدد دینے کے بجائے خود اپنی طرف سے ڈالر اور ہتھیار بانٹ رہا ہے ۔ مطلب یہ ہے کہ جو کچھ دیا جائے وہ اپنے ہی آدمیوں کو ملے اور اپنے مخالفوں کے خلاف اِستعمال کیا جائے ۔ اِسلئے امریکہ کے پردھان ٹرومین نے دوسرے ملکوں کی مدد کے لئے ۳ ارب ۱۲ کروڑ ۱۴ لاکھ ۵۰ ہزار ڈالر کی منظوری کے قانون پر دستخط کرتے ہوئے کہا ہے

बना लिया जाता और पूरा न होता तो दुनिया में शान्ति की तरफ से बड़ी नाउम्मीदी पैदा हो जाती. अब अगर यू० एन०, ओ० की जनरल असेम्बली की बैठक में, जो अगले सितम्बर में होने वाली है, इस प्रोग्राम के उसूल मन्जूर कर लिये गये तो यह नाउम्मीदी २० बरस के लिये टल जायगी. मोसियो ली के बयान से पता चलता है कि वह शान्ति के लिये छोटे राष्ट्रों की कोशिश को बड़ी अहमियत देते हैं. और यह बिचार बिलकुल ठीक है इस लिये कि छोटे राष्ट्र चाहे लड़ाई जीतने वाले गिरोह के साथ हों और चाहे हारने वाले के साथ दोनों हालतों में तबाह हो जाते हैं और इसी कारन वह जबान से चाहे कुछ ज्यादा न कह सकें मगर दिल से शान्ति चाहते हैं. हिन्दुस्तान की गनती पूंजी और शक्ति के एतबार से इन्हीं छोटे राष्ट्रों में होती है और यहाँ के रहने वाले चाहे न जानते हों लेकिन दुनिया के समझदार लोग मानते हैं कि शान्ति की लड़ाई गांधीजी के फ़लसफ़े को सामने रखकर और हिन्दुस्तान के रास्ते पर चल कर ही जीती जा सकती है

यह रास्ता अपने और दूसरे पर विश्वास करने और खुद जीने और दूसरे को जीने देने का रास्ता है. दूसरा रास्ता वह है जिस पर आजकल के बड़े बड़े राष्ट्र चल रहे हैं. उस रास्ते पर यह राष्ट्र जितना आगे बढ़ते हैं उतना ही शान्ति की मंजिल से दूर होते जाते हैं, उनको अपने ऊपर विश्वास नहीं है इसलिये वह नये नये और ज्यादा से ज्यादा तबाही लाने वाले हथियार बना रहे हैं. दूसरों पर भी विश्वास नहीं है जिसकी वजह से वह दिल की सफ़ाई के साथ

بنا لیا جاتا اور پورا نہ ہوتا تو دنیا میں شانتی کی طرف سے بڑی نا اُمیدی پیدا ہوجاتی. اب اگر یو. این. او. کی جنرل اسمبلی کی بیٹھک میں، جو اگلے ستمبر میں ہونے والی ہے، اس پروگرام کے اصول منظور کر لئے گئے تو یہ نا اُمیدی بیس برس کے لئے ٹل جائے گی. موسیولی کے بیان سے پتہ چلتا ہے کہ وہ شانتی کے لئے چھوٹے راشٹروں کی کوشش کو بڑی اہمیت دیتے ہیں. اور یہ وچار بالکل ٹھیک ہے اس لئے کہ چھوٹے راشٹر چاہے لڑائی جیتنے والے گروہ کے ساتھ ہوں اور چاہے ہارنے والے کے ساتھ دونوں حالتوں میں تباہ ہوجاتے ہیں اور اس کارن وہ زبان سے چاہے کچھ زیادہ نہ کہہ سکیں مگر دل سے شانتی چاہتے ہیں. ہندستان کی گنتی پونجی اور شکتی کے اعتبار سے انہیں چھوٹے راشٹروں میں ہوتی ہے. اور یہاں کے رہنے والے چاہے نہ جانتے ہوں لیکن دنیا کے سمجھدار لوگ مانتے ہیں کہ شانتی کی لڑائی گاندھی جی کے فلسفے کو سامنے رکھکر اور ہندستان کے راستے پر چل کر ہی جیتی جا سکتی ہے.

یہ راستہ اپنے اور دوسرے پر وشواس کرنے اور خود جینے اور دوسرے کو جینے دینے کا راستہ ہے. دوسرا راستہ وہ ہے جس پر آج کل کے بڑے بڑے راشٹر چل رہے ہیں. اس راستہ پر یہ راشٹر جتنا آگے بڑھتے ہیں اتنا ہی شانتی کی منزل سے دور ہوتے جاتے ہیں. ان کو اپنے اوپر وشواس نہیں ہے اس لئے وہ نئے نئے اور زیادہ سے زیادہ تباہی لانے والے ہتھیار بنا رہے ہیں. دوسروں پر بھی وشواس نہیں ہے جس کی وجہ سے وہ دل کی صفائی کے ساتھ

और नये देशों को यू० एन० ओ० का मेम्बर बनाने में जो रुकावटें हैं उनको खतम कर देना चाहिये. दूसरी तरफ सब सरकारों को इन्सानी अधिकारों के एलान पर अमल करना चाहिये और पराधीन कौमों को आजादी के लायक बनाने और आजादी दिलाने के लिये ट्रस्टीशिप कौन्सिल जो काम कर रही है उसमें शरीक होना चाहिये. इसके अलावा जो देश तरक्की नहीं कर सके हैं उनको मदद मिलना चाहिये और यू० एन० ओ० की जो शाखें इन्सान की तन्दुरुस्ती बनाने व खुराक और खेती के मसलों को हल करने के लिये बनाई गई हैं उनको अपना काम आगे बढ़ाने के लिये रुपया मिलना चाहिये दुनिया में शान्ति कायम करने के लिये यह दोनों बातें जरूरी हैं. इसलिये कि अगर एटम और हथियारों के कन्ट्रोल और कमी पर बड़े राष्ट्रोंमें कोई समझौता न हुआ तो वह एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिये अपनी अपनी शक्ति बढ़ाते रहेंगे और बात बात पर एक दूसरे से उलझते रहेंगे. इसी तरह अगर दुनिया के सब मुल्कों की जनता को पेट की रोटी और तन का कपड़ा न मिला तो वह शान्ति से ज्यादा क्रान्ति की फिक्र करती रहेगी.

इस प्रोग्राम के लिये बीस बरस का समय रक्खा गया है. कुछ तो इस लिये के हथियारों के कन्ट्रोल और कमी, राजनीतिक और आर्थिक निगाह से गैर तरक्की पाये हुए देशों की तरक्की का काम दो चार महीने या दो चार बरस में पूरा नहीं हो सकता. पर इतनी लम्बी मुद्दत का प्रोग्राम बनाने का एक कारन यह भी हो सकता है कि छोटी मुद्दत का प्रोग्राम अगर

اور نئے دیشوں کو یو . این . او . کا ممبر بنانے میں جو رکاوٹیں ہیں ان کو ختم کر دینا چاہئے دوسری طرف سب سرکاروں کو انسانی ادھیکاروں کے اعلان پر عمل کرنا چاہئے اور پرادھین قوموں کو آزادی کے لائق بنانے اور آزادی دلانے کے لئے ٹرسٹی شپ کونسل جو کام کر رہی ہے اس میں شریک ہونا چاہئے . اس کے علاوہ جو دیش ترقی نہیں کر سکے ہیں ان کو مدد ملنا چاہئے اور یو . این . او . کی جو شاخیں انسان کی تندرستی بنانے اور خوراک اور کھیتی کے مسئلوں کو حل کرنے کے لئے بنائی گئی ہیں ان کو اپنا کام آگے بڑھانے کیلئے روپیہ ملنا چاہئے . دنیا میں شانتی قائم کرنے کے لئے یہ دونوں باتیں ضروری ہیں . اس لئے کہ اگر ایٹم اور ہتھیاروں کے کنٹرول اور کمی پر بڑے راشٹروں میں کوئی سمجھوتہ نہ ہوا تو وہ ایک دوسرے کو نیچا دکھانے کے لئے اپنی اپنی شکتی بڑھاتے رہیں گے اور بات بات پر ایک دوسرے سے الجھتے رہیں گے . اسی طرح اگر دنیا کے سب ملکوں کی جنتا کو پیٹ کی روٹی اور تن کا کپڑا نہ ملا تو وہ شانتی سے زیادہ کرانتی کی فکر کرتی رہے گی

اس پروگرام کے لئے بیس برس کا سمے رکھا گیا ہے کچھ تو اس لئے کہ ہتھیاروں کے کنٹرول اور کمی' راج نیتک اور آرتھک نگاہ سے غیر ترقی پائے ہوئے دیشوں کی ترقی کا کام دو چار مہینے یا دو چار برس میں پورا نہیں ہو سکتا . پر اتنی لمبی مدت کا پروگرام بنانے کا ایک کارن یہ بھی ہوسکتا ہے کہ چھوٹی مدت کا پروگرام اگر

दुनिया का हाल



دنیا کا حال

भाई इशरत अली सिद्दीक़ी

यू० एन० ओ० के सैकरेट्री जनरल मोसियो तर्गेफ ली 'ठन्डी लड़ाई' को जिस वजह से और जिस तरह से खतम करना चाहते हैं उसका कुछ हाल पिछले महीने के 'नया हिन्द' में बताया जा चुका है. अब वह मास्को मे मार्शल स्टालिन से मिल कर अमरीका के शहर लेकसकसैस पहुंच गये हैं जहाँ यू० एन० ओ० का दफ्तर है. उन्होंने दुनिया में शान्ति कायम करने के लिये एक प्रोग्राम यू० एन० ओ० के सब मेम्बरो के सामने पेश किया है जिसमें एक तरफ बड़े राष्ट्रो की तनातनी और दूसरी तरफ छोटे राष्ट्रों की ग़रीबी और बेचैनी दूर करने की तजवीज़े बताई गई हैं

शान्ति का प्रोग्राम

मोसियो ली की राय मे एटम वाले हथियारो पर कन्ट्रोल लगाने और दूसरे मामूली हथियारों मे कमी करने के लिये जो कमीशन मुक़र्रर किये गये उनको अपना काम फिर शुरू कर देना चाहिये

(بھائی عشرت علی صدیقی)

یو . این . او . کے سکریٹری جنرل موسیو ترگیف لی 'ٹھنڈی لڑائی' کو جس وجہ سے اور جس طرح سے ختم کرنا چاہتے ہیں اس کا کچھ حال پچھلے مہینے کے 'نیا ہند' میں بتایا جا چکا ہے . اب وہ ماسکو میں مارشل استالن سے مل کر امریکہ کے شہر لیک سکسس پہنچ گئے ہیں جہاں یو . این او کا دفتر ہے . انہوں نے دنیا میں شانتی قائم کرنے کے لئے ایک پروگرام یو . این . او . کے سب ممبروں کے سامنے پیش کیا ہے جس میں ایک طرف بڑے راشٹروں کی تناتنی اور دوسری طرف چھوٹے راشٹروں کی غریبی اور بے چینی دور کرنے کی تجویزیں بتائی گئی ہیں .

شانتی کا پروگرام

موسیو لی کی رائے میں ایٹم والے ہتھیاروں پر کنٹرول لگانے اور دوسرے معمولی ہتھیاروں میں کمی کرنے کے لئے جو کمیشن مقرر کئے گئے ان کو اپنا کام پھر شروع کردینا چاہئے

भूक और बेकारी के खिलाफ है. आम जनता इस के खिलाफ संगठित हो रही है. चाहे वह जनता फ्रान्स, इटली, यूनान, पच्छिमी जर्मनी, तुर्की की हो या चीन, हिन्द चीन, वीटनाम, बरमा, इन्डोनीशिया, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की हो—उसको पेट की रोटी की जरूरत है. बमों और बन्दूकों की नहीं. क्या अमरीका का पूँजीवाद उन बमों और बन्दूकों से उनकी सहायता करके उनका इलाज कर सकता है. अगर यह बात सच होती तो फिर चीन में अमरीका को मुँह की न खानी पड़ती और ५० करोड़ आबादी का चीन समाजवाद की ओर न बढ़ता.

अमरीका की राजनीति हर मोरचे पर हार रही है मगर जंग पर उसे अभी पूरा भरोसा है. वह समझता है कि तीसरी लड़ाई जरूर इस पूँजी वादी संकट को दूर कर सकती है. मगर यह वह धोका है जो अमरीकी कारखाने दार खुद अपने आप को दे रहे हैं. लेकिन अब तो जंग हो या शान्ति अमरीकी पूँजी वाद को उसकी आखिरी मौत से कोई नहीं बचा सकता क्योंकि जंग की ताक़तें दिन पर दिन घटती जा रही हैं और शान्ति की ताक़तें बढ़ती जा रही हैं. और जिस तरह पूँजीवाद की मौत यक़ीनी है उसी तरह यह भी तय है कि यह दुनिया अब जंग से तंग आ चुकी है और अब वह जंगबाजों का साथ छोड़ कर जल्द ही उन लोगों के साथ आ जायगी जो सारी दुनिया में शान्ति, प्रेम और भाई चारा देखना चाहते हैं.

بھوک اور بیکاری کے خلاف ہے۔ عام جنتا اس کے خلاف سنگٹھت ہو رہی ہے۔ چاہے وہ جنتا فرانس، اٹلی، یونان، پچھمی جرمنی، ترکی کی ہو یا چین ہند چین، ویٹ نام، برما، انڈونیشیا، ہندستان اور پاکستان کی ہو — اس کے پیٹ کو روٹی کی ضرورت ہے بموں اور بندوقوں کی نہیں۔ کیا امریکہ کا پونجی واد اُن بموں اور بندوقوں سے اُن کی سہایتا کرکے اُن کا علاج کرسکتا ہے۔ اگر یہ بات سچ ہوتی تو پھر چین میں امریکہ کو منہ کی نہ کھانی پڑتی اور ۵۰ کروڑ آبادی کا چین سماجواد کی اور نہ بڑھتا۔

امریکہ کی راج نیتی ہر مورچے پر ہار رہی ہے مگر جنگ پر اُسے ابھی پورا بھروسہ ہے۔ وہ سمجھتا ہے کہ تیسری لڑائی ضرور اس پونجی وادی سنکٹ کو دور کرسکتی ہے مگر یہ وہ دھوکا ہے جو امریکی کارخانے دار خود اپنے کو دے رہے ہیں لیکن۔ اب تو جنگ ہو یا شانتی امریکی پونجی واد کو اُس کی آخری موت سے کوئی نہیں بچا سکتا کیونکہ جنگ کی طاقتیں دن پر دن گھٹتی جا رہی ہیں اور شانتی کی طاقتیں بڑھتی جا رہی ہیں اور جس طرح پونجی واد کی موت یقینی ہے اُسی طرح یہ بھی طے ہے کہ یہ دنیا اب جنگ سے تنگ آچکی ہے اور اب وہ جنگ بازوں کا ساتھ چھوڑ کر جلد ہی ان لوگوں کے ساتھ آجائیگی جو ساری دنیا میں شانتی، پریم اور بھائی چارہ دیکھنا چاہتے ہیں۔

ब्रिटिश लेबर गवरमेन्ट १९५० ई० मे जंगी कामो पर एक अरब २० करोड़ पौन्ड खर्च कर रही है जबकि १९४९ ई० मे ८० करोड़ खर्च हुए थे. १९४६ ई० में फ्रान्स का जंगी खरचा एक खरब ७९ अरब फ्रान्क थे. लेकिन १९४९ में ८ खरब फ्रान्क हो गये. इटली में ६ खरब लीरा का बजट मंजूर हुआ है जो पूरे बजट का ⅓ हिस्सा है. तुरकी का फौजी बजट ४ खरब ६० अरब लीरा है. सोयडन का जंगी बजट १९३९ के बजट से ८ गुना ज्यादा हो गया है.

इसका असर आम जनता पर यह है कि टैक्स जंग से पहले के मुक़ाबले मे दुगने से भी ज्यादा हो गये हैं मजदूरों की आमदनी का ३५ फ़ीसदी से ज्यादा हिस्सा बरतनिया मे टैक्स की भेंट चढ़ जाता है.

इस तरह मार्शल योजना का साया गिद्ध की तरह योरप के सर पर मन्डला रहा है और अब यह गिद्ध अपनी नजरें ऐशिया के देशों की ओर भी उठा रहा है. उसकी परेशानी साफ़ है. उसे अपने कारखाने चलाने हैं, अपना माल बेचना है, अपने गिरते हुए आर्थिक ढाँचे में जान डालना है चाहे इसके लिये इसे लड़ाई ही क्यों न लड़नी पड़े. लड़ाई से कम से कम यह तो होगा कि अमरीका के कारखानों में एक बार फिर गरमी आयेगी और वह बड़े जोरों से चलने लगेंगे. डालर सहायता के नाम पर वीट नाम मे जंगी सामान भेजा जा रहा है. कम्युनिज्म के कुचलने के नाम पर अमरीका अपने कारखानों को चलाने का बन्दोबस्त करना चाहता है और जंग के हथियारों के बल पर समाजवाद को रोकना चाहता है. लेकिन साफ़ बात है कि वह चाहे योरप के देश हों या ऐशिया के, उन की लड़ाई

برٹش لیبر گورنمنٹ سن ۱۹۵۰ع میں جنگی کاموں پر ایک ارب ۲۰ کروڑ پونڈ خرچ کر رہی ہے . جب کہ سن ۱۹۴۹ع میں ۸۰ کروڑ خرچ ہوئے تھے . سن ۱۹۴۶ع میں فرانس کا جنگی خرچہ ایک کھرب ۷۹ ارب فرانک تھے لیکن سن ۱۹۴۹ع میں ۸ کھرب فرانک ہوگئے . اٹلی میں ۳ کھرب لیرا کا بجٹ منظور ہوا جو پورے بجٹ کا ۱/۳ حصہ ہے . ترکی کا فوجی بجٹ ۴ کھرب ۶۰ ارب لیرا ہے . سویڈن کا جنگی بجٹ سن ۱۹۳۹ع کے بجٹ سے آٹھ گنا زیادہ ہوگیا ہے .

اس کا اثر عام جنتا پر یہ ہے کہ ٹیکس جنگ سے پہلے کے مقابلے میں دوگنے سے بھی زیادہ ہوگئے ہیں . مزدوروں کی آمدنی کا ۳۵ فیصدی سے زیادہ حصہ برطانیہ میں ٹیکس کی بھینٹ چڑھ جاتا ہے .

اس طرح مارشل یوجنا کا سایہ گدھ کی طرح یورپ کے سر پر منڈلا رہا ہے اور اب یہ گدھ اپنی نظریں ایشیا کے دیشوں کی اور بھی اٹھا رہا . اس کی پریشانی صاف ہے . اسے اپنے کارخانے چلانے ہیں، اپنا مال بیچنا، ہے اپنے گرتے ہوئے آرتھک ڈھانچے میں جان ڈالنا ہے چاہے اس کے لئے اسے لڑائی ہی کیوں نہ لڑنی پڑے . لڑائی سے کم سے کم یہ تو ہوگا کہ امریکہ کے کارخانوں میں ایک بار پھر گرمی آجائے گی اور وہ بڑے زوروں سے چلنے لگیں گے . ڈالر سہایتا کے نام پر ویٹ نام میں جنگی سامان بھیجا جا رہا ہے . کمیونزم کے کچلنے کے نام پر امریکہ اپنے کارخانوں کو چلانے کا بندوبست کرنا چاہتا ہے اور جنگ کے ہتھیاروں کے بل پر سماجواد کو روکنا چاہتا ہے لیکن صاف بات ہے کہ وہ چاہے یورپ کے دیش ہوں یا ایشیا کے، ان کی لڑائی

मार्शल योजना के अनुसार अमरीकी पूँजी पति योरप के देशों को वह सामान भेज रहे हैं जो खुद उन देशो के कारखाने तय्यार नहीं कर सकते. उन्होंने उन फैकट्रियों और कारखानों को कर्ज़ देने से साफ़ इन्कार कर दिया है जो मन्डा में उनका मुक़ाबला करते हैं. अब इटली का मामला लीजिये. वहाँ धात काटने की मशीनो की सख्त ज़रूरत है लेकिन उस में अमरीकी पूँजीपति टाल मटोल करते हैं. पूरबी योरप से उसे व्योपार करने में हर तरह की रुकावट डाली जा रही है जिस के कारन इटली, जो पहले कच्चा माल मँगा कर तय्यार माल दूसरे देशों को भेजा करता था, अब धीरे धीरे अमरीकी मन्डी में बदलता जा रहा है. अमरीका से ज़बरदस्ती माल लाने का नतीजा यह हो रहा है कि इटली और फ्रान्स के कारख़ाने तेज़ी से बन्द हो रहे हैं. सरकारी बयान है कि इटली मे १९४८ के आख़िर तक १२८७ कारख़ाने बन्द हो गये हैं. दवाओं के कारख़ानो में पिछले साल अगस्त में ४० फीसदी पैदावार कम हो गइ है. और आज कल इटली के सूती कपड़े, मोटर और जहाज़ बनाने के कारख़ानो में १५ में से सिर्फ़ ४ में काम हो रहा है और उन के काम मे भी कमी हो गई है. यह बात नही है कि इटली को इन चीजो की ज़रूरत नही है बल्कि अब यह तमाम सामान अमरीका से खरीदा जारहा है. आज फ्रान्स और इटली मजबूर है कि अपनी ज़रूरत की चीजें अमरीका से ख़रीदें यू० एन० ओ० के सेक्रिटेरियट ने लिखा है कि १९४९ के पहले ९ महीने तक इटली का नुकसान २८ करोड़ ८० लाख डालर तक पहुंच चुका है.

मार्शल प्लान के योरप का अन्दाज़ा उन देशो के फ़ौजी बजट को देख कर होता है. उन के फ़ौजी ख़र्चे बराबर बढ़ते जा रहे हैं.

مارشل یوجنا کے انوسار امریکی پونجی پتی یورپ کے دیشوں کو وہ سامان بھیج رہے ہیں جو خود ان دیشوں کے کارخانے تیار نہیں کرسکتے. انہوں نے اُن فیکٹریوں اور کارخانوں کو قرض دینے سے صاف اِنکار کردیا ہے جو ملکی میں انکا مقابلہ کرتے ہیں . اب اٹلی کا معاملہ لیجئے . وہاں دھات کاٹنے کی مشینوں کی سخت ضرورت ہے لیکن اس میں امریکی پونجی پتی ٹال مٹول کرتے ہیں. پوربی یورپ سے اُسے بیوپار کرنے میں ہر طرح کی رکاوٹ ڈالی جارہی ہے جس کے کارن اٹلی' جو پہلے کچا مال منگاکر تیار مال دوسرے دیشوں کو بھیجا کرتا تہا' اب دھیرے دھیرے امریکی ملکی میں بدلتا جارہا ہے . امریکہ سے زبردستی مال لانے کا نتیجہ یہ ہو رہا ہے کہ اٹلی اور فرانس کے کارخانے تیزی سے بند ہو رہے ہیں . سرکاری بیان ہے کہ اٹلی میں ۱۹۴۸ کے آخر تک ۱۲۸۷ کارخانے بند ہوگئے ہیں . دواؤں کے کارخانوں میں پچھلے سال اگست میں ۴۰ فیصدی پیداوار کم ہوگئی ہے اور آج کل اٹلی کے سوتی کپڑے' موٹر اور جہاز بنانے کے کارخانوں میں ۱۵ میں سے صرف ۴ میں کام ہو رہا ہے اور ان کے کام میں بھی کمی ہوگئی ہے . یہ بات نہیں ہے کہ اٹلی کو ان چیزوں کی ضرورت نہیں ہے بلکہ اب یہ تمام سامان امریکہ سے خریدا جا رہا ہے . آج فرانس اور اٹلی مجبور ہیں کہ اپنی ضرورت کی چیزیں امریکہ سے خریدیں . یو . ان . او . کے سکریٹیریٹ نے لکھا ہے کہ ۱۹۴۹ کے پہلے ۹ مہینے تک اٹلی کا نقصان ۲۸ کروڑ ۸۰ لاکھ ڈالر تک پہنچ چکا ہے .

مارشل پلان کے یورپ کا اندازا ان دیشوں کے فوجی بجٹ کو دیکھ کر ہوتا ہے . ان کے فوجی خرچے برابر بڑھتے جارہے ہیں .

लेकिन अब हमारे देश के सामने भी यह सवाल है कि हिन्दुस्तान क्या अमरीका से क़र्ज़ा लेगा और उसे यहाँ अपने कारखाने खोलने देगा ? अमरीकी पूँजी को न्योता देने वाले यह कहते हैं कि अपने देश की आर्थिक और इन्डिसट्रियल सुधार के लिये जरूरी है कि डालर हिन्दुस्तान मे पूरे मान के साथ आये. मगर उसको यहाँ बुलाने के लिये हमे यह देखना होगा कि डालर से देश को क्या फायदा हो सकता है ? हमारे सामने चीन की मिसाल है जहाँ डालर के साथ फ़ौजी हथियार, मशीन गनें और बन्दूकें भी गईं. हमारे सामने यूनान की मिसाल है जहाँ मार्शल योजना अपनी पूरी शक्ति यूनानी राज गद्दी की रक्षा के लिये इस्तेमाल कर रही है और सैकड़ों आदमियों को शान्ति के नाम पर मौत के घाट उतार दिया जाता है. तुर्की का यह हाल है कि पूरा देश एक बड़ा जेल खाना बन गया है. फ़्रान्स और इटली मे अमरीका से लड़ाई का सामान धड़ा धड़ बन कर आ रहा है. अगर वहाँ के शान्ति प्रेमी जहाजी मजदूर इस सामान को उतारने से इनकार करते हैं तो उन पर गोली चलाई जाती है. यह माल इस लिये आ रहा है कि अमरीका के कारखाने अगर जंग का माल न बनायें तो किस तरह चलें.

आज कल अमरीका से जो भी योजना आ रही है वह फौजी तय्यारी से भरी हुई है. आज मार्शल योजना का अर्थ यही है कि हम उनकी जंगी तैयारी में हाथ बटायें और केवल अमरीकी पूँजी पतियों की रक्षा के लिये दुनिया को एक और लड़ाई की भट्टी में झोंक दें.

لیکن اب ہمارے دیش کے سامنے بھی یہ سوال ہے کہ ہندستان کیا امریکہ سے قرضہ لے گا اور اُسے یہاں اپنے کارخانے کھولنے دیگا ؟ امریکی پونجی کو نیوتا دینے والے یہ کہتے ہیں کہ اپنے دیش کی آرتھک اور انڈسٹریل سدھار کے لئے ضروری ہے کہ ڈالر ہندستان میں پورے مان کے ساتھ آئے مگر اس کو یہاں بلانے کے لئے ہمیں یہ دیکھنا ہوگا کہ ڈالر سے دیش کو کیا فائدہ ہو سکتا ہے ؟ ہمارے سامنے چین کی مثال ہے جہاں ڈالر کے ساتھ فوجی ہتھیار' مشین گنیں اور بندوقیں بھی گئیں . ہمارے سامنے یونان کی مثال ہے جہاں مارشل یوجنا اپنی پوری شکتی یونانی راج گدی کی رکشا کے لئے استعمال کر رہی ہے اور سیکڑوں آدمیوں کو شانتی کے نام پر موت کے گھاٹ اُتار دیا جاتا ہے . ترکی کا یہ حال ہے کہ پورا دیش ایک بڑا جیل خانہ بن گیا ہے . فرانس اور اٹلی میں امریکہ سے لڑائی کا سامان دھڑا دھڑا بن کر آرہا ہے . اگر وہاں کے شانتی پریمی جہازی مزدور اس سامان کو اتارنے سے انکار کرتے ہیں تو ان پر گولی چلائی جاتی ہے . یہ مال اس لئے آرہا ہے کہ امریکہ کے کارخانے اگر جنگ کا مال نہ بنائیں تو کس طرح چلیں .

آجکل امریکہ سے جو بھی یوجنا آرہی ہے وہ فوجی تیاری سے بھری ہوئی ہے آج مارشل یوجنا کا ارتھ یہی ہے کہ ہم ان کی جنگی تیاری میں ہاتھ بٹائیں اور کیول امریکی پونجی پتیوں کی رکھشا کے لئے دنیا کو ایک اور لڑائی کی بھٹی میں جھونک دیں .

हमारे प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू अपने अमरीका के दौरे में अख़बार "एलाइन्स" को एक बयान देते हुए कह चुके हैं—

(१) अमरीकी पूँजीपतियों को इस बात का विश्वास दिलाया जायगा कि वह जो पूँजी लगायें वह बची रहेगी और उसका राष्ट्री करन करने की सूरत में उसका ठीक ठीक बदला दिया जायगा.

(२) यह लाभ वह डालर की सूरत में बाहर ले जा सकेंगें.

(३) जहाँ तक बड़ी सनअतों के राष्ट्रीकरन का सवाल है, हिन्द सरकार अपने पुराने एलान में कह चुकी है कि उसने राष्ट्री करन के सवाल को दस साल के लिये जैसे का तैसा रहने दिया है.

ऐसी सूरत में भविष्य मे इसका कोई आसरा नही है कि हिन्दुस्तान इतने ज्यादा डालर इकट्ठे कर सकेगा जिस से बाहर की पूँजी लगाने वाले को बदला दे सके. इस लिये दस साल के बाद भी अमरीका के किसी कारख़ाने के राष्ट्री करन का सवाल ही पैदा नहीं होता.

यही कारन है कि अमरीकी पूँजी पति धीरे धीरे हिन्दुस्तान में अपनी पूँजी लगाने के लिये तय्यार हो रहे हैं. क्योंकि उनको अन्दाज़ा हो गया है कि हिन्दुस्तान के आर्थिक और राजनैतिक मौसम को उनकी मरज़ी के अनुसार बदल दिया जयगा और अमरीकी पूँजी पति अपनी मरज़ी के अनुसार धन कमा सकेंगें.

ہمارے پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو اپنے امریکہ کے دورے میں " اخبار ایلائنس " کو ایک بیان دیتے ہوئے کہہ چکے ہیں —

(۱) امریکی پونجی پتیوں کو اس بات کا وشواس دلایا جائے گا کہ وہ جو پونجی لگائیں گے وہ بچی رہے گی اور اس کا راشٹری کرن کرنے کی صورت میں اس کا ٹھیک ٹھیک بدلہ دیا جائے گا .

(۲) یہ لابھ وہ ڈالر کی صورت میں باہر لے جا سکیں گے .

(۳) جہاں تک بڑی صنعتوں کے راشٹری کرن کا سوال ہے ' ہند سرکار اپنے پرانے اعلان میں کہہ چکی ہے کہ اس نے راشٹری کرن کے سوال کو دس سال کے لئے جیسے کا تیسا رہنے دیا ہے .

ایسی صورت میں بھوشیہ میں اس کا کوئی آسرا نہیں ہے کہ ہندستان اتنے زیادہ ڈالر اکٹھے کرسکے گا جس سے باہر کی پونجی لگانے والے کو بدلہ دے سکے . اس لئے دس سال کے بعد بھی امریکہ کے کسی کارخانے کے راشٹری کرن کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا .

یہی کارن ہے کہ امریکی پونجی پتی دھیرے دھیرے ہندستان میں اپنی پونجی لگانے کے لئے تیار ہو رہے ہیں کیونکہ ان کو اندازا ہو گیا ہے کہ ہندستان کے آرتھک اور راج نیتک موسم کو ان کی مرضی کے انوسار بدل دیا جائے گا اور امریکی پونجی پتی اپنی مرضی کے انوسار دھن کما سکیں گے .

की ज़रूरत है तो वह डालर के आने के लिये अपने देशों की फ़िज़ा को डालर के मुआफ़िक़ बना लें. फ़िज़ा के मुआफ़िक़ बनने का मतलब इसके सिवा कुछ नहीं है कि अमरीकी पूँजीपति एशिया के देशों में अपने कारख़ाने बनायें और उन्हें ख़ुद चलायें.

अब देखना है कि एशिया के देशो मे कारख़ाने बनाने की ज़रूरत क्यों पड़ी. बात साफ़ है. अमरीका के मुक़ाबले में एशिया के देशों का रहन सहन इतना गिरा हुआ है कि मज़दूरी की कमीही से काफ़ी फ़ायदा उठाया जा सकता है. इसी लिये अमरीकी पूँजी पति यहाँ अपने कारख़ाने खोलना चाहते हैं.

जहाँ तक हिन्दुस्तान का सम्बन्ध है हम हिन्दुस्तानियो को विदेशी व्योपारियो का काफ़ी तजरबा है. हम देख चुके हैं कि एक बार व्योपार के बहाने हमारे राज पर भी कब्ज़ा किया जा चुका है. हम इतिहास के एक तजरबे को दोहराने के लिये बिलकुल तय्यार नहीं हैं. आज चीन से निराश हो कर अमरीका की नज़र हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की ओर लगी हुई है लेकिन अमरीकी पूँजी अभी हिन्दुस्तान आते हुए डरती और झिझकती है.

अमरीकी पूँजीपति चीन के हाथों अपनी इस नीति की हार देख चुके हैं. वह बार बार विश्वास दिलाने की बात करते हैं और इस पूँजी को लगाने से पहले वह यह मालूम करना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान की सरकार इस पूँजी की रक्षा कैसे करेगी. वह दो तरह की ज़मानत चाहते हैं. एक तो यह कि हिन्द सरकार इसका राष्ट्रीकरण न कर ले और दूसरे यह कि हड़ताल होने पर हिन्द सरकार उनकी सहायता करे.

کی ضرورت ہے تو وہ ڈالر کے آنے کے لئے اپنے دیشوں کی فضا کو ڈالر کے لئے موافق بنالیں . فضا کے موافق بننے کا مطلب اس کے سوا کچھ نہیں ہے کہ امریکی پونجی پتی ایشیا کے دیشوں میں اپنے کارخانے بنائیں اور انہیں خود چلائیں .

اب دیکھنا ہے کہ ایشیا کے دیشوں میں کارخانے بنانے کی ضرورت کیوں پڑی . بات صاف ہے . امریکہ کے مقابلے میں ایشیا کے دیشوں کا رہن سہن اتنا گرا ہوا ہے کہ مزدوری کی کمی ہی سے کافی فائدہ اٹھایا جا سکتا ہے . اسی لئے امریکی پونجی پتی یہاں اپنے کارخانے کھولنا چاہتے ہیں .

جہاں تک ہندستان کا سمبندھ ہے ہم ہندستانیوں کو ودیشی بیوپاریوں کا کافی تجربہ ہے . ہم دیکھ چکے ہیں کہ ایک بار بیوپار کے بہانے ہمارے راج پر بھی قبضہ کیا جا چکا ہے . ہم اتہاس کے ایک تجربے کو دہرانے کے لئے بالکل تیار نہیں ہیں . آج چین سے نراش ہوکر امریکہ کی نظر ہندستان اور پاکستان کی اور لگی ہوئی ہے لیکن امریکی پونجی ابھی ہندستان آتے ہوئے ڈرتی اور جھجھکتی ہے .

امریکی پونجی پتی چین کے ہاتھوں اپنی اس نیتی کی ہار دیکھ چکے ہیں . وہ بار بار وشواس دلانے کی بات کرتے ہیں اور اس پونجی کو لگانے سے پہلے وہ یہ معلوم کرنا چاہتے ہیں کہ ہندستان کی سرکار اس پونجی کی رکشا کیسے کرے گی . وہ دو طرح کی ضمانت چاہتے ہیں . ایک تو یہ کہ ہند سرکار اس کا راشٹریکرن نہ کرے اور دوسرے یہ کہ ہڑتال ہونے پر ہند سرکار انکی سہایتا کرے .

ताक़त बढ़ानी पड़ेगी चाहे इसमें अमरीका का ७० फीसदी सरमाया फ़ौजी कामों ही में क्यों न लगता रहे.

यह तो मार्शल योजना का हाल है जो दूसरे देशों पर आर्थिक, राज नैतिक और फ़ौजी तरीके से अपना साया डाल रही है. उसका दूसरा रुख़ यह है कि अमरीकी पूंजी पतियों के सामने एक बड़ा आर्थिक सकट आया हुआ है जिसको वाल स्ट्रीट के बासियो ने तीन साल पहले ही भॉप लिया था. दुनिया की आर्थिक शक्ति इतनी घट गई थी कि वह बाहर का माल ख़रीद न सकती थी इसलिये वह चाहते थे कि उद्योग धन्धों मे पिछड़े हुए देशो को अपना माल देकर उन्हें अपना कर्ज़दार बन लिया जाय और उसके बदने मे उनसे कच्चा माल भी हासिल किया जाये.

अमरीका क़र्ज़ा इसलिये नहीं दे रहा है कि उससे योरप के देशो के उद्योग धन्धे पहले की तरह तरक्क़ी कर जाये और फिर अमरीका के उद्योग धन्धो का मुक़ाबला करें बल्कि उसका मक़सद यह है कि योरप में अमरीका का बाज़ार दिन दूना रात चौगना बढ़े और योरप के यह देश अमरीकी पूंजीपतियो के आर्थिक और राज नैतिक दबाव मे आजायें चाहे योरप की जनता को बेकारी और भूक का मुक़ाबला ही करना पड़े.

यह तो था मार्शल प्लान की बात जो योरप पर लागू है. अब कुछ दिनों से सुनने में आरहा है कि ऐसी ही एक योजना एशिया की भलाई के लिये वाशिंगटन में तय्यार हो रही है. यही कारन है कि कुछ दिनो से अमरीकी पूंजोपति और उनके अख़बार इस बात पर ज़ोर दे रहे हैं कि अगर एशिया के देशो को भी ऐसी ही सहायता

طاقت بڑھانی پڑے گی چاهے اس میں امریکه کا ۷۰ فیصدی سرمایه فوجی کاموں هی میں کیوں نه لگتا رهے .

یه تو مارشل یوجنا کا حال هے جو دوسرے دیشوں پر آرتھک' راج نیتک اور فوجی طریقے سے اپنا سایه ڈال رهی هے . اس کا دوسرا رخ یه هے که امریکی پونجی پتیوں کے سامنے ایک بڑا آرتھک سنکٹ آیا هوا هے جس کو وال اسٹریٹ کے باسیوں نے تین سال پہلے هی بھانپ لیا تھا . دنیا کی ارتھک شکتی اتنی گھٹ گئی تھی که وہ باهر کا مال خرید نه سکتی تھی . اس لئے وہ چاهتے تھے که ادیوگ دهندوں میں پچھڑے هوئے دیشوں کو اپنا مال دیکر انهیں اپنا قرضدار بنا لیا جائے اور اس کے بدلے میں ان سے کچا مال بھی حاصل کیا جائے .

امریکه قرضه اس لئے نهیں دے رها هے که اس سے یورپ کے دیشوں کے ادیوگ دهندے پہلے کی طرح ترقی کرجائیں اور پھر امریکه کے ادیوگ دهندوں کا مقابله کریں بلکه اسکا مقصد یه هے که امریکه کا بازار دن دونا رات چوگنا بڑھے اور یورپ کے یه دیش امریکی پونجی پتیوں کے آرتھک اور راج نیتک دباؤ میں آجائیں چاهے یورپ کی جنتا کو بیکاری اور بھوک کا مقابله هی کرنا پڑے .

یه تو تھی مارشل پلان کی بات جو یورپ پر لاگو هے اب کچھ دنوں سے سننے میں آرها هے که ایسی هی ایک یوجنا ایشیا کی بھلائی کے لئے واشنگٹن میں تیار هو رهی هے . یهی کارن هے که کچھ دنوں سے امریکی پونجی پتی اور ان کے اخبار برابر اس بات پر زور دے رهے هیں که اگر ایشیا کے دیشوں کو بھی ایسی هی سهایتا

मन्दा होने की सूरत में उन्हें हथियार दिये जायँगे ताकि तीसरी जगं शुरू करने में आसानी हो.

यह तो मार्शल प्लान के आर्थिक सम्बन्ध की बात थी. राजनैतिक हिस्सा भी उतना ही रजअत पसन्द है. आज अमरीकी सरकार वाल स्ट्रीट के राज नैतिक ऐजन्टो होवर, डेविस, ट्रूमैन और मार्शल के हाथों रजअतपसन्द साजिशों का क़िला बन गई है. आज दुनिया भर के रजअत पसन्दों को अमरीका से बिना किसी फ़ीस के सलाह मिल रही है. फ्रान्स मे अरसा हुआ मार्शल योजना के आते ही कम्युनिस्टो को कैबनेट से निकाला गया इटली का भी यही हाल हुआ, यूनान में तो अमरीका खुल्लम खुल्ला हथियार दे रहा है और अब यह काम योरप के दूसरे देशों मे भी हो रहा है. स्पेन के जनवादी मोरचे के खिलाफ फासिस्ट फ्रानको से अमरीका साज़ बाज़ कर रहा है. चीन मे अमरीका के कारन ही च्यांग काई शेक का कोई नाम लेवा बाक़ी नही रहा फिर भी अमरीका की सरकार अभी तक च्यांग काई शेक ही को चीनी जनता का प्रतिनिधि समझती है. अमरीकी सहायता के दरवाजे आज हर उस देश की पूंजी वादी सरकार के लिये खुले हुए हैं जो बनिये के सादे काग़ज पर अगूठा लगाने के लिये तय्यार हो और अपने देश के जन आन्दोलन को कुचलने का वायदा करे.

अब रह गया मार्शल योजना का फ़ौजी हिस्सा. इसका हाल इससे कुछ अलग नहीं है. वाल स्ट्रीट की आर्थिक और राज नैतिक पालिसी के चलाने के लिये अमरीकी सरकार को अपनी फ़ौजी

مندا ہونے کی صورت میں انھیں ہتھیار دئیے جائیں کے تاکہ تیسری جنگ شروع کرنے میں آسانی ہو .

یہ تو مارشل پلان کے آرتھک سمبندھ کی بات تھی. راج نیتک حصہ بھی اتنا ہی رجعت پسند ہے . آج امریکی سرکار وال اسٹریٹ کے راج نیتک ایجنٹوں ہوور، ڈیوس ترومین اور مارشل کے ہاتھوں رجعت پسند سازشوں کا قلعہ بن گئی ہے . آج دنیا بھر کے رجعت پسندوں کو امریکہ سے بنا کسی فیس کے صلاح مل رہی ہے . فرانس میں عرصہ ہوا مارشل یوجنا کے آتے ہی کمیونسٹوں کو کیبنٹ سے نکالا گیا . اٹلی کا بھی یہی حال ہوا، یونان میں تو امریکہ کھلم کھلا ہتھیار دے رہا ہے اور اب یہ کام یورپ کے دوسرے دیشوں میں بھی ہو رہا ہے . اسپین کے جن وادی مورچے کے خلاف فاشسٹ فرانکو سے امریکہ ساز باز کر رہا ہے . چین میں امریکہ کے کارن ہی چیانگ کائی شیک کا کوئی نام لیوا باقی نہیں رہا پھر بھی امریکہ کی سرکار ابھی تک چیانگ کائی شیک ہی کو چینی جنتا کا پرتی ندھی سمجھتی ہے . امریکی سہایتا کے دروازے آج ہر اس دیش کی پونجی وادی سرکار کے لئے کھلے ہوئے ہیں جو بنئے کے سادے کاغذ پر انگوٹھا لگانے کے لئے تیار ہو اور اپنے دیش کے جن آندولن کو کچلنے کا وعدہ کرے .

اب رہ گیا مارشل یوجنا کا فوجی حصہ، اس کا حال اس سے کچھ الگ نہیں ہے . وال اسٹریٹ کی آرتھک اور راج نیتک پالیسی کے چلانے کے لئے امریکی سرکار کو اپنی فوجی

लड़ाई से थकी हारी जनता को सहारा देती है लेकिन अगर ग़ौर से देखा जाय तो मालूम होगा कि अमरीकी पूँजी पतियो की यह एक ऐसी स्कीम है जो अमरीकी उद्योगी तरक़्क़ी और अमरीकी जनता की दुनिया से हमदर्दी और जंग के बाद के अन्तरराष्ट्री संकट से पूरा पूरा फ़ायदा उठाना चाहती है. इस से उनका मक़सद यह है कि वह सारी दुनिया के आर्थिक संकट के सहारे अपनी पूँजी वादी शक्ती को बढ़ायें.

मार्शल प्लान के जन्म का स्थान वाल स्ट्रीट है और इसका जन्म दाता हर्बर्टहूवर है. उसके आगे बढ़ने का नारा वही है जो हिटलर का नारा था "कम्युनिज़्म के ख़िलाफ़ लड़ाई" मार्शल प्लान पर ६ अप्रैल १९४८ को सद्र ट्रूमैन ने दस्तख़त किये.

मार्शल योजना के तीन हिस्से हैं—आर्थिक, राज नैतिक और सैनिक—यह तीनो हिस्से रजअतपसन्द यानी प्रति गामी हैं. आर्थिक हिस्से का मक़सद यह है कि सारे योरप की आर्थिक समस्या वाल स्ट्रीट के क़ब्ज़े मे आ जाय. योरप के देश वाल स्ट्रीट को बड़ी से बड़ी रिआयतें देने को तय्यार थे, सिर्फ़ इसी लालच में कि उन्हें अमरीकी डालर मिल जाय. इधर वाल स्ट्रीट का विचार था कि डालर ही नहीं अमरीका का वह माल, जिसकी अमरीका में खपत नहीं है और जिसके लिये उन्हे मन्डियों की तलाश है, उसके लिये योरप की मन्डियाँ मिल जायें. इस तरह उन्हें यह भी फ़ायदा था कि योरप के वह देश जो मार्शल सहायता को न्योता दे रहे हैं, फ़्रान्स, इटली वग़ैरा—यह सब देश कम्युनिस्ट रूस और बलक़ान की कम्युनिस्ट रियासतों की सरहद पर आबाद हैं, इसलिये बाज़ार के

لڑائی سے تھکی ہاری جنتا کو سہارا دیتی ہے لیکن اگر غور سے دیکھا جائے تو معلوم ہوگا کہ امریکی پونجی پتیوں کی یہ ایک ایسی اسکیم ہے جو امریکہ کی ادیوگی ترقی اور امریکی جنتا کی دنیا سے ہمدردی اور جنگ کے بعد کے انتر راشٹری سنکٹ سے پورا پورا فائدہ اٹھانا چاہتی ہے . اس سے انکا مقصد یہ ہے کہ وہ ساری دنیا کے آرتھک سنکٹ کے سہارے اپنی پونجی وادی شکتی کو بڑھائیں .

مارشل پلان کے جنم کا استھان وال اسٹریٹ ہے اور اسکا جنم داتا ہربرٹ ہوور ہے . اس کے آگے بڑھنے کا نعرہ وہی ہے جو ہٹلر کا نعرہ تھا " کمیونزم کے خلاف لڑائی " مارشل پلان پر ۶ اپریل ۱۹۴۸ع کو صدر ٹرومین نے دستخط کئے .

مارشل یوجنا کے تین حصے ہیں — آرتھک، راج نیتک اور سینک — یہ تینوں حصے رجعت پسند یعنی پرتی گامی ہیں . آرتھک حصے کا مقصد یہ ہے کہ سارے یورپ کی آرتھک سمسیا وال اسٹریٹ کے قبضے میں آجائے . یورپ کے دیش وال اسٹریٹ کو بڑی سے بڑی رعایتیں دینے کو تیار تھے صرف اسی لالچ میں کہ انہیں امریکی ڈالر مل جائے . ادھر وال اسٹریٹ کا وچار تھا کہ ڈالر ہی نہیں امریکہ کا وہ مال، جس کی امریکہ میں کھپت نہیں ہے اور جس کے لئے انہیں منڈیوں کی تلاش ہے، اس کے لئے یورپ کی منڈیاں مل جائیں . اس طرح انہیں یہ بھی فائدہ تھا کہ یورپ کے وہ دیش جو مارشل سہایتا کو نیوتا دے رہے ہیں، فرانس، اٹلی وغیرہ — یہ سب دیش کمیونسٹ روس اور بلقان کی کمیونسٹ ریاستوں کی سرحد پر آباد ہیں اس لئے بازار کے

है बल्कि उसने लड़ाई का बड़ा घिनावना रूप देखा है. रूसियों ने अपनी माओं और बेटियों की इज्जत को जरमन फ़ौजियों के हाथों लुटता देखा है. छोटे छोटे बच्चों के टुकड़े होते देखा है. उन्हों ने तरह तरह की तकलीफ़ उठाई है. और अगर यह लड़ाई न होती तो रूस मे समाजवादी क्रान्ति को ४ साल की रुकावट और ठहराव न मिलता.

ऐसे समय जब दुनिया का यह हाल था अमरीका के पास दुनिया का धन सिमट कर आ गया था और दुनिया के दूसरे मुल्क कंगाल हो गये थे. उधर अमरीका मे हर चीज की पैदावार बड़ी तेजी से बढ़ रही थी. मगर सवाल यह था कि यह पैदावार किस मन्डी मे जाये—ले देकर एशिया की मन्डी रह गई थी जहाँ पच्छिमी देशों के माल की बड़ी खपत थी. मगर यहाँ माल की तो सब को जरूरत थी पर डालर किसी के पास न था और डालर के बिना कोई सौदा हो नही सकता था. नतीजा यह हुआ कि अमरीका के पूँजी पतियों ने वाल स्टोट के अधिकारियों से पूछना शुरू किया कि अब वह अपना माल किस मँडी मे ले जाये. उन्होंने धमकी दी कि अगर उन्हे मन्डी न मिली तो मजबूर हो कर उन्हें कारखाने बन्द करने पड़ेंगे. दरअसल उनके इन्हीं सवालो के जवाब में मार्शल योजना का जनम हुआ.

मार्शल प्लान

मार्शल प्लान दूसरे देशों को डालर और अमरीकी सामान देने की योजना है ऊपर से देखने मे मालूम होता है कि मार्शल योजना

ہے بلکہ اُس نے لڑائی کا بڑا گھناونا روپ دیکھا ہے ۔ روسیوں نے اپنی ماؤں اور بیٹیوں کی عزت کو جرمن فوجیوں کے ہاتھوں لٹتا دیکھا ہے ۔ چھوٹے چھوٹے بچوں کے ٹکڑے ہوتے دیکھا ہے ۔ انھوں نے طرح طرح کی تکلیف اٹھائی ہے ۔ اور اگر یہ لڑائی نہ ہوتی تو روس میں سماج وادی کرانتی کو ۴ سال کی رکاوٹ اور ٹھہراؤ نہ ملتا ۔

ایسے سمے جب دنیا کا یہ حال تھا' امریکہ کے پاس دنیا کا دھن سمٹ کر آگیا تھا اور دنیا کے دوسرے ملک کنگال ہوگئے تھے اِدھر امریکہ میں ہر چیز کی پیداوار بڑی تیزی سے بڑھ رہی تھی ۔ مگر سوال یہ تھا کہ یہ پیداوار کس منڈی میں جائے ۔ لے دے کر ایشیا کی منڈی رہ گئی تھی جہاں پچھمی دیشوں کے مال کی بڑی کھپت تھی ۔ مگر یہاں مال کی تو سب کو ضرورت تھی پر ڈالر کسی کے پاس نہ تھا اور ڈالر کے بنا کوئی سودا ہو نہیں سکتا تھا ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ امریکہ کے پونجی پتیوں نے وال اسٹریٹ کے ادھیکاریوں سے پوچھنا شروع کیا کہ اب وہ اپنا مال کس منڈی میں لے جائیں ۔ انھوں نے دھمکی دی کہ اگر انھیں منڈی نہ ملی تو مجبور ہوکر انھیں کارخانے بند کرنے پڑیں گے ۔ دراصل اُنکے اِنھیں سوالوں کے جواب میں مارشل یوجنا کا جنم ہوا ۔

مارشل پلان

مارشل پلان دوسرے دیشوں کو ڈالر اور امریکی سامان دینے کی یوجنا ہے ۔ اوپر سے دیکھنے میں معلوم ہوتا ہے کہ مارشل یوجنا

बहादुरी से फ़ाशिज़म के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ी है उसकी मिसाल इतिहास में बहुत कम मिलती है. लड़ाई के ख़तम होते ही पूँजीवादियों ने सोचा था कि अब रूस बहुत कमज़ोर हो गया होगा. यही कारन है कि जब मोसियो मोलोतोव ने पच्छिम मे दूसरा मोरचा खोलने पर ज़ोर दिया तो चर्चिल और ट्रूमैन बहुत दिनों तक कानों में तेल डाले बैठे रहे और यही सोचते रहे कि अगर रूस जरमनी से लड़ कर जीत भी जाय, तो भी कम से कम ऐसा तो हो जाय कि उन के सामने सर न उठा सके लेकिन उनकी बौखलाहट की हद न रही जब रूस पहले से भी ज़्यादा मज़बूत हो कर दुनिया के सामने आ गया और उसने दुखी दुनिया के दिल को ढारस बँधाई. क्योंकि पूँजीवाद का ढाँचा टूटता हुआ दिखाई दे रहा था और जनता को उम्मीद हो गई थी कि अब समाजवाद उसकी जगह लेने की तय्यारी कर रहा है. इधर पूरबी योरप के जिन देशों को हिटलर ने ग़ुलाम बना लिया था, रूस को लाल फ़ौज ने उन्हें फिर आज़ाद करा लिया और यही कारन है कि पूरबी योरप मे जितना मान लाल फ़ौज का है किसी का नहीं. लड़ाई ख़तम होते ही रूस ने समाजवादी प्रोग्राम के अनुसार अपने देश के आर्थिक ढाँचे को न सिर्फ़ संभाल लिया बल्कि पहले से ज़्यादा मज़बूत कर लिया.

पं० नेहरू ने अपनी किताब 'दुनिया के इतिहास की झलकियाँ" में लिखा है कि रूस को समाजवादी होने के बाद सब से ज़्यादा लड़ाई से डर मालूम होता है और उसको हर देश से ख़तरा है. रूस लड़ाई से इसलिये नहीं घबराता कि वह कमज़ोर और डरता

بہادری سے فاشزم کے خلاف لڑائی لڑی ہے اس کی مثال اتہاس میں بہت کم ملتی ہے لڑائی کے ختم ہوتے ہی پونجی وادیوں نے سوچا تھا کہ اب روس بہت کمزور ہو گیا ہوگا ۔ یہی کارن ہے کہ جب موسیو مولوتاف نے پچھم میں دوسرا مورچہ کھولنے پر زور دیا تو چرچل اور ٹرومین بہت دنوں تک کانوں میں تیل ڈالے بیٹھے رہے اور یہی سوچتے رہے کہ اگر روس جرمنی سے لڑ کر جیت بھی جائے، تو بھی کم سے کم ایسا تو ہو جائے کہ اُن کے سامنے سر نہ اٹھا سکے ۔ لیکن اُن کی بوکھلاہٹ کی حد نہ رہی جب روس پہلے سے بھی زیادہ مضبوط ہوکر دنیا کے سامنے آگیا اور اُسنے دکھی دنیا کے دل کو ڈھارس بندھائی ۔ کیونکہ پونجی واد کا ڈھانچا ٹوٹتا ہوا دکھائی دے رہا تھا ۔ اور جنتا کو امید ہو گئی تھی کہ اب سماج واد اس کی جگہ لینے کی تیاری کر رہا ہے ۔ اُدھر پوربی یورپ کے جن دیشوں کو ہٹلر نے غلام بنا لیا تھا، روس کی لال فوج نے اُنہیں پھر آزاد کرا لیا اور یہی کارن ہے کہ پوربی یورپ میں جتنا مان لال فوج کا ہے کسی کا نہیں ۔ لڑائی ختم ہوتے ہی روس نے سماج وادی پروگرام کے انوسار اپنے دیش کے آرتھک ڈھانچے کو نہ صرف سنبھال لیا بلکہ پہلے سے زیادہ مضبوط کر لیا ۔

پنڈت نہرو نے اپنی کتاب " دنیا کے اتہاس کی جھلکیاں" میں لکھا ہے کہ روس کو سماج وادی ہونے کے بعد سب سے زیادہ لڑائی سے ڈر معلوم ہوتا ہے اور اسکو ہر دیش سے خطرہ ہے ۔ روس لڑائی سے اس لئے نہیں گھبراتا کہ وہ کمزور ہے اور ڈرتا

यह तो बरतानिया का हाल था. अमरीका की हालत इससे बहुत ज्यादा बदली हुई थी लड़ाई के खतम होने के बाद अमरीका का पूंजीवाद और भी ज्यादा जोर पकड़ गया था लड़ाई से अमरीका ने बड़ा फायदा उठाया है. एक तो अमरीका लड़ाई के मैदान से हजारों मील दूर था. जरमनी के बमों और फौजों ने जहाँ सारे योरप में तहलका मचा दिया था वहाँ वह अमरीका का कुछ भी न बिगाड़ सके. दूसरे लड़ाई के मैदान से दूर होने के कारन अमरीका अपने कारखानों को बड़े पैमाने पर बढ़ा सका. उसने लड़ाई के ज़माने में हर देश को लड़ाई का सामना भेजा जिसका नतीजा यह हुआ कि बहुत जल्द अमरीका के पास दुनिया भर की पूंजी इकट्ठा हो गई. इसलिये अगर आज अमरीका के पूंजी पति और उनके अखबार जंग की बातें करते है तो उसमें ताज्जुब की कोई बात नहीं. क्योंकि जंग के मुनाफे को अमरीकी पूंजी पति अच्छी तरह जानता है. वह सोचता है कि अगर दूसरी लड़ाई ने एक पूंजीपति को लखपति से करोड़ पति बना दिया है तो तीसरी लड़ाई उसको अरब पति और पदमपति बना सकती है. यही कारन है कि आज अमरीका के वायुमन्डल में जंग के नारे गूंज रहे हैं.

अब रह गया रूस—लड़ाई मे सब से ज़्यादा नुक़सान रूस को पहुँचा है. क्योंकि एक तरफ तो उसकी तीसरी स्टालिन योजना पूरी न हो सकी 'दूसरी मुसीबत यह आई कि सारा देश लड़ाई का मैदान बन गया. हिटलर की फौजों ने यूक्रेन से ले कर स्टालनग्राड, मास्को और लेनिनग्राड तक की धरती को हिला कर रख दिया लेकिन रूसियों ने समाजवाद को बचाने के लिये जिस

یہ تو برطانیہ کا حال تھا ۔ امریکہ کی حالت اس سے بہت زیادہ بدلی ہوئی تھی ۔لڑائی کے ختم ہونے کے بعد امریکہ کا پونجی واد اور بھی زیادہ زور پکڑ گیا تھا لڑائی سے امریکہ نے بڑا فائدہ اٹھایا ہے ۔ ایک تو امریکہ لڑائی کے میدان سے ہزاروں میل دور تھا ۔ جرمنی کے بموں اور فوجوں نے جہاں سارے یورپ میں تہلکہ مچا دیا تھا وہاں وہ امریکا کا کچھ بھی نہ بگاڑ سکے ۔ دوسرے لڑائی کے میدان سے دور ہونے کے کارن امریکہ اپنے کارخانوں کو بڑے پیمانے پر بڑھا سکا ۔ اُس نے لڑائی کے زمانے میں ہر دیش کو لڑائی کا سامان بھیجا جس کا نتیجہ یہ ہوا کہ بہت جلد امریکہ کے پاس دنیا بھر کی پونجی اکٹھا ہوگئی ۔ اس لئے اگر آج امریکہ کے پونجی پتی اور اُن کے اخبار جنگ کی باتیں کرتے ہیں تو اس میں تعجب کی کوئی بات نہیں ۔ کیوں کہ جنگ کے منافع کو امریکی پونجی پتی اچھی طرح جانتا ہے ۔ وہ سوچتا ہے کہ اگر دوسری لڑائی نے ایک پونجی پتی کو لکھ پتی سے کروڑ پتی بنا دیا ہے تو تیسری لڑائی اُس کو ارب پتی اور پدم پتی بنا سکتی ہے ۔ یہی کارن ہے کہ آج امریکہ کے وایو منڈل میں جنگ کے نعرے گونج رہے ہیں ۔

اب رہ گیا روس—لڑائی میں سب سے زیادہ نقصان روس کو پہنچا ہے ۔ کیونکہ ایک طرف تو اُس کی تیسری اسٹالن یوجنا پوری نہ ہو سکی دوسری مصیبت یہ آئی کہ سارا دیش لڑائی کا میدان بن گیا ۔ ہٹلر کی فوجوں نے یوکرین سے لے کر اسٹالن گراڈ، ماسکو اور لینن گراڈ تک کی دھرتی کو ہلا کر رکھ دیا لیکن روسیوں نے سماج واد کو بچانے کے لئے جس

मार्शल योजना

(भाई अतहर परवेज़)

दूसरी बड़ी लड़ाई के बाद दुनिया का नक्शा बिलकुल बदल गया. एक तरफ जापान व जरमनी हार कर बिलकुल कमजोर हो गये, दूसरी तरफ बरतानिया जीत कर भी अपने स्थान से नीचे उतर आया. इसके दो बड़े कारन थे. बरतानिया की साम्राजवादी नीति का विरोध नौआबादियाती मुल्को (उपनिवेशो) में बड़े ज़ोरो से हो रहा था. इन देशो मे आज़ादी का राष्ट्री आन्दोलन बड़ी तेज़ी से बढ़ रहा था. हिन्दुस्तान मे तो यह हालत होगई थी कि साम्राजवाद की फौजें भी बग़ावत के मैदान मे उतर आई थीं. यह देख उनके होश उड़ गये. दूसरे बरतानिया की साम्राजवादी नीति को खुद उसके अपने देश की जनता ने असफल किया इसलिये कि बरतानिया के मज़दूरों ने हमेशा हिन्दुस्तान के मज़दूरों और किसानों के आन्दोलन ही की नहीं बल्कि राष्ट्री आन्दोलन की भी हमेशा मदद की है. यह सोचना ग़लत है कि बरतानिया की जनता हिन्दुस्तान की दुशमन थी क्योंकि उनको तो वैसे भी हिन्दुस्तान पर बरतानी राज से कोई लाभ नही पहुंचता था. उनकी हालत तो वैसे ही खराब थी. यह लाभ तो थोड़े से धनी लागो को पहुंचता था जिनका वर्ग वहाँ राज करता है, इसीलिये बरतानिया का राज वर्ग इस आन्दोलन से घबरा गया और उसे अपनी नीति मे समय के अनुसार कतर ब्योंत करनी पड़ी.

مارشل یوجنا

(بھائی اطہر پرویز)

دوسری بڑی لڑائی کے بعد دنیا کا نقشہ بالکل بدل گیا . ایک طرف جاپان و جرمنی ہار کر بالکل کمزور ہو گئے دوسری طرف برطانیہ جیت کر بھی اپنے استھان سے نیچے اتر آیا. اس کے دو بڑے کارن تھے . برطانیہ کی سامراجوادی نیتی کا ورودھ نو آبادیاتی ملکوں (اپنیویشوں) میں بڑے زوروں سے ہو رہا تھا ان دیشوں میں آزادی کا راشٹری آندولن بڑی تیزی سے بڑھ رہا تھا . ہندستان میں تو یہ حالت ہو گئی تھی کہ سامراج واد کی فوجیں بھی بغاوت کے میدان میں اتر آئی تھیں . یہ دیکھ اُن کے ہوش اُڑ گئے . دوسرے برطانیہ کی سامراج وادی نیتی کو خود اُس کے اپنے دیش کی جنتا نے اسپھل کیا اس لئے کہ برطانیہ کے مزدوروں نے ہمیشہ ہندستان کے مزدوروں اور کسانوں کے آندولن ہی کی نہیں بلکہ راشٹری آندولن کی بھی ہمیشہ مدد کی ہے . یہ سوچنا غلط ہے کہ برطانیہ کی جنتا ہندستان کی دشمن تھی کیونکہ ان کو تو ویسے بھی ہندستان پر برطانی راج سے کوئی لابھ نہیں پہنچتا تھا ان کی حالت تو ویسی ہی خراب تھی . یہ لابھ تو تھوڑے سے دھنی لوگوں کو پہنچتا تھا جن کا ورگ وہاں راج کرتا ہے . اسی لئے برطانیہ کا راج ورگ اس آندولن سے گھبرا گیا اور اُسے اپنی نیتی میں سمے کے انوسار کتربیونت کرنی پڑی .

सुलतान के दिल में जैसे काँटा चुभ गया वह डिजाइन की तरफ देखते देखते ग़मगीन आवाज़ में बोला—"ऐ ! तो क्या मेरी तमाम कोशिशों पर पानी फिर जायगा ? क्या यह हरा भरा मुल्क एक दिन फिरंगियो के हाथ मे चला जायगा ? क्या हिन्दू मुसलमानों की क़िस्मत पर हमेशा के लिये अँधेरे का परदा गिर जायगा ? आजादी ख़ून चाहती है—सर चाहती है. मैं अपना ख़ून दूँगा—अपना सर दूँगा ; फिर भी क्या मेरा मुल्क आजाद न रहेगा ? "

फ़कीर मानो ठण्डी ठण्डी साँसो मे खो गया. फिर भराई हुई आवाज़ मे कहने लगा "—प्रभु की मर्ज़ी पर किस का जोर है अन्नदाता ! अभी तो हिन्दुस्तान के लोगो को अपने गुनाहों का बहुत बड़ा एवज़ चुकाना बाकी है आप अपना ख़ून देंगे—सर देंगे, मगर ग़द्दार और बेईमान लोग अपनी आबरू बेचेंगे—अपनी माँ की आबरू बेचेंगे—बस अन्नदाता ! अब जाने दीजिये .. "

سلطان کے دل میں جیسے کانٹا چبھ گیا وہ ڈزائن کی طرف دیکھتے دیکھتے غمگین آواز میں بولا — " ایں ! تو کیا میری تمام کوششوں پر پانی پھر جائیگا ؟ کیا یہ ہرا بھرا ملک ایک دن فرنگیوں کے ہاتھ میں چلا جائیگا ؟ کیا ہندو مسلمانوں کی قسمت پر ہمیشہ کے لئے اندھیرے کا پردہ گر جائیگا ؟ آزادی خون چاہتی ہے — سر چاہتی ہے ۔ میں اپنا خون دونگا — اپنا سر دونگا ؛ پھر بھی کیا میرا ملک آزاد نہ رہیگا ."

فقیر مانو ٹھنڈی ٹھنڈی سانسوں میں کھو گیا ۔ پھر بھرائی ہوئی آواز میں کہنے لگا — 'پربھو کی مرضی پر کسکا زور ہے ان داتا ! ابھی تو ہندستان کے لوگوں کو اپنے گناہوں کا بہت بڑا عیوض چکانا باقی ہے ! آپ اپنا خون دینگے — سر دینگے ، مگر غدار اور بے ایمان لوگ اپنی آبرو بیچینگے — اپنی ماں کی آبرو بیچینگے — بس ان داتا ! اب جانے دیجئے . . "

फ़क़ीर ने भरी हुई आवाज़ में जवाब दिया—"क्या कहूँ अन्नदाता! कहते मेरी छाती फटती है! हिन्दुओं की बदकिस्मती है, मुसलमानों की बदक़िस्मती है, . मुझे जाने दीजिये."

यह कहते कहते फ़क़ीर उठकर खड़ा हो गया. सुलतान उसका हाथ पकड़ कर बोला—"इस तरह नहीं महाराज! जो बात हो, साफ़ साफ़ कहिये. क्या मेरी वजह से?"

फ़क़ीर ने बैठते बैठते कहा—"आप की वजह से? हरे हरे! आप की वजह से नहीं अन्नदाता ... आप की वजह से तो भारत माता की गोद हरी भरी है. आप की वजह से तो भारत माता की आबरू में चार चाँद लगने वाले हैं. . मगर .. "

फ़क़ीर अपने को न सँभाल सका. उसका धीरज छूट गया. वह सिसकियाँ भरने लगा. सुलतान घबरा कर बोला—"मगर क्या? कहिये कहिये, बेख़ौफ़ कहिये! ... आप इस तरह रोते क्यों हैं? .. अगर मेरी वजह से मुल्क की, हिन्दुओं की और मुसलमानों की बरबादी होने वाली है तो अब मेरा जिन्दा रहना फ़ज़ूल है."

फ़कीर ने अपनी डबडबाई हुई आँखे सुलतान के चेहरे पर बिछा दीं और कहा—'ऐसी वाहियात बात मुँह से न निकालिये अन्नदाता! भगवान आप का भला करे . हज़ार मरें, हज़ार का पालने वाला सुखी रहे ..." फिर उसने डिज़ाइन की तरफ़ इशारा किया और कहा—"वह देखिये, क़ालीन पर आप की क़िस्मत नक़्श है—इसी लिये मेरी आँखों से आँसू बहते हैं"

فقیر نے بھری هوئی آواز میں جواب دیا — " کیا کہوں ان داتا ! کہتے میری چھاتی پھٹتی هے ! هندستان کی بدقسمتی هے ' هندوؤں کی بدقسمتی هے ' مسلمانوں کی بدقسمتی هے ...
... .. مجھے جانے دیجئے . "

یہ کہتے کہتے فقیر اُٹھ کر کھڑا هوگیا . سلطان اسکا هاتھ پکڑ کر بولا — " اس طرح نہیں مہاراج ! جو بات هو' صاف صاف کہئیے . کیا میری وجہ سے ؟ "

فقیر نے بیٹھتے بیٹھتے کہا — " آپ کی وجہ سے ؟ هرے هرے ! آپ کی وجہ سے نہیں ان داتا ... آپ کی وجہ سے تو بھارت ماتا کی گود هری بھری هے . آپ کی وجہ سے تو بھارت ماتا کی آبرو میں چار چاند لگنے والے هیں .. .. مگر .... '

فقیر اپنے کو نہ سنبھال سکا . اسکا دھیرج چھوٹ گیا . وہ سسکیاں بھرنے لگا . سلطان گھبراکر بولا — " مگر کیا ؟ کہئیے کہئیے' بے خوف کہئیے ! .. .. آپ اس طرح روتے کیوں هیں ؟ ...... اگر میری وجہ سے ملک کی' هندوؤں کی اور مسلمانوں کی بربادی هونے والی هے تو اب میرا زندہ رهنا فضول هے "

فقیر نے اپنی ڈبڈبائی هوئی آنکھیں سلطان کے چہرے پر بچھا دیں اور کہا — " ایسی واهیات بات منہ سے نہ نکالئے ان داتا ! بھگوان آپکا بھلا کریں' . . هزار مریں' هزار کا پالنے والا سکھی رهے ....." پھر اُس نے ڈزائن کی طرف اشارہ کیا اور کہا — " وہ دیکھئے . قالین پر آپکی قسمت نقش هے—اسلئے میری آنکھوں سے آنسو بہتے هیں . "

उधर सुलतान ने हाथ ऊपर उठया और पूरी ताक़त से तोते पर चाक़ू चला दिया. तोता ख़ौफ के मारे फड़फड़ा हो रहा था, इस कशमकश मे जो सुलतान की मुट्ठी ढीली पड़ी तो तोता छूटकर फुर्र मे उड़ गया और यह जा वह जा, खिड़की के रास्ते कमरे से बाहर हो गया. चाक़ू सुलतान के बायें हाथ पर गिरा और उस से ख़ून की धार बह निकली.

सुलतान का ज़ख्म देखकर राजे ख़ॉ घबराया और शाही हकीम को बुलाने दौड़ा. मगर सुलतान निहायत इतमीनान से बोला— " कहाँ जाते हो ? ठहरो वह काग़ज़ उठाओ "

राजे ख़ॉ ने काग़ज़ उठाकर सुलतान को दिया. सुलतान ने उसे खोलकर देखा. उस मे लिखा था—" तोते का बाल भी बाँका न होगा. वह आज़ाद हो जायगा. चोट आप के हाथ पर पड़ेगी. यही भगवान की मर्ज़ी है. "

सुलतान के ताज्जुब की हद न रही. वह आँखे फाड़ फाड़ कर कभी काग़ज़ की ओर कभी फ़क़ीर की तरफ देखने लगा. फिर बोला—" ग़लती मेरी थी मानता हूँ कि इल्म नजूम सच्चा है. बस महाराज, अब कुछ मेरी क़िस्मत भी बतला दीजिये. "

फ़क़ीर ने ठण्डी साँस लेकर कहा—" आप की क़िस्मत ? क्या बतलाऊँ अन्नदाता, आप की क़िस्मत..." और वह राजे ख़ाँ की तरफ़ इस तरह देखने लगा, जैसे उसे वहाँ उसकी मौजूदगी बर्दाश्त नहीं हो रही है. राजे ख़ॉ समझ गया और फ़ौरन बाहर चला गया.

सुलतान बोला—" कुछ तो कहिये महाराज ! "

اُدھر سلطان نے ھاتھ اُوپر اُٹھایا اور پوری طاقت سے طوطے پر چاقو چلا دیا طوطا خوف کے مارے پھڑ پھڑا رہا تھا' اس کشمکش میں جو سلطان کی مٹھی ڈھیلی پڑی تو طوطا چھوٹ کر پھر سے اُڑگیا اور یہ جا وہ جا کھڑکی کے راستہ کمرہ سے باھر ہوگیا . چاقو سلطان کے بائیں ھاتھ پر گرا اور اس سے خون کی دھار بہ نکلی .

سلطان کا زخم دیکھکر راجے خاں گھبرایا اور شاھی حکیم کو بلانے دوڑا. مگر سلطان نہایت اطمینان سے بولا— "کہاں جاتے ہو ؟ ٹھہرو — وہ کاغذ اُٹھاؤ . "

راجے خاں نے کاغذ اُٹھا کر سلطان کو دیا . سلطان نے اُسے کھول کر دیکھا . اسمیں لکھا تھا—"طوطے کا بال بھی بانکا نہ ھوگا وہ آزاد ھوجائیگا . چوٹ آپ کے ھاتھ پر پڑیگی . یہی بھگوان کی مرضی ھے ."

سلطان کے تعجب کی حد نہ رھی . وہ آنکھیں پھاڑ پھاڑ کر کبھی کاغذ کی اور کبھی فقیر کی طرف دیکھنے لگا . پھر بولا— " غلطی میری تھی . مانتا ھوں کہ علم نجوم سچا ھے . بس مہاراج' اب کچھ میری قسمت بھی بتلا دیجئے . "

فقیر نے ٹھنڈی سانس لے کر کہا — " آپ کی قسمت ؟ کیا بتاؤں ان داتا' آپ کی قسمت ؟ ...." اور وہ راجے خاں کی طرف اس طرح دیکھنے لگا' جیسے اُسے وھاں اُس کی موجودگی برداشت نہیں ھو رھی ھے . راجے خاں سمجھ گیا اور فوراً باھر چلا گیا .

سلطان بولا — " کچھ تو کہئے مہاراج ! "

फ़क़ीर ने बड़े सीधे सादे लहजे मे जवाब दिया—" सच्चा ? सच्चा तो है ही. जानने वाले जानते हैं. यह दूसरी बात है कि खुद गरज और बेवक़ूफ़ लोगों ने इसे बदनाम कर रक्खा है."

सुलतान ने ज़ोर से आवाज़ लगाई—" राजे खाँ ! "

राजे खाँ हाथ बाँधे अन्दर आया, तो सुलतान ने उसे हुक्म दिया—" फ़ौरन किसी तोते का पिजड़ा और एक तेज़ चाक़ू ले आओ."

राजे खाँ बात की बात में दोनों चीज़े ले आया. सुलतान ने पिजड़े की खिड़की खोली. एक हाथ से दोनो टाँगें पकड़ कर तोते को बाहर खींचा, दूसरे हाथ में चाकू लिया और फ़कीर की तरफ़ देखते देखते सवाल किया—" बतलाइये इसकी किस्मत में क्या है ?"

फ़क़ीर बोला—' कागज कलम और दावात मँगवा दीजिये."

राजे खाँ कागज़ कलम और दावात ले आया, फकीर ने कागज़ पर कुछ लिखा. फिर उसे मोड़ कर सामने कालीन पर फेंकते फेंकते कहा—" अब आपकी तबीयत मे जो आये कीजिये "

यह कहकर फकीर ने अपनी 'नजर' फिर उसी डिज़ाइन पर जमा दी. शायद उसने ऐसी खूबसूरत डिज़ाइन पहले कभी न देखी थी—गुलाब के पौदों की खुशनुमा झाडी, जाबजा खिले हुए फूल, अधखिली कलियाँ, झाडी के एक बाज़ू पर मस्ती और लापरवाही से बैठा हुआ शेर और दूसरे बाज़ू पर उसकी घातमे लगा, शाखों और पत्तियों की ओट में छिपा, हाथ मे बन्दूक सीधी किये एक फिरङ्गी शिकारी. देखते देखते फ़कीर की आँखे भर आई और वह एक ठन्डी साँस लेकर सुलतान का मुँह ताकने लगा.

فقیر نے بڑے سیدھے سادھے لہجے میں جواب دیا — " سچا ؟ سچا تو ہے ہی . جاننے والے جانتے ہیں . یہ دوسری بات ہے کہ خود غرض اور بے وقوف لوگوں نے اسے بدنام کر رکھا ہے . "

سلطان نے زور سے آواز لگائی — " راجے خاں ! "

راجے خاں ہاتھ باندھے اندر آیا' تو سلطان نے اسے حکم دیا — " فوراً کسی طوطے کا پنجڑا اور ایک تیز چاقو لے آؤ "

راجے خاں بات کی بات میں دونوں چیزیں لے آیا . سلطان نے پنجڑے کی کھڑکی کھول لی . ایک ہاتھ سے دونوں ٹانگیں پکڑ کر طوطے کو باہر کھینچا' دوسرے ہاتھ میں چاقو لیا اور فقیر کی طرف دیکھتے دیکھتے سوال کیا — " بتلائیے اسکی قسمت میں کیا ہے ؟ "

فقیر بولا — " کاغذ قلم اور دوات منگوا دیجئے . "

راجے خاں کاغذ قلم اور دوات لے آیا فقیر نے کاغذ پر کچھ لکھا . پھر اُسے موڑ کر سامنے قالین پر پھینکتے پھینکتے کہا — " اب آپ کی طبیعت میں جو آئے وہ کیجئے . "

یہ کہکر فقیر نے اپنی نظر پھر اسی ڈزائن پر جما دی . شاید اُس نے ایسی خوبصورت ڈزائن پہلے کبھی نہ دیکھی تھی — گلاب کے پودوں کی خوشنما جھاڑی' جا بجا کھلے ہوئے پھول' ادھ کھلی کلیاں' جھاڑی کے ایک بازو پر مستی اور لاپرواہی سے بیٹھا ہوا شیر اور دوسرے بازو پر اُسکی گھات میں لگا' شاخوں اور پتوں کی اوٹ میں چھپا' ہاتھ میں بندوق سیدھی کئے ایک فرنگی شکاری . دیکھتے دیکھتے فقیر کی آنکھیں بھر آئیں اور وہ ایک ٹھنڈی سانس لیکر سلطان کا منہ تاکنے لگا .

सुलतान ने फिर पूछा—"हिन्दू मुसलमानों में किसी तरह की नाइत्तेफ़ाक़ी तो नहीं पाई जाती ?"

फ़क़ीर मानो ख़ुशी से चहक कर बोला—"राम का नाम लीजिये ! भला आपकी ठण्डी छाया मे ऐसा किस तरह हो सकता है ? नाइत्तिफ़ाक़ी कैसी—दोनों एक माँ जाये भाई की तरह बड़े मेल जोल से रहते हैं. दिल खोल कर एक दूसरे के सुख दुख में शामिल होते हैं. यही तो हुकूमत ख़ुदाद की सब से बड़ी ख़ूबी है."

यह कहते कहते फ़कीर ने सुलतान की तरफ़ निगाह उठाई. सुलतान के चेहरे पर ख़ुशी चमक रही थी. फ़क़ीर फिर आगे बढ़ा—"अगर जहाँपनाह का यही रवैया रहा, हिन्दू मुसलमानों के साथ यही बरताव रहा तो वह दिन दूर नहीं है जब तमाम हिन्दुस्तान पर आला हज़रत का झंडा लहरायेगा और सलतनत ख़ुदादाद का दुनिया भर में नाम रोशन होगा. मेरी दिली ख़्वाहिश तो यही है कि भगवान ऐसे रहम दिल, रिआया परवर और मुन्सिफ़ मिज़ाज सुलतान की उम्र दराज़ करे जिस की ठण्डी छाया में हम जैसे फ़क़ीर साधु और ग़रीब लोग हमेशा अपनी ज़िन्दगी चैन से बसर करते रहें."

सुलतान का चेहरा ताँबे की तरह सुर्ख़ हो गया शायद उसने समझा, फ़क़ीर अपनी ठग विद्या का जाल फैला रहा है. बस वह अपनी तीखी पुतलियाँ फ़क़ीर के चेहरे पर गड़ा कर बोला—"यह फ़ज़ूल बातें छोड़िये—इल्म नजूम के बारे में कुछ कहिये—क्या यह ..."

سلطان نے پھر پوچھا — " ھندو مسلمانوں میں کسی طرح کی نااتفاقی تو نہیں پائی جاتی ؟ "

فقیر مانو خوشی سے چہک کر بولا — " رام کا نام لیجئے ! بھلا آپکی ٹھنڈی چھایا میں ایسا کسطرح ھوسکتا ھے . نااتفاقی کیسی — دونوں ایک ماں جائے بھائی کی طرح بڑے میل جول سے رہتے ھیں . دل کھول کر ایک دوسرے کے سکھ دکھ میں شامل شامل ھوتے ھیں . یہی تو حکومت خدا داد کی سب سے بڑی خوبی ھے . "

یہ کہتے کہتے فقیر نے سلطان کی طرف نگاہ اُٹھائی سلطان کے چہرہ پر خوشی چمک رھی تھی . فقیر پھر آگے بڑھا — اگر جہاں پناہ کا یہی رویہ رھا، ھندو مسلمانوں کے ساتھ یہی برتاؤ رھا تو وہ دن دور نہیں ھے جب تمام ھندستان پر اعلیٰ حضرت کا جھنڈا لہرائیگا اور ' سلطنت خدا داد ' کا دنیا بھر میں نام روشن ھوگا . میری دلی خواھش تو یہی ھے کہ بھگوان ایسے رحمدل، رعایا پرور اور منصف مزاج سلطان کی عمر دراز کریں جسکی ٹھنڈی چھایا میں ہم جیسے فقیر سادھو اور غریب لوگ ھمیشہ اپنی زندگی چین سے بسر کرتے رھیں "

سلطان کا چہرہ تانبے کی طرح سرخ ھوگیا شاید اُسنے سمجھا، فقیر اپنی ٹھگ ودیا کا جال پھیلا رہا ھے . بس وہ اپنی تیکھی پتلیاں فقیر کے چہرے پر گڑاکر بولا — " یہ فضول باتیں چھوڑئیے — علم نجوم کے بارے میں کچھ کہئیے — کیا یہ علم سچا ھے ؟ "

इस ढङ्ग से जैसे वही उस कमरे का मालिक हो और किसी मेहमान का मामूली सा स्वागत कर रहा हो--"आइये तशरीफ रखिये."

यह कह कर फकीर बैठ गया उसने सुलतान के बैठने का भी इन्तज़ार न किया. तमाम बाडी गार्ड सन्नाटे मे आ गये. उन्होंने आज तक किसी को सुलतान के साथ ऐसा अक्खड़, ऐसा उजड्ड बरताव करते न देखा था. मगर सुलतान वाकई सुलतान था. तबीयत से भी ख़्यालात से भी. शायद उसकी नज़र में फकीर का यह बरताव कोई अहमियत न रखता था. वह उसी सोफे पर फकीर की बगल में बैठ गया. बड़ा अजीब नज़ारा था. अमीरी और फकीरी बराबरी पर उतर आई थी. शायद अमीरी चुपचाप कह रही थी 'फकीरी ही मेरी आख़िरी शकल है, और फकीरी कह रही थी' मेरी ही बदौलत अमीरी कुछ हस्ती रखती है, बाडी गार्ड ताज्जुब से आँखे फाड़ फाड़ कर वह नज़ारा देखने लगे. मगर सुलतान के इशारे पर उनको फौरन कमरे से बाहर निकल जाना पड़ा

क़ालीन के बीचो बीच एक बहुत खूबसूरत और लम्बी चौड़ी डिज़ाइन बनी हुई थी फकीर उसे इस तरह देख रहा था मानो उसी में खो गया हो. एकबारगी सुलतान ने उसका ध्यान तोड़ते हुए कहा--" कहिये महाराज, 'सलतनत खुदादाद' का क्या हाल चाल है ?"

फकीर ने चौंक कर जवाब दिया--" बहुत बेहतर--निहायत तसल्ली बख्श, जैसे तमाम हुकूमत मे अमन चैन की बरखा हो रही है."

اس ڈھنگ سے جیسے وہی اُس کمرہ کا مالک ہو اور کسی مہمان کا معمولی سا سواگت کر رہا ہو — "آئیے تشریف رکھئے."

یہ کہہ کر فقیر بیٹھ گیا . اُس نے سلطان کے بیٹھنے کا بھی انتظار نہ کیا . تمام باڈی گارڈ سناٹے میں آگئے . اُنہوں نے آج تک کسی کو سلطان کے ساتھ ایسا اکھڑ ایسا اُجڈ برتاؤ کرتے نہ دیکھا تھا . مگر سلطان واقعی سلطان تھا طبیعت سے بھی خیالات سے بھی . شاید اُسکی نظر میں فقیر کا یہ برتاؤ کوئی اہمیت نہ رکھتا تھا . وہ اسی صوفے پر فقیر کی بغل میں بیٹھ گیا . بڑا عجیب نظارہ تھا . امیری اور فقیری برابری پر اُتر آئی تھی شاید امیری چپ چاپ کہہ رہی تھی 'فقیری ہی میری آخری شکل ہے' اور فقیری کہہ رہی تھی' میری ہی بدولت امیری کچھ ہستی رکھتی ہے' باڈی گارڈ تعجب سے آنکھیں پھاڑ پھاڑ کر وہ نظارہ دیکھنے لگے . مگر سلطان کے اشارہ پر اُنکو فوراً کمرے سے باہر نکل جانا پڑا .

قالین کے بیچوں بیچ ایک بہت خوبصورت اور لمبی چوڑی ڈزائن بنی ہوئی تھی . فقیر اُسے اسطرح دیکھ رہا تھا مانو اُسی میں کھو گیا ہو یک بارگی سلطان نے اسکا دھیان توڑتے ہوئے کہا — "کہئے مہاراج سلطنت خدا داد' کا کیا حال چال ہے."

فقیر نے چونک کر جواب دیا — "بہت بہتر — نہایت تسلی بخش جیسے تمام حکومت میں امن چین کی برکھا ہو رہی ہے."

करने से तो हज़ार दर्जे बेहतर है कि इन्सान नामवरी हासिल करे और भरी जवानी में मर जाय समझे खां साहब ? अच्छा अब सुलतान के यहाँ जाऊँगा. ''

यह कह कर फ़कीर राजे खाँ के साथ राज महल की तरफ चल पड़ा.

× × × ×

राज महल के एक आलीशान कमरे मे एक निहायत खूबसूरत क़ालीन बिछा हुआ था जिस के किनारे एक बहुत आरामदेह सोफा रक्खा था. फकीर आते ही उस पर पैर फैला कर बैठ गया. बिलकुल बेख़ौफ और बेतकल्लुफ़. उसके इस रङ्ग ढङ्ग से सुलतान के नौकर बहुत घबराये. बहुत परेशान हुए. मगर उन मे से कुछ कहने के लिये किसी को हिम्मत न पड़ी सभी सहमे सहमे से एक दूसरे का मुँह ताकते रह गये.

थोड़ी देर बाद सुलतान ने अपने कुछ ख़ास ख़ास बाडी गार्डों के साथ कमरे मे दाखिल हुआ. उसे देखते ही नौकर अदब से खड़े हो गये और ज़मीन चूम चूम कर उसका इसतिक़बाल करने लगे. सुलतान ने उनपर एक उड़ती हुई नजर डाली और ज्यों ही इशारा किया, सब के सब कमरे से बाहर निकल गये. मगर फकीर अपनी जगह पर ज्यों का त्यों बैठा रहा, हिला भी नहीं उसने सिर्फ एक मीठी मुसकान के ज़रिये सुलतान का स्वागत किया. सुलतान ने भी मीठी मुस्कान का जवाब मीठी मुस्कान से दिया और वह फ़क़ीर के पास जा पहुंचा. फकीर धीरे से उठा और बोला, मगर

کرنے سے تو ہزار درجہ بہتر ہے کہ انسان ناموری حاصل کرے اور بھری جوانی میں مرجائے . سمجھے خاں صاحب ؟ اچھا اب سلطان کے یہاں جاؤنگا ."

یہ کہ کر فقیر راجے خاں کے ساتھ راج محل کی طرف چل پڑا .

× × × ×

راج محل کے ایک عالیشان کمرہ میں ایک نہایت خوبصورت قالین بچھا ہوا تھا جسکے کنارے ایک بہت آرام دہ صوفہ رکھا ہوا تھا . فقیر آتے ہی پیر پھیلاکر بیٹھ گیا . بالکل بے خوف اور بے تکلف اسکے اس رنگ ڈھنگ سے سلطان کے نوکر بہت گھبرائے . بہت پریشان ہوئے . مگر اُن میں سے کچھ کہنے کے لئے کسی کی ہمت نہ پڑی . سبھی سہمے سہمے سے ایک دوسرے کا منہ تاکتے رہ گئے .

تھوڑی دیر بعد سلطان اپنے کچھ خاص خاص باڈی گارڈوں کے ساتھ کمرہ میں داخل ہوا . اُسے دیکھتے ہی نوکر ادب سے کھڑے ہوگئے اور زمین چوم چوم کر اُسکا استقبال کرنے لگے سلطان نے اُن پر ایک اُڑتی ہوئی نظر ڈالی اور جیوں ہی اِشارہ کیا' سب کے سب کمرہ سے باہر نکل گئے . مگر فقیر اپنی جگہ پر جیوں کا تیوں بیٹھا رہا۔ ہلا بھی نہیں . اُس نے صرف ایک میٹھی مسکان کے ذریعہ سلطان کا سواگت کیا سلطان نے بھی میٹھی مسکان کا جواب میٹھی مسکان سے دیا اور وہ فقیر کے پاس جا پہونچا فقیر دھیرے سے اُٹھا اور بولا' مگر

मैदाने-जङ्ग में. ... यही मालिक की मर्ज़ी है. अपने मुल्क मे तो इसकी क़िस्मत जागने वाली नहीं. ''

वही बाप जो घड़ी भर पहले मारे ख़ुशी के पागल-सा हो उठा था, यह शब्द कान मे पड़ते ही उदास होगया. उसने आँखो मे आँसू भरकर रुँधे हुए गले से कहा—"हुज़ूर, ऐसी दुआ न दीजिये! परदेस की इज़्ज़त और दौलत से तो यही बेहतर है कि यह वतन मे फ़क़ीर बनकर रहे और बड़ी उम्र पाये."

फ़क़ीर बोला—" मगर क़िस्मत के लिखे को कौन मेट सकता है. "

लड़के का बाप हाथ बाँधकर कहने लगा—" ऐसी बात मुँह से न निकालिये हज़ूर! इस बच्चे की क़िस्मत आप के हाथ है. बस दुआ कीजिये कि इसकी उम्र बड़ी हो और यह वतन ही मे रहे."

फ़क़ीर बड़ी ख़ामोशी से खड़ा-खड़ा मुस्करा रहा था. अब तो बूढ़ा बाप बेचैन हो उठा और बोला—" हुज़ूर आप के हाथ मे सब-कुछ है. बदल दीजिये—इस बच्चे की क़िस्मत बदल दीजिये क़यामत तक आप का एहसान न भूलूँगा. कोई बडी बात नहीं है—सिर्फ एक बार मुँह से कह दीजिये हुज़ूर! "

यह कहते-कहते वह एक बार फिर फ़क़ीर के क़दम चूमने के लिये झुका मारे ग़ुस्से के फ़क़ीर का चेहरा तमतमा उठा उसने लड़के के बूढ़े बाप पर एक नफ़रत भरी निगाह डाली और कहा—" दीवाने तो नहीं हो गये ख़ाँ साहब? भला कहीं इन्सान भी इन्सान की क़िस्मत बदल सकता है? ख़ुदा के सामने क्या मै और क्या मेरी हक़ीक़त! बूढ़ा और ज़लील होकर कुत्ते की ज़िन्दगी बसर

میدان جنگ میں ... یہی مالک کی مرضی ہے . اپنے ملک میں تو اِس کی قسمت جاگنے والی نہیں .''

وہی باپ، جو گھڑی بھر پہلے مارے خوشی کے پاگل سا ہو اُٹھا تھا، یہ شبد کان میں پڑتے ہی اُداس ہو گیا اُس نے آنکھوں میں آنسو بھر کر روندھے ہوئے گلے سے کہا— ''حضور، ایسی دعا نہ دیجئے! پردیس کی عزت اور دولت سے تو یہی بہتر ہے کہ یہ وطن میں فقیر بن کر رہے اور بڑی عمر پائے .''

فقیر بولا—''مگر قسمت کے لکھے کو کون میٹ سکتا ہے .''

لڑکے کا باپ ہاتھ باندھ کر کہنے لگا— ''ایسی بات منھ سے نہ نکالئے حضور! اِس بچے کی قسمت آپ کے ہاتھ ہے . بس دعا کیجئے کہ اِس کی عمر بڑی ہو اور یہ وطن ہی میں رہے '

فقیر بڑی خاموشی سے کھڑا کھڑا مسکرا رہا تھا اب تو بوڑھا باپ بے چین ہو اُٹھا اور بولا—''حضور، آپ کے ہاتھ میں سب کچھ ہے . بدل دیجئے—اس بچے کی قسمت بدل دیجئے . قیامت تک آپ کا احسان نہ بھولونگا کوئی بڑی بات نہیں ہے . صرف ایک بار منھ سے کہہ دیجئے حضور!''

یہ کہتے کہتے وہ ایک بار پھر فقیر کے قدم چومنے کے لئے جھکا . مارے غصہ کے فقیر کا چہرہ تمتما اُٹھا . اُس نے لڑکے کے بوڑھے باپ پر ایک نفرت بھری نگاہ ڈالی اور کہا—''دیوانے تو نہیں ہو گئے خاں صاحب؟ بھلا کہیں انسان بھی انسان کی قسمت بدل سکتا ہے؟ خدا کے سامنے کیا میں اور کیا میری حقیقت! بوڑھا اور ذلیل ہوکر کتے کی زندگی بسر

लगा—बुरा हुआ! ज़ोर-ज़बरदस्ती करूँ और कहीं फ़क़ीर फिर साफ़ इनकार कर दे तो भी आफ़त है, अगर कहीं सुलतान को मेरी ग़लती का पता चल गया तो भी आफ़त है! अब तो हिकमत से काम निकालना चाहिये यह सोचते-सोचते उसने हाथ बाँधकर कहा—"बन्दा-नवाज़, यह आप क्या फरमाते है! मै तो बादशाह सलामत के हुक्म से आप को लेने आया हूँ इस मे शक नहीं कि आप अपनी तबीयत के बादशाह है. मगर मै? मै तो बादशाह सलामत का एक नाचीज़ गुलाम हूँ आप न जाएँगे तो आप का क्या बिगड़ेगा, मगर मेरी तो मौत ही आजायगी. इस लिये मुझ पर रहम कीजिये. थोड़ी देर के लिये चले चलिये."

फ़क़ीर मुसकरा कर बोला—"अब आये तुम रास्ते पर. ज़रा ठहर जाओ चलता हूं."

यह कहते-कहते वह फिर लड़के का हाथ देखने लगा और थोड़ी देर बाद बोला—"बड़ा खुश किस्मत बच्चा है खाँ साहब! दुनिया मे खूब नाम कमायेगा रुपये-पैसे से भी भरा-पुरा रहेगा."

यह शब्द सुनते ही लड़के का बूढ़ा बाप बहुत खुश हुआ और फ़क़ीर के कदम चूमने के लिये झुका. फ़क़ीर ने कुछ पीछे हटकर कहा—"हिश! यह क्या करते हो खाँ साहब! सीधे खड़े रहो लड़के का हाथ देखने दो" इसके बाद वह उसी तरह लड़के का हाथ देखने मे मशग़ूल हो गया और कुछ ठहर कर लापरवाही से हाथ छोड़ते-छोड़ते बोला—"मगर यह सब कुछ दूसरे मुल्क में होगा. वहीं पर भरी जवानी में . . दुश्मन के हाथों मारा जायगा . . .

لگا—برا ہوا! زور زبردستی کروں اور کہیں فقیر پھر صاف انکار کردے تو بھی آفت ہے، اگر کہیں سلطان کو میری غلطی کا پتہ چل گیا تو بھی آفت ہے! اب تو حکمت سے کام نکالنا چاہئے یہ سوچتے سوچتے اسنے ہاتھ باندھکر کہا—"بندہ نواز یہ آپ کیا فرماتے ہیں! میں تو بادشاہ سلامت کے حکم سے آپ کو لینے آیا ہوں. اِس میں شک نہیں کہ آپ اپنی طبیعت کے بادشاہ ہیں، مگر میں؟ میں تو بادشاہ سلامت کا ایک ناچیز غلام ہوں. آپ نہ جائینگے تو آپ کا کیا بگڑیگا، مگر میری تو موت ہی آجائیگی. اِس لئے مجھ پر رحم کیجئے. تھوڑی دیر کے لئے چلے چلئے."

فقیر مسکرا کر بولا—"اب آئے تم راستے پر، ذرا ٹھہر جاؤ، چلتا ہوں."

یہ کہتے کہتے وہ پھر لڑکے کا ہاتھ دیکھنے لگا اور تھوڑی دیر بعد بولا—"بڑا خوش قسمت بچہ ہے خاں صاحب! دنیا میں خوب نام کمائے گا روپے پیسے سے بھی بھرا پورا رہیگا."

یہ شبد سنتے ہی لڑکے کا بڈھا باپ بہت خوش ہوا اور فقیر کے قدم چومنے کے لئے جھکا. فقیر نے کچھ پیچھے ہٹ کر کہا—"ہش! یہ کیا کرتے ہو خاں صاحب! سیدھے کھڑے رہو لڑکے کا ہاتھ دیکھنے دو" اس کے بعد وہ اُسی طرح لڑکے کا ہاتھ دیکھنے میں مشغول ہوگیا اور کچھ ٹھہر کر لاپرواہی سے ہاتھ چھوڑتے چھوڑتے بولا—"مگر یہ سب کچھ دوسرے ملک میں ہوگا. وہیں پر بھری جوانی میں ... دشمن کے ہاتھ مارا جائیگا ...

दिया—"जहाँ पनाह, मैंने तो यही सुना है कि नजूम भी एक इल्म है और उसकी हक़ीक़त वही जानते हैं, जो उसका कुछ तजरबा रखते हैं."

सुलतान कुछ हँसकर बोला—'क्या यह मेरे सवाल का जवाब है ? मानता हूं, होशियार आदमी हो तुम ! सुना है, यह नजूमी भोले भाले लोगों को खूब चरका देते और अपना उल्लू सीधा करते हैं. ख़ैर, जाओ, उस नजूमी को महल में ले आओ थोड़ी देर के लिये दिल बहलाव का ही सामान रहेगा.'

यह कह कर सुलतान आगे बढ़ गया. इधर राजे ख़ाँ उस नजूमी के पास पहुंचा वह नजूमी क्या था, कोई फ़कीर था. गेरुए कपड़े, सफ़ेद बाल, सीने पर लम्बी दाढ़ी, तन्दुरुस्त गँठा हुआ जिस्म, सुर्ख चेहरा, चमकीली आँखें. उसके एक हाथ में बाँस का लम्बा डन्डा था और दूसरे हाथ में एक लड़के का हाथ; जिसे वह ग़ौर से देख रहा था. राजे ख़ाँ पास पहुँचा तो भीड़ इधर उधर छंट गई राजे ख़ाँ ने फ़क़ीर पर एक नजर डाली और हुकूमत भरी ऊँची आवाज में कहा—'तुम्हें बादशाह सलामत ने महल में बुलाया है. अभी इसी वक्त !'

यह सुनते ही फ़क़ीर नराज हो उठा. कड़क कर बोला—"क्या कहा, बादशाह सलामत ने बुलाया है ? जा कहदे फकीर किसी का ग़ुलाम नहीं है वह भी अपनी तबीयत का बादशाह है."

राजे ख़ाँ का तमाम रोब, तमाम दबदबा धूल में मिल गया. उसे ग़ुस्सा तो बहुत आया, मगर ग़लती के लिये भी वही जिम्मेदार था. बेचारा सकते की हालत में रह गया और मजबूर होकर सोचने

دیا— "جہاں پناہ، میں نے تو یہی سنا ہے کہ نجوم بھی ایک علم ہے اور اسکی حقیقت وہی جانتے ہیں، جو اسکا کچھ تجربہ رکھتے ہیں۔"

سلطان کچھ ہنس کر بولا — "کیا یہ میرے سوال کا جواب ہے؟ مانتا ہوں، ہوشیار آدمی ہو تم! سنا ہے، یہ نجومی بھولے بھالے لوگوں کو خوب چرکا دیتے اور اپنا الو سیدھا کرتے ہیں۔ خیر، جاؤ، اس نجومی کو محل میں لے آؤ۔ تھوڑی دیر کے لئے دل بہلاؤ کا ہی سامان رہیگا۔"

یہ کہکر سلطان آگے بڑھ گیا۔ ادھر راجے خاں اس نجومی کے پاس پہونچا۔ وہ نجومی کیا تھا کوئی فقیر تھا۔ گیروے کپڑے، سفید بال، سینے پر لمبی داڑھی، تندرست گٹھا ہوا جسم، سرخ چہرہ، چمکیلی آنکھیں۔ اسکے ایک ہاتھ میں بانس کا لمبا ڈنڈا تھا اور دوسرے ہاتھ میں ایک لڑکے کا ہاتھ، جسے وہ غور سے دیکھ رہا تھا۔ راجے خاں پاس پہونچا تو بھیڑ ادھر ادھر چھٹ گئی۔ راجے خاں نے فقیر پر ایک نظر ڈالی اور حکومت بھری اونچی آواز میں کہا— "تجھے بادشاہ سلامت نے محل میں بلایا ہے۔ ابھی اسی وقت!"

یہ سنتے ہی فقیر ناراض ہو اٹھا۔ کڑک کر بولا — "کیا کہا، بادشاہ سلامت نے بلایا ہے؟ جا کہدے فقیر کسی کا غلام نہیں ہے۔ وہ بھی اپنی طبیعت کا بادشاہ ہے۔"

راجے خاں کا تمام رعب تمام دبدبہ دھول میں مل گیا۔ اسے غصہ تو بہت آیا مگر غلطی کے لئے بھی وہی ذمہ دار تھا بیچارہ سکتے کی حالت میں رہ گیا اور مجبور ہوکر سوچنے

हाथ-मुँह धोता, नमाज़ पढ़ता और क़ुरान शरीफ़ की तिलावत करता था. फिर सवेरा होते-होते हवाखोरी करने निकल जाता था इस मौके पर दो बाडी-गार्ड हमेशा उसके पीछे पीछे कुछ फ़ासले पर रहते थे. उस दिन वह आठ बजते-बजते हवा खोरी करने के बाद महल की तरफ़ लौटा जब रघुनाथ जी के मंदिर से मोती महल की तरफ़ मुड़ने वाले रास्ते पर पहुँचा तो देखता क्या है कि एक तरफ़ थोड़ी दूरी पर आदमियों की अच्छी खासी भीड़ जमा है. सुलतान फ़ौरन वहीं ठहर गया, उसने जो पीछे की तरफ़ सर घुमाया, तो एक बाडी गार्ड दौड़ कर क़रीब आ पहुंचा. सुलतान ने उससे कहा—"यह भीड़ क्यों जमा है राजे ख़ाँ? जाकर देखो तो कि क्या बात है?"

राजे ख़ाँ उसी तरफ़ दौड़ता हुआ गया, दौड़ता हुआ आया और हाथ बाँधकर बोला "जहाँ पनाह, कोई हिन्दू फ़क़ीर है. नजूमी जान पड़ता है. लोगों के हाथ देखता और पेशीन गोई करता है"

सुलतान ने मुसकराकर सवाल किया—"क्या तुम इल्म नजूम (ज्योतिष विद्या) पर एतक़ाद रखते हो?"

राजे ख़ाँ सिटपिटा उठा. उससे जवाब देते न बना. वह ज़मीन पर नज़र गड़ाकर खड़ा रह गया सुलतान फिर मुसकराया और मद्धिम आवाज़ में बोला—"जवाब क्यों नहीं देते?"

राजे ख़ाँ और भी घबराया. उसे न तो नजूम का कुछ तजरबा था, न यही पता था कि सुलतान नजूम के बारे में क्या ख़याल रखता है हाँ, उसने यह ज़रूर सुन रखा था कि सुलतान नजूम पर यक़ीन नहीं रखता, इसलिये बड़ी होशियारी से धीरे धीरे जवाब

ہاتھ منھ دھوتا نماز پڑھتا اور قرآن شریف کی تلاوت کرتا تھا۔ پھر سویرا ہوتے ہوتے ہوا خوری کرنے نکل جاتا تھا۔ اس موقعہ پر دو باڈی گارڈ ہمیشہ اُسکے پیچھے پیچھے کچھ فاصلے پر رہتے تھے۔ اس دن وہ آٹھ بجتے بجتے ہوا خوری کرنے کے بعد محل کی طرف لوٹا جب رگھوناتھ جی کے مندر سے موتی محل کی طرف مڑنے والے راستے پر پہونچا تو دیکھتا کیا ہے کہ ایک طرف تھوڑی دوری پر آدمیوں کی اچھی خاصی بھیڑ جمع ہے۔ سلطان فوراً وہیں ٹھہر گیا۔ اُسنے جو پیچھے کی طرف سر گھمایا تو ایک باڈی گارڈ دوڑ کر قریب آپہونچا سلطان نے اُس سے کہا — "یہ بھیڑ کیوں جمع ہے راجے خاں؟ جاکر دیکھو تو کہ کیا بات ہے؟"

راجے خاں اسی طرف دوڑتا ہوا گیا، دوڑتا ہوا آیا اور ہاتھ باندھکر بولا — "جہاں پناہ، کوئی ہندو فقیر ہے۔ نجومی جان پڑتا ہے۔ لوگوں کے ہاتھ دیکھتا اور پیشینگوئی کرتا ہے۔"

سلطان نے مسکرا کر سوال کیا — "کیا تم علم نجوم (جوتش ودیا) پر اعتقاد رکھتے ہو؟"

راجے خاں سٹپٹا اٹھا۔ اُس سے جواب دیتے نہ بنا وہ زمین پر نظر گڑا کر کھڑا رہ گیا۔ سلطان پھر مسکرایا اور مدھم آواز میں بولا — "جواب کیوں نہیں دیتے؟"

راجے خاں اور بھی گھبرایا۔ اسے نہ تو نجوم کا کچھ تجربہ تھا نہ یہی پتہ تھا کہ سلطان نجوم کے بارے میں کیا خیال رکھتا ہے۔ ہاں، اُسنے یہ ضرور سن رکھا تھا کہ سلطان نجوم پر یقین نہیں رکھتا، اسلئے بڑی ہوشیاری سے دھیرے دھیرے جواب

उजाले से चमचमा रहा था, सुलतान टीपू की नामवरी खुशबू की तरह उड़ते-उड़ते हिन्दुस्तान और एशिया से बाहर निकल कर यूरोप तक जा पहुँची थी और फ्रान्स का बहादुर बादशाह नेपोलियन बोना पार्ट भी उससे दोस्ती का रिश्ता जोड़ने के लिये बेचैन हो उठा था.

जो हो, १७७० ईस्वी में सुलतान हैदर अली और अंगरेजों के बीच जो जङ्ग शुरू हुई थी, वह १७८२ ईस्वी में बंगलौर के सुलह-नामे से खतम हो गई और अंगरेजों ने सुलतान टीपू को पूरी तरह हाकिम मान लिया. सचमुच बङ्गलौर की नाकाबन्दी और उसकी हार ईस्ट-इन्डिया कम्पनी की बढ़ती हुई ताकत पर एक ऐसी कड़ी चोट थी कि उससे मदरास, बम्बई और कलकत्ता काँप उठे और लन्दन में मातम के बादल घुमड़ आये. अंगरेजों ने यकीन कर लिया कि सुलतान टीपू के रहते दक्खिनी हिन्दुस्तान में विजारत की उम्मीदें बाँधना भी हमारे लिये फजूल है. फिर भी हिन्दुस्तानी इतिहास के कुछ ऐसे लोग मौजूद थे, जिन्हो ने अंगरेजों को तसल्ली दी—'फिक्र की क्या बात ! कुछ दिनो ठहर जाइये ! जो चीज़ आज तलवार के जोर से हासिल नही हुई वह कल गद्दार लोगों की चाल-बाजी से खुद ही आप के हाथो मे पहुंच जायगी.' बस, इसी उम्मीद और भरोसे पर अंगरेजों ने मदरास की तिजारत पर ही मन को समझा लिया और जाहिरा तौर पर खामोशी अख्तियार कर ली.

दक्खिन के उस रोबीले और दबदबे वाले सुलतान ने एक कायदा बना रक्खा था. वह रोजाना काफी रात रहे बिस्तर छोड़ देता था,

اُجالے سے چمچما رہا تھا' سلطان ٹیپو کی ناموری خوشبو کی طرح اُڑتے اُڑتے هندستان اور ایشیا سے باهر نکل کر یورپ تک جا پہونچی تھی اور فرانس کا بہادر بادشاہ نپولین بونا پارٹ بھی اُس سے دوستی کا رشتہ جوڑنے کے لئے بے چین هو اُٹھا تھا ۔

جو هو' ١٧٧٠ عیسوی میں سلطان حیدر علی اور انگریزوں کے بیچ جو جنگ شروع هوئی تھی' وہ ١٧٨٢ عیسوی میں بنگلور کے صلحنامہ سے ختم هوگئی اور انگریزوں نے سلطان ٹیپو کو پوری طرح حاکم مان لیا ۔ سچ مچ بنگلور کی ناکہ بندی اور اس کی هار ایسٹ انڈیا کمپنی کی بڑھتی هوئی طاقت پر ایک ایسی کڑی چوٹ تھی کہ اُس سے مدراس' بمبئی اور کلکتہ کانپ اُٹھے اور لندن میں ماتم کے بادل گھمڑ آئے انگریزوں نے یقین کرلیا کہ سلطان ٹیپو کے رهتے دکھنی هندستان میں تجارت کی اُمیدیں باندھنا بھی همارے لئے فضول هے ۔ پھر بھی هندستانی اتہاس کے کچھ ایسے لوگ موجود تھے جنھوں نے انگریزوں کو تسلی دی — ' فکر کی کیا بات ! کچھ دنوں ٹھہر جائیے ! جو چیز آج تلوار کے زور سے حاصل نہیں هوئی' وہ کل غدار لوگوں کی چالبازی سے خود هی آپ کے هاتھوں میں پہنچ جائیگی ۔ بس' اِسی اُمید اور بھروسے پر انگریزوں نے مدراس کی تجارت پر هی من کو سمجھا لیا اور ظاهرا طور پر خاموشی اختیار کرلی

دکھن کے اُس رعبیلے اور دبدبے والے سلطان نے ایک قاعدہ بنا رکھا تھا ۔ وہ روزانہ کافی رات رهے بستر چھوڑ دیتا تھا'

पेशीनगोई

(भाई ज़हूर बख़्श)

१७८४ ईस्वी के मार्च महीने का एक सुहावना सवेरा था। राजधानी श्रीरङ्गपट्टन के बाज़ारों, रास्तों और मकानों पर सूरज की सुनहरी किरनें धूप-छाँह का खेल खेल रही थीं. श्री रघुनाथ जी का मंदिर और सुलतान का महल दोनों पास-पास थे और उनके कलश भी आमने-सामने धूप में जगमगा रहे थे, मानो हिन्दू मुस्लिम मेल और सुलतान फतेह अली टीपू की ऊँची तबीयत का दिल-खुश ऐलान कर रहे थे. यह वह ज़माना था, जब दक्खिन मे 'सलतनत ख़ुदादाद'* का जलवा दोपहर के सूरज की तरह अपने पूरे

---

* टीपू मस्तान औलिया नाम के एक फ़क़ीर की दुआ से १७४९ ईस्वी में मैसूर के सुलतान हैदर अली के यहाँ एक शाहज़ादा पैदा हुआ था, जो तवारीख़ में सुलतान फतेह अली टीपू के नाम से मशहूर हैं. उसने अपनी हुकूमत का नाम 'सलतनत ख़ुदादाद' रख छोड़ा था. वह अपने वक़्त में हिन्दुस्तान की आज़ादी का सबसे बड़ा पुजारी था. उसने आज़ादी के लिये किस तरह अपना सब कुछ क़ुरबान कर दिया था, यह दिखलाने के लिये एक बहुत लम्बा मज़मून लिखने की ज़रूरत है. अंगरेज़ उसके नाम से चिढ़ते और उसे बेइज़्ज़त करने के लिये अपने कुत्तों का नाम 'टीपू' रखते थे.

پیشین گوئی

(بھائی ظہور بخش)

۱۷۸۴ عیسوی کے مارچ مہینے کا ایک سہاونا سویرا تھا . راج دھانی شری‌رنگ پٹن کے بازاروں' راستوں اور مکانوں پر سورج کی سنہری کرنیں دھوپ چھاؤں کا کھیل کھیل رہی تھیں . سری رگھو ناتھ جی کا مندر اور سلطان کا محل دونوں پاس پاس تھے اور ان کے کلش بھی آمنے سامنے دھوپ میں جگمگا رہے تھے' مانو هندو مسلم میل اور سلطان فتح علی ٹیپو کی اونچی طبیعت کا دل خوش اعلان کر رہے تھے . یہ وہ زمانہ تھا' جب دکھن میں 'سلطنت خدا داد'* کا جلوہ دوپہر کے سورج کی طرح اپنے پورے

---

*ٹیپو مستان اولیا نام کے ایک فقیر کی دعا سے ۱۷۴۹ عیسوی میں میسور کے سلطان حیدر علی کے یہاں ایک شہزادہ پیدا ہوا تھا' جو تواریخ میں سلطان فتح علی ٹیپو کے نام سے مشہور ہے . اس نے اپنی حکومت کا نام ' سلطنت خدا داد ' رکھ چھوڑا تھا . وہ اپنے وقت میں هندستان کی آزادی کا سب سے بڑا پجاری تھا. اس نے آزادی کے لئے کس طرح اپنا سب کچھ قربان کردیا تھا' یہ دکھلانے کے لئے ایک بہت لمبا مضمون لکھنے کی ضرورت ہے . انگریز اس کے نام سے چڑھتے اور اسے بے عزت کرنے کے لئے اپنے کتے کا نام ' ٹیپو ' رکھتے تھے .

कि रोमन लिपि नागरी लिपि से ज़्यादा अच्छी और कार आमद है तो भी एक तो वह हमारे मुल्क के बाहर की चीज़ है, दूसरे उस मे आवाज़ के लिहाज़ से वह तमाम बाते पूरी तरह नही आसकती कि उर्दू का हर हरफ़ अच्छी तरह अपना मतलब निकाल सके. जैसे ज़े (ز) या ग़ैन (غ) की आवाज़ रोमन लिपि मे अच्छी तरह न ज़ाहिर हो सके गी. और फिर अगर रोमन लिपि मे उर्दू लिख भी जाय तो इस लिपि के जानने वाले वैसे तो उसको पढ़ लेंगे पर माने न समझ सकेंगे. नतीजा यह होगा कि उर्दू पढ़ने वालो का दायरा न बढ़ सकेगा. इसके ख़िलाफ़ अगर हिन्दी लिपि मे उर्दू लिखी जायगी तो इस के माने मतलब हिन्दी के बहुत से पढ़ने वाले समझ लेंगे क्योंकि रोज मर्रा और आम ज़बान हर लिहाज़ से उर्दू हिन्दी की एक ही है.

کہ رومن لپی ناگری لپی سے زیادہ اچھی اور کارآمد ہے تو بھی ایک تو وہ ھمارے ملک کے باھر کی چیز ہے، دوسرے اس میں آواز کے لحاظ سے وہ تمام باتیں پوری طرح نہیں آسکتیں کہ اُردو کا ھر حرف اچھی طرح اپنا مطلب نکال سکے جیسے ز یا غ کی آواز رومن لپی میں اچھی طرح نہ ظاھر ھوسکیگی۔ اور پھر اگر رومن لپی میں اُردو لکھ بھی جائے تو اس لپی کے جاننے والے ویسے تو اُس کو پڑھ لینگے پر معنی نہ سمجھ سکینگے۔ نتیجہ یہ ھوگا کہ اُردو پڑھنے والوں کا دائرہ نہ بڑھ سکیگا۔ اس کے خلاف اگر ھندی لپی میں اُردو لکھی جائیگی تو اس کے معنی مطلب ھندی کے بہت سے پڑھنے والے سمجھ لینگے کیونکہ روز مرہ اور عام زبان ھر لحاظ سے اُردو ھندی کی ایک ھی ہے۔

बदल नहीं सकता जब तक कि उसका मिज़ाज और मुल्क का जुग़राफ़िया न बदल जाय, और यह बात आसानी से नहीं हासिल होती. हर एक मुल्क और क़ौम की ज़रूरत बहुत सी बातों में दूसरी क़ौम और मुल्क से अलग होती है इस लिये हर एक का मिज़ाज और ढग दूसरे के कैरेक्टर में इतना नहीं मिल सकता कि उसकी अलग हस्ती ख़तम हो जाय. अगर आप उर्दू को नागरी लिपि में लिखना शुरू करदें तो उर्दू, उर्दू ही रहेगी. नाम भी चाहे आप बदलने पर तैयार होजायँ मगर उसकी सारी ख़सूसियात न हिन्दी में आजायँगी न हिन्दी की हर विशेषता उर्दू में आसकेगी. क्योंकि एक होते हुए भी सुभाव के लिहाज़ से दोनों ज़बानों के रंग ढग बहुत कुछ बदले हुए हैं और ऐसी सूरत मे हर लिहाज़ से एक हो जाना या उर्दू का हिन्दी में समाकर ख़तम हो जाना मुमकिन नहीं, बल्कि इससे यह फ़ायदा होगा कि उर्दू पढ़ने वालों की गिनती बहुत बढ़ जायगी. नागरी लिपि में वह लोग भी उर्दू पढ़ने लगेंगे जो सिर्फ़ लिपि न पढ़ सकने की वजह से उर्दू नहीं पढ़ रहे हैं. साथ ही टाइप का मसला भी हल हो जायगा और उर्दू से जो नफ़रत एक तबक़े को है वह भी कम हो जायगी.

यह सवाल हो सकता है कि रोमन लिपि क्यों न अख़्तियार की जाय. उसका दायरा तो बहुत बड़ा है. क़रीब क़रीब सारी दुनिया उसी लिपि में लिख पढ़ रही है उसके कारन और ज़बानों से भी जान पहचान हो जायगी. रोमन लिपि नागरी लिपि से ज़्यादा साइन्टफ़िक और साफ़ भी है इस लिये उसी लिपि को अपनाना चाहिये. इसका जवाब यह है कि अगर यह मान भी लिया जाय

بدل نہیں سکتا جب تک کہ اسکا مزاج اور ملک کا جغرافیہ نہ بدل جائے، اور یہ بات آسانی سے نہیں حاصل ہوتی ۔ ہر ایک ملک اور قوم کی ضرورت بہت سی باتوں میں دوسری قوم اور ملک سے الگ ہوتی ہے اس لئے ہر ایک کا مزاج اور ڈھنگ دوسرے کے کیرکٹر میں اتنا نہیں مل سکتا کہ اُسکی الگ ہستی ختم ہو جائے ۔ اگر آپ اُردو کو ناگری لپی میں لکھنا شروع کردیں تو اُردو، اُردو ہی رہے گی ۔ نام بھی چاہے آپ بدلنے پر تیار ہو جائیں مگر اس کی ساری خصوصیات نہ ہندی میں آجائینگی نہ ہندی کی ہر وشیشتا اُردو میں آسکے گی ۔ کیونکہ ایک ہوتے ہوئے بھی سوبھاؤ کے لحاظ سے دونوں زبانوں کے رنگ ڈھنگ بہت کچھ بدلے ہوئے ہیں اور ایسی صورت میں ہر لحاظ سے ایک ہو جانا یا اُردو کا ہندی میں سما کر ختم ہو جانا ممکن نہیں، بلکہ اس سے یہ فائدہ ہوگا کہ اُردو پڑھنے والوں کی گنتی بہت بڑھ جائیگی ناگری لپی میں وہ لوگ بھی اُردو پڑھنے لگیں گے جو صرف لپی نہ پڑھ سکنے کی وجہ سے اُردو نہیں پڑھ رہے ہیں ۔ ساتھ ہی ٹائپ کا مسئلہ بھی حل ہو جائیگا اور اُردو سے جو نفرت ایک طبقہ کو ہے وہ بھی کم ہوجائیگی

یہ سوال ہو سکتا ہے کہ رومن لپی کیوں نہ اختیار کی جائے ۔ اُس کا دائرہ تو بہت بڑا ہے ۔ قریب قریب ساری دنیا اُسی لپی میں لکھ پڑھ رہی ہے ۔ اُسکے کارن اور زبانوں سے بھی جان پہچان ہو جائیگی ۔ رومن لپی ناگری لپی سے زیادہ سائنٹفک اور صاف بھی ہے اس لئے اُسی لپی کو اپنانا چاہئے اس کا جواب یہ ہے کہ اگر یہ مان بھی لیا جائے

जायगा जिस से लिखाई हाथ की लिखाई के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा जलदी हो जाती है. इन ख़राबियों को देखकर उर्दू ज़बान की तरक़्क़ी के लिये ज़रूरी मालूम होता है कि अब उसकी लिपि बदल दी जाय ताकि किताब भी आसानी से छप सके और बच्चे भी जलदी हुरूफ़ पहचान कर जल्द लिख पढ़ सकें. इस सवाल पर हमको धीरज के साथ ग़ौर करना है. जज़्बात से ज़्यादा उर्दू की बेहतरी और तरक़्क़ी पर ग़ौर करना है. कुछ लोग यह भी कहते हैं कि लिपि बदलने से उर्दू ज़बान ही बदल जायगी क्योंकि जिस ज़बान की लिपि ली जायगी वह उसपर इस तरह छा जायगी कि उर्दू उर्दू न रह जायगी. ऐसी सूरत मे लिपि का बदलना ख़तरनाक है. मगर मैं यह कहना चाहता हूं कि यह ख़याल सही नही. ख़ुद उर्दू आज तक फ़ारसी लिपि मे लिखी जाती है लेकिन किसी को धोका नहीं हुआ, किसीने उर्दू को फ़ारसी नहीं कहा. उर्दू अपनी एक ख़ास हैसियत और विशेषता के साथ दुनिया मे अपनी जगह बनाये हुए है. तुर्कों ने रोमन लिपि को अपना लिया है पर उसको सब तुर्की ही समझते हैं. कोई अंगरेज़ी या जर्मनी वग़ैरा उसको नहीं समझता. सिन्धी ज़बान अब तक अरबी लिपि में लिखी जाती है मगर सिन्धी ज़बान को किस ने अरबी समझा या कब वह अरबों की चीज़ हो सकी ? यह तारीख़ी मिसालें हमारे सामने हैं फिर इस क़िस्म का डर कि लिपि बदल जाने से उर्दू भी बदल जायगी, बेबुनियाद है.

दर असल ज़बान लिपि के कारन नहीं बल्कि अपने गुनों के कारन ज़िन्दा रहती और बढ़ती है. लिबास बदलने से कोई क़ौम, कोई आदमी

جائیگا جس سے لکھائی ہاتھ کی لکھائی کے مقابلہ میں کہیں زیادہ جلدی ہو جاتی ہے . ان خرابیوں کو دیکھکر اردو زبان کی ترقی کے لئے ضروری معلوم ہوتا ہے کہ اب اس کی لپی بدل دی جائے تاکہ کتاب بھی آسانی سے چھپ سکے اور بچے بھی جلدی حروف پہچان کر جلد لکھ پڑھ سکیں . اس سوال پر ہم کو دھیرج کے ساتھ غور کرنا ہے . جذبات سے زیادہ اردو کی بہتری اور ترقی پر غور کرنا ہے . کچھ لوگ یہ بھی کہتے ہیں کہ لپی بدلنے سے اردو زبان ہی بدل جائیگی کیونکہ جس زبان کی لپی لی جائیگی وہ اس پر اس طرح چھا جائیگی کہ اردو اردو نہ رہ جائیگی . ایسی صورت میں لپی کا بدلنا خطرناک ہے . مگر میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ یہ خیال صحیح نہیں . خود اردو آج تک فارسی لپی میں لکھی جاتی ہے لیکن کسی کو دھوکا نہیں ہوا ' کسی نے اردو کو فارسی نہیں کہا . اردو اپنی ایک خاص حیثیت اور وشیشتا کے ساتھ دنیا میں اپنی جگہ بنائے ہوئے ہے . ترکوں نے رومن لپی کو اپنا لیا ہے پر اس کو سب ترکی ہی سمجھتے ہیں . کوئی انگریزی یا جرمنی وغیرہ اس کو نہیں سمجھتا . سندھی زبان اب تک عربی لپی میں لکھی جاتی ہے مگر سندھی زبان کو کس نے عربی سمجھا یا کب وہ عربوں کی چیز ہو سکی ؟ یہ تاریخی مثالیں ہمارے سامنے ہیں پھر اس قسم کا ڈر کہ لپی بدل جانے سے اردو بھی بدل جائیگی' بے بنیاد ہے .

در اصل زبان لپی کے کارن نہیں بلکہ اپنے گنوں کے کارن زندہ رہتی اور بڑھتی ہے . لباس بدلنے سے کوئی قوم' کوئی آدمی

इस टाइप में किताब देखकर. अच्छे खूबसूरत (नस्तालीक़) टाइप बनाने के लिये हिन्दुस्तान ने लाखों रुपये खर्च किये, बहुत सा वक़्त दिया, फिर भी कोई बात अच्छी न हो सकी क्योंकि मौजूदा उर्दू लिपि में इतने जोड़ हैं कि उनका मिलाना और जल्दी कम्पोज़ भी कर लेना बड़ा मुश्किल काम है.

उर्दू लिपि के एक दूसरे दोष पर भी नज़र डालिये. आवाज़ के लिहाज़ से कुछ हरूफ़ ऐसे हैं जो मिलते जुलते हैं. उनका फ़रक़ आवाज़ से नहीं मालूम होता. मिसाल के लिये से (ث) स्वाद (ص) सीन (س) और जाल (ذ) जे (ز) ज़्वाद (ض) ज़ो (ظ) को ले लीजिये. इनको सुनकर आसानी से नहीं समझ मे आता कि शब्द किस हरफ़ से लिखा जाय. नतीजा यह होता है कि लिखावट में काफ़ी ग़लतियाँ हो जाती हैं और सही न लिखने वाला नालायक समझा जाता है. हालाँकि लिखने वाले से ज़्यादा लिखावट की ख़राबी होती है. इसी सिलसिले मे इस मुशिकल पर भी नज़र डाल लीजिये कि उर्दू लिपि में इतने जोड़ मिलाने पड़ते हैं कि बच्चों को हरूफ़ पहचानने में वह आसानी नहीं होती जो अलग अलग हरूफ़ में होती है मेरा मतलब नागरी और रोमन लिपियो मे है. जितनी जल्दी बच्चा इन लिपियों में लिखना पढ़ना सीख लेगा, उर्दू लिपि में उतनी जल्दी नहीं पढ़ सकता. यह ख़याल कि हाथ से उर्दू लिपि और लिपियो की निस्बत जल्दी लिखी जाती है, सही है मगर जैसा मैंने कहा यह ज़माना मशीन का ज़माना है, हाथ से लिखने की ज़रूरत बहुत नहीं रह गई. जो कुछ है भी वह भी दस बीस साल मे नहीं रह जायगी. टाइप राइटर और दूसरी मशीनो से काम लिया

اس ٹائپ میں کتاب دیکھکر ۔ اچھے خوبصورت (نستعلیق) ٹائپ بنانے کے لئے ہندستان نے لاکھوں روپے خرچ کئے ' بہت سا وقت دیا ' پھر بھی کوئی بات اچھی نہ ہوسکی کیونکہ موجودہ اردو لپی میں اتنے جوڑ ہیں کہ ان کا ملانا اور جلدی کمپوز بھی کرلینا بڑا مشکل کام ہے ۔

اردو لپی کے ایک دوسرے دوش پر بھی نظر ڈالئے ۔ آواز کے لحاظ سے کچھ حروف ایسے ہیں جو ملتے جلتے ہیں ان کا فرق آواز سے نہیں معلوم ہوتا ۔ مثال کے لئے ث ' ص ' س ' اور ذ ' ز ' ض اور ظ کو لے لیجئے ۔ ان کو سن کر آسانی سے نہیں سمجھ میں آتا کہ شبد کس حروف سے لکھا جائے ۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ لکھاوٹ میں کافی غلطیاں ہوجاتی ہیں اور صحیح نہ لکھنے والا نالائق سمجھا جاتا ہے ۔ حالانکہ لکھنے والے سے زیادہ لکھاوٹ کی خرابی ہوتی ہے اسی سلسلہ میں اس مشکل پر بھی نظر ڈال لیجئے کہ اردو لپی میں اتنے جوڑ ملانے پڑتے ہیں کہ بچوں کو حروف پہچانے میں وہ آسانی نہیں ہوتی جو الگ الگ حروف میں ہوتی ہے ۔ میرا مطلب ناگری اور رومن لپیوں سے ہے ۔ جتنی جلدی بچہ ان لپیوں میں لکھنا پڑھنا سیکھ لیگا ' اردو لپی میں اتنی جلدی نہیں پڑھ سکتا ۔ یہ خیال کہ ہاتھ سے اردو لپی اور لپیوں کی نسبت جلدی لکھی جاتی ہے ' صحیح ہے مگر جیسا میں نے کہا یہ زمانہ مشین کا زمانہ ہے ' ہاتھ سے لکھنے کی ضرورت بہت نہیں رہگئی ۔ جو کچھ ہے بھی وہ بھی دس بیس سال میں نہیں رہ جائیگی ۔ ٹائپ رائٹر اور دوسری مشینوں سے کام لیا

है. और फिर जब किसी न किसी तरह किताब खतम होती है तो फिर आप उसकी ग़लतियों को दुरुस्त करते हैं और कातिब चाक़ू से अपनी लिखी हुई इबारत को छीलता है या कागज़ काट कर दूसरे काग़ज़ पर लिख कर चिप्पी लगाता है फिर प्रूफ़ के लिये यही कातिब का लिखा हुआ काग़ज़ पत्थर पर जाता है और जब प्रूफ़ की ग़लतियाँ बनाई जाती है तो पत्थर पर लिखने वाला उलटे हरूफ लिखकर ग़लतियाँ बनाता है फिर कहीं आखिरी बार मशीन पर छपने के लिये यह किताब जाती है. यह सब तरीक़ा इतना तूलानी है कि मालूम होता है किताब का छपना एक मुल्क से दूसरे मुल्क का सफ़र करना है. ज़माना जल्दी चाहता है मगर तरीक़ा इसकी इजाज़त नहीं देता. नतीजा यह है कि बड़ी कठिनाइयों के बाद किताब छपती है. इसका असर बाज़ार पर भी बुरा पड़ता है और किताब छापने वाले पर भी. अब अगर यही चीज़ टाइप में छपती होती तो कितनी जल्दी हो जाती एक कातिब से लिखाने की जगह आप बहुत से कम्पोज़ीटर लगा सकते थे. न खत बदलने का डर होता और न ग़लती दुरुस्त करने में कातिब को और पत्थर पर हरूफ़ बनाने वाले को छील छील कर, मिटा मिटा कर शब्द बदलने पड़ते. एक ग़लती पर टाइप हटा कर आसानी से दूसरा टाइप लगादेते और फ़ौरन किताब छप जाती.

आप कहेंगे कि उर्दू के टाइप भी हैं किताबें, अखबार, रिसाले वग़ैरा टाइप ही में छापे जायें जैसे ईरान, मिस्र, अरब में होता है. लेकिन दिक़्क़त यह है कि यह टाइप इतने खूबसूरत नहीं होते जितना आप चाहते हैं, आप की नज़रों को तकलीफ़ होती है

ہے. اور پھر جب کسی نہ کسی طرح کتاب ختم ہوتی ہے تو پھر آپ اس کی غلطیوں کو درست کرتے ہیں اور کاتب چاقو سے اپنی لکھی ہوئی عبارت کو چھیلتا ہے یا کاغذ کاٹ کر دوسرے کاغذ پر لکھکر چپی لگاتا ہے . پھر پروف کے لئے یہی کاتب کا لکھا ہوا کاغذ پتھر پر جاتا ہے اور جب پروف کی غلطیاں بنائی جاتی ہیں تو پتھر پر لکھنے والا الٹے حروف لکھکر غلطیاں بناتا ہے پھر کہیں آخری بار مشین پر چھپنے کے لئے یہ کتاب جاتی ہے . یہ سب طریقہ اتنا طولانی ہے کہ معلوم ہوتا ہے کہ کتاب کا چھپنا ایک ملک سے دوسرے ملک کا سفر کرنا ہے . زمانہ جلدی چاہتا ہے مگر طریقہ اس کی اجازت نہیں دیتا . نتیجہ یہ ہے کہ بڑی کٹھنائیوں کے بعد کتاب چھپتی ہے . اس کا اثر بازار پر بھی برا پڑتا ہے اور کتاب چھاپنے والے پر بھی . اب اگر یہی چیز ٹائپ میں چھپتی ہوتی تو کتنی جلدی ہوجاتی . ایک کاتب سے لکھانے کی جگہ آپ بہت سے کمپوزیٹر لگا سکتے تھے . نہ خط بدلنے کا ڈر ہوتا اور نہ غلطی درست کرنے میں کاتب کو اور پتھر پر حروف بنانے والے کو چھیل چھیل کر، مٹا مٹا کر شبد بدلنے پڑتے . ایک غلطی پر ٹائپ ہٹاکر آسانی سے دوسرا ٹائپ لگا دیتے اور فوراً کتاب چھپ جاتی .

آپ کہینگے کہ اُردو کے ٹائپ بھی ہیں . کتابیں، اخبار، رسالے وغیرہ ٹائپ ہی میں چھاپے جائیں جیسے ایران، مصر، عرب میں ہوتا ہے . لیکن دقت یہ ہے کہ یہ ٹائپ اتنے خوبصورت نہیں ہوتے جتنا آپ چاہتے ہیں . آپ کی نظروں کو تکلیف ہوتی ہے

जबान का बोल बाला था इस लिये रिवाज और आसानी के लिहाज से उर्दू को यही ढाँचा देदिया गया लेकिन आज इसी ढाँचे से जबान की तरक्क़ी मे रुकावटें नजर आती हैं. उस समय प्रेस न था. हाथ की लिखाई होती थी इस लिये कोई दिक़्क़त न थी. अब यह बात नहीहै. यह जमाना मशीन का जमाना है और जमाने के साथ हमको चलना है. जबान को भी इसी रास्ते पर गुज़रना है फारसी खत कितना ही खूबसूरत सही मगर छपाने मे जितनी कठिनाइयाँ हैं इनको देख कर इस खूबसूरती से हाथ उठाना पड़ता है. ऐसा सोना किस काम का जिससे क़दम उठाना दुशवार हो जाय, या खुद सुन्दरता पसीना पसीना हो जाय आइये जरा गौर करके उर्दू के मौजूदा खत की खराबियो पर एक सरसरी नजर डालें और फिर सोचे कि आखिर इसका इलाज क्या है.

जब कभी कोई किताब आप छपाना चाहते हैं तो सब से पहले कातिब की तलाश होती है और इस खयाल से कि कई खत न होजाये, आप इस पर जोर देते हैं कि एक ही लिखने वाला शुरू से आखिर तक रहे ताकि खत न बदले लिखाई मे फरक़ न आये. कातिब खत को खूबसूरत रखने के लिये हाथ रोक रोक कर क़लम चलाता है जिसका नतीजा यह होता है कि किताब देर मे लिखी जाती है. फिर इसके अलावा वह मजदूर पेशा होने के कारन जिन्दगी की और जरूरतो की उलझन में भी पड़ा रहता है बीमार भी होता है, ग़ल्ला भी लाता है, किसी की तीमार दारी भी करता है ग़रज कि दूसरी परेशानियो की से पूरा वक़्त मुशकिल से आप के काम में दे सकता

زبان کا بول بالا تھا اسلئے رواج اور آسانی کے لحاظ سے اُردو کو یہی ڈھانچا دیدیا گیا . لیکن آج اسی ڈھانچے سے زبان کی ترقی میں رکاوٹیں نظر آتی ہیں . اُس سمے پریس نہ تھا . ہاتھ کی لکھائی ہوتی تھی اسلئے کوئی دقت نہ تھی . اب یہ بات نہیں ہے . یہ زمانہ مشین کا زمانہ ہے اور زمانے کے ساتھ ہم کو چلنا ہے . زبان کو بھی اِسی راستہ پر گذرنا ہے . فارسی خط کتنا ہی خوبصورت سہی مگر چھپانے میں جتنی کٹھنائیاں ہیں ان کو دیکھکر اس خوبصورتی سے ہاتھ اُٹھانا پڑتا ہے . ایسا سونا کس کام کا جس سے قدم اُٹھانا دشوار ہوجائے یا خود سندرتا پسینہ پسینہ ہوجائے . آئیے ذرا غور کرکے اُردو کے موجودہ خط کی خرابیوں پر ایک سر سری نظر ڈالیں اور پھر سوچیں کہ آخر اسکا علاج کیا ہے ؟

جب کبھی کوئی اُردو کتاب آپ چھپانا چاہتے ہیں تو سب سے پہلے کاتب کی تلاش ہوتی ہے اور اس خیال سے کہ کئی خط نہ ہوجائیں، آپ اس پر زور دیتے ہیں کہ ایک ہی لکھنے والا شروع سے آخیر تک رہے تاکہ خط نہ بدلے، لکھائی میں فرق نہ آئے کاتب خط کو خوبصورت رکھنے کے لئے ہاتھ روک روک کر قلم چلاتا ہے جس کا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ کتاب دیر میں لکھی جاتی ہے . پھر اسکے علاوہ وہ مزدور پیشہ ہونے کے کارن زندگی کی اور ضرورتوں کی الجھن میں بھی پڑا رہتا ہے بیمار بھی ہوتا ہے، غلہ بھی لاتا ہے، کسی کی تیمارداری بھی کرتا ہے غرض کہ دوسری پریشانیوں کی وجہ سے پورا وقت مشکل سے آپ کے کام میں دے سکتا

उस वक्त हर मैदान में ईरानी असर जाहिर हो रहा था. जिन्दगी की हर हरकत में एक तरीक़ा उभर रहा था. खाने पहनने, मिलने जुलने, फन, मजहब, क़ौमियत हर एक मे तेजी के साथ एक तबदीली हो रही थी. नया कलचर न ख़ालिस हिन्दुआना था न ख़ालिस इसलामी, दोनों के मेल जोल और रहन सहन का असर लेकर एक नई तहज़ीब, नई जिन्दगी सामने आरही थी. ऐसी हालत में लोगो की जबान न संस्कृत रह सकती थी न फारसी, बल्कि दोनो की मिलावट या लगाव से नई तहज़ीब, नये विचारो को एक नये ढग और नई जबान से जाहिर करने की जरूरत महसूस हुई. इसलिये. हिन्दी के ज्यादा से ज्यादा शब्द वग़ैरा लेकर फारसी लिपि में लिखना शुरू कर दिया गया. अच्छा हुआ या बुरा हुआ इसका फैसला इस समय करना तो मुशकिल है और शायद इस की जरूरत भी इस मजमून के लिहाज से नही है. हम को तो इस वक्त यह देखना है कि इस समय उर्दू जिस लिपि में लिखी जारही है वह हमारी जरूरत और आसानी के लिहाज़ से कहाँ तक मुनासिब है.

कोई जबान अपने साथ अपने लिये लिपि लेकर नहीं पैदा होती. जिस मुल्क में पैदा होती है वहीं के लिहाज से उसकी लिपि भी बन जाती है क्योंकि आवाज़ आबो हवा के असर से हलक़ (कन्ठ) से निकलती है और जिस तरह वहाँ के रहने वाले आवाज निकालते हैं और जिस क़िस्म के शब्द बनते हैं उन को अदा करने के लिये उसी सरज़मीन का ढांचा ज्यादा सही और आसान भी होता है. इस लिहाज से उर्दू को हिन्दुस्तान ही के किसी ढांचे में ढाला जाना चाहिये था. मगर जैसा हमने ऊपर कहा है उस वक़्त चूंकि फारसी

اس وقت ھر میدان میں ایرانی اثر ظاھر ھو رھا تھا زندگی کی ھر حرکت میں ایک طریقہ ابھر رھا تھا . کھانے پہنلے' ملنے جلنے' فن' مذھب' قومیت ھر ایک میں تیزی کے ساتھ ایک تبدیلی ھو رھی تھی . نیا کلچر نہ خالص ھندوانہ تھا نہ خالص اسلامی' دونوں کے میل جول اور رھن سہن کا اثر لے کر ایک نئی تہذیب' نئی زندگی سامنے آرھی تھی . ایسی حالت میں لوگوں کی زبان نہ سنسکرت رہ سکتی تھی نہ فارسی' بلکہ دونوں کی ملاوٹ یا لگاو سے نئی تہذیب' نئے وچاروں کو ایک نئے ڈھنگ اور نئی زبان سے ظاھر کرنے کی ضرورت محسوس ھوئی . اسلئے ھندی کے زیادہ سے زیادہ شبد وغیرہ لے کر فارسی لپی میں لکھنا شروع کردیا گیا . اچھا ھوا یا برا ھوا اس کا فیصلہ اِس سمے کرنا تو مشکل ھے اور شائد اس کی ضرورت بھی اس مضمون کے لحاظ سے نہیں ھے . ھم کو تو اس وقت یہ دیکھنا ھے کہ اِس سمے اُردو جس لپی میں لکھی جارھی ھے وہ ھماری ضرورت اور آسانی کے لحاظ سے کہاں تک مناسب ھے .

کوئی زبان اپنے ساتھ اپنے لئے لپی لے کر نہیں پیدا ھوتی . جس ملک میں پیدا ھوتی ھے وھیں کے لحاظ سے اس کی لپی بھی بن جاتی ھے کیونکہ آواز آب و ھوا کے اثر سے حلق (کنٹھ) سے نکلتی ھے اور جس طرح وھاں کے رھنے والے آواز نکالتے ھیں اور جس قسم کے شبد بنتے ھیں ان کو ادا کرنے کے لئے اسی سر زمین کا ڈھانچا زیادہ صحیح اور آسان بھی ھوتا ھے . اس لحاظ سے اُردو کو ھندستان ھی کے کسی ڈھانچے میں ڈھالا جانا چاھئے تھا . مگر جیسا ھم نے اوپر کہا ھے اُسوقت چونکہ فارسی

विदेशी न सही तो विदेशियों की ऐसी होगई है. गोया किसी हिन्दुस्तानी को अगर पतलून पहना दिया जाय तो वह हिन्दुस्तानी न रह जायगा या संस्कृत के शब्द आजाने के कारन उर्दू वालों को हिन्दी को अपनी चीज न समझना ऐसा ही है जैसे इस जमाने मे किसी को गेरूआ वस्त्र मे देख कर हिन्दुस्तानी कहने से शर्माना. उर्दू से हिन्दी वालों के बैर की सब से बड़ी वजह इसका वह रूप है जिस में यह लिखी जाती है. मेरा मतलब रस्मुलख़त यानी लिपि से है. इसकी लिपि क़रीब क़रीब फ़ारसी है. इस भेस मे इसको हिन्दी वाले देख कर यक़ीन करलेते हैं कि यह हिन्दुस्तानी नहीं और इस ख़याल के साथ ही नफ़रत की एक लहर दौड़ जाती है. हालाँकि अगर ज़रा भी धीरज के साथ ग़ौर किया जाय तो यह ख़याल धुऍं की तरह फ़ौरन आँखोंसे ओझल हो जाता है उर्दू का इस लिपि में होना ताज्जुब की बात नहीं बल्कि एक लिहाज़ से ज़रूरी था. जिस वक्त इसकी पैदायश हुई उससे बहुत पहले से हिन्दुस्तान में फ़ारसी ज़बान सरकारी ज़बान थी. उसका ज़ोर इतना था कि कोई कोई हिन्दी की किताबें भी इसी ज़बान मे उस वक्त लिखी गईं. जब यह ज़बान बोल चाल से बढ़कर लिखावट में भी आने लगी तो सामने सब से पहला ढाँचा फ़ारसी ज़बान का मिला. उसका रिवाज और कारोबार ज्यादा और ऊँचा समझा जाता था. बहती गंगा मे कौन हाथ धोना न चाहेगा ? इस नई ज़बान को भी फ़ारसी लिपि मे लिखना शुरू कर दिया गया और यह वक़्त की ज़रूरतों की पाली हुई चीज़ और लोगो के मेल जोल और एकता की निशानी इसी तरह से आगे बढ़ने लगी. ज़बान ही पर नहीं,

ودیشی نہ سہی تو ودیشیوں کی ایسی ہوگئی ہے۔ گویا کسی ہندستانی کو اگر پتلون پہنا دیا جائے تو وہ ہندستانی نہ رہ جائیگا یا سنسکرت کے شبد آجانے کے کارن اُردو والوں کا ہندی کو اپنی چیز نہ سمجھنا ایسا ہی ہے جیسے اِس زمانے میں کسی کو گیروا بستر میں دیکھ کر ہندستانی کہنے سے شرمانا اُردو سے ہندی والوں کے بیر کی سب سے بڑی وجہ اس کا وہ روپ ہے جس میں یہ لکھی جاتی ہے۔ میرا مطلب رسم الخط یعنی لپی سے ہے۔ اس کی لپی قریب قریب فارسی ہے۔ اِس بھیس میں اس کو ہندی والے دیکھ کر یقین کرلیتے ہیں کہ یہ ہندستانی نہیں اور اس خیال کے ساتھ ہی نفرت کی ایک لہر دوڑ جاتی ہے۔ حالانکہ اگر ذرا بھی دھیرج کے ساتھ غور کیا جائے تو یہ خیال دھوئیں کی طرح فوراً آنکھوں سے اوجھل ہوجاتا ہے۔ اُردو کا اس لپی میں ہونا تعجب کی بات نہیں بلکہ ایک لحاظ سے ضروری تھا۔ جس وقت اِس کی پیدائش ہوئی اس سے بہت پہلے سے ہندستان میں فارسی زبان سرکاری زبان تھی۔ اس کا زور اتنا تھا کہ کوئی کوئی ہندی کی کتابیں بھی اِسی زبان میں اس وقت لکھی گئیں۔ جب یہ زبان بول چال سے بڑھ کر لکھاوٹ میں بھی آنے لگی تو سامنے سب سے پہلا ڈھانچہ فارسی زبان کا ملا۔ اُس کا رواج اور کاروبار زیادہ اور اونچا سمجھا جاتا تھا۔ بہتی گنگا میں کون ہاتھ دھونا نہ چاہیگا؟ اِس نئی زبان کو بھی فارسی لپی میں لکھنا شروع کردیا گیا اور یہ وقت کی ضرورتوں کی پالی ہوئی چیز اور لوگوں کے میل جول اور ایکتا کی نشانی اِسی طرح سے آگے بڑھنے لگی۔ زبان ہی پر نہیں'

उर्दू लिपि

(डाक्टर एजाज़ हुसैन इलाहाबाद यूनिवर्सिटी)

दुनिया मे झगडा सदा इस बात पर होता है कि फलाँ चीज़ हमारी है उसकी नही, लेकिन हिन्दी उर्दू वालों का झगडा इसके बिलकुल उलटा है यहाँ इस बात पर झगड़ा है कि दोनों तरफ से यह कहा जारहा है कि यह चीज़ हमारी नही तुम्हारी है, इस को ले लो, जो चाहो करो मगर हमारे सामने से हटा दो. मिसाल के लिये उर्दू ज़बान ही को ले लीजिये. ।यह असल मे हिन्दी ज़बान की ही एक सूरत या शाख़ है. इसकी ग्रामर, इसके शब्द, महावरे, कहावतें सब हिन्दी या हिन्दुस्तानी हैं. इसकी पैदायश भी यहीं हुई, इसके परवान चढ़ाने वाले सौ फीसदी हिन्दुस्तानी हैं मगर फिर भी हिन्दी वाले इसे अपनाने को तैयार नही. कम या ज्यादा यही हाल उर्दू वालो का है. वह हिन्दुस्तान के होते हुए भी हिन्दी को अपनी ज़बान कहने के लिये तैयार नहीं. इस ख़याल के पीछे कारन तो बहुत से है मगर एक ख़ास कारन ज़बान को ज़बान न समझने का है. इसको कुछ ख़ास लोगो या ख़ास तबक़े की मिलकियत क़रार देना है. इसकी मिलती जुलती बातों से ज्यादा इसकी उन बातो पर ज़ोर दिया जाता है जो एक दूसरे को अलग करती हैं. मिसाल के लिये उर्दू में फारसी अरबी के अलफ़ाज़ आजाने की वजह से हिन्दी वाले इसे हिन्दी मानने को राज़ी नहीं, कहते हैं यह हमारी चीज़ नहीं रह गई,

اُردو لپی

(ڈاکٹر اعجاز حسین' الہ آباد یونیورسٹی)

دنیا میں جھگڑا سدا اس بات پر ہوتا ہے کہ فلاں چیز ہماری ہے اس کی نہیں' لیکن ہندی اُردو والوں کا جھگڑا اِس کے بالکل اُلٹا ہے یہاں اس پر جھگڑا ہے کہ دونوں طرف سے یہ کہا جا رہا کہ یہ چیز ہماری نہیں، تمہاری ہے' اِس کو لے لو' جو چاہو کرو مگر ہمارے سامنے سے ہٹا دو مثال کے لئے اُردو زبان ہی کو لے لیجئے . یہ اصل میں ہندی زبان کی ہی ایک صورت یا شاخ ہے . اِس کی گرامر' اس کے شبد' محاورے' کہاوتیں سب ہندی یا ہندستانی ہیں . اِس کی پیدائش بھی یہیں ہوئی' اِس کے پروان چڑھانے والے سو فیصدی ہندستانی ہیں مگر پھر بھی ہندی والے اسے اپنانے کو تیار نہیں . کم یا زیادہ یہی حال اُردو والوں کا ہے . وہ ہندستان کے ہوتے ہوئے بھی ہندی کو اپنی زبان کہنے کے لئے تیار نہیں . اس خیال کے پیچھے کارن تو بہت سے ہیں مگر ایک خاص کارن زبان کو زبان نہ سمجھنے کا ہے اِس کو کچھ خاص لوگوں یا خاص طبقے کی ملکیت قرار دینا ہے اِس کی ملتی جلتی باتوں سے زیادہ اِسکی اُن باتوں پر زور دیا جاتا ہے جو ایک دوسرے کو الگ کرتی ہیں . مثال کے لئے اُردو میں فارسی عربی کے الفاظ آجانے کی وجہ سے ہندی والے اسے ہندی ماننے کو راضی نہیں' کہتے ہیں یہ ہماری چیز نہیں رہ گئی'

वालो के खेमे में या जंग के भयानक दिनो को ज्यादा क़रीब लाने वालो के खेमे में, इन्सान दोस्तो के खेमे मेंया इन्सान दुश्मनो के खेमे में, ज़िन्दगी के खेमे में या मौत के खेमे में.

अमरीका की काली करतूतों के कारन दुनिया हाइड्रोजन बम वाले महा भारत की ओर बढ़ती जा रही है—ऐसा महाभारत जिसमें धर्मराज युधिष्टिर तो बचेंगे नहीं दुर्योधन की क्या बिसात. मगर भारत जिस महाभारत की ओर बढ़ रहा है उसका रूप रंग कुछ और ही है. भारत, जवाहर लाल जी की अगुवाई मे भारत के आस-पास के देशो में जिस आपसी सम्बन्ध के लिये कोशिश कर रहा है वह एशिया मे इतिहास के एक शानदार पुराने पन्ने को फिर से खोलने जा रही है. वह वक्त जल्दी ही आयेगा जबकि भारत इन आज़ाद, ख़ुशहाल देशो के आईने में अपना मुस्कराता मुखड़ा देख सकेगा और वह मुल्क भी भारत के हृदय में अपनी ख़ूबसूरत तस्वीर देखकर ख़ुश होगे. उस समय एशिया के इस हिस्से में भारत ही नहीं महाभारत की, यानी बड़े भारत की स्थापना होगी, जिसका आधार मेल, मुहब्बत होगा, जिसका आदर्श शान्ति और प्रगति होगा और जिसकी कामयाबी इस बात में होगी कि जनता ख़ुशहाल है और तरक़्क़ी करती जा रही है. हम प्रधानमंत्री की इस तरह की हर कोशिश की कामयाबी चाहते हैं.

والوں کے خیمے میں یا جنگ کے بھیانک دنوں کو زیادہ قریب لانے والوں کے خیمے میں' انسان دوستوں کے خیمے میں یا انسان دشمنوں کے خیمے میں' زندگی کے خیمے میں یا موت کے خیمے میں .

امریکا کی کالی کرتوتوں کے کارن دنیا ہائیڈروجن بم والے مہا بھارت کی اور بڑھتی جارہی ہے - ایسا مہا بھارت جس میں دھرم راج یدھشٹر تو بچینگے نہیں دریودھن کی کیا بساط . مگر بھارت جس مہا بھارت کی اور بڑھ رہا ہے اُس کا روپ رنگ کچھ اور ہی ہے . بھارت' جواہر لال جی کی اگوائی میں بھارت کے آس پاس کے دیشوں میں جس آپسی سمبندھ کے لئے کوشش کر رہا ہے وہ ایشیا میں اتہاس کے ایک شاندار پرانے پنے کو پھر سے کھولنے جا رہی ہے . وہ وقت جلدی ہی آئے گا جب کہ بھارت اِن آزاد' خوش حال دیشوں کے آئینے میں اپنا مسکراتا مکھڑا دیکھ سکیگا اور وہ ملک بھی بھارت کے ہردے میں اپنی خوبصورت تصویر دیکھ کر خوش ہونگے . اُس سمے ایشیا کے اِس حصے میں بھارت ہی نہیں مہا بھارت کی' یعنی بڑے بھارت کی استھاپنا ہوگی' جس کا آدھار میل محبت ہوگا' جس کا آدرش شانتی اور پرگتی ہوگا اور جس کی کامیابی اِس بات میں ہوگی کہ جنتا خوشحال ہے اور ترقی کرتی جا رہی ہے . ہم پردھان منتری کی اِس طرح کی ہر کوشش کی کامیابی چاہتے ہیں .

के अलावा मार्शल एड के जरिये अमरीका ने पच्छिमी और दक्खिनी योरप के लग भग सभी देशों की आर्थिक नीति अपने कब्जे मे कर रखी है. फ़ारमोसा में रहने वाले भगोड़े च्यांग काई शेक को वह अब भी मदद दे ही रहा है

मगर इतने से ही प्रेसिडेन्ट ट्रूमेन का पेट नहीं भरा है उन्होने अमरीकी काग्रेस मे एक अरब बाइस करोड़ डालर की माँग पेश की है. इस मे से एक अरब डालर अतलान्तक समझौते में शामिल राष्ट्रों को मिलेगा, साढ़े सात करोड डालर च्यांग काई शेक को मिलेगा, १२ करोड डालर यूनान और तुर्की को मिलेगा और २ करोड़ ७५ लाख डालर ईरान और कोरिया को मिलेगा. इस तरह हम देखते हैं कि अमरीका धीरे धीरे सारे ससार मे—जहाँ कहीं भी मुमकीन है — अपना फन्दा फैलाता जा रहा है.

संसार विजय का अमरीकी सपना ससार के लिये कितना खतरनाक है यह बताने की जरूरत नही है. यू० एन० ओ० के मंत्री श्री तगेर्फ़ली अभी मास्को से वापस आये हैं वह मास्को मार्शल स्टालिन से शान्ति सम्बन्धी बातें चलाने गये थे. जहाँ तक हमें मालूम है वह मास्को से पूरी तरह सन्तुष्ट हो कर लौटे हैं मगर उनके वापस आते ही इंगलैण्ड और अमरीका मे रूस खिलाफ गालियों की बाढ़ सी आ गई है.

सोचने की बात है कि अगर ऐसे लोगों के साथ पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अपने देश की विदेशी नीति की डोरी बांध दी होती तो आज हमारा देश किस खेमे में होता—आजादी पसन्द लोगों के खेमे में या गुलाम बनाने वालों के खेमे में, शान्ति के लिये कोशिश करने

کے علاوہ مارشل ایڈ کے ذریعے امریکا نے پچھمی اور دکھنی یورپ کے لگ بھگ سبھی دیشوں کی آرتھک نیتی اپنے قبضے میں کر رکھی ہے ۔ فارموسا میں رہنے والے بھگوڑے چیانگ کائی شیک کو وہ اب بھی مدد دے ہی رہا ہے ۔

مگر اتنے سے ہی پریسیڈنٹ ٹرومن کا پیٹ نہیں بھرا ہے ۔ انہوں نے امریکی کانگریس میں ایک ارب بائیس کروڑ ڈالر کی مانگ پیش کی ہے ۔ اس میں سے ایک ارب ڈالر اٹلانٹک سمجھوتے میں شامل راشٹروں کو ملے گا ' ساڑھے سات کروڑ ڈالر چیانگ کائی شیک کو ملیگا ' ۱۲ کروڑ ڈالر یونان اور ترکی کو ملے گا اور ۲ کروڑ ۷۵ لاکھ ڈالر ایران اور کوریا کو ملے گا ۔ اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ امریکا دھیرے دھیرے سارے سنسار میں— جہاں کہیں بھی ممکن ہے— اپنا پھندا پھیلاتا جا رہا ہے ۔

سنسار وجے کا امریکی سپنا سنسار کے لئے کتنا خطرناک ہے یہ بتانے کی ضرورت نہیں ہے ۔ یو ۔ این ۔ او ۔ کے منتری شری ترگویف لی ابھی ماسکو سے واپس آئے ہیں ۔ وہ ماسکو مارشل استالن سے شانتی سمبندھی باتیں چلانے گئے تھے ۔ جہاں تک ہمیں معلوم ہے وہ ماسکو سے پوری طرح سنتشٹ ہوکر لوٹے ہیں مگر ان کے واپس آتے ہی انگلینڈ اور امریکا میں روس کے خلاف گالیوں کی باڑھ سی آگئی ہے ۔

سوچنے کی بات ہے کہ اگر ایسے لوگوں کے ساتھ پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے دیش کی ودیشی نیتی کی ڈوری باندھ دی ہوتی تو آج ہمارا دیش کس خیمے میں ہوتا— آزادی پسند لوگوں کے خیمے میں یا غلام بنانے والوں کے خیمے میں ' شانتی کے لئے کوشش کرنے

सरकार पच्छिमी गुट्ट का पुच्छल्ला होती जारही है. इससे भारत, जो बिना किसी कोशिश के ही एशिया के सभी आजादी पसन्द देशों का नेता बन गया था, धीरे धीरे अपनी हैसियत कमज़ोर करने लगा था. मगर जब भारत ने चीन की कम्युनिस्ट सरकार को मानता देदी और अमरीका के चंगुल मे फँसने से उसने इन्कार कर दिया तब इन देशो को फिर ढारस बँधने लगी. पंडित नेहरू की इण्डोनीशिया यात्रा उन के विश्वास को अधिक मजबूत बना देगी और इस तरह भारत फिर सच्चे अर्थ में एशियाई देशो का नेता, रहबर और सच्चा दोस्त बन जायगा.

भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की यह रहबरी दक्खिनी पूरबी एशिया की तरक़्क़ी पसन्द, लड़ाकू जनता के दिल में हिम्मत बढ़ायगी. एक न एक दिन इन्डोनीशिया मे जो भी विदेशी असर है वह खतम होगा ही. एक न एक दिन हिन्दचीन आश्रोदाई जैसे विदेशी ताक़त के ग़ुलाम के ख़ूनी पंजे से मुक्ति पायगा ही. इसी तरह इस हलक़े के दूसरे देश अपनी ग़ुलामी की जंजीरों को तोड फेंकेंगे और अपने देश मे अपना राज क़ायम करेंगे. आज उनके रास्ते में अमरीकी, ब्रिटिश, फ़्रान्सीसी वग़ैरा साम्राज वादी रोड़े अटका रहे हैं. यह देश दक्खिन पूरबी एशिया के देशो के बदन में अपना पंजा इस तरह गड़ाये हुए हैं कि इन देशों की जनता छटपटा कर रह जाती है.

अमरीका ने पिछले साढ़े चार साल में सिर्फ़ जापान से १३० करोड़ ६० लाख डालर कमाया है, और अब भी अमरीका के माल की खपत जापान में दिन पर दिन बढ़ती जा रही है. जापान

(५३४)

سرکار پچھمی گٹ کا پچھلا ہوتی جارہی ہے . اِس سے بھارت' جو بِنا کسی کوشش کے ہی ایشیا کے سبھی آزادی پسند دیشوں کا نیتا بن گیا تھا' دھیرے دھیرے اپنی حیثیت کمزور کرنے لگا تھا . مگر جب بھارت نے چین کی کمیونسٹ سرکار کو مانتا دیدی اور امریکہ کے چنگل میں پھانسنے سے اس نے اِنکار کردیا تب ان دیشوں کو پھر ڈھارس بندھنے لگی . پنڈت نہرو کی انڈونیشیا یاترا ان کے وشواس کو ادھک مضبوط بنادیگی اور اس طرح بھارت پھر سچے ارتھ میں ایشیائی دیشوں کا نیتا' رہبر اور سچا دوست بن جائیگا .

بھارت کے پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو کی یہ رہبری دکھنی پوربی ایشیا کی ترقی پسند' لڑاکو جنتا کے دل میں ہمت بڑھائیگی . ایک نہ ایک دن انڈونیشیا میں جو بھی ودیشی اثر ہے وہ ختم ہوگا ہی . ایک نہ ایک دن ہند چین باودائی جیسے ودیشی طاقت کے غلام کے خونی پنجے سے مکتی پائے گا ہی . اِسی طرح اِس حلقے کے دوسرے دیش اپنی غلامی کی زنجیروں کو توڑ پھینکینگے اور اپنے دیش میں اپنا راج قائم کرینگے . آج اُن کے راستے میں امریکی' برٹش' فرانسیسی وغیرہ سامراج وادی روڑے اٹکا رہے ہیں . یہ دیش دکھن پوربی ایشیا کے دیشوں کے بدن میں اپنا پنجہ اِس طرح گڑائے ہوئے ہیں کہ اِن دیشوں کی جنتا چھٹپٹا کر رہ جاتی ہے .

امریکا نے پچھلے ساڑھے چار سال میں صرف جاپان سے ۱۳۰ کروڑ ۶۰ لاکھ ڈالر کمایا ہے' اور اب بھی امریکا کے مال کی کھپت جاپان میں دن پر دن بڑھتی جا رہی ہے . جاپان

(۵۳۴)

उन्होंने विदेशी नीति के मैदान में अपना हाथ सदा साफ़ रखा और इसी लिये चीन के मामले में भारत इतना सही और तरक्की पसन्द क़दम उठा सका.

भारत की यह विदेशी नीति ख़तरनाक है इसलिये कि अमरीकी गुट भारत की इसी नीति क कारन उसपर विश्वास नही करता और जहाँ तक मुमकिन हो भारत को मद्द करने से भी दूर रहता है हमारे प्रधानमत्री जिस समय अमरीका की सैर करने गये थे उस समय उनका शानदार स्वागत किया गया था और उनको यह बताने की कोशिश की गई थी कि अमरीका भारत और शान्ति का सब से बडा दोस्त है मगर पडत नेहरू अमरीका के इस जाल मे नहीं फँस सके भारत वापस आकर उन्होने महसूस किया कि अमरीका का यह शानदार स्वागत धोके की कितनी ख़तरनाक टट्टी थी. अब अमरीका और उसके साथ के लोग भारत का साथ नहीं देरहे हैं. यह ख़तरनाक हालत है और इस स्थिति में प्रधानमंत्री को अपना यानी प्रजातंत्रवादी, शान्ति प्रेमी स्वतंत्र नीतिवाले देशों का हाथ मज़बूत करना है. प्रधानमत्री की इण्डोनेशिया यात्रा का यही भेद है

मगर इस में भेद की कोई बात नहीं है भारत ने अपने को आज़ाद करते समय एलान कर दिया था कि वह हमेशा उन लोगों के साथ रहेगा जो ख़ुद आज़ाद होना चाहते हैं, जो आज़ादी अमन, तरक़्क़ी के हामी हैं और लड़ाई का हर तरह विरोध करेंगे आज़ादी के फ़ौरन बाद ही होने वाला एशियाई सम्मेलन इस बात का सबूत है. पिछले साल कुछ हलक़ों में यह कहा जाने लगा था कि पंडित नेहरू की

اُنہوں نے ودیشی نیتی کے میدان میں اپنا ہاتھ سدا صاف رکھا اور اِسی لئے چین کے معاملے میں بھارت اتنا صحیح اور ترقی پسند قدم اُٹھا سکا .

بھارت کی یہ ودیشی نیتی خطرناک ہے . اس لئے کہ امریکی گٹ بھارت کی اِس نیتی کے کارن اس پر وشواس نہیں کرتا اور جہاں تک ممکن ہو بھارت کی مدد کرنے سے بھی دور رہتا ہے . ہمارے پردھان منتری جس سمے امریکا کی سیر کرنے گئے تھے اُس سمے انکا شاندار سواگت کیا گیا تھا اور اُن کو یہ بتانے کی کوشش کی گئی تھی کہ امریکا بھارت اور شانتی کا سب سے بڑا دوست ہے . مگر پنڈت نہرو امریکا کے اس جال میں نہیں پھنس سکے . بھارت واپس آکر اُنہوں نے محسوس کیا کہ امریکا کا یہ شاندار سواگت دھوکے کی کتنی خطرناک ٹٹی تھی اب امریکا اور اُس کے ساتھ کے لوگ بھارت کا ساتھ نہیں دے رہے ہیں یہ خطرناک حالت ہے اور اس استھتی میں پردھان منتری کو اپنا یعنی پرجا تنتر وادی ' شانتی پریمی ' سوتنتر نیتی والے دیشوں کا ہاتھ مضبوط کرنا ہے . پردھان منتری کی انڈونیشیا یاترا کا یہی بھید ہے .

مگر اس میں بھید کی کوئی بات نہیں ہے . بھارت نے اپنے کو آزاد کرتے سمے اعلان کردیا تھا کہ وہ ہمیشہ اُن لوگوں کے ساتھ رہیگا جو خود آزاد ہونا چاہتے ہیں ' جو آزادی ' امن ' ترقی کے حامی ہیں اور لڑائی کا ہر طرح ورودھ کرینگے . آزادی کے فوراً بعد ہی ہونے والا ایشیائی سمیلن اِس بات کا ثبوت ہے . پچھلے سال کچھ حلقوں میں یہ کہا جانے لگا تھا کہ پنڈت نہرو کی

दिन ख़तरनाक होती जा रही हैं और जिनके आँख कान हैं वह अच्छी तरह देख सुन रहे हैं कि किस तरह वह तीसरी जंग की ओर दुनिया को घसीटने की कोशिश कर रहा है. अभी-अभी कम्युनिस्ट चीन को संयुक्त राष्ट्र सघ (यू० एन० ओ०) मे शामिल करने का सवाल उठा था. उसके लिये जो कमेटी बनी थी उसमे से अमरीका, कनाडा, ब्राज़ील, क्यूबा, लेबनान और फ़्रान्स ने फ़ारमोसा मे रहने वाली च्यांग काई शेक की सरकार को ही मंज़ूर किया. ब्रिटेन चुप रहा. भारत और योगो स्लाविया ने पेकिंग की कम्युनिस्ट सरकार का साथ दिया. ब्रिटेन चीन की कम्युनिस्ट सपकार को चीन का असली शासक पहले ही मान चुका है. फिर उसने ऐसा क्यो और कैसे किया यह बात समझमे नही आती. ज़ाहिर है कि इस मामले में ब्रिटेन ने ऐसा रुख़ अमरीका के दबाव के कारन ही अख़तियार किया. भारत और योगोस्लाविया ने जो किया वह न्याय और सच्चाई की मांग थी चीन मे माओ की सरकार को ही जनता अपनी सरकार मानती है इसे कौन नही जानता जो इसे नही मानता वह झूटा है और उसकी नीयत ख़राब है. फ़ारमोसा जैसे छोटे से टापू पर रहने वाली भगोड़ी सरकार को मानता देना और पचास करोड़ इन्सानों को अपनी सरकार को मंज़ूरी न देना राज नैतिक बेईमानी की हद है. मगर इन सम्राज वादियो के शब्द-कोष में ईमानदारी, सच्चाई और न्याय जैसे शब्द हैं कहाँ? जंग छेड़कर मुनाफ़ा कमाने की नीयत रखने वाले न्याय और प्रजातन्त्र का साथ देकर अपनी ही गर्दन क्यों काटेंगे? प्रधान मंत्री नेहरू कामयाब सियासतदाँ की तरह यह सब समझते थे इसीलिये

دن خطرناک ہوتی جارہی ہیں اور جن کے آنکھ کان ہیں وہ اچھی طرح دیکھ سن رہے ہیں کہ کس طرح وہ تیسری جنگ کی اور دنیا کو گھسیٹنے کی کوشش کر رہا ہے ۔ ابھی ابھی کمیونسٹ چین کو سنیکت راشٹر سنگھ (یو ۔ این او) میں شامل کرنے کا سوال اُٹھا تھا ۔ اُس کے لئے جو کمیٹی بنی تھی اُس میں سے امریکہ، کناڈا، برازیل، کیوبا، لبنان اور فرانس نے فارموسا میں رہنے والی چیانگ کائی شیک کی سرکار کو ہی منظور کیا ۔ برٹین چپ رہا ۔ بھارت اور یوگوسلاویہ نے پیکنگ کی کمیونسٹ سرکار کا ساتھ دیا برٹین چین کی کمیونسٹ سرکار کو چین کا اصلی شاسک پہلے ہی مان چکا ہے پھر اس نے ایسا کیوں اور کیسے کیا یہ بات سمجھ میں نہیں آتی ظاہر ہے کہ اس معاملے میں برٹین نے ایسا رخ امریکہ کے دباؤ کے کارن ہی اختیار کیا بھارت اور یوگوسلاویہ نے جو کیا وہ نیائے اور سچائی کی مانگ تھی ۔ چین میں ماو کی سرکار کو ہی جنتا اپنی سرکار مانتی ہے اِسے کون نہیں جانتا ۔ جو اِسے نہیں مانتا وہ جھوٹا ہے اور اُس کی نیت خام ہے فارموسا جیسے چھوٹے سے ٹاپو پر رہنے والی بھگوڑی سرکار کو مانتا دینا اور پچاس کروڑ اِنسانوں کی اپنی سرکار کو منظوری نہ دینا راج نیتک بے ایمانی کی حد ہے ۔ مگر ان سامراج وادیوں کے شبد کوش میں ایمانداری، سچائی اور نیائے جیسے شبد ہیں کہاں؟ جنگ چھیڑ کر منافع کمانے کی نیت رکھنے والے نیائے اور پرجاتنتر کا ساتھ دیکر اپنی ہی گردن کیوں کاٹینگے؟ پردھان منتری نہرو کامیاب سیاست داں کی طرح یہ سب سمجھتے تھے اسی لئے

भारत और महाभारत

(भाई श्री कृष्णदास)

भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की बहुत सी बातो से मत भेद रखते हुए भी उनकी दो बातो से लग भग सभी समझदार, इन्सान दोस्त, आज़ादी पसन्द, अमन के समर्थक प्रजातन्त्र वादी लोग एक राय रहे हैं प्रधान मंत्री ने अपनी घरेलू नीति मे सभी क़ौमो, ज़बानो, संस्कृतियो और मज़हबो के साथ न्याय की नीति बरतनी चाही है. उसके लिये कोशिश की है और अपना सारा ज़ोर लगा कर इस नीति की रक्षा की है. इसी तरह विदेशी नीति मे उन्होने किसी भी गुट के चंगुल में फंसने से हमेशा इन्कार किया है. भारतकी विदेशी नीति को हमेशा आज़ाद रखा है और सदा न्याय और अमन का ताक़तो का साथ दिया है ज़ाहिर है कि यह दोनों नीतियाँ ख़तरे से ख़ाली न थी और पंडित नेहरू की जगह अगरकोइ दूसरा आदमी इन ख़तरनाक नीतियो को अपनाता तो अब तक अपनी कुर्सी छोड़कर उसे अलग हो जाना पड़ता.

घरेलू नीति मे प्रधान मंत्री को जिस तरह फ़िरक़ा परस्तों, पूंजी पतियों, कट्टर पंथियों और फूट डालने वालो का मुक़ाबला करना पड़ा है उसी तरह विदेशी नीति मे भी उन्हो ने जंगबाज़ों, साम्राज बादियों, मुनाफ़ा ख़ोरो और शान्ति के दुश्मनो की चालों में फँसना ना मंज़ूर कर दिया है. ख़ास तौर से अमरीका की चालें तो दिनों

بھارت اور مہا بھارت

(بھائی شری کرشن داس)

بھارت کے پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو کی بہت سی باتوں سے مت بھید رکھتے ہوئے بھی ان کی دو باتوں سے لگ بھگ سبھی سمجھدار، انسان دوست، آزادی پسند، امن کے سمرتھک پرجا تنتر وادی لوگ ایک رائے رہے ہیں . پردھان منتری نے اپنی گھریلو نیتی میں سبھی قوموں، زبانوں، سنسکرتیوں اور مذہبوں کے ساتھ نیائے کی نیتی برتنی چاہی ہے، اس کے لئے کوشش کی ہے اور اپنا سارا زور لگاکر اس نیتی کی رکشا بھی کی ہے . اسی طرح ودیشی نیتی میں انھوں نے کسی بھی گٹ کے چنگل میں پھنسنے سے ہمیشہ انکار کیا ہے . بھارت نے ودیشی نیتی کو ہمیشہ آزاد رکھا ہے اور سدا نیائے اور امن کی طاقتوں کا ساتھ دیا ہے . ظاہر ہے کہ یہ دونوں نیتیاں خطرے سے خالی نہ تھیں اور پنڈت نہرو کی جگہ اگر کوئی دوسرا آدمی ان خطرناک نیتیوں کو اپناتا تو ابتک اپنی کرسی چھوڑ کر اسے الگ ہوجانا پڑتا.

گھریلو نیتی میں پردھان منتری کو جس طرح فرقہ پرستوں، پونجی پتیوں، کٹر پنتھیوں اور پھوٹ ڈالنے والوں کا مقابلہ کرنا پڑا ہے اسی طرح ودیشی نیتی میں بھی انھوں نے جنگ بازوں، سامراج وادیوں، منافع خوروں اور شانتی کے دشمنوں کی چالوں میں پھنسنا نامنظور کردیا ہے . خاص طور سے امریکہ کی چالیں تو دنوں

जहाँ खुलूस की क़द्र न हो, वफ़ादारी की जानकारी न हो,
जहाँ भाव का अंदाज़ न हो और इन्सान की पहचान न हो,
वहाँ त्याग इन्सान क्या करे ?

जिस देश में बड़े बड़े विद्वान हों और अच्छे अच्छे कलाकार—पर वह बेकार हो, तो वह बेकार आखिर क्या करें ?

इन्क़लाब जब उसको लूट चुका हो और आज़ादी से दिल उसका टूट चुका हो, तो अब वह दिल के टुकड़े क्या करे ?

जहाँ हुकूमत का अपना मतलब हो
जहाँ सियासत की अपनी ग़रज़ हो
जहाँ नेता का अपना फ़ायदा हो
जहाँ सेवा से अच्छी उसको आशा हो,
नेता ऐसा अगर न करे तो,फिर आखिर वह क्या करे ?

जनता की आवाज़ अगर हुकूमत के कान तक न पहुंचे और अगर उसकी गुज़र "जम्हूरियत के सदर" तक न हो तो ऐसी जम्हूरियत के गुन गाकर वह क्या करे ?

कितनी खुशी की बात कि आज इन्सान है आज़ाद ! मगर आज़ादी में मजबूरी भी.

आज़ादी में अगर मजबूर और इतना मजबूर—
तो इतना मजबूर जी कर क्या करे ?

जहाँ खून इन्सान का सस्ता हो और जहाँ इन्सान इन्सान का खून पीता हो, ऐसे दरिन्दों में कोई इन्सान रह कर क्या करे ?

जब शान्ति में जीवन न हो और जीवन में शांति न हो तो फिर वह अशान्त आखिर क्या करे ?

جہاں خلوص کی قدر نہو، وفاداری کی جانکاری نہو،
جہاں بھاؤ کا انداز نہو اور انسان کی پہچان نہو ۔
وہاں تیاگ انسان کیا کرے ؟

جس دیس میں بڑے بڑے ودوان ہوں اور اچھے اچھے کلاکار—پر وہ بیکار ہوں، تو وہ بیکار آخر کیا کریں ؟

انقلاب جب اُس کو لوٹ چکا ہو اور آزادی سے دل اُس کا ٹوٹ چکا ہو، تو اب وہ دل کے ٹکڑے کیا کرے ؟

جہاں حکومت کا اپنا مطلب ہو
جہاں سیاست کی اپنی غرض ہو
جہاں نیتا کا اپنا فائدہ ہو
جہاں سیوا سے اچھی اُس کو آشا ہو،
نیتا ایسا اگر نہ کرے تو پھر آخر وہ کیا کرے ؟

جنتا کی آواز اگر حکومت کے کان تک نہ پہونچے اور اگر اُسکی گذر "جمہوریت کے صدر" تک نہو تو ایسی جمہوریت کے گن گا کر وہ کیا کرے ؟

کتنی خوشی کی بات کہ آج انسان ہے آزاد ! مگر آزادی میں مجبوری بھی ۔

آزادی میں اگر مجبور اور اتنا مجبور —
تو اتنا مجبور جی کر کیا کرے ؟

جہاں خون انسان کا سستا ہو اور جہاں انسان انسان کا خون پیتا ہو، ایسے درندوں میں کوئی انسان رہ کر کیا کرے ؟

جب شانتی میں جیون نہو اور جیون میں شانتی نہو تو پھر وہ اشانت آخر کرے ؟

जहाँ आज़ादी आकर हँस रही हो और क़ुरबानी वाले रो रहे हों
ऐसी आज़ादी पाकर वह त्यागी आख़िर क्या करें ?

जहाँ, क़दम क़दम पर सियासी लाभ हो और बात बात पर क़ौमी फ़साद हो—वहाँ विकास की आस कोई क्या करे ?

इन्साफ़ जहाँ ज़ाहिर नहो, विश्वास जहाँ साबित न हो,
ऐसे सियासी वादों पर विश्वास कोई क्या करे ?

शब्द जहाँ भारी भारी और मोटे हों.
वादे जहाँ ख़ाली ख़ाली और फूले हों—अगर वह पूरी क़ीमत न पावे तो कोई क्या करे ?

जहाँ नफ़रतों की बाढ़ दौड़ रही हो
जहाँ बदले की आग भड़क रही हो
जहाँ ख़ून की धार उड रही हो
जहाँ ज़बान की तलवार चल रही हो—
वहाँ मेल मुहब्बत की बात कोई क्या करे ?

जब बिल्डिंग किसी की छिन गई हो और पूँजी उसकी लुट गई हो तो वह बेदाम आख़िर क्या करे ?

जब भविष्य उसके सन मुख न हो और जान को उसकी सुख न हो,
तो दुखिया आख़िर क्या करे ?

जब जान के लाले पड़े हों और सामने काले काले हों,
जब काले डसने वाले हों और बालक ज़हर से मरने वाले हों.
तो फिर मरता आख़िर क्या न करे ?

जहाँ विलायत का आदर न हो, आदमी का आदर्श न हो,

جہاں آزادی آکر ہنس رہی ہو اور قربانی والے رو رہے ہوں
ایسی آزادی پاکر وہ تیاگی آخر کیا کریں ؟

جہاں، قدم قدم پر سیاسی لابھ ہو اور بات بات پر قومی فساد ہو — وہاں وکاس کی آس کوئی کیا کرے ؟

انصاف جہاں ظاہر نہو، وشواس جہاں ثابت نہو،
ایسے سیاسی وعدوں پر وشواس کوئی کیا کرے ؟

شبد جہاں بھاری بھاری اور موٹے ہوں،
وعدے جہاں خالی خالی اور پھولے ہوں — اگر وہ پوری قیمت نہ پاویں تو کوئی کیا کرے ؟

جہاں نفرتوں کی باڑھ دوڑ رہی ہو
جہاں بدلے کی آگ بھڑک رہی ہو
جہاں خون کی دھار اڑ رہی ہو
جہاں زبان کی تلوار چل رہی ہو —
وہاں، میل محبت کی بات کوئی کیا کرے ؟

جب بلڈنگ کسی کی چھن گئی ہو اور پونجی اسکی لٹ گئی ہو تو وہ بے دام آخر کیا کرے ؟

جب بھوشیہ اس کے سن مکھ نہو اور جان کو اس کی سکھ نہو،
تو دکھیا آخر کیا کرے ؟

جب جان کے لالے پڑے ہوں اور سامنے کالے کالے ہوں،
جب کالے ڈسنے والے ہوں اور بالک زہر سے مرنے والے ہوں.
تو پھر مرتا آخر کیا نہ کرے ؟

جہاں خدمت کا آدر نہو، آدمی کا آدرش نہو،

जब आज़ादी से उसका नाता न हो यानी खोकर उसने कुछ पाया नहो,

तो ऐसी जनता आख़िर क्या करे ?

जब सियासत अत्याचार और अन्याय का बरताव कर रही हो और जब ज़ुल्म अधिक से अधिक हो तो दलित आख़िर क्या करे ?

क्या आह न करे ?

जब जान पर किसी के बन रही हो और बनी उसकी बिगड़ रही. हो जब ज़िन्दगी उसकी तरस रही हो और इज़्ज़त उसकी लरज़ रही हो,

तो फिर सज्जन आख़िर क्या करे ?

जब रस्ते बन्द पड़े हो या राह मे रोड़े अटके हों,

तो वह मजबूर आख़िर क्या करे ?

जब दहशत फैल रही हो और ख़तरे रेंग रहे हो तो कारीगर राज काम क्या करे और पेट कैसे भरे ?

ग़रीब राजके क़ानून की ज़िम्मेदारी और जवाब दारी जम्हूर राज पर.

जब वह धोके देकर जान ले रहे हो और यह धोके खाकर जान दे रहे हो तो शांति फिर कैसे बने और जानें आख़िर कैसे बचें ?

इन मज़लूमों और मजबूरो की रक्षा की ज़िम्मेदारीकिस पर ?

और उन ज़िम्मेदाराना शब्दों का परमान कहाँ ?

निशान कहाँ ?

جب آزادی سے اس کا ناتا نہو یعنی کھوکر اُس نے کچھ پایا نہو،

تو ایسی جنتا آخر کیا کرے ؟

جب سیاست اتیا چار اور انیائے کا برتاؤ کر رہی ہو اور جب ظلم ادھک سے ادھک ہوں تو دلت آخر کیا کرے ؟

کیا آہ نہ کرے ؟

جب جان پہ کسی کے بن رہی ہو اور بنی اس کی بگڑ رہی ہو، جب زندگی اس کی ترس رہی ہو اور عزت اس کی لرز رہی ہو،

تو پھر سجن آخر کیا کرے ؟

جب رستے بند پڑے ہوں یا راہ میں روڑے اٹکے ہوں،

تو وہ مجبور آخر کیا کرے ؟

جب دہشت پھیل رہی ہو اور خطرے رینگ رہے ہوں تو کاریگر راج کام کیا کرے اور پیٹ کیسے بھرے ؟

غریب راج کے قانون کی ذمہ‌داری اور جواب داری جمہور راج پر ۔

جب وہ دھوکے دے کر جان لے رہے ہوں اور یہ دھوکے کھاکر جان دے رہے ہوں تو شانتی پھر کیسے بنے اور جانیں آخر کیسے بچیں ؟

اِن مظلوموں اور مجبوروں کی رکشا کی ذمے‌داری کس پر ؟

اور اُن ذمے‌دارانہ شبدوں کا پرمان کہاں ؟

نشان کہاں ؟

तो फिर आख़िर वह क्या करे?

(भाई अब्दुल हलीम अंसारी)

जब बेकारी बढ़ रही हो और महँगाई सर चढ़ रही हो, जब चोर बाजारी जेब कतर रही हो और रिश्वत क़ौमी ख़िदमत कर रही हो, तो फिर क़ौम आखिर क्या करे ?

जब ख़ुद साहूकार चोरी करे या कोई नामी इन्सान चोरी करे तो फिर चार आखिर क्या करे ?

जब ख़ुद सरकार तिजारत करे तो फिर ताजर आखिर क्या करे ?

जब पेटो पर मार पड़ रही हो और रोटी की पुकार मच रही हो,

जब भूक से एक एक तड़प रहा हो और तड़प तड़प कर जी रहा हो,

तो भूका जी कर क्या करे ?

जब पहनने को कपड़ा न हो और तन पर लत्ता न हो—

जब शरीर को ढाँक न सके और नंग को छिपा न सके,

तो फिर नंगा आख़िर क्या करे ?

जब रहने को ठिकाना न हो और जीवन को सहारा न हो, तो वह बे सहारा आखिर क्या करे ?

जब सर छिपाने को साया न हो और पल्ले उसके माया न हो,

تو پھر آخر وہ کیا کرے ؟

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

جب بیکاری بڑھ رہی ہو اور مہنگائی سر چڑھ رہی ہو،
جب چور بازاری جیب کتر رہی ہو اور رشوت قومی خدمت کر رہی ہو، تو پھر قوم آخر کیا کرے ؟

جب خود ساہوکار چوری کرے یا کوئی نامی انسان چوری کرے تو پھر چور آخر کیا کرے ؟

جب خود سرکار تجارت کرے تو پھر تاجر آخر کیا کرے ؟

جب پیٹوں پر مار پڑ رہی ہو اور روٹی کی پکار مچ رہی ہو،

جب بھوک سے ایک ایک تڑپ رہا ہو اور تڑپ تڑپ کر جی رہا ہو،

تو بھوکا جی کر کیا کرے ؟

جب پہننے کو کپڑا نہو اور تن پر لتا نہو —

جب شریر کو ڈھانک نہ سکے اور ننگ کو چھپا نہ سکے،

تو پھر ننگا آخر کیا کرے ؟

جب رہنے کو ٹھکانا نہو اور جیون کو سہارا نہو، تو وہ بے سہارا آخر کیا کرے ؟

جب سر چھپانے کو سایہ نہو اور پلے اس کے مایا نہو،

मे इतना हो जाता है और यहाँ के मुसलमान हिन्दुस्तान में अपने को हर तरह महफ़ूज़ और सन्तुष्ट समझने लगते हैं तब, और तभी कहा जा सकता है कि भारत मे नेहरू लियाक़त समझौता सफल हुआ और तभी पाकिस्तान पर भी इसका असर पड़ सकता है

मुस्लिम देश भक्त

[लेखक श्री० रतन लाल बंसल]

इस किताब में कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये हैं जिन्होने अंगरेजों के मनहूस क़दम यहां जमने के पहले ही उनके राज की बुराइयों का अन्दाजा कर लिया था और उनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमों ने सन् १८५७ से भी पहले से आजादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होने हिन्दुस्तान और विदेशो में रहते हुए भी अंगरेजी हकूमत का मुक़ाबला किया. यह सब हाल पढ़कर आप दंग रह जायँगे

किताब दोनों लिखावटों मे छपी है. क़ीमत १ रुपया १२ आने.

मैनेजर, 'नया हिन्द,'
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद,

میں اتنا ہوجاتا ہے اور یہاں کے مسلمان ہندستان میں اپنے کو ہر طرح محفوظ اور سنتشٹ سمجھنے لگتے ہیں تب، اور تبھی کہا جاسکتا ہے کہ بھارت میں نہرو لیاقت سمجھوتہ سپھل ہوا اور تبھی پاکستان پر بھی اسکا اثر پڑسکتا ہے .

مسلم دیش بھگت

[لیکھک — شری رتن لال بنسل]

اس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھگتوں کے جیون کا حال اور انکے کارنامے بیان کئے گئے ہیں جنھوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ہی انکے راج کی برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور اُن کو ہندستان سے نکال بھگانے میں ہند کی بھلائی دیکھی تھی.

اس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ہوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے سنہ ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادی کی لڑائی شروع کر رکھی تھی. اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر اُنھوں نے ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھی انگریزی حکومت کا مقابلہ کیا. یہ سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے.

کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپی ہے. قیمت ۱ روپیہ ۱۲ آنے

منیجر 'نیا ہند'
۴۸ باغ کا باغ — الہ آباد

रहकर अरब और ईरान की तरफ देखना छोड़दें हिन्दुस्तान के हिन्दू पाकिस्तान के हिन्दुओ की तरफ देख कर मुसलमानों से यह मॉग करने का हक खो चुके हैं. हमें यह न भूलना चाहिये कि हिन्दुस्तान का मुसलमान दुनिया के किसी भी देश के मुसलमानो से दिलचस्पी रख सकता है. जिस तरह चीन, जापान, बर्मा, स्याम, और सीलोन के बौद्ध हिन्दुस्तान के सारनाथ व बुद्ध गया से प्रेम करते हैं और हिन्दुस्तान के बौद्धो को नहीं भूल सकते इसी तरह मुसलमानो को भी अरब, ईरान, ईराक़ या मिस्र के धार्मिक स्थानो और उन स्थानो से जुड़े हुए धार्मिक सम्बन्धों या धर्मभाइयो को भूलने के लिये मजबूर नहीं किया जा सकता. किसी मुसलमान को ज़रा से शक पर पाकिस्तान का जासूस कहना भी गलत है, क्योंकि इस तरह पाकिस्तान के मुसलमान वहॉ के हिन्दुओ को भी हिन्द का जासूस कहकर परेशान कर सकते हैं.

सब से ज्यादा जरूरी बात यह है कि मुसलमानो की आर्थिक परेशानियो को जल्दी से जल्दी दूर करने की कोशिश की जानी चाहिये. हिन्दुस्तान में इधर जो दंगे हुए हैं या जहॉ जहॉ दंगे की फिजा पैदा हो गई थी वहॉ मुसलमानों के कारबार को बहुत धक्का पहुँचा है. मुसलमानो के पाकिस्तान जाने का एक यह कारन भी है कि वह हिन्दुस्तान में आर्थिक निगाह से अपनी तरक्की के दरवाजे बंद देखते है. कोशिश की जानी चाहिये कि उनकी इस तरह की शिकायतें बिलकुल दूर हो जायॅ. उन्हें यह यक़ीन होजाय कि यहॉ न सिर्फ उनकी जान, उनका माल, उनकी आबरू बल्कि उनके व्योपार, उनके धंदे और उनके कारबार भी सुरक्षित रहेंगे अगर हिन्दुस्तान

رہکر عرب اور ایران کی طرف دیکھنا چھوڑدیں ۔ ھندستان کے ھندو پاکستان کے ھندوؤں کی طرف دیکھ کر مسلمانوں سے یہ مانگ کرنے کا حق کھو چکے ھیں ھمیں یہ نہ بھولنا چاھئے کہ ھندستان کا مسلمان دنیا کے کسی بھی دیش کے مسلمانوں سے دلچسپی رکھ سکتا ھے ۔ جس طرح چین، جاپان، برما، سیام اور سیلون کے بودھ ھندستان کے سارناتھ اور بودھ گیا سے پریم کرتے ھیں اور ھندستان کے بودھوں کو نہیں بھول سکتے اسی طرح مسلمانوں کو بھی عرب، ایران، عراق یا مصر کے دھارمک استھانوں اور اُن استھانوں سے جڑے ھوئے دھارمک سمبندھوں یا دھرم بھائیوں کو بھولنے کے لئے مجبور نہیں کیا جا سکتا ۔ کسی مسلمان کو ذرا سے شک پر پاکستان کا جاسوس کہنا بھی غلط ھے کیونکہ اس طرح پاکستان کے مسلمان وھاں کے ھندوؤں کو بھی ھند کا جاسوس کہکر پریشان کر سکتے ھیں ۔

سب سے زیادہ ضروری بات یہ ھے کہ مسلمانوں کی آرتھک پریشانیوں کو جلدی سے جلدی دور کرنے کی کوشش کی جانی چاھئے ۔ ھندستان میں اِدھر جو دنگے ھوئے ھیں یا جہاں جہاں دنگے کی فضا پیدا ھو گئی تھی وھاں مسلمانوں کے کاروبار کو بہت دھکا پہنچا ھے ۔ مسلمانوں کے پاکستان جانے کا ایک یہ کارن بھی ھے کہ وہ ھندستان میں آرتھک نگاہ سے اپنی ترقی کے دروازے بند دیکھتے ھیں ۔ کوشش کی جانی چاھئے کہ ان کی اس طرح کی شکایتیں بالکل دور ھوجائیں ۔ انھیں یہ یقین ھو جائے کہ یہاں نہ صرف اُنکی جان، اُن کا مال، اُن کی آبرو بلکہ اُنکے بیوپار، اُنکے دھندے اور اُنکے کاروبار بھی سُرکشت رھیں گے ۔ اگر ھندستان

पार्टी के फ़ायदे की निगाह से देखेगी. हिन्दू महासभा और राष्ट्री स्वयंसेवक संघ हिन्दू मुस्लिम एकता पर विश्वास ही नहीं करते. इसलिये वह समझौते को कामयाब बनाने की जगह नाकामयाब बनाने में ही दिलचस्पी लेंगे. लेकिन कांग्रेस एक ऐसी संस्था है जिस का यह दावा है कि वह धर्म या जाति के भेद नही मानती. वह यह भी दावा करती है कि उसे जनता का ज़्यादा से ज़्यादा विश्वास प्राप्त है और वह महात्मा गांधी के रास्ते पर चलने का भी दम भरती है. महात्मा गांधी ने पाकिस्तान मे हिन्दुओ पर होने वाले अत्याचारो का ख़याल न करते हुए भी हिन्द के मुसलमानो की हिफ़ाज़त के लिये आवाज़ उठाई थी और फ़िरक़ापरस्त ताक़तो के विरोध की परवाह न करते हुए आख़ीर मे इसी कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी थी क्या आज कांग्रेस वाले इस के लिये तैयार हैं कि वह अपने देश की कमगिनत जाति की रक्षा के लिये उसी मुस्तैदी से काम करेंगे जो मुस्तैदी उन्होंने दूसरे देश के कमगिनत लोगों की रक्षा के लिये दिखलाई है. यह रास्ता कठिन ज़रूर है पर इसी रास्ते पर चलकर वह हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और सारी दुनिया को शांतिका संदेश दे सकते हैं. अब कम मे कम कांग्रेसी नेताओं की तरफ़ मे ऐसे भाषन न होने चाहिये जो यहाँ की कमगिनत जाति के दिल में डर पैदा करें और पाकिस्तान के फ़िरक़ापरस्तों के हाथ मज़बूत करें. मुसलमानो से यह कहना बंद होना चाहिये कि वह हिन्दुस्तान मे रहना चाहते हैं तो उन्हे हिन्दुस्तानी कलचर (जिस का मतलब आम तौर पर हिन्दू कलचर होता है) अपनाना चाहिये. उनसे यह मांग भी नहीं की जानी चाहिये कि वह हिन्दुस्तान में

پارٹی کے فائدے کی نگاہ سے دیکھیگی ۔ هندو مہاسبھا اور راشٹری سویم سیوک سنگھ هندو مسلم ایکتا پر وشواس هی نہیں کرتے ۔ اس لئے وہ سمجھوتے کو کامیاب بنانے کی جگہ ناکامیاب بنانے میں هی دلچسپی لینگے ۔ لیکن کانگریس ایک ایسی سنستھا هے جسکا یہ دعویٰ هے کہ وہ دھرم یا جاتی کے بھید نہیں مانتی ۔ وہ یہ بھی دعویٰ کرتی هے کہ اسے جنتا کا زیادہ سے زیادہ وشواس پراپت هے اور وہ مہاتما گاندھی کے راستے پر چلنے کا بھی دم بھرتی هے ۔ مہاتما گاندھی نے پاکستان میں هندوؤں پر هونےوالے اتیاچاروں کا خیال نہ کرتے هوئے بھی هند کے مسلمانوں کی حفاظت کے لئے آواز اٹھائی تھی اور فرقہ پرست طاقتوں کے ورودھ کی پرواہ نہ کرتے هوئے آخر میں اسی کوشش میں اپنی جان قربان کردی تھی ۔ کیا آج کانگریس والے اس کے لئے تیار هیں کہ وہ اپنے دیش کی کم گنت جاتی کی رکشا کے لئے اسی مستعدی سے کام کریں گے جو مستعدی انہوں نے دوسرے دیش کے کم گنت لوگوں کی رکشا کے لئے دکھلائی هے ۔ یہ راستہ کٹھن ضرور هے پر اسی راستے پر چلکر وہ هندستان، پاکستان اور ساری دنیا کو شانتی کا سندیش دے سکتے هیں ۔ اب کم سے کم کانگریسی نیتاؤں کی طرف سے ایسے بھاشن نہ هونے چاهئیں جو یہاں کی کم گنت جاتی کے دل میں ڈر پیدا کریں اور پاکستان کے فرقہ پرستوں کے هاتھ مضبوط کریں ۔ مسلمانوں سے یہ کہنا بند هونا چاهئے کہ وہ هندستان میں رهنا چاهتے هیں تو انہیں هندستانی کلچر (جسکا مطلب عام طور پر هندو کلچر هوتا هے) اپنانا چاهئے ۔ ان سے یہ مانگ بھی نہیں کی جانی چاهئے کہ وہ هندستان میں

मुक़ाबला किया. पर हो यह रहा है कि कांग्रेस के अन्दर रहते हुए भी बहुत से हिन्दू कांग्रेसी इन साम्प्रदायिक शक्तियों से हमदर्दी रखते हैं और जहाँ ज़रा सा मौक़ा मिला कि खुल कर साम्प्रदायिकता का साथ देने लगते हैं. मैं पूछता हूँ कि पूरबी बंगाल के हिन्दुओं के लिये राष्ट्री स्वयंसेवक संघ ने भी रुपया जमा किया और हिन्दू महासभा ने भी, लेकिन कांग्रेस ने, जो अपने को देश की सारी जातियों का नुमाइन्दा कहती है, उसने भी सिर्फ़ पूरबी बंगाल के हिन्दू शरनार्थियों की सहायता के लिये क्यों अपील की. क्या उसकी नज़र मे आसाम, पच्छिमी बंगाल, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के वह मुसलमान, जिन को दंगो मे नुकसान पहुँचा था, उसकी मदद के हक़दार नही थे? दूसरे देश के रहने वालों के मुक़ाबले मे अपने देश के रहने वालों का हमें पहले क्यो ख़याल नहीं आया. क्या ऐसा करके हमने पाकिस्तान के मुसलमानों को यह मौक़ा नहीं दे दिया कि वह भी अपने हिन्दू देशवासियों के मुक़ाबले में भारत के मुसलमानों का अधिक ख़याल रक्खे.

नेहरू लियाक़त समझौते को सफल बनाने की ज़िम्मेदारी आज ज़्यादा से ज़्यादा कांग्रेस पर है. सोशलिस्ट पार्टी जंग का नारा लगा कर अपनी मौक़ा परस्ती का सबूत दे चुकी है. कम्युनिस्ट पार्टी को समझौता होने न होने से कोई मतलब नहीं. क्योंकि वह जब दंगे हो रहे थे तब कहती थी कि दोनों बंगालों के दंगों में दोनों सरकारों का हाथ है और जब समझौता हो गया तब उसे भी अमरीका और बरतानिया के दबाव का नतीजा कहती है. ज़ाहिर है कि वह इस समझौते को भी इन्सानियत की भलाई से ज़्यादा अपनी

مقابلہ کیا. پر ہو یہ رہا ہے کہ کانگریس کے اندر رہتے ہوئے بھی بہت سے ہندو کانگریسی اِن سامپردایک شکتیوں سے ہمدردی رکھتے ہیں اور جہاں ذرا سا موقع ملا کہ کھلکر سامپردایکتا کا ساتھ دینے لگتے ہیں. میں پوچھتا ہوں کہ پوربی بنگال کے ہندوؤں کے لئے راشٹری سویم سیوک سنگھ نے بھی روپیہ جمع کیا اور ہندو مہاسبھا نے بھی' لیکن کانگریس نے' جو اپنے کو دیش کی ساری جاتیوں کا نمائندہ کہتی ہے' اسنے بھی صرف پوربی بنگال کے ہندو شرنارتھیوں کی سہایتا کے لئے کیوں اپیل کی. کیا اُس کی نظر میں آسام' پچھمی بنگال' اُتر پردیش اور مدھیہ پردیش کے وہ مسلمان' جن کو دنگوں میں نقصان پہنچا تھا' اُس کی مدد کے حقدار نہیں تھے؟ دوسرے دیش کے رہنے والوں کے مقابلے میں اپنے دیش کے رہنے والوں کا ہمیں پہلے کیوں خیال نہیں آیا. کیا ایسا کرکے ہم نے پاکستان کے مسلمانوں کو یہ موقع نہیں دیدیا کہ وہ بھی اپنے ہندو دیش واسیوں کے مقابلے میں بھارت کے مسلمانوں کا ادھک خیال رکھیں.

نہرو لیاقت سمجھوتے کو سپھل بنانے کی ذمہ داری آج زیادہ سے زیادہ کانگریس پر ہے. سوشلسٹ پارٹی جنگ کا نعرہ لگاکر اپنی موقعہ پرستی کا ثبوت دے چکی ہے. کمیونسٹ پارٹی کو سمجھوتہ ہونے نہ ہونے سے کوئی مطلب نہیں. کیونکہ وہ جب دنگے ہو رہے تھے تب کہتی تھی کہ دونوں بنگالوں کے دنگوں میں دونوں سرکاروں کا ہاتھ ہے اور جب سمجھوتہ ہوگیا تب اُسے بھی امریکہ اور برطانیہ کے دباؤ کا نتیجہ کہتی ہے. ظاہر ہے کہ وہ اس سمجھوتے کو بھی انسانیت کی بھلائی سے زیادہ اپنی

उनका विरोध हो रहा है. उन्हे साम्प्रादयिक इस लिये कहा जा रहा है कि वह मुसलमानो पर अगर कहीं ज्यादती होती है तो उनका साथ देते है. उनका क़सूर यह बताया जा रहा है कि जहाँ खुद कांग्रेस वालो को पहुंचना चाहिये वहाँ वह पहले पहुंच कर काम करने लगते है. पूरबी बगाल मे हिन्दुओ पर अत्याचार की खबर सुनकर हिन्दुस्तान में शायद ही कोई ऐसी जगह हो जहॉ की जमीअतुलउलमा ने पूरबी बंगाल के मुसलमानो की निन्दा न की हो. पर हिन्दुस्तान मे जब मुसलमानो पर जुल्म हुए तो वहॉ भी सब से पहले वही पहुँचे और इस लिये पहुँचे कि उनसे पहले कांग्रेस के हिन्दू लीडर नही पहुँचे थे. उन्हो ने नालायक़ सरकारी अफसरो के खिलाफ सरकार से शिकायते की और हिन्दुस्तान के सिक्यूलर राज को बदनाम होने से बचाने को कोशिश की. उनकी यह हरकतें आज फिरकापरस्ती कही जा रही हैं. ऐसा लगने लगा है जैसे राष्ट्रीयता या नेशनलिज्म के माने ही बदल गये हो. हम अगर पाकिस्तान के हिन्दुओ के लिये जमीन आसमान एक करदें, पुलिस कारवाई और लड़ाई की बाते भी करने लगे तो वह राष्ट्रीयता है और मुसलमान अगर अपने देश ही के मुसलमानो के लिये आवाज उठाये तो वह फिरकापरस्ती है. आज लोकराज और जमहूरियत के दौर में यह झुकाव बहुत ही खतरनाक है. चाहिये तो यह था कि कांग्रेसी हिन्दू साम्प्रदायकता से लड़ने के लिये जमीअतुलउलमा को आदर्श बनाते और आज महासभा और राष्ट्री स्वयंसेवक संघ और दूसरी साम्प्रदायिक शक्तियो के मुक़ाबले मे उसी तरह जम जाते जैसे जमीअतुलउलमा ने दस साल तक मुसलिम लीग का

ان کا ورودھ ہو رہا ھے . اُنھیں سامپردایک اس لئے کہا جا رہا ھے کہ وہ مسلمانوں پر اگر کہیں زیادتی ہوتی ھے تو انکا ساتھ دیتے ھیں . انکا قصور یہ بتایا جارہا ھے کہ جہاں خود کانگریس والوں کو پہنچنا چاھئے وہاں وہ پہلے پہنچ کر کام کرنے لگتے ھیں . پوربی بنگال میں ھندوؤں پر اتیا چار کی خبر سن کر ھندستان میں شاید ھی کوئی ایسی جگہ ھو جہاں کی جمیعتہ العلما نے پوربی بنگال کے مسلمانوں کی نندا نہ کی ھو . پر ھندستان میں جب مسلمانوں پر ظلم ھوئے تو وہاں بھی سب سے پہلے وھی پہونچے اور اس لئے پہونچے کہ ان سے پہلے کانگریس کے ھندو لیڈر نہیں پہنچے تھے اُنھوں نے نالایق سرکاری افسروں کے خلاف سرکار سے شکایتیں کیں اور ھندستان کے سیکولر راج کو بدنام ھونے سے بچانے کی کوشش کی . اُن کی یہ حرکتیں آج فرقہ پرستی کہی جا رھی ھیں' ایسا لگنے لگا ھے جیسے راشٹریتا یا نیشنلزم کے معنے ھی بدل گئے ھوں . ھم اگر پاکستان کے ھندوؤں کے لئے زمین آسماں ایک کردیں' پولیس کارروائی اور لڑائی کی باتیں بھی کرنے لگیں تو وہ راشٹریتا ھے اور مسلمان اگر اپنے دیش ھی کے مسلمانوں کے لئے آواز اُٹھائیں تو وہ فرقہ پرستی ھے . آج لوک راج اور جمہوریت کے دور میں یہ جھکاؤ بہت خطرناک ھوں . چاھئے تو یہ تھا کہ کانگریسی ھندو سامپردایکتا سے لڑنے کے لئے جمیعتہ العلما کو آدرش بناتے اور آج مہاسبھا اور راشٹریہ سویم سیوک سنگھ اور دوسری سامپردایک شکتیوں کے مقابلے میں اسی طرح جم جاتے جیسے جمیعتہ العلما نے دس سال تک مسلم لیگ کا

के मुक़ाबले मे आवाज़ उठाई न थी इसलिये कॉंग्रेस सरकार के ख़िलाफ़ भी कोई आवाज़ उठाना उनके बस की बात न थी. अब वह मुसलिम जनता के सामने जाते हुए मुँह चुराने लगे. पर जमीअतुलउलमाई और कांग्रेसी मुसलमान अब भी उसी विश्वास के साथ हिन्दुस्तान को अपना देश कह रहे थे जैसे पहले कहते थे. मुसलमानो ने देखा कि जिन मुसलमानो को वह गद्दार, कांग्रेस का ग़ुलाम, हिन्दुओ का नमकख्वार कह चुके थे, जिन्हे मुसलिम लीग के कहने पर गालियाँ दे चुके थे, जिन की तरह तरह से बेइज़्ज़ती कर चुके थे, आज उन्ही मुसलमानो के पास जब वह अपना कोई काम लेकर जाते है तो वह यह नही पूछते कि तुम कांग्रेसी हो या लीगी और उनका काम करने को उठ खड़े होते हैं सरकारी अफ़सरों की ज्यादती हो या पुलिस का ज़ुल्म. हर मौके पर वह बेधड़क इन्साफ़ के लिये लडने को तैयार रहते है यह सब देख कर उनका जमीअतुलउलमा की तरफ़ झुकना स्वभाविक था. फिर जमीअतुल-उलमा वाले मुसलमानो से कुछ माँगते नहीं थे. वह यह भी नही कहते थे कि चुनाव मे हमको वोट देना. हाँ एक बात अब भी वह मुसलमानो को समझाते रहते थे कि उनको कांग्रेस मे शामिल हो जाना चाहिये, हिन्दुस्तान को अपना वतन समझना चाहिये, पाकिस्तान की तरफ़ देखना छोड़ देना चाहिये. और आज भी वह यही कहते हैं. उनकी नीति में ज़रा भी फ़र्क नही आया. देश भक्ति में वह आज भी बहुत से हिन्दुओं से आगे हैं और फ़िरक़ा परस्ती से उन्हें आज भी वैसा ही बैर है जैसा पहले था. फिर भी ग़ैर कांग्रेसी हिन्दुओ और बाबा राघवदास जैसे कांग्रेसियो की तरफ़ से

کے مقابلے میں آواز اُٹھائی نہ تھی اس لئے کانگریس سرکار کے خلاف بھی کوئی آواز اُٹھانا اُنکے بس کی بات نہ تھی۔ اب وہ مسلم جنتا کے سامنے جاتے ہوئے منھ چرانے لگے۔ پر جمیعتہ العلمائی اور کانگریسی مسلمان اب بھی اُسی وشواس کے ساتھ ھندستان کو اپنا دیش کہ رہے تھے جیسے پہلے کہتے تھے۔ مسلمانوں نے دیکھا کہ جن مسلمانوں کو وہ غدار' کانگریس کا غلام' ھندوؤں کا نمک خوار کہ چکے تھے' جنھیں مسلم لیگ کے کہنے پر گالیاں دے چکے تھے' جن کی طرح طرح سے بے عزتی کرچکے تھے' آج اُنھیں مسلمانوں کے پاس جب وہ اپنا کوئی کام لے کر جاتے ھیں تو وہ یہ نہیں پوچھتے کہ تم کانگریسی ھو یا لیگی اور اُن کا کام کرنے کو اُٹھ کھڑے ہوتے ھیں سرکاری افسروں کی زیادتی ھو یا پولیس کا ظلم' ھر موقعہ پر وہ بے دھڑک انصاف کے لئے لڑنے کو تیار رھتے ھیں۔ یہ سب دیکھکر اُن کا جمیعتہ العلما کی طرف جھکنا سوابھاوک تھا پھر جمیعتہ العلما والے مسلمانوں سے کچھ مانگتے نہیں تھے وہ یہ بھی نہیں کہتے تھے کہ چناؤ میں ھم کو ووٹ دینا۔ ھاں ایک بات اب بھی وہ مسلمانوں کو سمجھاتے رھتے تھے کہ ان کو کانگریس میں شامل ھوجانا چاھئے' ھندستان کو اپنا وطن سمجھنا چاھئے' پاکستان کی طرف دیکھنا چھوڑ دینا چاھئے۔ اور آج بھی وہ یہی کہتے ھیں۔ اُنکی نیتی میں ذرا بھی فرق نہیں آیا۔ دیش بھگتی میں وہ آج بھی بہت سے ھندوؤں سے آگے ھیں اور فرقہ پرستی سے اُنھیں آج بھی ویسا ھی بیر ھے جیسا پہلے تھا۔ پھر بھی غیر کانگریسی ھندوؤں اور بابا راگھو داس جیسے کانگریسیوں کی طرف سے

उठी थी. जब तंग नजरी यहाँ तक पहुँच जाय कि जमीअतुल उलमा जैसा राष्ट्री जमाअत को सिर्फ इसलिये बुरा समझा जाने लगे कि उसके लीडर अब भी अपने हिन्दू कांगरेसी दोस्तो से आँख मिला कर बात करते है और जब हिन्दुस्तान के मुसलमानो की बात कोई नही सुनता तो वह उनका बात सुनकर सरकार तक पहुचाने की कोशिश करते हैं, तब दूसरे मुसलमानो के लिये कांग्रेस वालो से क्या आशा को जा सकती है.

यह सच है कि आज जमीअतुल उलमा पर मुसलमान ज्यादा से ज्यादा विश्वास करते हैं लेकिन इसका कारन है. बॅटवारे के बाद मुसलिमलीग के लीडर मुसलिम जनता के सामने बिलकुल नगे हो गये. वह बराबर मुसलमानो से यह कहते रहे थे कि पाकिस्तान बनते ही मुसलमानों की तमाम मुसीबतें दूर हो जायँगी. वह यह विश्वास उन प्रान्तो के मुसलमानो को भो दिलाते रहे थे जो आज हिन्दुस्तान मे है. पर पाकिस्तान बन जाने पर इन प्रान्तो के मुसलमानो ने देखा कि वह उससे भी बुरी हालत मे है जिसमे पहले थे. अब उन मुसलमानो को पता चला कि उन्हे धोका दिया गया है और उन्होने पाकिस्तान बनवाकर ग़लती का है.

पर अब क्या हो सकता था. मुसलमान जनता समझने लगी कि यह धोका बाज़ी मुसलिम लीगी लीडरो ने की है. फिर जब खलीक़ुज्ज़मॉं और दूसरे लीगो लीडर हिन्दुस्तान के मुसलमानो को छोड़कर पाकिस्तान भागने लगे तो उन्हे लीगी लीडरो से और भी नफ़रत होगई. इधर छोटे मोटे लीगी लीडर भा कांग्रेस सरकार में अपना कोई असर न देख बौखला गये. उन्होने कभी सरकार

اُٹھی تھی . جب تنگ نظری یہاں تک پہنچ جائے کہ جمیعتہ‌العلما جیسی راشٹری جماعت کو صرف اس لئے برا سمجھا جانے لگے کہ اُس کے لیڈر اب بھی اپنے هندو کانگریسی دوستوں سے آنکھ ملاکر بات کرتے هیں اور جب هادستان کے مسلمانوں کی بات کوئی نہیں سنتا تو وہ اُن کی بات سنکر سرکار تک پہنچانے کی کوشش کرتے هیں، تب دوسرے مسلمانوں کے لئے کانگریس والوں سے کیا آشا کی جا سکتی هے .

یہ سچ هے کہ آج جمیعتہ‌العلما پر مسلمان زیادہ سے زیادہ شواس کرتے هیں لیکن اسکا کارن هے بٹوارے کے بعد مسلم لیگ کے لیڈر مسلم جنتا کے سامنے بالکل ننگے هوگئے . وہ برابر مسلمانوں سے یہ کہتے رهے تھے کہ پاکستان بنتے هي مسلمانوں کي تمام مصیبتیں دور هو جائینگي . وہ یہ وشواس اُن پرانتوں کے مسلمانوں کو بھی دلاتے رهے تھے جو آج هندستان میں هیں . پر پاکستان بن جانے پر ان پرانتوں کے مسلمانوں نے دیکھا کہ وہ اس سے بھی بري حالت میں هیں جس میں پہلے تھے . اب ان مسلمانوں کو پتہ چلا کہ اُنھیں دھوکا دیا گیا هے اور اُنھوں نے پاکستان بنواکر غلطی کی هے .

پر اب کیا هو سکتا تھا . مسلمان جنتا سمجھنے لگی کہ یہ دھوکا بازي مسلم لیگی لیڈروں نے کی هے پھر جب خلیق‌الزماں اور دوسرے لیگی لیڈر هندستان کے مسلمانوں کو چھوڑ کر پاکستان بھاگنے لگے تو اُنھیں لیگی لیڈروں سے اور بھي نفرت هو گئی . اِدھر چھوٹے موٹے لیگي لیڈر بھی کانگریس سرکار میں اپنا کوئی اثر نہ دیکھ بوکھلا گئے . اُنھوں نے کبھی سرکار

पहनते हैं कि इसे पहनने से इज्जत बढ़ती है. उन्हे न कॉंग्रेस से प्रेम है न कॉंग्रेस के सिद्धान्तों से पर मैंने ऐसे कॉंग्रेसी भी देखे हैं जो शहर और जिला कांग्रेस कमेटियो के जिम्मेदार ओहदो पर है लेकिन फिर भी उनकी बाते सुनकर आप जल्दी विश्वास नही कर सकते कि वह महासभाई या संघी नही हैं अभी डेढ दो महीने पहले की बात है एलाहाबाद के हिन्दी 'अमृत पत्रिका' मे मैंने बाबा राघवदास का एक खत पढ़ा था. बाबा राघवदास की गिनती उत्तर प्रदेश के उन चन्द गाधी वादियो मे है जो सेवाग्राम की नकल पर अपना अलग आश्रम चलाते हैऔर जिन्हे उत्तर प्रदेश को कांग्रेस ने सोशलिस्ट लीडर आचार्य नरेन्द्र देव के मुकाबले में एसेम्बली के लिये चुनाव मे खडा किया था. उन्होने अपने खत मे सरकार को चेतावनी दी थी कि वह जमीअतुलउलमा के नेताओ पर कडा नजर रखे. जमीअतुलउलमा एक फिरकावराना जमाअत है. यह लोग मसजिदों में जमा हो कर मुसलमानो को भड़काते हैं उनमे फिरका परस्ती का प्रचार करते है उन्होने जमीअतुलउलमा जैसी राष्ट्री जमाअत के साथ राष्ट्री स्वयं सेवक सघ जैसी फासिस्ट संस्थाका भी नाम लिया था और कहा था कि जब सरकार ने उसको गैर कानूनी करार दे दिया है तो जामीअतुलउलमा के साथ भी यही बर्ताव होना चाहिये. बाबा जी ने अपने खत मे सरकार को यह भी सुझाया था कि मसजिदो पर कड़ी नजर रखनी चाहिये क्योंकि वहीं यह लोग जमा होते हैं. दूसरे शब्दों में उन्हें मुसलमानो का पाँच वक्त मसजिदों में जमा होकर इबादत करना भी पसंद नहीं था. जमीअत के खिलाफ कांगरेस के और लोगो को तरफ से भी यह आवाज

پہنتے ہیں کہ اسے پہننے سے عزت بڑھتی ہے . انہیں نہ کانگریس سے پریم ہے نہ کانگریس کے سدھانتوں سے . پر میں نے ایسے کانگریسی بھی دیکھے ہیں جو شہر اور ضلع کانگریس کمیٹیوں کے ذمہ دار عہدوں پر ہیں لیکن پھر بھی اُن کی باتیں سن کر آپ جلدی وشواس نہیں کر سکتے کہ وہ مہاسبھائی یا سنگھی نہیں ہیں . ابھی ڈیڑھ دو مہینہ پہلے کی بات ہے الہ آباد کے ہندی 'امرت پتریکا' میں میں نے بابا راگھو داس کا ایک خط پڑھا تھا بابا راگھو داس کی گنتی اُتر پردیش کے اُن چند گاندھی وادیوں میں ہے جو سیوا گرام کی نقل پر اپنا الگ آشرم چلاتے ہیں اور جنھیں اُتر پردیش کی کانگریس نے سوشلسٹ لیڈر آچاریہ نریندر دیو کے مقابلے میں اسمبلی کے لئے چناؤ میں کھڑا کیا تھا . اُنھوں نے اپنے خط میں سرکار کو چیتاونی دی تھی کہ وہ جمیعتہ العلما کے نیتاؤں پر کڑی نظر رکھے' جمیعتہ العلما ایک فرقہ وارانہ جماعت ہے یہ لوگ مسجدوں میں جمع ہوکر مسلمانوں کو بھڑکاتے ہیں . اُن میں فرقہ پرستی کا پرچار کرتے ہیں . اُنھوں نے جمیعتہ العلما جیسی راشٹری جماعت کے ساتھ راشٹری سویم سیوک سنگھ جیسی فاشسٹ سنستھا کا بھی نام لیا تھا اور کہا تھا کہ جب سرکار نے اُسکو غیر قانونی قرار دیدیا ہے تو جمیعتہ العلما کے ساتھ بھی یہی برتاؤ ہونا چاہئے . بابا جی نے اپنے خط میں سرکار کو یہ بھی سمجھایا تھا کہ مسجدوں پر کڑی نظر رکھنی چاہئے کیونکہ وہیں یہ لوگ جمع ہوتے ہیں . دوسرے شبدوں میں اُنھیں مسلمانوں کا پانچ وقت مسجدوں میں جمع ہوکر عبادت کرنا بھی پسند نہیں تھا . جمیعتہ کے خلاف کانگریس کے اور لوگوں کی طرف سے بھی یہ آواز

की भी सोचेगा और वहाँ का हिन्दू अपने हिन्दुस्तान आये हुए रिश्तेदारो और दोस्तो को भी याद करेगा लेकिन मैं देख रहा हूँ कि सरकार हो या अखबार दोनों उन मुसलमानों पर तो कड़ी निगाह रखते है जिनका पाकिस्तान से कोई ताल्लुक है लेकिन उन लोगो के बारे मे कभी यह अखबार शोर नही मचाते जो पाकिस्तानी सरहदो पर जाकर हिन्दुस्तान का माल बेच आते हैं और जो ९५ फीसदी मुसलमान नही होते. पंजाब, बंगाल और राजस्थान की सरहदो से इन देश के दुश्मनो ने लाखो' रुपये का माल नाजायज ढग से पाकिस्तान को पहुंचा दिया पर मैंने कभी अखबारों को उनके खिलाफ इस सख्ती से लिखते नही देखा. देश का बँटवारा होते समय जब सरकारी नौकरो से पूछा गया था कि वह हिन्दुस्तान मे रहना चाहते हैं या पाकिस्तान मे तो ज्यादा तर मुसलमानों ने पाकिस्तान मे रहना पसन्द किया था. उस समय उन्हे यह पता नही था कि वह कोई जुर्म कर रहे हैं पर बाद में उन लोगो को भी सरकारी नौकरियो से अलग कर दिया गया।जिन्हो ने पहले पाकिस्तान जाने का इरादा जाहिर किया था पर बाद मे पक्का' जवाब मांगने पर यह कहा था कि वह हिन्दुस्तान मे ही रहना चाहते है आज भी रेलवे के बहुत से नौकर हिन्दुस्तान मे बेकार पड़े है और उन्हे जगह नहीं मिलती यो बेकार भूको मरने वाले लोग या उनके बाल बच्चे कैसे हिन्दुस्तान के सच्चे वफादार बनेंगे, यह सोचने की बात है.

उन कांग्रेसियों को तो छोड़ दीजिये जो आज कांग्रेस मे इस लिये शामिल हैं कि कांग्रेस राज कर रही है और जो खादी इसलिये

کی بھی سوچے گا اور وہاں کا ہندو اپنے ہندستان آئے ہوئے رشتہ‌داروں اور دوستوں کو بھی یاد کرے گا لیکن میں دیکھ رہا ہوں کہ سرکار ہو یا اخبار دونوں اُن مسلمانوں پر تو کڑی نگاہ رکھتے ہیں جن کا پاکستان سے کوئی تعلق ہے لیکن اُن لوگوں کے بارے میں کبھی یہ اخبار شور نہیں مچاتے جو پاکستانی سرحدوں پر جاکر ہندستان کا مال بیچ آتے ہیں اور جو ۹۵ فیصدی مسلمان نہیں ہوتے پنجاب' بنگال اور راجستھان کی سرحدوں سے ان دیش کے دشمنوں نے لاکھوں روپئے کا مال ناجائز ڈھنگ سے پاکستان کو پہنچا دیا پر میں نے کبھی اخباروں کو اُن کے خلاف اس سختی سے لکھتے نہیں دیکھا . دیش کا بٹوارہ ہوتے سمے جب سرکاری نوکروں سے پوچھا گیا تھا کہ وہ ہندستان میں رہنا چاہتے ہیں یا پاکستان میں تو زیادہ تر مسلمانوں نے پاکستان میں رہنا پسند کیا تھا اُس سمے اُنھیں یہ پتہ نہیں تھا کہ وہ کوئی جرم کر رہے ہیں . پر بعد میں اُن لوگوں کو بھی سرکاری نوکریوں سے الگ کردیا گیا جنھوں نے پہلے پاکستان جانے کا ارادہ ظاہر کیا تھا پر بعد میں ' پکا ' جواب مانگنے پر یہ کہا تھا کہ وہ ہندستان میں ہی رہنا چاہتے ہیں . آج بھی ریلوے کے بہت سے نوکر ہندستان میں بیکار پڑے ہیں اور انھیں جگہ نہیں ملتی . یوں بیکار بھوکوں مرنے والے لوگ یا انکے بال بچے کیسے ہندستان کے سچے وفادار بنیں گے' یہ سوچنے کی بات ہے .

اُن کانگریسیوں کو تو چھوڑ دیجئے جو آج کانگریس میں اس لئے شامل ہیں کہ کانگریس راج کررہی ہے اور جو کھادی اسلئے

को न छोडो तुम हमारे भाई हो और हम अपनी जान देकर भी तुम्हारी हिफाजत करेगे

हिन्दुस्तान के तोन साढ़े तीन करोड मुसलमानो से वफादारी की माग करते करते हर कांग्रेसी लीडर और वीजर की जबान नहीं थकती लेकिन काग्रेस वालो को ईमानदारी से सोचना चाहिये कि क्या कभी उन्होने जी से उन्हे वफादार बनाने की कोशिश की. बार बार उन्हे इस बात की याद दिलाना कि तुमने देश के टुकड़े कराये, तुमने मुस्लिम लीग का साथ दिया, तुम अब भी पाकिस्तान का दम भरते हो, क्या उन्हे वफादार बनाने की बाते है ? क्या यह बाते सुन सुनकर उनके दिल मे यह विश्वास न जमता जायगा कि अब हिन्दू हम पर कभी यकीन नही करेगे और इसलिये हिन्दुस्तान मे हमारे लिये कभी इज्जत की जगह नही हो सकती क्या पाकिस्तान के तमाम हिन्दू हिन्दुस्तान के बॅटवारे की मुखालफत नही कर चुके थे ? फिर पाकिस्तान से तो ऐसी खबरे नही आती कि वहाँ हिन्दुओ को हिन्दुस्तान का जासूस कहकर पकडा जाता हो या उन्हे हर वक्त इस बात के ताने दिये जाते हो कि तुम पाकिस्तान बनने से रोक रहे थे

दोनो ही जगह तो बिलकुल एक सी हालत थी. दोनो जगह की कम गिनत जातियो ने बहुगिनत जाति का विरोध किया था, दोनो ही जगह लोग अपने अपने सम्बन्धियो को छोडकर दूसरे देशो में गये थे. फिर क्या यह पहले से नही समझा गया था कि जो मुसलमान हिन्दुस्तान में रहेगा वह अपने पाकिस्तान गये हुए नाते दारों से पत्र व्यवहार भी करेगा और कभी कभी पाकिस्ताम जाने

کو نہ چھوڑو . تم ہمارے بھائي ہو اور ہم اپني جان دیکر بھي تمہاري حفاظت کرینگے .

ہندستان کے تین ساڑھے تین کروڑ مسلمانوں سے وفاداری کی مانگ کرتے کرتے ہر کانگریسي لیڈر اور وزیر کي زبان نہیں تھکتی لیکن کانگریس والوں کو ایمانداري سے سوچنا چاہئے کہ کیا کبھی اُنہوں نے جي سے انہیں وفادار بنانے کي کوشش کي بار بار اُنہیں اس بات کی یاد دلانا کہ تم نے دیش کے ٹکڑے کرائے، تم نے مسلم لیگ کا ساتھ دیا، تم اب بھی پاکستان کا دم بھرتے ہو کیا اُنہیں وفادار بنانے کی باتیں ہیں ؟ کیا یہ باتیں سن سن کر اُن کے دل میں یہ وشواس نہ جمتا جائے گا کہ اب ہندو ہم پر کبھی یقین نہیں کرینگے اور اس لئے ہندستان میں ہمارے لئے کبھی عزت کی جگہ نہیں ہوسکتی . کیا پاکستان کے تمام ہندو ہندستان کے بٹوارے کی مخالفت نہیں کرچکے تھے ؟ پھر پاکستان سے تو ایسی خبریں نہیں آتیں کہ وہاں ہندوؤں کو ہندستان کا جاسوس کہکر پکڑا جاتا ہو یا اُنہیں ہر وقت اس بات کے طعنے دیئے جاتے ہوں کہ تم پاکستان بننے سے روک رہے تھے .

دونوں ہی جگہ تو بالکل ایک سی حالت تھی دونوں جگہ کی کم گنت جاتیوں نے بہو گنت جاتي کا وِرودھ کیا تھا دونوں ہی جگہ لوگ اپنے اپنے سمبندھیوں کو چھوڑ کر دوسرے دیشوں میں گئے تھے، پھر کیا یہ پہلے سے نہیں سمجھا گیا تھا کہ جو مسلمان ہندستان میں رہے گا وہ اپنے پاکستان گئے ہوئے ناتے داروں سے پتر ویوھار بھی کرے گا اور کبھی کبھی پاکستان جانے

इससे पता चलता है कि देश मे आमतौर पर और पच्छिमी बंगाल में खासतौर पर हिन्दुओ के दिल मे महासभा ने कितनी जगह बना ली है.

अब यह सोचना कांग्रेस का काम है कि वह महासभा के इस चैलेंज का क्या जवाब देगी. वैसे तो यह चैलेंज हर तरक्की-पसन्द ताकत के लिये है लेकिन कांग्रेस के लिये खास तौर पर इसलिये है कि आज देश की हुकूमत की बागडोर कांग्रेस ही के हाथ मे है. इसमे शक नही कि हमारे देश मे—पाकिस्तान के जवाब मे सही—जो कुछ हुआ वह कांग्रेस और कांग्रेस सरकार के माथे पर एक बड़ा कलंक है. हिन्दुस्तान की इन घटनाओ ने जाहिर कर दिया कि आजादी के बाद हिन्दुस्तान कितनी तेजी से गान्धीजी के बतलाये हुए शान्ति प्रेम और अहिंसा के रास्ते से भटकता जा रहा है. और कांग्रेस वाले तो जैसे अपने फर्ज को बिलकुल ही भूल गये है आये दिन कांग्रेस की दल बन्दी और आपसी झगडो की तो खबरें आती रहती हैं पर कही से यह खबर नही आती कि दो कांग्रेसियो में इस बात पर झगडा हुआ हो कि ऐसम्बली की मेम्बरी पहले कौन छोड़ेगा और कन्ट्रोल के लायसन्स पहले कौन छोड़ेगा या चोर बाजारी से पहले कौन बाज आयेगा—कांग्रेस के खास मक़सदो में जहाँ खादी पहनना और चरखा चलाना है वही हिन्दू मुस्लिम एकता के लिये काम करना भी है. पर कितने कांग्रेसी हैं जो दिल से किसी हिन्दू को साम्प्रदायिकता की बुराइयाँ समझाते हो और कितने ऐसे कांग्रेसी हैं जिन्होने पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानो को यह कह कर रोका हो कि तुम हिन्दुस्तान

اس سے پتہ چلتا ہے کہ دیش میں عام طور پر اور پچھمی بنگال میں خاص طور پر ہندوؤں کے دل میں مہاسبھا نے کتنی جگہ بنا لی ہے

اب یہ سوچنا کانگریس کا کام ہے کہ وہ مہاسبھا کے اس چیلنج کا کیا جواب دیگی . ویسے تو یہ چیلنج ہر ترقی پسند طاقت کے لئے ہے لیکن کانگریس کے لئے خاص طور پر اس لئے ہے کہ آج دیش کی حکومت کی باگ ڈور کانگریس ہی کے ہاتھ میں ہے اس میں شک نہیں کہ ہمارے دیش میں — پاکستان کے جواب میں سہی — جو کچھ ہوا وہ کانگریس اور کانگریس سرکار کے ماتھے پر ایک بڑا کلنک ہے . ہندستان کی ان گھٹناؤں نے ظاہر کردیا کہ آزادی کے بعد ہندستان کتنی تیزی سے گاندھی جی کے بتلائے ہوئے شانتی' پریم اور اہنسا کے راستے سے بھٹکتا جارہا ہے . اور کانگریس والے تو جیسے اپنے فرض کو بالکل ہی بھول گئے ہیں . آئے دن کانگریس کی دلبندی اور آپسی جھگڑوں کی تو خبریں آتی رہتی ہیں پر کہیں سے یہ خبر نہیں آتی کہ دو کانگریسیوں میں اس بات پر جھگڑا ہوا ہو کہ اسمبلی کی ممبری پہلے کون چھوڑے گا' اور کنٹرول کے لائسنس پہلے کون چھوڑے گا یا چور بازاری سے پہلے کون باز آئے گا . کانگریس کے خاص مقصدوں میں جہاں کھادی پہننا اور چرخہ چلانا ہے وہیں ہندو مسلم ایکتا کے لئے کام کرنا بھی ہے پر کتنے کانگریسی ہیں جو دل سے کسی ہندو کو سامپر دایکتا کی برائیاں سمجھاتے ہوں اور کتنے ایسے کانگریسی ہیں جنہوں نے پاکستان جانے والے مسلمانوں کو یہ کہکر روکا ہو کہ تم ہندستان

महासभा हिन्दुओ को यह समझाती कि कांग्रेस तुम्हारी दुश्मन और मुसलमानो की दोस्त है. इसी तरह जिन हिन्दुओ को सरकार गिरफ्तार करती, मुकदमे चलाती और सजा देती उनके सम्बन्धियो के दिल मे आप ही आप सरकार और कांग्रेस के खिलाफ नफरत पैदा होती. गरज, हर हालत मे महासभा अपना फायदा ही फायदा सोचती थी. लेकिन ख़ुशी की बात है कि उसकी यह चाल सफल न हो सकी. जहाँ जहाँ पुलिस और सरकारी अफसर मुस्तैद थे वहाँ वहाँ लाख कोशिशें करने पर भी कोई झगड़ा न हो सका और अगर हुआ भी तो सख्ती के साथ दबा दिया गया फिर भी हिन्दुस्तान से मुसलमानो की काफी तादाद पाकिस्तान चली गई और महासभा को इतने वोटो की चिन्ता से मुक्ति मिल गई.

लेकिन यह समझना कि महासभा खामोश हो गई है, बहुत बडी भूल होगी नेहरू-लियाकत समझौते के बाद ही महासभा के पुराने लीडर श्री श्यामाप्रसाद मुकर्जी का अपने एक और साथी के साथ नेहरू सरकार से अलग होना बतलाता है कि हवा का रुख किस तरफ है. मुकर्जी ने अपने इस्तीफे के बारे मे जो बयान दिया था वह काफी गोल मोल था. उन्होने खुलकर नही कहा कि उन्हे नेहरू-लियाक़त समझौते पर विश्वास नही है पर उनकी कोशिश यही है कि यह समझौता कामयाब न हो. अगर यह समझौता कामयाब हो गया तो फिरकापरस्तो की लीडरी फिर खतरे मे पड जायगी कलकत्ते मे हिन्दुओ की तरफ से मुकर्जी का जिस जोश के साथ स्वागत हुआ और उनके कहने के मुताबिक दिल्ली से कलकत्ते तक रास्ते मे हर जगह लोगो ने जिस तरह उनके दर्शन किये

مہاسبھا هندوؤں کو یہ سمجھاتی کہ کانگریس تمہاری دشمن اور مسلمانوں کی دوست ھے اسی طرح جن هندوؤں کو سرکار گرفتار کرتی، مقدمے چلاتی اور سزا دیتی اُنکے سمبندھیوں کے دل میں آپ هي آپ سرکار اور کانگریس کے خلاف نفرت پیدا هوتی. غرض هر حالت میں مہا سبھا اپنا فائدہ هی فائدہ سوچتی تھی لیکن خوشی کی بات هے کہ اُسکی یہ چال سپھل نہ ھوسکی. جہاں جہاں پولیس اور سرکاری افسر مستعد تھے وهاں وهاں لاکھ کوششیں کرنے پر بھی کوئی جھگڑا نہ هو سکا اور اگر هوا بھي تو سختي کے ساتھ دبا دیا گیا. پھر بھي هندستان سے مسلمانوں کی کافی تعداد پاکستان چلی گئی اور مہاسبھا کو اتنے ووٹوں کی چنتا سے مکتی مل گئی.

لیکن یہ سمجھنا کہ مہاسبھا خاموش ھوگئی ھے، بہت بڑی بھول ھوگی. نہرو لیاقت سمجھوتے کے بعد ھی مہاسبھا کے پرانے لیڈر شری شیاما پرساد مکرجی کا اپنے ایک اور ساتھی کے ساتھ نہرو سرکار سے الگ ھونا بتلاتا ھے کہ ھوا کا رخ کس طرف ھے مکرجی نے اپنے استعفے کے بارے میں جو بیان دیا تھا وہ کافي گول مول تھا انھوں نے کھلکر نہیں کہا کہ انھیں نہرو لیاقت سمجھوتے پر وشواس نہیں ھے پر انکي کوشش یہي ھے کہ یہ سمجھوتہ کامیاب نہ ھو. اگر یہ سمجھوتہ کامیاب ھوگیا تو فرقہ پرستوں کی لیڈری پھر خطرے میں پڑجائیگی. کلکتے میں هندوؤں کي طرف سے مکرجی کا جس جوش کے ساتھ سواگت ھوا اور انکے کہنے کے مطابق دلی سے کلکتے تک راستے میں هر جگہ لوگوں نے جسطرح ان کے درشن کئے

दंगे करने में इन जमातों को कई फायदे दिखाई देते हैं हिन्दुस्तान में मुसलमानों की अब भी काफी तादाद है और उन के वोट चुनाव पर काफी असर डाल सकते हैं महासभा जानती है कि वह उन के वोट न हासिल कर सकेगी इस लिये अगर मुसलमान यहाँ से चले जाय तो उसका काम बन सकता है मुसलमानों को निकालने के लिये उसने पहले तो यह नारा लगाया कि अबादी की अदला बदली कर ली जाय. फिर उसने जंग का नारा लगाया और जब यह देखा कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों ऐसी मूर्खता न करेंगे तो अपनी सारी कोशिश इस बात में लगा दी कि हिन्दुस्तान भर में हिन्दू-मुस्लिम दंगे हो जायें

आबादी का तबादला होने पर करोड़ आदमियों को किन कष्टों का सामना करना पड़ेगा इससे उसे कोई गरज नहीं और जंग में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में कितनी तबाही और बरबादी होती इससे भी उसे कोई सरोकार नहीं. उसका मकसद तो किसी तरह मुसलमानों को यहाँ से निकाल कर उन के बदले में आने वाले हिन्दुओं से यह कह कर उन के वोट हासिल करना था कि देखो कांग्रेस तुम्हारा खयाल नहीं करती थी हमने तुम्हें मुसलमानों की गुलामी से छुटकारा दिलाया. उस का आखिरी हरबा हिन्दू मुस्लिम दंगे थे. क्योंकि यहाँ दंगों में जो हिन्दू हिस्सा लेते वह न सिर्फ मुसलमानों की जान लेते बल्कि उनका माल भी लूटते.

अगर इस लूट में उन के हाथ कुछ माल आजाता और वह पकड़े न जाते तो महासभा यह कहती कि मेरे कारन तुम्हें यह लाभ पहुंचा. और अगर सरकार उन्हें रोकती या पकड़ती तो

دنگے کرانے میں اِن جماعتوں کو کئی فائدے دکھائی دیتے ہیں ہندستان میں مسلمانوں کی اب بھی کافی تعداد ہے اور ان کے ووٹ چناؤ پر کوئی اثر ڈال سکتے ہیں مہاسبھا جانتی ہے کہ وہ ان کے ووٹ نہ حاصل کرسکے گی اس لئے اگر مسلمان یہاں سے چلے جائیں تو اس کا کام بن سکتا ہے مسلمانوں کو نکالنے کے لئے اس نے پہلے تو یہ نعرہ لگایا کہ آبادی کی ادلا بدلی کرلی جائے پھر اس نے جنگ کا نعرہ لگایا اور جب یہ دیکھا کہ ہندستان اور پاکستان دونوں ایسی مورکھتا نہ کرینگے تو اپنی ساری کوشش اس بات میں لگا دی کہ ہندستان بھر میں ہندو مسلم دنگے ہو جائیں۔

آبادی کا تبادلہ ہونے پر کروڑوں آدمیوں کو کن کشٹوں کا سامنا کرنا ہوتا اِس سے اُسے کوئی غرض نہیں اور جنگ میں ہندستان اور پاکستان میں کتنی تباہی اور بربادی ہوتی اس سے بھی اسے کوئی سروکار نہیں اُس کا مقصد تو کسی طرح مسلمانوں کو یہاں سے نکال کر اُن کے بدلے میں آنے والے ہندوؤں سے یہ کہکر اُنکے ووٹ حاصل کرنا تھا کہ دیکھو' کانگریس تمہارا خیال نہیں کرتی تھی' ہم نے تمہیں مسلمانوں کی غلامی سے چھٹکارا دلایا اُس کا آخری حربہ ہندو مسلم دنگے تھے کیونکہ یہاں دنگوں میں جو ہندو حصہ لیتے وہ نہ صرف مسلمانوں کی جان لیتے بلکہ اُن کا مال بھی لوٹتے۔

اگر اس لوٹ میں اُن کے ہاتھ کچھ مال آجاتا اور وہ پکڑے نہ جاتے تو مہاسبھا یہ کہتی کہ میرے کارن تمہیں یہ لابھ پہنچا اور اگر سرکار اُنہیں روکتی یا پکڑتی تو

खबरें या तो दबा दी गईं या बहुत कम करके छापी गईं. अगर पूरबी बंगाल की खबरों के साथ हिन्दुस्तान की खबरें भी छपती रहती तो यहां के हिन्दुओं को इतना गुस्सा न आता यही पाकिस्तान मे हुआ. वहाँ भी अखबारों ने हिन्दुस्तान की खबरों को तो खूब बढ़ा चढ़ा कर छापा और पाकिस्तान की खबरों पर पर्दा डालते रहे. हद हो गई थी कि कलकत्ते के जिस दंगे मे पचास मुसलमान भी नहीं मरे उसके बारे में पाकिस्तानी अखबारों ने छापा कि दस हज़ार मुसलमान मार डाले गये. इस तरह की खबरें एक तरफ तो बहुगिनत जाति के लोगों को गुस्सा दिलाती थीं दूसरी तरफ कम गिनत जाति के लोगों के दिलों मे डर पैदा करती थीं.

अखबारों के अलावा दोनों जगह की साम्प्रायिक संस्थाओं ने भी हवा को खराब किया. पाकिस्तान में अन्सारों ने हिन्दुओं को परेशान किया और आम मुसलमानों को उनके खिलाफ उभारते रहे. हिन्दुस्तान मे हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को मौका मिल गया कि वह पूरबी बंगाल के मामले को लेकर हिन्दुओं मे कांग्रेस और नेहरू सरकार के खिलाफ प्रचार करें. गांधी जी की कुरबानी ने इन जमातों को एक तरह से मुर्दा कर दिया था पर पाकिस्तान के फिरका परस्तों ने यहाँ के फिरका परस्तों को जिन्दगी बख्श दी चुनाव आने वाले हैं. महासभा कह चुकी है कि वह अगले चुनाव मे हिस्सा लेगी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी उस के साथ ही है. अगरचे श्री गोलवालकर कह चुके हैं कि वह राजनीति में भाग न लेंगे, पर यह तो तय है कि वह अपने चेलों को कांग्रेस का साथ देने का हुक्म नहीं दे सकते. हिन्दुस्तान से साम्प्रदायिक

خبریں یا تو دبا دی گئیں یا بہت کم کرکے چھاپی گئیں . اگر پوربی بنگال کی خبروں کے ساتھ ہندستان کی خبریں بھی چھپتی رہتیں تو یہاں کے ہندوؤں کو اتنا غصہ نہ آتا . یہی پاکستان میں ہوا وہاں اخباروں نے ہندستان کی خبروں کو تو خوب بڑھا چڑھا کر چھاپا اور پاکستان کی خبروں پر پردہ ڈالتے رہے . حد ہوگئی تھی کہ کلکتے کے جس دنگے میں پچاس مسلمان بھی نہیں مرے اس کے بارے میں پاکستانی اخباروں نے چھاپا کہ دس ہزار مسلمان مار ڈالے گئے اس طرح کی خبریں ایک طرف تو بہو گنت جاتی کے لوگوں کو غصہ دلاتی تھیں دوسری طرف کم گنت جاتی کے لوگوں کے دلوں میں ڈر پیدا کرتی تھیں .

اخباروں کے علاوہ دونوں جگہ کی سامپردایک سنستھاؤں نے بھی ہوا کو خراب کیا پاکستان میں انصاروں نے ہندوؤں کو پریشان کیا اور عام مسلمانوں کو ان کے خلاف ابھارتے رہے ہندستان میں ہندو مہاسبھا اور راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کو موقع مل گیا کہ وہ پوربی بنگال کے معاملے کو لیکر ہندوؤں میں کانگریس اور نہرو سرکار کے خلاف پرچار کرے گاندھی جی کی قربانی نے ان جماعتوں کو ایک طرح سے مردہ کردیا تھا . پر پاکستان کے فرقہ پرستوں نے یہاں کے فرقہ پرستوں کو زندگی بخش دی . چناؤ آنے والے ہیں . مہاسبھا کہہ چکی ہے کہ وہ اگلے چناؤ میں حصہ لیگی . راشٹریہ سویم سیوک سنگھ بھی اس کے ساتھ ہی ہے اگرچہ شری گولوالکر کہہ چکے ہیں کہ وہ راج نیتی میں بھاگ نہ لیں گے' پر یہ تو طے ہے کہ وہ اپنے چیلوں کو کانگریس کا ساتھ دینے کا حکم نہیں دیسکتے . ہندستان میں سامپردایک

पहुँचे तो उन्होंने बतलाया कि वहाँ मरने वालों की तादाद किसी तरह दो सौ के ऊपर नहीं पहुँचती इस बार भी अखबारों को ज़रा भी ध्यान से पढ़ने पर साफ मालूम होजाता था कि खबरें बढ़ा चढ़ा कर छापी गई हैं. खुलना, बारीसाल और ढाका की एक एक खबर चार चार पांच पाच बार तक छापी गई और उस पर ऐसे ऐसे नोट लिखे गये जो हर पढने वाले को भड़का सकते थे. पूरबी बंगाल की घटनाओं को इस तरह उभारने और उछालने मे कई मकसद काम कर रहे थे अखबारों की बिक्री बढ़ सकती थी. कलकत्ता के बंगला अखबार 'युगान्तर' की जो 'अमृत बाजार पत्रिका' का बंगला एडीशन कहा जा सकता है, इन दंगों की खबरों और भड़काने वाले लेखों के कारन एकदम दूनी खपत होने लगी थी. दूसरे हिन्दू अखबार जो अपने को राष्ट्रीय कहते हुए भी साम्प्रदायिकता का प्रचार कर रहे थे, ज़्यादा गिनती में छपने और बिकने लगे थे. यह कहना ग़लत नहीं होगा कि पूरबी बंगाल के साम्प्रदायिक दंगों को बढ़ाने मे अखबारों ने बहुत हिस्सा लिया. अगर हिन्दुस्तान के अख़बार सच्ची खबरें हासिल करने की कोशिश करते और मामले को बढ़ाकर न दिखाते तो यह नौबत हरगिज़ न आती. फिर यही नहीं कि यहाँ के अखबारों ने पाकिस्तान की खबरें बढ़ा चढ़ा कर छापी बल्कि उन्हों ने यह भी किया कि हिन्दुस्तान मे जो दंगे हुए और जिन मे मुसलमानों को बहुत ज़्यादा नुक़सान पहुंचा उन की खबरें यहां के अख़बार बिलकुल पी गये. होली के मौक़े पर कटनी, बरेली, शाहजहांपुर, पीलीभीत, हरदोई, अलीगढ़, आगरा और मुरादाबाद वग़ैरा में जो दंगे हुए उनकी

پہونچے تو اُنھوں نے بتلایا کہ وھاں مرنے والوں کی تعداد کسی طرح دو سو کے اوپر نہیں پہونچتی اِس بار بھی اخباروں کو ذرا بھی دھیان سے پڑھنے پر صاف معلوم ھوجاتا تھا کہ خبریں بڑھا چڑھا کر چھاپی گئی ھیں ۔ کھلنا' باری سال اور ڈھاکہ کی ایک ایک خبر چار چار پانچ پانچ بار تک چھاپی گئی اور اس پر ایسے ایسے نوٹ لکھے گئے جو ھر پڑھنے والے کو بھڑکا سکتے تھے ۔ پوربی بنگال کی گھٹناؤں کو اس طرح اُبھارنے اور اُچھالنے میں کئی مقصد کام کر رھے تھے ۔ اخباروں کی بکری بڑھ سکتی تھی کلکتہ کے بنگلہ اخبار ' یوگانتر ' کی' جو 'امرت بازار پتریکا' کا بنگلہ اڈیشن کہا جا سکتا ھے' ان دنگوں کی خبروں اور بھڑکانے والے لیکھوں کے کارن ایک دم دونی کھپت ھونے لگی تھی ۔ دوسرے ھندو اخبار' جو اپنے کو راشٹری کہتے ھوئے بھی سامپردایکتا کا پرچار کر رھے تھے' زیادہ گنتی میں چھپنے اور بکنے لگے ۔ یہ کہنا غلط نہیں ھوگا کہ پوربی بنگال کے سامپردایک دنگوں کو بڑھانے میں اخباروں نے بہت حصہ لیا ۔ اگر ھندستان کے اخبار سچی خبریں حاصل کرنے کی کوشش کرتے اور معاملے کو بڑھاکر نہ دکھاتے تو یہ نوبت ھرگز نہ آتی پھر یہی نہیں کہ یہاں کے اخباروں نے پاکستان کی خبریں بڑھا چڑھا کر چھاپیں بلکہ اُنھوں نے یہ بھی کیا کہ ھندستان میں جو دنگے ھوئے اور جن میں مسلمانوں کو بہت زیادہ نقصان پہنچا ان کی خبریں یہاں کے اخبار بالکل پی گئے. ھولی کے موقعہ پر کٹنی' دریلی' شاھجہانپور' پیلی بھیت' ھردوئی' علی گڈھ' آگرہ اور مرادآباد وغیرہ میں جو دنگے ھوئے انکی

करते हैं. फिर पाकिस्तान के इस्लामी रियासत बन जाने पर वहाॅ उन्हे क्यो कोई खतरा होता. लेकिन अगरेजो की बरकत से हिन्दुस्तान मे हिन्दू मुसलमानो को जो इतिहास पढाया जाता रहा है उसमे मुस्लिम राज या इस्लामी राज का जान बूझ कर ऐसी शकल दिखाई गई है जिससे हिन्दुओ को डर लगता है पाकिस्तान मे भी यह डर गलत ही साबित हुआ क्योंकि जब कायदे आजम जिनाह और पाकिस्तान के बड़े वजीर ने पाकिस्तान को मुस्लिम राज कहना शुरू किया. और जब वहाॅ के विधान मे भी पाकिस्तान को मुस्लिम रियासत मान लिया गया तो भी कोई ऐसा कानून नही बनाया गया जिससे गैर मुस्लिमो को कोई खास तकलीफ या शिकायत होती. शिकायतो के कारनो पर तो मै ऊपर रोशनी डाल ही चुका हूॅ.

इस बार पूरबी बगाल मे जो झगड़ा हुआ वह एक बिलकुल मामूली बात से शुरू हुआ था लेकिन अखबारो और गैर जिम्मेदार लोगो ने उसे इतना बढा चढा कर बयान किया कि आम लोग तो यह समझने लगे थे कि इस बात को लेकर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मे इस बार जरूर जग छिड़ जायगी जिन लोगो को १९४६ के नोआखाली के दगो का लेकर इन अखबारो का झूठा प्रोपैगन्डा याद था और जो हर मामले पर ठडे दिल से गौर करते हैं उन्हो ने शुरू शुरू मे पूरबी बंगाल की खबरो पर अधिक ध्यान नही दिया. क्योंकि उस वक्त भी नोआखाली मे मरने वालो की तादाद आठ दस हजार से कम नहीं बताई गई थी और यह तादाद कांग्रेस के ऐसे लीडरो ने बताई थी जिनकी बात पर हर किसी को यकीन आजाता था. लेकिन जब महात्मा गांधी नोआखाली

کرتے ہیں ، پھر پاکستان کے اسلامی ریاست بن جانے پر وہاں اُنھیں کیوں کوئی خطرہ ہوتا لیکن انگریزوں کی برکت سے ہندستان میں ہندو مسلمانوں کو جو اتہاس پڑھایا جاتا رہا ہے اُس میں مسلم راج یا اسلامی راج کی جان بوجھکر ایسی شکل دکھائی گئی ہے جس سے ہندوؤں کو ڈر لگتا ہے آخر پاکستان میں بھی یہ ڈر غلط ہی ثابت ہوا کیوں کہ جب قائد اعظم جناح اور پاکستان کے بڑے وزیر نے پاکستان کو مسلم راج کہنا شروع کیا' اور جب وہاں کے ودھان میں بھی پاکستان کو مسلم ریاست مان لیا گیا تب بھی وہاں ایسا کوئی قانون نہیں بنایا گیا جس سے غیر مسلموں کو کوئی خاص تکلیف یا شکایت ہوتی شکایتوں کے کارنوں پر تو میں اوپر روشنی ڈال ہی چکا ہوں

اِس بار پوربی بنگال میں جو جھگڑا ہوا وہ ایک بالکل معمولی بات سے شروع ہوا تھا لیکن اخباروں اور غیر ذمہ دار لوگوں نے اُسے اتنا بڑھا چڑھاکر بیان کیا کہ عام لوگ تو یہ سمجھنے لگے تھے کہ اِس بات کو لے کر ہندستان اور پاکستان میں اِس بار ضرور جنگ چھڑ جائیگی جن لوگوں کو ۱۹۴۶ کے نواکھالی کے دنگوں کو لے کر اِن اخباروں کا جھوٹا پروپگنڈا یاد تھا اور جو ہر معاملے پر ٹھنڈے دل سے غور کرتے ہیں اُنھوں نے شروع شروع میں پوربی بنگال کی خبروں پر ادھک دھیان نہیں دیا. کیونکہ اُس وقت بھی نواکھالی میں مرنے والوں کی تعداد آٹھ دس ہزار سے کم نہیں بتائی گئی تھی اور یہ تعداد کانگریس کے ایسے لیڈروں نے بتائی تھی جن کی بات پر ہر کسی کو یقین آجاتا تھا لیکن جب مہاتما گاندھی نواکھالی

बहुत मदद मिली कि हिन्दुस्तान अगर बँटता नहीं तो यहाँ हिन्दुओं का राज होगा और मुसलमान उनके गुलाम रहेंगे मुसलमान समझते थे कि पाकिस्तान बनने पर हिन्दुओं की गुलामी से छुटकारा मिलेगा और हिन्दू यह बातें सुनकर सोचते थे कि जब मुसलमानों को उनका हिस्सा मिल ही जायगा तब हिन्दुस्तान में उनको क्यों कोई अधिकार रहे यह मानना पड़ेगा कि इस भावना ने दोनों देशों को काफ़ी नुक्सान पहुँचाया लेकिन यह भी मानना पड़ेगा कि दोनों देशों की सरकारों ने जनता के इस खयाल को बढ़ावा नहीं दिया बल्कि जहाँ तक हो सका दोनों देशों में ऐसी भावना फैलाने वालों को सख्ती से रोका गया फिर भी पाकिस्तान में ऐसे लोगों की ज्यादती थी जो उसे इस्लामी हुकूमत बनाने का ख्वाब देखते थे वह चाहते थे कि वहाँ शरीअत की हुकूमत हो और उन लोगों की बातें सुनकर हिन्दुओं के दिल दहलते थे सहमते थे और वह सोचते थे कि अगर ऐसा हो गया तो इस्लामी हुकूमत में हमारे लिये कोई गुंजायश न होगी. यहाँ मैं इस बहस में नहीं पड़ना चाहता कि• इस्लामी हुकूमत में अपने लिये गुन्जायश न देखने का पाकिस्तान के हिन्दुओं का ख्याल सही था या गलत आज तुर्की मिस्र, ईरान इराक, अफगानिस्तान और सीरिया वग़ैरह तमाम मुस्लिम राष्ट्रों में इसाई, पारसी, यहूदी, बौद्ध, और हिन्दू सिक्ख तक रहते हैं और उन्होंने कभी महज़ मुस्लिम सरकार होने के कारन इन देशों की शिकायत नहीं की अफ़गानिस्तान में भी, जो बहुत पिछड़ा हुआ देश कहा जाता है, हिन्दुओं के मंदिर और सिक्खों के गुरद्वारे हैं, और वहाँ वह लोग आजादी के साथ अपने ढंग से पूजा पाठ

بہت مدد ملی کہ ہندستان اگر بنٹتا نہیں تو یہاں ہندوؤں کا راج ہوگا اور مسلمان ان کے غلام رہینگے مسلمان سمجھتے تھے کہ پاکستان بننے پر ہندوؤں کی غلامی سے چھٹکارا ملیگا اور ہندو یہ باتیں سن کر سوچتے تھے کہ جب مسلمانوں کو ان کا حصہ مل ہی جائیگا تب ہندستان میں ان کو کیوں کوئی ادھیکار ہے یہ ماننا پڑیگا کہ اس بھاونا نے دونوں دیشوں کو کافی نقصان پہونچایا لیکن یہ بھی ماننا پڑیگا کہ دونوں دیشوں کی سرکاروں نے جنتا کے اس خیال کو بڑھاوا نہیں دیا بلکہ جہاں تک ہوسکا دونوں دیشوں میں ایسی بھاونا پھیلانے والوں کو سختی سے روکا گیا . پھر بھی پاکستان میں ایسے لوگوں کی زیادتی تھی جو اُسے اسلامی حکومت بنانے کا خواب دیکھتے تھے وہ چاہتے تھے کہ وہاں شریعت کی حکومت ہو اور ان لوگوں کی باتیں سنکر ہندوؤں کے دل دہلتے تھے' سہمتے تھے اور وہ سوچتے تھے کہ اگر ایسا ہوگیا تو اسلامی حکومت میں ہمارے لئے کوئی گنجایش نہ ہوگی یہاں میں اس بحث میں نہیں پڑنا چاہتا کہ اسلامی حکومت میں اپنے لئے گنجائش نہ دیکھنے کا پاکستان کے ہندوؤں کا خیال صحیح تھا یا غلط . آج ترکی' مصر' ایران' عراق' افغانستان اور سیریا وغیرہ تمام مسلم راشٹروں میں عیسائی' پارسی' یہودی' بودھ اور ہندو سکھ تک رہتے ہیں اور انہوں نے کبھی محض مسلم سرکار ہونے کے کارن ان دیشوں کی شکایت نہیں کی . افغانستان میں بھی' جو بہت پچھڑا ہوا دیش کہا جاتا ہے' ہندوؤں کے مندر اور سکھوں کے گردوارے ہیں اور وہاں وہ لوگ آزادی کے ساتھ اپنے ڈھنگ سے پوجا پاٹھ

नजरो मे अपने लिये आदर की जगह घृना, इज्जत की जगह नफरत के भाव साफ नजर आते थे. अब वह उसे मारते हुए डरते थे और गाली देते हुए यह खयाल उन्हे डराता था कि कहीं यह भी जवाब में गाली न दे बैठे. जमींदार और साहूकार गरीब किसानो मजदूरो पर राज करना अपना पैदायशी हक समझता है और जब यह हक छिन जाय, जब उसे अपने से कम हैसियत के आदमी को भी अपने जैसा इन्सान समझना पडे तब उस के लिये जिन्दगी मौत से बदतर होजाती है. इसी लिये पूरबी बगाल के हिन्दू जमींदारो मे वहॉ के मुसलमानो के खिलाफ असतोष फैला और गॉव के जमीदार शहरो मे आने लगे और जब पाकिस्तान बन गया तब उन्हो ने हिन्दुस्तान मे ही रहना ज्यादा अच्छा समझा. जिस तरह बिहार के बहुत से ऐसे छोटे छोटे जमींदार भी दंगो के बाद पाकिस्तान भाग गये थे जिन्हे कोई नुक्सान न पहुचा था, हॉ उनको अपनी जमींदारी मे हिन्दू किसानो से पहले जैसी इज्जत न मिलती थी, उसी तरह पूरबी बगाल के बहुत से हिन्दू जमींदारों के साथ भी हुआ

पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की अलग अलग सरकारें कायम हो जाने के बाद दोनो देशो की हिन्दू मुस्लिम जनता पर भी एक खास असर पडा पाकिस्तान के हर मुसलमान के दिल मे यह बात जम गई कि पाकिस्तान हमारा मुसलमाना का—राज है और इसी तरह हिन्दुस्तान का आम हिन्दू राजा जी पडित नेहरू, सरदार पटेल को सरकारी कुरसियो पर देखकर यह विश्वास करने लगा कि अब यहॉ हिन्दू राज होगया है. जनता को ऐसा समझने मे मुस्लिम लीग के पिछले दस बरस के इस प्रोपैगन्डे से

نظروں میں اپنے لئے آدر کی جگہ گھرنا' عزت کی جگہ نفرت کے بھاو صاف نظر آتے تھے اب وہ اسے مارتے ہوئے ڈرتے تھے اور گالی دیتے ہوئے یہ خیال اُنھیں ڈراتا تھا کہ کہیں یہ بھی جواب میں گالی نہ دے بیٹھے . زمیندار اور ساھوکار غریب کسانوں مزدوروں پر راج کرنا اپنا پیدائیشی حق سمجھتا ھے اور جب یہ حق چھن جائے' جب اسے اپنے سے کم حیثیت کے آدمی کو بھی اپنے جیسا انسان سمجھنا پڑے تب اس کے لئے زندگی موت سے بدتر ھوجاتی ھے اسی لئے پوربی بنگال کے ھندو زمینداروں میں وھاں کے مسلمانوں کے خلاف اسنتوس پھیلا اور گاؤں کے زمیندار شہروں میں آنے لگے اور جب پاکستان بن گیا تب انھوں نے ھندستان میں ھی رھنا زیادہ اچھا سمجھا جس طرح بہار کے بہت سے ایسے چھوٹے چھوٹے زمیندار بھی دنگوں کے بعد پاکستان بھاگ گئے تھے جنھیں کوئی نقصان نہ پہونچا تھا' ھاں ان کو اپنی زمینداری میں ھندو کسانوں سے پہلے جیسی عزت نہ ملتی تھی' اسی طرح پوربی بنگال کے بہت سے ھندو زمینداروں کے ساتھ بھی ھوا .

پاکستان اور ھندستان کی الگ الگ سرکاریں قائم ھو جانیکے بعد دونوں دیشوں کی ھندو مسلم جنتا پر بھی ایک خاص اثر پڑا پاکستان کے ھر مسلمان کے دل میں یہ بات جم گئی کہ پاکستان ھمارا—مسلمانوں کا—راج ھے اور اسی طرح ھندستان کا عام ھندو راجا جی' پنڈت نہرو' سردار پٹیل کو سرکاری کرسیوں پر دیکھکر یہ وشواس کرنے لگا کہ اب یہاں ھندو راج ھوگیا ھے جنتا کو ایسا سمجھنے میں مسلم لیگ کے پچھلے دس برس کے اِس پروپگینڈے سے

उनको जगाना शुरू करदिया था और चूंकि मुस्लिम लोग साम्प्रदायिक संस्था थी इसलिये उसने किसानों को जमीदारों के खिलाफ संगठित करने की जगह हिन्दू मुसलमान का सवाल पैदा कर दिया जमींदारी का खत्म करने की मुस्लिम लाग मत्रीमंडल ने भी कोई कोशिश नही की क्योंकि जो मुसलमान मेम्बर असेम्बली मे पहुंचे थे वह सब खुद भी जमींदार थे. आखिर धीरे धीरे मुस्लिम लीग का असर बढ़ता गया और हिन्दुओ के खिलाफ मुसलमानो के दिलो मे नफरत बढ़ती गई. लीग के 'डायरेक्ट एक्शन' का दिन मनाने के सिलसिले मे कलकत्ते का जो भयानक दगा हुआ उसके बाद ही नोआखाली मे वह साम्प्रदायिक दंगा हुआ जिस ने दंगा करने वालो के सामने एक नइ राह खोल दी पहले शहरो मे दंगे होते थे और खतम होजाते थे. कलकत्ता, बम्बई, ढाका और अहमदाबाद वगैरा शहरो मे यह दंगे कोई खास महत्व न रखते थे पर नोआखाली का दंगा वह पहला दंगा था जिस के बाद बिहार, गढ़ मुक्तेश्वर वगैरा मे बड़े पैमाने पर देहातो मे भी दगे हुए मै पिछले दंगो की तारीख नही दोहराना चाहता, लेकिन बात से बात निकलती है और पूरबी बंगाल की आज की हालत समझने के लिये उस समय की हालत पर भी एक नजर डाल लेना जरूरी था. हॉं, तो नोआखाली के पिछले दंगे के बाद पहली बार वहॉं के हिन्दुओ के मन में अपने कम गिनत होने का भाव पैदा हुआ. उन्हो ने देखा कि गिनती मे कम होने के कारन उनकी इज्जत आबरू, उनकी जान माल और जमीन जायदाद सब को खतरा है. दंगे के बाद उन्हे अपना मामूली मुसलमान काश्तकार भी अपना दुश्मन दिखाई पड़ता था, उन्हे उसकी

اُن کو جگانا شروع کردیا تھا اور چونکہ مسلم لیگ سامپردایک سنستھا تھی اس لئے اس نے کسانوں کو زمینداروں کے خلاف سنگٹھت کرنے کی جگہ ھندو مسلمان کا سوال پیدا کردیا. زمینداری کو ختم کرنے کی مسلم لیگ منتری منڈل نے بھی کوئی کوشش نہیں کی کیونکہ جو مسلمان ممبر اسمبلی میں پہونچے تھے وہ سب خود بھی زمیندار تھے آخر دھیرے دھیرے مسلم لیگ کا اثر بڑھتا گیا اور ھندوؤں کے خلاف مسلمانوں کے دلوں میں نفرت بڑھتی گئی لیگ کے ڈائرکٹ ایکشن' کا دن منانے کے سلسلے میں کلکتے کا جو بھیانک دنگا ہوا اس کے بعد ہی نواکھالی میں بھی وہ سامپردایک دنگا ہوا جس نے دنگا کرنے والوں کے سامنے ایک نئی راہ کھول دی پہلے شہروں میں دنگے ہوتے تھے اور ختم ہوجاتے تھے. کلکتہ، بمبئی، ڈھاکہ، اور احمدآباد وغیرہ شہروں میں یہ دنگے کوئی خاص مہتو نہ رکھتے تھے پر نواکھالی کا دنگا وہ پہلا دنگا تھا جس کے بعد بہار، گڈھمکتیشور وغیرہ میں بڑے پیمانے پر دیہاتوں میں بھی دنگے ہوئے. میں پچھلے دنگوں کی تاریخ نہیں دوھرانا چاھتا، لیکن بات سے بات نکلتی ھے اور پوربی بنگال کی آج کی حالت سمجھنے کے لئے اُس سمے کی حالت پر بھی ایک نظر ڈال لینا ضروری تھا. ھاں، تو نواکھالی کے پچھلے دنگے کے بعد پہلی بار وھاں کے ھندوؤں کے من میں اپنے کم گنت ھونے کا بھاو پیدا ہوا. اُنھوں نے دیکھا کہ گنتی میں کم ھونے کے کارن اُن کی عزت آبرو، ان کی جان مال اور انکی زمین جائیداد سب کو خطرہ ھے. دنگے کے بعد انھیں اپنا معمولی مسلمان کاشتکار بھی اپنا دشمن دکھائی پڑتا تھا، انھیں اُس کی

राजनीति से कोई दिलचस्पी है और न सरकारी नौकरियों की परवाह है. हाँ सिन्ध में अब भी हिन्दुओं की काफी तादाद सरकारी दफ्तरों में भी है और सिन्ध असेम्बली में हिन्दू मेम्बर भी मौजूद है जाहिर है कि अगर उन्हें बहुत तकलीफ होती तो वह भी हिन्दुस्तान आ चुके होते उनका वहाँ जमे रहना इस बात का सबूत है कि सरकार की तरफ से उन्हें इस बात का भरोसा दिला दिया गया है कि उनकी हर तरह हिफाजत की जायगी. मेरे एक हिन्दू दोस्त ने ही मुझे बताया है कि वह कराची में हिन्दुओं को आजादी से घूमते फिरते और कारबार करते देख आये हैं और उनकी जरा सी शिकायत पर भी सरकारी मशीन तेजी से चलने लगती है अभी हाल में जैकबाबाद में जब हिन्दुस्तान से गये हुए मुस्लिम शरनार्थियों ने कुछ झगड़ा किया और एक हिन्दू जान से मार डाला गया तो सरकार ने बड़ी सख्ती से काम लिया ख्वाजा शहाबुद्दीन (पाकिस्तान के होम मिनिस्टर) तुरन्त उस जगह पहुंचे और उन्होंने शरनार्थियों से साफ कह दिया कि उनकी यह हरकतें बरदाश्त नहीं की जायेंगी लेकिन पूरबी पाकिस्तान का मामला दूसरा है. वहाँ डेढ़ करोड़ के लगभग हिन्दू अब भी बसते हैं. बंगाल के हिन्दू वहाँ के मुसलमानों से हमेशा से आगे रहे हैं मुसलमान आमतौर पर बहुत गरीब हैं और गरीबी के कारन उनमें शिक्षा की भी कमी है कुछ जमींदारों और व्योपारियों को छोड़कर ज्यादा तर मुसलमान किसान हैं और वह हिन्दुओं की ही जमीनें जोतते हैं पूरबी बंगाल में मुसलमानों की गिनती बहुत अधिक है इसलिये पाकिस्तान बनने से पहले ही वहाँ मुस्लिम लीग ने

راج نیتی سے کوئی دلچسپی هے اور نه سرکاری نوکریوں کی پرواہ هے هاں سندھ میں اب بھی هندوؤں کی کافی تعداد سرکاری دفتروں میں بھی هے اور سندھ اسمبلی میں هندو ممبر بھی موجود هیں ظاهر هے که اگر اُنهیں بہت تکلیف هوتی تو وہ بھی هندستان آچکے هوتے انکا وهاں جمے رهنا اس بات کا ثبوت هے که سرکار کی طرف سے اُنهیں اس بات کا بھروسہ دلا دیا گیا هے که ان کی هر طرح حفاظت کی جائیگی۔ میرے ایک هندو دوست نے هی مجھے بتایا هے که وہ کراچی میں هندوؤں کو آزادی سے گھومتے پھرتے اور کاروبار کرتے دیکھ آئے هیں اور ان کی ذرا سی شکایت پر بھی سرکاری مشین تیزی سے چلنے لگتی هے ابھی حال میں جیکب آباد میں جب هندستان سے گئے هوئے مسلم شرنارتھیوں نے کچھ جھگڑا کیا اور ایک هندو جان سے مار ڈالا گیا تو سرکار نے بڑی سختی سے کام لیا خواجہ شہاب الدین (پاکستان کے هوم منسٹر) فوراً اس جگہ پہونچے اور انہوں نے شرنارتھیوں سے صاف کہدیا که ان کی یه حرکتیں برداشت نهیں کی جائینگی لیکن پوربی پاکستان کا معامله دوسرا هے۔ وهاں ڈیڑھ کروڑ کے لگ بھگ هندو اب بھی بستے هیں بنگال کے هندو وهاں کے مسلمانوں سے همیشه سے آگے رهے هیں۔ مسلمان عام طور پر بہت غریب هیں اور غریبی کے کارن ان میں شکشا کی بھی کمی هے کچھ زمینداروں اور بیوپاریوں کو چھوڑ کر زیادہ تر مسلمان کسان هیں اور وہ هندوؤں کی هی زمینیں جوتتے هیں پوربی بنگال میں مسلمانوں کی گنتی بہت ادھک هے اسلئے پاکستان بننے سے پہلے هی وهاں مسلم لیگ نے

गरीबी, बेकारी, भूक, बीमारी और जेहालत सब दूर कर देंगे लेकिन इस बात का क्या जवाब है कि उन्होंने जो वादे किये थे वही सब कहाँ पूरे हो गये ?

कांग्रेस तो खैर हमेशा से अपने को गैर फिरकेवाराना जमाअत कहती रही है इसलिये हिन्दुस्तान के मुसलमानों के सामने तो कोई दिक्कत थी ही नहीं लेकिन पाकिस्तान बनने के बाद क़ायदे आज़म मुहम्मद अली जिनाह ने भी अपनी आदत के खिलाफ यह कहकर कि 'पाकिस्तान मे सिर्फ एक कौम होगी और वह पाकिस्तानी कौम होगी और यहाँ के सब रहने वालो को अपने अपने धर्म के मामले मे पूरी आज़ादी होगी, बहुत से उन लोगो को सन्तुष्ट कर दिया था जो पाकिस्तान को इसलामी राज समझ कर वहाँ के गैर मुस्लिमो के बारे मे चिन्तित थे. लेकिन समय ने और तजरबे ने बतला दिया कि हिन्दुस्तान के टुकड़े होने पर और पाकिस्तान बन जाने पर भी कम-गिनत जातियो की समस्या ज्यो की त्यो बनी रही और आज भी यह मसला उतना ही पेचीदा बना हुआ है जितना पहले था

अब आइये पहले यह देखे कि क्या भारत के बॅटवारे के बाद अब कम गिनत जातियाँ चैन से रह रही हैं ? क्या पाकिस्तान के हिन्दू पाकिस्तान मे और हिन्द के मुसलमान हिन्द मे खुश है ?

जहाँ तक पच्छिमी पाकिस्तान का सम्बन्ध है वहाँ तो कम गिनत जातियो का कोई झगडा ही नहीं है क्योंकि वहाँ हिन्दू और सिक्ख बहुत ही कम तादाद मे रह गये है. पच्छिमी पंजाब और सरहद या बलोचिस्तान मे तो हिन्दू सिर्फ गिने चुने ही है और जो हैं भी वह व्योपार मे लगे हैं. उन्हे न

غریبی' بیکاری' بھوک' بیماری اور جہالت سب دور کردینگے لیکن اِس بات کا کیا جواب ہے کہ اُنہوں نے جو وعدے کئے تھے وہی سب کہاں پورے ہوگئے ؟

کانگریس تو خیر ہمیشہ سے اپنے کو غیر فرقہ وارانہ جماعت کہتی رہی ہے اِس لئے ہندستان کے مسلمانوں کے سامنے تو کوئی دقت تھی ہی نہیں لیکن پاکستان بننے کے بعد قاید اعظم محمد علی جناح نے بھی اپنی عادت کے خلاف یہ کہکر کہ پاکستان میں صرف ایک قوم ہوگی اور وہ پاکستانی قوم ہوگی اور یہاں کے سب رہنے والوں کو اپنے اپنے دھرم کے معاملے میں پوری آزادی ہوگی' بہت سے اُن لوگوں کو سنتشٹ کردیا تھا جوپاکستان کو اسلامی راج سمجھ کر وہاں کے غیر مسلموں کے بارے میں چنتت تھے . لیکن سمے نے اور تجربے نے بتلا دیا کہ ہندستان کے ٹکڑے ہونے پر اور پاکستان بن جانے پر بھی کم گنت جاتیوں کی سمسیا جیوں کی تیوں بنی رہی اور آج بھی یہ مسئلہ اُتنا ہی پیچیدہ بنا ہوا ہے جتنا پہلے تھا

اب آئیے پہلے یہ دیکھیں کہ کیا بھارت کے بٹوارے کے بعد اب کم گنت جاتیاں چین سے رہ رہی ہیں ؟ کیا پاکستان کے ہندو پاکستان میں اور ہند کے مسلمان ہند میں خوش ہیں ؟

جہاں تک پچھمی پاکستان کا سمبندھ ہے وہاں تو کم گنت جاتیوں کا کوئی جھگڑا ہی نہیں ہے . کیونکہ وہاں ہندو اور سکھ بہت ہی کم تعداد میں رہ گئے ہیں . پچھمی پنجاب اور سرحد یا بلوچستان میں تو ہندو صرف گنے چنے ہیں اور جو ہیں وہ بیوپار میں لگے ہیں . اُنہیں نہ

सेवाओं का प्रचार करने लगे. अब धीरे धीरे यह ख़याल ज़ोर पकड़ने लगा कि सचमुच एक फिरक़ा दूसरे फिरक़े को पीछे ढकेल कर आगे बढ़ना चाहता है और इस लिये दूसरे के ख़िलाफ़ और भी नफरत बढ़ने लगी.

मैं बहुत पीछे चला गया था. पर आज देश की जो हालत है और देश के जो टुकडे हुए हैं उसपर ध्यान दीजिये तो आप ही आप निगाह पीछे की तरफ चली जायगी. नौकरियो का झगडा ही वह बीज था जिसके पेड़ मे आगे चलकर पाकिस्तान का फल आया क्योंकि पहले दफ्तरो की क्लर्की, असेम्बलियो की मेम्बरी और पी० सी० एस० और आइ० सी० एस० के लिये झगडा होता था फिर इस बात पर झगडा होने लगा कि सूबो और केन्द्र मे मुसलमान वज़ीर कितने होगे और हिन्दू कितने और आख़िर मे मुसलमान लीडर, जो सब के सब ऊँचे तबके से सम्बन्ध रखते थे, यह समझ गये कि गिनती मे चौथाई होते हुए भी बराबर के अधिकार मागने पर दुनिया के लोग उनका साथ न देंगे इसलिये उन्होंने अपना अलग हिस्सा मांगा और अन्त मे हमारे देश के जब दो टुकड़े हो गये तब उन्हे सतोष हुआ क्योंकि अब हिन्दुस्तान में जो कुछ भी हो, उनकी बला से, पाकिस्तान मे तो उनसे कोई कुछ नहीं माँग सकता इसलिये यह मानना ही पड़ेगा कि बंटवारे से पाकिस्तान के ग़रीब मुसलमानो को कोई फायदा नहीं हुआ. जैसे अब तक हिन्द के गरीब हिन्दुस्तानी आज़ादी का कोई लाभ न देख सके. कहा जा सकता है कि हिन्दुस्तान या पाकिस्तान के नेताओ ने यह वादा भी नहीं किया था कि वह राज संभालते ही जनता की

سیواؤں کا پرچار کرنے لگے ۔ اب دھیرے دھیرے یہ خیال زور پکڑنے لگا کہ سچ مچ ایک فرقہ دوسرے فرقے کو پیچھے ڈھکیل کر آگے بڑھنا چاہتا ہے اور اس لئے دوسرے کے خلاف اور بھی نفرت بڑھنے لگی ۔

میں بہت پیچھے چلا گیا تھا ۔ پر آج دیش کی جو حالت ہے اور دیش کے جو ٹکڑے ہوئے ہیں اُس پر دھیان دیجئے تو آپ ہی آپ نگاہ پیچھے کی طرف چلی جائیگی ۔ کیونکہ کچھ پڑھے لکھے لوگوں کے لئے نوکریوں کا جھگڑا ہی وہ بیج تھا جس کے پیڑ میں آگے چلکر پاکستان کا پھل آیا ۔ کیونکہ پہلے دفتروں کی کلرکی، اسمبلیوں کی ممبری اور پی . سی . ایس . اور آئی . سی . ایس . کے لئے جھگڑا ہوتا تھا پھر اس بات پر جھگڑا ہونے لگا کہ صوبوں اور کیندر میں مسلمان وزیر کتنے ہونگے اور ہندو کتنے اور آخر میں مسلمان لیڈر، جو سب کے سب اونچے طبقے سے سمبندھ رکھتے تھے، یہ سمجھ گئے کہ گنتی میں چوتھائی ہوتے ہوئے بھی برابر کے ادھیکار مانگنے پر دنیا کے لوگ اُن کا ساتھ نہ دینگے اس لئے اُنھوں نے الگ اپنا حصہ مانگا اور انت میں ہمارے دیش کے جب دو ٹکڑے ہو گئے تب اُنھیں سنتوش ہوا ۔ کیونکہ اب ہندستان میں جو کچھ بھی ہو، اُنکی بلا سے، پاکستان میں تو اُن سے کوئی کچھ نہیں مانگ سکتا ۔ اِس لئے یہ ماننا ہی پڑے گا کہ بٹوارے سے پاکستان کے غریب مسلمانوں کو کوئی فایدہ نہیں ہوا، جیسے اب تک ہند کے غریب ہندستانی آزادی کا کوئی لابھ نہ دیکھ سکے۔ کہا جاتا ہے کہ ہندستان یا پاکستان کے نیتاؤں نے یہ وعدہ بھی نہیں کیا تھا کہ وہ راج سمبھالتے ہی جنتا کی

लगा देते थे, राय साहब को राय बहादुर और खान बहादुर साहब को सर बनने की धुन मे उन लोगो का भूल कर भी ध्यानन आता था जिनकी मेहनतो से वह ऐश करते थे औरजो पसीना बहाकर उन के लिये शराव जुटाते थे अगरेजो को तो अपने उन चापलूसो के सहारे दुनिया को यह दिखलाने का मौका मि लता था कि हमारे ग़ुलाम हम से बहुत खुश हैं इस लिये वह इन खुशामदियो को लीडरी का सार्टीफिकट देदिया करते थे फिर भी धीरे धीरे जब अगरेजी सरकार के न चाहने पर भी हिन्दुस्तान मे शिक्षा का प्रचार बढ़ा और स्कूलो कालिजो से नौजवान डिगरियॉ लेकर निकलने लगे तब सरकारी नौकरियो के लिये हिन्दू मुसलमानो को लडाया जाने लगा. शिक्षा का तरीका ऐसा था कि कालिज से निकलने वाले हमारे नौजवान नौकरी के सिवा दूसरा कोई काम ही न कर सकते थे इस लिये इन सरकारी लीडरो को एक और अच्छा मौका

हाथ आया. उधर अंगरेजो ने हिन्दू मुसलमान दोनो कोभडो दी कि वह अपनी गिनती के हिसाब से नौकरी मॉगे हिन्दुओ से कहा कि तुम्हारी गिनती ज्यादा है इस लिये तुम ज्यादा जगह मॉगो और मुसलमानो से कहा कि तुम्हारी तादाद कम है और तुम पढ़े लिखे कम हो इस लिये तुम यह मॉग करो कि तुम्हे अपनी गिनती से ज्यादा जगह मिलनी चाहिये. लीडरो को अपना असर बढ़ाने के लिये यह तरकीब बहुत पसन्द आई और वह आपस मे बैठकर जिन दोस्तो के साथ हॅसी मजाक करते थे उन्हें अलग अलग स्टेजो से गालियॉ देने लगे. पढ़े लिखे लोग उन्हे अपना खैरख्वाह समझने लगे और अनपढ़ लोगो मे अपने इन हितचिन्तकों की

لگا دیتے تھے . رائے صاحب کو رائے بہادر اور خان بہادر صاحب کو سر بننے کی دھن میں اُن لوگوں کا بھول کر بھی دھیان نہ آتا تھا جن کی محنتوں سے وہ عیش کرتے تھے اور جو پسینہ بہا کر اُن کے لئے شراب جٹاتے تھے . انگریزوں کو تو اپنے ان چاپلوسوں کے سہارے دنیا کو یہ دکھانے کا موقع ملتا تھا کہ ہمارے غلام ہم سے بہت خوش ہیں اِس لئے وہ ان خوشامدیوں کو لیڈری کا سارٹیفکٹ دے دیا کرتے تھے پھر دھیرے دھیرے جب انگریزی سرکار کے نہ چاہنے پر بھی هندستان میں شکشا کا پرچار بڑھا اور اسکول کالجوں سے نوجوان ڈگریاں لے کر نکلنے لگے تب سرکاری نوکریوں کے لئے هندو مسلمانوں کو لڑایا جانے لگا . شکشا کا طریقہ ایسا تھا کہ کالج سے نکلنے والے ہمارے نوجوان نوکری کے سوا دوسرا کوئی کام ہی نہ کر سکتے تھے اسلئے ان سرکاری لیڈروں کو ایک اور اچھا موقع ہاتھ آیا . ادھر انگریزوں نے هندو مسلمان دونوں کو بھڑی دی کہ وہ اپنی گنتی کے حساب سے نوکری مانگیں هندوؤں سے کہا کہ تمہاری گنتی زیادہ ہے اسلئے تم زیادہ جگہیں مانگو اور مسلمانوں سے کہا کہ تمہاری تعداد کم ہے اور تم پڑھے لکھے کم ہو اسلئے تم یہ مانگ کرو کہ تمھیں اپنی گنتی سے زیادہ جگہ ملنی چاہئے . لیڈروں کو اپنا اثر بڑھانے کے لئے یہ ترکیب بہت پسند آئی اور وہ آپس میں بیٹھ کر جن دوستوں کے ساتھ ہنسی مذاق کرتے انہیں الگ الگ اسٹیجوں سے گالیاں دینے لگے. پڑھے لکھے لوگ انہیں اپنا خیرخواہ سمجھنے لگےاور اَن پڑھ لوگوں میں اپنے اِن ہت چنتکوں کی

भी बहुतेरे ऐसे हैं जिन को पेट भर रोटी और तन ढॉपने को ढंग के कपड़े मयस्सर नहीं. यह है उस बॅटवारे का नतीजा जिसके बारे मे समझा जाता था कि वह कम गिनत और बहुगिनत जातियों के सवाल को तो हल कर ही देगा जो हिन्दुस्तान के शरीर मे एक बड़े ही खतरनाक फोड़े के रूप मे बढ़ रहा था और जो आगे चल कर शायद सारे शरीर को ही नष्ट कर देता.

अब हमे यह देखना है कि बॅटवारे के बाद क्या कम गिनत जातियो का सवाल हल होगया ? क्या हिंदुस्तान के मुसलमान और पाकिस्तान के हिन्दू बॅटवारे के बाद सुख से रहने लगे ? क्या अब हिन्दू मुस्लिम सवाल रहा ही नहीं ? यह तो तय बात है कि हिन्दू मुस्लिम सवाल अगरेजो ने उठाया उन्हो ने ही दोनो के बीच ऐसा झूटा प्रचार किया कि हिन्दू के दिल मे मुसलमान के खिलाफ और मुसलमान के दिल मे हिन्दू के खिलाफ एक ऐसी सख्त नफरत भर गई कि बड़ी कोशिशों के बाद भी शायद जल्दी यह नफ़रत न खतम होसकेगी लेकिन इसमे भी शक नहीं कि हमने भी नासमझी से काम लिया उन को अपना दुश्मन मानकर भी हम उनकी बातो पर अधिक विश्वास करते रहे और जिन्हे भाई कहते रहे उन्हे हमेशा दुश्मन समझते रहे जनता नासमझ थी पर चूंकि जनता की लीडरशिप सरमायादारो और जागीरदारो के हाथ मे थी और उन्हे अपने हलुवे माडे से काम था इस लिये किसी को जनता की गरीबी उसकी भूक, उसकी बेकारी से कोई मतलब न था. जिन लोगो पर तहसीलदार खुश होते थे वह डिप्टी साहब तक और जिन की पहुंच डिप्टी साहब तक होती थी वह कलक्टर साहब तक पहुंचने मे अपनी सारी कोशिश

بھی بہتیرے ایسے ہیں جن کو پیٹ بھر روٹی اور تن ڈھانپنے کو ڈھنگ کے کپڑے میسر نہیں یہ ہے اُس بٹوارے کا نتیجہ جس کے بارے میں سمجھا جاتا تھا کہ وہ کم گنت اور بہو گنت جاتیوں کے سوال کو تو حل کر ہی دیگا جو ہندستان کے شریر میں ایک بڑے ہی خطرناک پھوڑے کے روپ میں بڑھ رہا تھا اور جو آگے چل کر شاید سارے شریر کو ہی نشٹ کر دیتا

اب ہمیں یہ دیکھنا ہے کہ بٹوارے کے بعد کیا کم گنت جاتیوں کا سوال حل ہو گیا ؟ کیا ہندستان کے مسلمان اور پاکستان کے ہندو بٹوارے کے بعد سکھ سے رہنے لگے ؟ کیا اب ہندو مسلم سوال رہا ہی نہیں ؟ یہ تو طے بات ہے کہ ہندو مسلم سوال انگریزوں نے اُٹھایا، اُنہوں نے ہی دونوں کے بیچ ایسا جھوٹا پرچار کیا کہ ہندو کے دل میں مسلمان کے خلاف اور مسلمان کے دل میں ہندو کے خلاف ایک ایسی سخت نفرت بھر گئی کہ بڑی کوششوں کے بعد بھی شاید جلدی یہ نفرت نہ ختم ہو سکیگی۔ لیکن اِس میں بھی شک نہیں کہ ہم نے بھی نا سمجھی سے کام لیا۔ اُن کو اپنا دشمن مان کر بھی ہم ان کی باتوں پر ادھک وشواس کرتے رہے اور جنھیں اپنا بھائی کہتے رہے اُنھیں ہمیشہ دشمن سمجھتے رہے جنتا نا سمجھ تھی پر چونکہ جنتا کی لیڈر شپ سرمایہ داروں اور جاگیرداروں کے ہاتھ میں تھی اور اُنھیں اپنے حلوے مانڈے سے کام تھا اس لئے کسی کو جنتا کی غریبی، اُس کی بھوک، اُسکی بیکاری سے کوئی مطلب نہ تھا۔ جن لوگوں پر تحصیلدار خوش ہوتے تھے وہ ڈپٹی صاحب تک اور جن کی پہنچ ڈپٹی صاحب تک ہوتی تھی وہ کلکٹر صاحب تک پہنچنے میں اپنی ساری کوشش

वालो में भी हर तरह के लोग थे. ऐसे भी थे जो पैदल भागते वक्त रास्ते में पैसा न होने के कारन अपने बच्चो को पानी तक न पिला सके थे और ऐसे भी थे जो हवाई जहाज़ पर चढ़कर इन काफले वालो का तमाशा देखते हुए एक देश से दूसरे देश गये थे. ऐसे भी थे जो रूखी सूख रोटियो के भी मोहताज थे और ऐसे भी थे जो अपने साथ " सिर्फ पच्चीस लाख या पचास लाख " रूपये ला सके थे इन लोगो का नाम हिन्द मे शरनार्थी पडा और पाकिस्तान मे महाजिर शरनार्थी और महाजिरो मे ऐसे लोगो को भी कमी नहीं थी जो अपने दिमाग़ का समतोल खो बैठे थे और जो उस फिरक़े के बेगुनाह लोगो पर अपना गुस्सा उतारना जायज़ समझते थे जिस फिरक़े के लोगो के हाथों उन्हे नुकसान पहुच चुका था. उन के गुस्से और नफरत ने बहुत सी उन जगहों की हवा भी खराब करदी जहॉ पंजाब या सरहद के दंगो का असर नही पडा था लेकिन धीरे धीरे यह हवा बदली. सब से पहले तो महत्मा गांधी ने अपने बलिदान से फिरकावाराना दंगो की आग को ठंडा किया फिर दोनो देशोकी सरकारो ने भी हवा की इस तबदीली पर असर डाला. बेघरबार लोगो के लिये घर बनने लगे और सरकार उन्हे जहॉ तक हो सकता था सहूलियते देने लगी. बहुत से लोग अपना छोटा मोटा धंदा करने लगे पढे लिखो को नौकरियॉ मिल गईं और पैसे वालो ने बड़े बड़े कारबार शुरू कर दिये और जब बेकारी कम हुई तो उन का गुस्सा भी कम हुआ और नफरत भी. फिर भी यह नहीं कहा जासकता कि शरनार्थीयों को हिन्दुस्तान या पाकिस्तान कहीं भी, उन्हे जैसा चाहिये था वैसा सुख मिल गया. अब भी हजारो ऐसे है जिन के पास घर नही, अब

والوں میں بھی ہر طرح کے لوگ تھے ایسے بھی تھے جو پیدل بھاگتے وقت راستہ میں پیسہ نہ ہونے کے کارن اپنے بچوں کو پانی تک نہ پلا سکے تھے اور ایسے بھی تھے جو ہوائی جہاز پر چڑھ کر اِن قافلے والوں کا تماشا دیکھتے ہوئے ایک دیش سے دوسرے دیش گئے تھے ایسے بھی تھے جو روکھی سوکھی روٹیوں کے بھی محتاج تھے اور ایسے بھی تھے جو اپنے ساتھ صرف "پچیس لاکھ یا پچاس لاکھ" روپئے لاسکتے تھے ان لوگوں کا نام ہند میں شرنارتھی پڑا اور پاکستان میں مہاجر. شرنارتھی اور مہاجروں میں ایسے لوگوں کی بھی کمی نہیں تھی جو اپنے دماغ کا سمتول کھو بیٹھے تھے اور جو اُس فرقے کے بے گناہ لوگوں پر اپنا غصہ اُتارنا جائز سمجھتے تھے جس فرقے کے لوگوں کے ہاتھوں اُنھیں نقصان پہونچ چکا تھا ان کے غصے اور نفرت نے بہت سی ان جگہوں کی ہوا بھی خراب کردی جہاں پنجاب یا سرحد کے دنگوں کا اثر نہیں پڑا تھا. لیکن دھیرے دھیرے یہ ہوا بدلی. سب سے پہلے مہاتما گاندھی نے اپنے بلیدان سے فرقہ وارانہ دنگوں کی آگ کو ٹھنڈا کیا پھر دونوں دیشوں کی سرکاروں نے بھی ہوا کی اس تبدیلی پر اثر ڈالا بے گھر بار لوگوں کے لئے گھر بننے لگے اور سرکار انھیں جہاں تک ہوسکتا تھا سہولیتیں دینے لگی بہت سے لوگ اپنا چھوٹا موٹا دھندا کرنے لگے پڑھے لکھوں کو نوکریاں مل گئیں اور پیسے والوں نے بڑے بڑے کاربار شروع کردیئے اور جب بیکاری کم ہوئی تو اُن کا غصہ بھی کم ہوا اور نفرت بھی. پھر بھی یہ نہیں کہا جاسکتا کہ شرنارتھیوں کو ہندستان یا پاکستان کہیں بھی، جیسا چاہئے تھا ویسا سکھ مل گیا. اب بھی ہزاروں ایسے ہیں جن کے پاس گھر نہیں، اب

कम गिनत जातियों का सवाल

(भाई ओंकार नाथ शास्त्री)

जब कांग्रेस ने देश का बँटवारा मंजूर किया था तब यह बात किसी के ख़याल मे भी न आई थी कि मुल्क के टुकड़े होने के बाद कोई और भी मुसीबत आयेगी समझा यह गया था कि हिन्दुस्तान के दो सूबे पूरे और तीन सूबों के कुछ हिस्से अलग करके देश को रोज रोज के फिरकावाराना झगडो और बड़े पैमाने पर घरेलू लडाई से बचाया जासकता है जिस की मुस्लिम लीग के लीडर अक्सर धमकियाँ दिया करते थे यही सोच कर गांधी जी ने भी, जो बँटवारे के कट्टर विरोधी थे, मुल्क की तकसीम पर अपनी मंजूरी देदी थी. पर मुल्क बँटने और पाकिस्तान कायम होने के बाद जो जो मुसीबतें देश पर और देशवासियो पर आई वह हम आप देख चुके हैं

पच्छिमी पंजाब और पूरबी पंजाब हिन्दुओ सिक्खो, और मुसलमानों से ख़ाली होगये सदियो से जिन जगहो पर लोग रहते बसते चले आये थे उन जगहो को इस तरह छोड़ना पडा जैसे उनसे कभी का सम्बंध ही नही था बहुत से लोग अपना माल असबाब तक न लासके और बहुतो को अपने बाल बच्चो, माओ बहनो और भाइयो बुजुर्गों को छोड कर अपनी जान बचाने के लिये भागना पड़ा. जाहिर है कि इस तरह के भागने वाले अपने दिलो में कितना गुस्सा, कितनी नफरत और कितनी आग लेकर भागे होगे. इन भागने

کم گنت جاتیوں کا سوال

(بھائی اونکار ناتھ شاستری)

جب کانگریس نے دیش کا بٹوارہ منظور کیا تھا تب یہ بات کسی کے خیال میں بھی نہ آئی تھی کہ ملک کے ٹکڑے ہونے کے بعد کوئی اور بھی مصیبت آئے گی . سمجھا یہ گیا تھا کہ ھندستان کے دو صوبے پورے اور تین صوبوں کے کچھ حصے الگ کرکے دیش کو روز روز کے فرقہ‌وارانہ جھگڑوں اور بڑے پیمانہ پر گھریلو لڑائی سے بچایا جاسکتا ھے جس کی مسلم لیگ کے لیڈر اکثر دھمکیاں دیا کرتے تھے . یہی سوچکر گاندھی جی نے بھی، جو بٹوارے کے کٹر ورودھی تھے، ملک کی تقسیم پر اپنی منظوری دے دی تھی. پر ملک بٹنے اور پاکستان قائم ہونے کے بعد جو جو مصیبتیں دیش پر اور دیش واسیوں پر آئیں وہ ہم آپ دیکھ چکے ھیں

پچھمی پنجاب اور پوربی پنجاب ھندوؤں، سکھوں اور مسلمانوں سے خالی ہوگئے . صدیوں سے جن جگہوں پر لوگ رھتے بستے چلے آئے تھے اُن جگہوں کو اس طرح چھوڑنا پڑا جیسے اُن سے کبھی کا سمبندھ ھی نہیں تھا . بہت سے لوگ اپنا مال اسباب تک نہ لاسکے اور بہتوں کو اپنے بال بچوں، ماؤں بہنوں اور بھائیوں بزرگوں کو چھوڑکر اپنی جان بچانے کے لئے بھاگنا پڑا ظاھر ھے کہ اس طرح کے بھاگنے والے اپنے دلوں میں کتنا غصہ، کتنی نفرت اور کتنی اگ لے کر بھاگے ہونگے . ان بھاگنے

यह पागलपन ख़ुद ही सोचो, क्या समझेगा ज़माना,
धर्म की आड़ मे इन्सानो का इन्सानो को मिटाना.
देश मे जब हर ओर है हा हा कार, तरक्की कैसे हो ?
क़ौम हो जब बीमार, तरक़्क़ी कैसे हो ?

आपस ही की फूट से तो अंगरेज़ यहाँ था आया,
डेढ़ सदी तक हमको लड़ाकर अपना रंग जमाया.
इसी तअस्सुब ने लडवाकर देश को भी बंटवाया,
अब भी सोचो ए नादानो क्या खोया क्या पाया.
तूफ़ाँ मे है नाव पडी मंजधार, तरक्की कैसे हो ?
कौम हो जब बीमार, तरक्क़ी कैसे हो ?

वह देखो फिर धनावानो ने जग का नारा मारा,
यह है व्याकुल चमकाने को अपना साहूकारा.
भर कर यह गोदाम बढ़ा कर भाव करे पौ बारा,
उनकी बलासे देश लड़ाई जीता हो या हारा.
देश है ऐसे चोरो का बाज़ार, तरक्की कैसे हो ?
कौम हो जब बीमार, तरक्की कैसे हो ?

दुश्मन जिसको समझो उसको प्रेम से अपना बनाओ,
आपस के हर भेद भाव को जल्द से जल्द मिटाओ.
अपने पड़ोसी मुल्को से भी मेल मिलाप बढ़ाओ,
मानवता के रिश्ते को अब दुनिया मे फैलाओ.
दुनिया से जब तक न बढ़े व्योहार, तरक्की कैसे हो ?
क़ौम हो जब बीमार, तरक्की कैसे हो?

یہ پاگل پن خود ہی سوچو' کیا سمجھیگا زمانا'
دھرم کی آڑ میں انسانوں کا انسانوں کو مٹانا.
دیش میں جب ہر اور ہے ہاہاکار' ترقی کیسے ہو ؟
قوم ہو جب بیمار' ترقی کیسے ہو ؟

آپس ہی کی پھوٹ سے تو انگریز یہاں تھا آیا'
ڈیڑھ صدی تک ہمکو لڑاکر اپنا رنگ جمایا .
اسی تعصب نے لڑواکر دیش کو بھی بٹوایا'
اب بھی سوچو اے نادانو کیا کھویا کیا پایا'
طوفان میں ہے ناؤ پڑی منجدھار' ترقی کیسے ہو ؟
قوم ہو جب بیمار' ترقی کیسے ہو ؟

وہ دیکھو پھر دھنوانوں نے جنگ کا نعرہ مارا '
یہ ہیں بیاکل چمکانے کو اپنا ساہو کارا
بھر کر یہ گودام بڑھاکر بھاو کریں پوبارا'
انکی بلا سے دیش لڑائی جیتا ہو یا ہارا .
دیش ہے ایسے چوروں کا بازار' ترقی کیسے ہو ؟
قوم ہو جب بیمار' ترقی کیسے ہو ؟

دشمن جسکو سمجھو اسکو پریم سے اپنا بناؤ'
آپس کے ہر بھید بھاؤ کو جلد سے جلد مٹاؤ .
اپنے پڑوسی ملکوں سے بھی میل ملاپ بڑھاؤ'
مانوتا کے رشتے کو اب دنیا میں پھیلاؤ .
دنیا سے جبتک نہ بڑھے بیوہار' ترقی کیسے ہو ؟
قوم ہو جب بیمار' ترقی کیسے ہو ؟

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ८ | जून सन् '५० | नम्बर ६

نمبر ۶ | جون سن ۵۰ | جلد ۸

जात आदमी, प्रेम धर्म है हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

क़ौम हो जब बीमार तरक्क़ी कैसे हो ?

(भाई प्रेमी प्रयाग)

पढ़े लिखे ए देस सपूतो, अन पढ और गँवारो
दफ्तर वालो, खेती वालो, देश के मेहनत कारो
दीन धरम के नाम पे लडने वाले फिरका दारो
सच्चाई के साथ जरा यह सीधी बात विचारो
हाथो मे औजार हो, या हथियार, तरक़्क़ी कैसे हो ?
कौम हो जब बीमार, तरक़्क़ी कैसे हो ?

पहले तो अगरेज थे दोषी वह तो हुए रवाना
अब आपस में लड़ने भिड़ने का है कौन बहाना,

قوم ہو جب بیکار ترقی کیسے ہو ؟

(بھائی پریمی، پریاگ)

پڑھے لکھے اے دیش سپوتو، ان پڑھ اور گنوارو،
دفتر والو، کھیتی والو دیش کے محنت کارو
دین دھرم کے نام پہ لڑنے والے فرقہ دارو،
سچائی کے ساتھ ذرا یہ سیدھی بات وچارو،
ہاتھوں میں اوزار ہوں یا ہتھیار، ترقی کیسے ہو ؟
قوم ہو جب بیمار، ترقی کیسے ہو ؟

پہلے تو انگریز تھے دوشی وہ تو ہوئے روانا ۔
اب آپس میں لڑنے بھڑنے کا ہے کون بہانا ۔

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

जून १९५०

क्या किस से — सफ़ा

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने।

मैनेजर 'नया हिन्द'

४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद।

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر—

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

جون ۱۹۵۰

کیا کس سے — صفحہ

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال- باہر دس روپیہ سال
ایک پرچہ دس آنے

منیجر 'نیا ہند'

۴۸، بائی کا باغ، الہ آباد -

نیا ہند

नया हिन्द



Registered No. A—210.

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू मे दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है

आखिर मे क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद आक़बत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिए

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान मे, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों मे अलग अलग मिल सकती है पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की कीमत सिर्फ ढाई रुपये डाक खर्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے۔ اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیس کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے۔

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے۔ اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے۔

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں اُنھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے

کتاب ہندستانی زبان میں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ۔ ڈاک خرچ الگ -

منیجر 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press South Malaka, Allahabad
Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Society, 48 Bai ka Bagh, Allahabad.

मक़सद

हिन्दुस्तानी

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वग़ैरह का छापाना

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियो और फ़िर्क़ों में आपस मे मेल बढ़ाना

—o—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; —

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, प० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवान दीन, सेठ पूनम चन्द राका, काज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिए

सुन्दर लाल
सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा अलग से मेम्बरी की फीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज्यादा दाम की किताबें लेने पर एक रुपया कम करा सकेंगे

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(۱) ایک ایسی ہندوستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی سامل ہوں -

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئیے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا -

(۳) پڑھائی گھروں، کتب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا -

———

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ— مسٹر عبد الحمید خواجہ، وائس پریسیڈنٹ— ڈاکٹر بھگوان داس - اور ڈاکٹر عبدالحق گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ - ڈاکٹر بھگوان داس، سکریٹری پنڈت سندلال،

———

گورننگ باڈی کے اور ممبر

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند - مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی - جی - کھیر مسٹر ایس- کے- رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند راکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاس پالیوال،

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے -

سندر لال
سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی،
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کر دی گئی ہے - "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا - الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ

वह खुद हमसे ज्यादा जानते हैं. इसलिये हम कहते हैं कि इस कान्फ़रेन्स में इतनी क़ायदे की कारवाई की जरूरत नहीं थी जितनी दिल की धुलाई की.

जो कुछ हुआ है वह कम नहीं हुआ. इन हालतों मे इतना बहुत हुआ है कि उस पर भी हम सब सच्चे जी से डट जायें और पूरी तरह जुट जायें तो हम इस मुल्क के दोनो हिस्सो की फिज़ा बदल सकते है और दोनो सरकारो और दोनो तरफ की जनता के दुख दूर कर सकते है. साथ ही साथ दोनो सरकारो के नेक और सही सलाहकार बन सकते हैं.

भगवान दीन

وہ خود ہم سے زیادہ جانتے ہیں . اسي لئے ہم کہتے ہیں کہ اِس کانفرنس میں اِتنی قاعدے کی کاروائی کی ضرورت نہیں تھی جتنی دل کی دھلائی کی

جو کچھ ہوا ہے وہ کم نہیں ہوا . ان حالتوں میں اتنا بہت ہوا ہے کہ اس پر بھی ہم سب سچے جي سے ڈٹ جائیں اور پوري طرح جٹ جائیں تو ہم اِس ملک کے دونوں حصوں کی فضا بدل سکتے ہیں اور دونوں سرکاروں , اور دونوں طرف کي جنتا کے دکھ دور کرسکتے ہیں ۔ ساتھ ھي ساتھ دونوں سرکاروں کے نیک اور صحیح صلاح کار بن سکتے ہیں ۔

بھگوان دین

आदर्श सामने रहने से कम से कम गलतियाँ होंगी, यह बात तो हर एक को माननी होगी.

दिल्ली मे दोनो मुल्को के खास खास एडीटर इकट्ठे हुए, उन्हो ने कुछ ठहराव पास किये. उन पर वह अमल भी जरूर करेंगे क्योंकि उन्हो ने वह ठहराव आप अपने लिये बनाये हैं, किसी दूसरे ने उन के सिर नही थोपे. पर क्या ही अच्छा होता अगर वह अपनी कान्फ़रेन्स में अपनी उन भूलो को मान लेते जो वह अब तक करते रहे हैं. इतना ही नही पाकिस्तान के प्रतिनिधि एडीटरों को अपने देश के सब एडीटरों की भूलो को अपना कर उन पर पछतावा जाहिर करना चाहिये था और ठीक इसी तरह भारत के नुमाइन्दा एडीटरो को अपने यहाँ के सब पत्रकारों की भूलो को अपने सिर ओढ़ कर और उन को अपनी हो भूलें मान कर अपना दिल साफ़ कर लेना चाहिये था. इस वक्त ठहराव उतने क़ीमती साबित नही हो सकते जितनी दिल की सफ़ाई पीर रशीदी साहब ने " बीती बातें भुलाइये " कह कर शुरूआत अच्छी की पर कनफ़रेन्स की कारवाई के नतीजे से जो बात समझ मे आती है उस मे दिल की सफाई कम और क़ायदे की कारवाई ज्यादा दिखाई देती है.

हमे यह तो मालूम होता है कि कान्फरेन्स की नीयत बहुत अच्छी है पर कान्फरेन्स खुद अपनी किसी सूझ को लेकर नहीं चलरही. वह चल रही है उस समझौते को लेकर जो भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ है और जिस को दोनो सरकारो ने मान लिया है. अगर किसी राज काजी वजह से. न हो ऐसा !, यह समझौता ढीला पड़ जाय या न हुआ जैसा होजाय या रद्द हो जाय तब इन एडिटरों की इस झमेले में वह जगह होगी जिस को

آدرش سامنے رھنے سے کم غلطیاں ھونگی' یہ بات تو ھر ایک کو ماننی ھوگی .

دلی میں دونوں ملکوں کے خاص خاص ایڈیٹر اکٹھے ھوئے' اُنھوں نے کچھ ٹھہراو پاس کئے . اُن پر عمل بھی ضرور کرینگے کیونکہ اُنھوں نے وہ ٹھہراو آپ اپنے لئے بنائے ھیں' کسی دوسرے نے اُن کے سر نہیں تھوپے . پر کیا ھی اچھا ھوتا اگر وہ اپنی کانفرنس میں اپنی اُن بھولوں کو مان لیتے جو وہ اب تک کرتے رھے ھیں اتنا ھی نہیں پاکستان کے پرتی ندھی ایڈیٹروں کو اپنے دیش کے سب ایڈیٹروں کی بھولوں کو اپناکر اُن پر پچھتاوا ظاھر کرنا چاھئے تھا اور ٹھیک اسی طرح بھارت کے نمائندہ ایڈیٹروں کو اپنے یہاں کے سب پترکاروں کی بھولوں کو اپنے سر اوڑھ کر اور اُن کو اپنی ھی بھولیں مان کر اپنا دل صاف کرلینا چاھئے تھا . اس وقت ٹھہراو اُتنے قیمتی ثابت نہیں ھوسکتے جتنی دل کی صفائی . پیر راشیدی صاحب نے " بیتی باتیں بھولائیے " کہکر شروعات اچھی کی پر کانفرس کی کاروائی کے نتیجے سے جو بات سمجھ میں آتی ھے اس میں دل کی صفائی کم اور قاعدے کی کاروائی زیادہ دکھائی دیتی ھے .

ھمیں یہ تو معلوم ھوتا ھے کہ کانفرس کی نیت بہت اچھی ھے پر کانفرنس خود اپنی کسی سوجھ کو لیکر نہیں چل رھی . وہ چل رھی ھے اُس سمجھوتے کو لیکر جو بھارت اور پاکستان کے بیچ ھوا ھے اور جس کو دونوں سرکاروں نے مان لیا ھے . اگر کسی راج کاجی وجہ سے' نہ ھو ایسا ! یہ سمجھوتہ ڈھیلا پڑجائے یا نہ ھوا جیسا ھوجائے یا رد ھوجائے تب اِن ایڈیٹروں کی اس جھمیلے میں وہ جگہ ھوگی جس کو

थोड़ी सी जोखम उठाकर उस समझौते से पहले हुई होती जो आज भारत और पाकिस्तान मे हुआ समझौते के बाद भी कान्फरेन्स का मोल इतना जरूर है कि जिस से दोनो मुल्को को बेहद फायदा पहुच सकता है

असल मे जो समझौता दो मुल्को के बड़े वजीरो ने किया वह पहले हम पत्रकारो को सूझना चहिये था. हमे न सूझना इस बात का सबूत है कि हम बेजा देश भक्ति और बेजा धर्म भक्ति मे फंसे हुए थे और इस धुन मे हम मे से बहुतो का एक दूसरे के ऐब देखने के सिवा अपने पर नजर डालने का मौका ही न मिल पाता था. और ऐसी हालत मे हम उस पाक कर्तव्य को पूरा ही न कर पाते थे जो हर एडीटर, एडीटर के आसन पर बैठकर अपने जिम्मे आप लेता है

(१०५)

एडीटरी की पाक जिम्मेदारी से एडीटर में वह ताकत पैदा हो जाती है कि वह सच्चे मानो मे बिला मेहनत किये जनता का हादी बन बैठता है और फिर अपने आसन पर बैठा हुआ ही अपने मुल्क की सरकार के दिल मे जगह बना लेता है और सच्चे मानो मे उसका वजीर बन बैठता है. अगर किसी मुल्क के पत्रकार यह कहने की हिम्मत नही रखते कि, यह हम है जो सरकार को चला रहे है, तो उनका पत्रकार होना बेकार है. पर इस तरह के पत्रकार होने का दावा तो वही एडीटर कर सकते हैं जो जी जान से अपने मुल्क पर फ़िदा रहते जी जान से सारी इन्सानी जमात का भला चाहने वाले हो. यह आदर्श है और इस तक शायद ही कोई पत्रकार पहुंचे पर यह

تھوڑی سی جوکھم اُٹھا کر اُس سمجھوتے سے پہلے ہوئی ہوتی جو آج بھارت اور پاکستان میں ہوا . سمجھوتے کے بعد بھی کانفرنس کا مول اِتنا ضرور ہے کہ جس سے دونوں ملکوں کو بیحد فایدہ پہونچ سکتا ہے .

اصل میں جو سمجھوتہ دو ملکوں کے بڑے وزیروں نے کیا وہ پہلے ہم پترکاروں کو سوجھنا چاھئے تھا . ھمیں نہ سوجھنا اس بات کا ثبوت ہے کہ ہم بیجا دیش بھکتی اور بیجا دھرم بھکتی میں پھنسے ہوئے تھے اور اِس دھن میں ہم میں سے بہتوں کو ایک دوسرے کے عیب دیکھنے کے سوا اپنے پر نظر ڈالنے کا موقعہ ہی نہ مل پاتا تھا . اور ایسی حالت میں ہم اُس پاک کرتویہ کو پورا ہی نہ کر پاتے تھے جو ہر ایڈیٹر، ایڈیٹر کے آسن پر بیٹھ کر اپنے ذمہ آپ لیتا ہے .

(۱۰۵)

ایڈیٹری کی پاک ذمہ داری سے اڈیٹر میں وہ طاقت پیدا ہو جاتی ہے کہ وہ سچے معنوں میں بلا محنت کئے جنتا کا ھادی بن بیٹھتا ہے اور پھر اپنے آسن پر بیٹھا ہوا ہی اپنے ملک کی سرکار کے دل میں جگہ بنا لیتا ہے اور سچے معنوں میں اس کا وزیر بن بیٹھتا ہے . اگر کسی ملک کے پترکار یہ کہنے کی ہمت نہیں رکھتے کہ، یہ ہم ہیں جو سرکار کو چلا رہے ہیں، تو ان کا پترکار ہونا بیکار ہے. پر اس طرح کے پترکار ہونے کادعوی تو وہی ایڈیٹر کرسکتے ہیں جو جی جان سے اپنے ملک پر فدا رہتے جی جان سے ساری انسانی جماعت کا بھلا چاھنے والے ہوں . یہ آدرش ہے اور اس تک شاید ہی کوئی پترکار پہونچے . پر یہ

सरकार को यह न भूलना चाहिये कि वह जितने विश्वास के साथ जनता तक पहुँचेगी उतना ही विश्वास पासकेगी

विश्वास से विश्वास पैदा होता है और एक रेल के हादसो के लिये ही नही सारी सरकारी मशीनरी को ठीक करने के लिये जनता का विश्वास, नौकर-जनता के विश्वास से कही ज्यादा जरूरी है.

रेल की दुर्घटनाओ में वह अंश बहुत कम है जिस को दूर करने के लिये जनता की हमदर्दी की जरूरत है, ज्यादा अश तो वह है जिस के लिये सरकार को रेल के महकमे और पुलिस के महकमे की ठीक ठीक सेवा की जरूरत है जिस महकमे की ढील जनता की जान पर आबने उस ढील को दूर करना सरकार का पहला काम होना चाहिये. पुलिस का यह काम नही है कि वह तोड फोड़ ' (Sabotage) कह कर यह समझ ले कि उस ने अपना फर्ज पूरा कर लिया, उस का काम है कि वह तोड फोड वालो को तोड फोड करते पकड़े. एक हद तक वह ' शक संदेह ' का फायदा उठा सकती है पर ऐसी हालत मे रेल दुर्घटनाये कम या बिलकुल बद होजानी चाहिये.

भगवान दीन

पत्रकारों की जिम्मेदारियां

चार मई को नई दिल्ली मे भारती और पाकिस्तानी पत्रकारो की एक कान्फ्रेन्स हुई यह कान्फ्रेन्स बड़ी अनोखी और मर्के की समझी जाती और इस कान्फरेन्स से पत्रकारो का रुतबा और भी उंचा हो जाता अगर यह कान्फरेन्स पत्रकारो की अपनी सूझ पर

سرکار کو یه نه بھولنا چاهئے که وه جتنے وشواس کے ساتھ جنتا تک پهونچیگي أتنا هی وشواس پاسکے گی

وشواس سے وشواس پیدا هوتا هے اور ایک ریل کے حادثوں کے لئے هی نهیں ساري سرکاري مشینری کو ٹھیک کرنے کے لئے جنتا کا وشواس، نوکر جنتا کے وشواس سے کهیں زیادہ ضروري هے .

ریل کی درگھٹناؤں میں وہ انش بہت کم هے جس کو دور کرنے کے لئے جنتا کی همدردي کی ضرورت هے' زیاده انش تو وه هے جس کے لئے سرکار کو ریل کے محکمے اور پولیس کے محکمے کی ٹھیک ٹھیک سیوا کی ضرورت هے . جس محکمے کی ڈھیل جنتا کی جان پر آ بنے اُس ڈھیل کو دور کرنا سرکار کا پہلا کام هونا چاهئے پولیس کا یه کام نهیں هے که وه توڑ پھوڑ (Sabotage) کہ کر یه سمجھ لے که اُس نے اپنا فرض پورا کرلیا' اُس کا کام هے که وه توڑ پھوڑ والوں کو توڑ پھوڑ کرتے پکڑے . ایک حد تک وه 'شک سندیه' کا فایده اُٹھا سکتي هے پر ایسی حالت میں ریل درگھٹنائیں کم یا بالکل بند هو جاني چاهئیں

بھگواندین

پترکاروں کی ذمهداریاں

چار مئي کو نئي دلي میں بھارتی اور پاکستاني پترکاروں کی ایک کانفرنس هوئی یه کانفرنس بڑی انوکھي اور معرکے کی سمجھي جاتی اور اِس کانفرنس سے پترکاروں کا رتبه اور بھی اونچا هو جاتا اگر یه کانفرنس پترکاروں کی اپنی سوجھ پر

सरकारी वजीरों के मुँह से एक हद तक तो पुलिस की तारीफ भली मालूम होती है और पुलिस की पीठ ठोंकना भी राजनेतापन का काम मालूम होता है. पर जा बेजा हमेशा ही पुलिस की तारीफ कर बैठना ज्यादा अच्छी चीज नहीं और अगर रेल के सब महकमों के साथ थोडी थोड़ी सख्ती करते हुए पुलिस को भी थोड़ा जिम्मेदार समझा जाय तब और तभी रेल के हादसों में कुछ कमी हो सकती है.

रेल की लाइन पर पुलिस खड़े किये जाने की तजवीज हमें कुछ भली नहीं लगी. ऐसा करके सरकार जनता की हमदर्दी हासिल नहीं कर सकती. इस वक्त जनता और पुलिस में जो रिश्ता है वह होना तो चाहिये था खुशगवार पर किसी वजह से वैसा नहीं है इस लिये इस वक़्त सरकार पुलिस पर थोड़ी सख्ती कर के ही जनता की हमदर्दी हासिल कर सकती है. हमारा एक से ज्यादा बार का तजरबा हमें ऐसा कहने के लिये मजबूर करता है. सन् '२१ में जिस वक्त आगरे के पास चम्बल के किनारे की पुलिस सरकार ने जनता से नाराज होकर हटाली थी उस वक़्त चम्बल पार के डाकुओं ने कान्फरेन्स कर के उसी दिन से डाके डालने छोड़ दिये थे और वह डाके उस वक्त तक बन्द रहे जब तक पुलिस फिर तैनात नहीं हुई. यह ठीक है कि आज की हालत उस हालत से मेल नहीं खाती पर यह बात तो हमने उदाहरन के लिये रखदी है. हम जोर के साथ कह सकते है कि आज सन् २१ वाली हालत न भी हो तब भी ऐसी हालत जरूर है कि जनता सरकार के साथ पूरी हमदर्दी दिखाये गी अगर सरकार हिम्मत करके पुलिस पर जा बेजा बेहद भरोसा करना छोड़ दे और सीधे जनता से मदद चाहे.

سرکاری وزیروں کے منہ سے ایک حد تک تو پولیس کی تعریف بھلی معلوم ہوتی ہے اور پولیس کی پیٹھ ٹھونکنا بھی راج نیتا پن کا کام معلوم ہوتا ہے پر جا بیجا ہمیشہ ہی پولیس کی تعریف کر بیٹھنا زیادہ اچھی چیز نہیں اور اگر ریل کے سب محکموں کے ساتھ تھوڑی تھوڑی سختی کرتے ہوئے پولیس کو بھی تھوڑا ذمہدار سمجھا جائے تب اور تبھی ریل کے حادثوں میں کچھ کمی ہو سکتی ہے ۔

ریل کی لائن پر پولیس کھڑے کئے جانے کی تجویز ہمیں کچھ بھلی نہیں لگی ۔ ایسا کرکے سرکار جنتا کی ہمدردی حاصل نہیں کرسکتی ۔ اس وقت جنتا اور پولیس میں جو رشتہ ہے وہ ہونا تو چاہئے تھا خوشگوار پر کسی وجہ سے ویسا نہیں ہے اس لئے اِس وقت سرکار پولیس پر تھوڑی سختی کر کے ہی جنتا کی ہمدردی حاصل کر سکتی ہے ۔ ہمارا ایک سے زیادہ بار کا تجربہ ہمیں ایسا کہنے کے لئے مجبور کرتا ہے ۔ سن ۲۱ میں جس وقت آگرے کے پاس چمبل کے کنارے کی پولیس سرکار نے جنتا سے ناراض ہوکر ہٹا لی تھی اُس وقت چمبل پار کے ڈاکوؤں نے کانفرنس کرکے اُسی دن سے ڈاکے ڈالنے چھوڑ دئیے تھے اور وہ ڈاکے اُس وقت تک بند رہے جب تک پولیس پھر تعینات نہیں ہوئی یہ ٹھیک ہے کہ آج کی حالت اُس حالت سے میل نہیں کھاتی پر یہ بات تو ہم نے اُداہرن کے لئے رکھ دی ہے ۔ ہم زور کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ آج سن ۲۱ والی حالت نہ بھی ہو تب بھی ایسی حالت ضرور ہے کہ جنتا سرکار کے ساتھ پوری ہمدردی دکھائے گی اگر سرکار ہمت کرکے پولیس پر جا بیجا بیحد بھروسہ کرنا چھوڑ دے اور سیدھے جنتا سے مدد چاہے ۔

में इंजन का महकमा (Loco) इतना ही फँस सकता है जितना लाइन का महकमा (Permanent way). उसी तरह सवारी का महकमा (Traffic) और तार का महकमा (Telegraph) भी फँस सकता है. पुलिस का महकमा भी नही बच सकता और न इंजीनियरिंग का. इसी लिये जब किसी दुर्घटना की तहकीकात होती है तब उसमे सभी महकमो के अफसर बुलाये जाते हैं. हर महकमे वाले को यह कोशिश होती है कि वह अपने महकमे को बचा ले और किसी एक को फँसा दे अगर वह फँसा न सके तो अपने को बचा जरूर लेता है. और अगर न बचा सके तो अपने अफसरो की झिडकी का शिकार होता है. बचने की इस कोशिश मे तहकीकाती कमेटी मे तरह तरह की गुटबन्दियां बन जाती हैं और बड़ीयत (Majority) से फैसले के रिवाज की वजह से खूब खींचतान बढ़ जाती है. कम्युनिस्टी सवाल ने इन सब का दिक्कत को आसानी से हल कर दिया है. कम्युनिस्टो का नाम लेकर सारी तहक़ीकाती कमेटी एक राय होजाती है और सारे महकमे उस दुर्घटना के इलजाम से बच जाते हैं. गहराई से नजर डालने पर कम्युनिस्टो पर इलजाम लगा कर पुलिस का महकमा किसी तरह नही बच सकता पर वह शायद इतना बचना भी नही चाहता क्योकि इसी बल बूते पर तो वह सरकार से अपनी तरक्की की मांग कर सकता है और अपने यहाँ के आदमियो मे बढ़वारी की मांग कर सकता है. अगरेजी राज में भी पुलिस सरकार को तरह तरह के डर दिखाकर यही करती रही है और वही पुलिस तो आज इस जनराज की पुलिस है.

میں انجن کا محکمہ (Loco) اِتنا ہی پھنس سکتا ہے جتنا لائن کا محکمہ (Permanent way). اُسی طرح سواری کا محکمہ (Traffic) اور تار کا محکمہ (Telegraph) بھی پھنس سکتا ہے. پولیس کا محکمہ بھی نہیں بچ سکتا اور نہ انجینیرنگ کا. اِس لئے جب کسی درگھٹنا کی تحقیقات ہوتی ہے تب اُس میں سبھی محکموں کے افسر بلائے جاتے ہیں. ہر محکمے والے کی یہ کوشش ہوتی ہے کہ وہ اپنے محکمے کو بچالے اور کسی ایک کو پھنسادے. اگر وہ پھنسا نہ سکے تو اپنے کو بچا ضرور لیتا ہے. اور اگر نہ بچا سکے تو اپنے افسروں کی جھڑکی کا شکار ہوتا ہے. بچنے کی اس کوشش میں تحقیقاتی کمیٹی کی طرح طرح کی گُٹ بندیاں بن جاتی ہیں اور بہومت (Majority) سے فیصلے کے رواج کی وجہ سے خوب کھینچ تان بڑھ جاتی ہے. کمیونسٹی سوال نے اِن سب کی دقت کو آسانی سے حل کر دیا ہے. کمیونسٹوں کا نام لیکر ساری تحقیقاتی کمیٹی ایک رائے ہوجاتی ہے اور سارے محکمے اُس درگھٹنا کے الزام سے بچ جاتے ہیں. گہرائی سے نظر ڈالنے پر کمیونسٹوں پر الزام لگاکر پولیس کا محکمہ کسی طرح نہیں بچ سکتا پر وہ شاید اِتنا بچنا بھی نہیں چاہتا. کیونکہ اِسی بل بوتے پر تو وہ سرکار سے اپنی ترقی کی مانگ کر سکتا ہے اور اپنے یہاں کے آدمیوں میں بڑھواری کی مانگ کر سکتا ہے. انگریزی راج میں بھی پولیس سرکار کو طرح طرح کے ڈر دکھاکر یہی کرتی رہی ہے اور وہی پولیس تو آج اِس جن راج کی پولیس ہے.

क़दम रख कर चलने वाले इस लिये हमने नवाबी ढंग मे काम लिया और रिफ्युजियों को हर तरह मेहमान समझा, इतना ही नही सताये हुए मेहमान समझा. सरकार को. कदम कदम पर उन को दिल शिकनी का खयाल था और इस तरह उनको एक दो नही सैकडो गलतियाँ माफ थीं. सरकार ने जो कुछ किया वह बिलकुल ठीक किया. जो कोई भी सरकार की जगह होता. वह यही करता पर इस खातिरदारी का, अब चाहे आप इसे जा समझे या बेजा नतीजा यह हुआ कि कुछ दिनो तक तो उनके भारती सहकारी साथी उनपर तरस खाते रहे उनकी ढील देखते और अपने काम मे कोई ढील न आने देते. पर जब यह मामला महीनो लम्बा हो गया तो उन के सहकारी साथी उसी पोल मे दाख़िल हो गये और उस पोल मे दबे पिचे बगैर सुख चैन से रहने लगे, क्योंकि उनके ढीले पन को रोकने वाले अफसर कभी कभी ख़ुद रिफ्युजी भाई होते थे और उन्हो ने मेहमानी मे ढील पाई थी इस लिये बदले मे ढील ही दी इस तरह सिर्फ रेलवे का ही नही. सब महकमो का इन्तजाम ढीला पड गया. किसी और महकमे मे ढील थोडी बहुत खप सकती है पर रेल के महकमे मे राई भर ढील परबत भर भूल पैदा कर देती है और सैकडो हजारो को मौत के बिस्तर पर सुला देती है

रेल का महकमा पहले से बहुत ढीला पड गया है, इसे मानने से सरकार का इन्कार करना बहुत खतरनाक साबित होगा.

<u>दुर्घटनाओ के कारन</u>

रेल जब पटरी से गिरती है या जब उसकी दूसरी रेल से टककर होती है तब उसमे रेल के कई महकमे आ फँसते है हर दुर्घटना

قدم رکھکر چلنے والی' اس لئے اس نے نوابی ڈھنگ سے کام لیا اور رفیوجیوں کو ہر طرح مہمان سمجھا' اتنا ہی نہیں ستائے ہوئے مہمان سمجھا سرکار کو' قدم قدم پر ان کی دل شکنی کا خیال تھا اور اس طرح ان کی ایک دو نہیں سیکڑوں غلطیاں معاف تھیں سرکار نے جو کچھ کیا وہ بالکل ٹھیک کیا جو کوئی بھی سرکار کی جگہ ہوتا' وہ یہی کرتا پر اس خاطر داری کا' اب چاہے آپ اسے جا سمجھیں یا بیجا' نتیجہ یہ ہوا کہ کچھ دنوں تک تو ان کے بھارتی سہکاری ساتھی ان پر ترس کھاتے رہے' ان کی ڈھیل دیکھتے اور اپنے کام میں کوئی ڈھیل نہ آنے دیتے پر جب یہ معاملہ مہینوں لمبا ہوگیا تو ان کے سہکاری ساتھی اسی پول میں داخل ہوگئے اور اُس پول میں دبے پچے بغیر سکھ چین سے رہنے لگے' کیونکہ اُن کے ڈھیلے پن کو روکنے والے افسر کبھی کبھی خود رفیوجی بھائی ہوتے تھے اور اُنھوں نے مہمانی میں ڈھیل پائی تھی اسلئے بدلے میں ڈھیل ہی دی اِسطرح صرف ریلوے کا ہی نہیں' سب محکموں کا انتظام ڈھیلا پڑگیا کسی اور محکمے میں ڈھیل تھوڑی بہت کھپ سکتی ہے پر ریل کے محکمے میں رائی بھر ڈھیل پربت بھر بھول پیدا کردیتی ہے اور سیکڑوں ہزاروں کو موت کے بستر پر سلا دیتی ہے

ریل کا محکمہ پہلے سے بہت ڈھیلا پڑگیا ہے' اِسے ماننے سے سرکار کا انکار کرنا بہت خطرناک ثابت ہوگا.

<u>درگھٹناؤں کے کارن</u>

ریل جب پٹری سے گرتی ہے یا جب اُسکی دوسری ریل سے ٹکر ہوتی ہے تب اُس میں ریل کے کئی محکمے آ پھنستے ہیں.. ہر درگھٹنا

जगह एक — या एक की जगह बारह बज जाते हैं ठीक यही हाल सरकारी मशीनरी का हो रहा है, और खासकर रेलो मशीनरी का हो रहा है. वह चौबीस घंटे चलती तो है पर कहीं गिर पड़ता है, कहीं मुसाफ़िर छोड़ जाती है कहीं माल छोड़ जाती है और कहीं कुछ और कहीं कुछ

अंगरेज़ो के जाते ही यह इतनी ढीली क्यो पड़ गई? क्या अंगरेज इसके ऐसे सही पुरज़े थे जो ठीक सटकर बैठते थे? या यह कि वह खुद इस मशीन के कुछ पुरजे ढीले कर गये, तोड़ फोड़ गये या उड़ा ले गये? हो सकता है, इस बात मे एक फीसदी या उससे भी कम सचाई हो पर वह सचाई इतनी नहीं है कि जिस की वजह से आज के नतीजे निकल सकें नतीजे के रूप मे आज जो हमारे सामने है उसमे अंगरेज कारन नहीं उसमे कारन हैं अंगरेजो की चाल बाज़ी और हमारे सिर थोपे जाने वाले उन के वह मेहमान जो रिफ्युजी नाम से पुकारे जाते हैं

रिफ्युजी भाई हमारे भाई तो है पर हमने इन रिफ्युजी भाइयो को अगर ऐसे ही अपनाया होता जैसे मदीने के अन्सारो ने हजरत मुहम्मद के साथियों को अपनाया था यानी मदीने वालो ने मक्का से भागकर आये हुए मुसलमानो मे से एक-एक दो-दो को अपने घर मे जगह दी थी, जगह ही नहीं उन को आधे घर का मालिक बना दिया था यह नहीं किया था कि उनकी अलग बस्तियां बसाई हो, तो हम को आज यह दिन न देखने पडते असल मे हमने रिफ्युजियो को अपनाया ही नहीं. अपनाया हमारी सरकार ने और सरकार थी हमारी नई नई और 'माल-मुफ्त-दिल-बेरहम' वाली अंगरेजी सरकार के कदम पर

جگہ ایک — یا ایک کی جگہ بارہ بج جاتے ہیں. ٹھیک یہی حال سرکاری مشینری کا ہو رہا ہے اور خاص کر ریلی مشینری کا ہو رہا ہے. وہ چوبیس گھنٹے چلتی تو ہے پر کہیں گر پڑتی ہے، کہیں مسافر چھوڑ جاتی ہے، کہیں مال چھوڑ جاتی ہے اور کہیں کچھ اور کہیں کچھ.

انگریزوں کے جاتے ہی یہ اتنی ڈھیلی کیوں پڑگئی؟ کیا انگریز اس کے ایسے سہی پرزے تھے جو ٹھیک سٹ کر بیٹھتے تھے؟ یا یہ کہ وہ خود اس مشین کے کچھ پرزے ڈھیلے کر گئے، توڑ پھوڑ گئے یا اڑا لے گئے؟ ہوسکتا ہے، اس بات میں ایک فیصدی یا اس سے بھی کم سچائی ہو پر وہ سچائی اتنی نہیں ہے کہ جس کی وجہ سے آج کے نتیجے نکل سکیں نتیجے کے روپ میں آج جو ہمارے سامنے ہے اس میں انگریز کارن نہیں. اس میں کارن ہیں انگریزوں کی چالبازی اور ہمارے سر تھوپے جانے والے ان کے وہ مہمان جو ریفیوجی نام سے پکارے جاتے ہیں.

ریفیوجی بھائی ہمارے بھائی تو ہیں پر ہم نے ان ریفیوجی بھائیوں کو اگر ایسے ہی اپنایا ہوتا جیسے مدینہ کے انصاروں نے حضرت محمد کے ساتھیوں کو اپنایا تھا یعنی مدینہ والوں نے مکہ سے بھاگ کر آئے ہوئے مسلمانوں میں سے ایک ایک دو دو کو اپنے گھر میں جگہ دی تھی، جگہ ہی نہیں ان کو آدھے گھر کا مالک بنا دیا تھا، یہ نہیں کیا تھا کہ ان کی الگ بستیاں بسائی ہوں، تو ہم کو آج یہ دن نہ دیکھنے پڑتے. اصل میں ہم نے ریفیوجیوں کو اپنایا ہی نہیں. اپنایا ہماری سرکار نے اور سرکار تھی ہماری نئی نئی. اور 'مال مفت دل بیرحم' والی انگریزی سرکار کے قدم پر

नुक़सान हुआ और ऐसी दुर्घटना हुई किसके हाथों ? जनता में से, उसी दुर्घटना मे, अगर किसी का भाई मर गया होता है तो वह सीधे सरकार को कोसता है, उन कम्युनिस्टों को नही, जिनके बारे में अख़बार यह बताते है कि उस दुघटना मे उन्ही का हाथ था यह जनता-चर्चा की नाड़ी. जो सरकार की हथेली के नीचे धुक धुक बोल रही है, कुछ ज्यादा अच्छी चीज नही

नाड़ी की जड़

हो सकता है रेल दुघटनाओ मे कम्युनिस्टो का हाथ हो, पर यह हमारे गले नही उतरता कि वह हाथ इतना ज्यादा है जितना सरकार या सरकारी अफ़सर बता रहे है. हम ने खुद एक मरतबा जबलपुर जेल में सन १९२१ मे एक हत्यारे को 'महात्मा गाधी की जय' बोलकर फासी के तख़्ते पर चढ़ते देखा था. उन दिनो असहयोग की गगा बह रही थी. उसने भी लगे हाथो डुबकी लगाली. हो सकता है ठीक इसी तरह आज भी नाम के कम्युनिस्ट किसी ऐसे ही इलजाम मे पकड़े जाने पर अपने को कम्युनिस्ट कह कर सस्ती वाह वाही ख़रीदना चाहते हो. दुखी जनता समझे नासमझे सरकार के ख़िलाफ बातो मे रस लिया ही करती है.

रेल की दुर्घटनाओ मे, हम जहां तक सोचते है, बैठी हुई है यह बात कि रेल का इन्तज़ाम कुछ ढीला पड़ गया है. एक रेल का ही क्या ? सरकार की सारी मशीनरी उस बधी हुई चाल से नहीं चल रही जिस बंधी हुई चाल से उसे चलना चाहिये. जिस तरह घड़ी के ढीले पुरज़े घड़ी को चलाते तो रहते हैं पर घड़ी की चाल का जो नतीजा होना चाहिये था वह नही हो पाता, यानी बारह की

نقصان ہوا اور ایسی درگھٹنا ہوئی کس کے ہاتھوں ؟ جنتا میں سے، اُسی درگھٹنا میں، اگر کسی کا بھائی مرگیا ہوتا ہے تو وہ سیدھے سرکار کو کوستا ہے، اُن کمیونسٹوں کو نہیں، جن کے بارے میں اخبار یہ بتاتے ہیں کہ اُس درگھٹنا میں اُنہیں کا ہاتھ تھا. یہ جنتا چرچا کی ناڑی، جو سرکار کی ہتھیلی کے نیچے دھک دھک بول رہی ہے، کچھ زیادہ اچھی چیز نہیں .

ناڑی کی جڑ

ہوسکتا ہے ریل درگھٹناؤں میں کمیونسٹوں کا ہاتھ ہو، پر یہ ہمارے گلے نہیں اُترتا کہ وہ ہاتھ اتنا زیادہ ہے جتنا سرکار یا سرکاری افسر بتا رہے ہیں. ہم نے خود ایک مرتبہ جبلپور جیل میں سن ۱۹۲۱ء میں ایک ہتیارے کو 'مہاتما گاندھی کی جے' بول کر پھانسی کے تختے پر چڑھتے دیکھا تھا. اُن دنوں 'سہیوگ کی گنگا بہہ رہی تھی. اُس نے بھی لگے ہاتھوں ڈبکی لگا لی. ہوسکتا ہے ٹھیک اسی طرح آج بھی نام کے کمیونسٹ کسی ایسے ہی الزام میں پکڑے جانے پر اپنے کو کمیونسٹ کہکر سستی واہ واہی خریدنا چاہتے ہوں. دکھی جنتا سمجھے نا سمجھے سرکار کے خلاف باتوں میں رس لیا ہی کرتی ہے .

ریل کی درگھٹناؤں میں، ہم جہاں تک سوچتے ہیں، بیٹھی ہوئی ہے یہ بات کہ ریل کا انتظام کچھ ڈھیلا پڑگیا ہے . ایک ریل کا ہی کیا ؟ سرکار کی ساری مشینری اُس بندھی ہوئی چال سے نہیں چل رہی جس بندھی ہوئی چال سے اُسے چلنا چاہئے. جس طرح گھڑی کے ڈھیلے پرزے گھڑی کو چلاتے تو رہتے ہیں پر گھڑی کی چال کا جو نتیجہ ہونا چاہئے تھا وہ نہیں ہو پاتا، یعنی بارہ کی

हाद से नहीं—सरकार की नाड़ी

रेल दुर्घटनाएं अंगरेज़ी राज में भी होती थी. और वह सब रेली घटनाएँ ही नही होती थी उनमे से कुछ फीसदी राज काजी भी होती थी. फिर भी उन सब को मिल कर कभी इतनी गिनती नहीं हुई जितनी वह आज है तिस पर उन दिनो की अगरेज़ी सरकार हर रेल हादसे की राज काजो कह बैठना न पसन्द करती था, और न मुनासिब समझती था पर आज तो, जहाँ तक हम समझते हैं सरकार ही नहो, पुलिस के ज़िम्मेदार अफसर भी जहाँ तक बन पड़ता है बहुत सी रेल दुघटनाओ को राजकाजो कह कर कम्युनिस्टो के सिर मढ़ने की कोशिश करते हैं. हो सकता है सरकार और सरकारी अफसर यह सोचते हो कि इस तरह वह कम्युनिस्टो की तरफ से जनता के दिल में नफरत पैदा कर सकेंगे पर जनता का भीड में घुस कर उनकी आपसी बाते सुनने वाले हम कुछ दूसरा ही तजरबा रखते हैं. जिस तरह बड़ी लड़ाई मे मित्र-मुल्को ने हिटलर के खिलाफ हद से ज्यादा प्रचार करके लोगो के दिल मे हिटलर के लिये हमदर्दी का बीज बोदिया था ठीक इसी तरह आज को सरकार भी जा बेजा कम्युनिस्टो के खिलाफ प्रचार करके लोगो के दिल मे कम्युनिस्ट हमदर्दी का और कम्युनिज्म भक्ति का बीज बो रही है जनता किसी वजह से आज कल इतनी दुखी है कि सरकार का काम करते हुए वही जनता सरकार के नौकर के रूप मे अगर किसी से पिटने लगे तो वह यह समझ कर अपनी कुछ तसल्ली ही कर लेगी कि वह नहीं पिटी, पिटा है तो सरकारी नौकर पिटा है. रेल की दुर्घटना की खबर पर जनता में इस पर बहुत कम बहस होती है कि उस दुर्घटना में कितने आदमी मरे, ज्यादा बहस होती है इस बात पर, कि रेल का कितना

حادثے نہیں – سرکار کی ناڑی

ریل درگھٹنائیں انگریزی راج میں بھی ہوتی تھیں ۔ اور وہ سب ریلی گھٹنائیں ہی نہیں ہوتی تھیں ۔ اُن میں سے کچھ فیصدی راج کاجی بھی ہوتی تھیں ۔ پھر بھی اُن سب کو مل کر کبھی اتنی گنتی نہیں ہوئی جتنی وہ آج ہے ۔ تس پر اُن دنوں کی انگریزی سرکار ہر ریل حادثے کو راج کاجی کہہ بیٹھنا نہ پسند کرتی تھی' اور نہ مناسب سمجھتی تھی ۔ پر آج تو' جہاں تک ہم سمجھتے ہیں' سرکار ہی نہیں' پولیس کے ذمہ دار افسر بھی جہاں تک بن پڑتا ہے بہت سی ریل درگھٹناؤں کو راج کاجی کہکر کمیونسٹوں کے سر منڈھنے کی کوشش کرتے ہیں ۔ ہوسکتا ہے سرکار اور سرکاری افسر یہ سوچتے ہوں کہ اس طرح وہ کمیونسٹوں کی طرف سے جنتا کے دل میں نفرت پیدا کرسکیں گے پر جنتا کی بھیڑ میں گھس کر اُن کی آپسی باتیں سننے والے ہم کچھ دوسرا ہی تجربہ رکھتے ہیں جس طرح بڑی لڑائی میں متر ملکوں نے ہٹلر کے خلاف حد سے زیادہ پرچار کرکے لوگوں کے دل میں ہٹلر کے لئے ہمدردی کا بیج بودیا تھا ٹھیک اسی طرح آج کی سرکار بھی جابیجا کمیونسٹوں کے خلاف پرچار کرکے لوگوں کے دل میں کمیونسٹ ہمدردی کا اور کمیونزم بھگتی کا بیج بو رہی ہے جنتا کسی وجہ سے آج کل اتنی دکھی ہے کہ سرکار کا کام کرتے ہوئے وہی جنتا سرکار کے نوکر کے روپ میں اگر کسی سے پٹنے لگے تو وہ یہ سمجھکر اپنی کچھ تسلی ہی کرلے گی کہ وہ نہیں پٹی' پٹا ہے تو سرکاری نوکر پٹا ہے ۔ ریل کی درگھٹنا کی خبر پر جنتا میں اس پر بہت کم بحث ہوتی ہے کہ اس درگھٹنا میں کتنے آدمی مرے' زیادہ بحث ہوتی ہے اس بات پر' کہ ریل کا کتنا

हमारी राय

रेल के हादसे

कुछ दिनो से यह हाल है कि हफ्ते मे एकाध बार कहीं न कहीं से यह खबर आ जाती है कि रेलगाडी पटरी से गिर गई, इतने आदमी जख्मी हुए और इतने मर गये, या यह सुनने को मिलता है कि यह यह गाड़ियां लड़ गईं, इतने डिब्बे चूर चूर हो गये और इतने मुसाफिर जान खो बैठे. इन खबरो का यह असर हुआ है कि लोग कोशिश करते है कि, जहां तक हो सके, रेल से सफर हो न किया जाय. यह हम इस लिये लिख रहे है कि आये दिन रेल गिरने की बुराई जनता के दिल मे कितनी गहरी जगह बनाती जा रही है. यह बुराई इसी तरह बढ़ती रही तो एक दिन वह नौबत आ जायगी कि दिन में दस बार रेल की टक्करों की खबर सुनकर भी जनता कुछ भी न कहा करेगी और अखबार वाले भी उन खबरो को जगह देना छोड़ बैठेंगे. और ऐसे ही मौके के लिये तो कोई कवि लिख गया है:

मुसीबत हद मे जब गुजारी. तो जाहिर हो नहीं सकती
बहुत ग़म में बहुत कम आँख से आँसू निकलते हैं.

ہماری رائے

ریل کے حادثے

کچھ دنوں سے یہ حال ہے کہ ہفتے میں ایک آدھ بار کہیں نہ کہیں سے یہ خبر آجاتی ہے کہ ریل گاڑی پٹری سے گر گئی' اتنے آدمی زخمی ہوئے اور اتنے مرگئے' یا یہ سننے کو ملتا ہے کہ یہ یہ گاڑیاں لڑگئیں' اتنے ڈبے چور چور ہوگئے اور اتنے مسافر جان کھو بیٹھے ۔ ان خبروں کا یہ اثر ہوا ہے کہ لوگ کوشش کرتے ہیں کہ' جہاں تک ہوسکے' ریل سے سفر ہی نہ کیا جائے یہ ہم اس لئے لکھ رہے ہیں کہ آئے دن ریل گرنے کی برائی جنتا کے دل میں کتنی گہری جگہ بناتی جارہی ہے ۔ یہ برائی اسی طرح بڑھتی رہی تو ایک دن وہ نوبت آجائیگی کہ دن میں دس بار ریل کی ٹکروں کی خبر سن کر بھی جنتا کچھ بھی نہ کہا کریگی اور اخبار والے بھی اُن خبروں کو جگہ دینا چھوڑ بیٹھیں گے ۔ اور ایسے ہی موقعے کے لئے تو کوئی کوئی لکھ گیا ہے :

مصیبت حد سے جب گذری' تو ظاہر ہو نہیں سکتی
بہت غم میں بہت کم آنکھ سے آنسو نکلتے ہیں

मिलाप का फल

(प्रेम भाई)

रमेश और अख़तर दो दोस्त थे, दोनों में एक दिन झगड़ा होगया. रमेश के बड़े भाई को जब इस झगड़े का पता चला तो उन्हों ने रमेश को कोई उपदेश नही दिया बल्कि एक कहानी सुनादी जिसे सुनकर दोनो दोस्तो मे मेल होगया. वह कहानी नीचे दी जाती है.

एक नदी के किनारे एक मछली, एक कौवा और बन्दर तीनो मिल जुल कर रहते थे और हर काम तीनो मिल कर करते थे अगर कौवा कहीं से ढूंड ढॉंड कर रोटी का टुकड़ा ले आता तो वह पहले, अपने साथियों के सामने रख देता. फिर तीनो मिल कर खाते इसकी परवाह न करते कि बटने से सबको कम कम हिस्सा मिलेगा. इसी तरह अगर कभी कोई चीज़ बंदर को हाथ आती तो वह अपने दोस्त कौवे और मछली के पास ले आता. फिर तीनो मिल कर खाते.

एक दिन ऐसा हुआ कि एक शिकारी नदी किनारे मछली के शिकार को आया वह बंदूक का निशाना साध रहा था कि तैसे में कौवे ने उसके सर पर ज़ोर से चोंच मारदी और शिकारी का निशाना चूक गया. इस तरह कौवे ने अपने साथी की जान बचाली.

बच्चे इस पते पर अपनी चीज़ें भेजें :—

प्रेम भाई, एडीटर—'बच्चों की दुनिया' (नया हिन्द)

४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद.

ملاپ کا پھل

(پریم بھائی)

رمیش اور اختر دو دوست تھے۔ دونوں میں ایک دن جھگڑا ہوگیا۔ رمیش کے بڑے بھائی کو جب اس جھگڑے کا پتہ چلا تو انہوں نے رمیش کو کوئی اپدیش نہیں دیا بلکہ ایک کہانی سنا دی جسے سن کر دونوں دوستوں میں میل ہوگیا۔ وہ کہانی نیچے دی جاتی ہے۔

ایک ندی کے کنارے ایک مچھلی، ایک کوا اور ایک بندر تینوں مل جل کر رہتے تھے اور ہر کام یہ تینوں ملکر کرتے تھے۔ اگر کوا کہیں سے ڈھونڈ ڈھانڈ کر روٹی کا ٹکڑا لے آتا تو وہ پہلے اپنے ساتھیوں کے سامنے رکھ دیتا پھر تینوں مل کر کھاتے۔ اسکی پرواہ نہ کرتے کہ بٹنے سے سب کو کم کم حصہ ملے گا۔ اسی طرح اگر کبھی کوئی چیز بندر کو ہاتھ آتی تو وہ اپنے دوست کوے اور مچھلی کے پاس لے آتا۔ پھر تینوں مل کر کھاتے۔

ایک دن ایسا ہوا کہ ایک شکاری ندی کے کنارے مچھلی کے شکار کو آیا۔ وہ بندوق کا نشانہ سادھ رہا تھا کہ ایسے میں کوے نے اس کے سر پر زور سے چونچ مار دی اور شکاری کا نشانہ چوک گیا۔ اس طرح کوے نے اپنے ساتھی کی جان بچالی

بچے اس پتے پر اپنی چیزیں بھیجیں :—

پریم بھائی، اڈیٹر— 'بچوں کی دنیا' (نیا ہند)

۴۸، بائی کا باغ، الہ آباد۔



एडीटर—प्रेम भाई

प्यारे भाइयो !

इस महीने हम तुम्हारे लिये ज्यादा सफे नहीं निकाल सके. अगले महीने से हर महीने हम कम मे कम आठ सफे जरूर तुम्हारे लिये रक्खेंगे. हाँ, पिछले महीने तुम से कहा गया था कि 'बच्चो की दुनिया' के लिये तुम भी अपने लेख, कहानियाँ, कविताये भेजो. तुम्हारी चीजे छापने से हमे बहुत खुशी होगी.

तुम्हारा—
प्रेम भाई

बापू

(भाई शंकर सिह हैदराबाद दकन)

दुखियो का गम खाने वाला हिन्दू और मुस्लिम का दुलारा
देश का तारा जी का उजाला दुखियो को था उससे सहारा
भारत को आजाद कराया तन को सेवा मे कटवाया
प्रेम का चरचा गूंजा घर घर दुख सुख मे वह सब का रहबर
देश की क़िस्मत, प्यारा गांधी
प्रेम की मूरत, प्यारा गांधी

اڈیٹر—پریم بھائی

پیارے بھائیو !

اِس مہینے ہم تمارے لئے زیادہ صفحے نہیں نکال سکے . اگلے مہینے ہم کم سے کم آٹھ صفحے ضرور تمہارے لئے رکھیں گے اور تصویریں بھی چھاپیں گے . ہاں' پچھلے مہینے تم سے کہا گیا تھا کہ 'بچوں کی دنیا' کے لئے تم بھی اپنے لیکھ' کہانیاں' کویتائیں بھیجو . تمہاری چیزیں چھاپنے سے ہمیں بہت خوشی ہوگی .

تمہارا—
پریم بھائی

باپو

(بھائی شنکر سنگھ' حیدرآباد دکن)

دکھیوں کا غم کھانے والا ہندو اور مسلم کا دلارا
دیش کا تارا جی کا اجالا دکھیوں کوتھا اُس سے پیارا
بھارت کو آزاد کرایا تن کو سیوا میں کٹوایا
پریم کا چرچا گونجا گھر گھر دکھ سکھ میں وہ سب کا رہبر
دیش کی قسمت' پیارا گاندھی
پریم کی مورت' پیارا گاندھی

दक्खिनी अफरीक़ा और छूत छात

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के समझौते में कामन वेल्थ और दक्खिन पूरबी एशिया में एकता और शान्ति की जो उम्मीदें पैदा होती हैं वह कामन वेल्थ के एक मेम्बर दक्खिनी अफरीक़ा के हथकंडों से थोड़ी बहुत मद्धिम पड़ जाती हैं वहाँ की सरकार हिन्दुस्तानी और दूसरे एशियाई लोगों के साथ, जो बरसों से वहाँ बसे हुए हैं, सिर्फ उनके रंग और नस्ल की बुनियाद पर जो भेद बरत रही है उसके ख़िलाफ हिन्दुस्तान यू॰ एन॰ ओ॰ में शिकायत कर चुका है और वहाँ से उसके पक्ष में फैसला हो चुका है. हालाँकि दक्खिनी अफरीक़ा की सरकार ने ज़ियादा तर फैसलों को रद्दी की टोकरी में डाल दिया फिर भी अब वह इसके लिये तैयार होगई थी कि इस मामले पर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के प्रतिनिधियों के साथ बैठकर सोच विचार करे. मगर इस कानफ्रेन्स से पहले पहल उसने एक नये क़ानून की तैयारी शुरू कर दी है जिसके मंज़ूर हो जाने के बाद हर नस्ल के लोगों के लिये अलग अलग इलाक़े मुक़र्रर हो जायँगे जिनके बाहर वह न तो रह सकेंगे और न जायदाद रख सकेंगे बल्कि कुछ इलाक़ों में ग़ैर सफेद लोगों को आने जाने तक की इजाज़त नहीं होगी. यह क़ानून अगर मंज़ूर हो गया तो हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, सीलौन और दक्खिनी अफरीक़ा का एक ही बिरादरी में रहना और भाई चारे के उसूल बरतना नामुमकिन हो जायगा.

دکھنی افریقہ اور چھوت چھات

ہندستان اور پاکستان کے سمجھوتے سے کامن ویلتھ اور دکھن پوربی ایشیا میں ایکتا اور شانتی کی جو امیدیں پیدا ہوتی ہیں وہ کامن ویلتھ کے ایک ممبر دکھنی افریقہ کے ہتھکنڈوں سے تھوڑی بہت مدھم پڑجاتی ہیں ۔ وہاں کی سرکار ہندستانی اور دوسرے ایشیائی لوگوں کے ساتھ، جو برسوں سے وہاں بسے ہوئے ہیں، صرف ان کے رنگ اور نسل کی بنیاد پر جو بھید برت رہی ہے اس کے خلاف ہندستان یو۔ این۔ او۔ میں شکایت کرچکا ہے اور وہاں سے اس کے پکش میں فیصلہ ہوچکا ہے ۔ حالانکہ دکھنی افریقہ کی سرکار نے زیادہ تر فیصلوں کو ردی کی ٹوکری میں ڈال دیا پھر بھی اب وہ اس کے لئے تیار ہوگئی تھی کہ اس معاملہ پر ہندستان اور پاکستان کے پرتی ندھیوں کے ساتھ بیٹھ کر سوچ وچار کرے ۔ مگر اس کانفرنس سے پہلے پہلے اس نے ایک نئے قانون کی تیاری شروع کردی ہے جس کے منظور ہوجانے کے بعد ہرنسل کے لوگوں کے لئے الگ الگ علاقے مقرر ہو جائیں گے جن کے باہر وہ نہ تو رہ سکیں گے اور نہ جائداد رکھ سکیں گے بلکہ کچھ علاقوں میں تو غیر سفید لوگوں کو آنے جانے تک کی اجازت نہیں ہوگی ۔ یہ قانون اگر منظور ہوگیا تو ہندستان، پاکستان، سیلون اور دکھنی افریقہ کا ایک ہی برادری میں رہنا اور بھائی چارے کے اصول برتنا ناممکن ہوجائے گا ۔

इसपर यक़ीन नहीं आता. इनमें से कुछ लोग कहते हैं कि यह समझौता बरतानिया और अमरीका ने बीच में पड़ कर कराया है जिसमें कि इन दोनों मुल्कों मे कम्युनिज्म के ख़िलाफ एक मोर्चा बना सकें. मगर यही लोग पहले यह कहते थे कि दोनों बंगालो में हिन्दू मुस्लिम दंगे इस वजह से कराये गये है कि कम्युनिस्ट आन्दोलन कमज़ोर होजाय. जब तक ऐसे लोग यह न बतादें कि वह पहले झूट बोलते थे या अब झूट बोलते हैं उस वक्त तक इनकी बातों पर कोई राय देना बेकार है.

इस समझौते के सिलसिले मे हिन्दुस्तान का रवैया बहुत ही साफ़ है. जब वह दूसरो की "ठन्डी लड़ाई" से अलग रहना चाहता है तो ख़ुद ऐसी लडाई कैसे जारी रख सकता है. इस 'लडाई' का नुकसान पाकिस्तान भी समझता है मगर उसके वज़ीर आज़म लियाक़त अली ख़ाँ साहब ने अपने अमरीका के दौरे में कश्मीर के मामले में जो मदद माँगी है और अपनी सरहदो के लिये कामनवेल्थ और अमरीका से जो ज़मानत चाही है उससे मालूम होता है कि अभी उनके मन मे कुछ सदेह मौजूद हैं. आशा है कि इनमे से ज्यादा-तर पाकिस्तान वापस आने पर और यहाँ के हालात देख कर दूर होजायँगे. मगर बड़े राष्ट्रो की "ठन्डी लड़ाई" के बारे मे उनका आम रवैया भी हिन्दुस्तान के रुख़ से कुछ अलग है, जैसा कि अमरीका में उनके और बयानों से ज़ाहिर होता है कि पाकिस्तान को अमरीकी हथियारों की ज़रूरत है और इस्लाम के सामने कम्युनिज्म के पनपने की कोई सम्भावना नहीं है.

اسپر یقین نہیں آتا . اسمیں سے کچھ لوگ کہتے ہیں کہ یہ سمجھوتہ برطانیہ اور امریکہ نے بیچ میں پڑکر کرایا ہے جس میں کہ ان دونوں ملکوں میں کمیونزم کے خلاف ایک مورچہ بنا سکیں مگر یہی لوگ پہلے یہ کہتے تھے کہ دونوں بنگالوں میں ہندو مسلم دنگے اس وجہ سے کرائے گئے ہیں کہ کمیونسٹ اندولن کمزور ہوجائے جبتک ایسے لوگ یہ نہ بتا دیں کہ وہ پہلے جھوٹ بولتے تھے یا اب جھوٹ بولتے ہیں اس وقت تک ان کی باتوں پر کوئی رائے دینا بے کار ہے .

اس سمجھوتے کے سلسلہ میں ہندستان کا رویہ بہت ہی صاف ہے . جب وہ دوسروں کی " ٹھنڈی لڑائی " سے الگ رہنا چاہتا ہے تو خود ایسی لڑائی کیسے جاری رکھ سکتا ہے . اس 'لڑائی' کا نقصان پاکستان بھی سمجھتا ہے مگر اس کے وزیر اعظم لیاقت علی خاں صاحب نے اپنے امریکہ کے دورے میں کشمیر کے معاملہ میں جو مدد مانگی ہے اور اپنی سرحدوں کے لئے کامن ویلتھ اور امریکہ سے جو ضمانت چاہی ہے اس سے معلوم ہوتا ہے کہ ابھی ان کے من میں کچھ سندیہ موجود ہیں . آشا ہے کہ اسمیں سے زیادہ تر پاکستان واپس آنے پر اور یہاں کے حالات دیکھکر دور ہو جائیں گے. مگر بڑے راشٹروں کی " ٹھنڈی لڑائی " کے بارے میں ان کا عام رویہ بھی ہندستان کے رخ سے کچھ الگ ہے جیسا کہ امریکہ میں ان کے اور بیانوں سے ظاہر ہوتا ہے کہ پاکستان کو امریکی ہتھیاروں کی ضرورت ہے اور اسلام کے سامنے کمیونزم کے پنپنے کی کوئی سمبھاونا نہیں ہے .

मक़सद है उसके कारन यह सौदा रूस और कम्युनिज़्म के खिलाफ़ 'ठन्डी लड़ाई' का एक मोर्चा बन जायगा. जो मुल्क यह मदद लेगा उसे इस लड़ाई मे शरीक होना पड़ेगा और अमरीका की राजनैतिक और आर्थिक शर्तें मानना होंगी. इनमे से कुछ शर्तों से बरतानिया की चौधराई पर आँच आती है पर बरतानिया से भी ज़्यादा मुश्किल हिन्दुस्तान की है जो 'ठंडी लड़ाई' से अलग रहना चाहता है. अब देखना यह है कि सिडनी कानफ्रेन्स ऐसा कौन सा प्रोग्राम बनाती है जिसमें हिन्दुस्तान की यह पोज़ीशन बनी रहे और कामनवेल्थ की बिरादरी अमरीका के हाथ की कठपुतली न बनने पाये. दरअसल यह काम है बहुत ही मुश्किल, इसीलिये पिछले जनवरी मे कोलम्बो की कामनवेल्थ कानफ्रेन्स इसके बारे मे कोई फ़ैसला नही कर सकी थी. मगर तब से अब तक चार महीनो के बीच के समय मे दक्खिन-पूरबी एशिया की हालत पच्छिमी राष्ट्रों की दृष्टि से और ज़्यादा खराब होगई है. इसलिये मुमकिन है कि वह इसके सुधार के लिये अब पहले से ज़्यादा समझदारी के साथ कोशिश करें

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान

एक हिसाब से यह हालत अच्छी भी होगई है हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के समझौते से (जिसका हाल पिछले महीने के 'नयाहिन्द' में पंडित सुन्दरलाल जी बड़ी अच्छी तरह बता चुके हैं) कामन वेल्थ के अन्दर की एक 'ठंडी लड़ाई' जो 'गरम लड़ाई' के बिलकुल क़रीब तक पहुँच गई थी, बहुत धीमी पड़ गई है और दोनों मुल्कों में दोस्ती इतनी तेज़ी से बढ़ रही है कि कुछ लोगों को

مقصد ہے اس کے کارن یہ سودا روس اور کمیونزم کے خلاف 'ٹھنڈی لڑائی' کا ایک مورچہ بن جائے گا . جو ملک یہ مدد لے گا اسے اس لڑائی میں شریک ہونا پڑے گا اور امریکہ کی راج نیتک اور آرتھک شرطیں ماننا ہوں گی . انمیں سے کچھ شرطوں سے برطانیہ کی چودھرائی پر آنچ آتی ہے پر برطانیہ سے بھی زیادہ مشکل ہندستان کی ہے جو 'ٹھنڈی لڑائی' سے الگ رہنا چاہتا ہے . اب دیکھنا یہ ہے کہ سڈنی کانفرنس ایسا کون سا پروگرام بناتی ہے جس میں ہندستان کی یہ پوزیشن بنی رہے اور کامن ویلتھ کی برادری امریکہ کے ہاتھ کی کٹھ پتلی نہ بننے پائے . دراصل یہ کام ہے بہت ہی مشکل' اسی لئے پچھلے جنوری میں کولمبو کی کامن ویلتھ کانفرنس اس کے بارے میں کوئی فیصلہ نہیں کرسکی تھی مگر تب سے ابتک چار مہینوں کے بیچ کے سمے میں دکھن پوربی ایشیا کی حالت پچھمی راشٹروں کی درشٹی سے اور زیادہ خراب ہو گئی ہے اس لئے ممکن ہے کہ وہ اس کے سدھار کے لئے اب پہلے سے زیادہ سمجھداری کے ساتھ کوشش کریں .

ہندستان اور پاکستان

ایک حساب سے یہ حالت اچھی بھی ہوگئی ہے ، ہندستان اور پاکستان کے سمجھوتے سے (جسکا حال پچھلے مہینے کے 'نیا ہند' میں پنڈت سندر لال جی بڑی اچھی طرح بتا چکے ہیں) کامن ویلتھ کے اندر کی ایک 'ٹھنڈی لڑائی' جو 'گرم لڑائی' کے بالکل قریب تک پہنچ گئی تھی' بہت دھیمی پڑگئی ہے اور دونوں ملکوں میں دوستی اتنی تیزی سے بڑھ رہی ہے کہ کچھ لوگوں کو

सिडनी कानफ़्रेन्स

लन्दन कानफ़्रेन्स के फ़ौरन ही बाद सिडनी (आस्ट्रेलिया) में कामनवेल्थ के मेम्बरो की एक कानफ़्रेन्स बुलाई गई है और उसमें दक्खिन पूरबी एशिया के आर्थिक मसलों और उनके हल पर ख़ास तौर से सोच विचार किया जायगा. यह मसले भूक, बीमारी और बेकारी के रूप मे बहुत दिनो से सामने हैं. मगर इन पर अब ध्यान इसलिये दिया जा रहा है कि कम्युनिज़्म उनको सीढ़ी बनाकर तरक़्क़ी करने की कोशिश कर रहा है और संजोग मे इस इलाक़े मे जो देश कम्युनिज़्म के बहुत ज़्यादा ख़िलाफ़ है यानी आस्ट्रेलिया, जहाँ कम्युनिस्ट पार्टी को ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दिया गया है, वही इस कानफ़्रेन्स में सबसे आगे आगे है. उसके विदेश मंत्री मिस्टर स्पेन्डर कानफ़्रेन्स के सामने एक योजना रखने वाले हैं जिसके अनुसार दक्खिन पूरबी एशिया के मुल्को को मदद के लिये एक फंड खोला जायगा और उस फ़ंड में अमरीका को भी शरीक किया जायगा.

कानफ़्रेन्स मे तक़रीर करते हुए मिस्टर स्पेन्डर ने घुमा फिरा कर और न्युज़ी लैंड के विदेश मंत्री ने साफ़ तौर से कम्युनिज़्म के ख़तरे का ज़िक्र किया. और इस ख़तरे को देख कर अमरीका दक्खिन-पूरबी एशिया के मुल्को की सहायता के लिये आमादा हुआ है. यह सही है कि इन देशो के आर्थिक ढाँचे मे कोई तबदीली न हुई तो उन्हे अपनी तरक़्क़ी के लिये इतने सामान, आदमियो और पैसे की ज़रूरत होगी कि वह अमरीका से मदद लेने के लिये मजबूर हो जायँगे. लेकिन अमरीका के सामने इस मदद का जो

سڈنی کانفرنس

لندن کانفرنس کے فوراً ہی بعد سڈنی (آسٹریلیا) میں کامن ویلتھ کے ممبروں کی ایک کانفرنس بلائی گئی ہے اور اس میں دکھن پوربی ایشیا کے آرتھک مسئلوں اور ان کے حل پر خاص طور سے سوچ وچار کیا جائے گا . یہ مسئلے بھوک' بیماری اور بے کاری کے روپ میں بہت دنوں سے سامنے ہیں . مگر ان پر اب دھیان اس لئے دیا جا رہا ہے کہ کمیونزم ان کو سیڑھی بناکر ترقی کرنے کی کوشش کر رہا ہے . اور سنجوگ سے اِس علاقے میں جو دیش کمیونزم کے بہت زیادہ خلاف ہے یعنی آسٹریلیا' جہاں کمیونسٹ پارٹی کو غیر قانونی قرار دیدیا گیا ہے' وہی اس کانفرنس میں سب سے آگے آگے ہے . اس کے ودیش منتری مسٹر اسپنڈر کانفرنس کے سامنے ایک یوجنا رکھنے والے ہیں جس کے انوسار دکھن پوربی ایشیا کے ملکوں کی مدد کے لئے ایک فنڈ کھولا جائے گا اور اس فنڈ میں امریکہ کو بھی شریک کیا جائے گا .

کانفرنس میں تقریر کرتے ہوئے مسٹر اسپنڈر نے گھما پھرا کر اور نیوزی لینڈ کے ودیش منتری نے صاف طور سے کمیونزم کے خطرے کا ذکر کیا اور اس خطرے کو دیکھکر امریکہ دکھن پوربی ایشیا کے ملکوں کی سہایتا کے لئے آمادہ ہوا ہے . یہ صحیح ہے کہ ان دیشوں کے آرتھک ڈھانچے میں کوئی تبدیلی نہ ہوئی تو انھیں اپنی ترقی کیلئے اتنے سامان' آدمیوں اور پیسے کی ضرورت ہوگی کہ وہ امریکہ سے مدد لینے کے لئے مجبور ہو جائیں گے . لیکن امریکہ کے سامنے اس مدد کا جو

मलाया का आन्दोलन

हिन्द चीन ही से मिलती जुलती हालत मलाया की भी है. वहाँ जो हैसियत फ्रान्स की है वही यहाँ बरतानिया की है. और जिस तरह वहाँ फ्रान्सीसी फ़ौजों के होते हुए कम्युनिस्ट आन्दोलन पूरे ज़ोर के साथ चल रहा है उसी तरह यहाँ १६ हज़ार सेना, ७० हज़ार पुलीस और एक ताक़तवर हवाई दस्ता कम्युनिस्ट छापा मारो का ज़ोर नहीं तोड़ सका है. दोनों जगह के हालात पर चीन के इन्क़लाब का असर पड़ा है. हिंन्द चीन पर इस लिये कि उसकी सरहद चीन से मिली हुई है और मलाया पर इस लिये कि वहाँ चीनियों की एक बड़ी तादाद आबाद है (सिंगापुर में ७० फ़ीसदी और बाक़ी इलाक़े में ४० फ़ीसदी) मलाया के आन्दोलन की बुनियाद आर्थिक और राजनैतिक दोनों तरह की है. वहाँ टीन की खानों और रबड़ के बाग़ों में काम करने वाले मज़दूर अपनी मज़दूरी और रिआयतों में बढ़ती चाहते हैं और जनता बरतानी साम्राज से आज़ादी चाहती है. ऐसा आन्दोलन चाहे वह मलाया में हो और चाहे हिन्द चीन में, सिर्फ़ वैसी बातों से नहीं ख़त्म हो सकता जैसी कि तीन बड़े विदेश मंत्रियों की लन्दन कानफ्रेन्स के एक एलान में कही गई हैं. उसमें कहा गया है कि दक्खिन पूरबी एशिया के जो देश आज़ाद हो रहे हैं उनकी हमदर्दी और सहायता की जायगी. और "कम्युनिस्ट साम्राजशाही" का पोल खोला जायगा. हिन्द-चीन और मलाया इस एलान की कसौटी हैं और इस कसौटी पर कसने से पच्छिमी राष्ट्रों की पालिसी " कम्युनिस्ट सामाजशाही " से कहीं ज़्यादा पोली निकलेगी.

ملایا کا آندولن

هند چین هی سے ملتی جلتی حالت ملایا کی بھی هے ۔ وهاں جو حیثیت فرانس کی هے وهی یہاں برطانیه کی هے' اور جسطرح وهاں فرانسیسی فوجوں کے هوتے هوئے کمیونسٹ آندولن پورے زور کے ساتھ چل رها هے اسی طرح یہاں ۱۶ هزار سپاهی' ۷۰ هزار پولیس اور ایک طاقتور هوائی دسته کمیونسٹ چھاپه ماروں کا زور نهیں توڑ سکا هے ۔ دونوں جگه کے حالات پر چین کے انقلاب کا اثر پڑا هے ۔ هند چین پر اس لئے که اس کی سرحد چین سے ملی هوئی هے اور ملایا پر اِس لئے که وهاں چینیوں کی ایک بڑی تعداد اباد هے ۔ (سنگاپور میں ۷۰ فیصدی اور باقی علاقه میں ۴۰ فیصدی ۔ ملایا کے آندولن کی بنیاد آرتھک اور راج‌نیتک دونوں طرح کی هے ۔ وهاں ٹین کی کھانوں اور ربر کے باغوں میں کام کرنے والے مزدور اپنی مزدوری اور رعایتوں میں بڑھتی چاهتے هیں اور جنتا برطانی سامراج سے آزادی چاهتی هے ۔ ایسا آندولن چاهے وه ملایا میں هو اور چاهے هند چین میں' صرف ویسی باتوں سے نهیں ختم هو سکتا جیسی که "تین بڑے" ودیش منتریوں کی لندن کانفرنس کے ایک اعلان میں کهی گئی هیں ۔ اس میں کہا گیا هے که دکھن پوربی ایشیا کے جو دیش آزاد هو رهے هیں ان کی همدردی اور سہایتا کی جائے گی ۔ اور "کمیونسٹ سامراج شاهی" کا پول کھولا جائے گا ۔ هند چین اور ملایا اس اعلان کی کسوٹی هیں اور اس کسوٹی پر کسنے سے پچھمی راشٹروں کی پالیسی "کمیونسٹ سامراج شاهی" سے کهیں زیاده پولی نکلے گی ۔

‘ ठण्डी लड़ाई ’ सबसे ज्यादा ज़ोर के साथ इसी मैदान मे हो रही है और सबसे अधिक ध्यान हिन्द चीन पर दिया जा रहा है जो एक तरफ़ चीन से और दूसरी तरफ़ स्याम और बरमा से मिला हुआ है पिछली ‘ गरम लड़ाई ’ मे जापान के साम्राजी हिन्द चीन मे जीत जाने के बाद थोड़े दिनो में स्याम, मलाया और बरमा को जीतते हुए हिन्दुस्तान तक पहुच गये थे. शायद यही डर पच्छमी राष्ट्रों का ‘ ठण्डी लडाई’ में रूस, चीन और दूसरे देशो के कम्युनिस्टो से है. इसीलिये अमरीका ने हिन्द चीन मे फ्रान्स के ज़रिये उसको बनाई हुई बावडाई का सरकार को मदद देने का फ़ैसला किया है यह मदद आर्थिक और फौजी दोनो तरह की होगी और अमरीका के अधिकारियो ने कहा है कि इस से हिन्द चीन का राष्ट्रीयता को भी तरक्की होगी लेकिन बावडाई सरकार फ्रान्स को कठपुतला है. हिन्द चीनी जनता उस के साथ नहीं है और उस को मदद देने से राष्ट्रीयता का जो तरक्की होगी वह अमरीका, फ्रान्स और बावडाई के ख़िलाफ़ जायगी. इसका थोड़ा बहुत पता हाल की इस ख़बर से चलता है कि एक जगह हिन्द चीनी फ़ौज ने, जो बाग़ियों से निपटने के लिये भेजी गई थी, लारियो पर से उतरने से इन्कार कर दिया. बावडाई के लिये अमरीका की सहायता का एक असर यह भी हो सकता है कि चीन और रूस हो ची मिंह को खुल्लम खुल्ला और बड़े पैमाने पर मदद देने लगे. चीनी कम्युनिस्टों के हेनान टापू पर क़ब्ज़ा कर लेने से उनके लिये अपने हिन्द-चीनी साथियों को मदद पहुंचाना पहले से ज्यादा आसान हो गया है. वैसे भी चीन को सरहद हिन्द चीन से मिली हुई है और ख़बर है कि सरहदी मोर्चों पर कई हज़ार चीनी सिपाही टिका दिये गये हैं.

’تھنڈی لڑائی‘ سب سے زیادہ زور کے ساتھ اسی میدان میں ہورہی ہے اور سب سے ادھک دھیان ہند چین پر دیا جارہا ہے‘ جو ایک طرف چین سے اور دوسری طرف سیام اور برما سے ملا ہوا ہے . پچھلی ’ گرم لڑائی ‘ میں جاپان کے سامراجی ہند چین میں جیت جانے کے بعد تھوڑے دنوں میں سیام‘ ملایا اور برما کو جیتتے ہوئے ہندستان تک پہنچ گئے تھے . شاید یہی ڈر پچھمی راشٹروں کو ’ تھنڈی لڑائی ‘ میں روس‘ چین اور دوسرے دیشوں کے کمیونسٹوں سے ہے . اسی لئے امریکہ نے ہند چین میں فرانس کے ذریعے اس کی بنائی ہوئی باؤ ڈائی کی سرکار کو مدد دینے کا فیصلہ کیا ہے یہ مدد آرتھک اور فوجی دونوں طرح کی ہوگی اور امریکہ کے ادھیکاریوں نے کہا ہے کہ اس سے ہند چین کی راشٹریتا کی بھی ترقی ہوگی لیکن باؤ ڈائی سرکار فرانس کی کٹھ پتلی ہے . ہند چینی جنتا اس کے ساتھ نہیں ہے اور اس کو مدد دینے سے راشٹریتا کی جو ترقی ہوگی وہ امریکہ‘ فرانس اور باؤ ڈائی کے خلاف جائیگی . اس کا تھوڑا بہت پتہ حال کی اس خبر سے چلتا ہے کہ ایک جگہ ہند چینی فوج نے‘ جو باغیوں سے نپٹنے کے لئے بھیجی گئی تھی‘ لاریوں پر سے اُترنے سے انکار کردیا ." باؤ ڈائی کے لئے امریکہ کی سہایتا کا ایک اثر یہ بھی ہوسکتا ہے کہ چین اور روس ہوچی منہ کو کھلم کھلا اور بڑے پیمانے پر مدد دینے لگیں . چینی کمیونسٹوں کے ہینان ٹاپو پر قبضہ کرلینے سے ان کے لئے اپنے ہند چینی ساتھیوں کو مدد پہنچانا پہلے سے زیادہ آسان ہوگیا ہے . ویسے بھی چین کی سرحد ہند چین سے ملی ہوئی ہے اور خبر ہے کہ سرحدی مورچوں پر کئی ہزار چینی سپاہی ٹکا دیئے گئے ہیں .

बरतानिया, अमरीका और फ़्रान्स के विदेश मन्त्री लन्दन में इकट्ठा हुए. उनके सामने सबसे बड़ा सवाल जर्मनी का है जिसके पूरबी हिस्से पर रूस का क़ब्ज़ा है और पच्छिमी हिस्से पर पच्छिमी राष्ट्र पूरा अधिकार रखते हैं. उन्होंने जर्मनों की अपनी सरकार भी बना दी है. लेकिन यह सरकार, यह देखकर कि रूस के मुक़ाबले पर पच्छिमी राष्ट्रों की मोर्चाबन्दी उसके बिना पूरी नहीं हो सकती, उनसे ज़्यादा से ज़्यादा अधिकार मांग रही है. उसके साथ पच्छिमी राष्ट्र कभी प्यार की बातें करते हैं और कभी ग़ुस्से की. कभी वह यह कहते हैं कि जर्मनी के बिना योरप में कोई मज़बूत बिरादरी नहीं बन सकती और कभी वह इस बात से डरते हैं कि जर्मनी कहीं आस्तीन का सांप न बन जाय और जिस तरह पहली बड़ी लड़ाई हारने के बाद वह दूसरी बड़ी लड़ाई शुरू करने के क़ाबिल बन गया था, उसी तरह दूसरी लड़ाई हारने के बाद कहीं तीसरी बड़ी लड़ाई के लिये तैयार न हो जाय. यह डर सब से ज़्यादा फ़्रान्स को है जिसकी सरहद जर्मनी से मिली है. फ़्रान्स के विदेश मन्त्री लन्दन कान्फ़्रेन्स में यह तजवीज़ लेकर आये हैं कि फ़्रान्स और जर्मनी में कोयला और लोहे की पैदावार एक साथ जोड़ दी जाय और इसकी निगरानी एक ऐसी संस्था के सुपुर्द कर दी जाय जिसमें पच्छिमी योरप के सभी देश शरीक हों. यह 'ठण्डी लड़ाई' का एक वार है और इस का असर मोसियो लो के मिशन पर कुछ अच्छा नहीं पड़ेगा.

हिन्द चीन की अहमियत

इस मिशन पर दूर पूरब के हालात और यहाँ रूस और अमरीका की तनातनी का असर और भी ख़राब होगा. दरअसल इस वक़्त

برطانیہ' امریکہ اور فرانس کے ودیش منتری لندن میں اکٹھا ہوئے . اُن کے سامنے سب سے بڑا سوال جرمنی کا ہے جس کے پوربی حصے پر روس کا قبضہ ہے اور پچھمی حصے پر پچھمی راشٹر پورا ادھیکار رکھتے ہیں . اُنھوں نے جرمنوں کی اپنی سرکار بھی بنا دی ہے . لیکن یہ سرکار' یہ دیکھکر کہ روس کے مقابلے پر پچھمی راشٹروں کی مورچہ بندی اُس کے بنا پوری نہیں ہوسکتی' ان سے زیادہ سے زیادہ ادھیکار مانگ رہی ہے . اُس کے ساتھ پچھمی راشٹر کبھی پیار کی باتیں کرتے ہیں اور کبھی غصہ کی . کبھی وہ یہ کہتے ہیں کہ جرمنی کے بنا یورپ میں کوئی مضبوط برادری نہیں بن سکتی اور کبھی وہ اس بات سے ڈرتے ہیں کہ جرمنی کہیں آستین کا سانپ نہ بن جائے اور جسطرح پہلی بڑی لڑائی ہارنے کے بعد وہ دوسری بڑی لڑائی شروع کرنے کے قابل بن گیا تھا' اسی طرح دوسری لڑائی ہارنے کے بعد کہیں تیسری بڑی لڑائی کے لئے تیار نہ ہوجائے . یہ ڈر سب سے زیادہ فرانس کو ہے جس کی سرحد جرمنی سے ملی ہے . فرانس کے ودیش منتری لندن کانفرنس میں یہ تجویز لے کر آئے ہیں کہ فرانس اور جرمنی میں کوئلہ اور لوہے کی پیداوار ایک ساتھ جوڑ دی جائے اور اس کی نگرانی ایک ایسی سنستھا کے سپرد کردی جائے جس میں پچھمی یورپ کے سبھی دیش شریک ہوں یہ ' ٹھنڈی لڑائی ' کا ایک وار ہے اور اسکا اثر موسیو لی کے مشن پر کچھ اچھا نہیں پڑے گا .

ہند چین کی اہمیت

اس مشن پر دور پورب کے حالات اور یہاں روس اور امریکہ کی تناتنی کا اثر اور بھی خراب ہوگا .. در اصل اس وقت

रूस और अमरीका

ऐसी हालत मे 'मोसियो ली का "ठण्डी लड़ाई" को खतम करने के इरादे से रूस जाना एक बड़ी अच्छी बात है. इन्हीं दिनों रूस के एक सरकारी अखबार में स्तालिन का एक बहुत पुराना बयान पहली बार छपा है जिसमें उन्होंने कहा था कि कम्युनिस्ट और पूंजी वादी राष्ट्र दोस्ती के साथ रह सकते हैं

प्रेसीडेन्ट ट्रूमेंट और उनके विदेश मन्त्री ने भी कहा है कि अभी कुछ अर्से तक लड़ाई छिड़ने की कोई सम्भावना नही है. पर यह बात उन्होंने "गरम लड़ाई" के लिये कही है. "ठण्डी लड़ाई" को वह खतम नही करना चाहते बल्कि लड़कर जीत लेना चाहते हैं. इसलिये कि यह लड़ाई उन के विचार में गरम लड़ाई से सस्ती पड़ेगी. इसे लड़ने के लिये राजनैतिक दाँवपेच और आर्थिक मदद की जरूरत होती है जो दूसरे देशो को क़र्ज़ और भीक के रूप मे दी जाती है जिसमें कि वह अपनी आर्थिक हालत इतनी दुरुस्त कर ले कि जनता कम्युनिस्टों की बात पर कान न धरे. इसके साथ ही अमरीका अपने असर वाले मुल्कों को फौजी सामान भी दे रहा है ताकि वह रूस के मुक़ाबले पर मोर्चा बना सकें और अन्दर और बाहर के कम्युनिस्टों की काट कर सकें.

जर्मनी का नवजीवन

योरप में मार्शल प्लान आर्थिक सहायता के लिये बनाया गया था और एटलान्टिक समझौता फ़ौजी सहायता के लिये हुआ है. इस सिलसिले के सवालों पर सोच विचार करने के लिये मई में

روس اور امریکہ

ایسی حالت میں موسیو لی کا " ٹھنڈی لڑائی " کو ختم کرنے کے ارادے سے روس جانا ایک بڑی اچھی بات ہے. انہیں دنوں روس کے ایک سرکاری اخبار میں اِستالن کا ایک بہت پرانا بیان پہلی بار چھپا ہے جس میں اُنھوں نے کہا تھا کہ کمیونسٹ اور پونجی وادی راشٹر دوستی کے ساتھ رہ سکتے ھیں .

پریسیڈنٹ ٹرومین اور اُن کے ودیش منتری نے بھی کہا ہے کہ ابھی کچھ عرصے تک لڑائی چھڑنے کی کوئی سمبھاؤنا نہیں ہے . پر یہ بات اُنھوں نے ''گرم لڑائی ' کے لئے کہی ہے. ''ٹھنڈی لڑائی'' کو وہ ختم نہیں کرنا چاھتے بلکہ لڑکر جیت لینا چاھتے ھیں . اس لئے کہ یہ لڑائی ان کے وچار میں گرم لڑائی سے سستی پڑے گی . اسے لڑنے کے لئے راج نیتک داؤں پیچ اور آرتھک مدد کی ضرورت ھوتی ہے جو دوسرے دیشوں کو قرض اور بھیک کے روپ میں دی جاتی اھے جس میں کہ وہ اپنی آرتھک حالت اتنی درست کرلیں کہ جنتا کمیونسٹوں کی بات پر کان نہ دھرے . اس کے ساتھ ھی امریکہ اپنے اثر والے ملکوں کو فوجی سامان بھی دے رہا ہے تاکہ وہ روس کے مقابلہ پر مورچہ بنا سکیں اور اندر اور باھر کے کمیونسٹوں کی کاٹ کرسکیں .

جرمنی کا نوجیون

یورپ میں مارشل پلان آرتھک سہائتا کے لئے بنایا گیا تھا اور اٹلانٹک سمجھوتہ فوجی سہایتا کے لئے ھوا ہے . اس سلسلے کے سوالوں پر سوچ وچار کرنے کے لئے مئی میں

रूसी और अमरीकी जत्थों में तनातनी बढ़ती रहेगी और बढ़ कर यह
एक तरह की बारूद बन जायगी जो एक मामूली सी चिन्गारी पड़
जाने से भड़क उठेगी.

हवाई झड़प

अभी पिछले महीने इसके भड़क उठने का एक डर पैदा हो
गया था, जब जर्मनी से हालैंड जाते हुए अमरीका का एक हवाई
जहाज रास्ते मे ग़ायब हो गया. अमरीका ने कहा कि उसे रूस ने
गिरा लिया है और रूस ने कहा कि उस हवाई जहाज को इसलिये
गिराया गया कि वह लिटेविया की रियासत पर रूस की फौजी
तैयारियो और मोर्चों का हाल मालूम करने के लिये आया था और
जब उससे रूसी हवाई जहाजों ने उतरने को कहा तो यह कहना
मानने के बजाय उसने गोली चला दी. अमरीका ने यह जवाब माना
तो नहीं पर वह खामोश हो गया और इसका एक कारन यह बताया
जाता है कि कुछ अर्से से रूस और अमरीका दोनों एक दूसरे की
तैयारियो का भेद मालूम करने को कोशिश करते रहते हैं. शायद इन
दोनो मे इस तरह की हवाई और समुन्दरी टक्करें इससे पहले भी
हो चुकी हैं पर दोनो ने इस खयाल से कि कहीं दूसरे को कोई नई
बात न मालूम हो जाय इन टक्करो का हाल छिपा डाला. हो सकता
है कि आगे भी इनमें कोई टक्कर हो जाय. इसलिये कि जब तक
इन दोनो में 'ठंडी लड़ाई' हो रही है तब तक दोनो 'गरम लड़ाई'
की तैयारी करते रहेंगे और एक दूसरे की तैयारियो का हाल
जानने की कोशिश करते रहेंगे. नहीं कहा जा सकता कि किस
मंज़िल पर पहुँच कर "ठण्डी लड़ाई" खतम हो जायगी और
"गरम लड़ाई" शुरू हो जायगी.

روسی اور امریکی جتھوں میں تنا تنی بڑھتی رہے گی اور بڑھکر
یہ ایک طرح کی باروہ بن جائیگی جو ایک معمولی سی چنگاری
پڑجانے سے بھڑک اُٹھے گی .

ہوائی جھڑپ

ابھی پچھلے مہینے اس کے بھڑک اُٹھنے کا ایک ڈر پیدا ہوگیا
تھا، جب جرمنی سے ہالینڈ جاتے ہوئے امریکہ کا ایک ہوائی
جہاز راستے میں غائب ہوگیا امریکہ نے کہا کہ اسے روس نے گرا لیا
ہے اور روس نے کہا کہ اس ہوائی جہاز کو اس لئے گرایا گیا کہ
وہ لیتھونیا کی ریاست پر روس کی فوجی تیاریوں اور مورچوں کا
حال معلوم کرنے کے لئے آیا تھا اور جب اُس سے روسی ہوائی جہازوں
نے اُترنے کو کہا تو یہ کہنا ماننے کے بجائے اُس نے گولی چلادی .
امریکہ نے یہ جواب مانا تو نہیں پر وہ خاموش ہوگیا اور اس کا
ایک کارن یہ بتایا جاتا ہے کہ کچھ عرصے سے روس اور امریکہ دونوں
ایک دوسرے کی تیاریوں کا بھید معلوم کرنے کی کوشش کرتے رہتے
ہیں شاید ان دونوں میں اس طرح کی ہوائی اور سمندری
ٹکریں اِس سے پہلے بھی ہوچکی ہیں . پر دونوں نے اِس خیال
سے کہ کہیں دوسرے کو کوئی نئی بات نہ معلوم ہوجائے، ان ٹکروں
کا حال چھپا ڈالا . ہوسکتا ہے کہ آگے بھی ان میں کوئی ٹکر
ہوجائے . اس لئے کہ جب تک ان دونوں میں " ٹھنڈی لڑائی "
ہو رہی ہے تب تک دونوں " گرم لڑائی " کی تیاری کرتے رہیں
گے اور ایک دوسرے کی تیاریوں کا حال جاننے کی کوشش کرتے
رہیں گے . نہیں کہا جاسکتا کہ کس منزل پر پہنچ کر " ٹھنڈی
لڑائی " ختم ہوجائیگی اور " گرم لڑائی " شروع ہوجائیگی .

दुनिया का हाल



دنیا کا حال

(भाई इशरत अली सिद्दीक़ी)

(بھائی عشرت علی صدیقی)

"ठण्डी लड़ाई"

यू० एन० ओ० के सेक्रेट्री जनरल मोसियो तर्गफ़ ली ने एक बयान में कहा है कि दुनिया का हाल पिछली बड़ी लड़ाई के खतम होने के बाद से आज तक कभी इतना खराब नहीं था. जितना कि इस वक़्त है. मतलब यह है कि दुनिया अभी तक कभी लड़ाई से इतनी क़रीब नहीं थी जितना कि इस वक़्त है. उनकी राय में किसी देश की सरकार या जनता मारधाड़ नहीं चाहती मगर इस वक़्त जो एक तरह की "ठंडी लड़ाई" हो रही है वह दुनिया को उसी तरफ़ ले जा रही है. इसलिये इसे खतम करना वक़्त की सबसे बड़ी जरूरत है.

"ठण्डी लड़ाई" का मतलब है दुनिया के बड़े राष्ट्रों की अलग अलग जत्था बन्दी. इन जत्थों के आपस को लाग डांट, एक दूसरे के खिलाफ़ इनका प्रोपेगेन्डा, एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिये राजनैतिक दॉवपेच और एक दूसरे को हराने के लिये फौजों और हथियारों की तैयारी. अगर यह सब बाते जारी रहीं तो

"ٹھنڈی لڑائی"

یو این . او . کے سکریٹری جنرل موسیو ترگوے لی نے ایک بیان میں کہا ہے کہ دنیا کا حال پچھلی بڑی لڑائی کے ختم ہونے کے بعد سے آج تک کبھی اتنا خراب نہیں تھا جتنا کہ اس وقت ہے . مطلب یہ ہے کہ دنیا ابھی تک کبھی لڑائی سے اتنی قریب نہیں تھی جتنی کہ اس وقت ہے . ان کی رائے میں کسی دیش کی سرکار یا جنتا مار دھاڑ نہیں چاہتی مگر اس وقت جو ایک طرح کی " ٹھنڈی لڑائی " ہو رہی ہے وہ دنیا کو اسی طرف لے جارہی ہے اس لئے اسے ختم کرنا وقت کی سب سے بڑی ضرورت ہے

"ٹھنڈی لڑائی" کا مطلب ہے دنیا کے بڑے راشٹروں کی الگ الگ جتھہ بندی' ان جتھوں کے آپس کی لاگ ڈانٹ' ایک دوسرے کے خلاف ان کا پروپیگنڈا' ایک دوسرے کو نیچا دکھانے کے لئے راج نیتک داؤں پیچ اور ایک دوسرے کو ہرانے کے لئے فوجوں اور ہتھیاروں کی تیاری. اگر یہ سب باتیں جاری رہیں تو

निज़ाम— (चौक कर) पागल ! (सिर झुक जाता है.)

एक हिन्दू — अच्छा, ... अच्छा, अब चलो नहीं तो फिर शहंशाह के दर्शन ही न मिलेंगे.

[सब लोग निज़ाम की ओर देखते हुए जाते हैं. निज़ाम वैसा का वैसा मूर्ति की भांति खामोश खड़ा रहता है.]

निज़ाम — (कुछ देर बाद, बड़ी ही गम्भीरता से) पागल ! .... लाड मलिका पागल !

यवनिका

आज के शहीद

(सम्पादक श्री० रतन लाल बंसल)

आज के शहीद में उन बहादुरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी, उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्हों ने फूट और नफ़रत के अंधेरे में रोशनी बनकर दूसरों को रास्ता दिखाया

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब

सुन्दर जिल्द और आर्ट पेपर पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया रक्खा गया है. किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है.

मैनेजर 'नया हिन्द' ४८ बाई का बाग़ इलाहाबाद.

نظام (ـــ چونک کر) پاگل ! (سر جھک جاتا)

ایک هندو ـــ اچھا' .. ... اچھا اب چلو نہیں تو پھر شہنشاہ کے درشن ہی نہ ملیں گے .

[سب لوگ نظام کی اور دیکھتے ہوئے جاتے ہیں . نظام ویسا کا ویسا مورتی کی بھانت خاموش کھڑا رہتا ہے .]

نظام ـــ (کچھ دیر بعد' بڑی ہی گمبھیرتا سے) پاگل ! ... . لاڈ ملکہ پاگل !

یونیکا

آج کے شہید

(سمپادک، شری رتن لال بنسل)

آج کے شہید میں اُن بہادروں کی کہانیاں ہیں جنھوں نے بدیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں انسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کردی' اُن ویروں کی کہانیاں ہیں جنھوں نے پھوٹ اور نفرت کے اندھیرے میں روشنی بنکر دوسروں کو راستہ دکھایا .

ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب

سندر جلد اور آرٹ پیپر پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ رکھا گیا ہے . کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے

منیجر ' نیا هند ' ۴۷ بائی کا باغ الہ‌آباد

एक हिन्दू—हाँ, हाँ, अभी हो जायँगे.

[देहाती जल्दी से जाने लगते हैं.]

निज़ाम — (देहातियों के सामने आकर उन्हें रोकते हुए) क्यों भाइयो, इस सलतनत में तुम लोग आराम से तो हो ?

दूसरा देहाती — अरे सत जुग है.

[सब देहाती तेजी से जाते हैं नेपथ्य में सब की मिली आवाज सुनाई देती है — 'हाँ, हाँ सतजुग है, पूरम्पार सतजुग नागरिक जाते हैं.]

निज़ाम — (कुछ सोचते हुए, एक-एक नागरिकों से) हाँ, हाँ, सुनिये, सुनिये तो

[नागरिक रुक जाते हैं.]

निज़ाम—आप लोग उन की बेगम लाड मलिका का भी कुछ हाल जानते हैं ?

एक मुसलमान—(सोचते हुए) लाड मलिका ?

दूसरा मुसलमान—हाँ, हाँ, वह चुनार वाली ?

दूसरा हिन्दू—जिस से हमारे बादशाह सलामत को डेढ़ सौ रत्न, सात मन मोती और डेढ़ सौ मन सोना मिला था ; जिस धन के कारण इस राज की स्थापना हो सकी ?

तीसरा हिन्दू— (निज़ाम से) हाँ, मैं उसका हाल जानता हूँ. सुना है उसको एक सहेली थी, उसका नाम था नसीम, किन्तु वह सखी मनुष्य न होकर मैना थी. एक दिन नसीम उड़ गई और लाड मलिका पागल होगई.

ایک هندو — هاں، هاں، ابهی هوجائیں گے

[دیہاتی جلدی سے جانے لگتے هیں .]

نظام — (دیہاتیوں کے سامنے آکر انهیں روکتے هوئے) کیوں بهائیو، اس سلطنت میں تم لوگ آرام سے تو هو ؟

دوسرا دیہاتی — ارے ست جگ هے

[سب دیہاتی تیزی سے جاتے هیں . نیپتهیه میں سب کی ملی جلی آواز سنائی دیتی هے — ' هاں، هاں، ست جگ هے، پورمپار ست جگ، ناگرک جانے لگتے هیں .]

نظام — (کچھ سوچتے هوئے، ایک ایک ناگرکوں سے) هاں، هاں، سنئے، سنئے تو .

[ناگرک رک جاتے هیں .]

نظام — آپ لوگ اُن کی بیگم لاڈ ملکه کا بهی کچھ حال جانتے هیں ؟

ایک مسلمان — (سوچتے هوئے) لاڈ ملکه ؟

دوسرا مسلمان — هاں، هاں، وه چنار والی ؟

دوسرا هندو — جس سے همارے بادشاه سلامت کو ڈیڑھ سو رتن، سات من موتی اور ڈیڑھ سو من سونا ملا تها ؛ جس دهن کے کارن اس راج کی استهاپنا هوسکی ؟

تیسرا هندو — (نظام سے) هاں، میں اسکا حال جانتا هوں . سنا هے اس کی ایک سهیلی تهی، اس کا نام تها نسیم، لیکن وه سکهی مانس نه هوکر مینا تهی ایک دن نسیم اُڑگئی اور لاڈ ملکه پاگل هوگئی .

तब तक नहीं उठाते जब तक पहले डग के किये हुए काम की पूरी पूरी व्यवस्था और निरीक्षण नहीं कर लेते.

ग्यारहवाँ मुसलमान—फिर तो उन की कामयाबियो का एक सबब और मानना होगा.

तेरहवाँ हिन्दू—क्या ?

ग्यारहवाँ मुसलमान—उन के सलाह कार ब्रह्मादित्य गौड़

सब हिन्दू मुसलमान—(एक साथ) बिलकुल ठीक, बिलकुल ठीक!

पहला हिन्दू—मैंने कहा न शेरशाह से अच्छा कोई राजा इस देश मे नहीं हुआ.

दूसरा हिन्दू—अच्छा अब जल्दी जल्दी चलो, झरोके पर से उन के दर्शन देने का समय हो रहा है.

[सब लोग आने लगते हैं. निज़ाम निकल कर उन्हें रोकता है]

निज़ाम—क्यों, भाइयो, भाई साहब की – (चौंक कर) ओह... शेरशाह साहब की सलतनत मे किसी को कोई तकलीफ नहीं ?

[सब लोग कुछ आश्चर्य से निज़ाम की ओर देखते हैं]

एक मुसलमान—तकलीफ ... . कैसी बाते करते हैं आप ? यह सलतनत कायम हुई है सब की तकलीफ रफा करने के लिये.

एक हिन्दू—जनाब, यह हिन्दू मुसलमानो का मिला जुला राज है. सभी को पूरा सुख है, पूरा पूरा.

[कुछ देहातियों का आना.]

एक देहाती — (नागरिकों से) बादसा के दरसन तो अबही हुईबाई है न ?

تب تک نہیں اُٹھاتے جب تک پہلے ڈگ کے کئے ہوئے کام کی پوری پوری ویوستھا اور نریکشن نہیں کرلیتے .

گیارھواں مسلمان — پھر تو ان کی کامیابیوں کا ایک سبب اور ماننا ہوگا .

تیرھواں ہندو — کیا ؟

گیارھواں مسلمان — ان کے صلاح کار برھما دتیہ گوڑ .

سب ہندو مسلمان — (ایک ساتھ) بالکل ٹھیک . بالکل ٹھیک !

پہلا ہندو — میں نے کہا نہ' شیر شاہ سے اچھا کوئی راج اِس دیش میں نہیں ہوا .

دوسرا ہندو — اچھا' اب جلدی جلدی چلو' جھروکے پر سے اُن کے درشن دینے کا سمے ہو رہا ہے .

[سب لوگ جانے لگتے ہیں . نظام نکل کر اُنہیں روکتا ہے .]

نظام—کیوں بھائیو' بھائی صاحب کی—(چونک کر) اوہ.. شیر شاہ صاحب کی سلطنت میں کسی کو کوئی تکلیف نہیں ؟

[سب لوگ کچھ آشچریہ سے نظام کی اُور دیکھتے ہیں .]

ایک مسلمان — تکلیف کیسی باتیں کرتے ہیں آپ ' یہ سلطنت قائم ہوئی ہے سب کی تکلیف رفع کرنے کے لئے .

ایک ہندو — جناب' یہ ہندو مسلمانوں کا ملا جلا راج ہے . سبھی کو پورا سکھ ہے' پورا پورا .

[کچھ دیہاتیوں کا آنا]

ایک دیہاتی —(ناگرکوں سے) بادسا کے درسن تو ابھی ہوئی جئیہے نہ ؟

सातवाँ हिन्दू—और कितनी ...... कितनी जल्दी यह सब हुआ है !

आठवाँ हिन्दू – हाँ, विदेशियों को देश से निकले और शेरशाह को सिंहासन पर बैठे अभी समय ही कितना हुआ है.

नवाँ हिन्दू—उसका कारण है — प्रजा हित ही हमारे शहंशाह के लिये दिन की चिन्ता और रात का स्वप्न है.

दसवाँ हिन्दू—फिर इस चिन्ता और स्वप्न के अनुसार काम करने की भगवान ने उन्हें बुद्धि और अनथक परिश्रम करने की शक्ति दी है.

ग्यारहवाँ हिन्दू—जैसी बुद्धि और काम करने की शक्ति है वैसा ही चरित्र और विद्वता भी है.

बारहवाँ हिन्दू—फिर एक क्षण भी वह बेकार नहीं खोते. सवेरे उठने से लेकर रात को सोते तक सारी दिन चर्या बनी हुई है.

नवाँ मुसलमान—उनकी कामयाबियों का एक सबब और है.

दसवाँ मुसलमान—क्या ?

नवाँ मुसलमान—वह एक मामूली जागीदार के यहाँ पैदा हुए. रिआया की छोटी से छोटी जरूरतों से वाक़िफ़ हैं. बुरे से बुरा वक़्त देखा, वह बादशाह हुए हैं एक मामूली से मामूली आदमी से बढ़कर.

तेरहवाँ हिन्दू—इसी के साथ एक कारण और है.

दसवाँ मुसलमान—क्या ?

तेरहवाँ हिन्दू—संसार में विजेता बड़े बड़े हुए, परन्तु हमारे बादशाह पहले प्रबन्धक हैं और उस के बाद विजेता. दूसरा डग

ساتواں ہندو — اور کتنی . . . . کتنی جلدی یہ سب ہوا ہے !

آٹھواں ہندو — ہاں' ودیشیوں کو دیش سے نکلے اور شیر شاہ کو سنگھاسن پر بیٹھے ابھی سمے ہی کتنا ہوا ہے .

نواں ہندو — اسکا کارن ہے — پرجا ہت ہی ہمارے شہنشاہ کے لئے دن کی چنتا اور رات کا سپن ہے .

دسواں ہندو — پھر اس چنتا اور سپن کے انوسار کام کرنے کی بھگوان نے اُنھیں بدھی اور انتھک پرشرم کرنے کی شکتی دی ہے .

گیارھواں ہندو — جیسی بدھی اور کام کرنے کی شکتی ہے ویسا ہی چرتر اور ودوتا بھی ہے.

بارھواں ہندو—پھر ایک چھن بھی وہ بیکار نہیں کھوتے. سویرے اُٹھنے سے لیکر رات کو سوتے تک ساری دن چریا بنی ہوئی ہے .

نواں مسلمان — ان کی کامیابیوں کا ایک سبب اور ہے .

دسواں مسلمان — کیا ؟

نواں مسلمان — وہ ایک معمولی جاگیردار کے یہاں پیدا ہوئے, رعایا کی چھوٹی سے چھوٹی ضرورتوں سے واقف ہیں . برے سے برا وقت دیکھا . وہ بادشاہ ہوئے ہیں ایک معمولی سے معمولی آدمی بڑھکر .

تیرھواں ہندو — اسی کے ساتھ ایک کارن اور ہے .

دسواں مسلمان — کیا ؟

تیرھواں ہندو—سنسار میں وجیتا بڑےبڑے ہوئے' پرنتو ہمارے بادشاہ پہلے پر بندھک ہیں اور اس کے بعد وجیتا . دوسرا ڈگ

चौथा हिन्दू—उन्होंने गोहत्या भी बंद कर दी है.

दूसरा मुसलमान—उनके दिल मे तो सिर्फ़ एक ख़याल है कि रिआया की तरक़्क़ी और उसे आराम किस तरह हो.

तीसरा मुसलमान—चूंकि रिआया मे ज्यादातर खेती करने वाले हैं, इसलिये उनके फ़ायदे के कितने क़ानून बने हैं.

पाँचवाँ हिन्दू—और इन क़ानूनो की पाबन्दी राज कर्मचारयो को किस प्रकार करनी पड़ रही है.

छठवाँ हिन्दू—अरे ! यह पहला अवसर है जब राज कर्मचारियों को अपने को प्रजा का सेवक मानना पडता है.

चौथा मुसलमान—और कोई कही किसी भी तरह की ज्यादती करता है तो उसकी शिकायत ख़ुद बादशाह सुनते हैं. सबूत होने पर बड़ी से बड़ी, कड़ी से कड़ी सज़ा देते हैं.

पाँचवाँ मुसलमान—फिर सब तरफ़ तरक़्क़ी ही तरक़्क़ी नज़र आ रही है. क्या नहीं हो रहा है ?

छठवाँ मुसलमान—हाँ खेती की बेहतरी के लिये नहरें बन रही है. वही यहाँ का सब से बडा पेशा होने की वजह से और भी हर तरह से उसकी तरक़्क़ी का जारही है .

सातवाँ मुसलमान—आमदरफ़्त की सहूलत के लिये सड़कें बन रही हैं.

आठवाँ मुसलमान—सफ़र मे कोई तकलीफ़ न हो, इसलिये सड़कों के दोनो तरफ़ दरख़्त लगवाये जा रहे हैं, कुएं खुद रहे हैं, मुसाफ़िर ख़ाने बन रहे हैं.

چوتها هندو — أنهوں نے گو هتیا بهی بند کردی هے .

دوسرا مسلمان — ان کے دل میں تو صرف ایک خیال هے که رعایا کی ترقی اور أسے آرام کس طرح هو .

تیسرا مسلمان — چونکه رعایا میں زیادہ تر کهیتی کرنے والے هیں اس لئے ان کے فائدے کے کتنے قانون بنے هیں .

پانچواں هندو — اور ان قانونوں کی پابندی راج کرمچاریوں کو کس پرکار کرنی پڑ رهی هے .

چهٹواں هندو — ارے ! یه پہلا اوسر هے جب راج کرم چاریوں کو اپنے کو پرجا کا سیوک ماننا پڑتا هے .

چوتها مسلمان — اور کوئی کہیں کسی بهی طرح کی زیادتی کرتا هے' تو اس کی شکایت خود بادشاہ سنتے هیں ثبوت هونے پر بڑی سے بڑی' کڑی سے کڑی سزا دیتے هیں

پانچواں مسلمان — پهر سب طرف ترقی هی ترقی نظر آ رهی هے . کیا نہیں هورها هے ؟

چهٹواں مسلمان — هاں کهیتی کی بهتری کے لئے نہریں بن رهی هیں . وهی یہاں کا سب سے بڑا پیشه هونے کی وجه سے اور بهی هر طرح سے اس کی ترقی کی جا رهی هے .

ساتواں مسلمان — آمدرفت کی سہولت کے لئے سڑکیں بن رهی هیں .

آٹهواں مسلمان — سفر میں کوئی تکلیف نه هو' اس لئے سڑکوں کے دونوں طرف درخت لگوائے جا رهے هیں' کنوئیں کهد رهے هیں' مسافر خانے بن رهے هیں .

निज़ाम—धीरे धीरे किस...... किस तरह वह मेरा दिल एक सीढ़ी से दूसरी और दूसरी से तीसरी पर चढ़ा रहे हैं. . . . अब गिरना .. ..हाँ, गिरना नही, चढ़ना चढ़ते ही जाना है, ... पाक . ... पाक से पाक जीने पर. (फिर गाने लगता है)

दुनिया है जजाल, रे बन्दे, दुनिया है जंजाल !
देख के चलना चाल, रे बन्दे, दुनया है जंजाल !
दुनिया है जजाल, रे बन्दे,
दुनिया है जंजाल !

[नेपथ्य मे कुछ लोगो की बात चीत का स्वर सुनाई देता है, जो इसी ओर आरहा है. निज़ाम गाना बन्द कर कुछ ध्यान से इस स्वर को सुनता है. स्वर को बहुत नज़दीक आते हुए सुन कर वह एक दरख्त की ओट में होजाता है. कुछ ही देर में कई हिन्दू मुसलमान नागरिकों का बात चीत करते हुए आना.]

एक हिन्दू—हाँ हाँ, मैं कहता हूँ, शेरशाह के राज की तरह कोई राज इस देश मे नही हुआ.

दूसरा हिन्दू—मैं भी मानता हूं, और उसका कारण है कि जिस तरह वह बिना किसी भी भेद भाव के राज करते है, उस प्रकार आज तक किसी ने नही किया.

एक मुसलमान—हाँ, इसमें तो शक नही कि उन के लिये हिन्दू मुसलमान सब एकसाँ हैं.

तीसरा हिन्दू—वह जितना आदर मसजिद का करते हैं, उतना ही मंदिर का.

نظام — دھیرے دھیرے کس .. کس طرح وہ میرا دل ایک سیڑھی سے دوسری اور دوسری سے تیسری پر چڑھا رہے ھیں . اب گرنا ... ہاں، گرنا نہیں، چڑھنا چڑھتے ھی جانا ھے ' .. پاک . .. پاک سے پاک زینے پر . (پھر گانے لگتا ھے)

دنیا ھے جنجال، رے بندے، دنیا ھے جنجال !
دیکھ کے چلنا چال، رے بندے، دنیا ھے جنجال !
دنیا ھے جنجال، رے بندے،
دنیا ھے جنجال !

[نیپتھیہ میں کچھ لوگوں کی بات چیت کا سور سنائی دیتا ھے، جو اسی اور آرھا ھے . نظام گانا بند کر کچھ دھیان سے اس سور کو سنتا ھے . سور کو بہت نزدیک آتے ھوئے سنکر وہ ایک درخت کی اوٹ میں ھوجاتا ھے . کچھ ھی دیر میں کئی ھندو مسلمان ناگرکوں کا بات چیت کرتے ھوئے آنا .]

ایک ھندو — ہاں ہاں، میں کہتا ھوں، شیر شاہ کے راج کی طرح کوئی راج اس دیش میں نہیں ھوا .

دوسرا ھندو — میں بھی مانتا ھوں اور اسکا کارن ھے کہ جس طرح وہ بنا کسی بھی بھید بھاؤ کے راج کرتے ھیں، اس پرکار آج تک کسی نے نہیں کیا .

ایک مسلمان — ہاں، اس میں تو شک نہیں کہ اُن کے لئے ھندو مسلمان سب یکساں ھیں .

تیسرا ھندو — وہ جتنا آدر مسجد کا کرتے ھیں، اُتنا ھی مندر کا .

मिटने वाली दुनिया से क्या मन को अपने लगाना
[redacted] अपनी संभाल, रे बन्दे,
दुनिया है जंजाल !

निजाम—भाई साहब तो अपनी रिआया से ही मुहब्बत कर सकते हैं, मुग़ल उनके दुशमन हैं इस लिये वह उनसे नफरत करते हैं, लेकिन मेरे...मेरे लिये तो सभी आदमी भाई जान और सभी औरतें लाड की मानिन्द प्यार ..... मुहब्बत करने की चीज हो जायेंगे. हाँ, लाड की मुहब्बत में, गुरुजी के लफ्जो मे मेरे दिल मे जो 'वासना थी वह.. ...वह इस मुहब्बत में न रहेगी. (फिर गाता है)

दुनिया है जंजाल ....

मन की आँखो पर जो बँधी थी मोह जाल की पट्टी
जब से खुली है देख रहा हूँ सब धोके की टट्टी
इसका रोग न पाल, रे बन्दे,
दुनिया है जंजाल !

निजाम—लड़ाई न हुई, मैं भाई जान के लिये लड़कर न मर सका .. लाड के बिना जीना मुशकिल था, खुदकुशी करने की कोशिश की, पर उसी वक़्त गुरुजी मिल गये. और ..... और क्या कर डाला उन्हों ने मेरा. (फिर गाता है.)

दुनिया है जंजाल ..

हर नारी के रूप में उसका जलवा देख रहा हूँ
अब अपने दुश्मन को भी भाई सा देख रहा हूँ
सब में वही जमाल, रे बन्दे
दुनिया है जंजाल !

مٹنے والی دنیا سے کیا من کو اپنے لگانا
روح کو اپنی سنبھال' رے بندے'
دنیا ہے جنجال !

نظام — بھائی صاحب تو اپنی رعایا سے ہی محبت کرسکتے ہیں' مغل ان کے دشمن ہیں اسلئے وہ ان سے نفرت کرتے ہیں' لیکن میرے ...... میرے لئے تو سبھی آدمی بھائی جان اور سبھی عورتیں لاڈ کی مانند پیار .. محبت کرنے کی چیز ہوجائیں گے. ہاں' لاڈ کی محبت میں' گروجی کے لفظوں میں' میرے دل میں جو 'واسنا' تھی وہ......وہ اس محبت میں نہ رہے گی. (پھر گاتا ہے)

دنیا ہے جنجال ....

من کی آنکھوں پر جو بندھی تھی موہ جال کی پٹی
جب سے کھلی ہے دیکھ رہا ہوں سب دھوکے کی ٹٹی
اس کا روگ نہ پال' رے بندے'
دنیا ہے جنجال !

نظام — لڑائی نہ ہوئی' میں بھائی جان کے لئے لڑکر نہ مرسکا ..... لاڈ کے بنا جینا مشکل تھا' خودکشی کرنے کی کوشش کی پر اسی وقت گروجی مل گئے. اور ...... اور کیا کر ڈالا انھوں نے میرا. (پھر گاتا ہے.)

دنیا ہے جنجال ....

ہر ناری کے روپ میں اس کا جلوہ دیکھ رہا ہوں
اب اپنے دشمن کو بھی بھائی سا دیکھ رہا ہوں
سب میں وہی جمال' رے بندے
دنیا ہے جنجال !

हाथ में मनका और बायें हाथ में कमण्डल. इस वेष में भी निज़ाम सुन्दर दिखाई पड़ता है. उसका गीत आगे बढ़ता है.]

दुनिया है जंजाल ... ..

दुनिया की सुन्दरता फानी, आज का जीवन कल है कहानी.
अब तो मन मे बैठ गई है, अपने गुरू की प्यारी बानी
तोड़ दे मोह का जाल, रे बन्दे,
दुनिया है जंजाल !

निज़ाम—गुरूजी का यह फ़िक़रा 'सर्वंखल्विदं ब्रह्म' रट...... हाँ, अच्छी तरह रट लेने पर भी, इसका मतलब उनके समझाने ....न जाने कितनी दफ़ा अच्छी तरह समझाने पर भी समझ में न आया . लेकिन .. . लेकिन जब से उन्होने यह गीत बनाया है (गाता है)

दुनिया है जंजाल .. . ..

मन की आँखे देख रही हैं जिस से जग मे उजाला
सब से बड़ा सुन्दर है सुन्दरता को रचने वाला
उसी से अपना सवाल, रे बन्दे,
दुनिया है जंजाल !

निज़ाम—जब से हर एक आदमी को भाई साहब की शक्ल मे, हर एक औरत को लाड की सूरत मे देखने की कोशिश शुरू कराई है तब से इस कोशिश मे ज़रूर कामयाबी मिल रही है .. ..और पूरी ... पूरी पूरी कामयाबी के बाद क्या होगा ? (फिर गाता)

दुनिया है जंजाल ....

मिट्टी का यह बदन है एक दिन मिट्टी में मिल जाना

ھاتھ میں ملکا اور بائیں ھاتھ میں کمنڈل . اس ویش میں بھی نظام سندر دکھائی پڑتا ھے . اس کا گیت آگے بڑھتا ھے]

دنیا ھے جنجال .. . .

دنیا کی سندرتا فانی' آج کا جیون کل ھے کہانی
اب تو من میں بیٹھ گئی ھے' اپنے گرو کی پیاری بانی
توڑ دے موہ کا جال' رے بندے'
دنیا ھے جنجال !

نظام — گروجی کا یہ فقرہ ' سروں کھل ودن برھم ' رٹ ...... ھاں ' اچھی طرح رٹ لینے پر بھی' اسکا مطلب ان کے سمجھانے . . .. نہ جانے کتنی دفعہ اچھی طرح سمجھانے پر بھی سمجھ میں نہ آیا . ... لیکن .. . لیکن جب سے اُنھوں نے یہ گیت بنایا ھے (گاتا ھے)

دنیا ھے جنجال .. .

من کی آنکھیں دیکھ رھی ھیں جس سے جگ میں اُجالا
سب سے بڑا سندر ھے' سندرتا کو رچنے والا
اُسی سے اپنا سوال' رے بندے'
دنیا ھے جنجال !

نظام — جب سے ھر ایک آدمی کو بھائی صاحب کی شکل میں' ھر ایک عورت کو لاڈ کی صورت میں دیکھنے کی کوشش شروع کرائی ھے' تب سے اِس کوشش میں ضرور کامیابی مل رھی ھے ... اور پوری . پوری پوری کامیابی کے بعد کیا ھوگا ؟ (پھر گاتا ھے)

دنیا ھے جنجال ....

مٹی کا یہ بدن ھے ایک دن مٹی میں مل جانا

शेर शाह

(सेठ गोविन्द दास)

उपसंहार

स्थान—दिल्ली के बाहर का एक मार्ग.

समय—प्रातः काल.

[दूर पर शेरशाह के समय के दिल्ली नगर की कुछ इमारतें दिखाई पड़ती हैं. इनमें सबसे ऊँची कुतुब मीनार और उसी के निकट शेरशाह के वक्त के क़िले का कुछ बाहरी भाग दिखता है. मार्ग निर्जन है और दोनो ओर ऊँचे ऊँचे वृक्षों की छाया से आच्छादित. नेपथ्य मे गान की धुन सुन पड़ती है स्वर निज़ाम का है]

गीत

दुनिया है जंजाल, रे बन्दे, दुनिया है जंजाल !
नज़र नज़र को क़दम कदम पर रूप रिझाने वाले
डगर डगर मे जाल बिछे हैं मन को फँसाने वाले
देख के चलना चाल, रे बन्दे,
दुनिया है जंजाल !

[गाते गाते निज़ाम का आना. उसके स्वर से तो वह पहचान लिया जाता है परन्तु स्वरूप और वेष मे इतना अन्तर हो गया है कि देखकर उसको पहचानना बहुत कठिन है. सर के बाल लम्बे होगये हैं, जो पीठ और कन्धो पर फैले हुए हैं. मूंछें भी बड़ी बड़ी हैं और-दाढ़ी भी रख ली गई है दाढ़ी छाती तक बढ़ आई है. उसका वेष फ़क़ीरी है. पैर तक लम्बा हरे रंग का चोग़ा, दाहने

شیر شاہ

(سیٹھ گوبند داس)

اپسنہار

ستھان — دلی کے باہر کا ایک مارگ .
سمے — پراتہ کال .

[دور پر شیر شاہ کے سمے کے دلی نگر کی کچھ عمارتیں دکھائی پڑتی ہیں . ان میں سب سے اونچی قطب مینار اور اُسی کے نکٹ شیرشاہ کے وقت کے قلعے کا کچھ باہری بھاگ دیکھتا ہے . مارگ نرجن ہے اور دونوں اور اونچے اونچے ورکشوں کی چھایا سے آچھادت . نیپتھیہ میں گان کی دھن سن پڑتی ہے . سور نظام کا ہے]

گیت

دنیا ہے جنجال رے بندے دنیا ہے جنجال !
نظر نظر کو قدم قدم پر روپ ریجھانے والے
ڈگر ڈگر میں جال بچھے ہیں من کو پھنسانے والے
دیکھ کے چلنا چال ' رے بندے '
دنیا ہے جنجال !

[گاتے گاتے نظام کا آنا . اس کے سور سے تو وہ پہچان لیا جاتا ہے پرنتو سروپ اور ویش میں اتنا انتر ہوگیا ہے کہ دیکھکر اسکو پہچاننا بہت کٹھن ہے . سر کے بال لمبے ہوگئے ہیں ' جو پیٹھ اور کندھوں پر پھیلے ہوئے ہیں . مونچھیں بھی بڑی بڑی ہیں اور داڑھی بھی رکھ لی گئی ہے . داڑھی چھاتی تک بڑھ آئی ہے . اسکا ویش فقیری ہے . پیر تک لمبا ہرے رنگ کا چوغہ ' داہنے

उठता और न हिन्दी के नाम पर चालू शब्दो को निकाल कर उनकी जगह कठिन संस्कृत शब्द ठूंसे जा सकते. और फिर हिन्दी उर्दू दोनो अपने मौजूदा रूप मे तरक़्क़ी करती रहती क्योकि हिन्दुस्तानी को अपनी इन दोनो शैलियो की तरक़्क़ी से जलन न होती बल्कि ख़ुशी ही होती. एक बड़ा फ़ायदा यह होता कि अपने उदार स्वभाव के कारन हिन्दुस्तानी हर भाषा के मीठे, सरल और चालू शब्दो को पचाती जाती. अब तो हिन्दी और उर्दू मे समय के साथ साथ अलगाव बढ़ता ही जायगा ऐसा मलूम होता है. लेकिन अब भी यह अलगाव, यह दूरी कम हो सकती है अगर उर्दू वाले जल्दी से जल्दी हिन्दी को अपना ले, हिन्दी में लिखने लगें और उर्दू का सारा साहित्य हिन्दी हरूफ़ में छाप डालें.

ऐसा करके वह हिन्दी पर एक बड़ा एहसान भी करेंगे. सरल भाषा में हर हिन्दी पढ़ा लिखा आदमी उस साहित्य को पढ़ेगा और इस तरह हिन्दी को संस्कृतमयी बनाने की कोशिश करने वालो को मजबूर होकर उसी भाषा में ख़ुद लिखना होगा जिसके पढ़ने वालों की तादाद बड़ी होगी और पॉच दस बरस मे आज की राज भाषा हिन्दी सही मानों में राष्ट्र भाषा बन जायगी और चाहे उसका नाम यही रहे जो आज है, पर वह होगी वही हिन्दुस्तानी जिसके लिये गांधी जी मरते दम तक कोशिश करते रहे.

اُٹھتا اور نہ هندی کے نام پر چالو شبدوں کو نکال کر ان کی جگہ کٹھن سنسکرت شبد ٹھونسے جا سکتے . اور پھر هندی اردو دونوں اپنے موجودہ روپ میں ترقی کرتی رهیں کیونکہ هندستانی کو اپنی ان دونوں شیلیوں کی ترقی سے جلن نہ هوتی بلکہ خوشی هی هوتی. ایک بڑا فائدہ یہ هوتا کہ اپنے اُدار سوبھاؤ کے کارن هندستانی هر بھاشا کے میٹھے' سرل اور چالو شبدوں کو پچاتی جاتی . اب تو هندی اور اُردو میں سمے کے ساتھ ساتھ الگاؤ بڑھتا هی جائیگا ایسا معلوم هوتا هے . لیکن اب بھی یہ الگاؤ' یہ دوری کم هو سکتی هے اگر اُردو والے جلدی سے جلدی هندی کو اپنالیں' هندی میں لکھنے لگیں اور اُردو کا سارا ساهتیہ هندی حروف میں چھاپ ڈالیں

ایسا کرکے وہ هندی پر ایک بڑا احسان بھی کریں گے . سرل بھاشا میں هر هندی پڑھا لکھا آدمی اُس ساهتیہ کو پڑھے گا اور اسطرح هندی کو سنسکرت مئی بنانے کی کوشش کرنے والوں کو مجبور هوکر اُسی بھاشا میں خود لکھنا هوگا جس کے پڑھنے والوں کی تعداد بڑی هوگی اور پانچ دس برس میں آج کی بھاشا هندی سچی مانوں میں راشٹر بھاشا بن جائیگی اور چاهے اُسکا نام یهی رهے جو آج هے' پر وہ هوگی وهی هندستانی جسکے لئے گاندھی جی مرتے دم تک کوشش کرتے رهے

उर्दू के हामियों का यह कहना कि विधान सभा ने उर्दू को किसी सूबे की भी भाषा न मान कर उर्दू के साथ अन्याय किया है, बिलकुल ग़लत नहीं कहा जा सकता. यह बात दूसरी है कि उत्तर प्रदेश की सरकार ने जब यह फ़ैसला किया कि सरकारी कामों में उर्दू लिपि का इस्तेमाल ख़तम कर दिया जायगा तो उस के इस फ़ैसले के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने वाले मुसलमानों को यह कहकर ख़ामोश कर दिया गया कि यह बातें फ़िरक़ा वाराना हैं. लेकिन आज यही आवाज़ पूरबी पंजाब से उठ रही है पूरबी पंजाब में पहले सारा काम उर्दू में होता था. पर उर्दू चूँकि पाकिस्तान की सरकारी भाषा बन गई थी और पाकिस्तान की तरफ़ से हिन्दुओं और सिक्खों के दिलों में बड़ा ग़ुस्सा था इस लिये उस समय जोश में उर्दू के बायकाट और हिन्दी को सरकारी भाषा बनाने का स्वागत किया गया. लेकिन अब, जब हिन्दी से सीधा काम पड़ रहा है और बिलकुल नई भाषा और लिपि के इस्तेमाल में कठिनाई होरही है तो सरकार का यह फ़ैसला ज़बरदस्ती मालूम हो रहा है. अब यह ख़बरें आरही हैं कि पूरबी पंजाब के कुछ लोग फिर से सरकारी दफ़्तरों में उर्दू को भी जगह देने की मांग कर रहे है. यह लोग मुसलमान नहीं हैं और इस लिये इन पर फ़िरक़ा परस्ती का इलज़ाम भी नहीं लगाया जा सकता.

कहा नहीं जा सकता कि वहाँ की जनता की मुश्किलों को देखते हुए उर्दू को सरकारी दफ़्तरों में कोई जगह मिलेगी या नहीं पर इतना तो ज़ाहिर होगया कि अगर हिन्दुस्तानी को राज भाषा मान लिया जाता तो आज यह दिक़्क़तें न पैदा होतीं. न लिपि का झगड़ा

اُردو کے حامیوں کا یہ کہنا کہ ودھان سبھا نے اُردو کو کسی صوبے کی بھی بھاشا نہ مانکر اُردو کے ساتھ انیائے کیا ہے' بالکل غلط نہیں کہا جاسکتا ۔ یہ بات دوسری ہے کہ اُتر پردیش کی سرکار نے جب یہ فیصلہ کیا کہ سرکاری کاموں میں اُردو لپی کا استعمال ختم کردیا جائے گا تو اس کے اِس فیصلہ کے خلاف آواز اُٹھانے والے مسلمانوں کو یہ کہکر خاموش کردیا گیا کہ یہ باتیں فرقہ وارانہ ہیں۔ لیکن آج یہی آواز پوربی پنجاب سے اُٹھ رہی ہے۔ پوربی پنجاب میں پہلے سارا کام اُردو میں ہوتا تھا پر اُردو چونکہ پاکستان کی سرکاری بھاشا بن گئی تھی اور پاکستان کی طرف سے ہندوؤں اور سکھوں کے دلوں میں بڑا غصہ تھا اسلئے اس سمے جوش میں اُردو کے بائیکاٹ اور ہندی کو سرکاری بھاشا بنانے کا سواگت کیا گیا ۔ لیکن اب' جب ہندی سے سیدھا کام پڑ رہا ہے اور بالکل نئی بھاشا اور نئی لپی کے استعمال میں کٹھنائی ہو رہی ہے تو سرکار کا یہ فیصلہ زبردستی معلوم ہو رہا ہے ۔ اب یہ خبریں آرہی ہیں کہ پوربی پنجاب کے کچھ لوگ سرکاری دفتروں میں اُردو کو بھی جگہ دینے کی مانگ کر رہے ہیں یہ لوگ مسلمان نہیں ہیں اور اس لئے ان پر فرقہ پرستی کا الزام بھی نہیں لگایا جاسکتا

کہا نہیں جا سکتا کہ وہاں کی جانتا کی مشکلوں کو دیکھتے ہوئے اردو کو سرکاری دفتروں میں کوئی جگہ ملے گی یا نہیں پر اتنا تو ظاہر ہو گیا کہ اگر ہندستانی کو راج بھاشا مان لیا جاتا تو آج یہ دقتیں نہ پیدا ہوتیں نہ لپی کا جھگڑا

तो फिर हिन्दुस्तानी का इस भारती संस्कृति मे हम क्या स्थान रक्खे ? अगर हिन्दी, हिन्दी ही के रूप मे और उर्दू, उर्दू ही के रूप मे बढ़ती रही तो फिर हिन्दुस्तानी कैसे तरक्की करेगी ? हिदुस्तानी के सम्बंध मे भी कुछ लाग यह समझते है कि हिन्दी और उर्दू के मरने से ही उसे तरक्की मिल सकती है. लेकिन यह ख़याल गलत है.

हिन्दुस्तानी के सामने तो यह सवाल ही नही पैदा होना कि वह उस हिन्दी और उस उर्दू को मार डाले जिन्हो ने उस को जन्म दिया है, पाला पासा है और अब तक उस की जो तरक्की हुई है, उस मे मदद दी है. हिन्दुस्तानी भाषा तो इन दोनो माताओ की उन्नति से हो तरक्की कर सकती है. यह जरूर है कि हिन्दुस्तानी की एक मा को हिन्दुस्तान के और दूसरी को पाकिस्तान के राज सिहासन पर बैठा दिया गया है और दोनो तरफ नासमझी से यह कोशिश हो रही है कि अब यह रानियाँ अपनी दूसरी छोटी बहनो को लौडियाँ बना कर रक्खे बल्कि हो सके तो उन को देश निकाला देदे. लेकिन ऐसा होना कठिन है.

पाकिस्तान मे सरकारी ताकत को, बंगाली भाषा को मार कर उर्दू को उस की जगह दिलाने में, जो हार खानी पडी उस का हाल हम ऊपर लिख चुके हैं. हिन्दुस्तान मे भी तंग नजरी के कारन और वोटो के बल पर उर्दू लिपि को सरकारी दफ्तरो से निकाल दिया गया पर अब सरकार के इस फैसले के खिलाफ आवजे उठने लगी हैं.

تو پھر هندستاني کا اِس بھارتی سنسکرتی میں هم کیا استھان رکھیں ؟ اگر هندي، هندی هی کے روپ میں اور اُردو، اُردو هی کے روپ میں بڑھتی رهی تو پھر هندستانی کیسے ترقی کرے گی ؟ هندستانی کے سمبندھ میں بھی کچھ لوگ یہ سمجھتے هیں کہ هندی اور اردو کے مرنے سے هي اُسے ترقی مل سکتي ھے . لیکن یہ خیال غلط ھے .

هندستانی کے سامنے تو یہ سوال هی نہیں پیدا هوتا کہ وہ اُس هندي اور اُس اُردو کو مار ڈالے جنھوں نے اسکو جنم دیا ھے، پالا پوسا ھے اور اب تک اسکی جو ترقی هوئي ھے اس میں مدد دی ھے . هندستاني بھاشا تو اپنی اِن دونوں ماتاؤں کی اُنتی سے هی ترقی کرسکتي ھے . یہ ضرور ھے کہ هندستانی کي ایک ماں کو هندستان کے اور دوسری کو پاکستان کے راج سنگھاسن پر بٹھا دیا گیا ھے اور دونوں طرف نا سمجھي سے یہ کوشش هو رهي ھے کہ اب یہ رانیاں اپنی دوسری چھوٹی بہنوں کو لونڈیاں بناکر رکھیں بلکہ هو سکے تو اُن کو دیش نکالا دے دیں . لیکن ایسا هونا کٹھن ھے .

پاکستان میں سرکاري طاقت کو بنگالی بھاشا کو مار کر اردو کو اسکي جگہ دلانے میں جو هار کھانی پڑي اسکا حال هم اوپر لکھ چکے هیں . هندستان میں بھی تنگ نظری کے کارن اور ووٹوں کے بل پر اردو لپی کو سرکاری دفتروں سے نکال دیا گیا پر اب سرکار کے اس فیصلہ کے خلاف آوازیں اٹھنے لگی هیں .

यही बातें उर्दू के प्रेमियों को भी सोचनी हैं. अगरचे वह अपनी बात साफ़ तौर पर बयान करना मसलहत के ख़िलाफ़ समझते हैं लेकिन उनके दिल मे वही पुराना ख़याल अब भी धॅसा हुआ है कि उनकी उर्दू उस वक्त तक बढ़ नहीं सकती, जब तक कि किसी न किसी तरह यानी सियासत के उलट फेर या "ख़ुदाई मदद" से कोई ऐसा मज़बूत हाथ न पैदा होजाय जो हिन्दी का गला घोट दे.

लेकिन पूरबी पाकिस्तान का तजरबा हमारे सामने है. जिनाह साहब जैसी शख़्सियत ने, जिससे कम से कम पाकिस्तान मे तो बहुत ज्यादा लोग मुहब्बत करते थे और जिसकी बात मानी जाती थी, जब बंगालियों पर उर्दू जबरदस्ती ठूॅसना चाही तो आख़िर उनको हार मानकर पीछे क़दम हटाना पड़ा. क्योंकि इस मामले मे जिनाह साहब की एक नहीं चली और बंगालियों ने साफ़ कह दिया कि वह उर्दू को हरगिज़ नहीं अपनायेंगे और बंगाली को हरगिज़ नहीं छोड़ेंगे.

इस तरह एक मज़बूत हाथ पैदा तो हुआ था जिस ने एक ज़बान का गला घोट कर उर्दू को बढ़ाना चाहा. पर नतीजा क्या निकला ? इस से उर्दू को फ़ायदा हुआ या नुक़सान. बिलाशुभा नुक़सान ही हुआ, क्योंकि चार करोड़ की आबादी को, जिसे उर्दू से कोई ख़ास दुश्मनी न थी और जिसे आज़ादी के तरीक़े से उर्दू का क़द्रदान बना या जा सकता था, आख़िरकार उर्दू के दुश्मनो की सफ़ में खड़ा करने के लिये उकसा दिया गया

इस तजरबे में उन सभी लोगों के लिये बड़े अहम सबक छिपे हुए हैं जो यह समझते हैं कि कोई ज़बान आजकल के ज़माने में भी ज़बरदस्ती फैलाई या मारी जा सकती है.

یہی باتیں اُردو کے پریمیوں کو بھی سوچنی ہیں . اگرچہ وہ اپنی بات صاف طور پر بیان کرنا مصلحت کے خلاف سمجھتے ہیں . لیکن ان کے دل میں وہی پرانا خیال اب بھی دھنسا ہوا ہے کہ ان کی اُردو اس وقت تک بڑھ نہیں سکتی جب تک کہ کسی نہ کسی طرح یعنی سیاست کے الٹ پھیر یا " خدا کی مدد " سے کوئی ایسا مضبوط ہاتھ نہ پیدا ہوجائے جو ہندی کا گلا گھونٹ دے .

لیکن پوربی پاکستان کا تجربہ ہمارے سامنے ہے . جناح صاحب جیسی شخصیت نے، جس سے کم سے کم پاکستان میں تو بہت زیادہ لوگ محبت کرتے تھے اور جس کی بات مانی جاتی تھی، جب بنگالیوں پر اُردو زبردستی ٹھونسنی چاہی تو آخر ان کو ہار مان کر پیچھے قدم ہٹانا پڑا . کیونکہ اس معاملہ میں جناح صاحب کی ایک نہیں چلی اور بنگالیوں نے صاف کہہ دیا کہ وہ اُردو کو ہرگز نہیں اپنائیں گے اور بنگالی کو ہرگز نہیں چھوڑیں گے .

اسطرح ایک مضبوط ہاتھ پیدا تو ہوا تھا جس نے ایک زبان کا گلا گھونٹ کر اُردو کو بڑھانا چاہا . پر نتیجہ کیا نکلا . اس سے اُردو کو فائدہ ہوا یا نقصان . بلا شبہ نقصان ہی ہوا ، کیونکہ چار کروڑ آبادی کو، جسے اُردو سے کوئی خاص دشمنی نہ تھی اور جسے آزادی کے طریقہ سے اُردو کا قدردان بنایا جا سکتا تھا ، آخرکار اُردو کے دشمنوں کی صف میں کھڑا کرنے کے لئے اُکسا دیا گیا .

اس تجربے میں اُن سبھی لوگوں کے لئے بڑے اہم سبق چھپے ہوئے ہیں جو یہ سمجھتے ہیں کہ کوئی زبان آجکل کے زمانے میں بھی زبردستی پھیلائی یا ماری جا سکتی ہے .

अनेक भाषायें तरक़्क़ी करेंगी, उसके अन्दर सभ्यता और संस्कृति के जितने भी रूप हैं सभी की तरक़्क़ी होगी

तो अब यह साफ हो जाता है कि हिन्दी के आजकल के प्रचारक हिन्दी की तरक्क़ी का जो तरीक़ा बताते हैं वह गलत है यह हो ही नहीं सकता कि अकेली हिन्दी तरक़्क़ी करे या भारत का सिर्फ कोई एक या दो सम्प्रदाय तरक्की करें और बाक़ी पिछड़े रह जायें. इस तरह की आगे पीछे रखने वाली उन्नति जितनी हो सकती थी हो चुकी. अब दुनिया मे कही भी ऐसी तरक्की की सम्भावना ही नहीं रही है. हमारे देश मे भी चिंवटी की चाल मे जो तरक़्क़ी हुई है और हो रही है वह इसी तरह की है और हम रोज देख रहे हैं कि ऐसी तरक़्क़ी और विकास के बरसो के बाद भी कोई ख़ास फरक़ नहीं होगा.

आज तो हम इतिहास के उस दौर में आ गये हैं कि हिन्दी वाले दूसरी भाषाओं को दबाकर चलना चाहेंगे और उसके प्रचारक दूसरी भाषाओं और संस्कृतियों को दबाने का जतन करेंगे तो उनके जतन से हिन्दी बढ़ेगी नहीं बल्कि उसको उलटा नुक़सान पहुँचेगा. आज हमारे देश में हिन्दी. उर्दू, बंगाली, मराठी, गुजराती और दक्खिनी भाषायें एक साथ ही बढ़ सकती हैं अगर हम सचमुच हिन्दी के प्रेमी हैं और उसको फूलता फलता देखना चाहते हैं तो हमको कुछ ऐसा करना होगा जिससे सारी भाषाओं की तरक़्क़ी हो, चाहे हम उन्हें जानते न हों न उनका प्रयोग करते हों. हिन्दी के सच्चे प्रेम का अर्थ आज यह है कि हम आज पूरी भारती जनता और पूरी भारती संस्कृति और उसके हर रूप और शैली से प्रेम करें.

انیک بهاشائیں ترقي کریںگی' اس کے اندر سبهیتا اور سنسکرتی کے جتنے بهی روپ هیں سبهی کی ترقی هوگی .

تو اب یہ صاف هوجاتا هے کہ هندي کے آجکل کے پرچارک هندي ترقی کا جو طریقہ بتاتے هیں وہ غلط هے . یہ هو هی نہیں سکتا کہ اکیلی هندی ترقي کرے' یا بهارت کا صرف کوئی ایک یا دو سمپر دائے ترقي کریں اور باقي پچهڑے رہ جائیں . اس طرح کی آگے پیچهے رکهنے والی اُنتی تو جتنی هوسکتی تهی هوچکی . اب نہ دنیا میں کہیں بهي ایسي ترقی کی سمبهاونا هي نہیں رهي هے . همارے دیش میں بهی چیونٹی کی چال سے جو ترقی هوئي هے اور هو رهي هے وہ اسی طرح کی هے اور هم روز دیکه رهے هیں کہ ایسی ترقي اور وکاس کے برسوں کے بعد بهی کوئی خاص فرق نہیں هوگا .

آج تو هم اتہاس کے اس دور میں آگئے هیں کہ هندي والے دوسری بهاشاؤں کو دبا کر چلنا چاهیں گے اور اس کے پرچارک دوسری بهاشاؤں اور سنسکرتیوں کو دبانے کا جتن کرینگے تو اُنکے جتن سے هندی بڑهے گی نہیں بلکہ اس کو الٹا نقصان پہنچے گا . آج همارے دیش میں هندی' اردو' بنگالی' مراٹهی' گجراتی اور دکهنی بهاشائیں ایک ساته هي بڑه سکتی هیں . اگر هم سچ مچ هندی کے پریمی هیں اور اسکو پهولتا پهلتا دیکهنا چاهتے هیں تو هم کو کچه ایسا کرنا هوگا جس سے ساری بهاشاؤں کی ترقی هو' چاهے هم انہیں جانتے نہ هوں نہ انکا پریوگ کرتے هوں هندی کے سچے پریم کا ارته آج یہ هے کہ هم آج پوری بهارتی جنتا اور پوری بهارتی سنسکرتي اور اس کے هر روپ اور شیلي سے پریم کریں .

जरूरी यह है कि फैले. उसमें गंभीरता, शक्ति, सुन्दरता और पूर्णता पैदा हो. तभी हम कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा सचमुच प्रगति की ओर जा रही है.

तो इस सबका मतलब क्या निकला. इसका मतलब यह हुआ कि जब तक पूरे देश की आर्थिक और समाजी उन्नति नहीं होती, जब तक देश का पूरा जीवन और उसका हर पहलू सुधरता नही, उस वक़्त तक सिर्फ़ एक ही सिम्त मे तरक्क़ी करना नामुमकिन है, चाहे उसके बारे मे कितना ही गलत प्रचार क्यो न किया जाय. प्रगति कभी भी केवल प्रचार ही से नही होती.

जब हम यह मान लेते हैं कि किसी एक भाषा या तहज़ीब के किसी एक पहलू मे उस वक्त तक तरक्क़ी नही हो सकती जब तक कि सारा जीवन तरक्क़ी न करे, हमारी महान जनता की आर्थिक और समाजी हालत न बदले, उसकी पूरी तहज़ीब और संस्कृति को बेरोक टोक और किसी समाजी बाधा के बिना आगे बढ़ने और फैलने का रास्ता न मिले, तो उसी के साथ साथ हमको यह भी मानना पड़ेगा कि ऐसी तरक्की किसी ज़ोर और दबाव के बल पर नही हो सकती जिस जनता को आर्थिक तौर पर पूरा इतमानान और संतोष हो उसे कोई मजबूर नही कर सकता कि वह अपनी बात इस ज़बान में कहे, और उस ज़बान मे न कहे अपनी संस्कृति को बनाने बढ़ाने और निखारने के लिये कहाँ से सहायता ले, इतिहास के किस दौर को अपनाये और किसको छोड़े, अगर जनता बिलकुल सच्चे मानों में स्वतंत्र होगी, उसका जीवन हर तरह तरक़्क़ी कर रहा होगा, तो उसके अंदर बोली जाने वाली

ضروری یہ ھے کہ پھیلے . اس میں گمبھیرتا' شکتی' سندرتا اور پورنتا پیدا ھو . تبھی ھم کہہ سکتے ھیں کہ ھندی بھاشا سچ مچ پرگتی کی اور جارھی ھے .

تو اس سب کا مطلب کیا نکلا . اس کا مطلب یہ ھوا کہ جب تک پورے دیش کی آرتھک سماجی اُنتی نہیں ھوتی جب تک دیش کا پورا جیون اور اس کا ھر پہلو سدھرتا نہیں' اُس وقت تک صرف ایک ھی سمت میں ترقی کرنا ناممکن ھے' چاھے اسکے بارے میں کتنا ھی غلط پرچار کیوں نہ کیا جائے . پرگتی کبھی بھی کیول پرچار ھی سے نہیں ھوتی .

جب ھم یہ مان لیتے ھیں کہ کسی ایک بھاشا یا تہذیب کے کسی ایک پہلو میں اسوقت تک ترقی نہیں ھوسکتی جب تک کہ سارا جیون ترقی نہ کرے' ھماری مہان جنتا کی آرتھک سماجی حالت نہ بدلے' اس کی پوری تہذیب اور سنسکرتی کو بے روک ٹوک اور کسی سماجی بادھا کے بنا آگے بڑھنے اور پھیلنے کا راستہ نہ ملے' تو اسی کے ساتھ ساتھ ھم کو یہ بھی ماننا پڑے گا کہ ایسی ترقی کسی زور اور دباؤ کے بل پر نہیں ھوسکتی . جس جنتا کو آرتھک طور پر پورا اطمینان اور سنتوش ھو اُسے کوئی مجبور نہیں کرسکتا کہ وہ اپنی بات اِس زبان میں کہے اور اُس زبان میں نہ کہے . اپنی سنسکرتی کو بنانے' بڑھانے اور نکھارنے کے لئے کہاں سے سہایتا لے' اتہاس کے کس دور کو اپنائے اور کس کو چھوڑے' اگر جنتا بالکل سچے معنوں میں سوتنتر ھوگی' اُس کا جیون ھر پرکار سے ترقی کر رھا ھوگا' تو اس کے اندر بولی جانے والی

नहीं—आज हमारे देश की हालत बिलकुल ऐसी नहीं है सारे देश की बात तो जाने दीजिये, केवल तीन प्रान्तों को ही ले लीजिये जिनमे जनता की मातृ-भाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानी या उर्दू है और इस लिये जिन में हिन्दी ही मे पूरी आबादी को शिक्षा देना कुछ ज्यादा कठिन भी नहीं है इन प्रान्तो मे भी अभी हम साफ तौर पर नहीं देख पाते कि आखिर इतने बरसो मे यहां का पूरी न सही आधी आबादी ही लिखन पढ़ने के क़ाबिल बन जायगी.

इसलिये अब इस सवाल को अगर अपने असली रूप मे रखिये तो बहुत सी उलझने दूर हो जाती है. यह बात साफ तौर पर समझ मे आ जाती है कि हिन्दी भाषा भी केवल हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रचार से प्रगति की तरफ नहीं जायगी उसको तरक़्क़ी हासिल होगी केवल उसी वक्त जबकि हिन्दी मे अधिक से अधिक लोग न सिर्फ दस्तखत कर सके और एकाध शब्द पढ़ लेने की काबलियत पैदा कर ले बल्कि सचमुच पढ़ लिख सके और पढ़े भी अच्छे और ऊंचे क़िस्म के हिन्दी के माहवार, हफ़्तावार और रोजाना अखबार. यह पत्र आज से कहीं ज्यादा तादाद मे निकले. आज के मुक़ाबले मे हिन्दी की सैकड़ो गुना अधिक और अच्छी किताबे छपे दुनिया के साहित्य मे उपन्यास, नाटक, कहानी, सामाजिक और साहित्यिक आलोचना का जो एक ऊंचा स्थान बन चुका है उस पर पूरी उतरने वाली बल्कि उससे भी आगे बढ़ जाने वाली कहानियाँ, नाटक, उपन्यास, आलोचनाये, साइंस की किताबे वगैरा लिखी जायं हिन्दी का गद्य और पद्य निखरे, साफ हो और उससे भी

نہیں—آج ہمارے دیش کی حالت بالکل ایسی نہیں ہے سارے دیش کی بات تو جانے دیجئے' کیول تین پرانتوں ہی کو لے لیجئے جن میں جنتا کی ماتر بھاشا ہندی یا ہندستانی یا اُردو ہے اور اس لئے جن میں ہندی ہی میں پوری آبادی کو شکشا دینا کچھ زیادہ کٹھن بھی نہیں ہے ان پرانتوں میں بھی ابھی ہم صاف طور پر نہیں دیکھ پاتے کہ آخر اتنے برسوں میں یہاں کی پوری نہ سہی آدھی آبادی ہی لکھنے پڑھنے کے قابل بن جائے گی

اس لئے اب اس سوال کو اگر اپنے اصلی روپ میں رکھئے تو بہت سی الجھنیں دور ہو جاتی ہیں. یہ بات صاف طور پر سمجھ میں آجاتی ہے کہ ہندی بھاشا بھی کیول ہندی ساہتیہ سمیلن کے پرچار سے پرگتی کی طرف نہیں جائیگی اس کو ترقی حاصل ہوگی کیول اسی وقت جب کہ ہندی میں ادھک سے ادھک لوگ نہ صرف دستخط کرسکیں اور ایک آدھ شبد پڑھ لینے کی قابلیت پیدا کرلیں بلکہ سچ مچ پڑھ لکھ سکیں اور پڑھیں بھی اچھے اور اونچے قسم کے ہندی کے ماہوار' ہفتہ وار اور روزانہ اخبار. یہ پتر آج سے کہیں زیادہ تعداد میں نکلیں آج کے مقابلہ میں ہندی کی سینکڑوں گنا ادھک اور اچھی کتابیں چھپیں. دنیا کے ساہتیہ میں اُپنیاس' ناٹک' کہانی' ساماجک اور ساہتیک آلوچنا کا جو ایک اونچا استھان بن چکا ہے اُس پر پوری اترنے والی بلکہ اس سے بھی آگے بڑھ جانے والی کہانیاں' ناٹک' اُپنیاس' آلوچنائیں' سائنس کی کتابیں وغیرہ لکھی جائیں. ہندی کا گدیہ اور پدیہ نکھرے' صاف ہو اور اس سے بھی

नहीं है कि हिन्दी को सारे मुल्क में फैलाया जाय और यह भी मान लें कि और सारी भाषाओं को मिटाना या कम से कम उन्हें हिन्दी से नीचे एक स्थान पर लाना जरूरी है तो भी क्या हम आजकल की हालत में हर देश वासी को हिन्दी की बिलकुल शुरू की शिक्षा देने की शक्ति भी रखते हैं ?

हिन्दुस्तानी के हक मे होने पर भी मै इस बात को कहीं ज्यादा पसन्द करूंगा कि हमारे देश का बच्चा बच्चा पढ़ा लिखा हुआ हो, चाहे वह किसी जबान मे भी हो. आज के अनपढ़ रहने से सब का हिन्दी ही मे पढ़ा होना तो कहीं अच्छा है, चाहे वह हिन्दी जबरदस्ती ही लागो पर ठूसी गई हो इसलिये इस सवाल से भी कि यह जबान हो या वह ज़बान हो कहीं ज्यादा अहम सवाल यह है कि सारे देश मे सौ फीसदी शिक्षा कैसे फैलाई जाय. आज तो हालत यह है कि देश के अन्दर सौ मे दस बारह से अधिक आदमी भी किसी तरह का पढ़ना लिखना नहीं जानते और ज्ञान और कला के तमाम दरवाजे उन पर बन्द हैं

अब जरा यह सोचिये कि सारी भाषाओ को मिटा कर या दबा कर भी हिन्दी भाषा ही मे सारे देश के बच्चो, जवानो और अनपढ़ लोगो को शिक्षा देने के लिये देश की कितनी उन्नति होनी चाहिये ? हमारे राष्ट्र को ऊपर से नीचे तक कितना सुखी और शक्तिवान होना चाहिये ? क्या इस समय हमारे अन्दर इतना बल है कि हम सारे देश को हिन्दी में शिक्षा देना तो दूर की बात है, हिन्दी में लिखने पढ़ने के जोग भी बना सकें ?

نہیں ہے کہ هندی کو سارے ملک میں پھیلایا جائے اور یہ بھی مان لیں کہ اور ساري بھاشاؤں کو مٹانا یا کم سے کم اُنہیں هندي کے نیچے ایک استھان پر لانا ضروری ہے' تو بھی کیا هم آجکل کی حالت میں هر دیش واسي کو هندي کی بالکل شروع کی شکشا دینے کي شکتی بھی رکھتے هیں ؟

هندستانی کے حق میں هونے پر بھی میں اس بات کو کہیں زیادہ پسند کرونگا کہ هسارے دیش کا بچہ بچہ پڑھا لکھا هوا هو' چاهے وہ کسی زبان میں بھي هو. آجکے اَن پڑھ رهنے سے سب کا هندي هی میں پڑھا هونا تو کہیں اچھا هے' چاهے وہ هندی زبردستي هی لوگوں پر ٹھونسي گئي هو. اس لئے اس سوال سے بھی کہ یہ زبان هو یا وہ زبان هو کہیں زیادہ اهم سوال یہ هے کہ سارے دیش میں سو فی صدی شکشا کیسے پھیلائي جائے آج تو حالت یہ هے کہ دیش کے اندر سو میں دس بارہ سے ادھک آدمی بھي کسي طرح کا پڑھنا لکھنا نہیں جانتے اور گیان اور کلا کے تمام دروازے ان پر بند هیں

اب ذرا یہ سوچئے کہ ساري بھاشاؤں کو مٹا کر یا دبا کر بھي هندي بھاشا هی میں سارے دیش کے بچوں' جوانوں اور اَن پڑھ لوگوں کو شکشا دینے کے لئے دیش کي کتنی اُنتی هونی چاهئے ؟ هسارے راشٹر کو اوپر سے نیچے تک کتنا سکھي اور شکتی وان هونا چاهئے ؟ کیا اِس سمے هسارے اندر اتنا بل هے کہ هم سارے دیش کو هندی میں شکشا دینا تو دور کی بات هے' هندي میں لکھنے پڑھنے کے جوگ بھی بنا سکیں ؟

हिन्दी अधिक से अधिक फैले तो फिर हम हिन्दी की " सेवा " करना और दूसरी भाषाओं को मिटाने का जतन करना देश भक्ति की सबसे बड़ी निशानी क्यों न समझें ?

और जब सूबाई भाषाओं और ख़ास तौर पर उर्दू भाषा के प्रेमी यह बातें सुनते है तो वह डर जाते है और समझने लगते है कि शायद हिन्दी भाषा और केन्द्रीय भारती कलचर का विकास उनकी अपनी भाषा और कलचर को बिलकुल मिटा देगा इसीलिये वह अपनी भाषा और कलचर को बचाने का रास्ता यह समझते है कि हिन्दी की मुख़ालफत की जाय. लेकिन उनको इस भूल मे डालने वाले, कि अगर हिन्दी बढ़ी तो उनकी अपनी भाषा नही पनप सकती, ख़ुद हिन्दी ही के प्रचारक है.

इस तरह एक भाषा और एक कलचर की तरक्की को दूसरी भाषा और दूसरे कलचर के खिलाफ समझा जाने लगा है.

यहां पहुंच कर एक बुनियादी सवाल का जवाब देना हमारे लिये जरूरी हो जाता है, जिसके बिना हम समस्या पर विचार करने में आगे बढ़ ही नहीं सकते और वह सवाल यह है कि आखिर कलचर का विकास किस तरह होता है और आगे किस तरह होगा ?

हम हिन्दुस्तानी के पक्ष में होते हुए भी हिन्दी के प्रचारको से पूछ सकतें हैं कि चलिये साहब, अगर हम यह मान भी लें कि देश की एक अखण्ड आत्मा बनाने का इसके सिवा और कोई रास्ता

ہندی ادھک سے ادھک پھیلے تو پھر ہم ہندی کی "سیوا" کرنا اور دوسری بھاشاؤں کو مٹانے کا جتن کرنا دیش بھکتی کی سب سے بڑی نشانی کیوں نہ سمجھیں ؟

اور جب صوبائی بھاشاؤں اور خاص طور پر اُردو بھاشا کے پریمی یہ باتیں سنتے ہیں تو وہ ڈر جاتے ہیں اور سمجھنے لگتے ہیں کہ شاید ہندی بھاشا اور کیندری بھارتی کلچر کا وکاس اُن کی اپنی بھاشا اور کلچر کو بالکل مٹا دیگا اسی لئے وہ اپنی بھاشا اور کلچر کو بچانے کا راستہ یہ سمجھتے ہیں کہ ہندی کی مخالفت کی جائے لیکن اُن کو اس بھول میں ڈالنے والے' کہ اگر ہندی بڑھی تو انکی اپنی بھاشا نہیں پنپ سکتی' خود ہندی ہی کے پرچارک ہیں

اس طرح ایک بھاشا اور ایک کلچر کی ترقی کو دوسری بھاشا اور دوسرے کلچر کے خلاف سمجھا جانے لگا ہے ۔

یہاں پہونچ کر ایک بنیادی سوال کا جواب دینا ہمارے لئے ضروری ہوجاتا ہے' جس کے بنا ہم اس سمسیا پر وچار کرنے میں آگے بڑھ ہی نہیں سکتے اور وہ سوال یہ ہے کہ آخر کلچر کا وکاس کس طرح ہوتا ہے اور آگے کس طرح ہوگا ؟

ہم ہندستانی کے پکش میں ہوتے ہوئے بھی ہندی کے پرچارکوں سے پوچھ سکتے ہیں کہ چلئے صاحب اگر ہم یہ مان بھی لیں کہ دیش کی ایک اکھنڈ آتما بنانے کا اس کے سوا اور کوئی راستہ

हैं वही और ठीक वही बाते हिन्दी और उर्दू का भी विकास नही होने देती.

हमारे मुल्क मे तो आम तौर पर यह समझ लिया गया है और कई तरफ से यह समझाने की बराबर कोशिशे भी होती रहती हैं कि भाषा की उन्नति किसी संस्था या जाति या शक्ति या इन सब की "सेवा" के कारन होती है. ऐसा समझना बहुत बड़ी भूल है जबान के विकास या तरक्की मे किसी की सेवा या ख़िदमत का बहुत कम हाथ होता है हमने माना कि किसी भी काम मे कोशिश के बिना प्रगति नही होती और इस कोशिश को हम चाहे सेवा कह ले चाहे इसका नाम कुछ और रख दे लेकिन अगर हम यह भूल जायंगे कि तरक्की की कोई भी कोशिश तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक उसके लिये मुनासिब हालात न हो, तो फिर हम चाहे कितनी ही सेवा क्यों न करते फिरें लेकिन वास्तव मे उसका कोई ख़ास फल नही मिल सकता.

भाषा को तरक्की देने की धुन मे आम तौर पर जिस तरह के विचार जाहिर किये जाते है उनसे बहुत सी गलतफ़हमिया पैदा होने का ख़तरा है.

जो भाई हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के पक्ष मे हैं वह कहते है कि भारत की रूह को एक करने, उसकी बिखरी हुई सस्कृति को समेटने का एक ही तरीका है और वह यह कि हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाया जाय और सब लोग भाषा और कलचर के भेद भाव को भूल कर देश को सच्चे मानो में अखण्ड बनाने के लिये इसी

ہیں وہی اور ٹھیک وہی باتیں ہندی اور اُردو کا بھی وکاس نہیں ہونے دیتیں .

ہمارے ملک میں تو عام طور پر یہ سمجھ لیا گیا ہے اور کئی طرف سے یہ سمجھانے کی برابر کوششیں بھی ہوتی رہتی ہیں کہ بھاشا کی اُنتی کسی سنستھا یا جاتی یا شکتی یا ان سب کی " سیوا " کے کارن ہوتی ہے . ایسا سمجھنا بہت بڑی بھول ہے . زبان کے وکاس یا ترقی میں کسی کی سیوا یا خدمت کا بہت کم ہاتھ ہوتا ہے ہم نے مانا کہ کسی بھی کام میں کوشش کے بنا پرگتی نہیں ہوتی اور اس کوشش کو ہم چاہے سیوا کہہ لیں چاہے اس کا نام کچھ اور رکھ دیں لیکن اگر ہم یہ بھول جائیں گے کہ ترقی کی کوئی بھی کوشش تب تک سپھل نہیں ہوسکتی جب تک اُس کے لئے مناسب حالات نہ ہوں تو پھر ہم چاہے کتنی ہی سیوا کیوں نہ کرتے پھریں لیکن واستو میں اس کا کوئی خاص پھل نہیں مل سکتا .

بھاشا کو ترقی دینے کی دھن میں عام طور پر جس طرح کے وچار ظاہر کئے جاتے ہیں ان سے بہت سی غلط فہمیاں پیدا ہونے کا خطرہ ہے

جو بھائی ہندی کو راشٹر بھاشا بنانے کے پکش میں ہیں وہ کہتے ہیں کہ بھارت کی روح کو ایک کرنے اُس کی بکھری ہوئی سنسکرتی کو سمیٹنے کا ایک ہی طریقہ ہے اور وہ یہ کہ ہندی کو راشٹر بھاشا بنایا جائے اور سب لوگ بھاشا اور کلچر کے بھید بھاؤ کو بھول کر دیش کو سچے معنوں میں اکھنڈ بنانے کے لئے اسی بھاشا کو اپنائیں . پھر جب دیش کے اُنتی اسی میں ...

भाषा के सवाल को उलझाने वाली और आपस के मेल मिलाप और हमदर्दी की दीवारों को ढाने वाली है और इस पर रोजमर्रा व्यवहार को देखें, उस रूप को देखे जो भाषा हमारे सामने लेती जा रही है तो हमको अचरज होता है कि समय की शक्ति. प्रेम और मोहब्बत की शक्ति कितनी महान है जिसके काम को नफरत के कितने ही हमले मिटाना चाहते हैं पर मिटा नहीं पाते, जिसके जिन्दा शरीर को दुश्मनी और शर के कितने ही तीर तलवार घायल करते है पर मार नहीं पाते.

लेकिन इस गहरे और अमिट विश्वास का यह मतलब हरगिज नहीं कि हम हाथ पर हाथ रख कर बैठ जायं और अपने जी में यह सोच ले कि जो कुछ होगा अच्छा ही होगा और फिर उन शक्तियों का जो दो बिलकुल विरोधी धारा के बीच मे अपने आप को समझती हैं, जो दो बड़े सम्प्रदायों को करीब लाना चाहती हैं और उनके बीच से भाषा और कलचर वगैरा के भेदभाव को मिटाना चाहती है — ऐसी शक्तियों का देश के इस नाजुक समय मे चुप रहना बहुत नुक्सान पहुंचा सकता है

तो फिर हम क्या करे ? कौन सा रास्ता निकाले ? क्या हम हिन्दी का या उर्दू का या फिर दोनों का विरोध शुरू कर दें

नहीं इस सम्बन्ध मे हमको न तो हिन्दी के प्रेमियों का विरोध करना चाहिये, न उर्दू के प्रेमियों का. क्योंकि एक अच्छी और मीठी और तरक्की पाई हुई हिन्दुस्तानी भाषा के रास्ते में न तो हिन्दी की तरक्की रुकावट पैदा करती है और न उर्दू की. बल्कि सच तो यह है कि जो बाते हिन्दुस्तानी के रास्ते मे रुकावट बनती

بھاشا کے سوال کو الجھانے والی اور آپس کے میل ملاپ اور ہمدردی کی دیواروں کو ڈھانے والی ہیں اور اس پر روزمرہ کے بیوہار کو دیکھیں، اس روپ کو دیکھیں جو بھاشا ہمارے سامنے لیتی جارہی ہے تو ہم کو اچرج ہوتا ہے کہ سمے کی شکتی، پریم اور محبت کی شکتی کتنی مہان ہے جس کے کام کو نفرت کے کتنے ہی حملے مٹانا چاہتے ہیں پر مٹا نہیں پاتے جس کے زندہ شریر کو دشمنی اور شر کے کتنے ہی تیر تلوار گھائل کرتے ہیں پر مار نہیں پاتے ۔

لیکن اس گہرے اور امٹ وشواس کا یہ مطلب ہرگز نہیں کہ ہم ہاتھ پر ہاتھ رکھکر بیٹھ جائیں اور اپنے جی میں یہ سوچ لیں کہ جو کچھ ہوگا اچھا ہی ہوگا ۔ اور پھر ان شکتیوں کا جو دو بالکل وِرودھی دھارا کے بیچ میں اپنے آپ کو سمجھتی ہیں جو دو بڑے سمپردایوں کو قریب لانا چاہتی ہیں اور انکے بیچ سے بھاشا اور کلچر وغیرہ کے بھید بھاؤ کو مٹانا چاہتی ہیں — ایسی شکتیوں کا دیش کے اس نازک سمے میں چپ رہنا بہت نقصان پہنچا سکتا ہے

تو پھر ہم کیا کریں ؟ کون سا راستہ نکالیں ؟ کیا ہم ہندی کا یا اردو کا یا پھر دونوں کا ورودھ شروع کردیں ؟

نہیں اس سمبندھ میں ہم کو نہ تو ہندی کے پریمیوں کا ورودھ کرنا چاہئے نہ اردو کے پریمیوں کا ۔ کیونکہ ایک اچھی اور میٹھی اور ترقی پائی ہوئی ہندستانی بھاشا کے راستے میں نہ تو ہندی کی ترقی رکاوٹیں پیدا کرتی ہے اور نہ اردو کی ۔ بلکہ سچ تو یہ ہے کہ جو باتیں ہندستانی کے راستے میں رکاوٹ بنتی

उर्दू हिन्दी का सवाल और हिन्दुस्तानी

(आई ए० हुसैन)

हिन्दुस्तान में ज़बान की बहस की तारीख़ तो बहुत पुरानी है और इस पर हज़ार तरीक़े से विचार हो चुका है, इसलिये इस सवाल पर पढ़ने वालो का समय उसी वक़्त लिया जा सकता है जब कि कोई ख़ास बात कहनी हो.

यो तो एक उलझी हुई बात को सुलझाने के लिये सिर्फ़ प्रचार ही काफ़ी नही होता. ज़बान की समस्या भी आज कल और कई कठिन समस्याओ की तरह समय की सहायता के बिना हल नही हो सकती. समय या यो कहिये कि इतिहास की छिपी हुई ताकतो ही मे इस को सुलझाने की सबसे ज्यादा शक्ति है और यह सुलझाने की शक्ति आने वाले ज़माने की एक आशा ही नही बल्कि हम उसे अपनी आँखो के सामने पूरा होते हुए देख रहे हैं.

गुत्थियो को सुलझाने के सम्बध में समय की उगलियाँ ऊपर से देखने मे कितनी हो मोटी और भद्दी क्यो न हो, पर इसी मोटे और भद्देपन मे इनकी शक्ति छिपी हुई है जिसके कारन वह बारीक से बारीक नाख़ून से भी, ज्यादा सफ़ाई से गांठें खोल लेती हैं और आज भी खोल रही हैं. अगर हम उन भावनाओं पर विचार करें जो हमारे मुल्क में हिन्दू-मुस्लिम ऐके को मिटाने वाली

اُردو ھندي کا سوال اور ھندستانی

(بھائی اے - حسین)

ھندستان میں زبان کی بحث کی تاریخ تو بہت پرانی ھے اور اس پر ھزار طریقہ سے وچار ھو چکا ھے' اس لئے اس سوال پر پڑھنے والوں کا سمے اسی وقت لیا جاسکتا ھے جب کہ کوئی خاص بات کہنی ھو .

یوں تو ایک الجھی ھوئی بات کو سلجھانے کے لئے صرف پرچار ھی کافی نہیں ھوتا . زبان کی سمسیا بھی آج کل اور کئی کٹھن سمسیاؤں کی طرح سمے کی سہایتا کے بنا حل نہیں ھوسکتی . سمے یا یوں کہئے کہ اتہاس کی چھپی ھوئی طاقتوں ھی میں اس کو سلجھانے کی سب سے زیادہ شکتی ھے . اور یہ سلجھانے کی شکتی آنے والے زمانے کی ایک آشا ھي نہیں بلکہ ھم اسے اپنی آنکھوں کے سامنے پورا ھوتے ھوئے دیکھ رھے ھیں .

گتھیوں کو سلجھانے کے سمبندھ میں سمے کی انگلیاں اوپر سے دیکھنے میں کتنی ھی موٹي اور بھدی کیوں نہ ھوں' پر اسی موٹے اور بھدے پن میں ان کي شکتي چھپی ھوئي ھے' جس کے کارن وہ باریک سے باریک ناخن سے بھي' زیادہ صفائی سے گانٹھیں کھول لیتی ھیں اور آج بھي کھول رھی ھیں . اگر ھم ان بھاوناؤں پر وچار کریں جو ھمارے ملک میں ھندو مسلم ایکے کو مٹانے والی'

शायद यह एलान बिलकुल सही होगा कि जो राज, राज करने वाले या सिपाही ऐटमी हथियार को हमले के लिये इस्तेमाल करेंगे उन्हें मुजरिम समझा जायगा और हत्यारो की निगाह से देखा जायगा. मेरा ख़याल है कि सिर्फ़ जरायम पेशा लोग ही हमारे इस फ़ैसले का विरोध कर सकते है.

इलिया अहेरन बर्ग की यह अपील हिन्दुस्तान के लिये ज्यादा जरूरी है क्यो कि उस के ऊपर अमरीकी साम्राज शाही की आँखे गड़ी हुई है. पाकिस्तान और हिन्दुस्तान आपस मे हमेशा लड़ते रहें और इस तरह कमजोर होते रहे इस में अमरीकी मुनाफा खोर अपना फ़ायदा देखते है. चीन की आजादी और दक्खिन-पूरबी एशिया के देशो की हलचलो ने उन का दिल दहला दिया है और वह एटम बमों की तादाद दिन पर दिन बढ़ाते जा रहे है. एक हिन्दुस्तान ही ऐसा मुल्क है जो दुनिया के इस बड़े हिस्से में अपनी जमहूरी नीति पर चलते हुए शान्ति का मोर्चा क़ायम कर सकता है और साम्राजवादियो की चालो को नाकाम बना सकता है.

गांधीजी के असूलों पर चल कर हिन्दुस्तान दुनिया भर में फैले हुए शान्ति प्रेमियो का हाथ मजबूत कर सकता है.

شاید یہ اعلان بالکل سہی ہوگا کہ جو راج، راج کرنے والے یا سپاہی ایٹمی ہتھیار کو حملے کے لئے استعمال کرینگے اُنہیں مجرم سمجھا جائیگا اور ہتیاروں کی نگاہ سے دیکھا جائیگا ۔ میرا خیال ہے کہ صرف جرائم پیشہ لوگ ہی ہمارے فیصلے کا ورودھ کرسکتے ہیں ۔

ایلیا اہرن برگ کی یہ اپیل ہندستان کے لئے زیادہ ضروری ہے کیونکہ اس کے اوپر امریکی سامراج شاہی کی آنکھیں گڑی ہوئی ہیں ۔ پاکستان اور ہندستان آپس میں ہمیشہ لڑتے رہیں اور اس طرح کمزور ہوتے رہیں، اس میں امریکی منافع خور اپنا فائدہ دیکھتے ہیں ۔ چین کی آزادی اور دکھن پوربی ایشیا کے دیشوں کی ہلچلوں نے ان کا دل دہلا دیا ہے اور وہ ایٹم بموں کی تعداد دن پر دن بڑھاتے جارہے ہیں ۔ ایک ہندستان ہی ایسا ملک ہے جو دنیا کے اس بڑے حصے میں اپنی جمہوری نیتی پر چلتے ہوئے شانتی کا مورچہ قائم کرسکتا ہے اور سامراج وادیوں کی چالوں کو ناکام بنا سکتا ہے ۔

گاندھی جی کے اصولوں پر چلکر ہندستان دنیا بھر میں پھیلے ہوئے شانتی پریمیوں کا ہاتھ مضبوط کرسکتا ہے ۔

है इन की सच्चाई साबित करने के लिये हमारे पास दूसरे साधन मौजूद हैं—हर साल ज्यादा से ज्यादा फलते फूलते हमारे शहर, हमारी फसलें, हमारी किताबें और सोवियत जनता में इन्सानी चेतना का विकास.

जंग चाहने वालों की एक नई ईजाद है "पच्छिमी संस्कृति" लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि बड़े बड़े फ्रेन्च साइन्सदानों—वार्तोलेटा पास्चर और क्यूरी के काम किसे ज्यादा प्यारे हैं, एचिसन को या. जूलियट क्यूरी को ? लावरिस. डाक्टिन्जी और प्रादो के भविष्य के बारे में किस को ज्यादा चिन्ता है, जनरल फ्रान्को को या पाबलो-पिकासो को ? आज कल कौन शेक्सपियर के नाटकों को अच्छी तरह से समझता है, सोवियत मजदूर या मिसिसपी के दूसरों को गुलाम बनाने वाले ? हमें हर एक आदमी के कान में अच्छी तरह सुना कर एलान कर देना चाहिये कि हमारे खयालात कुछ भी हों हम इन्सानी तहजीब के सच्चे पहरेदार है.

हमारा आन्दोलन फैल जरूर रहा है लेकिन मेरी राय में उस की रफ्तार उतनी तेज नहीं जितनी तेज होनी चाहिये थी हमें अपनी कोशिशों को और तेज करना होगा और दुनिया के अवाम को सच्ची एकता की लड़ी में पिरोना होगा

दुनिया की सब ईमानदार जनता से हमारी अपील है कि वह अपनी आवाज बुलन्द करे और एटम हथियार पर फौरन और बिलाशर्त पाबन्दी की मांग करे एक बच्चा भी इस बात को समझता है कि एटम बम हमले का हथियार है

ہے . ان کی سچائی ثابت کرنے کے لئے ہمارے پاس دوسرے سادھن موجود ہیں — ہر سال زیادہ سے زیادہ پھلتے پھولتے ہمارے شہر' ہماری فصلیں' ہماری کتابیں اور سوویت جنتا میں انسانی چیتنا کا وکاس .

جنگ چاہنے والوں کی ایک نئی ایجاد ہے '' پچھمی سنسکرتی ' لیکن میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ بڑے بڑے فرینچ سائنس دانوں — بار تو لیٹ' پاسچر اور کیوری کے کام کسے زیادہ پیارے ہیں' ایچیسن کو یا جولیٹ کیوری کو ؟ لاوریس ڈکری اور پرادو کے بھوشیہ کے بارے میں کسکو زیادہ چنتا ہے جنرل فرانکو کو یا پابلو پکا کسو کو ؟ آج کل کون شیکسپیر کے ناٹکوں کو اچھی طرح سے سمجھتا ہے' سوویت مزدور یا مسسپی کے دوسروں کو غلام بنانے والے ؟ ہمیں ہر ایک آدمی کے کان میں اچھی طرح سناکر اعلان کر دینا چاہئے کہ ہمارے خیالات کچھ بھی ہوں ہم انسانی تہذیب کے سچے پہرے دار ہیں

ہمارا آندولن پھیل ضرور رہا ہے لیکن میری رائے میں اس کی رفتار اُتنی تیز نہیں جتنی تیز ہونی چاہئے تھی ہمیں اپنی کوششوں کو اور تیز کرنا ہوگا اور دنیا کے عوام کو سچی ایکتا کی لڑی میں پرونا ہوگا .

دنیا کی سب ایماندار جنتا سے ہماری اپیل ہے کہ وہ اپنی آواز بلند کرے اور ایٹم ہتھیار پر فوراً اور بلا شرط پابندی کی مانگ کرے ایک بچہ بھی اس بات کو سمجھتا ہے کہ ایٹم بم حملے کا ہتھیار ہے

रखता हो. चाहे वह सिसली का खेत मजदूर हो या मार्सेल्स का गोदी में काम करने वाला मजदूर. इस मे उन लोगों को भी वोट देने का हक है जो इस दुनिया में अब नही हैं. स्टलिनग्राड के बाहदुर, योरप के छापा मार, लिड्डिस और ओरे डोर के शहीद, लन्दन, राटर्डम और वार्सो के भोले भाले बच्चे, यह सभी पर लोक पहुँच जाने वाली अआत्माएं इन नय आदमखोरो और नफरत के क़ाबिल सुपर बमो समेत इन " ऊंचे प्राणियो " के खिलाफ अपनी आवाज़ बुलन्द कर रही हैं.

जंग के पुजारी हमारे आन्दोलन को यह कह कर बदनाम कर रहे हैं कि हमने सोवियत रूस की हिफ़ाज़त के लिये इसे शुरू किया है. लेकिन सोवियत शिष्टमंडल (वफ्द) की तरफ से मैं एलान कर देना चाहता हूँ कि शान्ति की हिमायत करने वाले सोवियत रूस की रक्षा नही कर रहे हैं बल्कि सोवियत जनता खुद दुनिया की तमाम जनता के साथ मिल कर शान्ति की हिफाज़त कर रही है.

सोवियत जनता शान्ति की रक्षा इस लिये नही कर रही है कि वह कमज़ोर है बल्कि इस लिये कि वह मानसिक यानी ज़ेहनी तौर पर ताक़तवर है. उस को अपने उजले भविष्य, तामीरी मेहनत और बच्चों की खुश हाली मे पूरा विश्वास है. हमारी ताक़त स्टालिनग्राड के पत्थरो में परखी जा चुकी है. परेडों या ओलम्पिक खेलों में नही

हम अपने विचारो को बमो या सुपरबमो की मदद से दूसरो पर लादना नहीं चाहते. यह कोई बरामद की जाने वाली चीज़ नहीं

رکھتا ہو . چاہے وہ سسلی کا کھیت مزدور ہو یا مارسیلس کا گودی میں کام کرنے والا مزدور . اس میں اُن لوگوں کو بھی ووٹ دینے کا حق ہے جو اِس دنیا میں اب نہیں ہیں . استالن گراڈ کے بہادر، یورپ کے چھاپا مار، لڈس اور اوریڈور کے شہید، لندن، راٹرڈم اور وارسا کے بھولے بھالے بچے یہ سبھی پرلوک پہنچ جانے والی آتمائیں ان نئے آدمخوروں اور نفرت کے قابل سوپر بموں سمیت ان "اونچے پرانیوں" کے خلاف اپنی آواز بلند کر رہی ہیں .

جنگ کے پجاری ہمارے آندولن کو یہ کہکر بدنام کر رہے ہیں کہ ہم نے سوویت روس کی حفاظت کے لئے اسے شروع کیا ہے . لیکن سوویت ششٹ منڈل (وفد) کی طرف سے میں اعلان کردینا چاہتا ہوں کہ شانتی کی حمایت کرنے والے سوویت روس کی رکشا نہیں کر رہے ہیں بلکہ سوویت جنتا خود دنیا کی تمام جنتا کے ساتھ ملکر شانتی کی حفاظت کر رہی ہے .

سوویت جنتا شانتی کی رکشا اس لئے نہیں کر رہی ہے کہ وہ کمزور ہے بلکہ اس لئے کہ وہ مانسک یعنی ذہنی طور پر طاقتور ہے . اس کو اپنے اُجلے بھوشیہ، تعمیری محنت اور بچوں کی خوشحالی میں پورا وشواس ہے ہماری طاقت استالن گراڈ کے پتھروں میں پرکھی جاچکی ہے . پریڈوں یا اولمپک کھیلوں میں نہیں .

ہم اپنے وچاروں کو بموں یا سوپر بموں کی مدد سے دوسروں پر لادنا نہیں چاہتے . یہ کوئی برآمد کی جانے والی چیز نہیں

सुपर बमो के बारे मे सुनती है वह आदम खोरो की इस गुर्राहट की आदी बन जाती है, वह समझने लगती है कि यह जीवन का जरूरी अंग है

इस मे आशा की गुंजाइश भी है आम आदमी सोचता है कि यह पहला साल नही कि लडाइ की बाते सुनने मे आ रही हों. लेकिन अभी तक तो कोइ लड़ाई हुई नही और इस का मतलब यह है कि लड़ाई वड़ाई नहीं होगी.

लेकिन इस की उलटी बात निराशा की तरफ भी ले जाने वाली है. जनता सोचती है— अगर लड़ाई की इतनी ज्यादा चर्चा है तो यह जरूर होगी, एक साल पहले या एक साल बाद. इस हालत मे मुझ जैसा मामूली आदमी कर ही क्या सकता है. मेरे लिये एक साल या दो साल शान्ति के साथ बीत ही जायंगे. इस के बाद जो हो.

हमारा फ़र्ज है कि हम इस मूर्खता भरे विचार को दूर करें और निराश हो कर क़िस्मत के भरोसे बैठने की जेहीनयत पर फ़तेह हासिल करे. हमें दुनिया की जनता को यक़ीन दिलाना होगा कि उसी की मरजी से लड़ाई हो सकती है या रुक सकती है.

मैं साफ़ कहूँगा कि लड़ाई न तो राज काजी लोग करते हैं और न बड़े फ़ौजी अफ़सर. जंग करने वाला तो आम जनता है. जग का होना या न होना कोई लाट्री या जुआ नही. किसी देश में ऊँचे ओहदों पर बैठे हुए थोड़े से पागल जंग नही कर सकते.

हर एक जिन्दा इन्सान को वोट देने का हक़ है चाहे वह मिसिसपी का हब्शी हो या हिन्दुस्तान में नीचो जाति से सम्बन्ध

سوپر بموں کے بارے میں سنتی ھے' وہ آدم خوروں کی اِس غراھٹ کی عادی بن جاتی ھے . وہ سمجھنے لگتی کہ یہ جیون کا ضروری انگ ھے .

اس میں آشا کی گنجائش بھی ھے . عام آدمی سوچتا ھے کہ یہ پہلا سال نہیں کہ لڑائی کی باتیں سننے میں آرھی ھوں لیکن ابھی تک تو کوئی لڑائی ھوئی نہیں اور اسکا مطلب ھے کہ کوئی لڑائی وڑائی نہیں ھو گی .

لیکن اسکی اُلٹی بات نراشا کی طرف بھی لیجانے والی ھے . جنتا سوچتی ھے—اگر لڑائی کی اتنی زیادہ چرچا ھے تو یہ ضرور ھو گی' ایک سال پہلے یا ایک سال بعد . اس حالت میں مجھ جیسا معمولی آدمی کرھی کیا سکتا ھے میرے لئے ایک سال یا دو سال شانتی کے ساتھ بیت ھی جائیں گے اس کے بعد جو ھو

ھمارا فرض ھے کہ ھم اِس مورکھتا بھرے وچار کو دور کریں اور نراش ھوکر قسمت کے بھروسے بیٹھنے کی ذھنیت پر فتح حاصل کریں . ھمیں دنیا کی جنتا کو یقین دلانا ھوگا . کہ اُسی کی مرضی سے لڑائی ھو سکتی ھے یا رک سکتی ھے .

میں صاف کہوں گا کہ لڑائی نہ تو راج کاجی لوگ کرتے ھیں اور نہ بڑے فوجی افسر . جنگ کرنے والی تو عام جنتا ھے جنگ کا ھونا یا نہ ھونا کوئی لاٹری یا جوا نہیں . کسی دیش میں اونچے عہدوں پر بیٹھے ھوئے تھوڑے سے پاگل جنگ نہیں کرسکتے .

ھر ایک زندہ انسان کو ووٹ دینے کا حق ھے چاھے وہ میسسپی کا حبشی ھو یا ھندستان میں نیچی ذات سے سمبندھ

तो वह आवाज़ बंसी की सुरीली आवाज़ साबित हुई और जब भी हम ने उसे अनसुनी किया, वह ख़तरे की घण्टी बन गई. गांधीजी की आवाज़ आगाही और चेतावनी के साथ ही प्रेम और ज़िन्दगी की भी, शान्ति और भाई चारे की भी आवाज़ रहा करती थी. इलिया अहरेन बर्ग की इस अपील में हमें उस सन्यासी की सुरीली आवाज़ की झनकार सुनाई देती है जो बम के धड़ाको के तले दब जायगी अगर हम ने उसके साथ अपनी आवाज़ भी न मिला दी.

स्टाकहोम मे होने वाली विश्वशान्ति कांग्रेस की स्टेंडिग कमेटी की सत्तरहवीं बैठक को मुख़ातिब करते हुए इलिया एहरेन बर्ग ने कहा था :—

पेरिस कांग्रेस को हुए एक साल गुज़र चुका है. शान्ति की ताक़तें बढ़ चुकी हैं. वह इतनी ज्यादा बढ़ और फैल चुकी हैं कि जंग चाहने वालो को अपनी धोखाधड़ी और हिन्सा मे कई गुनी बढ़ती करनी पड़ी है. लेकिन शान्ति की ताकते अभी इतनी ज्यादा मज़बूत नहीं हो पाई हैं कि लड़ाई के पुजारियो को अपनी हिंसात्मक योजनायें बन्द करने के लिये मजबूर किया जासके.

हम अब शान्ति के महान संघर्ष के आख़िरी दौर में पहुंच चुके हैं. हमारी सन्ताने या तो इस कामयाब संघर्ष के लिये हमें दुआयें देंगी या हमारी नाकाम कोशिशो को कोसती रहेंगी. इस संघर्ष का नतीजा अब हम पर मुनहसर है. आदत, आत्म संतोष यानी खुद इतमीनानी और हलकेपन का ख़तरा बहुत बड़ा ख़तरा है. ख़तरा इस बात का है कि जैसे ही जनता रोज़ रोज़ बमो और

تو وہ آواز بنسی کی سریلی آواز ثابت هوئی اور جب بھی هم نے اسے ان سنی کیا' وہ خطرے کی گھنٹی بن گئی ۔ گاندھی جی کی آواز آگاھی اور چیتاونی کے ساتھ ھی پریم اور زندگی کی بھی' شانتی اور بھائی چارے کی بھی آواز رھا کرتی تھی ۔ ایلیا اھرن برگ کی اس اپیل میں ھمیں اس سنیاسی کی سریلی آواز کی جھنکار سنائی دیتی ھے جو بم کے دھڑاکوں کے تلے دب جائیگی اگر ھم نے اس کے ساتھ اپنی آواز بھی نہ ملا دی ۔

اسٹاک ھوم میں ھونے والی وشوشانتی کانگریس کی اسٹینڈنگ کمیٹی کی سترھویں بیٹھک کو مخاطب کرتے ھوئے اھرن برگ نے کہا تھا :—

پیرس کانگرس کو ھوئے ایک سال گذر چکا ھے شانتی کی طاقتیں بڑھ چکی ھیں وہ اتنی زیادہ بڑھ اور پھیل چکی ھیں کہ جنگ چاھنے والوں کو اپنی دھوکا دھڑی اور ھنسا میں کئی گنی بڑھتی کرنی پڑی ھے ۔ لیکن شانتی کی طاقتیں ابھی اتنی زیادہ مضبوط نہیں ھوپائی ھیں کہ لڑائی کے پجاریوں کو اپنی ھنساتمک یوجنائیں بند کرنے کے لئے مجبور کیا جا سکے ۔

ھم اب شانتی کے مہان سنگھرش کے آخری دور میں پہنچ چکے ھیں ۔ ھماری سنتانیں یا تو اس کامیاب سنگھرش کے لئے ھمیں دعائیں دینگی یا ھماری نا کام کوششوں کو کوستی رھینگی ۔ اس سنگھرش کا نتیجہ اب ھم پر منحصر ھے ۔ عادت' آتم سنتوش یعنی خود اطمینانی اور ھلکے پن کا خطرہ بہت بڑا خطرہ ھے ۔ خطرہ اس بات کا ھے کہ جیسے ھی جنتا روز روز بموں اور

अन-सुनी करना और उस भयानक घड़ी की ओर से आँखें बन्द कर लेना जो कि धीरे धीरे नजदीक आती जारही है.

ऐसे समय जब कि सियासत और व्योपार के मैदान में एक दूसरे का गला घोटने के लिये, एक दूसरे को पीस डालने के लिये कोशिशें चल रही हों, जब कि मजहब, कलचर, सभ्यता और इन्सानियत का नाम लड़ाई और एटम को सही साबित करने के लिये इस्तेमाल किया जा रहा हो, जब कि सारी दुनिया की शान्ति-प्रेमी जनता के हितों की तरफ से आँख बन्द करके सिर्फ मुनाफ़ा खोरी और राज बढ़ाने के सपने को पूरा करने के लिये हर बेजा, खूंख्वार और वहशियाना ढंग अपनाने की पूरी तैयारी की जारही हो, इलिया अहरेन वर्ग की यह अपील खतरे की घण्टी और शान्ति की बंसी की तरह हमारे कानो मे सुनाई देती है.

खतरे की घण्टी और शान्ति की बंसी ! हाँ, हाँ दोनों एक साथ सुनाई देतो हैं. महात्मा गाधो का हर आवाज़, हर तम्बीह, हर चेतावनी इसी तरह खतरे की घण्टी और शान्ति की बंसी थी ! यह आगाही, यह चेतावनी और यह मांग जो कि इलिया अहरेन वर्ग के ज़रिये उठाई गई है, उस घण्टी को तरह है जो हमारे बहरे कानों को उस भयानक चीख पुकार की याद दिलाती है जो लड़ाई और एटम बम का लाज़िमी नतोजा है. साथ ही, यह उस बंसी की तरह भी है जिस की मीठी सुरीली आवाज हमारे थके, परेशान दिलों को ज़िन्दगी, आशा और सन्तोष देती है, शर्त यह है कि हम अपने कान के परदों को खोल कर उसे सुनने की कोशिश करने लगें. जब हम ने महात्मा गांधी की आवाज़ वक़्त रहते सुन ली

آن سنی کرنا اور اس بھیانک گھڑی کی اور سے آنکھیں بند کرلینا جو کہ دھیرے دھیرے جو نزدیک آتی جارہی ہے ۔

ایسے سمے جب کہ سیاست اور بیوپار کے میدان میں ایک دوسرے کا گلا گھونٹنے کے لئے، ایک دوسرے کو پیس ڈالنے کے لئے کوششیں چل رہی ہوں، جب کہ مذہب، کلچر، سبھیتا اور انسانیت کا نام لڑائی اور ایٹم کو سہی ثابت کرنے کے لئے استعمال کیا جارہا ہو، جب کہ ساری دنیا کی شانتی پریمی جنتا کے ہتوں کی طرف سے آنکھ بند کرکے صرف منافع خوری اور راج بڑھانے کے سپنے کو پورا کرنے کے لئے ہر بیجا، خونخوار اور وحشیانہ ڈھنگ اپنانے کی پوری تیاری کی جارہی ہو، ایلیا اھرن برگ کی یہ اپیل خطرے کی گھنٹی اور شانتی کی بنسی کی طرح ہمارے کانوں میں سنائی دیتی ہے ۔

خطرے کی گھنٹی اور شانتی کی بنسی ! ہاں، ہاں دونوں ایک ساتھ سنائی دیتی ہیں ۔ مہاتما گاندھی کی ہر آواز، ہر تنبیہ، ہر چیتاونی اسی طرح خطرے کی گھنٹی اور شانتی کی بنسی تھی ! یہ آگاہی، یہ چیتاونی اور یہ مانگ جو کہ ایلیا اھرن برگ کے ذریعے اٹھائی گئی ہے، اس گھنٹی کی طرح ہے جو ہمارے بہرے کانوں کو اس بھیانک چیخ پکار کی یاد دلاتی ہے جو لڑائی اور ایٹم بم کا لازمی نتیجہ ہے ۔ ساتھ ہی، یہ اس بنسی کی طرح بھی ہے جس کی میٹھی سریلی آواز ہمارے تھکے، پریشان دلوں کو زندگی، آشا اور سنتوش دیتی ہے ۔ شرط یہ ہے کہ ہم اپنے کان کے پردوں کو کھول کر اسے سننے کی کوشش کرنے لگیں ۔ جب ہم نے مہاتما گاندھی کی آواز وقت رہتے سن لی

अलमबरदारों को एक चुनौती दी है. यह चुनौती इलिया अहरेन बर्ग की नहीं बल्कि उस जनता की है जो शान्ति चाहती है, अमन चाहती है, मेल मोहब्बत के साथ रहना चाहती है.

जे. बी. प्रिस्टले के पास इलिया अहरेन बर्ग ने लिखा है—" यह सच है कि मैं इस बात की गारन्टी नहीं देसकता कि एक अपील से ही बदकार लोग अपनी हरकत से बाज़ आजायेंगे, मगर मैं आप को यह यक़ीन दिला सकता हूँ कि अगर आप एटम बम का खुल्लम खुल्ला विरोध नहीं करते और हमारी अपील पर दस्तख़त नहीं करते तो मासको, लन्दन और न्यूयार्क मे बसने वाले आप के पाठक आप को माफ़ न कर सकेंगे. "

योरप के सभी लेखको से अपील करते हुए अहरेन बर्ग ने कहा है—" मे नहीं कहता कि आप मेरे विचारो को — राजनीतिक या ज़िन्दगी की ख़ूबसूरती से सम्बन्ध रखने वाले विचारो को—स्वीकार करलें. मैं यह भी नहीं कहता कि आप किसी एक राजनीतिक पार्टी के ख़िलाफ़ दूसरी राजनीतिक पार्टी का, या एक राज के ख़िलाफ़ दूसरे राज का साथ दे. मै यह नही कहता कि इस या उस सरकार को उस के घरेलू या विदेशी नीति के लिये बुरा भला कहे.

" मैं तो सिर्फ़ यह चाहता हूँ कि आप उस सरकार को बुरा भला कहें जो सब से पहले किसी देश की जनता पर एटम बम गिराती है. "

इलिया अहरेन बर्ग की यह अपील इतनी साफ़, ज़ोरदार और पुरमानी है कि उसे अनसुनी नहीं किया जा सकता. क्यो कि उसे अनसुनी करने के मानी हैं संसार की जनता की आवाज़ को

علم برداروں کو ایک چنوتی دی ہے. یہ چنوتی ایلیا اہرنبرگ کی نہیں بلکہ اُس جنتا کی ہے جو شانتی چاہتی ہے' امن چاہتی ہے میل محبت کے ساتھ' رہنا چاہتی ہے .

جے . بی . پریسٹلے کے پاس ایلیا اہرن برگ نے لکھا ہے — " یہ سچ ہے کہ میں اِس بات کی گارنٹی نہیں دے سکتا کہ ایک اپیل سے ہی بدکار لوگ اپنی حرکت سے باز آجائیں گے . مگر میں آپ کو یہ یقین دلا سکتا ہوں کہ اگر آپ ایٹم بم کا کھلم کھلا وِرودھ نہیں کرتے اور ہماری اپیل پر دستخط نہیں کرتے تو ماسکو' لندن اور نیویارک میں بسنے والے آپ کے پاٹھک آپ کو معاف نہ کرسکیں گے . "

یورپ کے سبھی لیکھکوں سے اپیل کرتے ہوئے اہرن برگ نے کہا ہے —" میں نہیں کہتا کہ آپ میرے وچاروں کو—راج نیتک یا زندگی کی خوبصورتی سے سمبندھ رکھنے والے وچاروں کو سویکار کرلیں . میں یہ بھی نہیں کہتا کہ آپ کسی ایک راج نیتک پارٹی کے خلاف دوسری راج نیتک پارٹی کا' یا ایک راج کے خلاف دوسرے کا ساتھ دیں . میں یہ نہیں کہتا کہ اس یا اُس سرکار کو اُسکے گھریلو یا ودیشی نیتی کے لئے برا بھلا کہیں . "

" میں تو صرف یہ چاہتا ہوں کہ آپ اُس سرکار کو برا بھلا کہیں جو سب سے پہلے کسی دیش کی جنتا پر ایٹم بم گراتی ہے . "

ایلیا اہرن برگ کی یہ اپیل اتنی صاف' زوردار اور پر معنی ہے کہ اُسے اَن سنی نہیں کیا جاسکتا . کیونکہ اُسے اَن سنی کرنے کے معنی ہیں سنسار کی جنتا کی آواز کو

दुनिया की शान्ति के लिये अपील

(भाई श्रीकृष्णदास)

रूस के मशहूर लेखक ईलिया अहरेन बर्ग ने योरप और अमरीक के नावेल लिखने वालो और नाटक लिखने वालो से यह माग की है कि वह उस सरकार का विरोध करें जो सब से पहले एटम बम इस्तेमाल करे. उन्हो ने जिन मशहूर लेखको से अपील की है उन में से कुछ के नाम यह है—जे. बी. प्रिस्टले, अर्निस्ट हेमिंगवे, जान स्टीन बेक, जीन रिचर्ड ब्लाक, अलबर्टो मुराविया, ऑंद्रे शैमजाँ और मार्टिन लुगाड. योरप और अमरीका ही नही, सारी दुनिया मे यह लेखक और पत्र कार अपने शान्ति वादो विचारो के लिये मशहूर हैं. पिछले हिटलरी दौर मे इन्हो ने आइन्स्टीन के कन्धे से कन्धा मिला कर हिटलर शाही का विरोध किया था यह लेखक, पत्रकार' साइन्स के विद्वान और दुनिया को रहनुमाई करने वाले विचारक है अपनी हिम्मत, बहादुरी और शान्ति प्रेम का सबूत बार बार दे चुके हैं. इन के बारे मे यह नही कहा जासकता कि यह सब के सब कम्युनिस्ट हैं और हर तरह से यह लोग सोवियत रूस की पालिसी से बधे हुए है. योरप और अमरीका मे इन लोगो की कितनी इज्जत यह कौन नही जानता. इन के नाम इलिया अहरेन बर्ग ने अपील शाया कर के योरप और अमरीका ही नही सारी दुनिया क लेखक विचारकों, शान्ति प्रेमियों और आजादो और भाई चारे के बच

دنیا کی شانتی کے لئے اپیل

(بھائی شری کرشن داس)

روس کے مشہور لیکھک ایلیا اھرن برگ نے یورپ اور امریکہ کے ناول لکھنے والوں اور ناٹک لکھنے والوں سے یہ مانگ کی ھے کہ وہ اُس سرکار کا ورودھ کریں جو سب سے پہلے ایٹم بم استعمال کرے . اُنھوں نے جن مشہور لیکھکوں سے اپیل کی ھے اُن میں سے کچھ کے نام یہ ھیں—جے . بی . پریسٹلے' ارنسٹ ھیملگوے' جان اسٹین بیک' جین ریچرڈ بلاک' البرٹو موراویا' آندرےشیمزاں اور مارٹن لوگارڈ . یورپ اور امریکہ ھی نہیں' ساری دنیا میں یہ لیکھک اور پترکار اپنے شانتی وادی وچاروں کے لئے مشہور ھیں . پچھلے ھٹلری دور میں انھوں نے آئنسٹین کے کندھے سے کندھا ملاکر ھٹلر شاھی کا ورودھ کیا تھا . یہ لیکھک' پترکار سائنس کے ودوان اور دنیا کی رھنمائی کرنے والے وچارک اپنی ھمت' بہادری اور شانتی پریم کا ثبوت بار بار دے چکے ھیں ان کے بارے میں یہ نہیں کہا جا سکتا کہ یہ سب کے سب کمیونسٹ ھیں اور ھر طرح سے یہ لوگ سوویت روس کی پالیسی سے بندھے ھوے ھیں . یورپ اور امریکہ میں ان لوگوں کی کتنی عزت ھے یہ کون نہیں جانتا . ان کے نام ایلیا اھرن برگ نے اپیل شایع کرکے یورپ اور امریکہ ھی نہیں' ساری دنیا کے لیکھکوں' وچارکوں' شانتی پریمیوں اور آزادی اور بھائی چارے کے

मालूम हुआ जैसे ठाकुर की आँखों से कोप की अग्नि निकल रही हो. वह एक क़दम पीछे हट गया.

"क्यो, आप बाबा को मुक्त क्यो नही करते ?" उस आदमी ने कहा. बनिया सँभला. फिर ही-ही कर के बोला —"इन के कफ़न के लिये आप लोग चन्दे की बात कर रहे थे न, उमी में यह चार आने मेरी तरफ़ से भी दान ले लें ! ही ही .."

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक, पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से, अक्तूबर सन् १९४७ मे पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान मे उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगो को भुगतने पड़ रहे है उनका बहुत ही दर्दनाक वर्नन किया है. अख़ीर में, आजकल की मुसीबतो को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये है. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों मे मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

मैनेजर—'नया हिन्द' ४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद

معلوم ھوا جیسے ٹھاکر کی آنکھوں سے کوپ کی اگنی نکل رھی ھو . وہ ایک قدم پیچھے ھٹ گیا

"کیوں، آپ بابا کو مکت کیوں نہیں کرتے ؟" اُس آدمی نے کہا .

بنیا سنبھلا . پھر 'ھی ھی' کرکے بولا—"ان کے کفن کے لئے آپ لوگ چندے کی بات کر رھے تھے نا' اُسی میں یہ چار آنے میری طرف سے بھی دان لے لیں ! ھی ھی. . "

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

لیکھک' پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے ' مہاتما گاندھی کی صلاح سے' اکتوبر سن ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورا کیا تھا. اِس چھوٹے سے بیان میں اُنھوں نے وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رھے ھیں اُن کا بہت ھی دردناک ورنن کیا ھے . آخیر میں' آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کیلئے' کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ھیں. ھمیں وشواس ھے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اِس بیان سے بڑی مدد ملے گی.

کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ھے . قیمت چار آنے .

مینیجر—'نیا ھند' ۴۸ ' بائی کا باغ ' اِلہ آباد .

बोला— " सुना कुछ ? बाबा मर गया ! उस पर मेरे चार आने उधार रह गये. ज़रा दुकान पर तुम बैठो. देखूं, शायद कुछ हाथ लग जाय. " कह कर वह साधू की झोंपड़ी की ओर दौड़ा.

साधू की झोंपड़ी मे लोग चन्दा करके साधू के कफ़न वग़ैरा के इन्तज़ाम की बात तै कर रहे थे कि बनिया उनके पास आ खड़ा हुआ. बोला — " क्यों भाई, बाबा मर गये ? "

" हाँ, भाई. " एक ने एक कहा —" ऐसा सच्चा साधू मैने कहीं भी नहीं देखा ! ठाकुरजी का पूजा छोड़ कर इसने संसार की किसी बात से कोई मतलब नहीं रखा. "

" ओफ ! " बनिये के मुंह से निकल गया

" अब दुख करने से क्या होगा, भाई ? " उसी आदमी ने कहा.

" मुझे दुख इनके मरने का उतना नहीं है जितना इस बात का है कि इनके ज़िन्दा रहते ही मैं इन्हें क़र्ज़ से छुटकारा न दे सका. मेरे चार आने इन पर रह ही गये. "

एक दूसरा आदमी, जो उनकी बात सुन रहा था, बोला — " अच्छा, तो आप के चार आने बाबा पर रह गये थे ? वही पैसे तो बाबा के हाथ में नही है. अब तो आप यह पैसे ले कर बाबा को मुक्त कर दे, नही तो इनकी आत्मा क़र्ज़ के बन्धन में बँधी ही रहेगी. "

बनिये ने देखा तो आँखें झपकाने लगा. जी मे आया कि पैसे ले ले, पर उस की हिम्मत उसका साथ न दे सकी. किसी शंका से वह काँप गया. आँखें उठीं तो ठाकुर पर जी नज़र पड़ गई. उसे ऐसा

بولا — "سنا کچھ ؟ بابا مرگیا ! اُس پر میرے چار آنے اُدھار رہ گئے . ذرا دوکان پر تم بیٹھو ۔ دیکھوں، شاید کچھ ہاتھ لگ جائے ."

کہکر وہ سادھو کی جھونپڑی کی اور دوڑا .

سادھو کی جھونپڑی میں لوگ چندہ کرکے سادھو کے کفن وغیرہ کے انتظام کی بات طے کر رہے تھے کہ بنیا اُن کے پاس آ کھڑا ہوا . بولا—"کیوں بھائی بابا مرگئے ؟"

"ہاں، بھائی ." ایک نے کہا—"ایسا سچا سادھو میں نے کہیں بھی نہیں دیکھا ! ٹھاکر جی کی پوجا چھوڑ کر اسنے سنسار کی کسی بات سے کوئی مطلب نہیں رکھا ."

"اُف !" بنئے کے منہ سے نکل گیا .

"اب دکھ کرنے سے کیا ہوگا بھائی ؟" اُسی آدمی نے کہا .

"مجھے دکھ اِنکے مرنے کا اُتنا نہیں ہے جتنا اس بات کا ہے کہ اِن کے زندہ رہتے ہی میں اِنہیں قرض سے چھٹکارا نہ دے سکا . میرے چار آنے اِن پر رہ ہی گئے ."

ایک دوسرا آدمی، جو اُن کی بات سن رہا تھا، بولا—"اچھا، تو آپ کے چار آنے بابا پر رہ گئے تھے ؟ وہی پیسے تو بابا کے ہاتھ میں نہیں ہیں . اب تو آپ یہ پیسے لے کر بابا کو مکت کردیں، نہیں تو اِن کی آتما قرض کے بندھن میں بندھی ہی رہے گی ."

بنئے نے دیکھا تو آنکھیں جھپکانے لگا . جی میں آیا کہ پیسے لے لے، پر اُسکی ہمت اُسکا ساتھ نہ دے سکی . کسی شنکا سے وہ کانپ گیا . آنکھیں اُٹھیں تو ٹھاکرجی پر نظر پڑگئی . اُسے ایسا

कर के उसका निवारण करेगा ही. लेकिन आज मेरी आख़िरी घड़ी आ गई और तू अब भी चुप है, जैसे कुछ हुआ ही नहीं. ठाकुर, तुझ मे मेरी कोई शिकायत नहीं, लेकिन क्या तेरी मर्यादा को यह शोभा देता है कि तेरा एक पुजारी अपनी आत्मा पर क़र्ज़ का लांछन लिये ही मर जाय. नहीं, नहीं ठाकुर, मेरे जीवन भर के पुन्य पर इस दो आने की क़र्ज़ का कलंक लगने से मेरी रक्षा कर ! " कह कर बेहद जोश के कारण उस ने मूरत के चरणों पर सिर पटक दिया कमज़ोरी थी ही, सिर मे चोट लगने से वह बेहोश हो गया.

वह इस बेहोशी की हालत मे घंटों पड़ा रहा. यह हालत मौत के पहले की हालत थी. बुझने के पहले जैसे दिये की लौ भडक उठती है, उसी तरह साधू की चेतना भी एक बार लौटी. उसकी डूबी हुई आत्मा की गहराइयों में भी जैसे वही क़र्ज़ की बात गूंज रही थी उसने बँधी मुट्ठी को ओर एक बार पथराई आँखों से देखा और बड़बड़ाता हुआ उठ बैठा — " ठाकुर, तेरे भोग लगाने के वक़्त तक मैं ज़िन्दा न रहूँगा. यह चार आने बनिये को दे कर क़र्ज़ से छुटकारा पा कर ही मैं जीवन त्याग करूंगा. तेरे पुजारी ने कितने ही दिन उपवास किये ! आज एक वक्त तू भी अपने पुजारी की मौत पर उपवास कर लेना ! " लेकिन अभी उठ भी न पाया था कि वह गिर पड़ा. पिंजड़े का आकुल पछी उड़ गया.

आरती के समय भक्त लोग जब पहुँचे तो देखा, साधू ठाकुरजी के चरणों में मरा पड़ा था. उसके हाथ फैले हुए थे और एक की हथेली पर चार आने पैसे पड़े हुए थे गाँव भर मे शोर हो गया कि बाबा मर गया. बनिये को जब ख़बर मिली तो वह अपनी स्त्री से

کرکے اُس کا نوارن کریگا ہی. لیکن آج میری آخری گھڑی آگئی اور تو اب بھی چپ ہے، جیسے کچھ ہوا ہی نہیں. ٹھاکر، تجھسے میری کوئی شکایت نہیں' لیکن کیا تیری مریادا کو یہ شوبھا دیتا ہے کہ تیرا ایک پجاری اپنی آتما پر قرض کا لانچھن لئے ہی مرجائے نہیں' نہیں ٹھاکر' میرے جیون بھر کے پن پر اس دو آنے کے قرض کا کلنک لگنے سے میری رکشا کر!" کہکر بیحد جوش کے کارن اُس نے مورت کے چرنوں پر سر پٹک دیا. کمزوری تھی ہی' سر میں چوٹ لگنے سے وہ بے ہوش ہو گیا.

وہ اِس بیہوشی کی حالت میں گھنٹوں پڑا رہا. یہ حالت موت کے پہلے کی حالت تھی. بجھنے کے پہلے جیسے دیئے کی لو بھڑک اُٹھتی ہے' اُسی طرح سادھو کی چیتنا بھی ایک بار لوٹی اُس کی ڈوبی ہوئی آتما کی گہرائیوں میں بھی جیسے وہی قرض کی بات گونج رہی تھی. اس نے بندھی مٹھی کی اور ایک بار پتھرائی آنکھوں سے دیکھا اور بڑبڑاتا ہوا اُٹھ بیٹھا— "ٹھاکر' تیرے بھوگ لگانے کے وقت تک میں زندہ نہ رہوں گا. یہ چار آنے بنئے کو دے کر' قرض سے چھٹکارا پاکر ہی میں جیون تیاگ کروں گا. تیرے پجاری نے کتنے ہی دن اُپواس کئے! آج ایک وقت تو بھی اپنے پجاری کی موت پر اپواس کر لینا!" لیکن ابھی اُٹھ بھی نہ پایا تھا کہ وہ گر پڑا. پنجرے کا آکل پنچھی اُڑ گیا.

آرتی کے سمے بھکت لوگ جب پہونچے تو دیکھا' سادھو ٹھاکر جی کے چرنوں میں مرا پڑا تھا اُس کے ہاتھ پھیلے ہوئے تھے اور ایک کی ہتھیلی پر چار آنے پیسے پڑے ہوئے تھے. گاؤں بھر میں شور ہو گیا کہ بابا مرگیا. بنئے کو جب خبر ملی تو وہ اپنی استری سے

मूरत के सामने पता नहीं कहाँ से बल पा कर वह हाथ में आरती की थाली और घंटी लिये खडा था. भक्तो को लग रहा था कि आज साधू नही, बल्कि उसका भूत आरती कर रहा है कई लोगो ने काना फूसी की कि बाबा आज जरूर मर जायगा.

आरती खतम हुई आज प्रसाद बॉटने की शक्ति भी साधू में न थी. उस के एक भक्त ने यह काम कर दिया. एक दूसरे भक्त ने आरती से पैसे निकाल कर, गिन कर साधू के हाथ मे देते हुए कहा—" चार आने हैं, बाबा. "

चार आने ! हॉ, चार आने ही तो सदा से मिलते आये हैं. ज्यादा कैसे मिलते. तो आज भी जब साधू की आखिरी घडी उस के सिर पर मॅडला रही है, उसे चार आने ही मिले !

भक्त चले गये. साधू मुट्ठी मे पैसे लिये ठाकुरजी के चरणो में थकावट की आखिरी हद पर पहुंच जाने वाले मुसाफिर की तरह बैठा ठाकुर का मुंह अपनी फटी ऑखो से दिल मे जाने कैसे कैसे भाव लिये देख रहा था.

आँसू की धारें बही जा रही थी मालूम होता था. जैसे ठाकुर के चरणो मे बैठी करुणा की मूरत रो रही हो साधू ने मुट्ठी खोल कर पैसे देखे. फिर एकाएक फूट पड़ा दिल मे कब की दबी चीख शिकायत की बेरोक धारा की तरह बह निकली. " ठाकुर, जीवन मे मैंने तेरी पूजा और भक्ति के सिवा कुछ भी नहीं चाहा ! तेरे ही चरणो की सेवा मे मैंने पूरा जीवन बिता दिया. लेकिन तुझ से कभी भी कुछ भी न चाहा, न मॉगा. मैं सोचता था कि तू अपने भक्त का कष्ट समझता है और कभी न कभी कृपा

مورت کے سامنے پتہ نہیں کہاں سے بل پاکر وہ ہاتھ میں آرتی کی تھالی اور گھنٹی لئے کھڑا تھا . بھکتوں کو لگ رہا تھا کہ آج سادھو نہیں بلکہ اُسکا بھوت آرتی کر رہا ہے کئی لوگوں نے کانا پھوسی کی کہ بابا آج ضرور مرجائیگا .

آرتی ختم ہوئی . آج پرساد بانٹنے کی شکتی بھی سادھو میں نہ تھی . اُس کے ایک بھکت نے یہ کام کر دیا ایک دوسرے بھکت نے آرتی سے پیسے نکال کر گن کر سادھو کے ہاتھ میں دیتے ہوئے کہا—"چار آنے ہیں بابا."

چارآنے ! ہاں' چار آنے ہی تو سدا سے ملتے آئے ہیں . زیادہ کیسے ملتے . تو آج بھی جب سادھو کی آخری گھڑی اُس کے سر پر منڈلا رہی ہے' اُسے چار آنے ہی ملے !

بھکت چلے گئے . سادھو مٹھی میں پیسے لئے ٹھاکرجی کے چرنوں میں تھکاوٹ کی آخری حد پر پہنچ جانے والے مسافر کی طرح بیٹھا ٹھاکر کا منہ اپنی پھٹی آنکھوں سے دل میں جانے کیسے کیسے بھاو لئے دیکھ رہا تھا .

آنسو کی دھاریں بہی جا رہی تھیں . معلوم ہوتا تھا جیسے ٹھاکر کے چرنوں میں بیٹھی کرونا کی مورت رو رہی ہو . سادھو نے مٹھی کھول کر پیسے دیکھے پھر ایکا ایک پھوٹ پڑا . دل میں کب کی دبی چیخ شکایت کی بے روک دھارا کی طرح بہہ نکلی. " ٹھاکر' جیون میں میں نے تیری پوجا اور بھکتی کے سوا کچھ بھی نہیں چاہا ! تیرے ہی چرنوں کی سیوا میں میں نے پورا جیون بتا دیا . لیکن تجھ سے کبھی بھی کچھ نہ چاہا' نہ مانگا . میں سوچتا تھا کہ تو اپنے بھکت کا کشٹ سمجھتا ہے اور کبھی نہ کبھی کرپا

बिना खाये यों कई दिन बीत गये. चरणामृत और जल पर आखिर वह कब तक टिका रहता. शरीर कमजोर हो गया. फिर भी वह अपने ठाकुरजी की पूजा–अर्चा करता, भोग लगाता, प्रसाद बाँटता और शाम को किसी तरह चल कर बनिये को दो आने सूद चुका आता.

धीरे धीरे उसकी तन्दुरुस्ती बहुत गिर गई. भक्तों ने देखा तो पूछा —" बाबा, आपको क्या हो गया है, जो यों दिन दिन सूखते जा रहे हैं ? क्यों नहीं किसी वेद को दिखा कर कुछ दवा दारू ले लेते. यों कब तक चल सकेंगे आप ? "

साधू ने ठाकुरजी की मूरत की ओर देख कर एक दर्द भरी मुस्कान होठों पर ला कर कहा —" सब ठाकुरजी की कृपा है. उनकी जो इच्छा !

यों ही कुछ दिन और बीत गये. साधू अब बिलकुल निर्बल हो गया. उसे अपने मर जाने की चिन्ता न थी. चिन्ता थी सिर्फ इस बात की कि वह बनिये के कर्ज का भार लिये ही न मर जाय. पहले उसे आशा थी कि ठाकुरजी की कृपा से एक न एक दिन वह इस कर्ज से जरूर छुटकारा पा जायगा. लेकिन अब वह आशा भी टूट गई. अब तो मौत उस के सामने नाचती हुई दिखाई देने लगी. आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों वह जरूर मर जायगा. आह, जिस ने जीवन मे कभी किसी का एहसान न लिया, आज वही क़र्ज़ का भार अपनी आत्मा पर लिये कैसे मर सकेगा.

कमजोरी के कारन वह बडी देर तक बेहोश पड़ा रहा होश आया तो किसी तरह उठा और ठाकुरजी की आरती की तैयारी की.

بنا کھائے یوں کئی دن بیت گئے چرنامرت اور جل پر آخر وہ کب تک ٹکا رہتا . شریر کمزور ہوگیا پھر بھی وہ اپنے ٹھاکرجی کی پوجا ارچا کرتا' بھوگ لگاتا' پرساد بانٹتا اور شام کو کسی طرح چل کر بنئے کو دوآنے سود چکا آتا .

دھیرے دھیرے اسکی تندرستی بہت گرگئی بھگتوں نے دیکھا تو پوچھا . '' بابا' آپ کو کیا ہوگیا ہے جو یوں دن دن سکھتے جارہے ہیں ؟ کیوں نہیں کسی وید کو دکھاکر کچھ دوا دارو لے لیتے یوں کب تک چل سکیں گے آپ '

سادھو نے ٹھاکر جی کی مورت کی اور دیکھکر ایک درد بھری مسکان ہونٹھوں پر لاکر کہا—'' سب ٹھاکر جی کی کرپا ہے . ان کی جو اِچھا ! ''

یوں ہی کچھ دن اور بیت گئے . سادھو اب بالکل نربل ہو گیا اُسے اپنے مرجانے کی چنتا نہ تھی چنتا تھی صرف اس بات کی کہ وہ بنئے کے قرض کا بھار لئے ہی نہ مرجائے . پہلے اُسے آشا تھی کہ ٹھاکر جی کی کرپا سے ایک نہ ایک دن وہ اِس قرض سے ضرور چھٹکارا پا جائیگا . لیکن اب وہ آشا بھی ٹوٹ گئی . اب تو موت اُسکے سامنے ناچتی ہوئی دکھائی دینے لگی . آج نہیں تو کل' کل نہیں تو پرسوں وہ ضرور مرجائے گا . آہ' جس نے جیون میں کبھی کسی کا احسان نہ لیا' آج وہی قرض کا بھار اپنی آتما پر لئے کیسے مرسکے گا .

کمزوری کے کارن وہ بڑی دیر تک بے ہوش پڑا رہا . ہوش آیا تو کسی طرح اُٹھا اور ٹھاکر جی کی آرتی کی تیاری کی .

बनिये ने दुअन्नी देख कर कहा — " बाबा, यह दुअन्नी तो सूद की हुई. मेरी उधार वाली दुअन्नी नहीं लाये क्या ? "

यह सुनकर साधू का दिमाग़ झनझना गया. ओह, यह बात तो उसके धयान में ही नही आई थी ! सँभल कर कहा —" उसका भी इन्तजाम हो जायगा आज इतना ही मेरे पास है "

" अच्छा, अच्छा ! " कह कर बनिये ने सिर हिला दिया.

साधू वहाँ से लौटा तो उसका सिर चिन्ता और दुख से भन्ना रहा था. वह बार बार क़र्ज़ चुकाने के बारे मे सोचता मगर किसी तरह हिसाब बैठता ही नहीं था. चार आने रोज़ की आमदनी. उस मे से कम से कम दो आने ठाकुर जी के भोग मे ख़र्च. बाक़ी दो आने से तो वह सूद की रक़म ही जमा कर पायेगा. असल कर्ज़ तो हमेशा उस पर बना ही रहेगा. ओह, कैसे सकट मे फँस गया !

फिर उसने सोचा, क्यो न एक दिन वह ठाकुर जी को भोग न लगाये और चारो आने बनिये को दे कर क़र्ज़ से छुटकारा पा ले. मगर ठाकुरजी पुजारी के रहते हुए उपवास करे, यह बात वह कैसे बरदाश्त करता. फिर भोग न लगेगा तो भक्त लोग क्या कहेंगे. और फिर वह ठाकुरजी के लिये पैसा ही क्यो देंगे. नहीं, इससे तो मामला और भी चौपट हो जायगा भोग लगाना भी मुश्किल हो जायगा तब तो !

कोई चारा न था. रोज साधू बनिये को दो आने दे आता और असल दो आने के तक़ाज़े का भार सिर पर लिये बिना कुछ खाये सो रहता.

بنئے نے دوانی دیکھ کر کہا — "بابا' یہ دوانی تو سود کی ہوئی . میری اُدھار والی دوانی نہیں لائے کیا ؟ "

یہ سنکر سادھو کا دماغ جھنجھنا گیا . اوہ' یہ بات تو اس کے دھیان میں ہی نہیں آئی تھی ! سنبھلکر کہا — " اُس کا انتظام ہوجائیگا . آج اتنا ہی میرے پاس ہے . "

" اچھا' اچھا ! " کہکر بنئے نے سر ہلادیا .

سادھو وہاں سے لوٹا تو اس کا سر چلتا اور دکھ سے بھنا رہا تھا. وہ بار بار قرض چکانے کے بارے میں سوچتا مگر کسی طرح حساب دیٹھتا ہی نہیں تھا . چار آنے روز کی آمدنی . اس میں سے کم سے کم دوآنے ٹھاکر جی کے بھوگ میں خرچ . باقی دوآنے سے تو وہ سود کی رقم ہی جمع کر پائیگا . اصل قرض , تو ہمیشہ اس پر بنا ہی رہیگا . اوہ' کیسے سنکٹ میں پھنس گیا !

پھر اس نے سوچا' کیوں نہ ایک دن وہ ٹھاکر جی کو بھوگ نہ لگائے اور چاروں آنے بنئے کو دیکر قرض سے چھٹکارا پالے . مگر ٹھاکر جی پجاری کے رہتے ہوئے اپواس کریں' یہ بات وہ کیسے برداشت کرتا . پھر بھوگ نہ لگے گا تو بھگت لوگ کیا کہیں گے . اور پھر وہ ٹھاکر جی کے لئے پیسہ ہی کیوں دیں گے نہیں' اس سے تو معاملہ اور بھی چوپٹ ہو جائیگا . بھوگ لگانا بھی مشکل ہوجائیگا تب تو !

کوئی چارہ نہ تھا . روز سادھو بنئے کو دو آنے دے آتا اور اصل دو آنے کے تقاضے کا بھار سر پر لئے بنا کچھ کھائے سو رہتا .

बनिये ने मरी आवाज़ में कहा —' उधार तो मै किसी को देता नही, बाबा. लेकिन जब आप आये हैं तो देना ही पड़ेगा. मगर एक बात है." कुछ हिसाब जोड़ कर उसने कहा —"दो आने का सीधा होगा. जब तक आप दो आने चुका न देंगे, तब तक आप को इस का सूद दो आने रोज़ देना पड़ेगा. अरे हाँ सूद आज ही से लगना शुरू हो जायगा. क्षमा करें, बाबा, हमे व्योपार चलाने के लिये ऐसा करना ही पड़ता है."

साधू ने सोचा, इसमें क्या बात है. कल तो वह चुका ही देगा. उस ने मान लिया.

रूमाल मे सीधा बाँध कर, खुश हो कर साधू अपनी झोंपड़ी में आया और सन्यासी के भण्डारे का इन्तजाम कर के उस ने आराम की साँस ली.

सन्यासी साधू को बहुत धन्यवाद दे कर चला गया. लेकिन साधू को वह जिस धर्म संकट मे फँसा गया, उस से छुटकारा पाना साधू के लिके नामुमकिन हो गया साधू की कुल आमदनी चार आने रोज़ाना की थी किसी तरह कतर-ब्योंत कर के दो आने में ही ठाकुर जी के भोग का इन्तजाम उसने उस दिन किया. प्रसाद बाँट देने के बाद कुछ भी न बच पाया. मगर इसकी उसे चिन्ता न हुई. एक दिन का उपवास उस के लिये कोई कठिन बात न थी

शाम की आरती के बाद वह बची हुई दुअन्नी लिये बनिये के यहाँ पहुंचा और उस के हाथ मे दुअन्नी रख दी

بنئے نے مری آواز میں کہا — '' اُدھار تو میں کسی کو دیتا نہیں بابا . لیکن جب آپ آئے ہیں تو دینا ہی پڑے گا . مگر ایک بات ہے . کچھ حساب جوڑ کر اُس نے کہا — '' دو آنے کا سیدھا ہوگا . جب تک آپ دو آنے چکا نہ دیلگے، تب تک آپ کو اس کا سود دو آنے روز دینا پڑےگا . ارے ہاں، سود آج ہی سے لگنا شروع ہو جائیگا . چھما کریں، بابا، ہمیں بیوپار چلانے کے لئے ایسا کرنا ہی پڑتا ہے ."

سادھو نے سوچا، اس میں کیا بات ہے . کل تو وہ چکا ہی دے گا . اُس نے مان لیا .

رومال میں سیدھا باندھکر، خوش ہوکر سادھو اپنی جھونپڑی میں آیا اور سنیاسی کے بھنڈارے کا انتظام کرکے اُس نے آرام کی سانس لی .

سنیاسی سادھو کو بہت بہت دھنیہواد دیکر چلا گیا . لیکن سادھو کو وہ جس دھرم سنکٹ میں پھنسا گیا اُس سے چھٹکارا پانا سادھو کے لئے ناممکن ہوگیا . سادھو کی کل آمدنی چار آنے روز انہ کی تھی . کسی طرح کتر بیونت کرکے دو آنے میں ہی ٹھاکر جی کے بھوگ کا انتظام اس نے اس دن کیا . پرساد بانٹ دینے کے بعد کچھ بھی نہ بچ پایا . مگر اسکی اسے چنتا نہ ہوئی ایک دن کا اُپواس اس کے لئے کوئی کٹھن بات نہ تھی .

شام کی آرتی کے بعد وہ بچی ہوئی دوانی لئے بنئے کے یہاں پہنچا اور اس کے ہاتھ میں دوانی رکھدی .

साधू कभी भी गाँव मे नही जाता था, उस ने आज तक किसी से कुछ न माँगा था. आज भी शायद किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत उसे न पड़े. ठाकुर जी की कृपा होगी तो सब आप ही हो जायगा. यही सोच कर वह गाँव मे चक्कर लगाने लगा.

लोगो को उसे गाँव मे देख कर अचरज हुआ. कई आदमियो ने पूछा भी कि बाबा ने आज कैसे तकलीफ की, लेकिन साधू के मुंह से जरूरत की बात न निकली. उस ने एक आदमी से भी खुल कर न कहा कि उसे कुछ सीधे (आटा, दाल, चावल) की जरूरत है, कोई भक्त कृपा कर दे

फल यह हुआ कि जैसे वह गया था, वैसे ही उसे लौटना पड़ा. मन दुख से भरा हुआ था. कैसे वह अपने अतिथि का सत्कार करेगा ? क्या ठाकुर जी के सामने ही उन के भक्त की बेइज्जती होगी ? दुख और शर्म के मारे उसका बुरा हाल हो रहा था.

अपनी झोपड़ी के पास पहुंचा ही था कि साधू की नजर पास की ही एक छोटी दुकान पर पड़ गई उस ने मन मे सोचा कि क्यो न वह बनिये की दुकान से सीधा उधार ले ले. ठाकुर जी के पुजारी पर क्या बनिया दो चार आने का भी विश्वास न करेगा ! यही सोच कर वह दुकान पर जा खड़ा हुआ.

गाहको को निवटा कर बनिये की नजर साधू पर पड़ी उसने कहा—" कैसे कृपा हुई बाबा ? "

" मेरे यहाँ आज एक सन्यासी अतिथि पधारे हैं. उन के लिये एक वक्त के सीधे की जरूरत है. क्या तुम उधार दे सकोगे ? मैं कल ही पैसे चुका दूँगा."

سادھو کبھی بھی گاؤں میں نہیں جاتا تھا . اُس نے آج تک کسی سے کچھ نہ مانگا تھا . آج بھی شاید کسی کے سامنے ہاتھ پھیلانے کی ضرورت اسے نہ پڑے . ٹھاکر جی کی کرپا ہوگی تو سب آپ ہی ہوجائیگا . یہی سوچ کر وہ گاؤں میں چکر لگانے لگا .

لوگوں کو اسے گاؤں میں دیکھکر اچرج ہوا . کئی آدمیوں نے پوچھا بھی کہ بابا نے آج کیسے تکلیف کی . لیکن سادھو کے منھ سے ضرورت کی بات نہ نکلی . اس نے ایک آدمی سے بھی کھلکر نہ کہا کہ اُسے کچھ سیدھے (آٹا' دال' چاول) کی ضرورت ہے' کوئی بھگت کرپا کردے .

پھل یہ ہوا کہ جیسے وہ گیا تھا' ویسے ہی اُسے لوٹنا پڑا . من دکھ سے بھرا ہوا تھا . کیسے وہ اپنے اتتھی کا ستکار کریگا ؟ کیا ٹھاکرجی کے سامنے ہی ان کے بھگت کی بے عزتی ہوگی ؟ دکھ اور شرم کے مارے اس کا برا حال ہورہا تھا .

اپنی جھونپڑی کے پاس پہونچا ہی تھا کہ سادھو کی نظر پاس کی ہی ایک چھوٹی دوکان پر پڑگئی . اس نے من میں سوچا کہ کیوں نہ وہ بنئے کی دوکان سے سیدھا اُدھار لےلے . ٹھاکر جی کے پجاری پر کیا بنیا دو چار آنے کا بھی وشواس نہ کرے گا ! یہی سوچ کر وہ دوکان پر جا کھڑا ہوا .

گاھکوں کو نپٹا کر بنئے کی نظر سادھو پر پڑی . اس نے کہا — " کیسے کرپا ہوئی بابا ؟ "

" میرے یہاں آج ایک سنیاسی اتتھی پدھارے ہیں . انکے لئے ایک وقت کے سیدھے کی ضرورت ہے . کیا تم اُدھار دے سکوگے ؟ میں کل ہی پیسے چکادوں گا . "

"अहो भाग्य कि आप के दर्शन हुए!" साधू ने ख़ुशी ज़ाहिर करते हुए कहा.

"सब भगवान की महिमा है भगवन." सन्यासी ने कहा—"भण्डारे वंडारे का कुछ इन्तज़ाम हो सकेगा आपके यहाँ? आप के ऐसे भक्त की संगत भाग्य से ही मिलती है. चलते-चलते थक भी बहुत गया हूं. अगर कुछ इन्तज़ाम हो जाता, तो रात आप के ठाकुर जी के चरणों में बिता कर, आप की संगत का लाभ-उठाता और सुबह होते ही चला जाता."

साधू ने नम्रता से सिर झुका कर कहा—"ठाकुर जी की कृपा से जो भी साग-सतू मिल सकेगा, मैं आप की सेवा मे ला रखूंगा. आपके सत्कार का यह मौका मेरे लिये बड़े भाग्य की बात है. आप आराम करें, ठाकुर जी!"

सन्यासी पटिया पर मृग छाला बिछा कर लेट गया. साधू उस के सत्कार की चिन्ता मे झोपड़ी के अन्दर चला गया.

ठाकुर के चरणों मे पड़ी हुई थाली में बिलकुल थोड़ा प्रसाद बच गया था. सन्यासी न होता तो साधू उसे ही खाकर अपनी रात काट लेता. लेकिन अब इतने ही प्रसाद से कैसे काम चलेगा?

साधू को अपनी चिन्ता न थी. अगर यह प्रसाद सन्यासी के लिये काफ़ी होता तो वह यों ही बिना खाये सो रहता. लेकिन प्रसाद तो इतना कम था कि सन्यासी के सामने रखते भी उसे शर्म आती.

यही सब सोच कर वह झोपड़ी के बाहर निकला और गाँव की ओर चल पड़ा. सोचा कि मुमकिन है ठाकुर जी का कोई भक्त इस मौक़े पर उस की मदद कर दे.

" اهو بهاگیه که آپ کے درشن هوئے ! " سادهو نے خوشی ظاهر کرتے هوئے کہا ۔

" سب بهگوان کی مہما هے بهگون ." سنیاسی نے کہا — '' بهنڈارے ونڈارے کا کچھ انتظام هوسکے گا آپ کے یہاں ؟ آپ کے ایسے بهگت کی سنگت بهاگیه سے هی ملتی هے . چلتے چلتے تهک بهی بہت گیا هوں . اگر کچھ انتظام هو جاتا تو رات آپ کے تهاکر جی کے چرنوں میں بتاکر آپ کی سنگت کا لابھ اُٹھاتا اور صبح هوتے هی چلا جاتا ."

سادهو نے نمرتا سے سر جهکا کر کہا — '' تهاکر جی کی کرپا سے جو بهی ساگ ستو مل سکے گا' میں آپ کی سیوا میں لا رکهوں گا . آپ کے ستکار کا یہ موقعہ میرے لئے بڑے بهاگیه کی بات هے آپ آرام کریں' تهاکر جی ! ''

سنیاسی پٹیا پر مرگ' چهالا بچهاکر لیٹ گیا . سادهو اس کے ستکار کی چنتا میں جهونپڑی کے اندر چلا گیا .

تهاکر کے چرنوں میں پڑی هوئی تهالی میں بالکل تهوڑا پرساد بچ گیا تها . سنیاسی نہ هوتا' تو سادهو اُسے هی کهاکر اپنی رات کات لیتا . لیکن اب اتنے هی پرساد سے کیسے کام چلے گا ؟

سادهو کو اپنی چنتا نہ تهی اگر یہ پرساد سنیاسی کے لئے کافی هوتا تو وہ یوں هی بنا کهائے سو رهتا . لیکن پرساد تو اتنا کم تها کہ سنیاسی کے سامنے رکهتے بهی اُسے شرم آتی .

یهی سب سوچکر وہ جهونپڑی کے باهر نکلا اور گاؤں کی اور چل پڑا . سوچا کہ ممکن هے تهاکر جی کا کوئی بهگت اس موقعہ پر اُسکی مدد کردے .

पास से ही गुजरते हुए एक सन्यासी ने घंटी की आवाज सुनी तो झोपड़ी के सामन आकर वहाँ इकट्ठे हुए बच्चो के बीच हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया.

जय जय कार के साथ आरतो खतम हुई. ठाकुर के चरणों मे आरती की थाली रख कर साधू ने ठाकुर जी की अर्चना की. फिर भक्तों को प्रसाद और चरणामृत बाँट कर वह प्रसाद की थाली लिये बाहर खड़े हुए बाल गोपालो के बीच आ खड़ा हुआ.

ललचाई आँखो से साधू को ओर देखते हुए बालको ने थाली को तरफ हाथ बढ़ा दिये. साधू ने थालो ऊँचो कर के प्रसाद बाँटना शुरू कर दिया. सन्यासी एक ओर हट गया.

बच्चों को निबटाने के बाद साधू को नजर सन्यासी पर पड़ी. उस ने उस का स्वागत 'जय ठकुर जी' कह कर किया. फिर वह उसे प्रसाद देने लगा तो सन्यासी बोला — "भगवन, पहले जरा पानी दें. हाथ-मुंह धोकर ही मैं प्रसाद पाऊँगा. बड़ी दूर से आ रहा हूँ."

"अच्छा, अच्छा!" बड़ो नम्रता से कह कर साधू झोपड़ी के अन्दर चला गया और कमण्डल ला कर, पास ही पड़ी पटिया पर रखकर, सन्यासी से हाथ-मुंह धो लेने के लिये निवेदन किया.

सन्यासी जब प्रसाद पाने लगा तो साधू ने यो ही पूछा—"कहाँ से आना हो रहा है ठाकुर जी?"

"मैं काशी जी से आ रहा हूं. प्रयाग राज के माघ-मेले में जाने का विचार है." सन्यासी ने कहा.

پاس سے ھی گذرتے ھوئے ایک سنیاسی نے گھنٹی کی آواز سنی تو جھونپڑی کے سامنے آکر وھاں اکٹھے ھوئے بچوں کے بیچ ھاتھ جوڑ کر کھڑا ھوگیا ۔

جے جے کار کے ساتھ آرتی ختم ھوئی ۔ ٹھاکر کے چرنوں میں آرتی کی تھالی رکھکر سادھو نے ٹھاکر جی کی ارچنا کی ۔ پھر بھکتوں کو پرساد اور چرنا مرت بانٹ کر وہ پرساد کی تھالی لئے باھر کھڑے ھوئے بال گوپالوں کے بیچ آکھڑا ھوا ۔

للچائی آنکھوں سے سادھو کی اور دیکھتے ھوئے بالکوں نے تھالی کی طرف ھاتھ بڑھا دیئے ۔ سادھو نے تھالی اونچی کرکے پرساد بانٹنا شروع کردیا ۔ سنیاسی ایک اور ھٹ گیا

بچوں کو نپٹانے کے بعد سادھو کی نظر سنیاسی پر پڑی ۔ اس نے اس کا سواگت 'جے ٹھاکر جی' کہکر کیا ۔ پھر وہ اسے پرساد دینے لگا تو سنیاسی بولا — " بھگون' پہلے ذرا پانی دیں ۔ ھاتھ منہ دھو کر ھی میں پرساد پاؤنگا بڑی دور سے آرھا ھوں ."

" اچھا' اچھا' ! ' بڑی نمرتا سے کہکر سادھو جھونپڑی کے اندر چلاگیا اور کمنڈل لاکر' پاس ھی پڑی پٹیا پر رکھکر' سنیاسی سے ھاتھ منہ دھو لینے کے لئے نویدن کیا ۔

سنیاسی جب پرساد پانے لگا تو سادھو نے یوں ھی پوچھا — " کہاں سے آنا ھو رھا ھے ٹھاکر جی ؟ "

" میں کاشی جی سے آرھا ھوں ۔ پریاگ راج کے ماگھ میلے میں جانے کا وچار ھے ." سنیاسی نے کہا ۔

दान

(भाई भैरव प्रसाद गुप्त)

बहुत पुराने जमाने की बात है. एक गाँव में एक साधू रहता था. अपनी छोटी सी झोपड़ी मे उसने ठाकुर जी की एक छोटी मूरत बैठा रखी थीं. उसी मूरत की पूजा में वह अपने दिन बिता रहा था

ठाकुर जी के भक्तो की कृपा से उसे रोज चार आने की आमदनी हा जाती थी. इसी से वह ठाकुर जी का भोग लगाता, प्रसाद बाँटता और खुद भी प्रसाद पाता. कुछ ऐसी बात थी कि उसे रोज चार ही आने मिलते, न एक पैसा कम, न एक पैसा ज्यादा. साधू बड़ा सन्तोषी था. चार आने मे ही वह मजे मे गुजर कर लेता था. उसे कभी कोई मुशकल न होती थी.

दिन यों ही कटते जा रहे थे कि एक दिन एक ऐसी बात हो गई जिस से उस साधू का जीवन हमेशा के लिये धर्म संकट मे पड़ गया.

शाम का वक़्त था. दाहिने हाथ मे आरती की थाली लिये, बायें हाथ से घंटी टुनटुनाता साधू ठाकुर जी की आरती करता, भक्ति और श्रद्धा के नशे मे झूम रहा था. पास ही कुछ भक्त लोग हाथ जोड़े खड़े थे. झोपड़ी धूप और कपूर की खुशबू से महक रही थी. भक्ति-रस मे डूबी घटी की टुनटुनाहट जैसे अमृत बरसा रही थी.

دان

(بھائی بھیرو پرساد گپت)

بہت پرانے زمانے کی بات ہے . ایک گاؤں میں ایک سادھو رہتا تھا . اپنی چھوٹی سی جھونپڑی میں اس نے ٹھاکر جی کی ایک چھوٹی مورت بیٹھا رکھی تھی . اسی مورت کی پوجا میں وہ اپنے دن بتا رہا تھا .

ٹھاکر جی کے بھکتوں کی کرپا سے اسے روز چار آنے کی آمدنی ہوجاتی تھی . اسی سے وہ ٹھاکر جی کا بھوگ لگاتا، پرساد بانٹتا اور خود بھی پرساد پاتا . کچھ ایسی بات تھی کہ اسے روز چار ہی آنے ملتے، نہ ایک پیسہ کم، نہ ایک پیسہ زیادہ . سادھو بڑا سنتوشی تھا چار آنے میں ہی وہ مزے میں گذر کرلیتا تھا اسے کبھی کوئی مشکل نہ ہوتی تھی .

دن یوں ہی کٹتے جارہے تھے کہ ایکدن ایسی بات ہوگئی جس سے اس سادھو کا جیون ہمیشہ کے لئے دھرم سنکٹ میں پڑگیا .

شام کا وقت تھا . داہنے ہاتھ میں آرتی کی تھالی لئے بائیں ہاتھ سے گھنٹی ٹنٹناتا سادھو ٹھاکر جی کی آرتی کرتا، بھکتی اور شردھا کے نشے میں جھوم رہا تھا . پاس ہی کچھ بھکت لوگ ہاتھ جوڑے کھڑے تھے . جھونپڑی دھوپ اور کپور کی خوشبو سے مہک رہی تھی . بھکتی رس میں ڈوبی گھنٹی کی ٹنٹناہٹ جیسے امرت برسا رہی تھی .

पोलैन्ड ने उद्योग धन्धों और खेती दोनो मे काफी तरक्की की. रूमानिया मे इस योजना को किसी लिहाज़ से भी कामयाबी नही हासिल हुई चेकोस्लोवाकिया सनअत के एतबार से पूरबी योरप के सभी देशो से आगे था लेकिन वहाँ भी इस योजना को कोई कामयाबी नही हुई बल्कि वहाँ बड़ा भयानक आर्थिक सकट पैदा होगया. हाँ योगोस्लविया मे टाटो ने इस योजना को बहुत मुस्तैदी और मजबूती से कामयाब बनाया.

मुख्तसर यह कि सनअती मैदान मे करीब करीब सभी मुल्को ने अपनी योजनाओं को कामयाबी से चलाया मगर खेती मे सभी पीछे रहे. इस तरह हम कह सकते है कि अब तक हम ने जिन आर्थिक मामलो में इन मुल्को की आर्थिक नीति पर गौर किया है उनमे यह बात साफ दिखाई पड़ती है कि सोवियत हाकिमो को जिस हद तक इन मुल्को मे राष्ट्रीकरन और सुधार के कामों को बढ़ादेने के लिये मजबूर होना पड़ा है उस हद तक यह मुल्क तरक्की के रास्ते पर गये है. लेकिन जैसा कि मैं एक दूसरे लेख में दिखाऊँगा कि यह मुल्क अब भी पूंजी वादी मुल्को और सोवियत रूस के मुख्तलिफ आर्थिक असूलो के बीच में हैं और अकसर इन मुल्को मे सरमायादारी की पिछली हालत की तरफ वापस जाने का उस से भी ज्यादा खतरा है, जितना खुद सोवियत रूस में. और इन खतरो से उस वक्त तक दुनिया को छुटकारा नहीं मिल सकता जब तक दुनिया भर में मजदूर इन्कलाब न हो.

پولینڈ نے اُدیوگ دھندوں اور کھیتی دونوں میں کافی ترقی کی. رومانیہ میں اس یوجنا کو کسی لحاظ سے بھی کامیابی نہیں حاصل ہوئی۔ چیکوسلوواکیا صنعت کے اعتبار سے پوربی یورپ کے سبھی دیشوں سے آگے تھا لیکن وہاں بھی اس یوجنا کو کوئی کامیابی نہیں ہوئی بلکہ وہاں بڑا بھیانک آرتھک سنکٹ پیدا ہوگیا۔ ہاں یوگوسلاویہ میں ٹیٹو نے اس یوجنا کو بہت مستعدی اور مضبوطی سے کامیاب بنایا۔

مختصر یہ کہ صنعتی میدان میں قریب قریب سبھی ملکوں نے اپنی یوجناؤں کو کامیابی سے چلایا۔ مگر کھیتی میں سبھی پیچھے رہے۔ اس طرح ہم کہ سکتے ہیں کہ اب تک ہم نے جن آرتھک معاملوں میں ان ملکوں کی آرتھک نیتی پر غور کیا ہے اُن میں یہ بات صاف دکھائی پڑتی ہے کہ سوویت حاکموں کو جس حد تک ان ملکوں میں راشٹری کرن اور سدھار کے کاموں کو بڑھا دینے کے لئے مجبور ہونا پڑا ہے اُس حد تک یہ ملک ترقی کے راستے پر گئے ہیں۔ لیکن جیسا کہ میں ایک دوسرے لیکھ میں دکھاؤں گا کہ یہ ملک اب بھی پونجی وادی ملکوں اور سوویت روس کے مختلف آرتھک اصولوں کے بیچ میں ہیں اور اکثر ان ملکوں میں سرمایہ‌داری کی پچھلی حالت کی طرف واپس جانے کا اُس سے بھی زیادہ خطرہ ہے جتنا خود سوویت روس میں اور ان خطروں سے اُس وقت تک دنیا کو چھٹکارا نہیں مل سکتا جب تک دنیا بھر میں مزدور انقلاب نہ ہو۔

चेकोस्लोवाकिया की दो साला योजना. इन दोनों पर जनवरी सन् ४७ ई० ही मे अमल होना चाहिये था, मगर शुरू हुआ बहुत दिनों के बाद बलग़ारिया की दो साला योजना पहली अप्रैल सन् ४७ ई० से चालू हुई. इसीतरह योगोस्लविया की पॉच साला योजना को २० अप्रैल सन् ४७ ई० से और हंग्री की तीन साला योजना को पहली अगस्त सन् ४७ ई० से चालू करने का एलान हुआ सब के बाद २७ दिसम्बर सन् ४८ ई० को रोमानिया की एक साला योजना का एलान हुआ. इन सभी योजनाओं का मकसद मुल्क को ज्यादा से ज्यादा सनअती बनाना, खेती बारी को तरक़्क़ी देना और मुल्क की आर्थिक उन्नति करना था. अब देखना है कि यह मकसद कहॉ तक पूरे हो सके.

बलग़ारिया में सन् ४७ ई० तक ७७ फीसदी योजनायें चालू होगईं. सन् ४८ ई० में इन पर कामयाबी से अमल हुआ और सन् ३८ ई० के मुक़ाबले मे पैदावार ७० फीसदी बढ़ गई लेकिन खेती में उम्मीद के मुताबिक़ कामयाबी नहीं हुई. १० अक्तूबर सन् ४८ ई० तक महज़ एक जिले मे यह मकसद सौ फीसदी पूरा हुआ. १३ जिलों में ८० से ९० फसदी तक कामयाबी हुई मगर कई जिलों में ५० फीसदी भी कामयाबी नहीं हुई.

हंग्री मे सन् ४७ ई० मे सनअती पैदावार मे तरक़्क़ी हुई. लेकिन छोटे मोटे धन्धे पीछे रह गये मिसाल के लिये हंग्री ने जहाँ सन् ३८ ई० मे ४७७ लाख जोड़े जूते तैयार किये थे वहाँ सन् ४७ ई० में महज़ २० लाख जोड़े जूते तैयार किये यही हालत कपड़े की पैदावार की हुई लेकिन हंग्री मे खेती की पैदावार मे काफी तरक्का हुई और इस खयाल से उसे खुशहाल कहा जायेगा.

چیکوسلوواکیا کی دو سالہ یوجنا ۔ ان دونوں پر جنوری سن ۴۷ء ہی میں عمل ہونا چاہئے تھا' مگر شروع ہوا بہت دنوں کے بعد ۔ بلغاریہ کی دو سالہ یوجنا پہلی اپریل سن ۴۷ء سے چالو ہوئی اسیطرح یوگوسلاویہ کی پانچ سالہ یوجنا کو ۲۰ اپریل سن ۴۷ء سے اور ہنگری کی ۳ سالہ یوجنا کو پہلی اگست سن ۴۷ء سے چالو کرنے کا اعلان ہوا ۔ سب کے بعد ۲۷ دسمبر سن ۴۸ء کو رومانیہ کی ایک سالہ یوجنا کا اعلان ہوا ۔ ان سبھی یوجناؤں کا مقصد ملک کو زیادہ سے زیادہ صنعتی بنانا' کھیتی باری کو ترقی دینا اور ملک کی آرتھک انتی کرنا تھا ۔ اب دیکھنا ہے کہ یہ مقصد کہاں تک پورے ہوسکے

بلغاریہ میں سن ۴۷ء تک ۷۷ فیصدی یوجنائیں چالو ہوگئیں سن ۴۸ء میں ان پر کامیابی سے عمل ہوا اور سن ۳۸ء کے مقابلے میں پیداوار ۷۰ فیصدی بڑھگئی ۔ لیکن کھیتی میں امید کے مطابق کامیابی نہیں ہوئی ۔ ۱۰ اکتوبر سن ۴۸ء تک محض ایک ضلع میں یہ مقصد سو فیصدی پورا ہوا ۔ ۱۳ ضلعوں میں ۸۰ سے ۹۰ فیصدی تک کامیابی ہوئی مگر کئی ضلعوں میں ۵۰ فیصدی بھی کامیابی نہیں ہوئی ۔

ہنگری میں سن ۴۷ء میں صنعتی پیداوار میں ترقی ہوئی لیکن چھوٹے موٹے دھندے پیچھے رہگئے ۔ مثال کے لئے ہنگری نے جہاں سن ۳۸ء میں ۴۷۷ لاکھ جوڑے' جوتے تیار کئے تھے وہاں سن ۴۷ء میں محض ۲۰ لاکھ جوڑے جوتے تیار کئے یہی حالت کپڑے کی پیداوار کی ہوئی ۔ لیکن ہنگری، میں کھیتی کی پیداوار میں کافی ہوئی اور اس خیال سے اُسے خوشحال کہا جائیگا ۔

योगोस्लाविया के अप्रैल सन् ४८ ई० के कानून के मुताबिक ३१०० निजी पूँजी वाले कारखाने और कारबार जिस में ६५ छोटे कारखाने, २०० प्रेस, १०० सिनेमा, ३५० सेहत के मरकज़, अस्पताल, होटल, नहान घर वगैरा और ५० से ज्यादा मुसाफिर ढोने वाले सभी जहाज राष्ट्र करन के ज़रिये सरकार के कब्जे में आगये. इन सबके मालिकों को मुआवज़ा दिये जाने का सरकारी दस्तावेज़ लिखा गया सभी थोक व्योपारो का भी राष्ट्री करन हुआ. खुलासा यह कि सन् ४७ ई० तक सिर्फ़ योगोस्लाविया मे कारखानो के पूँजीपति मालिको का खात्मा हो सका. यहाँ भी छोटे कारखाने निजी पूंजा के रूप मे बने रहे चेकोस्लोवाकिया और पोलैन्ड मे छोटे कारखानो मे अब भी निजी पूँजी का बोल बाला रहा. हंग्री में धात के धन्धो और कारखानो को छोड़ कर और जगहों में सरमायादार तबके की अहमियत बनी रही. व्योपारियो का क़रीब क़रीब सभी जगह पहले जैसा ही बोल बाला रहा.

योगोस्लाविया और बलगारिया में अब ज्यादा फर्क दिखाई दे रहा है. यहाँ सनअती सरमायादारों के पूरे खात्मे के अलावा व्योपारियो के हाथों में भी छोटे मोटे फुटकर धन्धे रह गये हैं. मगर पोलैन्ड और चेकोस्लोवाकिया मे यह बात नहीं है यहाँ छोटे कारखाने और थोक तिजारत पूंजी पतियों ही के हाथ मे है, जब कि फुटकर व्योपार भी क़रीब क़रीब उन्हीं के हाथ में है.

३. योजनायें (स्कीमें)

राष्ट्रीकरन के साथ ही योजानायें भी चलती हैं. योजनाओं के सब से पहले एलान थे— पोलैन्ड की तीन साला योजना और

یوگوسلاویہ کے اپریل سن ۴۸ء کے قانون کے مطابق ۳۱۰۰ نجی پونجی والے کارخانے اور کاربار جس میں ۶۵ چھوٹے کارخانے' ۲۰۰ پریس' ۱۰۰ سنیما' ۳۵۰ صحت کے مرکز' ہسپتال' ہوٹل' نہان گھر وغیرہ اور ۵۰ سے زیادہ مسافر ڈھونے والے سبھی جہاز راشٹری کرن کے ذریعے سرکار کے قبضے میں آگئے ان سب کے مالکوں کو معاوضہ دیئے جانے کا سرکاری دستاویز لکھا گیا . سبھی تھوک بیوپاروں کا بھی راشٹری کرن ہوا خلاصہ یہ کہ سن ۴۷ء تک صرف یوگوسلاویہ میں کارخانوں کے پونجی پتی مالکوں کا خاتمہ ہوسکا . یہاں بھی چھوٹے کارخانے نجی پونجی کے روپ میں بنے رہے . چیکوسلوواکیا اور پولینڈ میں چھوٹے کارخانوں میں اب بھی نجی پونجی کا بول بالا رہا . ہنگری میں دھات کے دھندوں اور کارخانوں کو چھوڑ کر اور جگہوں میں سرمایہ دار طبقے کی اہمیت بنی رہی . بیوپاریوں کا قریب قریب سبھی جگہ پہلے جیسا ہی بول بالا رہا .

یوگوسلاویہ اور بلغاریہ میں اب زیادہ فرق دکھائی دے رہا ہے . یہاں صنعتی سرمایہ داروں کے پورے خاتمے کے علاوہ بیوپاریوں کے ہاتھوں میں بھی چھوٹے موٹے پھٹکر دھندے رہ گئے ہیں . مگر پولینڈ اور چیکوسلوواکیا میں یہ بات نہیں ہے . یہاں چھوٹے کارخانے اور تھوک تجارت پونجی پتیوں ہی کے ہاتھ میں ہے' جبکہ پھٹکر بیوپار بھی قریب قریب انہیں کے ہاتھ میں ہے .

۳— یوجنائیں (اسکیمیں)

راشٹری کرن کے ساتھ ہی یوجنائیں بھی چلتی ہیں یوجناؤں کے سب سے پہلے اعلان تھے— پولینڈ کی تین سالہ یوجنا اور

राष्ट्री करन की हद ७३·४ फ़ीसदी होगई जाती सरमाया सिर्फ़ १८·४ फ़ीसदी रह गया पोलैन्ड के सन् ४७–४८ के सुधारों का नतीजा यह हुआ कि मुल्क के उद्योगों के ६० से ८० फीसदा पर राज का अधिकार होगया विदेशी व्योपार भी अब १० या १५ फीसदी से ज्यादा नहीं है. फुटकर व्योपार में निजी व्योपार का हिस्सा लग भग ७० फ़ीसदी है. १५ नवम्बर सन् ४८ के क़ानून ने बैंको का पूरी तरह राष्ट्री करन कर दिया. अगरचे विदेशी व्योपार के बैंक (बैंक आफ फ़ारेन कामर्स) में अब भी कुछ जाती हिस्से (शेयर्स) हैं.

रूमानिया के ११ जुलाई सन् ४८ ई० के सुधार के मुताबिक़ ७०२ कारबारो का राष्ट्री करन हुआ जिस मे वह सभी तेल की कम्पनियाँ, जिन में विदेशी पूंजी (सोवियत रूमानिया मिलीजुली कम्पनी के अलावा) लगी थी, ब्रिटिश ट्रस्ट के दो कारखाने, बैंक, बीमा कम्पनियाँ, रेलें, रेडियो और टेलीफोन की कम्पनियाँ और जहाजी बेड़े शामिल थे. धात के उन सभी कारखानो का राष्ट्रीकरन होगया जिन में १०० से ज्यादा मजदूर काम करते थे इस तरह बड़ी बड़ी सूती मिलो का भी राष्ट्री करन होगया. इन सब को मुआवजा देने का इन्तजाम किया गया सिर्फ़ तोड़ फोड करने वालो और ग़ैर क़ानूनी ढंग से मुल्क छोड़ने वालो को कोई मुआवजा नहीं दिया गया.

चेकोस्लोवाकिया के सभी कारखानों और कारबारो का राष्ट्री–करन हुआ. बड़े व्योपार सिर्फ़ ८ फ़ीसदी निजी पूंजी के रूप में रह गये हाँ, फुटकर तिजारत में निजी पूंजी का ही बोल बाला है.

راشٹری کرن کی حد ۷۳.۴ فیصدی ہوگئی ذاتی سرمایہ صرف ۱۸.۴ فیصدی رہگیا . پولینڈ کے سن ۴۸–۴۷ کے سدھاروں کا نتیجہ یہ ہوا کہ ملک کے اُدیوگوں کے ۶۰ سے اسی فیصدی پر راج کا ادھکار ہوگیا . ودیشی بیوپار بھی اب دس یا پندرہ فیصدی سے زیادہ نہیں ہے . پھٹکر بیوپار میں نجی بیوپار کا حصہ لگ بھگ ۷۰ فیصدی ہے . ۱۵ نومبر سن ۴۸ کے قانون نے بینکوں کا پوری طرح راشٹری کردیا . اگرچہ ودیشی بیوپار کے بینک (بینک آف فارن کامرس) میں اب بھی کچھ ذاتی حصے (شیئرس) ہیں

رومانیہ کے ۱۱ جولائی سن ۴۸ع کے سدھار کے مطابق ۷۰۲ کاربارون کا راشٹری کرن ہوا' جس میں وہ سبھی تیل کی کمپنیاں جن میں ودیشی پونجی (سوویت رومانیہ ملی جلی کمپنی کے علاوہ) لگی تھی' برٹش ٹرسٹ کے دو کارخانے' بینک' بیمہ کمپنیاں' ریلیں' ریڈیو اور ٹیلی فون کی کمپنیاں اور جہازی بیڑے شامل تھے . دھات کے اُن سبھی کارخانوں کا راشٹری کرن ہوگیا جن میں ۱۰۰ سے زیادہ مزدور کم کرتے تھے اسطرح بڑی بڑی سوتی ملیں کا بھی راشٹری کرن ہوگیا . ان سب کو معاوضہ دینے کا انتظام کیا گیا . صرف توڑ پھوڑ کرنے والوں اور غیر قانونی ڈھنگ سے ملک چھوڑنے والوں کو کوئی معاوضہ نہیں دیا گیا .

چیکوسلواکیا کے سبھی کارخانوں اور کاربارون کا راشٹری کرن ہوا . بڑے بیوپار صرف ۸ فیصدی نجی پونجی کے روپ میں رہگئے . ہاں' پھٹکر تجارت میں نجی پونجی کا ہی بول بالا ہے .

मुल्क के आर्थिक जीवन मे इसका रोब ग़ालिब रहा. रामानिया मे राष्ट्री बैंको और कुछ लिमिटेड कम्पनियो के अलाव, सारी मिलकियत निजी पूंजी की शकल मे थी. इसके बाद सन् ४८ ई० मे राष्ट्री करन की दूसरा लहर आई. अब अन्धाधुन्ध ग़ैरकानूनी राष्ट्री करन का बाज़ार गर्म हुआ इस तरह बलग़ारिया के ७००० कारखानों का राष्ट्रीकरन हुआ, जिन मे ५०० ऐसे कारखाने थे, जहॉ ५० से ज्यादा मजदूर काम करते थे बाकी कारखाने छोटे थे विदेशी पूंजीपतियो को मुआवजा दिया गया. केवल जर्मन सरमायादारो को मुआवजा नही दिया गया क्योंकि उन के सरमाया पर रूसियो ने क़ब्ज़ा कर लिया था उन सरमायादारो को भी मुआवजा नही दिया गया जिन्हो ने पहली मार्च सन् ४१ ई० और सन् ४४ ई० के बीच अपने कारखाने दुशमनो के सुपुर्द कर दिये थे अब बैंको का भी राष्ट्री करन हुआ. नतीजा यह हुआ कि बलगारिया के थोक व्योपार का ६४ फीसदी और फुटकर व्योपार का २२.३ फीसदी राष्ट्री करन हो गया.

हंग्री में अप्रैल सन् ४८ ई० में पारलियामेन्ट ने सारी खानों, धात के कारखानो और बिजली घरों के राष्ट्री करन का क़ानून पास किया. जर्मन पूंजी के अलावा, जिसे सोवियत रूस ने ज़ब्त कर लिया था, वह सभी कारखाने, जिन में ५० फीसदी तक विदेशी पूंजी लगी थी, राष्ट्रीकरन से बचे रहे. इस के खिलाफ बलगारिया में सभी देशी पूंजीपतियो को बिना शर्त मुआवजा दिये जाने का इन्तज़ाम किया गया बैंको का और लग भग २० फीसदी थोक तिजारत का भी राष्ट्रीकरन हुआ. नतीजा यह हुआ कि सनअतों में

ملک کے آرتھک جیون میں اس کا رعب غالب رہا . رومانیہ میں راشٹری بینکوں اور کچھ لمیٹڈ کمپنیوں کے علاوہ ساری ملکیت نجی پونجی کی شکل میں تھی . اسکے بعد سن ۴۸ع میں راشٹری کرن کی دوسری لہر آئی . اب اندھا دھند غیر قانونی راشٹری کرن کا بازار گرم ہوا . اس طرح بلغاریہ کے ۷۰۰۰ کارخانوں کا راشٹری کرن ہوا، جن میں ۵۰۰ ایسے کارخانے تھے، جہاں ۵۰ سے زیادہ مزدور کام کرتے تھے، باقی کارخانے چھوٹے تھے . ودیشی پونجی پتیوں کو معاوضہ دیا گیا . کیول جرمن سرمایہ‌داروں کو معاوضہ نہیں دیا گیا کیونکہ ان کے سرمایہ پر روسیوں نے قبضہ کرلیا تھا . اُن سرمایہ‌داروں کو بھی معاوضہ نہیں دیا گیا جنھوں نے پہلی مارچ سن ۴۱ع اور سن ۴۴ع کے بیچ اپنے کارخانے دشمنوں کے سپرد کردیئے تھے . اب بینکوں کا بھی راشٹری کرن ہوا نتیجہ یہ ہوا کہ بلغاریہ کے تھوک بیوپار کا ۶۴ فیصدی اور پھٹکر بیوپار کا ۲۲.۳ فیصدی راشٹری کرن ہوگیا .

ہنگری میں اپریل سن ۴۸ع میں پارلیامنٹ نے ساری کھانوں، دھات کے کارخانوں اور بجلی گھروں کے راشٹری کرن کا قانون پاس کیا . جرمن پونجی کے علاوہ، جسے سوویت روس نے ضبط کرلیا تھا، وہ سبھی کارخانے، جن میں ۵۰ فیصدی تک ودیشی پونجی لگی تھی، راشٹری کرن سے بچے رہے اسکے خلاف بلغاریہ میں سبھی دیشی پونجی پتیوں کو بنا شرط معاوضہ دیئے جانے کا انتظام کیا گیا . بینکوں کا اور لگ بھگ ۲۰ فیصدی تھوک تجارت کا بھی راشٹری کرن ہوا . نتیجہ یہ ہوا کہ صنعتوں میں

की तादाद जो सन् ४६ ई० तक ७४२० करोड़ ६० लाख थी. सन् ४७ ई० के आख़ीर तक कम होकर ७२६८ करोड़ रह गई इस कदम से कुछ फायदा जरूर हुआ. बैंको पर सरकार का पूरा क़ब्ज़ा होगया फिर भी यह काफी नहीं था, मजदूरो की बहुत सी दिक्कतें फिर भी बाकी रह गईं

२—राष्ट्रीकरन

पोलैन्ड, चेकोस्लोवाकिया और योगोस्लाविया मे और इन से कुछ कम बलगारिया मे सन् ४५-४६ मे राष्ट्री करन शुरू होता है. इस वक़्त इन मुल्को मे मजदूरो की बगावत के नतीजे मे सरकारो को राष्ट्रीकरन करने में बहुत बड़ी मदद मिली. राष्ट्री करन को एक बड़ी मदद इस बात से मिली कि जर्मन मिलकियतो के मालिक भाग गये या ख़त्म कर दिये गये. इस के अलावा लड़ाई के पहले भी इन मुल्कों के आर्थिक ढांचे मे राज का काफी अधिकार था और निस्बतन निजी पूंजी कमज़ोर थी. फिर भी राष्ट्री करन की पहली लहर ने ब्योपार और बैंको व सनअतो के ख़याल से बहुत कुछ निजी मिलकियतें बनी रहने दी. जैसे चेकोस्लोवाकिया मे सन् ४८ ई० तक २० फीसदी सनअती पैदावार और उसी साल तक पौलैन्ड में ४० फ़ीसदी सनअती पैदावार ज़ाती मिलकियत की शकल में थी. हंगरी मे इस पैदावार के ८० फीसदी मालिक निजी पूंजी वाले थे. बलगारिया में पूरा राष्ट्रीकरन ११ फ़ीसदी से ज्यादा नहीं था. जैसा कि साइरिल लेज़ोराव ने बलगारिया की कम्युनिस्ट पार्टी के परचेमें ३१ अकतूबर सन् ४८ ई० को लिखा था कि बावजूद इस के कि सरमायादार तबक़े को आर्थिक मैदान में हार खानी पड़ी, फिर भी

کی تعداد جو سن ۴۶ع تک ۷۴۲۰ کروڑ ۶۰ لاکھ تھی' سن ۴۷ع کے آخیر تک کم ہوکر ۷۲۹۸ کروڑ رہگئی . اس قدم سے کچھ فائدہ ضرور ہوا . بینکوں پر سرکار کا پورا قبضہ ہوگیا پھر بھی یہ کافی نہیں تھا ' مزدوروں کی بہت سی دقتیں پھر بھی باقی رہگئیں .

۲ — راشٹری کرن

پولینڈ' چیکوسلوواکیا اور یوگوسلاویہ میں اور ان سے کچھ کم بلغاریہ میں سن ۴۵-۴۶ میں راشٹری کرن شروع ہوتا ہے . اس وقت ان ملکوں میں مزدوروں کی بغاوت کے نتیجے میں سرکاروں کو راشٹری کرن کرنے میں بہت بڑی مدد ملی . راشٹری کرن کو ایک بڑی مدد اس بات سے ملی کہ جرمن ملکیتوں کے مالک بھاگ گئے یا ختم کر دیئے گئے . اس کے علاوہ لڑائی کے پہلے بھی ان ملکوں کے آرتھک ڈھانچے میں راج کا کافی ادھیکار تھا اور نسبتاً نجی پونجی کمزور تھی . پھر بھی راشٹری کرن کی پہلی لہر نے بیوپار اور بینکوں و صنعتوں کے خیال سے بہت کچھ نجی ملکیتیں بنی رہنے دیں . جیسے چیکوسلوواکیا میں سن ۴۸ع تک ۲۰ فیصدی صنعتی پیداوار اور اسی سال تک پولینڈ میں ۴۰ فیصدی صنعتی پیداوار ذاتی ملکیت کی شکل میں تھی . ہنگری میں اس پیداوار کے ۸۰ فیصدی مالک نجی پونجی والے تھے . بلغاریہ میں پورا راشٹری کرن ۱۱ فیصدی سے زیادہ نہیں تھا . جیسا کہ سائرل لیزوراو نے بلغاریہ کی کمیونسٹ پارٹی کے پرچے میں ۳۱ اکتوبر سن ۴۸ع کو لکھا تھا کہ باوجود اس کے کہ سرمایہدار طبقے کو آرتھک میدان میں ہار کھانی پڑی' پھر بھی

सिक्के को राष्ट्री करन (क़ौमियाना) और तामीरी योजना यहाँ हर एक की तशरीह यानी व्याख्या जरूरी है.

१. सिक्के की तबदीली (करन्सी कन्वर्शन)

सिक्के की तबदीली ने योगोस्लाविया में अप्रैल १९४५ मे चलने वाले ३५० अरब दीनारों को घटा कर अगस्त १९४५ ई० में ६ अरब दीनार कर दिया. पहली अगस्त १९४६ को पेंगू नाम के पुराने सिक्के को खतम कर दिया गया और उसकी जगह सोरेन्ट को चला दिया. हुंग्री के सिक्के की बढ़ती जर्मनी की सन २३ की सिक्के की बढ़ती से भी बढ़ गई थी. जर्मनी मे मार्क की मामूली क़ीमत बीस चालीस मार्क फी पौन्ड थी. जनवरी १९२३ मे वह कम होकर ३३५० फी पौन्ड और जुलाई तक ५० लाख फी पौन्ड होगई थी २३–२४ बरस तक यह हद बहुत ही अचरज मे डालने वाली थी. मगर देखिये कि लड़ाई के बाद हंग्री के सिक्के की बढ़ती की हद, जब पेंगू को सोरेन्ट में बदला गया, तब इसकी दर थी एक सोरेन्ट = ४ अरब १० संख. इसका नतीजा अच्छा हुआ और महँगी घटी, जो लड़ाई के पहले की निस्बत २ या ढाई गुना रह गई नया सिक्का मुस्तक़िल होगया. फिर भी पैदावार की बढ़ती के साथ सोरेन्ट का चलन बढ़ता गया, जो अगस्त सन् ४६ ई० के आख़ीर तक ९६.८ करोड सोरेन्ट और दिसम्बर १९४७ के आख़ीर तक १९८ करोड सोरेन्ट होगया.

बलग़ारिया ने ७ मार्च सन् ४७ ई० को २००, ५००, १००० और ५००० लिवास के सभी नोटों और सरकारी दस्तावेजों (ट्रेज़री बान्डस) को वापस लेना शुरू किया. नतीजा यह हुआ कि लिवास

سکے کا راشٹری کرن (قومیانہ) اور تعمیری یوجنا . یہاں ہر ایک کی تشریح یعنی ویاکھیا ضروری ہے

۱ – سکے کی تبدیلی (کرنسی کنورشن)

سکے کی تبدیلی نے یوگوسلاویہ میں اپریل ۱۹۴۵ع میں چلنے والے ۳۵۰ ارب دیناروں کو گھٹا کر اگست ۱۹۴۵ع میں ۶ ارب دینار کر دیا . پہلی اگست ۱۹۴۶ کو پینگو نام کے پرانے سکے کو ختم کردیا اور اسکی جگہ پلورنت کو چلا دیا . ہنگری کے سکے کی بڑھتی جرمنی کی سن ۲۳ کی سکے کی بڑھتی سے بھی بڑھ گئی تھی . جرمنی میں مارک کی معمولی قیمت بیس چالیس مارک فی پونڈ تھی جنوری ۱۹۲۳ میں وہ کم ہوکر ۳۳۵۰ فی پونڈ اور جولائی تک ۵۰ لاکھ فی پونڈ ہوگئی تھی ۲۳ – ۲۴ برس تک یہ حد بہت ہی اچرج میں ڈالنے والی تھی . مگر دیکھئے کہ لڑائی بعد ہنگری کے سکے کی بڑھتی کی حد ، جب پینگو کو پلورنت میں بدلا گیا ، تب اس کی در تھی ایک پلورنت = ۴ ارب ۱۰ سنکھ . اس کا نتیجہ اچھا ہوا اور مہنگی گھٹی ، جو لڑائی کے پہلے کی نسبت دو یا ڈھائی گنا رہ گئی . نیا سکہ مستقل ہوگیا . پھر بھی پیداوار کی بڑھتی کے ساتھ پلورنت کا چلن بڑھتا گیا جو اگست سن ۴۶ع کے آخیر تک ۹۶.۸ کروڑ پلورنت اور دسمبر سن ۴۷ کے آخیر تک ۱۹۸ کروڑ پلورنت ہوگیا .

بلغاریہ نے ۷ مارچ سن ۴۷ع کو ۲۰۰ ، ۵۰۰ ، ۱۰۰۰ اور ۵۰۰۰ لیواس کے سبھی نوٹوں اور سرکاری دستاویزوں (ٹریزری بانڈس) کو واپس لینا شروع کیا . نتیجہ یہ ہوا کہ لیواس

बुराइयों का जनम और उनकी तरक़्क़ी हुई. ख़ास कर पैदावार की हालत देखने लायक़ है :—

गल्ले की औसत पैदावार (हज़ार टनों मे)

सन् १९३४—३८ ई०

बलगारिया	हंग्री	पोलैन्ड	रोमानिया	चेकोसलोवाकिया	योगोस्लाविया
१७८७	२९१७	८५३१	३७४९	३१४७	२६३६

सन् १९४६ ई०

बलगारिया	हंग्री	पोलैन्ड	रोमानिया	चेकोसलोवाकिया	योगोस्लाविया
१६६२	१५५१	३३२८	१६७१	२६३७	१९७३

सन् १९४७ ई०

बलगारिया	हंग्री	पोलैन्ड	रोमानिया	चेकोसलोवाकिया	योगोस्लाविया
१४१७	१६६०	३४७८	१७५५	१७३२	२३००

चारे की औसत पैदावार

सन् १९३४—३८ ई०

बलगारिया	हंग्री	पोलैन्ड	रोमानिया	चेकोसलोवाकिया	योगोस्लाविया
१२१५	३१८४	४०७६	६७७८	२५३७	५४०७

सन् १९४६ ई०

बलगारिया	हंग्री	पोलैन्ड	रोमानिया	चेकोसलोवाकिया	योगोस्लाविया
७७५	२०१३	१७७४	१५७२	१८८५	१९४९

सन् १९४७ ई०

बलगारिया	हंग्री	पोलैन्ड	रोमानिया	चेकोसलोवाकिया	योगोस्लाविया
११८४	३०५०	२१२७	५०००	१६०२	४५९५

इस आम माली संकट को दूर करने के लिये स्टालिन की हिमायती पार्टी के लोगों ने तीन ख़ास तरीक़े अपनाये, सिक्का-सुधार,

برائیوں کا جنم اور اُن کی ترقی ہوئی خاص کر پیداوار کی حالت دیکھنے لائق ہے —

غلے کی اوسط پیداوار (ہزار ٹنوں میں)

سن ۳۸-۱۹۳۴ع

بلغاریہ	ہنگری	پولینڈ	رومانیہ	چیکوسلوواکیا	یوگوسلاویہ
۱۷ ۰	۲۹۱۷	۸۵۳۱	۳۷۴۹	۳۱۳۷	۲۹۳۶

سن ۱۹۴۶ع

بلغاریہ	ہنگری	پولینڈ	رومانیہ	چیکوسلوواکیا	یوگوسلاویہ
۱۶۶۲	۱۵۵۱	۳۳۲۸	۱۶۷۱	۲۳۳۷	۱۹۷۳

سن ۱۹۴۷ع

بلغاریہ	ہنگری	پولینڈ	رومانیہ	چیکوسلوواکیا	یوگوسلاویہ
۱۳۱۷	۱۶۹۰	۳۳۷۸	۱۷۵۵	۱۷۳۲	۲۳۰۰

چارے کی اوسط پیداوار

سن ۳۸-۱۹۳۴ع

بلغاریہ	ہنگری	پولینڈ	رومانیہ	چیکوسلوواکیا	یوگوسلاویہ
۱۲۱۵	۳۱۸۴	۳۰۷۶	۶۷۷۸	۲۵۳۷	۵۴۰۷

سن ۱۹۴۶ع

بلغاریہ	ہنگری	پولینڈ	رومانیہ	چیکوسلوواکیا	یوگوسلاویہ
۷۷۵	۲۰۱۳	۱۷۷۴	۱۵۷۲	۱۸۸۵	۱۹۴۹

سن ۱۹۴۷ع

بلغاریہ	ہنگری	پولینڈ	رومانیہ	چیکوسلوواکیا	یوگوسلاویہ
۱۱۸۴	۳۰۵۰	۲۱۲۷	۵۰۰۰	۱۶۰۲	۴۵۹۵

اس عام مالی سنکٹ کو دور کرنے کے لئے اسٹالن کی حمائتی پارٹی کے لوگوں نے تین خاص طریقے اپنائے . سکہ سدھار،

हंग्री में सिक्के का फैलाव तो इतना तेज़ हुआ कि उस के सामने जर्मनी का सन् २३ ई० का सिक्के का फैलाव भी मांद पड़गया.

रोमानिया की सरकार की बहुत कोशिशो के बावजूद चालू सिक्के (ली) की तादाद दिसम्बर सन् ४५ ई० मे १२१२ अरब साढ़े ९२ करोड़ थी. लेकिन दिसम्बर सन् ४६ ई० मे यह तादाद बढ़कर ६११७६०३ अरब ली होगई सन् ४६ ई० के शुरू मे चोर बाज़ार मे एक डालर की क़ीमत ३० हज़ार ली थी जो सन्' ४७ के बीच मे २० लाख ली होगई. १५ अगस्त सन् ४७ ई० मे सिक्के के सुधार की एक कोशिश हुई जिस के मुताबिक़ २० हज़ार पुराने ली की क़ीमत एक ली करदी गई. इस पर भी सिक्के की बढ़ती नही रुकी. सन् ४७ ई० के आख़िर तक चालू सिक्के की तादाद बढ़कर २४५२६००००००० नया ली, जो पुराने ४९०७२०००००००० ली के बराबर थी, होगई.

दूसरे मुल्को मे सिक्के की बढ़ती का नतीजा

यह न भूलना चाहिये कि कोई भी पूंजीवादी आर्थिक संकट दर असल पैदावार से सम्बंध रखने वाला आर्थिक संकट है. फिर भी जब यह आर्थिक संकट सिक्के की बढ़ती की शकल मे ज़ाहिर होता है तब इस सिक्के की बढ़ती की बिना पर माली संकट के दूसरे लक्षनों को भी समझा जा सकता है. सिक्के की बढ़ती की वजह से क़ीमतों का बढ़ना, तनख्वाह का कम होना, पैदावार की कमी, रोज़मर्रा की ज़रूरत की चीज़ो का न मिलना, सट्टे बाज़ी वग़ैरा

ھنگری میں سکے کا پھیلاؤ تو اتنا تیز ہوا کہ اُس کے سامنے جرمنی کا سن ۲۳ع کا سکے کا پھیلاؤ بھی ماند پڑگیا .

رومانیہ کی سرکار کی بہت کوششوں کے باوجود چالو سکے (لی) کی تعداد دسمبر سن ۴۵ع میں ۱۲۱۲ ارب ساڑھے ۹۲ کروڑ تھی لیکن دسمبر سن ۴۶ع میں یہ تعداد بڑھکر ۶۱۱۷۶۰۳ ارب لی ھوگئی . سن ۴۶ع کے شروع میں چور بازار میں ایک ڈالر کی قیمت ۳۰ ھزار لی تھی جو سن ۴۷ع کے بیچ میں ۲۰ لاکھ لی ھوگئی . ۱۵ اگست سن ۴۷ع میں سکے کے سدھار کی ایک کوشش ھوئی جسکے مطابق ۲۰ ھزار پرانے لی کی قیمت ایک لی کردی گئی . اس پر بھی سکے کی بڑھتی نہیں رکی . سن ۴۷ع کے آخر تک چالو سکے کی تعداد بڑھکر ۲۴۵۲۶۰۰۰۰۰۰۰ نیا لی جو پرانے ۴۹۰۷۲۰۰۰۰۰۰۰۰ لی کے برابر تھی' ھوگئی .

دوسرے ملکوں میں سکے کی بڑھتی کا نتیجہ —

یہ نہ بھولنا چاھئے کہ کوئی بھی پونجی وادی آرتھک سنکٹ دراصل پیداوار سے سمبندھ رکھنے والا آرتھک سنکٹ ھے . پھر بھی جب یہ آرتھک سنکٹ سکے کی بڑھتی کی شکل میں ظاھر ھوتا ھے تب اُس سکے کی بڑھتی کی بنا پر مالی سنکٹ کے دوسرے لچھنوں کو بھی سمجھا جا سکتا ھے سکے کی بڑھتی کی وجہ سے قیمتوں کا بڑھنا' تنخواہ کا کم ھونا' پیداوار کی کمی' روز مرہ کی ضرورت کی چیزوں کا نہ ملنا سٹے بازی وغیرہ

फैलाव बढ़ गया है. लड़ाई जब हो रही थी तभी बलग़ारिया, हुंग्री, पोलैंड, चेकोसलोवाकिया और योगोस्लाविया में लड़ाई के सामान के खर्च और लूट की वजह से सिक्के के फैलाव के लच्छन साफ़ नजर आने लगे थे.

नीचे के आंकड़ो से साफ़ पता चलता है कि जून सन् १९३९ई० की निस्वत दिसम्बर सन् ४५ ई० मे इन देशो के सिक्को मे कितनी बढ़ती होगई थी. सब आंकड़े लाखो मे दिये गये है.

बलग़ारिया मे सन् ३९ ई० मे २८९१० लीवास थे जो सन् १९४५ ई० मे बढ़कर ९९९२१० लीवास होगये. और हुंग्री मे जहाँ सन्' ३९ ई० मे ८८५० मंगोस थे वहाँ सन्' ४५ मे ७६५४४६० मंगोस होगये. पोलैंड मे सन् ३९ मे १८४८० जलोटस थे और सन् ४५ मे ३६३१९० जलोटस होगये और रोमानिया के सिक्के की तादाद सन्' ४९ मे ३८६४३० से बढ़कर १२१२९२५० ली होगई. इसी तरह चेकोसलोवाकिया मे हुआ यानी सन्' ३९ मे वहाँ १५७४०० क्राउन्स थे लेकिन सन् ४५ मे १२००००० क्राउन्स होगये और योगोस्लाविया के सन् ३९ के ६९२१० दीनार बढ़कर सन् ४५ में ३५००००० दीनार होगये.

लड़ाई के बाद के जमाने मे सिक्के का यह फैलाव बढ़ता ही गया. पौलैंड में दिसम्बर सन् ४५ ई० मे २६·३१९ अरब जलोटस दिसम्बर सन् ४६ ई० मे बढ़कर ६० अरब ६·६ करोड़ जलोटस होगये और दिसम्बर सन् १९४७ ई० में में ९१·४८३ अरब जलोटस होगये.

پھیلاؤ بڑھگیا ہے۔ لڑائی جب ہو رہی تھی تبھی بلغاریا، ہنگری، پولینڈ، چیکوسلوواکیا اور یوگوسلاویہ میں لڑائی کے سامان کے خرچ اور لوٹ کی وجہ سے سکے کے پھیلاؤ کے لچھن صاف نظر آنے لگے تھے۔

نیچے کے آنکڑوں سے صاف پتہ چلتا ہے کہ جون سن ۳۹ع کی نسبت دسمبر سن ۴۵ع میں ان دیشوں کے سکوں میں کتنی بڑھتی ہوگئی تھی۔ سب آنکڑے لاکھوں میں دیئے گئے ہیں۔

بلغاریا میں سن ۳۹ع میں ۲۸۹۱۰ لیواس تھے جو سن ۴۵ع میں بڑھکر ۹۹۹۲۱۰ لیواس ہوگئے اور ہنگری میں جہاں سن ۳۹ع میں ۸۸۵۰ ملگوس تھے وہاں سن ۴۵ع میں ۷۶۵۴۴۶۰ ملگوس ہوگئے۔ پولینڈ میں سن ۳۹ میں ۱۸۴۸۰ جلوٹس تھے اور سن ۴۵ میں ۳۶۳۱۹۰ جلوٹس ہوگئے اور رومانیہ کے سکے کی تعداد سن ۳۹ میں ۳۸۶۴۳۰ سے بڑھکر ۱۲۱۲۹۲۵۰ لی ہوگئی۔ اسی طرح چیکوسلوواکیا میں ہوا یعنی سن ۳۹ میں وہاں ۱۰۷۴۰۰ کراؤنس تھے لیکن سن ۴۵ میں ۱۲۰۰۰۰۰ کراؤس ہوگئے اور یوگوسلاویا کے سن ۳۹ کے ۶۹۲۱۰ دینار بڑھکر ۳۵۰۰۰۰۰ دینار ہوگئے۔

لڑائی کے بعد کے زمانے میں سکے کا یہ پھیلاؤ بڑھتا ہی گیا۔ پولینڈ میں دسمبر سن ۴۵ع میں ۲۶٫۳۱۹ ارب جلوٹس دسمبر سن ۴۶ع میں بڑھکر ۶۰ ارب ۶٫۶ کروڑ جلوٹس ہوگئے اور دسمبر سن ۴۷ع میں ۹۱٫۴۸۳ ارب جلوٹس ہوگئے۔

पूरबी योरप के मुल्कों की आर्थिक हालत

(भाई ओंकार नाथ शास्त्री)

जब पिछली बड़ी लड़ाई हो रही थी तब रूस के योरोपी पड़ोसी देशो में लाल फ़ौज ने घुसकर वहाँ के बाग़ी मजदूरो को यह आशा दिलाई थी कि रूसी फौजे तुम्हारी हिफ़ाजत के लिये आई हैं. उस की इस बात पर विश्वास कर के इन्क़लाबी मजदूरो ने इस विजयी फ़ौज का स्वागत किया. रूसी सरकार, जो मज़दूर इन्कलाब से डरती है, उस के सामने अपने मुल्की असर को फैलाने का ही ख़ास मक़सद था. इस लिये कब्ज़ा करने के बाद उस ने जायदादों को इन्क़लाबी ढग से क़ौमी जायदाद बनाने की जगह धीरे धीरे सुधार का रास्ता अख़्तियार किया. मज़दूरो को इतमीनान दिलाने के लिये कुछ करना ज़रूरी था, इस लिये जो कुछ किया गया वह नाकाफी है. इस नीति का नतीजा यह हुआ कि अब भी यह मुल्क आर्थिक एतबार से सोवियत रूस और सरमाया दार मुल्को के बीच मे ही हैं. इस मज़मून में हम उन मुल्को की मौजूदा हालत पर विचार करेंगे हम यह बतला देना चाहते हैं कि हम ने जो आँकड़े दिये हैं वह ज़्यादातर कम्युनिस्ट पार्टियो के अख़बारो से लिये गये हैं. क्योंकि इन मुल्को की असली हालत जानने के लिये दूसरा कोई ज़रिया नहीं है.

<u>सिक्के का फैलाव</u>

इन सभी मुल्कों में लड़ाई के बाद आम तौर पर सिक्कों का

پوربی یورپ کے ملکوں کی آرتھک حالت

(بھائی اونکار ناتھ شاستری)

جب پچھلی بڑی لڑائی ہو رہی تھی تب روس کے یوروپی پڑوسی دیشوں میں لال فوج نے گھس کر وہاں کے باغی مزدوروں کو یہ آشا دلائی تھی کہ روسی فوجیں تمہاری حفاظت کے لئے آئی ھیں ۔ اس کی اس بات پر وشواس کرکے اِنقلابی مزدوروں نے اس وجئی فوج کا سواگت کیا ۔ روسی سرکار، جو مزدور اِنقلاب سے ڈرتی ھے، اُسکے سامنے اپنے ملکی اثر کو پھیلانے کا ھی خاص مقصد تھا ۔ اسلئے قبضہ کرنے کے بعد اس نے جائیدادوں کو انقلابی ڈھنگ سے قومی جائیداد بنانے کی جگہ دھیرے دھیرے سدھار کا راستہ اختیار کیا ۔ مزدوروں کو اطمینان دلانے کے لئے کچھ کرنا ضروری تھا، اس لئے جو کچھ کیا گیا وہ ناکافی ھے ۔ اس نیتی کا نتیجہ یہ ہوا کہ اب بھی یہ ملک آرتھک اعتبار سے سوویت روس اور سرمایہ‌دار ملکوں کے بیچ میں ھی ھیں ۔ اس مضمون میں ہم ان ملکوں کی موجودہ حالت پر وچار کریں گے ۔ ہم یہ بتلا دینا چاھتے ھیں کہ ہم نے جو آنکڑے دیئے ھیں وہ زیادہ تر کمیونسٹ پارٹیوں کے اخباروں سے لئے گئے ھیں کیونکہ ان ملکوں کی اصلی حالت جاننے کے لئے دوسرا کوئی ذریعہ نہیں ھے ۔

<u>سکے کا پھیلاؤ ۔</u>

اِن سبھی ملکوں میں لڑائی کے بعد عام طور پر سکوں کا

मुहब्बत मुहब्बत को हार पिन्हाये.
मुहब्बत के राग गायें.
मुहब्बत की लहरें दौड़ाये.
मुहब्बत की दुनिया बसायें.
मुहब्बत की धूम माचायें.
इत्तिहाद के डंके पीटें.
सुलह का बिगुल बजायें.
अमन का पैग़ाम सुनाये.
एकता का पाठ पढ़ाये.
गंगा जमुनी जाम पियें.
गंगा जमुनी संगम बनायें.
गंगा जमुनी गीत गाये.
गंगा जमुनी ईद मनायें
प्रेम को धरम जाने. धरम को प्रेम माने.
सुख शान्ती इसी तरह हासिल होसकती है— और
अमन की जिदगी बिताने का यही यही ढंग है.

محبت محبت کو ہار پنہائے ۔
محبت کے راگ گائیں ۔
محبت کی لہریں دوڑائیں ۔
محبت کی دنیا بسائیں ۔
محبت کی دھوم مچائیں ۔
اِتحاد کے ڈنکے پیٹیں ۔
صلح کا بگل بجائیں ۔
اَمن کا پیغام سنائیں
ایکتا کا پاٹھ پڑھائیں ۔
گنگا جمنی جام پیئیں ۔
گنگا جمنی سنگم بنائیں
گنگا جمنی گیت گائیں ۔
گنگا جمنی عید منائیں ۔
پریم کو دھرم جانیں ۔ دھرم کو پریم مانیں ۔
سکھ شانتی اسی طرح حاصل ہو سکتی ہے — اور
اَمن کی زندگی بتانے کا یہی ڈھنگ ہے ۔

फ़साद के बीज दिल में न उगायें.
बैरभाव की खिचड़ी दिमाग़ मे न पकायें.
प्रेम का न्योता नगर नगर फैलायें.
प्रेम का शरबत घर घर पिलाये.
दामन से दामन बाँधे दिल से दिल जोड़े.
————और त्याग से मुंह न मोड़ें.
सीने से कीने को निकाले.
दिलो से मैल,
————और सियासत को न बनायें ख़ूनी खेल !
जम्हूरियत का ढिंढोरा पीट कर जम्हूरियत का मज़ाक़ न उड़ाये
जनता के सेवक बनकर सेवा से जान न चुराये—मुह न छिपाये—बात न बनाये
नेता हो कर हलकी बात न करे
हलके होकर आदर्श न गिराये.
एख़लाक़ का दामन थामें, ज़बान को लगाम दे.
आदर्श अपना ऊँचा उठायें———— और क़ौम का भी
क़ौम को ज़िल्लत के दिन न दिखाये.
फ़िरक़ेवारी की बलायें टाले. रवादारी को घर घर बुलाये.
बरबरता से नाता तोड़ें. मानवता से नाता जोड़ें—इन्सानियत से रिश्ता लगायें.
मेल मिलाप की महफ़िल रचायें.
मेल मिलाप से घर घर सजायें.
इन्सान इन्सान को गले लगाये.

فساد کے بیج دل میں نہ اگائیں .
بیربھاؤ کی کھچڑی دماغ میں نہ پکائیں .
پریم کا نیوتا نگر نگر پھیلائیں .
پریم کا شربت گھر گھر پلائیں .
دامن سے دامن باندھیں . دل سے دل جوڑیں .
———اور تیاگ سے منہ نہ موڑیں .
سینے سے کینے کو نکالیں .
دلوں سے میل'
——— اور سیاست کو نہ بنائیں خونی کھیل !
جمہوریت کا ڈھنڈورا پیٹ کر جمہوریت کا مذا نق اڑائیں .
جنتا کے سیوک بن کر سیوا سے جان نہ چرائیں———منہ نہ چھپائیں—بات نہ بنائیں .
نیتا ہوکر ہلکی بات نہ کریں
ہلکے ہوکر آدرش نہ گرائیں .
اخلاق کا دامن تھامیں' زبان کو لگام دیں
آدرش اپنا اونچا اٹھائیں ———اور قوم کا بھی .
قوم کو ذلت کے دن نہ دکھائیں .
فرقے واری کی بلائیں ٹالیں رواداری کو گھر گھر بلائیں
بر برتا سے ناتا توڑیں مانوتا سے ناتا جوڑیں ——— انسانیت سے رشتہ لگائیں .
میل ملاپ کی محفل رچائیں .
میل ملاپ سے گھر گھر سجائیں .
انسان انسان کو گلے لگائیں .

अब क्या करें ?

(भाई अब्दुल हलीम अंसारी)

पिछले गुनाहों से तोबा करें. आगे ज़ुल्मो से बाज़ आयें.
अपनी ग़लतियाँ आप मानें. अपनी शरमिंदगियाँ आप उठायें.
अपने दामन के धब्बे धोयें. अपने माथे के दाग़ मिटायें.
ग़ुस्से अपने ठंडे करें. ठंडी मीठी फ़िज़ा बनायें.
बदले की आग बुझायें.
फ़िरक़े वारा को, आग लगायें.
प्रेम के दिये जलायें.
कपट की लपट बुझायें.
हैवानियत से दूर भागें. इन्सानियत के पास आयें.
भाई बंदी का नाता ओड़े. इंसानो मे नाम लिखायें.
————समता का झंडा उड़ाये.
————अमन की हवायें चलाये.
रीत रवाज की दीवारें तोड़ें. मोहब्बत के फाटक खोलें.
शैतानों पर लानत भेजें. इन्सानो का स्वागत करें.
घमंड के बल काटे. ग़रूर के बुत तोड़ें.
हठ धरमी के जाले काटें. अदावत के भूत भगायें
मत भेद का नाम मिटायें झूठे स्वार्थ के पास न फटके.
शिष्टाचार को काम में लायें. उदारता को अपने अन्दर जगाये

اب کیا کریں ؟

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

پچھلے گناھوں سے توبہ کریں . آگے ظلموں سے باز آ ھں .
اپنی غلطیاں آپ مانیں . اپنی شرمندگیاں آپ اُٹھائیں .
اپنے دامن کے دھبے دھوئیں . اپنے ماتھے کے داغ مٹائیں .
غصے اپنے ٹھنڈے کریں ٹھنڈی میٹھی فضا بنائیں
بدلے کی آگ بجھائیں .
فرقے واری کو آگ لگائیں .
پریم کے دئے جلائیں .
کپٹ کی لپٹ بجھائیں .
حیوانیت سے دور بھاگیں . اِنسانیت کے پاس آئیں .
بھائی بندی کا ناتا جوڑیں . اِنسانوں میں نام لکھائیں .
———— ستا کا جھنڈا اُٹھائیں .
————اَمن کی ھوائیں چلائیں .
ریت رواج کی دیواریں توڑیں . محبت کے پھاٹک کھولیں .
شیطانوں پر لعنت بھیجیں . اِنسانوں کا سواگت کریں .
گھمنڈ کے بل کاٹیں . غرور کے بت توڑیں
ھٹھ دھرمی کے جالے کاٹیں . عداوت کے بھوت بھگائیں .
مت بھید کا نام مٹائیں . جھوٹے سوارتھ کے پاس نہ پھٹکیں .
شِشٹا چار کو کام میں لائیں . اُدارتا کو اپنے اندر جگائیں .

सारा दरबार यह सुनकर दंग रह गया कि राजा इन तीन दिनों मे नहरवाला से खम्बात गया और वापस आगया. सबने अपनी अपनी गर्दनें शर्म से झुका लीं.

राजा ने कहा—"सारी शरारत पारसियो की है. वह वहाॅ (ईरान) का बदला यहाँ के मुसलमानों से निकालना चाहते हैं. मगर यहाॅ का मुसलमान मेरी रिआया है और मेरी रिआया पर हाथ उठाना मेरे राज के साथ गुस्ताखी करना है. हिन्दू भी खतावार हैं कि वह दूसरो के भड़काने मे अपना कर्त्तव्य क्यों भूल गये. इसलिये हिन्दुओ और पारसियो दोनो के दो दो सरग़ना हाज़िर किये जाय. टूटी हुई मसजिद नये सिरे से बनाई जाय और फरियादी को ख़िलअत देकर सरकारी इन्तज़ाम मे यहाॅ से खम्बात पहुंचाया जाय."

मौलाना शरर लिखते हैं—"उस समय के एक लाख रुपये से वह मसजिद बहुत ही बड़े पैमाने पर और बहुत ही शानदार दोबारा तामीर हुई उस में अज़ान के लिये बहुत ही ख़ूबसूरत और मज़बूत मीनार क़ायम किया गया. और वह ख़िलअत जो राजा ने खतीब अली को दिया था मुसलमानो में पुराने तबर्रुक (प्रसाद) की हैसियत से रखा रहा जिसे वह ईद बक़रीद की सी ख़ुशी के मौक़ो पर निकालते थे और ज़ियारत करने के बाद फिर हिफ़ाज़त से रख देते थे."

سارا دربار یہ سن کر دنگ رہ گیا کہ راجا ان تین دنوں میں نہروالا سے کھمبات گیا اور واپس آگیا . سب نے اپنی اپنی گردنیں شرم سے جھکا لیں .

راجا نے کہا — " ساری شرارت پارسیوں کی ہے . وہ وہاں (ایران) کا بدلہ یہاں کے مسلمانوں سے نکالنا چاہتے ہیں . مگر یہاں کا مسلمان میری رعایا ہے اور میری رعایا پر ہاتھ اٹھانا میرے راج کے ساتھ گستاخی کرنا ہے . ہندو بھی خطاوار ہیں کہ وہ دوسروں کے بہکانے میں اپنا کرتویہ کیوں بھول گئے . اس لئے ہندوؤں اور پارسیوں دونوں کے دو دو سرغنہ حاضر کئے جائیں . ٹوٹی ہوئی مسجد نئے سرے سے بنائی جائے اور فریادی کو خلعت دے کر سرکاری انتظام میں یہاں سے کھمبات پہونچایا جائے . "

مولانا شرر لکھتے ہیں — " اس سمے کے ایک لاکھ روپیہ سے وہ مسجد بہت ہی بڑے پیمانہ پر اور بہت ہی شاندار دوبارہ تعمیر ہوئی . اس میں اذان کے لئے بہت ہی خوبصورت اور مضبوط مینار قائم کیا گیا اور وہ خلعت جو راجا نے خطیب علی کو دیا تھا مسلمانوں میں پرانے تبرک (پرساد) کی حیثیت سے رکھا رہا جسے وہ عید بقرعید کی سی خوشی کے موقعوں پر نکالتے تھے اور زیارت کرنے کے بعد پھر حفاظت سے رکھ دیتے تھے .

राजा ने इशारा किया और एक सुराही उसके सामने लाकर रख दी गई.

राजा ने कहा—"बेशक, नामुमकिन है."

बड़े वजीर ने फ़रियादी से पूछा—"कोई गवाही पेश कर सकते हो ?"

राजा ने कहा—"जुल्म के खिलाफ़ ज़र्रा ज़र्रा शहादत दे सकता है. यह आकाश गवाह है, यह धरती गवाह है और यह सुराही गवाह है. लो, इसका पानी पियो और बताओ कि यह क्या कहता है."

जिसने जिसने सुराही का पानी पिया वह मुंह बनाकर रह गया. और लोग तो नहीं समझे. किसी ने कहा—"कड़ुवा है." किसी ने कहा—"खारी है."

बड़ा वजीर समझ गया—उसने कहा—"महाराज सच कहते हैं यह खम्बात का पानी है और इसकी गवाही बिलकुल सच्ची है"

दूसरे वजीर यह सुनकर हैरान रह गये

राजा ने कहा—"इसमे हैरानी की क्या बात है—सच मुच यह खम्बात का पानी है. मै खुद इसे समुन्दर से भरकर लाया हूं और अपनी आँखो से देखकर आया हूँ कि जो कुछ इस फरियादी ने कहा है उसका एक एक हर्फ़ सच है. मैंने यह तीन दिन इसीलिये दिये थे कि देखूं तुममे से कौन है जो खम्बात जाता है और ठीक ठीक पता लगाकर आता है मगर अफ़सोस, एक ने भी कष्ट नही किया. मुझे टूटी हुई मसजिद देखकर इतना दुख नही हुआ जितना यह सोचकर दुख हो रहा है कि मेरे वजीर कितने आराम तलब हैं और राजपाट की तरफ़ से कितने बेखबर हैं."

راجا نے اشارہ کیا اور ایک صراحی اس کے سامنے لاکر رکھ دی گئی۔

راجا نے کہا — "بیشک' نا ممکن ھے۔"

بڑے وزیر نے فریادی سے پوچھا — "کوئی گواھی پیش کرسکتے ھو ؟"

راجا نے کہا — "ظلم کے خلاف ذرہ ذرہ شہادت دے سکتا ھے یہ آکاش گواہ ھے' یہ دھرتی گواہ ھے اور یہ صراحی گواہ ھے۔ لو اس کا پانی پئو اور بتاؤ کہ یہ کیا کہتا ھے "

جس نے جس نے صراحی کا پانی پیا وہ منہ بناکر رہ گیا۔ اور لوگ تو نہیں سمجھے کسی نے کہا — "کڑوا ھے۔" کسی نے کہا "کھاری ھے۔"

بڑا وزیر سمجھ گیا — اس نے کہا— "مہاراج سچ کہتے ھیں۔ یہ کھمبات کا پانی ھے اور اس کی گواھی بالکل سچی ھے "

دوسرے وزیر یہ سن کر حیراں رہ گئے۔

راجا نے کہا —"اس میں حیرانی کی کیا بات ھے — سچ مچ یہ کھمبات کا پانی ھے۔ میں خود اسے سمندر سے بھر کر لایا ھوں اور اپنی آنکھوں سے دیکھ کر آیا ھوں کہ جو کچھ اس فریادی نے کہا ھے اس کا ایک ایک حرف سچ ھے میں نے یہ تین دن اسی لئے دیئے تھے کہ دیکھوں تم میں سے کون ھے جو کھمبات جاتا ھے اور ٹھیک ٹھیک پتہ لگاکر آتا ھے۔ مگر افسوس ایک نے بھی کشٹ نہیں کیا۔ مجھے ٹوٹی ھوئی مسجد دیکھ کر اتنا دکھ نہیں ھوا جتنا یہ سوچکر دکھ ھو رھا ھے کہ میرے وزیر کتنے آرام طلب ھیں اور راج پاٹ کی طرف سے کتنے بے خبر ھیں۔"

सारा क़ाफ़ला वापस होगया. राजा ने नहरवाला पहुंचते ही दरबार लगाया और बड़े से छोटे तक हर एक को यह हुक्म दिया कि इस मामले की तहक़ीक़ात की जाय और तीन दिन के बाद मुझे ख़बर दी जाय. उस वक्त तक मै महल से बाहर नहीं आऊँगा.

चौथे दिन फिर दरबार हुआ तो बड़े वज़ीर ने यह रिपोर्ट दी कि कुछ न कुछ गड़बड़ी ज़रूर हुई है मगर इतनी दूर की बात है कि पूरी तफ़सील नहीं मालूम हो सकी. बस इतना पता चला है कि पारसियो और मुसलमानो मे किसी बात पर अन बन होगई थी. किसने पहल की और किसपर ज़ुल्म हुआ इसके बारे मे कुछ नहीं कहा जा सकता "

राजा ने खतीब को हुक्म दिया कि वह अपना सारा मुक़दमा दरबार मे पेश करे जब वह अपनी फ़रियाद सुना चुका तो हर वज़ीर ने अपनी अपनी राय दी. किसी ने कहा—"यह झूटा है." किसी ने कहा—"इसका एतबार ही क्या?" अक्सर ने कहा—"यह कैसे मान लिया जाय कि खम्बात के लोग आप ही आप बिगड़ गये और ऐसी बेरहमी पर उतर आये कि जो मुसलमान उनकी अपनी पनाह मे थे उन पर ही टूट पड़े!

राजा ने कहा—'बेशक, यह बात समझ मे नहीं आती कि खम्बात के हिन्दू आप ही आप मुसलमानो पर टूट पड़े मगर यह भी समझ मे नहीं आता कि वहाँ के मुसलमान रहे रहे पागल हो गये और उन ही हिन्दुओं से लड़ पड़े जो उन्हे पनाह दिये हुए हैं"

बड़े वज़ीर ने कहा—'जब तक कोई गवाही न हो, इसका फ़ैसला नहीं हो सकता"

سارا قافلہ واپس ہوگیا . راجا نے نہروالا پہونچتے ہی دربار لگایا اور بڑے سے چھوٹے تک ہر ایک کو یہ حکم دیا کہ اس معاملے کی تحقیقات کی جائے اور تین دن کے بعد مجھے خبر دی جائے. اس وقت تک میں محل سے باہر نہیں آؤنگا .

چوتھے دن پھر دربار ہوا تو بڑے وزیر نے یہ رپورٹ دی کہ کچھ نہ کچھ گڑبڑی ضرور ہوئی ہے . مگر اتنی دور کی بات ہے کہ پوری تفصیل نہیں معلوم ہوسکتی . بس اتنا پتہ چلا ہے کہ پارسیوں اور مسلمانوں میں کسی بات پر ان بن ہوگئی تھی. کس نے پہل کی اور کس پر ظلم ہوا اس کے بارے میں کچھ نہیں کہا جاسکتا "

راجا نے خطیب کو حکم دیا کہ وہ اپنا سارا مقدمہ دربار میں پیش کرے جب وہ اپنی فریاد سنا چکا تو ہر وزیر نے اپنی اپنی رائے دی کسی نے کہا — " یہ جھوٹا ہے ." کسی نے کہا — " اس کا اعتبار ہی کیا." اکثر نے کہا —" یہ کیسے مان لیا جائے کہ کھمبات کے لوگ آپ ہی آپ بگڑ گئے اور ایسی بے رحمی پر اتر آئے کہ جو مسلمان ان کی اپنی پناہ میں تھے ان پر ہی ٹوٹ پڑے ! "

راجا نے کہا — " بیشک یہ بات سمجھ میں نہیں آتی کہ کھمبات کے ہندو آپ ہی آپ مسلمانوں پر ٹوٹ پڑے مگر یہ بھی سمجھ میں نہیں آتا کہ وہاں کے مسلمان رہے رہے پاگل ہوگئے اور ان ہی ہندوؤں سے لڑ پڑے جو انہیں پناہ دیئے ہوئے ہیں "

بڑے وزیر نے کہا — " جب تک کوئی گواہی نہ ہو اس کا فیصلہ نہیں ہوسکتا . "

ख़तीब ने जवाब दिया —" मैं एक सताया हुआ मुसलमान हूँ और इन्साफ चाहता हूँ."

यह कहते ही ख़तीब ने अपने लम्बे कुर्ते की जेब से एक कागज़ निकाला और उसे दोनो हाथो पर रखकर सर झुकाकर खड़ा होगया

राजा ने कहा —" हम इन्साफ मे एक मिनट की भी देर नही करते. तुम्हे जो कहना है फौरन कहो "

ख़तीब ने अपनी अरब परम्परा के अनुसार फौरन एक कसीदा पढ़ना शुरू कर दिया.

मौलना रर शलिखते हैं— " यह कसीदा सस्कृत मे था. " इस से ज़ाहिर है कि अरबो की वह बस्ती बहुत पुरानी बस्ती थी और जो अरब यहाँ रहते थे वह यहाँ के इल्म व फन मे भी काफी दख़ल रखते थे.

राजा पर ख़तीब के क़सीदे का बहुत अच्छा असर पड़ा. उस ने अपने साथ के वज़ीरो से पूछा —" यह क्या माजरा है ?"

वज़ीरो ने कहा —" हम मे से किसी के कान तक यह ख़बर नही पहुची है. हम कैसे मान ले कि यह अजनबी सच कहता है !"

राजा ने कहा—" फरियादी ! हम अपना शिकार मुलतवी करते हैं और वापस होते है. मगर तुम्हारे बयान मे ज़रा भी झूट निकला तो अच्छा न होगा."

वज़ीरो ने कहा—"महाराज ! इसमें कोई ऐसी बात तो नही है कि सरकार अपना शिकार मुलतवी करदें "

राजा ने जवाब दिया—"इन्साफ मे देर करना, इन्साफ का ख़ून करना है. फ़रियादी को साथ लो और वापस चलो."

خطیب نے جواب دیا — " میں ایک ستایا ھوا مسلمان ھوں اور انصاف چاھتا ھوں ۔"

یہ کہتے ھی خطیب نے اپنے لمبے کرتے کی جیب سے ایک کاغذ نکالا اور اسے دونوں ھاتھوں پر رکھ کر سر جھکا کر کھڑا ھوگیا ۔

راجا نے کہا — " ھم انصاف میں ایک منٹ کی بھی دیر نہیں کرتے ۔ تمہیں جو کہنا ھے فوراً کہو "

خطیب نے اپنی عرب پرمپرا کے انوسار فوراً ایک قصیدہ پڑھنا شروع کردیا

مولانا شرر لکھتے ھیں — " یہ قصیدہ سنسکرت میں تھا ۔" اس سے ظاھر ھے کہ عربوں کی وہ بستی بہت پرانی بستی تھی اور جو عرب یہاں رھتے تھے وہ یہاں کے علم و فن میں بھی کافی دخل رکھتے تھے ۔

راجا پر خطیب کے قصیدے کا بہت اچھا اثر پڑا ۔ اس نے اپنے ساتھ کے وزیروں سے پوچھا — " یہ کیا ماجرا ھے ؟ "

وزیروں نے کہا — "ھم میں سے کسی کے کان تک یہ خبر نہیں پہونچی ھے ھم کیسے یقین کرلیں کہ یہ اجنبی سچ کہتا ھے ! "

راجا نے کہا — " فریادی ! ھم اپنا شکار ملتوی کرتے ھیں اور واپس ھوتے ھیں ۔ مگر تمہارے بیان میں ذرا بھی جھوٹ نکلا تو اچھا نہ ھوگا ۔ "

وزیروں نے کہا — " مہاراج ! اس میں کوئی ایسی بات تو نہیں ھے کہ سرکار اپنا شکار ملتوی کردیں ۔"

راجا نے جواب دیا — " انصاف میں دیر کرنا انصاف کا خون کرنا ھے ۔ فریادی کو ساتھ لو اور واپس چلو ۔ "

पाये थे इस लिये खार खाये बैठे थे. एक दिन इन ईरानियो ने खम्बात बन्दरगाह में अरब मुसलमानों के ख़िलाफ़ एक जबरदस्त हंगामा खड़ा कर दिया. उन्हों ने अज़ान के ख़िलाफ़ तरह तरह की बातें फैलाना शुरू की और आस पास के हिन्दुओ को भड़का कर मुसलमानो पर ऐसा हमला किया कि सिवाय खतीब अली के, जो खम्बात की मसजिद का इमाम था, जितने मुसलमान उसके आस पास रहते थे सब मार डाले गये.

खतीब अली वहाँ से भाग कर नहरवाला पहुंचा जो राय जयसिह की राजधानी थी. यह राजा अपने न्याय और इन्साफ के लिये बहुत मशहूर था और इसकी अमलदारी इतनी बड़ी थी कि सारे गुजरात देश मे इसी का सिक्का चलता था. नहरवाला में खतीब अली ने बहुत से हाकिमो से फरियाद की पर किसी ने विश्वास ही न किया कि एक छोटी सी मुस्लिम आबदी पर बिला वजह हमला करदिया गया और उनकी मसजिद तोड़ डाली गई. आख़िर उस ने राजा तक पहुंचने की कोशिश की, पर इस के लिये भी कोई रास्ता न निकला. एक दिन उसे मालूम हुआ कि महाराज शिकार पर जारहे हैं. वह रास्ते मे छिप गया और जैसे ही महाराज का हाथी उस के पास से गुज़रा वह झाड़ियो से निकल कर बाहर आया और चीखा —' दुहाई है महाराज की ! "

राजा ने झट अपना हाथी रोक दिया और पूछा — " ऐ अजनबी, तू कौन है — और क्या चाहता है ? "

پائے تھے اسلئے خار کھائے بیٹھے تھے ایکدن اِن ایرانیوں نے کھمبات بندر گاہ میں عرب مسلمانوں کے خلاف ایک زبردست ھنگامہ کھڑا کردیا . انھوں نے اذان کے خلاف طرح طرح کی باتیں پھیلانا شروع کیں اور آس پاس کے ھندوؤں کو بھڑکا کر مسلمانوں پر ایسا حملہ کیا کہ سوائے خطیب علی کے' جو کھمبات کی مسجد کا امام تھا' جتنے مسلمان اس کے آس پاس رھتے تھے سب مارڈالے گئے .

خطیب علی وھاں سے بھاگ کر نہروالا پہونچا جو رائے جے سنگھ کی راجدھانی تھی . یہ راجا اپنے نیائے اور انصاف کے لئے بہت مشہور تھا اور اس کی عمل داری اتنی بڑی تھی کہ سارے گجرات دیش میں اسی کا سکہ چلتا تھا . نہروالا میں خطیب علی نے بہت سے حاکموں سے فریاد کی پر کسی نے وشواس ھی نہ کیا کہ ایک چھوٹی سی مسلم آبادی پر بلا وجہ حملہ کردیا گیا اور ان کی مسجد توڑ ڈالی گئی آخر اس نے راجا تک پہونچنے کی کوشش کی' پر اس کے لئے بھی کوئی راستہ نہ نکلا . ایک دن اسے معلوم ھوا کہ مہاراج شکار پر جارھے ھیں . وہ راستہ میں چھپ گیا اور جیسے ھی مہاراج کا ھاتھی اس کے پاس سے گذرا وہ جھاڑیوں سے نکل کر باھر آیا اور چیخا — " دوھائی ھے مہاراج کی ! "

راجا نے جھٹ اپنا ھاتھی روک دیا اور پوچھا — "اے اجنبی' تو کون ھے — اور کیا چاھتا ھے ؟ "

ईरान को जीतने से वह सारा समुन्दरी ब्योपार जो ईरानियो के हाथ मे था, अरबो के हाथ में आगया. कुछ लोगों का ख़याल था कि हिन्द में भी ईरान की तरह फ़ौज भेजी जाय लेकिन इसलाम के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर ने सख़्ती के साथ मना कर दिया. ज़ाहिर है कि एक बड़ी जीत के बाद समझदारी की बात यही थी कि दूसरी जीतों के पीछे अरब फ़ौरन न दौड़ पड़ते. इसी लिये ख़लीफ़ा उमर के हुक्म से आगे की फ़ौजी कारवाइयाँ रुक गईं और अरब व हिन्द मे सिर्फ़ ब्योपारी सम्बध रहगये जो बराबर बढ़ते गये अरब मुसलमानो ने ब्योपारियों की हैसियत से दक्खनी हिन्द और लंका के समुन्दरी किनारो पर अपनी बस्तियाँ बसा लीं. हिन्दुस्तानी औरतो से शादियाँ करली और इस तरह रहने लगे जैसे कोई तिजारती क़ाफ़ला एक सच्छी मंडी मे बस जाता है.

हमारा मक़सद तारीख़ बयान करना नहीं बल्कि उसी समय की एक दिलचस्प घटना पर रोशनी डालना है जब कि मुसलमान बहुत ही थोड़ी गिनती में और सिर्फ़ ब्योपार की ग़रज़ से यहाँ रहा करते थे. इस घटना को अरबी के इतिहास कार मुहम्मद औफ़ी ने बयान किया है और उर्दू के मशहूर लेखक मौलाना शरर लखनवी ने सन १९१२ ई० मे " एक हिन्दू राजा का इन्साफ़ " के नाम मे अपने मशहूर माहवार रिसाला " दिलगुदाज़ " मे छापा है.

मौलाना शरर लिखते हैं —" जब ईरान को मुसलमानों ने जीत लिया तो बहुत से ईरानी भी पच्छिमी हिन्द के समुन्दरी किनारो पर आ बसे. इन के दिल में मुसलमानो की तरफ़ से जो अनाद (द्वेष) होना चाहिये था उसका कारन ज़ाहिर है. वह अपने देश मे तो जीत नहीं

ایران کو جیتنے سے وہ سارا سمندری بیوپار جو ایرانیوں کے ہاتھ میں تھا' عربوں کے ہاتھ میں آگیا ۔ کچھ لوگوں کا خیال تھا کہ ہند میں بھی ایران کی طرح فوج بھیجی جائے لیکن اسلام کے دوسرے خلیفہ حضرت عمر نے سختی کے ساتھ منع کردیا ۔ ظاہر ہے کہ ایک بڑی جیت کے بعد سمجھداری کی بات یہی تھی کہ دوسری جیتوں کے پیچھے عرب فوراً نہ دوڑ پڑتے اسی لئے خلیفہ عمر کے حکم سے آگے کی فوجی کارروائیاں رک گئیں اور عرب ہند میں صرف بیوپاری سمبندھ رہ گئے جو برابر بڑھتے گئے ۔ عرب مسلمانوں نے بیوپاریوں کی حیثیت سے دکھنی ہند اور لنکا کے سمندری کناروں پر اپنی بستیاں بسالیں ۔ ہندستانی عورتوں سے شادیاں کرلیں اور اس طرح رہنے لگے جیسے کوئی تجارتی قافلہ ایک اچھی منڈی میں بس جاتا ہے

ہمارا مقصد تاریخ بیان کرنا نہیں بلکہ اس سمے کی ایک دلچسپ گھٹنا پر روشنی ڈالنا ہے جب کہ مسلمان بہت ہی تھوڑی گنتی میں اور صرف بیوپار کی غرض سے یہاں رہا کرتے تھے ۔ اس گھٹنا کو عربی کے اتہاس کار محمد عوفی نے بیان کیا ہے اور اُردو کے مشہور لیکھک مولاناشرر لکھنوی نے سن ۱۹۱۲ع میں "ایک ہندو راجا کا انصاف " کے نام سے اپنے مشہور ماہوار رسالہ " دلگداز" میں چھاپا ہے ۔

مولانا شرر لکھتے ہیں — '' جب ایران کو مسلمانوں نے جیت لیا تو بہت سے ایرانی بھی پچھمی ہند کےسمندری کناروں پر آبسے ۔ ان کے دل میں مسلمانوں کی طرف سے جو عناد (دویش) ہونا چاہئے تھا اس کا کارن ظاہر ہے ۔ وہ اپنے دیش میں تو جیت نہیں

अच्छी तरह पेश आते थे, क्यो कि उन से सब को फ़ायदा पहुँचता था. इसी लिये अरब जहाज़ी भी तरह तरह की रिआयतो के साथ, जिन मे ज़मीने ख़रीदने और व्योपार करने के अलावा धर्म का प्रचार भी शामिल था, हिन्द के पच्छिमी और पूरबी किनारों पर आबाद होने लगे. इन मे ट्रावनकोर और ज़मोरन की रियासतो के बारे में, डाक्टर आबिद हुसैन साहब लिखते है कि यहाँ मुसलमानों की सब से ज्यादा क़दर होती थी. ज़मोरन ने अरब जहाज़ियों को मदद देने और अपने यहाँ जहाज़ चलाने का शौक़ पैदा करने की भी कोशिश की. लेकिन धार्मिक बन्धनों के कारन हिन्दू मछेरे इसके लिये तैयार नहीं हुए आख़िर ज़मोरन ने अपने राज मे यह हुक्म जारी किया कि, "मछेरों के हर ख़ानदान मे से कम से कम एक लड़के की तरबियत (शिक्षा दीक्षा) मुसलमान की हैसियत से की जाय."

पच्छिमी समुन्दरी किनारे की तरह पूरबी किनारे पर भी अरबों का आना जाना इसलाम के आने से पहले के समय से था. इसलाम के बाद यह सिलसिला जारी रहा पूरबी किनारे पर अरबों की सब से बड़ी बस्ती जिला तनावली मे कायल पट्टानम के मुक़ाम पर थी जहाँ सातवीं सदी ईसवी से लेकर तेरहवीं सदी ईसवी तक के इसलामी सिक्के पाये गये है "

("हिन्दुस्तानी क़ौमियत और क़ौमी तहज़ीब" सफ़ा-२९२)

जब सातवीं सदी में इसलाम ने अरबों मे एक नई रूह फूंक दी और उनके अलग अलग कबीलों को आपस मे एक कर दिया तो उन की सलतनत भी फैलना शुरू हुई और व्योपार भी बढ़ने लगा.

اچھی طرح پیش آتے تھے' کیونکہ ان سے سب کو فائدہ پہونچتا تھا۔ اسی لئے عرب جہازی بھی طرح طرح کی رعائتوں کے ساتھ' جن میں زمینیں خریدنے اور بیوپار کرنے کے علاوہ دھرم کا پرچار بھی شامل تھا' ہند کے پچھمی اور پوربی کناروں پر آباد ہونے لگے ۔ ان میں تراون کور اور زمورن کی ریاستوں کے بارے میں' ڈاکٹر عابد حسین صاحب لکھتے ہیں کہ یہاں مسلمانوں کی سب سے زیادہ قدر ہوتی تھی زمورن نے عرب جہازیوں کو مدد دینے اور اپنے یہاں جہاز چلانے کا شوق پیدا کرنے کی بھی کوشش کی لیکن دھارمک بندھنوں کے کارن' ہندو مچھیرے اس کے لئے تیار نہیں ہوئے آخر زمورن نے اپنے راج میں یہ حکم جاری کیا کہ' "مچھیروں کے ہر خاندان میں سے کم سے کم ایک لڑکے کی تربیت (شکشا دیکشا) مسلمان کی حیثیت سے کی جائے '

پچھمی سمندری کنارے کی طرح پوربی کنارے پر بھی عربوں کا آنا جانا اسلام کے آنے سے پہلے کے سمے سے تھا اسلام کے بعد یہ سلسلہ جاری رہا پوربی کنارے پرعربوں کی سب سے بڑی بستی ضلع تناولی میں کایل پٹنام کے مقام پر تھی جہاں ساتویں صدی عیسوی سے لے کر تیرھویں صدی عیسوی تک کے اسلامی سکے پائے گئے ہیں ۔ "

(" هندستانی قومیت اور قومی تہذیب " صفحہ ۲۹۲)

جب ساتویں صدی میں اسلام نے عربوں میں ایک نئی روح پھونک دی اور ان کے الگ الگ قبیلوں کو آپس میں ایک کردیا تو ان کی سلطنت بھی پھیلنا شروع ہوئی اور بیوپار بھی بڑھنے لگا ۔

से पहले का भी जमाना शामिल है और इसलाम के बाद का भो. डाक्टर तारा चन्द लिखते हैं कि, "जब ईरान का बादशाह दारा था उस समय से हिन्द का व्योपार ईरानियो के हाथ में था. पॉचवी छटी सदी में तो यह व्योपारी सम्बध अपनी इन्तहा को पहुंच चुके थे

ईरानियो की तरह अरब भी इसलाम के बहुत पहले से हिन्द के पच्छिमी और पूरबी बन्दरगाहो पर आया करते थे और रहा करते थे. अरब और हिन्द मे दोहरा रिश्ता था. एक तो सीधा यानी उस व्योपार की बिना पर जो अरब और हिन्द मे होता था. दूसरा चीन की वजह से, यानी उस व्योपार के कारन जो अरब और चीन मे होता था और जिस के लिये हिन्द के बन्दरगाहो पर रुकना और ठहरना लाजिमी था.

चीन मे सब से पहला मुसलमान, समुन्दरी रास्ते से, सन ६२९ ई० में पहुंचा था. इस के मानी यह हुए कि हिन्द मे अरब जहाजियो का आना जाना इस के पहले से जरूर था जब हिन्द के समुन्दरी किनारो को वह अच्छी तरह जान गये होंगे तब-ही और आगे, चीन की तरफ़, बढ़े होंगे आज हम उन मुल्को या जहाजियो को जो हमारे समुन्दरी किनारो पर अपने अड्डे बनाना चाहें, अच्छी नजर से नहीं देखते. कोई भी देश किसी दूसरे देश को यह रिआयत हंसी खुशी देने के लिये तैयार नहीं होता. इस लिये कि अब समुन्दरी जहाजों का चलना चलाना आम होगया है. पर उस जमाने मे ऐसा न था. बल्कि इसके उलटा जिन मुल्कों के जहाज हिन्द के समुन्दरी किनारों पर अपने अड्डे बनाना चाहते थे उन्हे बड़ी बड़ी रिआयतें दी जाती थी. राजा और प्रजा दोनों इन जहाजियों के साथ बड़ी

سے پہلے کا بھی زمانہ شامل ہے اور اسلام کے بعد کا بھی ۔ ڈاکٹر تارا چند لکھتے ہیں کہ، ''جب ایران کا بادشاہ دارا تھا اس سمے سے ہند کا بیوپار ایرانیوں کے ہاتھ میں تھا ۔ پانچویں چھٹی صدی میں تو یہ بیوپاری سمبندھ اپنی انتہا کو پہونچ چکے تھے ۔

ایرانیوں کی طرح عرب بھی اسلام کے بہت پہلے سے ہند کے پچھمی اور پوربی بندرگاہوں پر آیا کرتے تھے اور رہا کرتے تھے ۔ عرب اور ہند میں دہرا رشتہ تھا ۔ ایک تو سیدھا یعنی اس بیوپار کی بنا پر جو عرب اور ہند میں ہوتا تھا، دوسرا چین کی وجہ سے یعنی اس بیوپار کے کارن جو عرب اور چین میں ہوتا تھا اور جس کے لئے ہند کے بندرگاہوں پر رکنا اور ٹھہرنا لازمی تھا

چین میں سب سے پہلا مسلمان، سمندری راستے سے، سن ۶۲۹ع میں پہونچا تھا ۔ اس کے معنی یہ ہوئے کہ ہند میں عرب جہازیوں کا آنا جانا اس کے پہلے سے ضرور تھا ۔ جب ہند کے سمندری کناروں کو وہ اچھی طرح جان گئے ہوں گے تب ہی اور آگے چین کی طرف بڑھے ہوں گے ۔ آج ہم ان ملکوں یا جہازیوں کو جو ہمارے سمندری کناروں پر اپنے اڈے بنانا چاہیں اچھی نظر سے نہیں دیکھتے ۔ کوئی بھی دیش کسی دوسرے دیش کو یہ رعایت ہنسی خوشی دینے کے لئے تیار نہیں ہوتا ۔ اس لئے کہ اب سمندری جہازوں کا چلنا چلانا عام ہوگیا ہے ۔ پر اس زمانہ میں ایسا نہ تھا ۔ بلکہ اس کے الٹا جن ملکوں کے جہاز ہند کے سمندری کناروں پر اپنے اڈے بنانا چاہتے تھے انہیں بڑی بڑی رعایتیں دی جاتی تھیں ۔ راجا اور پرجا دونوں ان جہازیوں کے ساتھ بڑی

पुराने हिन्द का इन्साफ़

(भाई फरहतुल्ला अन्सारी)

बहुत दिनों की बात है — इतने दिनों की बात कि सन् और साल का तय करना भी मुशकिल है, लेकिन बात पक्की है. आप कहेंगे ऐसी कौन बात है जिस को दिन तारीख भी नहीं बताई जासकता मगर है पक्की ! जी हाँ . हिन्द और अरब का मेल जोल, हिन्दुओं और मुसलमानोंकी जान पहचान इतनी ही पुरानी बात है.

जो तारीख हम आप आम तौर से पढ़ते रहे हैं बल्कि जो हमें पिछले सौ डेढ़ सौ साल से पढ़ाई जाती रही है उस के मुताबिक हिन्दुओं और मुसलमानो मे सदा बैर ही रहा है. यह इतिहास ज्यादा से ज्यादा आठवीं सदी ईस्वी मे मुहम्मद बिन कासिम के समुन्दरी हमले से नहीं तो आम तौर पर तेरहवी सदी मे महमूद ग़ज़नवी की लूट मार से शुरू होता है और हर पढ़ने वाले के मन पर यह असर डालता है कि हिन्द और उन मुल्कों मे, जो आज इसलामी मुल्क कहलाते हैं, इसलाम से पहले तो कोई सम्बंध ही नहीं था और इसलाम के बाद हुआ भी तो वह सम्बन्ध जो राजा और प्रजा या ज़ालिम और ज़ुल्म सहने वाले मे हुआ करता है.

लेकिन हमारी अपनी किताबें बताती हैं कि इन हमलों से पहले कम से कम तीन चार सदियाँ ऐसी बीती हैं जिनमें हिन्द, ईरान और अरब में ख़ालिस दोस्ती और प्रेम का सम्बंध रहा है. इसमें इसलाम

پرانے ہند کا انصاف

(بھائی فرحت اللہ انصاری)

بہت دنوں کی بات ہے — اتنے دنوں کی بات کہ سن اور سال کا طے کرنا بھی مشکل ہے لیکن بات پکی ہے . آپ کہیں گے ایسی کون بات ہے جس کی دن تاریخ بھی نہیں بتائی جاسکتی مگر ہے پکی ! جی ہاں' ہند اور عرب کا میل جول' ہندوؤں اور مسلمانوں کی جان پہچان اتنی ہی پرانی بات ہے .

جو تاریخ ہم آپ عام طور سے پڑھتے رہے ہیں بلکہ جو ہمیں پچھلے سو ڈیڑھ سو سال سے پڑھائی جاتی رہی ہے اس کے مطابق ہندوؤں اور مسلمانوں میں سدا بیر ہی رہا ہے یہ اتہاس زیادہ سے زیادہ آٹھویں صدی عیسوی میں محمد بن قاسم کے سمندری حملہ سے نہیں تو عام طور پر تیرھویں صدی میں محمود غزنوی کی لوٹ مار سے شروع ہوتا ہے اور ہر پڑھنے والے کے من پر یہ اثر ڈالتا ہے کہ ہند اور اُن ملکوں میں جو آج اسلامی ملک کہلاتے ہیں اسلام سے پہلے تو کوئی سمبندھ ہی نہیں تھا اور اسلام کے بعد ہوا بھی تو وہ سمبندھ جو راجا اور پرجا یا ظالم اور ظلم سہنے والے میں ہوا کرتا ہے .

لیکن ہماری اپنی کتابیں بتاتی ہیں کہ ان حملوں سے پہلے کم سے کم تین چار صدیاں ایسی بیتی ہیں جن میں ہند' ایران اور عرب میں خالص دوستی اور پریم کا سمبندھ رہا ہے . اس میں اسلام

सब के सब हुकूमत करें, ब्योपार करें, सेवा करें — अपने पर हुकूमत, अपने का ब्योपार, अपने की सेवा हम अपने हाकिम, हम अपनी पूंजी, हम अपने सेवक.

हमारी ही हुकूमत, हमारा ही ब्योपार, हमारी ही सेवा — अगर हर चीज़ की जाय ईमान के साथ

तो, हमारी हुकूमत, हमारा ब्योपार, हमारी सेवा.

देश किसका ?— हमरा ! राज किसका?— हमारा ! और उदय किसका ? — हमारा, नहीं, सबका — सर्वोदय ! ईमान रहा तो सर्वोदय , ईमान गया तो सर्वनाश

× × × ×

सर्वोदय की बहार आई है

कानपुर में दो आदमी ठंडी से गुज़र गये

ईमान रहा तो सर्वोदय सर्वोदय से सर्वनाश ईमान से सर्वोदय

ईमान कहो या सर्वोदय—मतलब तो उसी की चाह से है, मशा तो उसी की राह से है — यही बापू, यही ईमान, यही सर्वोदय

سب کے سب حکومت کریں، بیوپار کریں، سیوا کریں — اپنے پر حکومت، اپنے کا بیوپار، اپنے کی سیوا . ہم اپنے حاکم، ہم اپنی پونجی، ہم اپنے سیوک

ہماری ہی حکومت، ہمارا ہی بیوپار، ہماری ہی سیوا — اگر ہر چیز کی جائے ایمان کے ساتھ .

تو، ہماری حکومت ، ہمارا بیوپار، ہماری سیوا

دیش کس کا ؟ — ہمارا ! راج کس کا ؟ — ہمارا ! اور اودے کس کا ؟ — ہمارا نہیں، سب کا — سرودے ! ایمان رہا تو سرودے ، ایمان گیا تو سروناش

× × × ×

سرودے کی بہار آئی ہے . کانپور میں دو آدمی ٹھنڈی سے گذر گئے .

ایمان رہا تو سرودے سرودے سے سروناش ایمان سے سرودے .

ایمان کہو یا سرودے — مطلب تو اسی کی چاہ سے ہے، منشا تو اسی کی راہ سے ہے — یہی باپو، یہی ایمان، یہی سرودے

लेकिन इस वक़्त—सर्वोदय की कोशिश से सर्वनाश जरूर हो रहा है. यही ख़तरे की घंटी है.

बस, हम सर्वोदय करना बंद कर दें. यह तमन्ना छोड़ दें कि दूसरों को सच्चा व नेक बनायें, दूसरों का दर्जा बढ़ायें.

बल्कि, हम खुद रखने लग जायें, अपना — ईमान !

अपना ईमान रखें, अपना 'उदय' होगा — सर्वोदय आप से आप होगा.

× × × ×

सर्वोदय नहीं चाहिये — अपना ईमान चाहिये.

हुकूमत क्या कर — दुनया के मुल्कों मे अपने मुल्क की नाक ऊँची करने के चक्कर मे न पड़े, ईमान से रहे — ईमान का खाये—नमक हलाल बने हुकूमत वाले दूसरों को न देखे — अपने ईमान को देखें. अगर इस के लिये ऊंची तनख़ाहों व कोठियों-बंगलों की सच्ची — ईमान से — जरूरत महसूस करें तो रखें, वरना छोड़दे —ईमान से रहें ईमान का खायें.

ब्योपारी क्या करे ?— मुल्क की पैदावार बढ़ाने के चक्कर म न पड़े ; ईमान से रहे, ईमान का खाये — नमक हलाल बने क्या किसान, क्या मजदूर, क्या महाजन, क्या ब्योपारी, क्या पूंजीपति— दूसरों को न देखे अपने ईमान को देखें जिस चीज की सच्ची— ईमान से — जरूरत हो उसे रखे, वरना छोड़ दें — ईमान से रहे ईमान का खायें.

देश सेवक क्या करे ?—सर्वोदय के फेर में न पड़े, सेवा के फन्दे में न फंसे, ईमान से रहे, ईमान का खाये.

لیکن اس وقت — سرووِدے کی کوشش سے سروناش ضرور ہو رہا ہے . یہی خطرے کی گھنٹی ہے .

بس، ہم سرووِدے کرنا بند کردیں یہ تمنا چھوڑ دیں کہ دوسروں کو سچا و نیک بنائیں، دوسروں کا درجہ بڑھائیں .

بلکہ، ہم خود رکھنے لگ جائیں اپنا — ایمان !

اپنا ایمان رکھیں، اپنا 'اودے' ہوگا — سرووِدے آپ سے آپ ہوگا .

× × × ×

سرووِدے نہیں چاہئے — اپنا ایمان چاہئے

حکومت کیا کرے — دنیا کے ملکوں میں اپنے ملک کی ناک اونچی کرنے کے چکر میں نہ پڑے، ایمان سے رہے — ایمان کا کھائے — نمک حلال بنے حکومت والے دوسروں کو نہ دیکھیں — اپنے ایمان کو دیکھیں . اگر اس کے لئے اونچی تنخواہوں و کوٹھیوں بنگلوں کی سچی — ایمان سے — ضرورت محسوس کریں تو رکھیں، ورنہ چھوڑ دیں — ایمان سے رہیں، ایمان کا کھائیں .

بیوپاری کیا کرے ؟ — ملک کی پیداوار بڑھانے کے چکر میں نہ پڑے، ایمان سے رہے، ایمان کا کھائے — نمک حلال بنے . کیا کسان، کیا مزدور، کیا مہاجن، کیا بیوپاری، کیا پونجی پتی — دوسروں کو نہ دیکھیں، اپنے ایمان کو دیکھیں . جس چیز کی سچی — ایمان سے — ضرورت ہو اُسے رکھیں، ورنہ چھوڑ دیں — ایمان سے رہیں، ایمان کا کھائیں .

دیش سیوک کیا کرے ؟ — سرووِدے کے پھیر میں نہ پڑے، سیوا کے پھندے میں نہ پھنسے، ایمان سے رہے، ایمان کا کھائے

सर्वोदय — जिन्दाबाद !

कानपुर मे दो आदमी ठंडी से गुज़र गये ! !

या यूं :—

सर्वोदय वाला गुज़र गया ! सर्वोदय वाले जिन्दाबाद ! !

दो आदमी गुज़र गये ! दो आदमी जिन्दाबाद ! !

× × × ×

सर्वोदय की बहार आई है !

कानपुर मे दो आदमी ठंडी से गुज़र गये ! !

इस तरह हम कब तक उन दो की हालत से बचे रहेंगे — उन्हें ठंडी ने खत्म किया, किसी को गोली ने खत्म किया—किसी को ठंडी ने. हम वह हैं जो अपने को खुद ही कत्ल कर रहे हैं. किसी बात की फ़ुरसत नहीं, दम मारने की फ़ुरसत नहीं, मरने तक की फ़ुरसत नहीं. तो फिर कर क्या रहे हैं — सर्वोदय ! नतीजा क्या होता है— कानपुर मे दो आदमी ठंडी से गुज़र गये ! !

लेकिन फिर वही बेचैनी — फिर वही हरकत — सर्वोदय.

नतीजा होगा — सर्वनाश !

एक तरफ से एटमबम, हाइड्रोजन बम, क्या क्या बम और दूसरी तरफ से सर्वोदय — दोनों कहां पहुंचे — सर्वनाश !

और फिर, सब — सब ही पूरब व पच्छिम — कर क्या रहे है — सर्वोदय. होता क्या है सर्वनाश.

सर्वोदय* और सर्वनाश, एक ही सिक्के के दो रुख तो नहीं ? —

हाँ, है , यही सन्तोष की बात है.

मगर, शायद हो ; शायद न हो.

سروودے زندہ باد !

کانپور میں دو آدمی ٹھنڈی سے گذر گئے ! !

یا یوں :—

سروودے والا گذر گیا ! سروودے والے زندہ باد ! !

دو آدمی گذر گئے ! دو آدمی زندہ باد ! !

× × × ×

سروودے کی بہار آئی ہے !

کانپور میں دو آدمی ٹھنڈی سے گذر گئے ! !

اس طرح ہم کب تک ان دو کی حالت سے بچے رہیں گے — انہیں ٹھنڈی نے ختم کیا کسی کو گولی نے ختم کیا — کسی کو ٹھنڈی نے . ہم وہ ہیں جو اپنے کو خود ہی قتل کر رہے ہیں . کسی بات کی فرصت نہیں دم مارنے کی فرصت نہیں' مرنے تک کی فرصت نہیں . تو پھر کر کیا رہے ہیں — سروودے ! نتیجہ کیا ہوتا ہے — کانپور میں دو آدمی ٹھنڈی سے گذر گئے ! !

لیکن پھر وہی بے چینی — پھر وہی حرکت — سروودے

نتیجہ ہوگا — سروناش !

ایک طرف سے اٹم بم' ہائیڈروجن بم' کیا کیا بم اور دوسری طرف سروودے — دونوں کہاں پہونچے — سروناش !

اور پھر' سب — سب ہی پورب و پچھم — کر کیا رہے ہیں — سروودے . ہوتا کیا ہے — سرو ناش —

سروودے اور سروناش' ایک ہی سکے کے دو رخ تو نہیں ؟

— ہاں' ہیں ! یہی سنتوش کی بات ہے .

مگر' شائد ہوں ! شائد نہ ہوں

बस एक ऐसा था जो खबर लेता था, जिसे फ़ुरसत भी मिल जाती थी — मगर वह १९४८ की ३० जनवरी को चला गया — चला गया.

इस लिये आज न किसी को खबर रहती है किसी बात की, न फ़ुरसत है किसी काम के लिये.

× × × ×

आखिर, जब सब इतनी बुरी तरह जुटे पड़े हैं तो करते क्या हैं ? किसी बात की फ़ुरसत नहीं, दम मारने की फ़ुरसत नहीं, मरने तक की फ़ुरसत नहीं.

कुछ तो करते होंगे, क्या करते हैं ?

हुकूमत लगी है मुल्क का दर्जा ऊंचा उठाने में, दुनिया के मुल्कों मे अपने मुल्क की नाक ऊंची करने मे

व्योपारी — बड़े, छोटे, मझले, सब —लगे है मुल्क की पैदावार बढ़ाने मे — पक्के माल की, कच्चे माल की, मशीन की, जिन्दगी की जरूरत की हर चीज़ की — ताकि हुकूमत को मदद दे सकें मुल्क का दर्जा ऊंचा उठाने मे.

देश सेवक लगे हैं सर्वोदय मे — यह सेवक किसी भी दल के क्यों नहो, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, क्रान्तिकारी, असेम्बली वादी, कांग्रेसी, संघी, सभाई, रचनात्मक, गांधी वादी — सब राष्ट्रपिता के बताये सर्वोदय मे लगे हैं —सर्वोदय मे

सर्वोदय की बहार आई है.

कानपुर में दो आदमी ठंडी से गुज़र गये

× × × ×

بس ایک ایسا تھا جو خبر لیتا تھا' جسے فرصت بھی مل جاتی تھی — مگر وہ ۱۹۴۸ کی ۳۰ جنوری کو چلا گیا — چلا گیا .

اس لئے آج نہ کسی کو خبر رہتی ہے کسی بات کی' نہ فرصت ہے کسی کام کے لئے .

× × × ×

آخر' جب سب اتنی بری طرح جٹے پڑے ہیں تو کرتے کیا ہیں ؟ کسی بات کی فرصت نہیں' دم مارنے کی فرصت نہیں' مرنے تک کی فرصت نہیں

کچھ تو کرتے ہوں گے' کیا کرتے ہیں ؟

حکومت لگی ہے ملک کا درجہ اونچا اٹھانے میں' دنیا کے ملکوں میں اپنے ملک کی ناک اونچی کرنے میں

بیوپاری — بڑے' چھوٹے' ملجھلے' سب — لگے ہیں ملک کی پیداوار بڑھانے میں — پکے مال کی' کچے مال کی' مشین کی' زندگی کی ضرورت کی ہر چیز کی — تاکہ حکومت کو مدد دے سکے ملک کا درجہ اونچا اٹھانے میں

دیش سیوک لگے ہیں سرودے میں — یہ سیوک کسی بھی دل کے کیوں نہ ہوں' کمیونسٹ' سوشلسٹ' کرانتکاری' اسمبلی وادی' کانگریسی' سنگھی' سبھائی' رچنا تمک' گاندھی وادی — سب راشٹرپتا کے بتائے سرودے میں لگے ہیں — سرودے میں.

سرودے کی بہار آئی ہے .

کانپور میں دو آدمی ٹھنڈ سے گذر گئے —

× × × ×

इतना पढ़ कर चाय का एक गरम प्याला चढ़ा लिया या अपने कपड़ो को कस लिया या ऊपर से एक-दो और कपड़े पहन लिये और जो मिला उस से — जहाँ और सच्ची-झूटी बाते कीं — यह भी कह दिया कि कानपुर मे ठड से दो आदमी मर गये. और फिर ज़िन्दगी की हलचलो मे खोगये.

यह अखबार पढ़ने वाले कौन हैं ?—पांच रंग के आदमी—

(१ सरकारी और ग़ैर सरकारी दफ़्तरो मे काम करने वाले बाबू व मुन्शी,

(२) मामूली दूकानदार, मजदूर , महाजन या व्योपारी,

(३) ऊँचे व्योपारी या पूंजी पति,

(४) ऊचे अफ़सर, जिन्हे गौर्मिन्ट कहा जाता है, और

(५) देश सेवक या नई बोली मे. लोक सेवक.

मोटे तौर से इन को पॉच की जगह तीन हिस्सो मे बांट सकते हैं — एक हुकूमत वाले, दूसरे व्योपार वाले, तीसरे देश सेवक या लोक सेवक.

अब ज़रा फिर से देखिये — इन तीनो ने अखबार मे पढ़ा या किसी से सुना कि कानपुर मे दो आदमी ठडी खाकर खतम होगये. हुकूमत, वाला अपने दफ्तर पहुंचा, उसे कहाँ किसी बात की फ़ुरसत , व्योपार वाला अपने काम से जालगा, उसे तो दम मारने की फ़ुरसत नहीं , देश सेवक—वह बेचारा तो हमेशा ही फॅसा रहता है, परेशान रहता है, उसे मरने तक की फ़ुरसत नही

किसी एक को फ़ुरसत नही — कौन खबर ले इस बात की कि कानपुर मे दो आदमी जाड़े से मर गये. कौन खबर ले ?

اتنا پڑھکر چاء کا ایک گرم پیالہ چڑھا لیا یا اپنے کپڑوں کو کس لیا یا اوپر سے ایک دو اور کپڑے پہن لئے اور جو ملا اس سے — جہاں اور سچی جھوٹی باتیں کیں — یہ بھی کہہ دیا کہ کانپور میں ٹھنڈ سے دو آدمی مرگئے . اور پھر زندگی کی ہلچلوں میں کھو گئے .

یہ اخبار پڑھنے والے کون ہیں ؟ — پانچ رنگ کے آدمی —

(۱) سرکاری اور غیر سرکاری دفتروں میں کام کرنے والے بابو و منشی'

(۲) معمولی دوکاندار' مزدور' مہاجن یا بیوپاری '

(۳) اونچے بیوپاری یا پونجی پتی'

(۴) اونچے افسر' جنھیں گورمنٹ کہا جاتا ہے' اور

(۵) دیش سیوک یا نئی بولی میں' لوک سیوک'

موٹے طور سے ان کو پانچ کی جگہ تین حصوں میں بانٹ سکتے ہیں — ایک حکومت والے' دوسرے بیوپار والے تیسرے دیش سیوک یا لوک سیوک .

اب ذرا پھر سے دیکھئے — ان تینوں نے اخبار میں پڑھا یا کسی سے سنا کہ کانپور میں دو آدمی ٹھنڈی کھا کر ختم ہوگئے . حکومت والا اپنے دفتر پہونچا' اسے کہاں کسی بات کی فرصت , بیوپار والا اپنے کام سے جالگا' اسے تو دم مارنے کی فرصت نہیں , دیش سیوک — وہ بیچارہ تو ہمیشہ ہی پھنسا رہتا ہے' پریشان رہتا ہے' اسے مرنے تک کی فرصت نہیں .

کسی ایک کو فرصت نہیں — کون خبر لے اس بات کی , کہ کانپور میں دو آدمی جاڑے سے گذر گئے — کون خبر لے ؟

सर्वोदय और ईमान

(श्री सुरेश राम भाई)

इस बार जाड़ा खत्म होते होते बहुत ही जबरदस्त ठंडी पड़ी. गंगा के उस पार, कानपुर से खबर आई कि सर्दी से ठिठुर कर दो आदमी गुज़र गये. गुज़र गये—कोई बात नहीं. कानपुर शहर में बीसियों ऐसे मिल जायेंगे जिन का न कोई पुरसाने-हाल है न कोई सहारा, किसी तरह ज़िन्दगी बसर करते हैं, अचानक गुज़र गये और किसी ने रहम खाया तो ठिकाने से मिट्टी लग गई — न लगी न सही

कानपुर में ही नहीं, दूसरी जगह भी, इस हिन्दुस्तान नाम की धरती पर जगह जगह और शायद दुनिया में दूसरी जगहों पर भी ऐसा होता होगा.

लेकिन इस वक्त हमारा मतलब तो अपनी धरती, अपनी सरकार, अपने लोग और अपने मुल्क से है यहाँ ऐसा होता है कि सर्दी से दो आदमी ठिठुर कर गुज़र गये — यहाँ कानपुर में — जहाँ पैसे की इतनी इफ़रात है कि सारे साधन मुहय्या किये जा सकते हैं और जहाँ के पैसे वाले यह दावा करते हैं कि हम जिस को चाहते हैं ख़रीद लेते हैं — हाँ कानपुर में ऐसा हुआ कि दो आदमी जाड़े से ठिठुर कर गुज़र गये.

गुज़र गये — लेकिन किसी ने उफ़ तक न की. दो हट्टे कट्टे नौजवान — जिन के पास सर्दी से बचने को मकान था न कपड़ा — गुज़र गये. पढ़ने वालों ने अख़बार में पढ़ा कि दो आदमी गुज़र गये.

سروودے اور ایمان

(شری سریش رام بھائی)

اس بار جاڑا ختم ہوتے ہوتے بہت ہی زبردست ٹھنڈی پڑی گنگا کے اس پار کانپور سے خبر آئی کہ سردی سے ٹھٹھر کر دو آدمی گذرگئے . گذرگئے — کوئی بات نہیں کانپور شہر میں بیسوں ایسے مل جائینگے جنکا نہ کوئی پرسان حال ہے نہ کوئی سہارا' کسی طرح زندگی بسر کرتے ہیں' اچانک گذرگئے اور کسی نے رحم کھایا تو ٹھکانے سے مٹی لگ گئی — نہ لگی نہ سہی

کانپور میں ہی نہیں' دوسری جگہ بھی' اس ہندستان نام کی دھرتی پر جگہ جگہ اور شاید دنیا میں دوسری جگہوں پر بھی ایسا ہوتا ہوگا .

لیکن اس وقت ہمارا مطلب تو اپنی دھرتی' اپنی سرکار اپنے لوگ اور اپنے ملک سے ہے . یہاں ایسا ہوتا ہے کہ سردی سے دو آدمی ٹھٹھر کر گذرگئے — یہاں کانپور میں — جہاں پیسے کی اتنی افراط ہے کہ سارے سا دھن مہیا کئے جاسکتے ہیں اور جہاں کے پیسے والے یہ دعوا کرتے ہیں کہ ہم جسکو چاہتے ہیں خرید لیتے ہیں — ہاں' کانپور میں ایسا ہوا کہ دو آدمی جاڑے سے ٹھٹھر کر گذرگئے .

گذرگئے — لیکن کسی نے اُف تک نہ کی . دو ہٹے کٹے نوجوان — جنکے پاس سردی سے بچنے کو مکان تھا نہ کپڑا — گذرگئے — پڑھنے والوں نے اخبار میں پڑھا کہ دو آدمی گذر گئے'

दुनिया के बड़े से बड़े उन्नति शील देशों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर तरक्की की राह में आगे बढ़ता दिखाई देगा इस के लिये हममे से हर एक को अपना फ़र्ज़ पूरा करना चाहिये. जय हिन्द !

सुन्दर लाल

हिन्द के विधान

को

अंगरेजी हिन्दुस्तानी शब्दावली

(अंगरेजी नागरी लिखावट में)

जिसमे

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ खास खास अंगरेजी शब्दों के लिए आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवान दीन और कुछ दूसरे विद्वानो ने सुझाए हैं.

शुरू में 'दो शब्द' लिखे हैं—काका कालेलकर, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, श्री मो० सत्यनारायण और पंडित सुन्दर लाल ने.

निकाली है—हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा ने.

क़ीमत दो रुपै.

मिलने का पता—मैंनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

دنیا کے بڑے سے بڑے اُنتی شیل دیشوں کے ساتھ کندھے سے کندھا ملاکر ترقی کی راہ میں آگے بڑھتا دکھائی دیگا . اس کے لئے ہم میں سے ہر ایک کو اپنا فرض پورا کرنا چاہئے . جے ہند !

سندر لال

ہند کے ودھان

کی

انگریزی ہندستانی شبداولی

(انگریزی ناگری لکھاوٹ میں)

جس میں ہند کا جو نیا ودھان پاس ہوا ہے اس کے لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزی شبدوں کے لئے آسان ہندستانی شبد مہاتما بھگوان دین اور کچھ دوسرے ودوانوں نے سمجھائے ہیں۔

شروع میں 'دو شبد' لکھے ہیں—کاکا کالیلکر ' شریمتی رامیشوری نہرو شری م ستیہ نارائن اور پنڈت سندر لال نے .

نکالی ہے—ہندستانی پرچار سبھا وردھا نے۔

قیمت ۲ روپے

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ' الہ آباد

और समझा बुझाकर फिर से उसके अपने मजहब पर ले आना चाहिये और इस तरह के धर्म बदलवाने को गुनाह समझना चाहिये. किसी धर्म की इज्जत इन बुरे तरीकों से नहीं बढ़ सकती.

पाकिस्तान और भारत में फिर से मेल पैदा करने के लिये हमे चढ़ाई करने या लड़ाई लड़ने की बातें मुंह से निकालना बन्द कर देना चाहिये. कच्ची और नफरत बढ़ाने वाली खबरें भी हमे इधर उधर नही फैलानी चाहिये और न जल्दी से हर खबर पर विश्वास कर लेना चाहिये सरकार पिछले दंगों की जो भी तहकीकात करे या मुल्क से फिरकापरस्ती को दूर करने के लिये जो भी कदम उठाये हम सब को उसमे पूरी पूरी मदद करनी चाहिये.

भारत के मुसलमान भाइयों का भी फर्ज है कि वह वक्त की निजाकत को देखते हुए हिम्मत, सब्र और इस्तकलाल से काम लें. कितनी भी कठिन आजमायश हो अपना घर छोड़कर जाने का नाम न लें मोहब्बत और बर्दाश्त से दूसरों के दिलों को जीतें और अपनी किसी भी तरह की शिकायतों या मुसीबतों को दूर कराने के लिये भारत सरकार को छोड़कर किसी भी बाहर की सरकार का मुंह न देखें. ठीक इसी तरह की सलाह हम पाकिस्तान के हिन्दुओं को देंगे. और जिस तरह का फर्ज भारत के हिन्दुओं का है ठीक उसी तरह का पाकिस्तान के मुसलमानों का है.

यही महात्मा गांधी का बताया हुआ वह रास्ता है जिसपर चलकर हम सब पनप सकते हैं. हमें पूरा भरोसा है कि मुल्क इस रास्ते पर चलेगा और बहुत जल्दी आजकल की मुसीबतों से निकलकर

اور سمجھا بجھا کر پھر سے اس کے اپنے مذهب پر لے آنا چاهئے اور اس طرح کے دهرم بدلوانے کو گناہ سمجھنا چاهئے . کسی دهرم کی عزت ان برے طریقوں سے نهیں بڑھ سکتی

پاکستان اور بھارت میں پھر سے میل پیدا کرنے کے لئے همیں چڑھائی کرنے یا لڑائی لڑنے کی باتیں منھ سے نکالنا بند کر دینا چاهئے . کچی اور نفرت بڑھانے والی خبریں بھی همیں ادھر ادھر نهیں پھیلانی چاهئیں اور نہ جلدی سے هر خبر پر وشواس کرلینا چاهئے سرکار پچھلے دنگوں کی جو بھی تحقیقات کرے یا ملک سے فرقہ پرستی کو دور کرنے کے لئے جو بھی قدم اُٹھائے هم سب کو اس میں پوری پوری مدد کرنی چاهئے

بھارت کے مسلمان بھائیوں کا بھی فرض هے کہ وہ وقت کی نزاکت کو دیکھتے هوئے همت صبر اور استقلال سے کام لیں کتنی بھی کٹھن آزمائش هو اپنا گھر چھوڑ کر جانے کا نام نہ لیں محبت اور برداشت سے دوسروں کے دلوں کو جیتیں اور اپنی کسی بھی طرح کی شکایتوں یا مصیبتوں کو دور کرانے کے لئے بھارت سرکار کو چھوڑ کر کسی بھی باهر کی سرکار کا منھ نہ دیکھیں ٹھیک اسی طرح کی صلاح هم پاکستان کے هندوؤں کو دیں گے اور جسطرح کا فرض ، بھارت کے هندوؤں کا هے ٹھیک اسی طرح کا پاکستان کے مسلمانوں کا هے .

یہی مہاتما گاندھی کا بتلایا هوا وہ راستہ هے جس پر چل کر هم سب پنپ سکتے هیں . همیں پورا بھروسہ هے کہ ملک اس راستے پر چلے گا اور بہت جلدی آج کل کی مصیبتوں سے نکل کر

पूरी करके दिखा दें. भारत भर में हर गाँव और हर गली में हिन्दुओं का फ़र्ज़ है कि वह अपने मुसलमान भाइयों को यह यक़ीन दिला दें कि इस देश में उन की जान माल, उन का धर्म और उनकी आबरू उतनी ही सुरक्षित है जितनी किसी और की. हिन्दुओं का धर्म है कि वह अपने मुसलमान भाइयों के जान माल की हिफ़ाज़त मे ज़रूरत पड़े जो अपनी जान की बाज़ी तक लगादें. गांव गांव मे इस तरह के सम्पर्क और संगठन हो जायें कि एक बार फिर यह देश प्रेम और मोहब्बत से लहलहा उठे. कहीं कहीं कोई कोई हिन्दू अपने मुसलमान पड़ोसियों से यह कहने लगे हैं कि अब पाकिस्तान बन गया, तुम पाकिस्तान चले जाओ. यह मुल्क हिन्दुओं का है. यह बात उन्हें शोभा नहीं देती. यह नापाक आदत उन्हें हमेशा के लिये छोड़ देनी चाहिए. हाल के दंगों में जो मुसलमान भाई अपने घर छोड़ कर चले गये हैं वह अगर वापस आयें तो हमे ख़ुशी ख़ुशी उन के घरों में उन्हें फिर से बसा लेना चाहिए और उनसे ऐसा बर्ताव करना चाहिए कि फिर वह जाने की न सोचें. पच्छिमी बंगाल मे, यू. पी. के किसी ज़िले में या देश के किसी कोने मे भी अगर कोई भाई ऐसे हैं जिनके घरों में किसी मुसलमान भाई की लूट का माल है तो उन्हें उसे जल्दी से जल्दी असली मालिक को या उसके नज़दीकी रिश्तेदारों को लौटा देना चाहिए या सरकार के हवाले कर देना चाहिए. अगर बदक़िस्मती से किसी घर में कोई मुसलमान बहन है तो उसे उसके वारिसों के या सरकार के हवाले कर देना चाहिए. अगर किसी मुसलमान भाई ने दंगे के दिनों में घबराकर अपने धर्म बदलने का एलान कर दिया है तो उसे हिम्मत दिलाकर

پوری کرکے دکھا دیں . بھارت بھر میں ہر گاؤں اور ہر گلی میں ہندوؤں کا فرض ہے کہ وہ اپنے مسلمان بھائیوں کو یہ یقین دلا دیں کہ اس دیش میں ان کی جان مال، ان کا دھرم اور ان کی آبرو اُتنی ہی سرکشت ہے جتنی کسی اور کی . ہندوؤں کا دھرم ہے کہ وہ اپنے مسلمان بھائیوں کے جان مال کی حفاظت میں ضرورت پڑے تو اپنی جان کی بازی تک لگادیں . گاؤں گاؤں میں اس طرح کے سمپرک اور سنگٹھن ہوجائیں کہ ایک بار پھر یہ دیش پریم اور محبت سے لہلہا اُٹھے کہیں کہیں کوئی کوئی ہندو اپنے مسلمان پڑوسیوں سے یہ کہنے لگے ہیں کہ اب پاکستان بن گیا، تم پاکستان چلے جاؤ . یہ ملک ہندوؤں کا ہے . ایسی بات اُنہیں شوبھا نہیں دیتی . یہ ناپاک عادت اُنہیں ہمیشہ کے لئے چھوڑ دینی چاہئے . حال کے دنگوں میں جو مسلمان بھائی اپنے گھر چھوڑ کر چلے گئے ہیں وہ اگر واپس آئیں تو ہمیں خوشی خوشی ان کے گھروں میں انہیں پھر سے بسا لینا چاہئے اور ان سے ایسا برتاؤ کرنا چاہئے کہ پھر وہ جانے کی نہ سوچیں پچھمی بنگال میں، یوپی کے کسی ضلع میں یا دیش کے کسی کونے میں بھی اگر کوئی بھائی ایسے ہیں جن کے گھروں میں کسی مسلمان بھائی کی لوٹ کا مال ہے تو انہیں اسے جلدی سے جلدی اصلی مالک کو یا اس کے نزدیکی رشتے داروں کو لوٹا دینا چاہئے یا سرکار کے حوالے کردینا چاہئے . اگر بدقسمتی سے کسی گھر میں کوئی مسلمان بہن ہے تو اُسے اس کے وارثوں کے یا سرکار کے حوالے کردینا چاہئے . اگر کسی مسلمان بھائی نے دنگے کے دنوں میں گھبراکر اپنے دھرم بدلنے کا اعلان کردیا ہے تو اُسے ہمت دلاکر

हमारी सलामती इसी में है कि हमारा आपस का यह समझौता पूरी तरह सफल हो. हम सब को इस की पूरा कोशिश करनी चाहिये.

दूसरी तरफ़ हमें बड़े दुख और लज्जा के साथ स्वीकार करना पड़ता है कि देश में एक दल ऐसा पैदा होगया है जो कोई भी बहाना या अवसर मिलने पर धार्मिक फ़र्क़ की बिना पर अपने पड़ोसियों को, निरपराध मर्दों, औरतों और बच्चों को मार डालना, लूट लेना, उन के घर जला देना और कहीं कहीं स्त्रियो पर अत्याचार करना जायज समझता है. सब से अधिक लज्जा की बात यह है कि यह सब पाप धर्म और संस्कृति के नाम पर किये जाते हैं. हम सब का फ़र्ज़ है कि हम जितनी जल्दी हो सके इस तरह के दल और इस तरह के विचारों को अपने देश से और अपने दिलों से मिटा डालें. इसी में हमारा और हमारे देश का कल्यान है.

हमारे लिये यह गहरी आज़मायश का वक़्त है. परीक्षा का समय है. ऐसे नाज़ुक मौक़े पर ज़रा सी नासमझी या ग़लती सदियों के लिये पछतावा छोड़ जाती है. हर हिन्दुस्तानी को इस समय अपने पाक फ़र्ज़ को समझना चाहिये और हिम्मत के साथ उसे पूरा करना चाहिए. हम अभी कह चुके हैं कि अगर हम अपने धर्म को ठीक ठीक समझें और उस पर अमल करें तो हमारी सारी मुसीबतें हल हो जायँ. पर हमारे पतन की आज यह हालत हो गई है कि हम मे से कुछ आज धर्म के नाम पर पक्षपात और घृना फैलाने और बुरे से बुरे पाप करने कराने से भी नहीं चूकते.

अगर हम अपने देश को बरबादी से बचाना चाहते हैं तो हमारा फ़र्ज़ है कि देश भर में जल्दी से जल्द इस समझौते की शर्तों को

ہماری سلامتی اِسی میں ہے کہ ہمارا آپس کا یہ سمجھوتہ پوری طرح سپھل ہو . ہم سب کو اِس کی پوری کوشش کرنی چاہئے .

دوسری طرف ہمیں بڑے دکھ اور لجا کے ساتھ سویکار کرنا پڑتا ہے کہ دیش میں ایک دل ایسا پیدا ہو گیا ہے جو کوئی بھی بہانا یا اوسر ملنے پر دھارمک فرق کی بنا پر اپنے پڑوسیوں کو' نرپرادھ مردوں' عورتوں اور بچوں کو مار ڈالنا' لوٹ لینا' اُن کے گھر جلا دینا اور کہیں کہیں استریوں پر اتیا چار کرنا جائز سمجھتا ہے . سب سے ادھک لجا کی بات یہ ہے کہ یہ سب پاپ دھرم اور سنسکرتی کے نام پر کئے جاتے ہیں . ہم سب کا فرض ہے کہ ہم جتنی جلدی ہو سکے اِس طرح کے دل اور اِس طرح کے وچاروں کو اپنے دیش سے اور اپنے دلوں سے مٹا ڈالیں. اِسی میں ہمارا اور ہمارے دیش کا کلیان ہے .

ہمارے لئے یہ گہری آزمائش کا وقت ہے . پریکشا کاسمے ہے . ایسے نازک موقعے پر ذراسی نا سمجھی یا غلطی صدیوں کے لئے پچھتاوا چھوڑ جاتی ہے . ہر ہندستانی کو اِس سمے اپنے پاک فرض کو سمجھنا چاہئے اور ہمت کے ساتھ اُسے پورا کرنا چاہئے . ہم ابھی کہہ چکے ہیں کہ اگر ہم اپنے دھرم کو ٹھیک ٹھیک سمجھیں اور اُس پر عمل کریں تو ہماری ساری مصیبتیں حل ہو جائیں . پر ہمارے پتن کی آج یہ حالت ہوگئی ہے کہ ہم میں سے کچھ آج دھرم کے نام پر پکھش پات اور گھرنا پھیلانے اور برے سے برے پاپ کرنے کرانے سے بھی نہیں چوکتے .

اگر ہم اپنے دیش کو بربادی سے بچانا چاہتے ہیں تو ہمارا فرض ہے کہ دیش بھر میں جلدی سے جلدی اِس سمجھوتے کی شرطوں کو

दोनों में हिन्दुओं और मुसलमानो दोनों के जानमाल, धर्म और आबरू की बराबर की हिफ़ाज़त की जायगी और अपने अपने यहाँ के राज में सब मामलों में दोनों के बराबर के अधिकार होंगे. यह भी तय हुआ है कि हाल में दोनों तरफ़ जो झगड़े हुए हैं उन की जांच के लिये एक निष्पक्ष कमीशन बिठाया जायगा. जिन्होनें ज़ुल्म किये हैं उन्हें दण्ड दिया जायगा और आगे के लिये इसकी तदबीरें की जायंगी कि जहां तक होसके फिर इस तरह के शर्मनाक झगड़े न होने पावें.

दिल्ली की बात चीत के दौरान में पाकिस्तान के बड़े वज़ीर ने यह भी क़बूल किया है कि आज कल के ज़माने में कहीं भी किसी एक मज़हब वालों की मज़हबी हुकूमत ना मुनासिब है और न चल सकती है. उन्हो ने अपना यह इरादा ज़ाहिर किया है कि पाकिस्तान की हुकूमत भी एक लोकशाही जम्हूरी हुकूमत या डिमोक्रेटिक स्टेट होगी जिस में सब धर्म वालों के हर तरह के बराबर के अधिकार होंगे. दोनों बड़े वज़ीरों ने यह भी तय किया है कि भारत और पाकिस्तान के बीच जितने मामले तय होने को रह गये हैं उन सब को वह धीरे धीरे बिना लड़ाई का नाम लिये आपस में मिलजुल कर बात चीत ही से तय कर लेंगे.

सच यह है कि भारत और पाकिस्तान के बीच का यह राज़ीनामा आज़ादी के बाद के हमारे इतिहास की सब से बड़ी घटना है. इस के सफल या असफल होने का असर भी सारे एशिया बल्कि सारी दुनिया के अमन पर पड़े बग़ैर नहीं रह सकता. हम सब का और हमारे देश का यानी भारत और पाकिस्तान दोनों का भला और

دونوں میں ھندوؤں اور مسلمانوں دونوں کے جان مال، دھرم اور آبرو کی برابر کی حفاظت کی جائے گی اور اپنے اپنے یہاں کے راج میں سب معاملوں میں دونوں کے برابر کے ادھیکار ھونگے۔ یہ بھی طے ھوا ھے کہ حال میں دونوں طرف جو جھگڑے ھوئے ھیں اُن کی جانچ کے لئے ایک نشپکش کمیشن بٹھایا جائے گا۔ جنھوں نے ظلم کئے ھیں اُنھیں دنڈ دیا جائے گا اور آگے کے لئے اِس کی تدبیریں کی جائیں گی کہ جہاں تک ھو سکے پھر اِس طرح کے شرم ناک جھگڑے نہ ھونے پائیں۔

دلی کی بات چیت کے دوران میں پاکستان کے بڑے وزیر نے یہ بھی قبول کیا ھے کہ آج کل کے زمانے میں کہیں بھی کسی ایک مذھب والوں کی مذھبی حکومت نہ مناسب ھے اور نہ چل سکتی ھے۔ اُنھوں نے اپنا یہ اِرادہ ظاھر کیا ھے کہ پاکستان کی حکومت بھی ایک لوک شاھی جمھوری حکومت یا ڈیموکریٹک اسٹیٹ ھوگی جس میں سب دھرم والوں کے ھر طرح کے برابر کے ادھیکار ھونگے۔ دونوں بڑے وزیروں نے یہ بھی طے کیا ھے کہ بھارت اور پاکستان کے بیچ جتنے معاملے طے ھونے کو رہ گئے ھیں اُن سب کو وہ دھیرے دھیرے بنا لڑائی کا نام لئے آپس میں مل جل کر بات چیت ھی سے طے کرلیں گے۔

سچ یہ ھے کہ بھارت اور پاکستان کے بیچ کا یہ راضی نامہ آزادی کے بعد کے ھمارے اتہاس کی سب سے بڑی گھٹنا ھے۔ اِس کے سپھل یا اسپھل ھونے کا اثر بھی سارے ایشیا بلکہ ساری دنیا کے امن پر پڑے بغیر نہیں رہ سکتا۔ ھم سب کا اور ھمارے دیش کا یعنی بھارت اور پاکستان دونوں کا بھلا اور

ग़ैरजानिबदार निष्पक्ष हुकूमत के माने हैं. यही सच्चा रामराज्य है, इसी में हमारा भला है. इसी ऊंचे आदर्श के लिये महात्मा गांधी ने जीवन भर काम किया और इसी के लिये उन्हों ने प्राण दिये. केवल इसी तरह हम अपने पड़ोसी राज पाकिस्तान के भाइयो और वहाँ की सरकार पर भी अपना असर डाल सकते है. और धीरे धीरे सारे हिन्दुस्तान को, जिस मे भारत और पाकिस्तान दोनो शामिल है, सच्चे मानों में आजाद, खुशहाल और महान बना सकते हैं.

हमारी आजादी अभी चार दिन की आजादी है. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सैकड़ो पेचीदा सवाल अभी हमें हल करने हैं. हमारे क़दम धीरे धीरे उन के हल करने की तरफ़ बढ़ भी रहे थे पर हाल में बैठे बिठाये बंगाल के अन्दर कुछ झगड़े हो गये. मैं इस वक़्त इस चीज़ में नहीं जाना चाहता कि यह झगड़े कैसे शुरू हुए और क्यों कर बढ़े या बढ़ाये गये. इन बदक़िस्मत झगड़ो से हमारे यहां की फूट की शक्तियों को फिर से चमकने और मैदान मे आने का मौक़ा मिल गया. दोनों तरफ़ के अख़बारो मे एक तरफ़ा और खूब बढ़ा चढ़ा कर ख़बरें छपीं और बहुत सी झूटी और बे बुनियाद अफ़वाहें भी मुल्क में फैलीं और फैलाई गई . जनता का उन से जोश मे आजाना एक क़ुदरती बात थी. नतीजा फिर वही हुआ. दोनो तरफ़ हज़ारो जानें गईं और लाखों बरबाद हुए. मुल्क के सौभाग्य से और भारत सरकार और पंडित जवाहर लाल जी की कोशिशो से दिल्ली में दोनो सरकारों में बात चीत हुई और एक राज़ी नामे पर दोनों बड़े वज़ीरों के दस्तख़त हो गये. वह राज़ीनामा देश के सामने आ चुका है. मोटे तौर पर राज़ीनामा यह है कि पाकिस्तान और भारत

غیرجانب دار نرپکش حکومت کے معنی ھیں یہی سچا رام راج ہے، اسی میں ہمارا بھلا ہے . اسی اونچے ادرش کے لئے مہاتما گاندھی نے جیون بھر کام کیا اور اسی کے لئے انہوں نے پران دیئے. کیول اسی طرح ہم اپنے پڑوسی راج پاکستان کے بھائیوں اور وہاں کی سرکار پر بھی اپنا اثر ڈال سکتے ھیں . اور دھیرے دھیرے سارے ھندستان کو، جس میں بھارت اور پاکستان دونوں شامل ھیں، سچے معنوں میں آزاد، خوشحال اور مہان بنا سکتے ھیں .

ہماری آزادی ابھی چار دن کی آزادی ہے . راشٹریہ اور انتر راشٹریہ سیکڑوں پیچیدہ سوال ابھی ہمیں حل کرنے ھیں . ہمارے قدم دھیرے دھیرے ان کے حل کرنے کی طرف بڑھ بھی رہے تھے . پر حال میں بیٹھے بٹھائے بنگال کے اندر کچھ جھگڑے ہوگئے . میں اس وقت اس چیز میں نہیں جانا چاہتا کہ جھگڑے کیسے شروع ہوئے اور کیونکر بڑھے یا بڑھائے گئے . ان بدقسمت جھگڑوں سے ہمارے یہاں کی پھوٹ کی شکتیوں کو پھر سے چمکنے اور میدان میں آنے کا موقع مل گیا . دونوں طرف کے اخباروں میں یک‌طرفہ اور خوب بڑھا چڑھا کر خبریں چھپیں اور بہت سی جھوٹی اور بے بنیاد افواہیں بھی ملک میں پھیلیں اور پھیلائی گئیں . جنتا کا ان سے جوش میں آجانا ایک قدرتی بات تھی . نتیجہ پھر وہی ہوا . دونوں طرف ہزاروں جانیں گئیں اور لاکھوں برباد ہوئے . ملک کے سوبھاگیہ سے اور بھارت سرکار اور پنڈت جواہر لال جی کی کوششوں سے دلی میں دونوں سرکاروں میں بات چیت ہوئی اور ایک راضی نامے پر دونوں بڑے وزیروں کے دستخط ہوگئے. وہ راضی نامہ دیش کے سامنے آچکا . موٹے طور پر راضی نامہ یہ ہے کہ پاکستان اور بھارت

कि हमारा फ़र्ज़ क्या है. सबसे पहली बात यह है कि हमें बहुत सोच समझ कर, फूंक फूंक कर क़दम रखना चाहिये. ऐसा न हो कि मुल्क को आगे बढ़ाने के बजाये हम अपनी इस प्यारी आज़ादी को, जिसे हम ने इतनी क़ुर्बानियां दे के हासिल किया है, अपनी किसी ग़लती से खो बैठें और मुल्क को फिर एक बार सदियों के लिये या शायद हमेशा के लिये बरबादी के गड्ढे में ढकेल दें.

कोई देश तबतक सभ्य नहीं कहला सकता न उन्नति कर सकता है और न आजकल की दुनिया में ज़िन्दा रह सकता है जब तक उसमें सब को अपना अपना धर्म पालने और अपने अपने विचार रखने की पूरी आज़ादी नहो, और उस में सब मज़हबों और सम्प्रदायों के लोग मिल कर मोहब्बत, रवादारी और बराबरी के साथ न रह सकें. सच्चा धर्म भी हमें यही सिखाता है. सच पूछिये तो धर्म नाम ही प्रेम, इन्साफ़ और रवादारी का है. इस के ख़िलाफ़ जो लोग कहीं पर भी राज की बाग किसी एक धर्म वालों के हाथ मे देना चाहते हैं और इस माने में मज़हबी हुकूमत क़ायम करना चाहते हैं वह उलटी गंगा बहाने की कोशिश करते हैं. अनजाने अपने मुल्क को पीछे को तरफ़ घसीटते हैं और बरबादी की तरफ़ ले जाते हैं.

ख़ुश क़िस्मती से हमारे इस मुल्क में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी, जैन, बौद्ध, सिक्ख वग़ैरा सब धर्मों, विचारों और सम्प्रदायों के लोग मौजूद हैं. इन सब में सच्चा मेल मोहब्बत हो, सब इस मुल्क को एक बराबर अपना मुल्क समझें, और देश की सरकार बिना किसी तरह के भेद भाव के सब के साथ एक

کہ ھمارا فرض کیا ھے . سب سے پہلی بات یہ ھے کہ ھمیں بہت سوچ سمجھ کر' پھونک پھونک کر قدم رکھنا چاھئے. ایسا نہ ھو کہ ملک کو آگے بڑھانے کے بجائے ھم اپنی اس پیاری آزادی کو جسے ھم نے اتنی قربانیاں دے کے حاصل کیا ھے' اپنی کسی غلطی سے کھو بیٹھیں . اور ملک کو پھر ایک بار صدیوں کے لئے یا شاید ھمیشہ کے لئے بربادی کے گڈھے میں ڈھکیل دیں .

کوئی دیش تب تک سبھیہ نہیں کہلا سکتا نہ اُنتی کرسکتا ھے اور نہ آج کل کی دنیا میں زندہ رہ سکتا ھے جب تک اس میں سب کو اپنا اپنا دھرم پالنے اور اپنے اپنے وچار کو رکھنے کی پوری آزادی نہ ھو' اور اُس میں سب مذھبوں اور سمپر دایوں کے لوگ مل کر محبت' رواداری اور برابری کے ساتھ نہ رہ سکیں سچا دھرم بھی ھمیں یہی سکھاتا ھے . سچ پوچھئے تو دھرم نام ھی پریم' انصاف اور رواداری کا ھے . اس کے خلاف جو لوگ کہیں پر بھی راج کی باگ کسی ایک دھرم والوں کے ھاتھ میں دینا چاھتے ھیں اور اس معنی میں مذھبی حکومت قائم کرنا چاھتے ھیں وہ اُلٹی گنگا بہانے کی کوشش کرتے ھیں . انجانے اپنے ملک کو پیچھے کی طرف گھسیٹتے ھیں اور بربادی کی طرف لے جاتے ھیں .

خوش قسمتی سے ھمارے اس ملک میں ھندو' مسلمان' عیسائی' پارسی' یہودی' جین' بودھ' سکھ وغیرہ سب دھرموں' وچاروں اور سمپر دایوں کے لوگ موجود ھیں . اِن سب میں سچا میل محبت ھو' سب اس ملک کو ایک برابر اپنا ملک سمجھیں اور دیش کی سرکار بنا کسی طرح کے بھید بھاؤ کے سب کے ساتھ [illegible]

हिन्द पाकिस्तान समझौता

[पंडित सुन्दर लाल जी का वह भषन जो उन्होंने १६ अप्रैल सन् ५० ई० को आल इण्डिया रेडियो पटना से ब्राड कास्ट किया]

हमारा प्यारा मुल्क इस समय एक गहरे संकट में से निकल रहा है. देश में दो तरह की शक्तियाँ एक दूसरे पर क़ाबू पाने की कोशिश में लगी हुई हैं. एक तरफ़ वह शक्तियां हैं जो मुल्क भर में एका, प्रेम और मेल मोहब्बत पैदा करके उस की सदियों की कमज़ोरियों को दूर कर के उसे नया जीवन देना और दुनिया के बड़े से बड़े मुल्कों के साथ उन्नति की दौड़ में आगे ले जाना चाहती हैं. दूसरी तरफ़ फूट, नफ़रत और बरबादी की वह शक्तियाँ हैं जिन की बदौलत ही लगभग डेढ़ सौ बरस तक हम दूसरों के ग़ुलाम रहे. इन दूसरी तरह की शक्तियों को उभार कर और बढ़ावा दे कर ही हमारे उस वक़्त के विदेशी हाकिमों ने मुल्क में हिन्दुओं और मुसलमानों की अलग अलग फ़िरक़ेवाराना संस्थायें पैदा कीं जिन के ज़रिये वह बराबर भाई भाई को लड़ाते रहे और अपनी हुकूमत को मज़बूत करते रहे. इसी ज़हर का नतीजा था कि आज़ादी के साथ साथ लाखों जानें गईं, करोड़ों बरबाद हुए और आख़ीर में हमने महात्मा गांधी जैसी क़ीमती हस्ती को भी. जिस की बदौलत हमें आज़ादी नसीब हुई थी, हाथ से खो दिया.

इन दोनों तरह की शक्तियों में संघर्ष अभी तक जारी है और इस समय कुछ ज़ोर पर है. ऐसी हालत में हमें जानना चाहिये

هندی پاکستان سمجھوتہ

[پنڈت سندر لال جی کا وہ بھاشن جو اُنہوں نے ۱۹ اپریل سن ۵۰ء کو آل انڈیا ریڈیو پٹنہ سے براڈ کاسٹ کیا]

ہمارا پیارا ملک اس سمے ایک گہرے سنکٹ میں سے نکل رہا ہے۔ دیش میں دو طرح کی شکتیاں ایک دوسرے پر قابو پانے کی کوشش میں لگی ہوئی ہیں۔ ایک طرف وہ شکتیاں ہیں جو ملک بھر میں ایکا' پریم اور میل محبت پیدا کرکے اس کی صدیوں کی کمزوریوں کو دور کرکے اسے نیا جیون دینا اور دنیا کے بڑے سے بڑے ملکوں کے ساتھ اُنتی کی دوڑ میں آگے لے جانا چاہتی ہیں۔ دوسری طرف پھوٹ' نفرت اور بربادی کی وہ شکتیاں ہیں جن کی بدولت ہی لگ بھگ ڈیڑھ سو برس تک ہم دوسروں کے غلام رہے۔ اِن دوسری طرح کی شکتیوں کو اُبھار کر اور بڑھاوا دے کر ہی ہمارے اُس وقت کے بدیشی حاکموں نے ملک میں ہندوؤں اور مسلمانوں کی الگ الگ فرقہ وارانہ سنستھائیں پیدا کیں جن کے ذریعے وہ برابر بھائی بھائی کو لڑاتے رہے اور اپنی حکومت کو مضبوط کرتے رہے۔ اِسی زہر کا نتیجہ تھا کہ آزادی کے ساتھ ساتھ لاکھوں جانیں گئیں' کروڑوں برباد ہوئے اور آخیر میں ہم نے مہاتما گاندھی جیسی قیمتی ہستی کو بھی' جس کی بدولت ہمیں آزادی نصیب ہوئی تھی' ہاتھوں سے کھودیا۔

اِن دونوں طرح کی شکتیوں میں سنگھرش ابھی تک جاری ہے اور اِس سمے کچھ زور پر ہے۔ ایسی حالت میں ہمیں جاننا چاہئے

जिस आँधी के जालिम झोंके
प्रेम के बन्धन! तोड़ गए
बापू क्यों मुंह मोड़ गए

अपनी बिपता किसको सुनायें कौन है आज हमारा
तुम बिन जग में प्यारे बापू कोई नहीं है सहारा
दोष हुआ क्या हम से
जो तुम हमको अकेला छोड़ गये
बापू क्यों मुंह मोड़ गये

हम जो झगड़ें आपस में तो अब समझाये कौन ?
और अहिंसा के उपदेश अब सब को सुनाये कौन ?
हम दुखियारों से क्यों बापू
प्रीत का रिश्ता तोड़ गये
बापू क्यों मुंह मोड़ गये

———

جس آندھی کے ظالم جھونکے
پریم کے بندھن توڑ گئے
باپو کیوں منہ موڑ گئے

اپنی بپتا کس کو سنائیں کون ہے آج ہمارا
تم بن جگ میں پیارے باپو کوئی نہیں ہے سہارا
دوش ہوا کیا ہم سے
جو تم ہمکو اکیلا چھوڑ گئے
باپو کیوں منہ موڑ گئے

ہم جو جھگڑیں آپس میں تو اب سمجھائے کون ؟
اور اہنسا کے اُپدیش اب سب کو سنائے کون ؟
ہم دکھیاروں سے کیوں باپو
پریت کا رشتہ توڑ گئے
باپو کیوں منہ موڑ گئے

———

नया हिन्द

जिल्द ८ मई सन '५० नम्बर ५

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली

"क़ौम की पुकार बापू के नाम"

(भाई 'सबा' अफ़ग़ानी)

छाई चारो ओर निराशा,
टूट गई है मन की आशा
बापू क्यों मुंह मोड गये

डगर डगर पर ठोकरे खाती
फिरती है अब जनता, बापू !
इसको किसपर छोड़ गये

कैसा अत्याचार कि दुशमन बने हैं भाई भाई
चारों तरफ़ से घिर घिर कर यह कैसी आँधी आई

نیا ھند

جلد ۸ مئی سن ۵۰ نمبر ۵

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ھندستانی بولی
'نیا ھند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

"قوم کی پکار باپو کے نام"

(بھائی 'صبا' افغانی)

چھائی چاروں اور نراشا
ٹوٹ گئی ہے من کی آشا
باپو کیوں منھ موڑ گئے

ڈگر ڈگر پر ٹھوکریں کھاتی
پھرتی ہے اب جنتا، باپو !
اسکو کس پر چھوڑ گئے

کیسا اتیاچار کہ دشمن بنے ہیں بھائی بھائی
چاروں طرف سے گھر گھر کر یہ کیسی آندھی آئی

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—
ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ्फर हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

मई १९५०

क़ीमत—हिन्दुस्तान मे छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने

मनीजर
'नया हिन्द'

४८,) बाई का बाग, इलाहाबाद .

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر—
تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

مئی ۱۹۵۰

قیمت—ہندستان میں چھہ روپیہ سال- باہر دس روپیہ سال
ایک پرچہ دس آنے

منیجر
'نیا ہند'

۴۸، بائی کا باغ' الہ آباد -

نیا ہند

नया हिन्द



"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की [illegible] को दिखलाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे [illegible] [illegible] बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

इसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के [illegible] और एक-एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के [illegible] और एक-एक बात पर क़ुरान की तालीम का बयान किया गया है। [illegible] क़ुरान की [illegible] आयतों का लफ़्ज़ी [illegible] गया है, यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, [illegible], [illegible], जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरह किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिपियों में अलग अलग मिल सकती है। [illegible]

जिल्द बंधी किताब की क़ीमत [illegible]

मैनेजर "नया हिन्द"

[illegible] इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر [illegible] بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے. اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیس کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتایا گیا ہے.

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے. اسمیں قرآن کی [illegible] آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے [illegible] قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، [illegible] کسے کہا گیا ہے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے.

کتاب ہندستانی زبان میں ناگری اور اردو دونوں لپیوں میں الگ الگ مل سکتی ہے. [illegible] کتاب کی قیمت [illegible] روپیہ [illegible]

منیجر "نیا ہند"

۲۸ - [illegible] الہ آباد

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कल्चर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वगैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कान्फ्रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस में मेल बढ़ाना.

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़, वर्किंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास, सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल.—

वर्किंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवान दीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिए.

सुन्दर लाल
सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी
१८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के मुताबिक़ मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो ग्राहक मेम्बर बनना चाहें [illegible]

---

(۱) ایک ایسی ہندوستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندوستانی شامل ہوں۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ— مسٹر عبد المجید خواجہ، وائس پریسیڈنٹ— ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق، ورکنگ باڈی کے پریسیڈنٹ— ڈاکٹر بھگوان داس، سکریٹری پنڈت سندر لال

ورکنگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی۔ کھیر، مسٹر ایس۔ کے۔ رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے۔

سندر لال
سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی
۱۸ بائی کا باغ، الہ آباد

نوٹ— سوسائٹی کے نئے قاعدے کے مطابق ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کر دی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک [illegible]

हिन्द के विधान

को

अंगरेजी हिन्दुस्तानी शब्दावली

(अंगरेज़ी नागरी लिखावट मे)

जिसमे

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ खास खास अंगरेज़ी शब्दो के लिए आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवान दीन और कुछ दूसरे विद्वानो ने सुझाए है .

शुरू मे 'दो शब्द' लिखे है—काका कालेलकर, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, श्री मो० सत्यनारायण और पंडित सुन्दर लाल ने

निकाली है—हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा ने

कीमत दो रुपै.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द'
४८ बाई का बाग, इलाहाबाद

هند کے ودهان

کي

انگریزي هندستاني شبداولي

(انگریزي ناگري لکهاوٹ میں)

حس میں هندي کا جو نیا ودهان پاس هوا هے اس کے لگ بهگ چودہ سو خاص خاص انگریزي شبدوں کے لئے آسان هندستاني شبد مهاتما بهگوان دین اور کچه دوسرے ودوانوں نے سمجهائے هیں۔

شروع میں 'دو شبد' لکهے هیں—کاکا کالیلکر ' شریمتي رامیشوري نهرو ' شري م ستیه نارائن اور پنڈت سندر لال نے

نکالي هے—هندستاني پرچار سبها وردها نے۔

قیمت ۲ روپے

ملنے کا پته—منیجر 'نیا هند'
۴۸ بائي کا باغ ' الهآباد

भारत पाकिस्तान मिशन

(५) पाचवी और आखिरी चीज हमारी राय मे यह है कि कुछ गैर सरकारी हिन्दुओ और मुसलमानो के इस तरह के मिशन होने चाहियें जो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनो तरफ आ जा सकें और फिजा के दुरस्त करने मे दोनों तरफ की सरकारो को मदद दे सके और दोनो तरफ मेल मोहब्बत फैला सकें. दिल्ली के राजीनामा की जो बात हमे सब से ज्यादा अच्छी लगी वह यह है कि दोनो सरकारे यह चाहती है कि दोनो तरफ से जो लाखो आदमी अपने अपने घर बार छोड़ कर दूसरी तरफ चले गये है वह फिर वापस आ कर अपने घरो मे बस सके और वहां खुशी खुशी और अमन से रह सके. जिस तरह के गैर सरकारी मिशनो की हम बात कर रहे है उस तरह के मिशन ही सब से ज्यादा इस काम मे मददगार हो सकते हैं दिल्ली मे मिस्टर लियाकत अली खॉ से जिन लोगो की बाते हुई उन से मालूम हुआ कि पाकिस्तान की सरकार इस तरह के मिशनो को हर तरह की सहूलत देने का तैयार है. हमें यकीन है कि अन्त मे इस तरह के मिले जुले मिशन ही उस बडे हिन्दुस्तान की, जिस मे भारत और पाकिस्तान दोनो शामिल है, आज कल की सारी मजहबी, समाजी, कलचरी और सियासी गलतफहमियो और मुखालफतो को हमेशा के लिये खतम कर के इस मुल्क मे सच्ची एकता, सच्ची खुशहाली और सच्ची तरक्की की बुनियादे डाल सकते है

१३-४-५०　　सुन्दर लाल

بھارت پاکستان مشن

(۵) پانچویں اور آخری چیز ھماری رائے میں یہ ھے کہ کچھ غیر سرکاری ھندؤں اور مسلمانوں کے اِس طرح کے مشن ھونے چاھئیں جو پاکستان اور ھندستان دونوں طرف آجا سکیں اور فضا کے درست کرنے میں دونوں طرف کی سرکاروں کو مدد دے سکیں اور دونوں طرف میل محبت پھیلا سکیں . دلی کے راضی نامے کی جو بات ھمیں سب سے زیادہ اچھی لگی وہ یہ ھے کہ دونوں سرکاریں یہ چاھتی ھیں کہ دونوں طرف سے جو لاکھوں آدمی اپنے اپنے گھر بار چھوڑ کر دوسری طرف چلے گئے ھیں وہ پھر واپس آکر اپنے گھروں میں بس سکیں اور وھاں خوشی خوشی اور امن سے رہ سکیں جس طرح کے غیر سرکاری مشنوں کی ھم بات کر رھے ھیں اُس طرح کے مشن ھی سب سے زیادہ اِس کام میں مددگار ھو سکتے ھیں دلی میں مسٹر لیاقت علی خاں سے جن لوگوں کی باتیں ھوئیں اُن سے معلوم ھوا کہ پاکستان کی سرکار اِس طرح کے مشنوں کو ھر طرح کی سہولت دینے کو تیار ھے ھمیں یقین ھے کہ انت میں اِس طرح کے ملے جلے مشن ھی اُس بڑے ھندستان کی جس میں بھارت اور پاکستان دونوں شامل ھیں آج کل کی ساری مذھبی سماجی' کلچری اور سیاسی غلط فہمیوں اور مخالفتوں کو ھمیشہ کے لئے ختم کرکے اس ملک میں سچی ایکتا' سچی خوشحالی اور سچی ترقی کی بنیادیں ڈال سکتے ھیں

۱۳-۴-۵۰　　سندر لال

सरकारी अफ़सरों से

(४) चौथी बात हमें अपना सूबाई सरकारों और सरकारी कर्मचारियों से कहनी है सरकारी अफ़सरों का फ़िरकापरस्ती के जहर से पाक रहना देश के भले के लिये सब से ज्यादा जरूरी है मगर इस बदकिस्मत मुल्क में अंग्रेजी जमाने से अब तक इस का अक्सर उलटा देखने को मिला है इन तीन महीनों के अन्दर कई ज़िलों से इस तरह की खबरें आती रही हैं जिन से मालूम होता है कि वहां के बड़े बड़े ज़िला अफ़सर या तो छोटे मोटे दंगों को भी रोकने के नाकाबिल थे और या रोकना चाहते न थे अंग्रेजी जमाने में हम इस का कारन समझ सकते थे पर अब हमें अधिक समझ और दूरन्देशी से काम लेना चाहिये. किसी भी ज़िला के ज़िला मजिस्ट्रेट और पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट अगर चाहें कि उस ज़िला में झगड़ा न हो तो अव्वल तो वहां झगड़ा हो ही नहीं सकता और अगर हो भी जाय तो देखते देखते बन्द हो सकता है जो भी जिम्मेदार अफ़सर अपने इस फ़र्ज़ को पूरा करने के नाकाबिल साबित हो उसे तुरन्त वहां से अलग कर देना चाहिये प्रान्ती सरकारों को इस बारे में जागरूकता और हिम्मत से काम लेना चाहिये. कई ज़िलों में सुना जाता है कि कुछ लोगों के इस तरह के गिरोह घर घर मुसलमानों के पास जाते थे जो उन्हें उन की भलाई और सलामती की दुहाई देकर समझाते थे कि तुम्हें पाकिस्तान चला जाना चाहिये इस तरह की हरकतों को कड़ाई के साथ बन्द करना हर सरकार और सरकारी अफ़सर का फ़र्ज़ है

سرکاری افسروں سے

(۴) چوتھی بات ہمیں اپنی صوبائی سرکاروں اور سرکاری کرمچاریوں سے کہنی ہے سرکاری افسروں کا فرقہ پرستی کے زہر سے پاک رہنا دیش کے بھلے کے لئے سب سے زیادہ ضروری ہے مگر اِس بدقسمت ملک میں انگریزی زمانے سے اب تک اِس کا اکثر اُلٹا دیکھنے کو ملا ہے اِن تین مہینوں کے اندر کئی ضلعوں سے اِس طرح کی خبریں آتی رہی ہیں جن سے معلوم ہوتا ہے کہ وہاں کے بڑے بڑے ضلع افسر یا تو چھوٹے موٹے دنگوں کو بھی روکنے کے ناقابل تھے اور یا روکنا چاہتے نہ تھے · انگریزی زمانے میں ہم اِس کا کارن سمجھ سکتے تھے . پر اب ہمیں ادھک سمجھ اور دور اندیشی سے کام لینا چاہئے . کسی بھی ضلع کے ضلع مجسٹریٹ اور پولیس سپرنٹنڈنٹ اگر چاہیں کہ اُس ضلع میں جھگڑا نہ ہو تو اول تو وہاں جھگڑا ہو ہی نہیں سکتا اور اگر ہو بھی جائے تو دیکھتے دیکھتے بند ہو سکتا ہے . جو بھی ذمہ دار افسر اپنے اس فرض کو پورا کرنے کے ناقابل ثابت ہو اُسے ترنت وہاں سے الگ کر دینا چاہئے پرانتی سرکاروں کو اِس بارے میں جاگرُوکتا اور ہمت سے کام لینا چاہئے کئی ضلعوں میں سنا جاتا ہے کہ کچھ لوگوں کے اِس طرح کے گروہ گھر گھر مسلمانوں کے پاس جاتے تھے جو اُنھیں ان کی بھلائی اور سلامتی کی دھائی دے کر سمجھاتے تھے . کہ تمھیں پاکستان چلا جانا چاہئے . اِس طرح کی حرکتوں کو کڑائی کے ساتھ بند کرنا ہر سرکار اور سرکاری افسر کا فرض ہے

मुसलमान मर्द, औरत और बच्चो को हम ने इन तीन महीने के अन्दर उन के घरो और खेतो से निकाल कर जंगलो मे फेंक दिया है या जिन्हो ने खुद हम पर भरोसा न रख सकने के कारन अपने प्यारे घरो को छोड़ दिया है. उन की इस बरबादी का पाप अभी हमारा ताज़ा पाप है जो हिन्दू धर्म और हिन्दू जाति के कन्धो से आसानी से नहीं हटेगा. इसे धीरे धीरे धोने का रास्ता महात्मा गांधी, गनेश शंकर विद्यार्थी और ठाकुर जगी सिह का रास्ता है. इस सकट के समय हिन्दू धर्म, हिन्दू सस्कृति और इस देश को नाश से बचाने का केवल यही एक तरीका है

आर्थिक बायकाट गुनाह

एक और छोटी सी बात. पिछले सत्ताइस अट्ठाइस बरस से हिन्दुओ और मुसलमानो मे एक दूसरे के तिजारती और रोज़गारी बायकाट का सिलसिला भी कही कही चल पड़ा है यह सिलसिला बहुत नापक और खतरनाक है. कुछ मुसलमान केवल इस लिये अपने घरबार छोड़ कर चले गये क्यो कि हिन्दू आबादी के अन्दर उन का अपनी रोज़ी कमा सकना कठिन हो गया था. हिन्दुओ का फ़र्ज़ है कि वह इस बात का खास खयाल रखे कि उन के गांव या शहर का कोई मुसलमान इस कठिनाई के कारन घर छोड़ने पर मजबूर न हो सके

जो सलाह ऊपर हम ने भारत के हिन्दुओं को दी है ठीक वही हम पाकिस्तान के मुसलमान भाइयो को देंगे. हमे थोड़ी बहुत तसल्ली और खुशी है कि कम से कम पूरबी बगाल के कुछ मुसलमानों में इस तरह की तहरीकें चल पड़ी हैं

مسلمان مرد، عورت اور بچوں کو ھم نے ان تین مہینے کے اندر اُن کے گھروں اور کھیتوں سے نکال کر جنگلوں میں پھینک دیا ھے یا جنھوں نے خود ھم پر بھروسہ نہ رکھ سکنے کے کارن اپنے پیارے گھروں کو چھوڑ دیا ھے ان کی اِس بربادی کا پاپ ابھی ھمارا تازہ پاپ ھے جو ھندو دھرم اور ھندو جاتی کے کندھوں سے آسانی سے نہیں ھٹے گا۔ اسے دھیرے دھیرے دھونے کا راستہ مہاتما گاندھی، گنیش شنکر ودیارتھی اور ٹھاکر جنگی سنگھ کا راستہ ھے۔ اِس سنکٹ کے سمے ھندو دھرم، ھندو سنسکرتی اور اس دیش کو ناش سے بچانے کا کیول یہی ایک طریقہ ھے

آرتھک بائیکاٹ گناہ

ایک اور چھوٹی سی بات۔ پچھلے ستائیس اٹھائیس برس سے ھندؤں اور مسلمانوں میں ایک دوسرے کے تجارتی اور روزگاری بائیکاٹ کا سلسلہ بھی کہیں کہیں چل پڑا ھے۔ یہ سلسلہ بہت ناپاک اور خطرناک ھے کچھ مسلمان کیول اِس لئے اپنے گھربار چھوڑ کر چلے گئے کیونکہ ھندو آبادی کے اندر اُن کا اپنی روزی کما سکنا کٹھن ھو گیا تھا ھندوؤں کا فرض ھے کہ وہ اِس بات کا خاص خیال رکھیں کہ اُن کے گاؤں یا شہر کا کوئی مسلمان اِس کٹھنائی کے کارن گھر چھوڑنے پر مجبور نہ ھو سکے

جو صلاح اُوپر ھم نے بھارت کے ھندؤں کو دی ھے ٹھیک وھی ھم پاکستان کے مسلمان بھائیوں کو دیں گے ھمیں تھوڑی بہت تسلی اور خوشی ھے کہ کم سے کم پوربی بنگال کے کچھ مسلمانوں میں اس طرح کی تحریکیں چل پڑی ھیں۔

माल, आबरू और उस का मजहब यहाँ उतना ही सुरक्षित है जितना हिन्दू या किसी और का हमें इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि जितना जितना कोई पाकिस्तान पर चढ़ाई करने या मुसलमानों को भारत से निकालने की बात करता है उतना उतना ही वह हिन्दुस्तान के फिर से एक होने के उस शुभ दिन को दूर फेंकता है और जितना जितना पाकिस्तान की अलग आजाद हुकूमत का भला चाहते हुए हम अपने यहां सच्ची गैर जानिबदार मिली जुली हुकूमत कायम करने की कोशिश करते हैं उतना उतना ही उस शुभ दिन को नजदीक लाते हैं भारत और पाकिस्तान के किसी राज काज मानी में एक होने से पहले इस बात की जरूरत है कि दोनों तरफ के दिल साफ हों दोनों तरफ सब के बराबर अधिकार हों दोनों तरफ सब अमन से रह सकें और दोनों हुकूमतों में आना जाना, लेन देन तिजारत और रिश्तेदारियाँ उसी तरह आजादी के साथ होने लगें जिस तरह सन १९१४ ई० से पहले योरप के लग भग सब आजाद देशों में एक दूसरे के बीच होती थीं निरपराध लोगों, बच्चों और औरतों के ऊपर जिस तरह के अत्याचार खास कर हिन्दू धर्म, और हिन्दू संस्कृति के नाम पर पिछले तीन बरस के अन्दर देश के कई हिस्सों में हुए हैं उन से किसी भी देश या धर्म का माथा ऊंचा नहीं हो सकता और न किसी का भला हो सकता है. हर हिन्दू का खास कर जिसे हिन्दू धर्म से और इस देश की पुरानी संस्कृति से जरा भी प्रेम है उस का यह फर्ज है कि वह भारत के रहने वाले हर मुसलमान बल्कि हर इनसान को अपना भाई समझे और उस के जान माल की रक्षा में जब जरूरत पड़े अपनी जान माल तक निछावर कर दे जिन लाखों

مال، آبرو اور اس کا مذہب یہاں اتنا ہی سرکھشت ہے جتنا ہندو یا کسی اور کا ہمیں اس بات کو اچھی طرح سمجھ لینا چاہئے کہ جتنا جتنا کوئی پاکستان پر چڑھائی کرنے یا مسلمانوں کو بھارت سے نکالنے کی بات کرتا ہے اتنا اتنا ہی وہ ہندستان کے پھر سے ایک ہونے کے اس شبھ دن کو دور پھینکتا ہے اور جتنا جتنا پاکستان کی الگ آزاد حکومت کا بھلا چاہتے ہوئے ہم اپنے یہاں سچی غیرجانبدار ملی جلی حکومت قائم کرنے کی کوشش کرتے ہیں اتنا اتنا ہی اس شبھ دن کو نزدیک لاتے ہیں بھارت اور پاکستان کے کسی راج کاجی معنوں میں ایک ہونے سے پہلے اس بات کی ضرورت ہے کہ دونوں طرف کے دل صاف ہوں دونوں طرف سب کے برابر ادھیکار ہوں دونوں طرف سب امن سے رہ سکیں اور دونوں حکومتوں میں آنا جانا لین دین، تجارت اور رشتہ‌داریاں اسی طرح آزادی کے ساتھ ہونے لگیں جس طرح سن ۱۹۱۴ع سے پہلے یورپ کے لگ بھگ سب آزاد دیشوں میں ایک دوسرے کے بیچ ہوتی تھیں نرپرادھ لوگوں بچوں اور عورتوں کے اوپر جس طرح کے اتیاچار، خاص کر ہندو دھرم اور ہندو سنسکرتی کے نام پر پچھلے تین برس کے اندر دیش کے کئی حصوں میں ہوئے ہیں ان سے کسی بھی دیش یا دھرم کا ماتھا اونچا نہیں ہوسکتا اور نہ کسی کا بھلا ہوسکتا ہے ہر ہندو کا خاص کر جسے ہندو دھرم سے اور اس دیس کی پرانی سنسکرتی سے ذرا بھی پریم ہے اس کا یہ فرض ہے کہ وہ بھارت کے رہنے والے ہر مسلمان بلکہ ہر انسان کو اپنا بھائی سمجھے اور اس کے جان مال کی رکشا میں جب ضرورت پڑے اپنی جان تک نچھاور کردے جن لاکھوں

मुसीबत को झेलते हुए भी उन्हें यहीं रहना है, यहीं मरना है और इसी मुल्क को अपना बनाना है. केवल इसी तरह इस मुल्क के मुसलमान अपने बहके हुए हिन्दू भाइयों की आतमाओं को जगा सकते हैं और धीरे धीरे उन के दिलों को जीत सकते हैं

ठीक यही और इसी तरह की सलाह हम पाकिस्तान के हिन्दू भाईयों को देंगे उन्हें बार बार पाकिस्तान से उखाड़ कर लाने की कोशिश का नतीजा उन की भलाई नहीं है बल्कि उन की हमेशा के लिये बरबादी है

हिन्दुओं से

(३) तीसरी बात हमें भारत के हिन्दुओं से कहनी है हमें मालूम है कि देश के बटवारे से उन के दिलों को बहुत बड़ी चोट लगी है बटवारा आम तौर पर किसी को भी बहुत अच्छी लगने वाली चीज़ नहीं है इस तरह का बटवारा हमेशा दोनों तरफ़ की कुछ न कुछ कमज़ोरियों और कमियों का नतीजा होता है ऐसे मौके पर दोनों को अपनी अपनी कमज़ोरियों और अपनी अपनी कमियों पर ही निगाह डालने और उन्हें दूर करने की कोशिश करनी चाहिये अगर हम यह चाहते हैं कि मुल्क फिर से एक हो — और हमारे दिल में भी यह ख्वाहिश है — तो इस का रास्ता पाकिस्तान पर चढ़ाई करना या अपने यहाँ के मुसलमान भाइयों पर सितम ढाना या उन्हें निकालने की कोशिश करना नहीं है इस का रास्ता है पहले अपने यहाँ और पीछे दूसरे के यहाँ मेल मोहब्बत की राहें खोल कर अपने हर मुसलमान भाई को यह यक़ीन दिलाना कि यह मुल्क उतना ही उस का है जितना किसी हिन्दू का और उस की जान

مصیبت کو جھیلتے ہوئے بھی انہیں یہیں رہنا ہے، یہیں مرنا ہے اور اسی ملک کو اپنا بنانا ہے۔ کیول اسی طرح اس ملک کے مسلمان اپنے بہکے ہوئے ہندو بھائیوں کی آتماؤں کو جگا سکتے ہیں اور دھیرے دھیرے اُن کے دلوں کو جیت سکتے ہیں

ٹھیک یہی اور اِسی طرح کی صلاح ہم پاکستان کے ہندو بھائیوں کو دیں گے۔ انہیں بار بار پاکستان سے اکھاڑ کر لانے کی کوشش کا نتیجہ ان کی بھلائی نہیں ہے بلکہ ان کی ہمیشہ کے لئے بربادی ہے۔

ہندوؤں سے

(۳) تیسری بات ہمیں بھارت کے ہندوؤں سے کہنی ہے ہمیں معلوم ہے کہ دیش کے بٹوارے سے اُن کے دلوں کو بہت بڑی چوٹ لگی ہے۔ بٹوارا عام طور پر کسی کو بھی بہت اچھی لگنے والی چیز نہیں ہے اِس طرح کا بٹوارا ہمیشہ دونوں طرف کی کچھ نہ کچھ کمزوریوں اور کمیوں کا نتیجہ ہوتا ہے ایسے موقعوں پر دونوں کو اپنی اپنی کمزوریوں اور اپنی کمیوں پر ہی نگاہ ڈالنے اور اُنہیں دور کرنے کی کوشش کرنی چاہئیے اگر ہم یہ چاہتے ہیں کہ ملک پھر سے ایک ہو — اور ہمارے دل میں بھی یہ خواہش ہے — تو اس کا راستہ پاکستان پر چڑھائی کرنا یا اپنے یہاں کے مسلمان بھائیوں پر ستم ڈھانا یا اُنہیں نکالنے کی کوشش کرنا نہیں ہے اس کا راستہ ہے پہلے اپنے یہاں اور پیچھے دوسرے کے یہاں میل محبت کی راہیں کھول کر اپنے ہر مسلمان بھائی کو یہ یقین دلانا کہ یہ ملک اتنا ہی اُس کا ہے جتنا کسی ہندو کا اور اس کی جان

कि वह अपने क़ातिल पर भी हाथ न उठायें. ठीक जिस तरह इस्लाम के शुरू के दिनो में मुसलमानों पर तरह तरह के जुल्म होते हुए भी उन्हे सब ज़ुल्मो को केवल ' सब्र और सलात " यानि बर्दाश्त और प्राथना से मुकाबला करने का हुक्म था. और किसी तरह के बदले को या हथियार उठाने की इजाजत नहीं थी. उसी तरह आज भारत मे उन्हे अपने ऊपर ज़ुल्मो को कुछ मुसलमानो ही का पिछला गलतियों का कफ्फारा समझ कर बर्दाश्त करना चाहिये. उन के इस बरताव में ही इस समय उनका और मुल्क का सब से अधिक भला है

अदम तशद्दुद के बाद दूसरी जरूरी चीज़ उन के लिये हिम्मत है. अदम तशद्दुद भी बहादुर को ही शोभा देता है. देश भर मे अगर कोई बहका हुआ नासमझ हिन्दू उन से आकर कहे कि जान बचाने के लिये तुम हिन्दू हो जाओ या चोटी रख लो तो उन्हे साफ़ इन्कार कर देना चाहिये. अगर उन्हे नमाज मे विश्वास है तो नमाज पढ़ते हुए उन्हे कोई मार भी डाले तब भी उन्हे होश रहते नमाज नही छोड़नी चाहिये.

तीसरी उतनी ही जरूरी चीज़ उन के लिये यह है कि किसी के भी समझाने बुझाने पर चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान और कितने भी ख़तरे के होते हुए उन्हे अपना घर या गांव छोड़ कर पाकिस्तान या कही और जाने का खयाल तक मन मे नही लाना चाहिये. उन्हें यह हमेशा के लिये समझ लेना चाहिये कि मुल्क के बटवारे से या दो क़ौमी नज़रिये से उन्हे या इस मुल्क को कोई खास फायदा नहीं पहुंचा और न पहुंच सकता है. हर हालत मे और

کہ وہ اپنے قاتل پر بھی ہاتھ نہ اُٹھائیں ٹھیک جس طرح اسلام کے شروع کے دنوں میں مسلمانوں پر طرح طرح کے ظلم ہوتے ہوئے بھی اُنھیں سب ظلموں کو کیول '' صبر اور صلوٰۃ '' یعنی برداشت اور پرارتھنا سے مقابلہ کرنے کا حکم تھا اور کسی طرح کے بدلے کی یا ہتھیار اُٹھانے کی اجازت نہیں تھی اسی طرح آج بھارت میں انھیں اپنے اوپر ظلموں کو کچھ مسلمانوں ہی کی پچھلی غلطیوں کا کفارہ سمجھ کر برداشت کرنا چاہئے ۔ ان کے اس برتاؤ میں ہی اس سمے ان کا اور ملک کا سب سے ادھک بھلا ہے

عدم تشدد کے بعد دوسری ضروری چیز ان کے لئے ہمت ہے عدم تشدد بھی بہادر ہی کو شوبھا دیتا ہے ۔ دیش بھر میں اگر کوئی بہکا ہوا نا سمجھ ہندو ان سے آکر کہے کہ جان بچانے کے لئے تم ہندو ہو جاؤ یا چوٹی رکھ لو تو انھیں صاف انکار کردینا چاہئے اگر انھیں نماز میں وشواس ہے تو نماز پڑھتے ہوئے انھیں کوئی مار بھی ڈالے تب بھی انھیں ہوش رہتے نماز نہیں چھوڑنی چاہئے

تیسری اتنی ہی ضروری چیز اُن کے لئے یہ ہے کہ کسی کے بھی سمجھانے بجھانے پر چاہے وہ ہندو ہو یا مسلمان اور کتنے بھی خطرے کے ہوتے ہوئے انھیں اپنا گھر یا گاؤں چھوڑ کر پاکستان یا کہیں اور جانے کا خیال تک من میں نہیں لانا چاہئے انھیں یہ ہمیشہ کے لئے سمجھ لینا چاہئے کہ ملک کے بٹوارے سے یا دو قومی نظریہ سے انھیں یا اس ملک کو کوئی خاص فائدہ نہیں پہونچا اور نہ پہونچ سکتا ہے ۔ ہر حالت میں اور

घंटे के अन्दर ही दंगे को ठण्डा कर दिया. जाहिर है कि देश में भले लोगो की इतनी कमी नही है भलाई की ताकतें भी है लेकिन बुराई की ताकते सगठित होकर जब चाहे मैदान मे उतर आती है. भलाई की ताकतें बिखरी हुई और असंगठित रह जाती है इन हालतो मे जनता का फर्ज़ साफ है

भले लोगो मे अपील

(१) सब से पहली जरूरत यह है कि हर जिला हर शहर और हर गांव में नेक, समझदार और अमन पसन्द लोग अपने को संगठित करे. अपने अपने इलाके के नासमझ और बहके हुए फसाद करने वालो की खबर रखे और जब जहॉं जरूरत पडे अपने को खतरे मे डाल कर भी फसाद को रोकने के लिये अपनी पूरी शक्ति से काम ले इसी तरह के सगठन को महात्मा गांधी " शान्ति सेना " का नाम देते थे. इस काम के करने वालो मे जहां एक तरफ अपनी जान की बाज़ी लगा देने की तैयारी होनी चाहिये वहां दूसरी तरफ उन्हे अपने दुशमनो से भी पूरे प्रेम और अहिन्सा से काम लेना चाहिये

इसी तरह के संगठन दूसरी तरफ पाकिस्तान मे भी होने चाहिये

मुसलमानो को सलाह

(२) दूसरी बात हम अपने यहॉं के मुसलमान भाइयों से कहना चाहते है इस नाजुक समय मे भारत के मुसलमानो को बहुत ही सब्र और हिम्मत से काम लेना चाहिये. उन के लिये पहली जरूरी चीज यह है कि इस मामले मे वह पूरे अदम तशद्दुद यानी अहिन्सा से काम ले. बदला लेने का खयाल तो दूर रहा उन्हे चाहिये

گھنٹے کے اندر ہی دنگے کو ٹھنڈا کردیا ۔ ظاہر ہے کہ دیش میں بھلے لوگوں کی اتنی کمی نہیں ہے بھلائی کی طاقتیں بھی ہیں لیکن برائی کی طاقتیں سنگٹھت ہوکر جب چاہے میدان میں اتر آتی ہیں، بھلائی کی طاقتیں بکھری ہوئی اور اسنگٹھت رہ جاتی ہیں ان حالتوں میں جنتا کا فرض صاف ہے

بھلے لوگوں سے اپیل

(۱) سب سے پہلی ضرورت یہ ہے کہ ہر ضلع، ہر شہر اور ہر گاؤں میں نیک، سمجھدار اور امن پسند لوگ اپنے کو سنگٹھت کریں۔ اپنے اپنے علاقے کے ناسمجھ اور بہکے ہوئے فساد کرنے والوں کی خبر رکھیں اور جب جہاں ضرورت پڑے اپنے کو خطرے میں ڈال کر بھی فساد کو روکنے کے لئے اپنی پوری شکتی سے کام لیں اسی طرح کے سنگٹھن کو مہاتما گاندھی " شانتی سینا " کا نام دیتے تھے اس کام کے کرنے والوں میں جہاں ایک طرف اپنی جان کی بازی لگادینے کی تیاری ہونی چاہئے وہاں دوسری طرف انہیں اپنے دشمنوں سے بھی پورے پریم اور اہنسا سے کام لینا چاہئے

اسی طرح کے سنگٹھن دوسری طرف پاکستان میں بھی ہونے چاہئیں

مسلمانوں کو صلاح

۲۔ دوسری بات ہم اپنے یہاں کے مسلمان بھائیوں سے کہنا چاہتے ہیں اس نازک سمے میں بھارت کے مسلمانوں کو بہت ہی صبر اور ہمت سے کام لینا چاہئے ان کے لئے پہلی ضروری چیز یہ ہے کہ اس معاملے میں وہ پورے عدم تشدد یعنی اہنسا سے کام لیں، بدلہ لینے کا خیال تو دور رہا انہیں چاہئے

खबरे आती रही है जिन से मालूम होता है कि पिछले बरसो की दुर्घटनाओ से देश की जनता ने धीरे धीरे थोड़ा बहुत सबक सीखा है. पूरबी बगाल से खबरे आई है कि वहाँ बहुत से आम मुसलमानो ने हिन्दुओ की जान माल के बचाने मे मदद दी और इसी कोशिश मे अपनी जान तक खो दी कलकत्ता मे बहुत से सिक्खो ने अपनी जान पर खेल कर मुसलमानो की जान बचाई कलकत्ता ही मे उत्तरी प्रान्तो के हजारो गरीब हिदुओ ने बहकाये जाने पर भी अपने को इस मार काट से अलग रखा और बहुत सो ने मुसलमानो की मदद की. इसी कोशिश मे कई जाने भी गई कलकत्ता मे यह चीज यहा तक बढ़ी कि कहा जाता है कुछ बगाली हिन्दुओ की तरफ से पैम्फलेट बांटे गये जिन मे लिखा था कि " हमे ड.ढ़ी वालो, चोटी वालो और कड़ा वालो" यानी मुसलमानो, उत्तरी प्रान्तो के हिन्दुओ और सिक्खो तीनों को बंगाल से निकाल देना है कहा जाता है इन चीजो की जड़ में तिजारती लाग डाट भी काम कर रही थी यू० पी० के उन ज़िलो से भी जो इस नापाक आग की लपटो से न बच सके, खबरे आ रही हैं कि जगह जगह आम हिन्दुओ ने हिन्दुओ ही के ज़ुल्मो से अपने मुसलमान पड़ोसियो को बचाया शाहजहापुर के किसी गांव सें ठाकुर जंगी सिह नामी एक आदमी के इसी तरह की कोशिश में हिन्दुओ के हाथो शहीद होने की खबर भी अखबारो मे आ चुकी है. इसी तरह की और भी बहुत सी खबरे जहां तहा से आ रही हैं. कहीं कहीं से खास कर कटनी (सी. पी) से यह भी सुनने में आया है कि वहाँ कुछ कांग्रेस वालो ने बड़ी दिलेरी के साथ मुसलमानो को बचाया और चन्द

خبریں آتی رہی ہیں جن سے معلوم ہوتا ہے کہ پچھلے برسوں کی درگھٹناؤں سے دیش کی جنتا نے دھیرے دھیرے تھوڑا بہت سبق سیکھا ہے. پوربی بنگال سے خبریں آئی ہیں کہ وہاں بہت سے عام مسلمانوں نے ہندوؤں کی جان مال کے بچانے میں مدد دی اور اسی کوشش میں اپنی جان تک کھودی. کلکتہ میں بہت سے سکھوں نے اپنی جان پر کھیل کر مسلمانوں کی جان بچائی کلکتہ ہی میں اُتری پرانتوں کے ہزاروں غریب ہندوؤں نے بہکائے جانے پر بھی اپنے کو اس مار کاٹ سے الگ رکھا اور بہت سوں نے مسلمانوں کی مدد کی اسی کوشش میں کئی جانیں بھی گئیں. کلکتہ میں یہ چیز یہاں تک بڑھی کہ کہا جاتا ہے کچھ بنگالی ہندوؤں کی طرف سے پمفلٹ بانٹے گئے جن میں لکھا تھا کہ ہمیں '' داڑھی والوں، چوٹی والوں اور کڑا والوں '' یعنی مسلمانوں، اتری پرانتوں کے ہندوؤں اور سکھوں تینوں کو بنگال سے نکال دینا ہے. کہا جاتا ہے کہ ان چیزوں کی جڑ میں تجارتی لاگ ڈانٹ بھی کام کر رہی تھی. یوپی کے ان ضلعوں سے بھی جو اس ناپاک آگ کی لپٹوں سے نہ بچ سکے خبریں آ رہی ہیں کہ جگہ جگہ عام ہندوؤں نے ہندوؤں ہی کے ظلموں سے اپنے مسلمان پڑوسیوں کو بچایا شاہجہاں پور کے کسی گاؤں سے ٹھاکر جنگی سنگھ نامی ایک آدمی کے اسی طرح کی کوشش میں ہندوؤں کے ہاتھوں شہید ہونے کی خبر بھی اخباروں میں آچکی ہے. اسی طرح کی اور بھی بہت سی خبریں جہاں تہاں سے آ رہی ہیں. کہیں کہیں سے خاص کر کٹنی (سی پی) سے یہ بھی سننے میں آیا ہے کہ وہاں کچھ کانگریس والوں نے بڑی دلیری کے ساتھ مسلمانوں کو بچایا اور چند

के, इस मुल्क के और दोनों हुकूमतो के सरों को ऊँचा करने वाला है. इस राज़ीनामे ने साबित कर दिया कि महात्मा गांधी का अपने "क़ानूनी वारिस" का चुनाव और एलान कितना ठीक था. सरदार बल्लभ भाई पटेल ने भी इस मामले में पंडित जवाहर लाल का पूरा साथ दे कर यह साबित कर दिया कि भारत सरकार इस मामले मे हर तरह की तंग नज़री से बहुत ऊपर है और फ़िरका. परस्ती को मुल्क से निकालने के लिये कमर कसे हुए है हम अधिक क्या कहें! सारे देश का और सब हिन्दू मुसलमानो का धर्म है, उन का पाक फ़र्ज़ है कि वह इस राज़ीनामे के सफल कराने मे हर तरह और पूरी पूरी मदद दें. और देश मे चारो तरफ वह हवा पैदा करें जिस से दोंनो सरकारो को इस नेक काम मे शक्ति मिले और उन की हिम्मत बढ़े.

देश की जनता का फ़र्ज़

पर बंगाल के इस झगड़े और सरकारी राज़ीनामे से हट कर हमें आगे के लिये अपने फ़र्ज़ पर ग़ौर कर लेना चाहिये. देश की इस हालत मे इस तरह के राज़ीनामे होते हुए भी यह मनहूस झगडे जब तब जगह जगह खड़े हो सकते हैं और हमें डर है कि होंगे. सोचना यह है कि इन्हें रोकने या इन के जहर को कम करने के लिये हमें क्या करना चाहिये.

सच्चे हिन्दू मुसलमान

बंगाल और यू० पी० ही की हाल की घटनाओ से हमें इस बारे में थोड़ी बहुत रोशनी मिलती है. दोनों जगह से इस तरह की

کے' اِس ملک کے اور دونوں حکومتوں کے سروں کو اُونچا کرنے والا ہے. اس راضی نامے نے ثابت کردیا کہ مہاتما گاندھی کا اپنے " قانونی وارث " کا چناؤ اور اعلان کتنا ٹھیک تھا . سردار ولبھ بھائی پٹیل نے بھی اس معاملہ میں پنڈت جواہر لال کا پورا ساتھ دیکر یہ ثابت کردیا کہ بھارت سرکار اس معاملے میں ہر طرح کی تنگ نظری سے بہت دور ہے اور فرقہ پرستی کو ملک سے نکالنے کے لئے کمر کسے ہوئے ہے . ہم ادھک کیا کہیں ! سارے دیش کا اور سب ہندو مسلمانوں کا دھرم ہے' اُن کا پاک فرض ہے کہ وہ اس راضی نامے کے سپھل کرانے میں ہر طرح اور پوری پوری مدد دیں اور دیش میں چاروں طرف وہ ہوا پیدا کریں جس سے دونوں سرکاروں کو اس نیک کام میں شکتی ملے اور ان کی ہمت بڑھے .

دیش کی جنتا کا فرض

پر بنگال کے اس جھگڑے اور سرکاری راضی نامے سے ہٹ کر ہمیں آگے کے لئے اپنے فرض پر غور کرلینا چاہئے . دیش کی اس حالت میں اِس طرح کے راضی نامے ہوتے ہوئے بھی یہ منحوس جھگڑے جب تب جگہ جگہ کھڑے ہوسکتے ہیں اور ہمیں ڈر ہے کہ ہونگے . سوچنا یہ ہے کہ انہیں روکنے یا ان کے زھر کو کم کرنے کے لئے ہمیں کیا کرنا چاہئے .

سچے ہندو مسلمان

بنگال اور یو پی ہی کی حال کی گھٹناؤں سے ہمیں اس بارے میں تھوڑی بہت روشنی ملتی ہے . دونوں جگہ سے اس طرح کی

समय के मामले शांति के साथ तय करलें और दोनो देशो के बीच दोस्ती और अच्छे पड़ोसियों के से प्रेम भाव बढ़ाने में मदद दें."

आज कल की हवा मे बहुत मे लोगो को एक दूसरे की नियत पर भरोसा नहीं होता. लोगो को शक है कि इस राज़ीनामे पर ईमानदारी से अमल होगा या नहीं. यह शक कुछ लोगो के दिलों मे दोनों तरफ़ है. लेकिन जैसा पंडित जवाहर लाल ने अपने धुन बिखराव (ब्राडकास्ट) में कहा है अव्वल तो किसी इस तरह के राज़ीनामे का होना ही कुछ कम बात नही है. दूसरे विश्वास से विश्वास और अविश्वास से अविश्वास हमेशा बढ़ता है. दोनो बड़े वज़ीरो को एक दूसरे पर पक्का विश्वास है. दुनिया के हालात और ख़ास कर बाहर की दुनिया की हालत और उस से हिन्दुस्तान को डर, पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनो तरफ़ के समझदार लोगों से छिपा नहीं है. जिन लोगो की आँखें बन्द नहीं हैं वह इस बात को अच्छी तरह समझ रहे हैं कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान भले ही अलग अलग रहें या एक हो जायें दोनो की और सारे मुल्क की सलामती इसी मे है कि वह एक दूसरे पर चढ़ाई करने की या एक दूसरे को लड़ कर जीतने की बात तक अपने दिमाग़ में न लावें. जो लोग इधर या उधर इस तरह की लड़ाई की बातें करते रहते हैं वह कुएँ के मेंडक की तरह बाहर की दुनिया से बिलकुल अनजान हैं और अपनी केवल बेसबरी और हिमाक़त से ख़ुद अपनी और सारे मुल्क की बरबादी के सामान पैदा कर रहे हैं.

इस में ज़रा भी शक नहीं कि इस हुकूमत के बड़े वज़ीर की हैसियत से पंडित जवाहर लाल ने जो राज़ीनामा किया है वह उन

سے کے سب معاملے شانتی کے ساتھ طے کرلیں اور دونوں دیشوں کے بیچ دوستی اور اچھے پڑوسیوں کے سے پریم بھاؤ بڑھانے میں مدد دیں ."

آج کل کی هوا میں بہت سے لوگوں کو ایک دوسرے کی نیت پر بھروسہ نہیں هوتا . لوگوں کو شک ھے کہ اِس راضی نامے پر ایمانداری سے عمل هوگا یا نہیں . یہ شک کچھ لوگوں کے دلوں میں دونوں طرف ھے . لیکن جیسا پنڈت جواهر لال جی نے اپنے دھن بکھراؤ (براڈ کاسٹ) میں کہا ھے اول تو کسی اِس طرح کے راضی نامے کا هونا هی کچھ کم بات نہیں ھے . دوسرے وشواس سے وشواس اور اوشواس سے اوشواس همیشہ بڑھتا ھے . دونوں بڑے وزیروں کو ایک دوسرے پر پکا وشواس ھے دنیا کے حالات اور خاص کر باهر کی دنیا کی حالت اور اُس سے هندستان کا ڈر پاکستان اور هندستان دونوں طرف کے سمجھ دار لوگوں سے چھپا نہیں ھے . جن لوگوں کی آنکھیں بند نہیں هیں وہ اس بات کو اچھی طرح سمجھ رهے هیں کہ پاکستان اور هندستان بھلے هی الگ الگ رهیں یا ایک هوجائیں دونوں کی اور سارے ملک کی سلامتی اسی میں ھے کہ وہ ایک دوسرے پر چڑھائی کرنے کی یا ایک دوسرے کو لڑ کر جیتنے کی بات تک اپنے دماغ میں نہ لاویں . جو لوگ اِدھر یا اُدھر اس طرح کی لڑائی کی باتیں کرتے رهتے هیں وہ کنویں کے مینڈک کی طرح باهر کی دنیا سے بالکل انجان هیں اور اپنی کیول بے صبری اور حماقت سے خود اپنی اور سارے ملک کی بربادی کے سامان پیدا کر رهے هیں .

اِس میں ذرا بھی شک نہیں کہ اس حکومت کے بڑے وزیر کی حیثیت سے پنڈت جواهر لال نے جو راضی نامہ کیا ھے وہ اُن

अली खॉ ने मुझे विश्वास दिलया है कि पाकिस्तान की सरकार उसी तरह के राज मे यकीन रखती है जिसे इस जमाने का लोक शाही राज (डिमोक्रेटिक स्टेट) कहा जाता है वह मानती है कि सच मुच इस जमाने के हालात मे किसी दूसरी तरह का राज नहीं चल सकता. यह विश्वास इस समझौते मे कलम बन्द है."

आने वाले समझौते

मिस्टर लियाकत अली खॉ ने अपने यहॉ की राज पंचायत मे इस राजीनामा को पेश करते हुए कहा कि —' मै इस राजीनामे को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच एक नये समझौते का पेशखीमा मानता हूँ मुझे यकीन है और हिन्दुस्तान के बड़े वजीर को भी यकीन है कि इन राजीनामे पर अगर ठीक ठीक अमल हुआ तो इस से एक दूसरे के वह डर और वह शक मिट जायगे जो आज शिकारी की तरह शिकार की तलाश मे इस छोटे मोटे महाद्वीप मे मडला रहे है.''

पंडित जवाहर लाल और मिस्टर लियाकत अली खॉ दोनो ने यह भी बयान किया कि उनकी थोडी बहुत बात चीत बगाल के अलावा उन सब मामलो पर भी हुई जो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच अटके हुए है. दोनो का इरादा है कि वह फिर बार बार मिलेगे और उन्हे उम्मीद है कि इन दोनो पडोसी हुकूमतो के बीच के सब झगड़े इसी तरह आपसी राजी नामे और समझौते मे तय हो जायगे. मिस्टर लियाकत अली खॉ ने कहा कि —' हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनो के भले के लिये और सच यह है कि जगत शांति के हित में यह जरूरी है कि हम अपने बीच के सब इस

علي خاں نے مجھے وشواس دلایا ھے کہ پاکستان کی سرکار اُسی طرح کے راج میں یقین رکھتي ھے جسے اِس زمانے کا لوک شاھي راج (ڈیموکریٹک اسٹیٹ) کہا جاتا ھے . وہ مانتی ھے کہ سچ مچ اِس زمانے کے حالات میں کسی دوسري طرح کا راج نہیں چل سکتا . یہ وشواس اِس سمجھوتے میں قلم بند ھے ''

آنے والے سمجھوتے

مسٹر لیاقت علی خاں نے اپنے یہاں کی راج پنچایت میں اِس راضی نامہ کو پیش کرتے ھوئے کہا— ' میں اِس راضی نامے کو ھندستان اور پاکستان کے بیچ ایک نئے سمجھوتے کا پیش خیمہ مانتا ھوں مجھے یقین ھے اور ھندستان کے بڑے وزیر کو بھی یقین ھے کہ اِس راضی نامے پر اگر ٹھیک ٹھیک عمل ھو تو اِس سے ایک دوسرے کے وہ ڈر اور وہ شک مٹ جائیں گے جو آج شکاری کی طرح شکار کی تلاش میں اِس چھوٹے موٹے مہادیپ میں منڈلا رھے ھیں .''

پنڈت جواھر لال اور مسٹر لیاقت علی خاں دونوں نے یہ بھی بیان کیا کہ اُن کی تھوڑي بہت بات چیت بنگال کے علاوہ اُن سب معاملوں پر بھي ھوئي جو ھندستان اور پاکستان کے بیچ اٹکے ھوے ھیں دونوں کا اِرادہ ھے کہ وہ پھر بار بار ملیں گے اور اُنھیں اُمید ھے کہ اِن دونوں پڑوسی حکومتوں کے بیچ کے سب جھگڑے اِسی طرح آپسی راضی نامے اور سمجھوتے سے طے ھو جائیں گے . مسٹر لیاقت علی خاں نے کہا— 'ھندستان اور پاکستان دونوں کے بھلے کے لئے اور سچ یہ ھے کہ جگت شانتي کے ھت میں یہ ضروري ھے کہ ھم اپنے بیچ کے سب اِس

(१०) एक तहक़ीक़ाती कमीशन बिठाया जाय जो हाल के दंगों के कारनों वग़ैरा की जांच करे और दोनो सरकारों को सलाह दे कि आइन्दा यह दंगे कैसे रोके जायँ कमीशन ऐसे आदमियों का होगा जिन पर इधर मुसलमानों को और उधर हिन्दुओं को भरोसा हो.

(११) इस तरह की खबरें या विचार फैलाने वालो को जिन से फिरकावाराना ज़हर बढ़े सख़्त सज़ाये दी जायँगी. ऐसे ही दोनो हुकूमतों मे लड़ाई की बात करने वालो को भी कड़ाई से रोका जायगा.

(१२) इस बात की कोशिश की जायगी कि दोनो तरफ से जो लोग अपने अपने घरबार छोड़ कर चले आये है वह फिर वापस चले जायँ और अपने अपने घरो मे अमन से रह सके. इसके लिये दोनो हुकूमतो के ख़ास वज़ीर मुकर्रर किये जावेंगे जो उन इलाको में रहकर लोगो के दिलो मे भरोसा पैदा करें. पूरबी बगाल मे एक हिन्दू वज़ीर और पच्छिमी बगाल मे एक मुसलमान वज़ीर इसी ग़रज़ से बढाया जायगा.

(१३) इस राज़ीनामा पर अमल करने कराने के लिये ख़ास कमीशन मुकर्रर किये जायँगे.

ऊपर हमने राज़ी नामा की ख़ास ख़ास बातों को अपने शब्दों में देने की कोशिश की है.

पाकिस्तान लोकराज है

पंडित जवाहरलाल जी ने इस राज़ीनामा को दिल्ली की राज पंचायत के सामने पेश करते हुए कहा कि — " मिस्टर लियाक़त

(١٠) ایک تحقیقاتی کمیشن بٹھایا جائے جو حال کے دنگوں کے کارنوں وغیرہ کی جانچ کرے اور دونوں سرکاروں کو صلاح دے کہ آئندہ یہ دنگے کیسے روکے جائیں . کمیشن ایسے آدمیوں کا ہوگا جن پر اِدھر مسلمانوں کو اور اُدھر ہندوؤں کو بھروسہ ہو .

(١١) اِس طرح کی خبریں یا وچار پھیلانے والوں کو جن سے فرقہ وارانہ زہر بڑھے سخت سزائیں دی جائیں گی . ایسے ہی دونوں حکومتوں میں لڑائی کی بات کرنے والوں کو بھی کڑائی سے روکا جائے گا .

(١٢) اِس بات کی کوشش کی جائے گی کہ دونوں طرف سے جو لوگ اپنے اپنے گھربار چھوڑ کر چلے آئے ہیں وہ پھر واپس چلے جائیں اور اپنے اپنے گھروں میں امن سے رہ سکیں . اس کے لئے دونوں حکومتوں کے خاص وزیر مقرر کئے جاویں گے جو اُن علاقوں میں رہ کر لوگوں کے دلوں میں بھروسہ پیدا کریں . پوربی بنگال میں ایک ہندو وزیر اور پچھمی بنگال میں ایک مسلمان وزیر اِسی غرض سے بڑھایا جائے گا .

(٣) اِس راضی نامہ پر عمل کرنے کرانے کے لئے خاص کمیشن مقرر کئے جائیں گے .

اوپر ہم نے راضی نامہ کی خاص خاص باتوں کو اپنے شبدوں میں دینے کی کوشش کی ہے .

پاکستان لوک راج ہے

پنڈت جواہر لال جی نے اِس راضی نامہ کو دلی کی راج پنچایت کے سامنے پیش کرتے ہوئے کہا کہ — "مسٹر لیاقت

आसाम या त्रिपुरा में रह जायगी उस का प्रबन्ध एक एक कमेटी के सुपुर्द होगा जिस मे पाकिस्तान मे हिन्दुओ के और हिन्दुस्तान मे मुसलमानो के नुमाइन्दे रहेगे. यह कमेटियां जायदाद के ट्रस्टी का काम करेंगी. जायदाद की बाबत इस शर्त का फ़ायदा उन लोगों को भी दिया जायगा जो पन्द्रह अगस्त सन् ४७ ई० से अब तक पूरबी बंगाल से आकर हिन्दुस्तान के किसी हिस्से मे या पच्छिमी बंगाल, आसाम या त्रिपुरा से जाकर पाकिस्तान के किसी हिस्से में बस गये हैं या जो बिहार से जाकर पूरबी बंगाल मे बस गये है.

(६) दोनों सरकारें इस बात की पूरी पूरी कोशिश करेंगी कि दोनो तरफ़ जल्दो से जल्दो अमन क़ायम हो और फिर कभो इस तरह के दगे न होने पाये.

(७) दोनो तरफ़ इन हाल के दंगो मे जिन लोगो ने जुर्म किये हैं उन्हे तहक़ीक़ात कर के पूरी पूरी सजायें दी जावेगी. मजमूई जुरमाने वसूल किये जावेंगे और लुटे हुए माल का पता लगाने और असिल मालिक को वापस दिलाने की पूरी पूरी कोशिश की जावेगी.

(८) मुसलमानो और हिन्दुओ दोनो की मदद से पूरी की जावेगी भगाई हुई औरतो को निकालने और वापस कराने की.

(९) जो लोग इन झगडो मे इधर या उधर हिन्दू से मुसलमान या मुसलमान से हिन्दू बना लिये गये हैं उन के इस मजहब बदलने को नहीं माना जायगा. और उनका मजहब बदलने वालो को सजा दी जायगी.

آسام یا تریپورہ میں رہ جائیگی اس کا پربندھ ایک ایک کمیٹی کے سپرد ہوگا جس میں پاکستان میں ہندوؤں کے اور ہندستان میں مسلمانوں کے نمائندے رہینگے . یہ کمیٹیاں جائیداد کے ٹرسٹی کا کام کریں گی . جائداد کی بابت اِس شرط کا فائدہ اُن لوگوں کو بھی دیا جائیگا جو پندرہ اگست سن ۴۷ء سے اب تک پوربی بنگال سے ہندستان کے کسی حصے میں یا پچھمی بنگال، آسام یا تریپورا سے جاکر پاکستان کے کسی حصے میں بس گئے ہیں یا جو بہار سے جاکر پوربی بنگال میں بس گئے ہیں .

(۶) دونوں سرکاریں اس بات کی پوری پوری کوشش کرینگی کہ دونوں طرف جلدی سے جلدی امن قائم ہو اور پھر کبھی اِس طرح کے دنگے نہ ہونے پائیں .

(۷) دونوں طرف ان حال کے دنگوں میں جن لوگوں نے جرم کئے ہیں اُنھیں تحقیقات کرکے پوری پوری سزائیں دی جاوینگی . مجموعی جرمانے وصول کئے جاویں گے اور لٹے ہوئے مال کا پتہ لگانے اور اصل مالک کو واپس دلانے کی پوری پوری کوشش کی جاویگی .

(۸) مسلمانوں اور ہندوؤں دونوں کی مدد سے پوری کوشش کیجاویگی بھگائی ہوئی عورتوں کو نکالنے اور واپس کرانے کی .

(۹) جو لوگ ان جھگڑوں میں اِدھر یا اُدھر ہندو سے مسلمان یا مسلمان سے ہندو بنا لئے گئے ہیں ان کے اس مذہب بدلنے کو نہیں مانا جائیگا . اور ان کا مذہب بدلنے والوں کو سزادی جائیگی .

(३) जो हिन्दू पूरबी बंगाल से आना चाहेंगे या मुसलमान पच्छिमी बंगाल, आसाम या त्रिपुरा से जाना चाहेंगे वह अपनी चल सम्पत्ति यानी घर बार के सामान और ज़ेवर जवाहरात वग़ैरा सब अपने साथ ला सकेंगे. केवल नक़द रुपया हर मर्द या औरत डेढ़ सौ और हर बच्चा पछत्तर से ज़्यादा साथ न ला सकेगा

(४) अभी तक यह शिकायत थी कि इस तरह आने वाले लोगो को चुंगी (करोड़गीरी) की चौकियो पर दिक़ किया जाता है और उनका सब सामान धरा लिया जाता है. आइन्दा के लिये यह तय कर दिया गया है कि हिन्दुस्तान सरकार की तरफ़ से पूरबी बंगाल में और पाकिस्तान सरकार की तरफ़ से पच्छिमी बंगाल, आसाम और त्रिपुरा मे अपने अपने "लीज़ान" अफ़सर रहेंगे जो यह देखेंगे कि किसी आने जाने वाले को इस तरह की किसी चौकी पर दिक़ न किया जावे और न उसका माल छीना जावे.

(५) जो अचल सम्पत्ति जैसे मकान, ज़मीन वग़ैरा कोई अपने पीछे छोड़ जावेगा वह उसी की मिलकीयत समझी जावेगी और रहेगी और अगर उस की ग़ैरहाज़िरी में कोई दूसरा उस पर क़ब्ज़ा कर लेगा तो असल मालिक के वापस जाने पर वह ज़मीन, मकान और जायदाद उसे दिलवादी जायँगी बशर्ते कि वह ३१ दिसम्बर सन् ५० ई० तक वापस चला जावे.

जो शख़्स वापस न जाना चाहे उसे पूरा अधिकार होगा कि अपनी ज़मीन या जायदाद को जिस किसी के हाथ चाहे बेच डाले या तबादला करले या जिस तरह चाहे दूसरे को दे दे या सौंप दे. इस तरह की जो अचल सम्पति पूरबी बंगाल, पच्छिमी बंगाल,

(۳) جو هندو پوربی بنگال سے آنا چاهینگے یا مسلمان پچھمی بنگال' آسام یا تریپورا سے جانا چاهینگے وہ اپنی چل سمپتی یعنی گهر بار کے سامان اور زیور جواهرات وغیرہ سب اپنے ساتھ لاسکینگے . کیول نقد روپیہ هر مرد یا عورت ڈیڑھ سو اور هر بچہ پچھتر سے زیادہ ساتھ نہ لاسکے گا .

(۴) ابھی تک یہ شکایت تھی کہ اس طرح آنے والے لوگوں کو چنگی (کروڑ گیری) کی چوکیوں پر دق کیا جاتا هے اور اُن کا سب سامان دھرا لیا جاتا هے . آئندہ کے لئے یہ طے کردیا گیا هے کہ هندستان سرکار کی طرف سے پوربی بنگال میں اور پاکستان سرکار کی طرف سے پچھمی بنگال' آسام اور تریپورہ میں اپنے اپنے " لیزان " افسر رهیں گے جو یہ دیکھینگے کہ کسی آنے جانے والے کو اس طرح کی کسی چوکی پر دق نہ کیا جاوے اور نہ اُس کا مال چھینا جاوے .

(۵) جو اچل سمپتی جیسے مکان' زمین وغیرہ کوئی اپنے پیچھے چھوڑ جاوے گا وہ اسی کی ملکیت سمجھی جاویگی اور رهے گی اور اگر اس کی غیر حاضری میں کوئی دوسرا اس پر قبضہ کرلے گا تو اصل مالک کے واپس جانے پر وہ زمین' مکان اور جائداد اُسے دلوادی جائیں گی بشرطیکہ وہ ۳۱ دسمبر سن ۵۰ تک واپس چلا جاوے.

جو شخص واپس نہ جانا چاهے اسے پورا ادھیکار هوگا کہ اپنی زمین یا جائداد کو جس کسی کے هاتھ چاهے بیچ ڈالے یا تبادلہ کرلے یا جس طرح چاهے دوسرے کو دے دے یا سونپ دے . اِس طرح کی جو اچل سمپتی پوربی بنگال' پچھمی بنگال'

का तबादला जो हुआ है वह दुनिया के इतिहास मे शायद सब से बड़ा गुनाह हुआ है. उस के नतीजो को देखने के बाद किसी भी बड़े पैमाने पर आबादी के तबादले की बात करना केवल नासमझी, हठधर्मी और तंग नज़री है.

दिल्ली का राज़ीनामा

दोनो बड़े वज़ीरो मे जो राज़ी नामा हुआ है उस से जाहिर है कि दोनो मरकज़ी सरकारें इस बात को अच्छी तरह समझ रही है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की जंग मे दोनो की और सारे मुल्क की तबाही है यह दोनो सरकारे एक दूसरे से सुलह से रहना चाहती है राज़ी नामा की कुछ खास खास बाते यह है :—

(१) पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनो मे हिन्दुओ, मुसलमानो सिक्खो और सब धर्मो के लोगो को बिना किसी तरह के भेदभाव के बराबर के शहरी अधिकार होगे, सब की जानमाल, कलचर और आबरू की बराबर की हिफाजत की जावेगी राज काजी, सिविल और फ़ौजी सब तरह की नौकरियो मे सब को बराबर के मौके मिलेगे हर मजहब वालो को अपने तरीके से पूजा बन्दगी की और अपने रीत रिवाज पालने की पूरी आजादी होगी दोनो सरकारे अपने इस वायदे पर पूरी तरह अमल करेगी और करायेगी

(२) हिन्दुस्तान मे रहने वाले मुसलमान और पाकिस्तान मे रहने वाले हिन्दू या सिक्ख सब अपने अपने यहाँ की हुकूमतो के ही वफ़ादार होंगे और उन्हे जो जो शिकायते या तकलीफे होगी अपने अपने यहाँ की सरकारो से ही दूर करावेगे

کا تبادلہ جو ہوا ہے وہ دنیا کے اتہاس میں شاید سب سے بڑا گناہ ہوا ہے۔ اُس کے نتیجوں کو دیکھنے کے بعد کسی بھی بڑے پیمانے پر آبادی کے تبادلے کی بات کرنا کیول ناسمجھی، ہٹ دھرمی اور تنگ نظری ہے ۔

دلی کا راضی نامہ

دونوں بڑے وزیروں میں جو راضی نامہ ہوا ہے اس سے ظاہر ہے کہ دونوں مرکزی سرکاریں اِس بات کو اچھی طرح سمجھ رہی ہیں کہ ھندستان اور پاکستان کی جنگ میں دونوں کی اور سارے ملک کی تباہی ہے ۔ یہ دونوں سرکاریں ایک دوسرے سے صلح سے رہنا چاہتی ہیں راضی نامہ کی کچھ خاص خاص باتیں یہ ہیں :—

(۱) پاکستان اور ھندستان دونوں میں ھندوؤں، مسلمانوں سکھوں اور سب دھرموں کے لوگوں کو بنا کسی طرح کے بھید بھاو کے برابر کے شہری ادھیکار ہونگے ۔ سب کی جان مال کلچر اور آبرو کی برابر کی حفاظت کی جاوے گی راج کاجی، سول اور فوجی سب طرح کی نوکریوں میں سب کو برابر کے موقعے ملینگے ۔ ہر مذھب والوں کو اپنے طریقے سے پوجا بندگی کی اور اپنے ریت رواج پالنے کی پوری آزادی ہوگی دونوں سرکاریں اپنے اس وعدے پر پوری طرح عمل کریں گی اور کرائیں گی

(۲) ھندستان میں رہنے والے مسلمان اور پاکستان میں رہنے والے ھندو یا سکھ سب اپنے اپنے یہاں کی حکومتوں کے ہی وفادار ہونگے اور انھیں جو جو شکایتیں یا تکلیفیں ہونگی، اپنے اپنے یہاں کی سرکاروں سے ہی دور کراوینگے ۔

तरफ आग बढ़ती गई और जहाँ तक मालूम होता है अभी तक पूरी रह तबुझी नहीं. इस तरह की कई घटनायें भी सामने आई हैं जिन से पता चलता है कि दोनो तरफ के कुछ स्वार्थी पूंजी पतियों और जमीनों के मालिकों ने अपने निजी फायदे के लिये दोनों तरफ इस आग को खूब हवा दी.

दोनों बड़े वजीरों की मुलाकात

दोनो सरकारो का ध्यान इस तरफ गया. पंडित जवाहर लाल नेहरू की कोशिश से दोनों प्रधान मन्त्री दिल्ली में मिले. बंगाल की इस घटना ने और भी अच्छी तरह साबित कर दिया कि किसी संकट के समय इस मुल्क हिन्दुस्तान की नाव को — और हम यहाँ भारत और पाकिस्तान दोनो को मिला कर हिन्दुस्तान कह रहे हैं — पार लगाने की सब से अधिक ज़िम्मेदारी अगर किसी के कन्धो पर है और इस की सबसे जयादा क़ाबिलीयत अगर किसी मे है तो वह पंडित जवाहरलाल नेहरू मे है. मुल्क के अन्दर नासमझी और तग नजरी की यह हालत है कि बहुत से भाई पंडित जवाहरलाल और मिस्टर लियाक़त अली खाँ की इस मुलाकात के भी खिलाफ आवाजे उठाने लगे थे. जिम्मेदार आदमी भी बिना नतीजा सोचे जंग, फ़ौजकशी और आबादी के तबादले की बाते करने लगे थे. सन्' ४७ ई० की पंजाब की घटनाओ से सब से बड़ा सबक़ मे हकोई मिलता है तो वह यही है कि दोनो तरफ के जिन नेताओ ने मुल्क के बटवारे के बाद आबादी के तबादले का फैसला करके उस पर दस्तख़त किये उन्हों ने अनजाने इस देश की करोड़ो बेगुनाह जनता पर सब से बड़ी मुसीबत ढाई. इस मुल्क में आबादी

طرف آگ بڑھتی گئي اور جہاں تک معلوم ہوتا ہے ابھی تک پوری طرح بجھی نہیں اس طرح کی کئي گھٹنائیں بھی سامنے آئی ہیں جن سے پتہ چلتا ہے کہ دونوں طرف کے کچھ سوارتھی پونجی پتیوں اور زمینوں کے مالکوں نے اپنے نجی فائدے کے لئے دونوں طرف اِس آگ کو خوب ہوا دی .

دونوں بڑے وزیروں کی ملاقات

دونوں سرکاروں کا دھیان اِس طرف گیا . پنڈت جواہر لال نہرو کي کوشش سے دونوں پردھان منتري دلي میں ملے بنگال کي اس گھٹنا نے اور بھی اچھی طرح ثابت کردیا کہ کسی سنکٹ کے سمے اِس ملک ہندستان کي ناؤ کو —— اور ہم یہاں بھارت اور پاکستان دونوں کو ملاکر ہندستان کہ رہے ہیں —— پار لگانے کي سب سے ادھک ذمہداری اگر کسي کے کندھوں پر ہے اور اس کی سب سے زیادہ قابلیت اگر کسي میں ہے تو وہ پنڈت جواہر لال نہرو میں ہے . ملک کے اندر ناسمجھی اور تنگ نظری کي یہ حالت ہے کہ بہت سے بھائی پنڈت جواہر لال اور مسٹر لیاقت علي خاں کی اِس ملاقات کے بھی خلاف آوازیں اُٹھانے لگے تھے ذمہدار آدمی بھی بنا نتیجہ سوچے جنگ فوج کشي اور آبادي کے تبادلے کی باتیں کرنے لگے تھے سن ۴۷ع کی پنجاب کی گھٹناؤں سے سب سے بڑا سبق ہمیں کوئی ملتا ہے تو وہ یہی ہے کہ دونوں طرف کے جن نیتاؤں نے ملک کے بٹوارے کے بعد آبادي کے تبادلے کا فیصلہ کرکے اُس پر دستخط کئے اُنھوں نے انجانے اِس دیش کی کروڑوں بے گناہ جنتا پر سب سے بڑی مصیبت ڈھائی . اِس ملک میں آبادی

खुलना की खबरें कलकत्ता पहुंची. दुर्भाग्य से एक गरोह मुल्क मे ऐसा है जो किसी भी बहाने पाकिस्तान से लड़ने और डेढ़ करोड़ हिन्दुओं को उधर से निकाल लाने और साढ़े चार करोड़ मुसलमानों को इधर से निकाल देने मे मुल्क की भलाई समझता है. कलकत्ते मे भी खास कर डाक्टर खरे की तकरीर के बाद से कहा जाता है कि यह गरोह अपना काम कर रहा था. खुलना की खबरें हिन्दू मुस्लिम रंग दे कर और बढ़ा बढ़ा कर सारे हिन्दुस्तान मे फैलाई गईं. कुदरती तौर पर कलकत्ते मे दंगे शुरू होगये. कलकत्ता की खबरें पूरबी बंगाल पहुंचीं यह भी कहा जाता है कि इस बीच फैजाबाद (यू० पी०) से बाबरी मसजिद मे जबरदस्ती राम चन्द्र जी की मूर्ति रखे जाने की खबर ले कर कुछ लोग ढाका पहुचे इधर की खबरें उधर और उधर की खबरें इधर और वह भी खूब बढ़ा चढ़ा कर और एक तरफा! एक शैतानी चक्कर शुरू होगया यह आग यू० पी० सी० पी० और कुछ दूसरे प्रान्तो तक भी पहुंची.

पंडित जवाहर लाल का कलकत्ता जाना

पंडित जवाहर लाल नेहरू खुद कलकत्ता पहुंचे. १७ मार्च को उन्हों ने अपने बयान मे कहा कि उस दिन तक इन दंगो के कारन लग भग डेढ़ लाख हिन्दू पूरबी बंगाल से पच्छिमी बंगाल और लग भग एक लाख मुसलमान पच्छिमी बंगाल से पूरबी बंगाल जा चुके थे. यू० पी० से जो लोग पच्छिमी पाकिस्तान गये वह अलग. दोनो तरफ के अखबारो ने अपने यहाँ की खबरो को दबाया और दूसरी तरफ की खबरो को बढा चढ़ा कर फैलाना शुरू किया. दोनो

کھلنا کی خبریں کلکتہ پہونچیں ۔ دربھاگیہ سے ایک گروہ ملک میں ایسا ہے جو کسی بھی بہانے پاکستان سے لڑنے اور ڈیڑھ کروڑ ہندوؤں کو اُدھر سے نکال لانے اور ساڑھے چار کروڑ مسلمانوں کو اِدھر سے نکال دینے میں ملک کی بھلائی سمجھتا ہے ۔ کلکتہ میں بھی خاص کر ڈاکٹر کھرے کی تقریر کے بعد سے کہا جاتا ہے کہ یہ گروہ اپنا کام کر رہا تھا ۔ کھلنا کی خبریں ہندو مسلم رنگ دے کر اور بڑھا بڑھا کر سارے ہندستان میں پھیلائی گئیں ۔ قدرتی طور پر کلکتہ میں دنگے شروع ہو گئے ۔ کلکتہ کی خبریں پوربی بنگال پہونچیں یہ بھی کہا جاتا ہے کہ اس بیچ فیض آباد (یو پی) سے بابری مسجد میں زبردستی رام چندر جی کی مورتی رکھے جانے کی خبر لے کر کچھ لوگ ڈھاکہ پہونچے اِدھر کی خبریں اُدھر اور اُدھر کی خبریں اِدھر اور وہ بھی خوب بڑھا چڑھا کر اور ایکطرفہ ! ایک شیطانی چکر شروع ہوگیا یہ آگ یو پی سی پی اور کچھ دوسرے پرانتوں تک بھی پہونچی

پنڈت جواہر لال کا کلکتہ جانا

پنڈت جواہر لال نہرو خود کلکتہ پہونچے ۱۷ مارچ کو اُنھوں نے اپنے بیان میں کہا کہ اُس دن تک ان دنگوں کے کارن لگ بھگ ڈیڑھ لاکھ ہندو پوربی بنگال سے پچھمی بنگال اور لگ بھگ ایک لاکھ مسلمان پچھمی بنگال سے پوربی بنگال جاچکے تھے ۔ یوپی سے جو لوگ پچھمی پاکستان گئے وہ الگ دونوں طرف کے اخباروں نے اپنے یہاں کی خبروں کو دبایا اور دوسری طرف کی خبروں کو بڑھا چڑھا کر پھیلانا شروع کیا دونوں

"बंगाल की इन घटनाओं का असल रूप उस कमीशन की तहक़ीक़ात के बाद ही मालूम होगा जो दोनो सरकारों के राज़ी नामे के अनुसार बनेगा. इस बीच इन घटनाओं का जो रूप हमारे सामने आया है वह हम थोड़े से मे नीचे देते है.

बंगाल के फ़साद की असलियत

जिसे कम्युनिस्ट खतरा कहा जाता है वह जगह जगह बढ़ रहा है. आसाम और बंगाल की सरहद बरमा से मिलती है. दोनो में कहा जाता है बड़े बड़े कम्युनिस्ट अड्डे है. पाकिस्तान और भारत दोनो की सरकारें कम्युनिस्टों को दबाने मे लगी है. पूरबी बंगाल में खुलना कलकत्ता से मुशकिल से करीब पचास साठ मील की दूरी पर है खुलना मे भी कम्युनिस्टो का ज़ोर था. २० दिसम्बर को या उस के आस पास पाकिस्तान की पुलिस कुछ कम्युनिस्टो को गिरफ़्तार करने खुलना गई. हथियार बन्द कम्युनिस्टो से पुलिस की मुटभेड़ हुई जिस मे कम से कम एक पुलिस वाला मारा गया और कुछ ज़ख्मी हुए. कम्युनिस्ट हाथ आ न सके. दोबारा और अधिक पुलिस और कुछ अन्सार जो शायद पाकिस्तानी "स्वयंसेवक" कहे जाते है, खुलना पहुंचे. कई मकानो की तलाशी ली गई. कम्युनिस्ट शायद फिर भी हाथ आ न सके. पुलिस और अन्सार ने भीड़ पर गोलियाँ चलाई. कहा जाता है लग भग तीस घायल हुए और मरा या तो कोई नहीं और या शायद दो चार. हो सकता है खुलना के वह कम्युनिस्ट सब या अधिक तर हिन्दू रहे हो. जो भी हो, उस मामले का हिन्दू मुस्लिम झगड़े से कोई सम्बन्ध नही था. वह मामला था पाकिस्तानी सरकार और कम्युनिस्टो के बीच का

بنگال کی ان گھٹناؤں کا اصل روپ اس کمیشن کی تحقیقات کے بعد ہی معلوم ہوگا جو دونوں سرکاروں کے راضی نامہ کے انوسار بنے گا۔ اس بیچ ان گھٹناؤں کا جو روپ ہمارے سامنے آیا ہے وہ ہم تھوڑے سے میں نیچے دیتے ہیں

بنگال کے فساد کی اصلیت

جسے کمیونسٹ خطرہ کہا جاتا ہے وہ جگہ جگہ بڑھ رہا ہے آسام اور بنگال کی سرحد برما سے ملتی ہے۔ دونوں میں کہا جاتا ہے بڑے بڑے کمیونسٹ اڈے ہیں پاکستان اور بھارت دونوں کی سرکاریں کمیونسٹوں کو دبانے میں لگی ہیں۔ پوربی بنگال میں کھلنا کلکتہ سے مشکل سے قریب پچاس ساٹھ میل کی دوری پر ہے۔ کھلنا میں بھی کمیونسٹوں کا زور تھا۔ ۲۰ دسمبر کو یا اس کے آس پاس پاکستان کی پولیس کچھ کمیونسٹوں کو گرفتار کرنے کھلنا گئی۔ ہتھیار بند کمیونسٹوں سے پولیس کی مٹ بھیڑ ہوئی جس میں کم سے کم ایک پولیس والا مارا گیا اور کچھ زخمی ہوئے۔ کمیونسٹ ہاتھ نہ آسکے۔ دوبارہ اور ادھک پولیس اور کچھ انصار، جو شاید پاکستانی "سویم سیوک" کہے جاتے ہیں، کھلنا پہونچے۔ کئی مکانوں کی تلاشی لی گئی۔ کمیونسٹ شاید پھر بھی ہاتھ نہ آسکے پولیس اور انصار نے بھیڑ پر گولیاں چلائیں کہا جاتا ہے لگ بھگ تیس گھائل ہوئے اور مرا یا تو کوئی نہیں، اور یا شاید دوچار۔ ہوسکتا ہے کھلنا کے وہ کمیونسٹ سب یا ادھک تر ہندو رہے ہوں جو بھی ہو اس معاملے کا ہندو مسلم جھگڑے سے کوئی سمبندھ نہیں تھا۔ وہ معاملہ تھا پاکستانی سرکار اور کمیونسٹوں کے بیچ کا

सब से बाजी ले गया. हमारे मुल्क के राज काजी लोग, पार्टियाँ और अखबार भी इस हवा से बच न सकते थे.

बंगाल के इस मामले मे दूर हैदराबाद (दकिन) मे बैठे हुए फ़रवरी महीने तक हम ने जो खबरें सुनी उन से हम यह न समझ पाये कि आखिर बैठे बिठाये इतने दिनों की थोडी बहुत शान्ति के बाद पाकिस्तान को क्या सूझा कि उस ने पूरबी बंगाल के हिन्दुओं पर एकाएक इस तरह सितम ढाने शुरू कर दिये. हमे मालूम था कि दोनो बंगालों को फिर से एक करने का आन्दोलन कुछ दिनो से चल रहा है. हमे शक होने लगा कि कहीं इस तहरीक से डर कर इसे नाकाम करने के लिये ही तो पाकिस्तान की सरकार ने यह सब नहीं किया जिस से नफ़रते बनी रहें दो अलग अलग कौमो का विचार और पक्का होजाय और फिर अगर आग ज्यादा भडके तो अमरीका और यू० एन० ओ० की मदद से हिन्दुस्तान से आये हुए करोडो मुसलमानो के लिये नया इलाका माँगा जा सके। यहाँ तक कि हमें पूरबी बंगाल के इन अत्याचारो के पीछे बाहर के मुल्को की साजिश का शक होने लगा.

दिल्ली आकर हमने ऐसे लोगों से बाते की जो बंगाल की हालत अपनी आँखो देख आये थे दूसरे जिम्मेदार जानकारो से भी हम ने असलियत जानने की कोशिश की हमारा वहम टूटा. हमने देखा और हमे यह देख कर दुख हुआ कि एक तरफ़ा और बढ़ा चढ़ा कर फैलाई हुई खबरों से सारे मुल्क के अन्दर साधे और सच्चे लोगों के दिलो मे जहर भर दिया गया और कई लाख बेगुनाहों की जिन्दगी बरबाद करदी गई

سب سے بازی لے گیا ہمارے ملک کے راج کاجی لوگ پارٹیاں اور اخبار بھی اس ہوا سے بچ نہ سکتے تھے ۔

بنگال کے اس معاملے میں دور حیدرآباد (دکن میں بیٹھے ہوئے فروری مہینے تک ہم نے جو خبریں سنیں ان سے ہم یہ نہ سمجھ پائے کہ آخر بیٹھے بٹھائے اتنے دنوں کی تھوڑی بہت شانتی کے بعد پاکستان کو کیا سوجھا کہ اس نے پوربی بنگال کے ہندوؤں پر ایکایک اس طرح ستم ڈھانے شروع کر دیئے ہمیں معلوم تھا کہ دونوں بنگالوں کو پھر سے ایک کرنے کا آندولن کچھ دنوں سے چل رہا ہے ہمیں شک ہونے لگا کہ کہیں اس تحریک سے ڈر کر اسے ناکام کرنے کے لئے ہی تو پاکستان کی سرکار نے یہ سب نہیں کیا جس سے نفرتیں بنی رہیں دو الگ الگ قوموں کا چار اور پکا ہوجائے اور پھر اگر آگ زیادہ بھڑکے تو امریکہ اور یو ان . او . کی مدد سے ہندستان سے آئے ہوئے کروڑوں مسلمانوں کے لئے نیا علاقہ مانگا جاسکے ! یہاں تک کہ ہمیں پوربی بنگال کے ان نیا چاروں کے پیچھے باہر کے ملکوں کی سازش کا شک ہونے لگا

دلی آکر ہم نے ایسے لوگوں سے باتیں کیں جو بنگال کی حالت اپنی آنکھوں دیکھ آئے تھے دوسرے ذمہ دار جانکاروں سے بھی ہم نے اصلیت جاننے کی کوشش کی ہمارا وہم ٹوٹا ہم نے دیکھا اور ہمیں یہ دیکھکر دکھ ہوا کہ ایک طرفہ اور بڑھا چڑھا کر پھیلائی ہوئی خبروں سے سارے ملک کے اندر سیدھے اور سچے لوگوں کے دلوں میں زہر بھر دیا گیا اور کئی لاکھ بے گناہوں کی زندگی برباد کردی گئی ۔

हमारी राय — ہماری رائے

बंगाल और उससे सबक़

दिल्ली मे पंडित जवाहर लाल नेहरू और मिस्टर लियाक़त अली खाँ की बात चीत हो चुकी. सात दिन की बात चीत का नतीजा एक मुबारक राज़ी नामा के रूप मे देश के सामने आ चुका. उस राज़ी नामा के ख़ास ख़ास पहलुओं की तरफ़ पाठकों का ध्यान दिलाने से पहले हम इस समय बंगाल की घटनाओं पर एक सरसरी निगाह डालना चाहते है

आज कल की दुनिया के छोटे बड़े राज काजी लोग कहीं भी बहुत सच बोलने के लिये बदनाम नही है. पिछली दोनो जंगों मे जितने बड़े बड़े मुल्कों ने हिस्सा लिया था उन सब मे अपने बैरी मुल्कों के ख़िलाफ़ नित नये झूट गढ़ने के लिये बाज़ाब्ता बड़े बड़े मुहकमे खोले गये थे जहाँ से आये दिन बड़ी बड़ी "ख़बरे" दुनिया में फैलाई जाती थी. इन ख़बरों के गढ़ने मे हर मुल्क दूसरे से बाज़ी ले जाने की कोशिश करता था. मिसालें देने की ज़रूरत नहीं है. यह बात मानी हुई है कि इस काम मे अमरीका

بنگال اور اس سے سبق

دلی میں پنڈت جواہر لال نہرو اور مسٹر لیاقت علی خاں کی بات چیت ہوچکی سات دن کی بات چیت کا نتیجہ ایک مبارک راضی نامہ کے روپ میں دیش کے سامنے آچکا اس راضی نامہ کے خاص خاص پہلوؤں کی طرف پاٹھکوں کا دھیان دلانے سے پہلے ہم اس سمے بنگال کی گھٹناؤں پر ایک سرسری نگاہ ڈالنا چاہتے ہیں.

آج کل کی دنیا کے چھوٹے بڑے راج کاجی لوگ کہیں بھی بہت سچ بولنے کے لئے بدنام نہیں ہیں پچھلی دونوں جنگوں میں جتنے بڑے بڑے ملکوں نے حصہ لیا تھا اُن سب میں اپنے بیری ملکوں کے خلاف نت نئے جھوٹ گھڑنے کے لئے باضابطہ بڑے بڑے محکمے کھولے گئے تھے جہاں سے آئے دن بڑی بڑی "خبریں" دنیا میں پھیلائی جاتی تھیں ان خبروں کے گھڑنے میں ہر ملک دوسرے سے بازی لے جانے کی کوشش کرتا تھا. مثالیں دینے کی ضرورت نہیں ہے یہ بات مانی ہوئی ہے کہ اس کام میں امریکہ

गया. मोहन अकेला बैठे बैठे पास की किताबे उलटने लगा. उसने एक किताब जिसका नाम "गीता और कुरान" था उठाई और पढ़ना चाहा उसने जब पन्ने उलटे तब उसे वही मनी आर्डर को रसीद नजर पड़ी जो बलोर से लौट आई थी मोहन जान गया कि यह रुपये रहमान ही ने उसे भेजे थे उस ने रहमान से पूछा भी कि यह रसीद कहाँ से मिली पर रहमान ने जवाब देने के बजाय रसीद उससे लेकर फाड़ दी फिर भी मोहन असल बात समझ गया. वह मनी आर्डर रहमान ने ही भेजा था.

प्रेम भाई

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक बयान किया है आखिर में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है क़ीमत चार आने

मैनजर 'नया हिन्द' ४८ बाई का बाग, इलाहाबाद

گیا موہن اکیلا بیٹھے بیٹھے پاس کی کتابیں اُلٹنے لگا اُس نے ایک کتاب جس کا نام " گیتا اور قرآن " تھا اُٹھائی اور پڑھنا چاہا . اس نے جب پنے اُلٹے تب اسے وہی منی آرڈر کی رسید نظر پڑی جو بنگلور سے لوٹ آئی تھی موہن جان گیا کہ یہ روپئے رحمان ہی نے اُسے بھیجے تھے . اُس نے رحمان سے پوچھا بھی کہ یہ رسید کہاں سے ملی پر رحمان نے جواب دینے کے بجائے رسید اُس سے لے کر پھاڑ دی پھر بھی موہن اصل بات سمجھ گیا وہ منی آرڈر رحمان نے ہی بھیجا تھا

پریم بھائی

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک' پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے مہاتما گاندھی کی صلاح سے' اکتوبر سن ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورا کیا تھا اِس چھوٹے سے بیان میں انہوں نے وہاں کی بھیانکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں اُن کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے آخیر میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کیلئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اِس بیان سے بڑی مدد ملے گی

کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے . قیمت چار آنے .

منیجر - نیا ہند' ۴۸ بائی کا باغ الہ آباد

उसको बडा अचम्भा हुआ कि आज ही इस का मनी-आर्डर बंगलोर से आया और अब वह यहां कैसे? उसने आवाज़ दी "मुजीब, ओ मुजीब."

मुजीब आवाज़ सुनकर रुक गया और कहने लगा—'भई खूब! यार, तुम्हारे ही पास आ रहा था कि तुम मिल गये. मैंने उस दिन मदरसा में तुमसे पाँच रुपये लिये थे और दूसरे ही दिन एलहाबाद गया था. कल ही आया हूँ. यह लो अपने रुपये।' मुजीब ने पांच रुपये उसके हाथ में थमा दिये और यह कहकर चलता हुआ कि फिर फुरसत में बात चीत होगी. अब मैं काम से जा रहा हूँ"

मोहन सोच में पड़ गया! गहरी सोच में. मुजीब के नाम से मनी-आर्डर किसने किया होगा? गरज़ कुछ भी हो पर रुपये मिलने से मोहन ने अपने बाप का इलाज किया और वह कुछ दिनों बाद ठीक होगया.



इन बड़े मियां को पहचानो तो—इन्हें घुमा फिरा करके देखो तो इनकी दाढ़ी में मोर दिखाई देगा

एक दिन उसकी भेंट रहमान से हुई. रहमान बातों बातों में उसे अपने घर लेगया. दोनों बैठे इधर उधर की बातें करने लगे. घर से किसी ने रहमान को पुकारा "रहमान!" रहमान अन्दर चला

اس کو بڑا اچنبھا ہوا کہ آج ہی اس کا منی آڈر بنگلور سے آیا اور اب وہ یہاں کیسے؟ اس نے آواز دی " مجیب او مجیب "

مجیب آواز سن کر رک گیا اور کہنے لگا — " بھئی خوب! یار! تمہارے ہی پاس آرہا تھا کہ تم مل گئے میں نے اس دن مدرسہ میں تم سے پانچ روپئے لئے تھے اور دوسرے ہی دن الہ آباد گیا تھا کل ہی آیا ہوں یہ لو اپنے روپئے " مجیب نے پانچ روپئے اسکے ہاتھ میں تھما دئے اور یہ کہکر چلتا ہوا کہ " پھر فرصت میں بات چیت ہوگی اب میں کام سے جارہا ہوں .

موہن سوچ میں پڑگیا ہے . گہری سوچ میں کہ مجیب کے نام سے منی آرڈر کس نے کیا ہوگا؟ غرض، جسے پر روپئے ملنے سے موہن نے اپنے باپ کا علاج کرایا اور وہ کچھ دنوں بعد ٹھیک ہوگیا .

ان بڑے میاں کو پہچانو تو انہیں گھما پھرا کرکے دیکھو تو ان کی داڑھی میں مور دکھائی دیگا .

ایک دن اس کی بھینٹ رحمان سے ہوئی. رحمان باتوں باتوں میں اُسے اپنے گھر لے گیا دونوں بیٹھے ادھر اُدھر کی باتیں کرنے لگے . گھر سے کسی نے رحمان کو پکارا "رحمان!" رحمان اندر چلا

"नही भाई ! देखो तो तुम्हारा पूरा पता साफ साफ लिखा है, भला ऐसी भी कही भूल चूक होती है और वह भी रुपयो के मामले में." यह कहते हुए डाकिये ने मनी आर्डर फार्म मोहन के हाथो मे थमा दिया.

मोहन ने कूपन पढा. लिखा था —

"भाई मोहन !

क्या तुम्हे याद है कि मैं ने मदरसा मे तुमसे फीस भूल आने की वजह से पॉच रुपये लिये थे जब मैं घर आया तो मालूम हुआ कि आज सब भैया की शादी मे बलौर जाने वाले है. माफ करना गड बड मे तुम्हे वादे पर रुपया न दे सका अब भेज रहा हूं कबूल करो

तुम्हारा साथी

मुजीब

मोहन ने भगवान को धन्यवाद दिया कि इस आडे वक्त मे उसे रुपये मिल गये. वह खुश था. खुशी मे उनका माथा दमक रहा था. वह दौड़ा दौड़ा अपने बाप के पास पहुचा और कूपन व रुपये दिखाये. बाप ने कहा—'बेटा ! याद रखो कोई भलाई बेकार नही जाती. तुमने मुजीब के आडे वक्त मे काम दिया आज वह तुम्हारे इस कठिन समय काम आया."

मोहन भागा भागा दवा लाने चला वह भूक से निढाल हो रहा था. उसने सुबह से कुछ खाया पिया न था अब उसे न तो खाने की ही सुध रही और न भूक की परवा बस वह भागा जा रहा था. रास्ता चलते उसने देखा कि मुजीब भी तेज तेज कहीं जा रहा है

" نہیں بھائی ! دیکھو تو تمہارا پورا پتہ صاف صاف لکھا ھے' بھلا ایسی بھی کہیں بھول چوک ھوتی ھے اور وہ بھی روپیوں کے معاملہ میں یہ کہتے ہوئے ڈاکیے نے منی آرڈر فارم موھن کے ھاتھوں میں تھما دیا

موھن نے کوپن پڑھا لکھا تھا —

بھائی موھن !

کیا تمہیں یاد ھے کہ میں نے مدرسہ میں تم سے فیس بھول انے کی وجہ سے پانچ روپئے لئے تھے جب میں گھر آیا تو معلوم ھوا کہ آج سب بھیا کی شادی میں بنگلور جانے والے ھیں معاف کرنا گڑ بڑ میں تمہیں وعدہ پر روپیہ نہ دے سکا' اب بھیج رہا ھوں قبول کرو

تمہارا ساتھی

مجیب

موھن نے بھگوان کو دھنیہ واد دیا کہ اس آڑے وقت میں اسے روپئے مل گئے . وہ خوش تھا' خوشی سے اس کا ماتھا دمک رہا تھا . وہ دوڑا دوڑا اپنے باپ کے پاس پہونچا اور کوپن و روپئے دکھائے باپ نے کہا — " بیٹا یاد رکھو کوئی بھلائی بیکار نہیں جاتی تم نے مجیب کے آڑے وقت میں کام دیا آج وہ تمہارے اس کٹھن سمے کام آیا."

موھن بھاگا بھاگا دوا لانے چلا وہ بھوک سے نڈھال ھو رہا تھا . اس نے صبح سے کچھ کھایا پیا نہ تھا اب اسے نہ تو کھانے کی ھی سدھ رھی اور نہ بھوک کی پروا بس وہ بھاگا جارھا تھا راستہ چلتے اس نے دیکھا کہ مجیب بھی تیز تیز کہیں جا رہا ھے .

१२

डाक्टर के पास गया. गॉव मे कोई ख़ैराती दवाख़ाना न था जहॉ उसे मुफ़्त दवा मिलती. डाकृर ने मोहन से कहा—"पांच रुपये दवा की क़ीमत होगी दो तो दवा दी जाय और इलाज हो." डाकृर की इन बातो से नन्हे मोहन का दिल भर आया और वह पॉच रुपये का बन्दोबस्त करने की बात सोचते हुए घर की ओर चल पड़ा. सोचते सोचते उसे यह बात याद आई कि जब वह मदरसा मे पढ़ता था तब उसका एक दोस्त मुजीब फ़ीस लाना भूल गय था और वह फीस के देने का आख़िरी दिन था. उसी दिन मोहन के बाप को मजदूरी मिली थी. किसी काम के लिये उस के बाप ने उसे पॉच रुपये दिये थे जो उसके पास थे. उसने जब यह देखा कि मुजीब फीस लाना भूल गया है तो इस वादे पर उसने उसे पॉच रुपये दिये कि दूसरे दिन वह उसे लौटा देगा. मगर दूसरे दिन ही से मोहन का मदरसा बन्द हो गया.

वह यही सोच रहा था कि आज वह पॉच रुपये होते तो बाप की दवा का बन्दोबस्त करता. इतने में लाल पगड़ी बॉंधे डाकिया उसके पास आया और पूछने लगा—"क्या आप मोहन को जानते हैं ?"

मोहन ने कहा—"हॉ कहो, क्या कहना है. मैं ही मोहन हूं." डाकिये ने कहा—"आप के नाम एक मनीआर्डर आया है !" यह सुनकर मोहन हैरान हो गया कि किसने उसे रुपए भेजे होगे. उसने कहा—"मालूम होता है तुमसे भूल हुई है. मेरा कोई नही जो मनीआर्डर कर सके."

ڈاکٹر کے پاس گیا گاؤں میں کوئی خیراتی دواخانہ نہ تھا جہاں اُسے مفت دوا ملتی . ڈاکٹر نے موهن سے کہا—" پانچ روپیہ دوا کی قیمت هوگی دو تو دوا دی جائے اور علاج هو " ڈاکٹر کی ان باتوں سے ننھے موهن کا دل بھر آیا اور وہ پانچ روپئے کا بندوبست کرنےکی بات سوچتے هوئے گھرکی اُور چل پڑا. سوچتے سوچتے اُسے یہ بات یاد آئی کہ جب وہ مدرسہ میں پڑھتا تھا تب اس کا ایک درست مجیب فیس لانا بھول گیا تھا اور وہ فیس کے دینے کا آخری دن تھا. اُسی دن موهن کے باپ کو مزدوری ملی تھی کسی کام کے لئے اُس کے باپ نے اسے پانچ روپئے دئے تھے جو اس کے پاس تھے اس نے جب یہ دیکھا کہ مجیب فیس لانا بھول گیا ھے تو اس وعدہ پر اس نے اسے پانچ روپئے دیئے کہ دوسرے دن وہ اسے لوٹا دے گا مگر دوسرے دن ھی سے موهن کا مدرسہ بند هوگیا .

وہ یہی سوچ رہا تھا کہ آج پانچ روپئے هوتے تو باپ کی دوا کا بندوبست کرتا . اتنے میں لال پگڑی باندھے ڈاکیا اس کے پاس آیا اور پوچھنے لگا — " کیا آپ موهن کو جانتے هیں ؟ "

موهن نے کہا—" هاں کہو کیا کہنا هے میں هي موهن هوں." ڈاکیے نے کہا—"آپ کے نام ایک منی آرڈر آیا ھے !" یہ سن کر موهن حیران هوگیا کہ کس نے اسے روپئے بھیجے هونگے . اس نے کہا — " معلوم هوتا ھے تم سے بھول هوئی ھے . میرا کوئی نہیں جو منی آڈر کرسکے "

प्रेम और सेवा

मोहन एक ग़रीब लड़का था. वह बहादुर और धर्म का पक्का था हर व.त सच कहने मे उसे शान्ति मिलती थी उसे दुखियो की सेवा जान से भी प्यारी थी वह अपने माता पिता की आंखो का तारा था. उसके पिता गाँव में मेहनत मजदूरी करते थे. जो कुछ भी कमाई होती उससे अपनी गुज़र बसर करते. मोहन उसी गाँव मे पढ़ता था. आख़िर उसने सातवी का इम्तहान पास कर लिया. अब आगे पढ़ने के लिये उसे किसी बड़े गॉव को जाना था. वह चाहता तो था कि और पढ़े पर ग़रीबी और थोडी कमाई पेट को ही बराबर न होती थी. इसलिये वह आगे न पढ़ सका. अब वह भी मेहनत मज़दूरी करने लगा और अपने बाप का हाथ बटाने लगा. उस के घर के पास ही उसका दोस्त रहमान रहता था जो खाते पीते घराने का था. पर उसका बाप बड़ा कंजूस था. उसके साथ "चमडी जाय दमड़ी न जाय" का मामला था. यह बाप का हाल था. इधर रहमान की यह आदत थी कि उसे किसी की सेवा किये बिना सुख न मिलता. वह चाहता कि अपने पड़ोसी ग़रीब मोहन की मदद करे, पर मोहन हमेशा इन्कार करता और कहता कि "जब तक इन हाथो मे ताक़त है क्यो किसी के आगे हाथ फैलाऊँ. ऐसा करना धर्म मे बहुत बडा पाप बताया गया है."

एक वक़्त आया कि मोहन का बाप बीमार पड गया और घर में सब दाने दाने को तरसने लगे. मोहन था तो नन्हा मुन्ना, पर जितना होता काम करने से पीछे न हटता. वह दवा के लिये गाँव के

پریم اور سیوا

موہن ایک غریب لڑکا تھا . وہ بہادر اور دھرم کا پکا تھا . ہر بات سچ کہنے میں اُسے شانتی ملتی تھی . اُسے دکھیوں کی سیوا جان سے بھی پیاری تھی . وہ اپنے ماتا پتا کی آنکھوں کا تارا تھا . اُس کے پتا گاؤں میں محنت مزدوری کرتے تھے . جو کچھ بھی کمائی ہوتی اس سے اپنی گذر بسر کرتے . موہن اُسی گاؤں میں پڑھتا تھا. آخر اس نے ساتویں کا امتحان پاس کرلیا اب آگے پڑھنے کیلئے اُسے کسی بڑے گاؤں کو جانا تھا. وہ چاہتا تو تھا کہ اور پڑھے پر غریبی اور تھوڑی کمائی پیٹ کو ہی برابر نہ ہوتی تھی . اس لئے وہ آگے نہ پڑھ سکا . اب وہ بھی محنت مزدوری کرنے لگا اور اپنے باپ کا ہاتھ بٹانے لگا . اُس کے گھر کے پاس ہی اُس کا دوست رحمان رہتا تھا جو کھاتے پیتے گھرانے کا تھا پر اس کا باپ بڑا کنجوس تھا . اس کے ساتھ " چمڑی جائے دمڑی نہ جائے " کا معاملہ تھا . یہ باپ کا حال تھا. ادھر رحمان کی یہ عادت تھی کہ اُسے کسی کی سیوا کئے بنا سکھ نہ ملتا وہ چاہتا کہ اپنے پڑوسی غریب موہن کی مدد کرے' پر موہن ہمیشہ انکار کرتا اور کہتا کہ " جب تک ان ہاتھوں میں طاقت ہے کیوں کسی کے آگے ہاتھ پھیلاؤں . ایسا کرنا دھرم میں بہت بڑا پاپ بتایا گیا ہے . "

ایک وقت آیا کہ موہن کا باپ بیمار پڑگیا اور گھر میں سب دانے دانے کو ترسنے لگے موہن تھا تو ننھا منا' پر جتنا ہوتا کام کرنے سے پیچھے نہ ہٹتا . وہ دوا کے لئے گاؤں کے

बालकों के नाम ...

आगे ही बढ़ते जाना पीछे कभी न हटना
भारत के काम आना सेवा सभी की करना
भारत के चाँद तारो
भारत के चाँद तारो

लड़ना न तुम झगड़ना मिलजुल के सब से रहना
आंसू न तुम बहाना हर वक्त हँसते रहना
भारत के चँद तारो
भारत के चँद तारो

नेकी के काम करना नेकी के काम आना
धरती में नाम करना जाने तुम्हे ज़माना
भारत के चाँद तार
भारत के चाँद तारो ..

बापू की बात सुन लो हाँ सुन लो याद रखलो
मिल जुल के हँस लो खेलो हँस हँस के मोती रोलो
भारत के चाँद तारो
भारत के चाँद तारो

विक़ार ख़लील शाहपुरी

بالکوں کے نام ...

آگے ہی بڑھتے جانا پیچھے کبھی نہ ہٹنا
بھارت کام کے آنا سوا سبھی کی کرنا
بھارت کے چاند تارو
بھارت کے چاند تارو

لڑنا نہ تم جھگڑنا مل جل کے سب سے رہنا
آنسو نہ تم بہانا ہر وقت ہنستے رہنا
بھارت کے چاند تارو
بھارت کے چاند تارو

نیکی کے کام کرنا نیکی کے کام آنا
دھرتی میں نام کرنا جانے تمہیں زمانہ
بھارت کے چاند تارو
بھارت کے چاند تارو

باپو کی بات سن لو ہاں سن لو یاد رکھ لو
مل جل کے ہنس لو کھیلو ہنس ہنس کے موتی رولو
بھارت کے چاند تارو
بھارت کے چاند تارو

وقار خلیل شاہ پوری

याद रखो भूल न जाना यह. खिलौना बड़ी ही मुसीबतो के बाद हमें मिला है और हॉ. इसके लिये हमारे बापू जी ने जो कुछ किया उसे भुलाया नही जा सकता. अब हमे भारत और धरती के कोने कोने मे बापू जी के उन अनमोल रत्नो को फैलाना है जिनके लिये उन्हो-ने अपना जीवन भेट किया. बापू मर कर भी अमर है.

आओ ! इस बात का संकल्प करें कि भारत मे लडाई झगड़ा न हो पाये. और बड़े छोटे, ग़रीब अमीर का फरक़ न रह पाये. इस बात की कोशिश करे कि भारत भर मे प्रेम और मोहब्बत की गंगा अपनी बाढ़ से गाव गाव मे प्रेम का गरजदार सुरो मे चर्चा करे.

आओ ! एक बार हम फिर भारत मे बापू के सन्देश "प्रेम व शान्ति" के चर्चा का बीडा उठाये हर काम मे मुसीबतें अपने भयानक मुह खोले काम करनेवाले को निराश करने की कोशिश मे है पर इन मुसीबतो के कारन हिम्मत न हारना और डटकर अपना काम किये जाना.

अपने प्रेम भाई को इस पते पर लेख, कविता और कहानी भेजो. मगर सुन रखो लेख सरल भाषा मे साफ़ हो. इस के साथ साथ एक लाइन छोडकर कागज़ के एक ही तरफ लिखे जायें

प्रेम भाई — एडीटर ' बच्चो की दुनिया ' (नया हिन्द)

नं. १४५६ "मीना" मुगल पुरा, हैदराबाद (दकन)

یاد رکھو بھول نہ جانا . یہ کھلونا بڑی ہی مصیبتوں کے بعد ہمیں ملا ہے اور ہاں' اس کے لئے ہمارے باپو جی نے جو کچھ کیا اُسے بھلایا نہیں جاسکتا . اب ہمیں بھارت اور دھرتی کے کونے کونے میں باپو جی کے اُن اَن مول رتنوں کو پھیلانا ہے جن کے لئے اُنہوں نے اپنا جیون بھینٹ کیا . باپو مرکر بھی امر ہیں .

آؤ ! اس بات کا سنکلپ کریں کہ بھارت میں لڑائی جھگڑا نہ ہو پائے . اور بڑے چھوٹے' غریب امیر' کا فرق نہ رہ پائے . اس بات کی کوشش کریں کہ بھارت بھر میں پریم اور محبت کی گنگا اپنی باڑھ سے گاؤں گاؤں میں پریم کا گرجدار سروں میں چرچا کرے .

آؤ ! ایک بار ہم پھر بھارت میں باپو کے سندیش '' پریم و شانتی '' کے چرچا کا بیڑا اٹھائیں . ہر کام میں مصیبتیں اپنے بھیانک منہ کھولے کام کرنے والے کو نراش کرنے کی کوشش میں ہیں پر ان مصیبتوں کے کارن ہمت نہ ہارنا اور ڈٹ کر اپنا کام کئے جانا .

اپنے پریم بھائی کو اِس پتہ پر لیکھ' کویتا اور کہانی بھیجو مگر سن رکھو لیکھ سرل بھاشا میں صاف ہوں. اس کے ساتھ ساتھ ایک لائن چھوڑکر کاغذ کے ایک ہی طرف لکھے جائیں

پریم بھائی — اڈیٹر '' بچوں کی دنیا ' (نیا هند)

نمبر ۱۴۵۶ – '' مینا '' مغل پورہ' حیدرآباد دکن .)

बच्चों की दुनिया



बालक संसार

एडीटर

प्रेम भाई

प्यारे बच्चो !

तुम्हे यह जानकर ख़ुशी होगी कि "नया हिन्द" मे तुम्हारे लिए हर महीने "बच्चो को दुनिया" के नाम से अच्छी अच्छी और प्यारी प्यारी बाते बतलाने की कोशिश की जायगी जिसमे तुम ऐसी ऐसी चीज़े पाओगे जिनसे बड़े बन सकोगे.

एक बात सुनो, यह तो तुम जानते ही हो कि अब हमारे भारत पर दूसरो का राज नही रहा बल्कि अब हमारा देश बिलकुल आज़ाद है. तुम आज़ाद भारत के बढ़ने वाले बालक हो. तुमको कुछ बातो पर ध्यान देना और उन्हे पूरा करना ऐसा ही जरूरी है जैसा कि अगर तुम्हे कोई खिलौना दिलाया जाय तो तुम ख़ुश ख़ुश उसे ले तो लोगे पर अपने पिता से डांट की आवाज़ में यह भी कहते सुनोगे कि "इसको ख़राब न करना और संभाल के रखना."

بچوں کی دنیا

بالک سنسار

اڈیٹر

پریم بھائی

پیارے بچو !

تمہیں یہ جان کر خوشی ہوگی کہ " نیا ہند " میں تمہارے لئے ہر مہینے " بچوں کی دنیا" کے نام سے اچھی اچھی اور پیاری پیاری باتیں بتلانے کی کوشش کی جائیگی جس میں تم ایسی ایسی چیزیں پاؤگے جن سے بڑے بن سکوگے ۔

ایک بات سنو' یہ تو تم جانتے ہی ہو کہ اب ہمارے بھارت پر دوسروں کا راج نہیں رہا بلکہ اب ہمارا دیش بالکل آزاد ہے ۔ تم آزاد بھارت کے بڑھنے والے بالک ہو تم کو کچھ باتوں پر دھیان دینا اور انہیں پورا کرنا ایسا ہی ضروری ہے جیسا کہ اگر تمہیں کوئی کھلونا دلایا جائے تو تم خوش خوش اسے لے تو لوگے پر اپنے پتا سے ڈانٹ کی آواز میں یہ بھی کہتے سنوگے کہ " اس کو خراب نہ کرنا اور سنبھال کے رکھنا ۔ "

शरीअतों (पूजा बंदगी के तरीक़ो) की सचाई—ग़ैर मुस्लिम नेकों की नेकी को मानना वग़ैरह—इन सब बातो पर ज़्यादातर क़ुरान की आयतें और कही कहीं हदीसो के हवाले भी दिये गये हैं.

इस किताब के पढ़ने वाले को मालूम होगा कि क़ुरान किस सफ़ाई के साथ इस बात को मानता है कि सब मज़हबो मे मोमिन (आस्तिक), मुत्तक़ी (बुराई से बचने वाले) और सालहीन (नेक इन्सान) हैं—और फ़िरक़ा बन्दी को शिर्क और गुनाह बताता है मेरी राय में यह किताब हर उर्दू दां मुसलमान को और हर उस ग़ैर मुसलमान को जो उर्दू पढ़ सकता है और जो ईमानदारी के साथ क़ुरान और इस्लाम को ठीक ठीक समझना चाहता है ज़रूर पढ़नी चाहिये. किताब अपने ढंग की बिलकुल एक नई और अनोखी चीज़ है और गहरी जानकारी, ग़ैर जानिबदारी और सचाई तीनों का नमूना है

मुझे सिर्फ़ एक शिकायत है. ज़बान इससे कहीं ज़्यादा आसान हो सकती थी जिससे किताब से फ़ायदा उठाने वालो की गिनती बढ़ जाती. मैने जो हिस्से किताब से दिये हैं उनमें कही कही ज़बान को ज़रा आसान कर लिया है.

हैदराबाद (दकिन)   सुन्दर लाल

شریعتوں (پوجا بندگی کے طریقوں) کی سچائی—غیر مسلم نیکوں کی نیکی کو ماننا وغیرہ—ان سب باتوں پر زیادہ تر قرآن کی آیتوں اور کہیں کہیں حدیثوں کے والے بھی دئے گئے ہیں ۔

اس کتاب کے پڑھنے والے کو معلوم ہوگا کہ قرآن کس صفائی کے ساتھ اس بات کو مانتا ہے کہ سب مذہبوں میں مومن (آستک)، متقی (برائی سے بچنے والے) اور صالحین (نیک انسان) ہیں — اور فرقہ بندی کو شرک اور گناہ بتاتا ہے ۔ میری رائے میں یہ کتاب ہر اردوداں مسلمان کو اور ہر اس غیر مسلمان کو جو اُردو پڑھ سکتا ہے اور جو ایمانداری کے ساتھ قرآن اور اسلام کو ٹھیک ٹھیک سمجھنا چاہتا ہے ضرور پڑھنی چاہئے ۔ کتاب اپنے ڈھنگ کی بالکل ایک نئی اور انوکھی چیز ہے اور گہری جانکاری، غیر جانب داری اور سچائی تینوں کا نمونہ ہے ۔

مجھے صرف ایک شکایت ہے ۔ زبان اس سے کہیں زیادہ آسان ہوسکتی تھی جس سے کتاب سے فائدہ اٹھانے والوں کی گنتی بڑھ جاتی ۔ میں نے جو حصے کتاب سے دئے ہیں اُن میں کہیں کہیں زبان کو ذرا آسان کرلیا ہے ۔

حیدرآباد (دکن)   سندر لال

नमाज़ पढ़ना, नफ़्स को जीतना और अपने बचाव के लिये हथियार लेकर लड़ना सब शामिल है. तीसरी बात यह कि जहाँ कहीं किसी आयत में साफ़ साफ़ और सिर्फ़ हथियार लेकर लड़ने का ज़िक्र है वहाँ क़ुरान भर में किसी एक जगह भी जेहाद लफ़्ज़ इस्तेमाल नहीं किया गया बल्कि 'क़ताल' लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है जिसके मानी लड़ाई हैं. आम मुसलमानों में जेहाद के जो मानी लिये जाते हैं वह क़ुरान की ज़बान को ध्यान में रखते हुए बहुत ग़लत और धोका देने वाले हैं मुझे ख़ुशी है कि मौलाना मीर विलायत अली साहब ने अपनी इस किताब में इस ग़लत समझ को बहुत दर्जे तक दूर किया है.

विद्वान लेखक ने क्या अच्छा लिखा है :—"इस्लाम क्या है? नेक कामों का मजमूआ और मुसलमान कौन हैं? दुनिया की हर क़ौम के समझदार इन्सान. वह लोग ग़लती में फँसे हुए हैं जो इस्लाम को नेकियों से अलग करके नस्ली, पैदायशी या ख़ानदानी समझते हैं. मुस्लिम नाम... ...सब सच्चे लोगों पर लागू होता है."

किताब का एक मज़मून यह भी है :—

"मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना"

यह मज़मून बहुत ही दिलचस्प और काम का है. इसमें बड़े बड़े सूफ़ियों की सी आज़ादी और बड़ी निगाह पाई जाती है. इसमें और बातों के साथ साथ यह बातें भी समझाई गई हैं—दूसरी क़ौमों का मज़ाक़ उड़ाने की मनाही—दूसरे मज़हबों को झूटा कहने की मनाही—सब धर्मों की किताबों में हिदायत है—सब किताबों पर ईमान लाने का हुक्म है—सब रसूलों पर ईमान लाना ज़रूरी है—अलग अलग

نماز پڑھنا' نفس کو جیتنا اور اپنے بچاؤ کے لئے ہتھیار لے کر لڑنا سب شامل ہے. تیسری بات یہ کہ جہاں کہیں کسی آیت میں صاف صاف اور صرف ہتھیار لے کر لڑنے کا ذکر ہے وہاں قرآن بھر میں کسی ایک جگہ بھی جہاد لفظ استعمال نہیں کیا گیا بلکہ 'قتال' لفظ استعمال کیا گیا ہے جس کے معنی لڑائی ہیں. عام مسلمانوں میں جہاد کے جو معنی لئے جاتے ہیں وہ قرآن کی زبان کو دھیان میں رکھتے ہوئے بہت غلط اور دھوکہ دینے والے ہیں مجھے خوشی ہے کہ مولانا میر ولایت علی صاحب نے اپنی اس کتاب میں اس غلط سمجھ کو بہت درجے تک دور کیا ہے.

ودوان لیکھک نے کیا اچھا لکھا ہے :— '' اسلام کیا ہے؟ نیک کاموں کا مجموعہ اور مسلمان کون ہیں؟ دنیا کی ہر قوم کے سمجھدار انسان — وہ غلطی میں پھنسے ہوئے ہیں جو اسلام کو نیکیوں سے الگ کرکے نسلی' پیدائشی یاخاندانی سمجھتے ہیں مسلم .. .... نام سب سچے لوگوں پر لاگو ہوتا ہے '

کتاب کا ایک مضمون یہ بھی ہے :—

'' مذہب نہیں سکھاتا آپس میں بیر رکھنا ''

یہ مضمون بہت ہی دلچسپ اور کام کا ہے. اس میں بڑے بڑے صوفیوں کی سی آزاد اور بڑی نگاہ پائی جاتی ہے. اس میں اور باتوں کے ساتھ ساتھ یہ باتیں بھی سمجھائی گئی ہیں—دوسری قوموں کا مذاق اڑانے کی مناہی—دوسرے مذہبوں کو جھوٹا کہنے کی مناہی—سب دھرموں کی کتابوں میں ہدایت ہے—سب کتابوں پر ایمان لانے کا حکم ہے—سب رسولوں پر ایمان لانا ضروری ہے—الگ الگ

सोचे और कोशिश करे कि उनकी बदकारियां किस तरह मुहब्बत और सुलह से दूर की जाय. जब इन नर्म हथियारो से काम न चले और बुरे लोग दुनियां के अमन को आग लगाते ही रहे तो इस दर्जे पर पहुंचकर कुरान मे महज़ अपने बचाव के लिये सख्त हथियारो से काम लेने की भी इजाज़त है. इस आख़िरी कोशिश का नाम तलवार से जेहाद ' है. जो लड़ाई अपनी किसी ग़रज़ को पूरा करने के लिये या अपनी बहकी हुई क़ौम के फायदे के लिये या लूट खसोट के लिये या अपनी बड़ाई के घमण्ड मे दुनिया को जीतने के ख़याल से लड़ी जाय इस्लाम में उसका नाम जेहाद नही शैतानी जग है. इस्लाम इसकी सख्त बुराई करता है

ऊपर मैंने जेहाद जैसे नाजुक मसले पर लेखक के पूरे ख़याल देने की कोशिश की है. मुझे अपने मुताले की बिना पर मालूम है कि कुरान के अन्दर दान देना, दूसरो की सेवा करना, अपने ग़ुस्से और मन को जीतना जैसे हर नेक काम को अल्लाह की राह में जेहाद कहा गया है. सचाई का प्रचार करना भी एक जेहाद है. कुरान में अपने दीन के बचाव के लिये (जबरदस्ती अपना मजहब फैलाने के लिये नही) हथियार लेकर लडने की भी इजाजत है पर जहाँ तक कुरान और लफ्ज़ जेहाद का सम्बन्ध है तीन बाते ध्यान मे रखने की है. पहली यह कि जेहाद लफ्ज़ कुरान की बहुत सी आयतो में ऐसी जगह आया है जहाँ हथियारो या लडाई का कोई ज़िक्र नही और जेहाद से मतलब वहाँ सिर्फ दूसरे नेक कामो से है. दूसरी बात यह है कि कुछ ऐसी आयतो में भी जेहाद शब्द आया है जिनमे अल्लाह की राह में हर तरह की कोशिश जैसे दान देना,

سوچے اور کوشش کرے کہ ان کی بدکاریاں کس طرح محبت اور صلح سے دور کی جائیں جب ان نرم هتھیاروں سے کام نہ چلے اور برے لوگ دنیا کے امن کو آگ لگاتے هی رهیں تو اس درجہ پر پہنچ کر قرآن میں محض اپنے بچاؤ کے لئے سخت هتھیاروں سے کام لینے کی بھی اجازت ہے اس آخری کوشش کا نام 'تلوار سے جہاد' ہے . جو لڑائی اپنی کسی غرض کو پورا کرنے کے لئے یا اپنی بہکی هوئی قوم کے فائدے کے لئے یا لوٹ کھسوٹ کے لئے یا اپنی بڑائی کے گھمنڈ میں دنیا کو جیتنے کے خیال سے لڑی جائے اسلام میں اُس کا نام جہاد نہیں شیطانی جنگ ہے . اسلام اس کی سخت برائی کرتا ہے .

اوپر میں نے جہاد جیسے نازک مسئلے پر لیکھک کے پورے خیال دینے کی کوشش کی ہے مجھے اپنے مطالعہ کی بنا پر معلوم ہے کہ قرآن کے اندر دان دینا' دوسروں کی سیوا کرنا' اپنے غصے اور من کو جیتنا جیسے هر نیک کام کو الله کی راہ میں جہاد کہا گیا ہے . سچائی کا پرچار کرنا بھی ایک جہاد ہے . قرآن میں اپنے دین کے بچاؤ کے لئے (زبردستی اپنا مذهب پھیلانے کے لئے نہیں) هتھیار لے کر لڑنے کی بھی اجازت ہے . پر جہاں تک قرآن اور لفظ جہاد کا سمبندھ ہے تین باتیں دھیان میں رکھنے کی هیں پہلی یہ کہ جہاد لفظ قرآن کی بہت سی آئتوں میں ایسی جگہ آیا ہے جہاں هتھیاروں یا لڑائی کا کوئی ذکر نہیں اور جہاد سے مطلب وهاں صرف دوسرے نیک کاموں سے ہے دوسری بات یہ ہے کہ کچھ ایسی آئتوں میں بھی جہاد شبد آیا ہے جن میں الله کی راہ میں هر طرح کی کوشش جیسے دان دینا'

मदनी सूरतों मे भी. (मक्की सूरतें सब उस जमाने की हैं कि जब तक मुसलमानों को हथियार उठाने की इजाजत नहीं दी गई थी) . . . और भली और बुरी हर तरह की कोशिशों के लिये जेहाद लफ्ज काम मे लाया गया है मुख़ालिफ (विरोधी) से अपनी बात मनवाने के लिये अपनी शक्ति भर कोशिश करना भी जेहाद है. चाहे वह अच्छे काम के लिये हो चाहे बुरे काम के लिये. मजहब के मैदान मे यह लफ्ज नेकी के प्रचार और बदी को रोकने की कोशिश के लिये भी इस्तेमाल किया जाता है." फिर जेहाद की क़िस्मे बतलाई गई हैं. जैसे 'ज़ेहनी जिहाद' यानी अपने अन्दर ध्यान ज्ञान की खोज करना, 'नफ्सेजेहाद' यानी मन को बुरी तरफ जाने से रोकना, 'जबान से जेहाद' 'हाथ से, माल से और जान से जेहाद' 'औरतो का जेहाद' जैसे बीमारो की सेवा करना, घायलो की मरहम पट्टी करना, हज्ज करना वगैरह—इन सब किस्मों के लिये कुरान और हदीस के हवाले दिये गये हैं. फिर हर जेहाद की शर्ते और सब अमन पसन्द से दोस्ती और मेल मिलाप रखने के हुक्म दिये गये हैं. जालिमो और हमला करने वालो से अपने बचाव के लिये जंग करना भी जेहाद है और कुरान मे इसकी इजाजत है मज़मून के आखीर मे यह दिखाया गया है कि इस्लाम मे हर गैरमुस्लिम से लडना या किसी भी गैरमुस्लिम से मजहब के मामले मे ज़बरदस्ती करना जायज नही है . . मौलाना ने लिखा है कि सबमे बड़ा जेहाद जो हर मुसलमान के लिये जिन्दगी भर फर्ज है नफ्स का जेहाद है यानी अपनी इन्द्रियो और मन को जीतना. जब आदमी अपने नफ्स को क़ाबू में करले तो फिर बाहर के शैतानो पर काबू पाने की फिक्र करे

مدنی سورتوں میں بھی (مکی سورتیں سب اُس زمانے کی ہیں کہ جب تک مسلمانوں کو ھتھیار اُٹھانے کی اجازت نہیں دی گئی تھی) . . اور بھلی اور بری ہر طرح کی کوششوں کے لئے جہاد لفظ کام میں لایا گیا ھے . . مخالف (ورودھی) سے اپنی بات منوانے کے لئے اپنی شکتی بھر کوشش کرنا بھی جہاد ھے . چاھے وہ اچھے کام کے لئے ہو چاھے برے کام کے لئے . مذھب کے میدان میں یہ لفظ نیکی کے پرچار اور بدی کو روکنے کی کوشش کے لئے بھی استعمال کیا جاتا ھے " پھر جہاد کی قسمیں بتلائی گئی ہیں . جیسے ' ذھنی جہاد ' یعنی اپنے اندر دھیان گیان کی کھوج کرنا ' نفس سے جہاد' یعنی من کو بری طرف جانے سے روکنا، 'زبان سے جہاد' ہاتھ سے' مال سے اور جان سے جہاد' عورتوں کا جہاد' جیسے بیماروں کی سیوا کرنا' گھائلوں کی مرہم پٹی کرنا' حج کرنا وغیرہ — ان سب قسموں کے لئے قرآن اور حدیث کے حوالے دیئے گئے ہیں . پھر ہر جہاد کی شرطیں اور سب امن پسندوں سے دوستی اور میل ملاپ رکھنے کے حکم دئے گئے ہیں ظالموں اور حملہ کرنے والوں سے اپنے بچاؤ کے لئے جنگ کرنا بھی جہاد ھے اور قرآن میں اس کی اجازت ھے . مضمون کے آخیر میں یہ دکھایا گیا ھے کہ اسلام میں ہر غیر مسلم سے لڑنا یا کسی بھی غیر مسلم سے مذھب کے معاملہ میں زبردستی کرنا جائز نہیں ھے . . مولانا نے لکھا ھے کہ سب سے بڑا جہاد جو ہر مسلمان کے لئے زندگی بھر فرض ھے نفس کا جہاد ھے یعنی اپنی اندریوں اور من کو جیتنا . جب آدمی اپنے نفس کو قابو میں کرلے پھر باہر کے شیطانوں پر قابو پانے کی فکر کرے

ही करते हैं. ग़ैर मोमिन के लिये तो यह लफ़्ज़ इस्तेमाल भी नहीं किया जा सकता. मुनकिरे ख़ुदा (नास्तिक) चाहे जितना भी गिरा हुआ हो मगर मुशरिक किसी तरह नहीं कहा जा सकता. पस शिर्क का डरावा सिर्फ़ मोमिनो के लिये है चाहे वह मोमिन यानी अल्लाह को मानने वाले कृष्ण जी के ज़रिये मोमिन हुए हो या हज़रत मूसा के ज़रिये या हज़रत ईसा के ज़रिये या किसी भी और पैग़म्बर के ज़रिये.. .. अफ़सोस है कि हर जगह खुला शिर्क हो रहा है मगर तरह तरह की खींचतान करके उसके जायज़ होने के फ़तवे दे दिये जाते हैं. दूसरो के अच्छे कामो पर रश्क करने के बजाय ऐब ढूंढना और लफ़्ज़ी झगड़े खड़े करना लोगो का ख़ास ढग हो गया है काश ऐसा होता कि अपनी खराबियो पर भी नजर रहती जो आइन्दा तरक़्क़ी का कारन होती ”

एक तीसरा मज़मून ' तनज़्ज़ुले इनसान ' (मनुष्य का पतन) है जिसमे बहुत अच्छी तरह दिखलाया गया है कि किस तरह इन्सान, जो सब जानदारो मे अशरफ़ यानी श्रेष्ठ है, अपनी बदकिरदारी और दुराचार के कारन इन्सानियत से गिरकर जानवरो से भी बदतर हो जाता है.

इसी तरह के कई और मज़मून है जैसे 'खिलाफ़त व बादशाहत' 'तक़दीर व तदबीर' 'जेहाद की हक़ीक़त' वग़ैरा.

जेहाद किसे कहते हैं इसपर मौलाना की राय जानने के काबिल है. वह लिखते हैं:—

“ अरबी ज़बान मे जेहाद के मानी है पूरी ताकत के साथ कोई काम करना. क़ुरान में यह लफ़्ज़ मक्की सूरतो मे भी आया है और

کوبھد ھنا ہے
کرتے ھیں . غیر موم ن کے لئے تو یہ لفظ استعمال بھی نہیں کیا جاسکتا منکر خدا (ناستک) چاہے حتنا بھی گرا ھوا ھو مگر مشرک کسی طرح نہیں کہا جاسکتا . پس شرک کا ڈراوا صرف مومنوں کے لئے ھے . چاھے وہ مومن یعنی اللہ کو ماننے والے کرشن جی کے ذریعے مومن ھوے ھوں یا حضرت موسیٰ کے ذریعے یا حضرت عیسیٰ کے ذریعے یا کسی دہی اور پیغمبر کے دریعے . افسوس ھے کہ ہر جگہ کھلا شرک ھو رھا ھے مگر طرح طرح کی کھینچ تان کرکے اس کے جائز ھونے کے فتوے دے دیئے جاتے ھیں . دوسروں کے اچھے کاموں پر رشک کرنے کے بجائے عیب ڈھونڈنا اور لفظی جھگڑے کھڑے کرنا یہ لوگوں کا خاص ڈھنگ ھوگیا ھے کاس ایسا ھوتا کہ اپنی خرابیوں پر بھی نظر رھتی جو آئندہ ترقی کا کارن ھوتی . “

ایک تیسرا مضمون ' تنزل انسان ' (ملش کاپتن) ھے جس میں بہت اچھی طرح دکھلایا گیا ھے کہ کس طرح انسان' جو سب جاندار‌وں میں اشرف یعنی شریشٹ ھے اپنی بدکرداری اور دراچار کے کارن انسانیت سے گر کر جانوروں سے بھی بدتر ھو جاتا ھے

اِسی طرح کے کئی اور مضمون ھیں جیسے ' خلافت و بادشاھت ' ' تقدیر و تدبیر ' 'جہاد کی حقیقت' وغیرہ .

جہاد کسے کہتے ھیں اس پر مولانا کی رائے جاننے کے قابل ھے. وہ لکھتے ھیں :—

” عربی زبان میں جہاد کے معنی ھیں پوری طاقت کے ساتھ کوئی کام کرنا . قرآن میں یہ لفظ مکی سورتوں میں بھی آیا ھے اور

आगे चलकर उन्हों ने एक़बाल का यह शेर भी दिया है—

काबे मे बुतकदे मे है यकसाँ तेरी ज़िया (जोत)
मैं इम्तियाज़े दैरो हरम (मसजिद मन्दिर का फ़रक़) मे फँसा रहा

उन्हों ने मुहम्मद साहब की यह हदीस भी नक़ल की है—तमाम मख़लूक़ अल्लाह का कुनबा है. अल्लाह का प्यारा वह है जो अल्लाह की मख़लूक़ को नफ़ा पहुंचाये

किताब का एक मज़मून 'नार-ए इत्तिहाद' है. वह इस तरह शुरू किया गया है :—

" ख़ुदा का दीन एक है और बनी नौअ इनसान (मानव जाति) भी एक ही उम्मत (कौम) है. लेकिन अफ़सोस हमारी अनानियत (अहंकार) ने हमे एक रहने नही दिया ख़ुदग़र्ज़ियों ने हमेशा फूट डाल दी और अल्लाह के दीन को जो असल मे फूट मिटाने वाला था उसी को फ़िरक़ाबन्दी की बुनियाद बनाकर आपस मे सरफुटव्वल करना और एक दूसरे को काफ़िर म्लेच्छ कहना शुरू कर दिया."

एक और मज़मून सलाये अमल (अमल की दावत) है जिसमे क़ुरान की आयतों का हवाला दे दे कर बताया गया है कि ईमान और कुफ़्, तौहीद और शिर्क वग़ैरह के असली मानी क्या है. इसी मज़मून में शैतान के पूजने वालो और आदमी के पूजने वालो को नेकी, किरदार और सदाचार का उपदेश देकर ख़ुदा के पूजनेवाले बनाने की सुन्दर कोशिश की गई है. इस मज़मून का एक टुकड़ा यह है :—

शिर्क (एक ईश्वर के साथ दूसरे को शरीक करना यानी ईश्वर की तरह किसी और को पूजना) मोमिन (अल्लाह को मानने वाले)

آگے چل کر انہوں نے اقبال کا یہ شعر بھی دیا ہے —

کعبہ میں بت کدے میں ہے یکساں تیری ضیا (جوتی)
میں امتیاز دیرو حرم (مسجد و مندر کا فرق) میں پھنسا رہا

انہوں نے محمد صاحب کی یہ حدیث بھی نقل کی ہے — تمام مخلوق اللہ کا کنبہ ہے اللہ کا پیارا وہ ہے جو اللہ کی مخلوق کو نفع پہونچائے .

کتاب کا ایک مضمون ' نعرہ اتحاد ' ہے . وہ اس طرح شروع کیا گیا ہے :—

" خدا کا دین ایک ہے اور بنی نوع انسان (مانو جاتی) بھی ایک ہی امت (قوم) ہیں لیکن افسوس ہماری انانیت (اھنکار) نے ہمیں ایک رہنے نہیں دیا خودغرضیوں نے ہمیشہ پھوٹ ڈال دی اور اللہ کے دین کو جو اصل میں پھوٹ مٹانے والا تھا اسی کو فرقہ بندی کی بنیاد بناکر آپس میں سرپھٹول کرنا اور ایک دوسرے کو کافر ملیچھ کہنا شروع کردیا . "

ایک اور مضمون ' صلاء عمل ' (عمل کی دعوت) ہے جس میں قرآن کی آیتوں کا حوالہ دے دے کر بتایا گیا ہے کہ ایمان اور کفر، توحید اور شرک وغیرہ کے اصلی معنی کیا ہیں . اِسی مضمون میں شیطان کے پوجنے والوں اور آدمی کے پوجنے والوں کو نیکی، کردار اور سداچار کا اپدیش دے کر خدا کے پوجنے والے بنانے کی سندر کوشش کی گئی ہے . اِس مضمون کا ایک ٹکڑا یہ ہے :—

" شرک (ایک ایشور کے ساتھ دوسرے کو شریک کرنا یعنی ایشور کی طرح کسی اور کو پوجنا) مومن (اللہ کو ماننے والے)

अलग रंग और नस्लो के होते हुए भी लोग किसी खास गरज़ के लिए मिलकर एक हो जाते हैं."

मुसलमानो की इस वक्त की हालत को बयान करते हुए डाक्टर हाशिम अमीर अली ने किताब के तआरुफ़ (परिचय) मे लिखा है—"इन्सानी बिरादरी मे घुल मिल जाने के बजाय अपनी बनावटी और मन घडन्त और गैर जरूरी खासियतो (विशेषताओ) को क़ायम रखने पर जिद करके मुसलमान ने अपने को इन्सानी खानदान (मानव कुटुम्ब) मे अजनबी बना लिया है. कुरान के असली पयाम और कानूने कुदरत के खिलाफ होने की वजह से कुदरत (प्रकृति) खुद उसके इस अलग वजूद को गवारा नही कर सकती

हमको सिर्फ यह समझ लेने की जरूरत है कि अपने को सिर्फ मुसलमान कह कर अपने तरीके को सही समझ लेना ठीक नही है. महज़ मुसलमान कहलाये जाने या अब्दुल्ला नाम रख लेने से हम खुदा के चहीते बन्दे नहीं हो जाते बल्कि बनी नौअ इनसान (मानव जाति) मे से बिला फ़र्क नस्ल (जाति) व मजहब व मिल्लत (सम्प्रदाय) उस आदमी या उस गरोह पर खुदावन्दे आलम (जगदीश्वर) की नज़रे रहमत (दयादृष्टि) होती है जो बनी नौअ इन्सान की सच्ची सेवा करे."

सब धर्मो की एकता का बयान करते हुए किताब के लेखक ने मौलाना हाली का यह शेर नकल किया है—

मिल्लतें रस्तो के है सब हेर फेर
सब जहाजो का है लगर एक घाट

الگ رنگ اور نسلوں کے ہوتے ہوئے بھی لوگ کسی خاص غرض کے لئے مل کر ایک ہوجاتے ہیں . "

مسلمانوں کی اس وقت کی حالت کو بیان کرتے ہوئے ڈاکٹر ہاشم امیر علی نے کتاب کے تعارف (پریچئے) میں لکھا ہے — " انسانی برادری میں گھل مل جانے کے بجائے اپنی بناوٹی اور من گھڑنت اور غیر ضروری خاصیتوں (وشیشتاؤں) کو قائم رکھنے پر ضد کرکے مسلمان نے اپنے کو انسانی خاندان (مانو کٹمب) میں اجنبی بنا لیا ہے — قرآن کے اصلی پیام اور قانون قدرت کے خلاف ہونے کی وجہ سے قدرت (پرکرتی) خود اس کے اس الگ وجود کو گوارا نہیں کرسکتی ہم کو صرف یہ سمجھ لینے کی ضرورت ہے کہ اپنے کو صرف مسلمان کہہ کر اپنے طریقے کو صحیح سمجھ لینا ٹھیک نہیں ہے محض مسلمان کہلائے جانے یا عبداللہ نام رکھ لینے سے ہم خدا کے چہیتے بندے نہیں ہوجاتے بلکہ بنی نوع انسان (مانو جاتی) میں سے بلا فرق نسل (جاتی) و مذہب وملت (سمپردائے) اُس آدمی یا اس گروہ پر خداوند عالم (جگدیشور) کی نظر رحمت (دیا درشٹی) ہوتی ہے جو بنی نوع انسان کی سچی سیوا کرے

سب دھرموں کی ایکتا کو بیان کرتے ہوئے کتاب کے لیکھک نے مولانا حالی کا یہ شعر نقل کیا ہے —

ملتیں رستوں کے ہیں سب ہیر پھیر
سب جہازوں کا ہے لنگر ایک گھاٹ

अलग क़ीमत रखता है. मैं खुले दिल से कबूल करता हूँ कि मुझे इस किताब में कई ऐसी चीज़ें मिली जिनसे कुरान के बारे मे मेरी जानकारी बढ़ी. हिन्दू हो या मुसलमान या कोई भी हो, मज़हब की दुनिया में ऐसे आदमी बहुत कम मिलते है जो अपने अपने तरीके की हठ से ऊपर उठ कर मुहब्बत की निगाह और बड़े दिल से सब तरीक़ों को देख सके. हैदराबाद मे मुझे कई ऐसे बुज़ुर्ग दिखाई दिये जिन मे मीर विलायत अली साहब एक खास हस्ती है इस्लाम को ठीक ठीक समझने और कुरान के हवालो से दूसरो को समझाने की जो काबलियत मैने इन मे देखी वह और बहुत कम मे पाई. वह सचमुच सर्व-धर्म सम्भावी है.

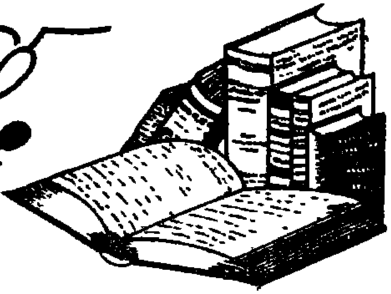
किताब के शुरू मे इस्लाम की तारीफ़ यह बतलाई गई है— "इस्लाम नस्ल और निस्बत (खून और सम्बन्ध) की इजारादारी नही है ब.ल्कि इनसानियत मे तरक़्क़ी करने वाले लोगो का इसमे सिफ़त (उनकी उपाधि) है."

किताब के उसी हिस्से मे अपना हाल बताते हुए लेखक ने लिखा है—"मेरी सारी उम्र की खोज और कोशिशों में सिर्फ एक ही ख़याल काम करता रहा कि अक़ायदी तअस्सुब (मानताओं की कट्टरता) का लड़ाई झगड़ा मिटे और दिल की सफ़ाई और मुहब्बत मे मिल कर काम करने की आदत पैदा हो. जिस से इन्सानियत तरक्की की सीढ़ियो पर चढ़ती जाय एक ख़ुदा के करोड़ो बन्दे अलग अलग अक़ीदों (मानताओ) के होते हुए भी रवादारी (उदारता) के ज़रिये उसी तरह मिल कर एक और मज़बूत हो जायें जिस तरह अलग

الگ قیمت رکھتا ھے . میں کھلے دل سے قبول کرتا ھوں کہ مجھے اس کتاب میں کئی ایسی چیزیں ملیں جن سے قرآن کے بارے میں میری جانکاری بڑھی. ھندو ھوں یا مسلمان یا کوئی بھی ھوں، مذھب کی دنیا میں ایسے آدمی بہت کم ملتے ھیں جو اپنے اپنے طریقہ کی ھٹ سے اوپر اُٹھکر محبت کی نگاہ اور بڑے دل سے سب طریقوں کو دیکھ سکیں حیدرآباد میں مجھے کئی ایسے بزرگ دکھائی دئے جن میں میر ولایت علی صاحب ایک خاص ھستی ھیں اسلام کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے اور قرآن کے حوالوں سے دوسروں کو سمجھانے کی جو قابلیت میں نے اُن میں دیکھی وہ اور بہت کم میں پائی وہ سچ مچ سرو دھرم سم بھاوی ھیں

• کتاب کے شروع میں اسلام کی تعریف یہ بتلائی گئی ھے— " اسلام نسل اور نسبت (خون اور سمبندھ) کی اجارہ داری نہیں ھے بلکہ انسانیت میں ترقی کرنے والےلوگوں کا اسم صفت (ان کی اپادھی) ھے "

کتاب کے اسی حصے میں اپنا حال بتاتے ھوئے لیکھک نے لکھا ھے — " میری ساری عمر کی کھوج اور کوششوں میں صرف ایک ھی خیال کام کرتا رھا کہ عقائدی تعصب (مانتاؤں کی کٹرتا) کا لڑائی جھگڑا مٹے اور دل کی صفائی اور محبت سے مل کر کام کرنے کی عادت پیدا ھو . جس سے انسانیت ترقی کی سیڑھیوں پر چڑھتی جائے ایک خدا کے کروڑوں بندے الگ الگ عقیدوں (مانتاؤں) کے ھوتے ھوئے بھی رواداری (اُدارتا) کے ذریعے اُسی طرح مل کر ایک اور مضبوط ھوجائیں جس طرح الگ

कुछ किताबें  کچھ کتابیں

इस्लामी तालीमात

लेखक — मौलाना मीर विलायत अली, ३७५ सफे उर्दू लिखावट, लिखाई और छपाई अच्छी, जिल्द बधी हुई, क़ीमत चार रुपये चार आने. मिलने का पता—दफ़्तर 'नया हिन्द' ४८ बाई का बाग, इलाहाबाद

सब मजहबो की एकता और सच्चाई और सब मजहब के मानने वालो मे मेल मुहब्बत और रवादारी और सब आदमियो को नेकी और सदाचार (एख़लाक) की कुरान ने जो तालीम दी है उसे लेखक ने इस किताब मे बडे सीधे सादे और दिलचस्प तरीके से बयान किया है. हर बात के सबूत मे कुरान की आयतें दी गई है मैने कुरान को काफ़ी ध्यान से पढा है उस पर गौर भी किया है और अपनी किताब 'गीता और कुरान'' मे कुरान की असली तालीम को साफ़ साफ़ पेश करने की कोशिश की है फिर भी "इस्लामी तालीमात'' को देखने और मौलाना मीर विलायत अली से हैदराबाद में बात चीत रने से मुझे मालूम हुआ कि मौलाना का मुताला बहुत गहरा और निषपक्ष यानी गैरजानिबदार है और अपनी

اسلامی تعلیمات

لیکھک — مولانا میر ولایت علی' ۳۷۵ صفحے' اردو لکھاوٹ لکھائی اور چھپائی اچھی جلد بندھی ہوئی' قیمت چار روپیہ چار آنے . ملنے کا پتہ—دفتر '' نیا ہند' ۴۸ بائی کا باغ' الہ آباد .

سب مذہبوں کی ایکتا اور سچائی اور سب مذہب کے ماننے والوں میں میل محبت اور رواداری اور سب آدمیوں کو نیکی اور سدا چار (اخلاق) کی قرآن نے جو تعلیم دی ہے اسے لیکھک نے اس کتاب میں بڑے سیدھے سادے اور دلچسپ طریقے سے بیان کیا ہے . ہر بات کے ثبوت میں قرآن کی آیتیں دی گئی ہیں . میں نے قرآن کو کافی دھیان سے پڑھا ہے . اس پر غور بھی کیا ہے اور اپنی کتاب '' گیتا اور قرآن ' میں قرآن کی اصلی تعلیم کو صاف صاف پیش کرنے کی کوشش کی ہے پھر بھی '' اسلامی تعلیمات'' کو دیکھنے اور مولانا میر ولایت علی سے حیدرآباد میں بات چیت کرنے سے مجھے معلوم ہوا کہ مولانا کا مطالعہ بہت گہرا اور نش پکش یعنی غیر جانب دار ہے اور اپنی

शामिल हो जाने से हासिल होगा. इस के लिये शाह अब्दुल्ला को बरतानिया की मंज़ूरी पहले ही मिल चुकी है. और अमरीका की मन्ज़ूरी इसलिये मिल जायगी कि अमरीकी सरकार शुरू से ही इसराईल की सरपरस्ती कर रही है इस के अलावा इराक पर बरतानिया का जो असर है और सऊदी अरब अमरीका को तेल निकालने का पट्टा देकर उस से जो रकम पा रहा है उसके कारन यह दोनो एक हद से आगे नहीं बढ़ेंगे और जिस तरह फ़िलस्तीन की तक़सीम एक सच्चाई बन गई उसी तरह इसराईल सरकार भी आमतौर पर तसलीम कर ली जायगी.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

लेखक—पंडित सुन्दर लाल

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ा परस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आखिर मे देश-पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच मे न रहने दिया। कीमत बारह आना.

किताब नागरी और उर्दू लिखावटो मे अलग अलग मिल सकती है.

मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

شامل ھوجانے سے حاصل ھوگا ۔ اس کے لئے شاہ عبداللہ کو برطانیہ کی منظوری پہلے ھی مل چکی ھے ۔ اور امریکہ کی منظوری اس لئے مل جائیگی کہ امریکی سرکار شروع سے ھی اسرائیل کی سرپرستی کر رھی ھے ۔ اس کے علاوہ عراق پر برطانیہ کا جو اثر ھے اور سعودی عرب امریکہ کو تیل نکالنے کا پٹہ دے کر اس سے جو رقم پا رھا ھے ، اس کے کارن یہ دونوں ایک حد سے آگے نہیں بڑھینگے ۔ اور جس طرح فلسطین کی تقسیم ایک سچائی بن گئی اسی طرح اسرائیل سرکار بھی عام طور پر تسلیم کرلی جائیگی ۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

لیکھک — پنڈت سندر لال

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی ، مذھبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج ، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ھمارے بیچ میں نہ رھنے دیا ۔ قیمت بارہ آنہ

کتاب ناگری اور اُردو لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ھے ۔

منیجر " نیا ھند "
۴۸ بائی کا باغ ، الہ آباد

नतीजा यह है कि वह अमरीका की लटकन बनी हुई उसके पीछे पीछे घसिटती चली जा रही है. और अमरीका वाले उसकी इस मजबूरी को अच्छी तरह समझते हैं तभी तो अमरीकी पार्लिमेन्ट की एक कमेटी ने कहा है कि बरतानिया को उस वक्त तक कोई मदद नहीं दी जायगी जब तक कि वह आयर्लैंड के बटवारे को खतम न कर दे.

मुस्लिम देश

अमरीका के सामने बरतानिया की इस बेबसी को देखते हुए यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है कि जो मुल्क पहले बरतानिया के असर में थे वह अब अमरीका की तरफ ताकने लगे है. और इसकी एक मिसाल यह है कि ईरान और अमरीका के बीच एक फौजी समझौते का मसविदा तैयार हो गया है दूसरी तरफ ईरान ने अमरीका को खुश करने के लिए फ़िलस्तीन में यहूदी राज (इसराईल) को मान लिया है. बरतानिया के पुराने दोस्त अर्दन के बादशाह अब्दुल्ला भी उसी तरफ जा रहे है हालाँकि इसका सबब उतना अमरीका को खुश करना नहीं है जितना कि फ़िलस्तीन के अरब इलाके को, जिसे उन्होंने हड़प कर रखा है, हजम कर लेना

शाह अब्दुल्ला के इस रुख ने दूसरे अरब राजों को उनसे खफा कर दिया है और उनको अरब लीग से निकाल देने की बातें सुनाई दे रही है मिस्र और सऊदी अरब खास तौर से उनका विरोध कर कर रहे है और इस विरोध में इराक भी शरीक है. जहाँ उनका सगा भतीजा राज करता है. लेकिन इस विरोध का नुकसान उस फायदे से बहुत कम है जो फ़िलस्तीन के अरब हिस्से के ट्रान्सजार्डन में

نتیجہ یہ ہے کہ وہ امریکہ کی لٹکن بنی ہوئی اس کے پیچھے پیچھے گھسٹتی چلی جارہی ہے ۔ اور امریکہ والے اس کی اس مجبوری کو اچھی طرح سمجھتے ہیں تبھی تو امریکی پارلیمنٹ کی ایک کمیٹی نے کہا ہے کہ برطانیہ کو اس وقت تک کوئی مدد نہیں دی جائیگی جب تک کہ وہ آئر لینڈ کے بٹوارے کو ختم نہ کردے

مسلم دیش

امریکہ کے سامنے برطانیہ کی اس بے بسی کو دیکھتے ہوئے یہ کوئی تعجب کی بات نہیں ہے کہ جو ملک پہلے برطانیہ کے اثر میں تھے وہ اب امریکہ کی طرف تاکنے لگے ہیں اور اس کی ایک مثال یہ ہے کہ ایران اور امریکہ کے بیچ ایک فوجی سمجھوتے کا مسودہ تیار ہوگیا ہے دوسری طرف ایران نے امریکہ کو خوش کرنے کے لئے فلسطین میں یہودی راج (اسرائیل) کو مان لیا ہے برطانیہ کے پرانے دوست اردن کے بادشاہ عبداللہ بھی اسی طرف جارہے ہیں حالانکہ اس کا سبب اتنا امریکہ کو خوش کرنا نہیں ہے جتنا کہ فلسطین کے عرب علاقے کو، جسے انہوں نے ہڑپ کر رکھا ہے، ہضم کر لینا .

شاہ عبداللہ کے اس رخ نے دوسرے عرب راجوں کو ان سے خفا کردیا ہے اور ان کو عرب لیگ سے نکال دینے کی باتیں سنائی دے رہی ہیں . مصر اور سعودی عرب خاص طور سے ان کا ورودھ کر رہے ہیں . اور اس ورودھ میں عراق بھی شریک ہے، جہاں ان کا سگا بھتیجا راج کرتا ہے . لیکن اس ورودھ کا نقصان اس فائدے سے بہت کم ہے جو فلسطین کے عرب حصے کے ٹرانس جارڈن میں

उम्मीद पर है कि अगर बरमी सरकार ने, जो अब धीरे धीरे कम्युनिस्ट और करेन बाग़ियो से अपनी खोई हुई जमीन वापस लेती जारही है, अपने देश की आर्थिक हालत दुरुस्त कर ली तो वहाँ क्रान्ति की वह आग बुझ जायगी जिस की लपट हिन्दुस्तान तक आ सकती है.

बरतानिया का चुनाव

अन्तराष्ट्री मामलो मे आस्ट्रेलिया की कम्युनिस्ट दुश्मनी का एक कारन वहाँ की राष्ट्री सरकार की रंगत है. उस ने इसी बुनियाद पर चुनाव लड़ा और जीता है और इसी तरह बरतानिया की विदेशी पालिसी पर भी वहाँ के पिछले फरवरी वाले चुनाव का असर पड़ रहा है. इस चुनाव मे लेबर पार्टी जीत तो गई है मगर बरतानी पार्लीमेन्ट मे उस के मेम्बरो और दूसरी पार्टीयो के मेम्बरो की गिनती मे सिर्फ छः का फरक था जो तीन जगहो के खाली हो जाने के कारन अब और कम होगया है चुनाव मे विदेशी पालिसी का किसी तरफ से कोई ज्यादा चरचा नही किया गया फिर भी लेबर पार्टी और टोरी पार्टी की दृष्टि मे थोड़ा बहुत फरक जरूर है टोरी पार्टी वाले रूस और कम्युनिज्म की दुशमनी मे लेबर पार्टी से बहुत आगे हैं वह लेबर सरकार को उसी तरफ ढकेल रहे हैं इस के अलावा अमरीका के रवैये से भी उनको मदद मिल रही है और लेबर सरकार मे इतनी शक्ति नही कि वह इस दबाव का डट कर मुक़ाबला करे. इस कमजोरी के कारन वह न तो अपने देश मे सोशलिज्म को आगे बढ़ा सकती है और न विदेशी मामलों मे मुस्तैदी और हिम्मत के साथ कोई आजाद रास्ता अपना सकती है.

اُمید پر ھے کہ اگر برمی سرکار نے' جو اب دھیرے دھیرے کمیونسٹ اور کرین باغیوں سے اپنی کھوئی ہوئی زمین واپس لیتی جارھی ھے' اپنے دیش کی آرتھک حالت درست کرلی تو وھاں کرانتی کی وہ اگ بجھ جائیگی جس کی لپٹ ھندستان تک آسکتی ھے ۔

برطانیہ کا چناؤ ۔

انتر راشٹری معاملوں میں آسٹریلیا کی کمیونسٹ دشمنی کا ایک کارن وھاں کی راشٹری سرکار کی رنگت ھے ۔ اس نے اسی بنیاد پر چناؤ لڑا اور جیتا ھے اور اسی طرح برطانیہ کی ودیشی پالیسی پر بھی وھاں کے پچھلے فروری والے چناؤ کا اثر پڑ رھا ھے اس چناؤ میں لیبر پارٹی جیت تو گئی ھے مگر برطانی پارلیمنٹ میں اس کے ممبروں اور دوسری پارٹیوں ممبروں کی کے گنتی میں صرف چھ کا فرق تھا جو تین جگھوں کے خالی ھوجانے کے کارن اب اور کم ھو گیا ھے ۔ چناؤ میں ودیشی پالیسی کا کسی طرف سے کوئی زیادہ چرچا نہیں کیا گیا پھر بھی لیبر پارٹی اور ٹوری پارٹی کی درشٹی میں تھوڑا بہت فرق ضرور ھے ۔ ٹوری پارٹی والے روس اور کمیونزم کی دشمنی میں لیبر پارٹی سے بہت آگے ھیں وہ لیبر سرکار کو اسی طرف ڈھکیل رھیں ھیں ۔ اس کے علاوہ امریکہ کے رویہ سے بھی ان کو مدد مل رھی ھے اور لیبر سرکار میں اتنی شکتی نہیں کہ وہ اس دباؤ کا ڈٹ کر مقابلہ کرے ۔ اس کمزوری کے کارن وہ نہ تو اپنے دیش میں سوشلزم کو آگے بڑھا سکتی ھے اور نہ ودیشی معاملوں میں مستعدی اور ھمت کے ساتھ کوئی آزاد راستہ اپنا سکتی ھے ۔

अपने पैरों पर खड़ा कर दिया जाय और यह पैर वैसे ही हो जैसे अमरीका चाहता है जिसमे कि रूस और चीन को रोकने और धमकाने के लिये जापान मे अड्डे बनाये जा सकें.

कामनवेल्थ और हिन्दुस्तान

यह मक़सद अमरीका और बरतनिया के अलावा कामनवेल्थ के कुछ मम्बरों का भी है और उनमे अस्ट्रेलिया सबसे आगे आगे है. उस की राजधानी मे अगले मई मे कामनवेल्थ के देशों की एक कान्फ्रेन्स बुलाई गई है जिसमे उन देशों की आर्थिक तरक्क़ी पर सोच विचार किया जायगा. लेकिन राजनीतिक और फ़ौजी मसले इस बातचीत से अलग नही रह सकते. यह मसले अस्ट्रेलिया के विदेश मन्त्री के दिमाग़ पर छाये हुए हैं. वह आर्थिक तरक्की के लिये अमरीका की मदद को जरूरी समझते है और अमरीका राजनैतिक मुनाफ़े के बिना आर्थिक मदद देने के लिये तैयार नही होगा. अभी यह नहीं कहा जा सकता कि अमरीका कितना और कैसा मुनाफ़ा चाहेगा, लेकिन यह तय है कि इस मामले मे हिन्दुस्तान उतनी दूर तक नही जायगा जितनी दूर तक आस्ट्रेलिया कामनवेल्थ को ले जाना चाहता है. क्योंकि नेहरू सरकार अमरीका के नाराज़ हो जाने के बावजूद अपने आप को रूस विरोधी जत्थाबन्दी से अलग रखना चाहती है.

एक देश की तरफ़ से दूसरे देश की मदद के बारे मे हिन्दुस्तान का रवैया बरमा के लिये साठ करोड पौंड के उस क़र्ज़ से ज़ाहिर होगया है जिस मे हिन्दुस्तान भी शरीक है. इस मदद के साथ कोई राजनीतिक बन्धन नहीं हैं और इसकी बुनियाद सिर्फ़ इस

اپنے پیروں پر کھڑا کردیا جائے اور یہ پھر ویسے هی هوں جیسے کہ امریکہ چاهتا هے' جس میں کہ روس اور چین کو روکنے اور دھمکانے کے لئے جاپان میں اڈے بنائے جاسکیں ۔

کامن ویلتھ اور ھندستان

یہ مقصد امریکہ اور برطانیہ کے علاوہ کامن ویلتھ کے کچھ ممبروں کا بھی هے اور ان میں آسٹریلیا سب سے آگے آگے هے ۔ اس کی راجدھانی میں اگلے مئی میں کامن ویلتھ کے دیشوں کی ایک کانفرنس بلائی گئی هے جس میں ان دیشوں کی آرتھک ترقی پر سوچ وچار کیا جائیگا ۔ لیکن راج نیتک اور فوجی مسئلے اس بات چیت سے الگ نہیں رہ سکتے ۔ یہ مسئلے آسٹریلیا کے ودیش منتری کے دماغ پر چھائے هوئے هیں وہ آرتھک ترقی کے لئے امریکہ کی مدد کو ضروری سمجھتے هیں اور امریکہ راج نیتک منافع کے بنا آرتھک مدد دینے کے لئے تیار نہیں هوگا ۔ ابھی یہ نہیں کہا جاسکتا کہ امریکہ کتنا اور کیسا منافع چاهے گا' لیکن یہ طے هے کہ اس معاملے میں هندستان اُتنی دور تک نہیں جائے گا جتنی دور تک آسٹریلیا کامن ویلتھ کو لے جانا چاهتا هے ۔ کیونکہ نہرو سرکار امریکہ کے ناراض هو جانے کے باوجود اپنے آپ کو روس ورودھی جتھہ بندی سے الگ رکھنا چاهتی هے

ایک دیش کی طرف سے دوسرے دیش کی مدد کے بارے میں هندستان کا رویہ برما کے لئے ساٹھ کروڑ پونڈ کے اس قرض سے ظاهر هوگیا هے جس میں هندستان بھی شریک هے ۔ اس مدد کے ساتھ کوئی راج نیتک بندھن نہیں هیں ۔ اور اس کی بنیاد صرف اس

तक कि उसके देश के हालात या सरहद के वाक़ेआत उसे इसके लिये बिलकुल ही मजबूर न कर दे.

इतमीनान और चिन्ता

रूस की तरफ़ से इस इतमीनान के होते हुए भी जनरल आइज़न हावर को इस बात की बड़ी चिन्ता है कि अमरीका की फौजी ताक़त बहुत कम कर दी गई है और इसे बढ़ाना बहुत जरूरी है यही ख़याल अमरीका के दूसरे जिम्मेदार लोगो का भी है. और इसी लिये अमरीका के एटम-शक्ति कमीशन ने उस स्कीम को रोक कर, जिसके अनुसार कारख़ानो के लिये बिजली का बन्दोबस्त किया जाने वाला था, अपना पूरा ध्यान हाइड्रोजन बम बनाने पर लगा दिया है. अमरीका की इस चिन्ता का पता वाशिंगटन की उन ख़बरो से भी चलता है जिनमे कहा गया है कि दूर पूरब मे कम्युनिज्म के फैलाव को रोकने के लिये अमरीका, बरतानिया और फ्रान्स एक मिली जुली पालिसी बना ले. इस बात पर सोच विचार करने के लिये लन्दन मे इन तीनो देशो के विदेश मन्त्रियो की एक कान्फ्रेन्स बुलाई गई है जिसमें और बातो के साथ साथ जापान के साथ सुलह के समझौते पर भी बात चीत होगी और अगर इस समझौते के लिये रूस ने बरतानिया और अमरीका की यह बात न मानी कि इस समझौते की तैयारी मे जापान के खिलाफ़ लड़ने वाले दूसरे देशो को भी शरीक कर लिया जाय तो उसे छोड़ कर जापान से समझौता कर लिया जायगा.

जापान से समझौते की यह कोशिश इसलिये की जारही है कि वहाँ की जनता पर चीन के इनक़लाब का असर पड़ने से पहले उसे

تک کہ اس کے دیش کے حالات یا سرحد کے واقعات اسے اس کے لئے بالکل ہی مجبور نہ کر دیں .

اطمینان اور چنتا

روس کی طرف سے اس اطمینان کے ہوتے ہوئے بھی جنرل آئزن ہاور کو اس بات کی بڑی چنتا ہے کہ امریکہ کی فوجی طاقت بہت کم کردی گئی ہے اور اسے بڑھانا بہت ضروری ہے .یہی خیال امریکہ کے دوسرے ذمہ دار لوگوں کا بھی ہے . اور اسی لئے امریکہ کے ایٹم شکتی کمیشن نے اُس سکیم کو روک کر' جس کے انوسار کارخانوں کے لئے بجلی کا بندوبست کیا جانے والا تھا' اپنا پورا دھیان ہائیڈروجن بم بنانے پر لگا دیا ہے . امریکہ کی اس چنتا کا پتہ واشنگٹن کی ان خبروں سے بھی چلتا ہے جن میں کہا گیا ہے کہ دور پورب میں کمیونزم کے پھیلاؤ کو روکنے کے لئے امریکہ' برطانیہ اور فرانس ایک ملی جلی پالیسی بنالیں . اس بات پر سوچ وچار کرنے کے لئے لندن میں ان تینوں دیشوں کے ودیش منتریوں کی ایک کانفرنس بلائی گئی ہے جس میں اور باتوں کے ساتھ ساتھ جاپان کے ساتھ صلح کے سمجھوتے پر بھی بات چیت ہوگی . اور اگر اس سمجھوتے کے لئے روس نے برطانیہ اور امریکہ کی یہ بات نہ مانی کہ اس سمجھوتے کی تیاری میں جاپان کے خلاف لڑنے والے دوسرے دیشوں کو بھی شریک کرلیا جائے تو اسے چھوڑ کر جاپان سے سمجھوتہ کر لیا جائیگا .

جاپان سے سمجھوتے کی یہ کوشش اس لئے کی جارہی ہے کہ وہاں کی جنتا پر چین کے انقلاب کا اثر پڑنے سے پہلے اسے

ख़बर ठीक है. पचीस बरस के लगातार लड़ाई दंगे और अराजकता के बाद अकाल का पड़ना कोई ताज्जुब की बात नही. मगर इस से यह न समझना चाहिये कि चीन की कम्युनिस्ट सरकार अमरीका के सामने घुटने टेक देगी. ऐसा ही अकाल रूसी इनकलाब के बाद वहाँ भी पडा था और उसकी कहानी इतनी भयानक है कि रूस के इतिहास मे आमतौर से बयान नही की जाती. इस अकाल ने हज़ारो लाखो जाने ले ली मगर कम्युनिज्म के सैलाब को रोक नही सका चीन मे भी वह हालात के धारे को बदल नही सकेगा. इस का पता वहाँ की कम्युनिस्ट सरकार के विदेश-मन्त्री के उस बयान से चलता है जिस मे उन्होने अमरीका से कहा है कि वह एशिया को एशिया वालो के लिये छोड़ दे और इस मैदान मे अपने साम्राजी घोड़े न दौड़ाये.

यह बयान अमरीका के विदेश मन्त्री की उस चेतावनी का जवाब है जिसमे उन्होने चीनी जनता से कहा था कि अगर उसने अपने नये हुकमरानो (शासको) की सरदारी मे अपनी सरहद से बाहर क़दम निकाला तो इसका नतीजा बुरा होगा.

इस चेतावनी की अभी कोइ ज़रूरत नही थी एक तो इस लिये कि अकाल की कड़ियाँ चीन को बहुत दिनो तक सरहद के पार जाने से रोके रहेगी और दूसरे इसलिये कि चीन कोई कदम रूस की सलाह और शिरकत के बिना नही उठायेगा और रूस के बारे मे पिछली लडाई के सब से बड़े अमरीकी सेनापति जनरल आइज़न हावर का कहना है कि वह फ़िलहाल कोई लडाई नही शुरू करेगा जब

خبر ٹھیک ھے . پچیس برس کے لگاتار لڑائی دنگے اور اراجکتا کے بعد اکال کا پڑنا کوئی تعجب کی بات نہیں . مگر اس سے یہ نہ سمجھنا چاھئے کہ چین کی کمیونسٹ سرکار امریکہ کے سامنے گھٹنے ٹیک دے گی . ایسا ھی اکال روسی انقلاب کے بعد وھاں بھی پڑا تھا اور اُس کی کہانی اتنی بھیانک ھے کہ روس کے اتہاس میں عام طور سے بیان نہیں کی جاتی . اس اکال نے ھزاروں لاکھوں جانیں لے لیں مگر کمیونزم کے سیلاب کو روک نہیں سکا . چین میں بھی وہ حالات کے دھارے کو بدل نہیں سکے گا . اسکا پتہ وھاں کی کمیونسٹ سرکار کے ودیش منتری کے اُس بیان سے چلتا ھے جس میں انھوں نے امریکہ سے کہا ھے کہ وہ ایشیا کو ایشیاوالوں کے لئے چھوڑ دے اور اس میدان میں اپنے سامراجی گھوڑے نہ دوڑائے

یہ بیان امریکہ کے ودیش منتری کی اس چیتاونی کا جواب ھے جس میں اُنھوں نے چینی جنتا سے کہا تھا کہ اگر اس نے اپنے نئے حکمرانوں (شاسکوں) کی سرداری میں اپنی سرحد سے باھر قدم نکالا تو اس کا نتیجہ برا ھوگا .

اس چیتاونی کی ابھی کوئی ضرورت نہیں تھی . ایک تو اس لئے کہ اکال کی کڑیاں چین کو بہت دنوں تک سرحد کے پار جانے سے روکے رھیں گی اور دوسرے اس لئے کہ چین کوئی قدم روس کی صلح اور شرکت کے بنا نہیں اُٹھائیگا اور اس کے بارے میں پچھلی لڑائی کے سب سے بڑے امریکی سینا پتی جنرل آئزن ھاور کا کہنا ھے کہ وہ فی الحال کوئی لڑائی نہیں شروع کرے گا جب

अमरीका को यह गरीबी दूर करने की कोशिश करनी चाहिये. इस कोशिश को कामयाब बनाने के लिये अमरीकी सरकार अपनी पार्लिमेन्ट से एक बहुत बडी रकम मज़ूर करा रही है.

इस रास्ते मे कुछ रुकावटें भी है. अमरीका मे बहुत से लोग इस बात को भूल नही सकते कि चीन मे जनरलिस्मो च्यांग काई शेक की सरकार को अरबो रूपये की मदद देने के बाद भी अमरीका उसको कम्युनिज्म के धावे से बचा नही सका. और इस की सफाई मे मिस्टर एचसन ने कहा है कि चीनी सरकार की नालायकी और अंधेपन के कारन वहाँ की जनता ने उसका साथ नहीं दिया और उसकी हार से यह साबित नही होता कि अमरीका को चीन या दूसरे देशों को कोई मदद न देना चाहिये. इस मदद से रूस की रोक होने के अलावा अमरीका को खुद भी फायदा होगा. इसलिये कि गरीब और कम पैदावार वाले देशो मे वह सामान नहीं बन पाता जिसकी अमरीका को जरूरत है और लोगो के पास इतना पैसा नही होता जिससे वह अमरीकी कारखानो का माल खरीद सके.

चीन को चेतावनी

मंडियो की यह खोज अमरीका को आने वाले आर्थिक संकट से बचाने के लिये बहुत जरूरी है और इसीलिये अमरीका कम्युनिस्ट चीन से ब्योपार करने को भी तैयार है. उसके विदेश मत्री ने जब यह बात कही उससे पहले यह खबर आई थी कि चीन मे बडा सख्त अकाल पड़ गया है और सत्तर लाख आदमी भूको मर रहे हैं. यह

امریکہ کو یہ غریبی دور کرنے کی کوشش کرنی چاہئے . اس کوشش کو کامیاب بنانے کے لئے امریکی سرکار اپنی پارلیمنٹ سے ایک بہت بڑی رقم منظور کرا رہی ہے .

اس راستے میں کچھ رکاوٹیں بھی ہیں . امریکہ میں بہت سے لوگ اس بات کو بھول نہیں سکتے کہ چین میں جنرلسمو چیانگ کائی شیک کی سرکار کو اربوں روپیہ کی مدد دینے کے بعد بھی امریکہ اس کو کمیونزم کے دھاوے سے بچا نہیں سکا . اور اس کی صفائی میں مسٹر ایچی سن نے کہا ہے کہ چینی سرکار کی نالائقی اور اندھے پن کے کارن وہاں کی جنتا نے اسکا ساتھ نہیں دیا . اور اس کی ہار سے یہ ثابت نہیں ہوتا کہ امریکہ کو چین یا دوسرے دیشوں کو کوئی مدد نہ دینا چاہئے اس مدد سے روس کی روک ہونے کے علاوہ امریکہ کو خود بھی فائدہ ہوگا . اس لئے کہ غریب کم پیداوار والے دیشوں میں وہ سامان نہیں بن پاتا جس کی امریکہ کو ضرورت ہے اور لوگوں کے پاس اتنا پیسہ نہیں ہوتا جس سے وہ امریکی کارخانوں کا مال خرید سکیں .

چین کو چیتاونی

منڈیوں کی یہ کھوج امریکہ کو آنے والے آرتھک سنکٹ سے بچانے کے لئے بہت ضروری ہے اور اسی لئے امریکہ کمیونسٹ چین سے بیوپار کرنے کو بھی تیار ہے . اس کے ودیش منتری نے جب یہ بات کہی' اس سے پہلے یہ خبر آئی تھی کہ چین میں بڑا سخت اکال پڑ گیا ہے اور ستر لاکھ آدمی بھوکوں مر رہے ہیں . یہ

दुनिया का हाल



(भाई इशरत अली सिद्दीकी)

अमरीका और एशिया

अमरीकी सरकार ने अपने आर्थिक माहिरों और फौजी अफसरों की यह सलाह मान ली है कि रूस के साथ उसकी टक्कर की सम्भावना उतनी योरप मे नही है जितनी कि एशिया मे और इसी लिये जिस तरह उसके पिछले विदेश मंत्री जार्ज मार्शल ने योरपी राष्ट्रों की मदद के लिये एक प्रोग्राम बनाया था, जो मार्शल प्लान कहलाता है, इसी तरह उसके मौजूदा विदेश मंत्री डीन एचसन एशिया की मदद के लिये एक प्रोग्राम बना रहे है योरप की तरह एशिया मे भी इस मदद का मकसद यह है कि कम्युनिज्म के फैलाव को रोका जाय.

पिछले महीने (मार्च मे) मिस्टर एचसन ने इस के बारे मे कई भाषन दिये. उन मे उन्हो ने कहा कि कम्युनिज्म एक हथियार है जिस के जरिये रूस दुनिया के बड़े बड़े हिस्सों पर कब्जा जमाने की कोशिश कर रहा है और एशियाई जनता की गरीबी एक तरह की खाद है जिस मे कम्युनिज्म का पौदा परवान चढ़ता है इस लिये

دنیا کا حال

(بھائی عشرت علی صدیقی)

امریکہ اور ایشا

امریکی سرکار نے اپنے آرتھک ماھروں اور فوجی افسروں کی یہ صلاح مان لی ھے کہ روس کے ساتھ اس کی ٹکر کی سمبھاؤنا اتنی یورپ میں نہیں ھے جتنی کہ ایشا میں اور اسی لئے جسطرح اس کے پچھلے ودیش منتری جارج مارشل نے یورپی راشٹروں کی مدد کے لئے ایک پروگرام بنایا تھا، جو مارشل پلان کہلاتا ھے، اسی طرح اس کے موجودہ ودیش منتری ڈین ایچ سن ایشیا کی مدد کے لئے ایک پروگرام بنا رھے ھیں ۔ یورپ کی طرح ایشیا میں بھی اس مدد کا مقصد یہ ھے کہ کمیونزم کے پھیلاؤ کو روکا جائے ۔

پچھلے مہینے (مارچ میں) مسٹر ایچ سن نے اس کے بارے میں کئی بھاشن دئے ۔ اسمیں اُنھوں نے کہا کہ کمیونزم ایک ھتھیار ھے جس کے ذریعے روس دنیا کے بڑے بڑے حصوں پر قبضہ جمانے کی کوشش کر رھا ھے اور ایشیائی جنتا کی غریبی ایک طرح کی کھاد ھے جس میں کمیونزم کا پودا پروان چڑھتا ھے ۔ اس لئے

हैं. कुछ तैर कर इस पार आरहे हैं और कुछ तैरते तैरते डूब भी रहे हैं. जो इस पार उतर रहे हैं उन्हीं मे हुमायूं भी उतरता है. उसकी परेशानी अवर्णनीय है. सारे वस्त्र भीग गये हे. न सिरपर पगड़ी है और न पैरो मे जूते.]

लघु-यवनिका

मुस्लिम देश भक्त

[लेखक श्री० रतन लाल बंसल]

इस किताब मे कुछ ऐसे मुलमान देश भक्तो के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये है जिन्होने अंगरेजो के मनहूस क़दम यहां जमने के पहले ही उनके राज की बुराइयो का अन्दाजा कर लिया था और उनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने मे ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमो ने सन् १८५७ से भी पहले से आजादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होने हिन्दुस्तान और विदेशो मे रहते हुए भी अगरेजी हकूमत का मुकाबला किया. यह सब हाल पढ़कर आप दग रह जायंगे

किताब दोनो लिखावटो मे छपी है. कीमत १ रुपया १२ आने.

मैनेजर, 'नया हिन्द,'
४८ बाई का बाग, इलाहाबाद.

هیں . کچھ تیر کر اس پار آ رهے هیں اور کچھ تیرتے تیرتے ڈوب بھی رهے هیں . جو اس پار اُتر رهے هیں اُنھیں میں همایوں بھی اُترتا هے . اس کی پریشانی اورنیہ هے . سارے وستر بھیگ گئے هیں . نه سر پر پگڑی هے اور نه پیروں میں جوتے .]

لگھو یونیکا

مسلم دیش بھگت

[لیکھک — شري رتن لال بنسل]

اِس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھگتوں کے جیون کا حال اور اُنکے کارنامے بیان کئے گئے هیں جنھوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے هي انکے راج کي برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور اِن کو هندستان سے نکال بھگانے میں هند کي بھلائي دیکھي تھي.

اِس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم هوگا که کس طرح مسلمان عالموں نے سنه ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادي کي لڑائی شروع کر رکھی تھي. اپني جان هتھیلي پر رکھ کر اُنھوں نے هندستان اور ودیشوں میں رهتے هوئے بھي انگریزي حکومت کا مقابله کیا. یه سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے.

کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپی هے. قیمت ۱ روپیه ۱۲ آنے

منیجر' 'نیا هند'
۴۸ بائی کا باغ — الهٰ آباد

ब्रह्मादित्य — अच्छा, तो मैं फिर अपने काम पर जाऊँ, आज्ञा है ?

शेरशाह — (खड़े होते हुए) अच्छी बात है, पर रोज़ रात को सब हाल सुनाने आजाया करो.

ब्रह्मादित्य — प्रायः आ ही जाता हूँ. (शेरशाह और निजाम दोनो को अभिवादन कर के जाता है)

शेरशाह — (निजाम से) तो, चलो, निजाम, बहुत रात गई, हम लोग भी सो रहे.

[शेरशाह परछी के भीतर डेरे मे जाता है. निजाम कुछ न कह, एक लम्बी सॉस लेकर, धीरे धीरे उस के पीछे पीछे जाता है]

लघु यवनिका

छठवॉ–दृश्य

स्थान–कन्नौज का गंगा तट

समय–प्रातः काल.

[गंगा के दूसरे किनारे पर हुमायू के डेरे दिखाई पडते हैं गगा का पानी, रेत और सारा दृश्य सूर्य के प्रकाश से आलोकित है. उस पार हुमायू की सेना मे ऐसी भगदड़ मची है कि न कोई किसी की ओर देखता है और न कोई किसी की बात सुनता है ऐसा हो हल्ला हो रहा है कि कानो के परदे फट रहे हैं. विना किसी भी प्रकार के यद्ध के ऐसी भगदड़ और हल्ला एक विचित्र प्रकार का दृश्य है. बहुत से सैनिक बड़ी जल्दी जल्दी गंगा पार करने का प्रयत्न कर रहे

برهما دتیہ — اچھا، تو میں پھر اپنے کام پر جاؤں؛ آگیا ہے ؟

شیر شاہ — (کھڑے ہوتے ہوئے) اچھی بات ہے، پر روز رات کو سب حال سنانے آجایا کرو .

برهما دتیہ — پرایہ آہی جاتا ہوں . (شیر شاہ اور نظام دونوں کو ابھیوادن کرکے جاتا ہے .)

شیر شاہ — (نظام سے) تو چلو، نظام، بہت رات گئی، ہملوگ بھی سو رہیں .

[شیر شاہ پرچھی کے بھیتر ڈیرے میں جاتا ہے نظام کچھ نہ کہہ، ایک لمبی سانس لیکر، دھیرے دھیرے اس کے پیچھے پیچھے جاتا ہے .]

لگھو یونیکا

چھٹواں درشیہ

استھان — قنوج کا گنگا تٹ

سمے — پراتہ کال .

[گنگا کے دوسرے کنارے پر همایوں کے ڈیرے دکھائی پڑتے ہیں گنگا کا پانی، ریت اور سارا درشیہ سوریہ کے پرکاش سے آلوکت ہے اُس پار همایوں کی سینا میں ایسی بھگدڑ مچی ہے کہ نہ کوئی کسی کی اور دیکھتا ہے اور نہ کوئی کسی کی بات سنتا ہے . ایسا ہو ہلا ہو رہا ہے کہ کانوں کے پردے پھٹ رہے ہیں بنا کسی بھی پرکار کے یدھ کے ایسی بھگدڑ اور ہلا ایک وچتر پرکار کا درشیہ ہے بہت سے سینک بڑی جلدی جلدی گنگا پار کرنے کا پریتن کر رہے

निजाम — (चिन्ताकुल स्वर में) तो छोटी मोटी लड़ाई भी न होगी ?

ब्रह्मादित्य — यह कहना तो बहुत कठिन है, क्योंकि हुमायूँ भ। बड़ा बहादुर आदमी है, कुछ मुग़ल सैनिक भी उस के साथ हैं, किन्तु उसकी बची हुई सेना के अधिकांश सैनिक चघाटी है, चघाटियो मे कोई युद्ध न करेंगे यह निश्चित बात है.

निजाम — तो, भाई साहब, हम लोगो को अब जल्दी से जल्दी मुग़लों पर हमला कर देना चाहिये, क्योंकि रहे हुए सिपाही भी 'चलो भाई, घर चलें' कहते हुए चल दिये तो . .

ब्रह्मादित्य — (मुस्करा कर) शाहज़ादा साहब को देश के लिये युद्ध में भाग लेने की बड़ी चिन्ता है, जहाँ पनाह !

शेर शाह — पर क्यो, पडित, हुमायूँ पर हमला क्यो नही करता ?

ब्रह्मादित्य — (सोचते हुए) यह कुछ आश्चर्य की बात अवश्य है, किन्तु चौसा में जो कुछ हुआ उसके कारण जल्दी कुछ भी करने का कदाचित उसका साहस नहीं हो रहा है फिर भाइयो से उसे सहायता न मिली, इस लिये वह जानता है कि इस बार यदि उस की हार हुई तो या तो वह युद्ध में मारा जायगा, या उसे सदा के लिये यह देश ही छोड देना होगा.

[कुछ देर निस्तब्धता]

निजाम — (अधीर होकर) जो कुछ हो, जहाँ पनाह, हम को ही उसपर हमला करना चाहिये.

[कोई कुछ नहीं कहता, कुछ देर निस्तब्धता]

نظام — [چنتا کل سور میں) تو چھوٹی موٹی لڑائی بھی نہ ہوگی ؟

برہما دتیہ — یہ کہنا تو بہت کٹھن ہے' کیونکہ ہمایوں بھی بڑا بہادر آدمی ہے' کچھ مغل سینک بھی اس کے ساتھ ہیں' کنتو اس کی بچی ہوئی سینا کے ادھیکانش سینک چگھاتی ہیں' چگھاتیوں میں کوئی یدھ نہ کرینگے یہ نشچت بات ہے

نظام — تو' بھائی صاحب' ہم لوگوں کو اب جلدی سے جلدی مغلوں پر حملہ کردینا چاہئے کیونکہ رہے ہوئے سپاہی بھی 'چلو بھائی' گھر چلیں' کہتے ہوئے چل دیئے تو

برہما دتیہ — (مسکراکر) شاہزادہ صاحب کو دیش کے لئے یدھ میں بھاگ لینے کی بڑی چنتا ہے' جہاں پناہ !

شیر شاہ — پر کیوں' پنڈت' ہمایوں ہی ہم پر حملہ کیوں نہیں کرتا ؟

برہما دتیہ — (سوچتے ہوئے) یہ کچھ آشچریہ کی بات اوشیہ ہے' کنتو چوسا میں جو کچھ ہوا اُس کے کارن جلدی کچھ بھی کرنے کا کداچت اُس کا ساہس نہیں ہو رہا ہے ، پھر بھائیوں سے اُسے سہائتا نہ ملی' اس لئے وہ جانتا ہے کہ اس بار یدی اس کی ہار ہوئی تو یا تو وہ یدھ میں مارا جائیگا یا اسے سدا کے لئے یہ دیش ہی چھوڑ دینا ہوگا .

[کچھ دیر نستبدھتا]

نظام — (ادھیر ہوکر) جو کچھ ہو' جہاں پناہ' ہم کو ہی اُس پر حملہ کرنا چاہئے .

[کوئی کچھ نہیں کہتا. کچھ دیر نستبدھتا]

ब्रह्मादित्य—फिर जिनका ज्योतिष पर विश्वास नहीं है, उन्हे मुसलमान फकीर और हिन्दू साधु बनकर, और भी नजाने कैसे कैसे वेष बनाकर, तरह तरह से समझाया है. किसी को आपकी वीरता का दिग्दर्शन कराया है, किसी को आपकी सेवाओ का. भविष्य मे आप क्या करने वाले है, उन कार्यों से सब के साथ सैनिको का भी कितना लाभ होगा, यह भी कहा है मुगल विदेशी है, उनसे देश का उपकार न होगा, यह भी सिद्ध किया है.

शेर शाह—तुम्हारी कोशिशो का ही यह नतीजा निकला है कि 'चलो भाई, घर चलें' कह कर बहुत से सिपाही चले गये और चले जा रहे है.

ब्रह्मादित्य—अकेले इस समझाने बुझाने का यह फल हुआ है, यह तो नही कहा जा सकता.

शेर शाह — (हुक्का गुडगुडा कर धुआँ छोडते हुए) तब ?

ब्रह्मादित्य — पहले से ही हुमायूँ को लोग विदेशी समझते थे, बाबर ने इस देश और यहाँ के लोगो के लिये जो बातें लिखी है, उन्हे भी कई लोग जनाते थे. सुलतान महमूद लोदी की राज सस्था और सुलतान इब्राहीम लोदी की हारो को भी लोग भूले न थे और इनके कारण भी अब तक क्षोभ था. आपने जौनपूर, विहार आदि मे प्रजा की जो सेवाएँ की हैं तथा इधर आप को जो सफलताएँ मिली है, उनसे भी लोग अनभिज्ञ नही थे वायुमडल मेरे काम के लिये पहले से ही तैयार न होता तो मेरे काम का यह फल भी न निकलता. जो नतीजा आप देखते है यह हुआ है सब बातो के इकट्ठे सम्मिलन से.

برھما دتیہ — پھر جن کا جیوتش پروشو اس نہیں ھے اُنھیں مسلمان فقیر اور ھندو سادھو بن کر، اور بھی نہ جانے کیسے کیسے ویش بناکر، طرح طرح سے سمجھایا ھے. کسی کو آپ کی ویرتا کا دگ درشن کرایا، کسی کو آپ کی سیواؤں کا. بھوشیہ میں آپ کیا کرنے والے ھیں، اُن کاریوں سے سب کے ساتھ سینکوں کا بھی کتنا لابھ ھوگا، یہ بھی کہا ھے. مغل ودیشی ھیں، ان سے دیش کا اُپ کار نہوگا یہ بھی سدھ کیا ھے.

شیر شاہ — تمھاری کوششوںکا ھی یہ نتیجہ نکلا ھے کہ ' چلو بھائی، گھر چلیں ' کہہ کر بہت سے سپاھی چلے گئے اور چلے جا رھے ھیں.

برھما دتیہ — اکیلے اس سمجھانے بجھانے کا یہ پھل ھوا ھے، یہ تو نہیں کہا جاسکتا.

شیر شاہ — (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ھوئے) تب ؟

برھما دتیہ — پہلے سے ھی ھمایوں کو لوگ ودیشی سمجھتے تھے، بابر نے اس دیش اور یہاں کے لوگوں کے لئے جو باتیں لکھی ھیں، اُنھیں بھی کئی لوگ جانتے تھے سلطان محمود لودی کی راج سنستھا اور سلطان ابراھیم لودی کی ھاروں کو بھی لوگ بھولے نہ تھے اور ان کے کارن بھی اب تک چھوبھ تھا آپ نے جون پور، بہار آدی میں پرجا کی جو سیوائیں کی ھیں تتھا اِدھر آپ کو جو سپھلتائیں ملی ھیں، ان سے بھی لوگ انبھگیہ نہیں تھے. وایو منڈل میرے کام کے لئے پہلے سے ھی تیار نہ ھوتا تو میرے کام کا یہ پھل بھی نہ نکلتا. جو نتیجہ آپ دیکھتے ھیں، یہ ھوا ھے سب باتوں کے اکٹھے سم ملن سے.

निजाम—पर लड़ाई अब होगी कब ?

ब्रह्मादित्य—आप किसी दिन भी मुगलो पर हमला कर सकते हैं, क्योकि हुमायूं की रही हुई सेना मे से भी अधिकांश युद्ध करने वाली नही है.

शेर शाह—अच्छा, बची हुई फौज भी नहीं लड़ेगी ?

ब्रह्मादित्य—अधिकतर नही. मुगल तो बहुत थोड़े है, क्योकि हुमायूं को भाइयो से सहायता न मिलने के कारण सारे मुगल सैनिक तो आये ही नही. अधिकतर सैनिक इसीदेश के है, जैसा मैने कहा था किराये के टट्टू. मैने क्या क्या किया है इसे अब पूरी पूरी सफलता मिलने पर आज आपको बताता हूं.

शेर शाह—(हुक्का गुड़गुडाकर धुआँ छोड़ते हुए) हाँ हाँ, जरूर, वह बातें तो सुनने के क़ाबिल होंगी.

ब्रह्मादित्य—सुनिये—धीरे धीरे उनके कई मुसलमान सरदारों को मुसलमान नजूमी और इने गिने हिन्दू सरदारों को हिन्दू ज्योतिषी का वेष धारण कर मैने समझाया है कि आप का भविष्य क्या है. आपकी जनम पत्री बनाकर आप के ग्रहो का फल कहा है.

शेर शाह—(आश्चर्य से) लेकिन मेरी तो कोई जनम पत्री है ही नही.

ब्रह्मादित्य—जनम पत्री नहीं न सही, कर्म पत्री तो है. आपने अब तक जो कुछ किया है, उससे मैने आप की जनम पत्री मे जो ग्रह रखे है उनका फल ठीक मिल जाता है.

शेर शाह—ग़जब किया तुमने! (धीरे धीरे धुआँ नाक से निकालता है.)

نطام — پر لڑائی اب ہوگی کب ؟

برھما دتیہ — آپ کسی دن بھی مغلوں پر حملہ کرسکتے ہیں، کیونکہ ھمایوں کی رھی ہوئی سینا میں سے بھی ادھیکانش یدھ کرنے والی نہیں ھے

شیر شاہ — اچھا، بچی ہوئی فوج بھی نہیں لڑے گی ؟

برھما دتیہ — ادھک تر نہیں. مغل تو بہت تھوڑے ھیں، کیونکہ ھمایوں کو بھائیوں سے سہایتا نہ ملنے کے کارن سارے مغل سینک تو آئے ھی نہیں. ادھک تر سینک اسی دیش کے ھیں، جیسا میں نے کہا تھا کرائے کے ٹٹو. میں نے کیا کیا کیا ھے اسے اب پوری پوری سپھلتا ملنے پر آج آپ کو بتاتا ھوں

شیر شاہ — (حقہ گڑ گڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) ھاں ھاں، ضرور، وہ باتیں تو سننے کے قابل ھونگی.

برھما دتیہ — سنئے — دھیرے دھیرے ان کے کئی مسلمان سرداروں کو مسلمان نجومی اور اِنے گنے ھندو سرداروں کو ھندو جیوتشی کا ویش دھارن کر میں نے سمجھایا ھے کہ آپ کا بھوشیہ کیا ھے. آپ کی جنم پتری بناکر آپ کے گرھوں کا پھل کہا ھے.

شیر شاہ — (آشچریہ سے) لیکن میری تو کوئی جنم پتری ھے ھی نہیں.

برھما دتیہ — جنم پتری نہیں نہ سہی، کرم پتری تو ھے. آپ نے اب تک جو کچھ کیا ھے، اس سے میں نے آپ کی جنم پتری میں جو گرہ رکھے ھیں، ان کا پھل ٹھیک مل جاتا ھے

شیر شاہ — غضب کیا تم نے! (دھیرے، دھیرے دھواں ناک سے نکالتا ھے)

लौंडी—(ज़ोर से) दौड़ा, दौड़ो,.　　कोई आओ, मलिका...... मलिका को क्या हो गया है !

[लाड का अट्टहास और लौंडी का शोर साथ साथ चलता है]

(लघु-यवनिक)

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—कन्नौज मे गंगा तट पर शेरशाह का शिविर.

समय—रात्रि.

[दूर पर गंगा है. उसके किनारे शिविर के डेरो की पंक्तिया दिखाई देती है, परन्तु रात के कारण गगा का प्रवाह और डेरे धुंधले धुंधले दिखाई पड़ते है. निकट ही शेर शाह के डेरे का कुछ भाग और उसकी परछी दिखाई देती है. परछी मे गद्दी पर शेर शाह और उसके सामने क़ालीन पर निज़ाम और ब्रह्मादित्य बैठे हुए हैं शेर शाह हुक्का पी रहा है. परछी के बाहर जो मशाल जल रही है, उसके कारण परछी का दृश्य स्पष्ट है.]

शेर शाह—तुमने सचमुच ही ग़ज़ब किया. पंडित! (हुक्का गुडगुडा कर धुआँ छोड़ते हुए) हुमायूँ के इतने सिपाही 'चलो भाई, घर चले' यह कह कह कर चल देंगे, इसे हुमायूँ ही ने क्या, मैंने भी न सोचा था. यह हाल देखकर मुझे तो यूनान के सिकन्दर के हमले की याद आती है.

ब्रह्मादित्य—मुझे दुख यही है, जहाँ पनाह, कि इन सैनिको को मैं अपनी ओर न कर सका. इनमे घर भागने का तो साहस है, पर मुग़लो को छोड़ कर हमारी ओर से लड़ने का नहीं.

لونڈي — (زور سے) دوڑو، دوڑو..　　کوئي آؤ، ملکہ ... ملکہ کو کیا ہوگیا ہے !

[لاڈ کا اَٹہاس اور لونڈي کا شور ساتھ ساتھ چلتا ہے]

(لگھو ایونیکا)

پانچواں درشیہ

استھان — قنوج میں گنگاتٹ پر شیر شاہ کا شیور

سمے — راتری

[دور پر گنگا ہے . اُس کے کنارے شیور کے ڈیروں کی پنکتیاں دکھائی دیتي ہیں ' پرنتو رات کے کارن گنگا کا پرواہ اور ڈیرے دھندلے دھندلے دکھائی پڑتے ہیں نکٹ ہی شیر شاہ کے ڈیرے کا کچھ بھاگ اور اس کي پرچھی دکھائی دیتی ہے . پرچھي میں گدی پر شیر شاہ اور اس کے سامنے قالین پر نظام اور برہما دتیہ بیٹھے ہوئے ہیں . شیر شاہ حقہ پی رہا ہے پرچھی کے باہر جو مشعل جل رہی ہے' اس کے کارن پرچھی کا درشیہ سپشٹ ہے]

شیر شاہ — تم نے سچ مچ ہی ہی غضب کیا' پنڈت ! (حقہ گڑ گڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) ہمایوں کے اتنے سپاہی 'چلو بھائی گھر چلیں' یہ کہہ کہہ کر چل دیں گے' اسے ہمایوں ہي نے کیا میں نے بھی نہ سوچا تھا . یہ حال دیکھ کر مجھے تو یونان کے سکندر کے حملے کي یاد آتی ہے .

برہما دتیہ — مجھے دکھ یہی ہے جہاں پناہ' کہ اِن سینکوں کو میں اپني اور نہ کرسکا . ان میں گھر بھاگنے کا تو ساہس ہے' پر مغلوں کو چھوڑ کر ہماری اور سے لڑنے کا نہیں .

लौंडी—कौन मलिका, कौन चला गया ?

लाड—(आँखे फाड़ कर सामने की ओर पागलों की तरह देखते और हाथ उठा कर उंगली से सकेत करते हुए) वह . वह . वह देखो, . . . वह . . वह जा रहा है ! नसीम . नसीम भी जा रही है ! . पुकारो, नसीम ! पुकारो, (कुछ रुक कर) नहीं....... नहीं लौटता ?

लौंडी—(कुछ घबरा कर) कौन नही लौटता मलिका ?

लाड—(अपनी ही धुन मे) नसीम ! .. . नसीम ! कहो न उससे कि मै पुकार रही हूँ, बानू पुकार रही है उसकी तस्वीरें पुकार रही है .... तस्वीरें ! ... . आग ! . . आग ! .....

लौंडी—(घबराकर) मलिका ! मलिका! आपको क्या हो गया है ? कहाँ है आग ?

लाड—(एक तस्वीर उतार उसे सामने की ओर फेंकते हुए) वह......वह देखो, तस्वीरें जल रही हैं

लौंडी—(एक दम घबराकर जोर से) मलिका ! मलिका !

लाड (आँखे फाड़ फाड़ कर सामने की ही ओर देखते हुए) हाँ, हाँ, तस्वीरें जल रही हैं, ... महल जल रहा है, ... सब कुछ जल रहा है! ....यह........यह देखो (अपने दामन को दोनो हाथों से पकड़ कर) यह देखो, मेरे दामन को भी लपटो ने पकड़ लिया ! ....अ ह ह हा ! ......अ ह ह हा !......

لونڈی ـــ کون ملکہ، کون چلا گیا ؟

لاڈ ـــ (آنکھیں پھاڑ کر سامنے کی اور پاگلوں کی طرح دیکھتے اور هاتھ اُٹھا کر انگلی سے سنکیت کرتے هوئے) وہ . وہ . . وہ دیکھو، . وہ . وہ جارها هے ! نسیم . نسیم بھی جارهی هے ! . پکارو، نسیم ! پکارو، (کچھ رک کر) نہیں . . نہیں لوٹتا ؟

لونڈی ـــ (کچھ گھبراکر) کون نہیں لوٹتا ملکہ ؟

لاڈ ـــ (اپنی هی دهن میں) نسیم ! . . . . نسیم ! کہو نہ اُس سے کہ میں پکار رهی هوں، ..... بانو پکار رهی هے .. اس کی تصویریں پکار رهی هیں ...... تصویریں ! .. . آگ ! ..... آگ ! ... .

لونڈی ـــ (گھبراکر) ملکہ ! ملکہ ! پ کو کیا هوگیا هے ؟ کہاں هے آگ ؟

لاڈ ـــ(ایک تصویر اُتار اُسے سامنے کی اُور پھینکتے هوئے) وہ .. وہ دیکھو، تصویریں جل رهی هیں

لونڈی ـــ (ایک دم گھبراکر زور سے) ملکہ ! ملکہ !

لاڈ ـــ (آنکھیں پھاڑ پھاڑ کر سامنے کی هی اور دیکھتے هوئے) هاں، هاں، تصویریں جل رهی هیں، ...... محل جل رها هے ، ...... سب کچھ جل رها هے ! ... ... یہ ... یہ دیکھو (اپنے دامن کو دونوں هاتھوں سے پکڑ کر) یہ دیکھو میرے دامن کو بھی لپٹوں نے پکڑ لیا ! ..... آها ها ها ! ..... آها ها ها ! ......

नहीं सकती। जिन्दगी रहते विट नहीसमकी (आँखें खोल कर) परवरदिगार। किस दूसरे को चाहा है मैंने और किस दूसरे को चाहा है निजाम ने ?......फिर भी मैं उसे समझा न सकी कि दीवाने, तेरी मुहब्बत पाक है ...वह चला गया.. तस्वीरें जल रही थी, मुसव्विर की जिन्दगी जल रही थी, उसकी आरज़ू जल रही थी और वह चला गया! ...... वह चाला गया अपनी हसरतों को लेकर, वह चला गया मुहब्बत के शोलो को उछालता हुआ . . काश मैं उस दिन ही जल जाती। .... आँखें खोल कर मैंने पुकारा—निजाम। ..,.. सब चुप थे. तकदीर बोली, पगली, अपने दामन को संभाल, वह चला गया, तेरे दामन को मोतियो से भर कर चला गया।

[नसीम की आवाज़ नेपथ्य से आती है — 'मुसव्विर। मुसव्विर। ']

लाड — (चौंक कर सामने देख) मुसव्विर ? मुसाव्वर चला गया। (सामने देखते हुए, आश्चर्य से) नसीम। . नसीम।

[नसीम का खाली पिंजरा लिये हुए एक लोंडी का प्रवेश]

लोंडी—नसीम उड़ गई, मलिका।

लाड—नसीम उड़ गई ? नसीम भी चली गई ?

लोंडी—हाँ, मलिका, चली गई।

लाड—चली गई, अपनी सहेली से बिना कुछ कहे चली गई। ... चली गई .. मुझे हमेशा के लिये तनहा छोड़ कर चली गई। ... महल हँस रहा है, फूल हस रहे है, अ ह ह हा। मलिका हस रही है, पर लाड को सहेली चली गई, बानू की सहेली चली गई. अ ह ह हा! बानू की सहेली ईद के दिन चली गई. और वह भी चला गया!

نہیں سکتی، زندگی رھتے مت نہیں سکتی! (آنکھیں کھول کر) پروردگار! کس دوسرے کو چاھا ھے میں نے اور کس دوسرے کو چاھا ھے نظام نے؟ .... پھر بھی میں اسے سمجھا نہ سکی کہ دیوانے، تیری محبت پاک ھے. وہ چلا گیا. تصویریں جل رھی تھیں، مصور کی زندگی جل رھی تھی، اس کی آرزو جل رھی تھی اور وہ چلا گیا! ... وہ چلا گیا، اپنی حسرتوں کو لیکر، وہ چلا گیا محبت کے شعلوں کو اُچھالتا ھوا ..کاش میں اس دن ھی جل جاتی! آنکھیں کھول کر میں نے پکارا — نظام! ... سب چپ ھے. تقدیر بولی، پگلی، اپنے دامن کو سنبھال، وہ چلا گیا، تیرے دامن کو موتیوں سے بھر کر چلا گیا!

[نسیم کی آواز نیپھتیہ سے آتی ھے — 'مصور! مصور!']

لاڈ — (چونک کر سامنے دیکھ) مصور؟ مصور چلا گیا! (سامنے دیکھتے ھوئے، آشچریہ سے) نسیم! . نسیم!..

[نسیم کا خالی پنجرہ لئے ھوئے ایک لونڈی کا پرویش]

لونڈی — نسیم اڑگئی، ملکہ!

لاڈ — نسیم اڑگئی؟ نسیم بھی چلی گئی؟

لونڈی — ھاں، ملکہ، چلی گئی!

لاڈ — چلی گئی، اپنی سہیلی سے بنا کچھ کہے چلی گئی! ..... چلی گئی .. مجھے ھمیشہ کے لئے تنہا چھوڑ کر چلی گئی! ... محل ھنس رھا ھے، پھول ھنس رھے ھیں، اھا ھا ھا! ملکہ ھنس رھی ھے، پر لاڈ کی سہیلی چلی گئی، بانو کی سہیلی چلی گئی، اھا ھا ھا! بانو کی سہیلی عید کے دن چلی گئی اور وہ بھی چلا گیا!

दुआ तुझ तक पहुंच गई, मेरे खुदा! . और ..और मेरी दरख्वास्त मंजूर भी हो गई! (अट्टहास कर आँखे खोलते हुए) होती कैसे नही? (फिर घुटने टेक कर) पाक दरख्वास्त थी, अल्लाह! (खड़े होकर) वह दरख्वास्त मंजूर न होना होती तो उस दिन उस जलते हुए महल में से लौंडियाँ मुझे जीता हुआ कैसे निकाल लाती? ...उसकी पाक मुहब्बत ने मुझे महल की आग से बचा लिया तो क्या मेरी पाक मुहब्बत उसे जंग की आग से न बचायेगी? (कुछ रुक कर) कैसे ..कैसे निज़ाम कहता है कि हमारी मुहब्बत पाक नहीं, मेरे ख़ुदा?...शौहर बीवी की मुहब्बत पाक है!... क़ाजी के शादी करा देने के सबब!...और शादी...शादी कैसी परवरदिगार? ...शौहर उसे तलाक देकर तोड़ सकता है.....हिंदुओ का विवाह ...उनका पतिव्रत धर्म... उसका पाक होना, कुछ दूर तक मेरी समझ मे भी आता है, पर जहाँ शादी टूट सकती है, टूटने के बाद दूसरी हो सकती है, वह पाक कैसी? अगर बीवी को भी तलाक का अख्तियार होता तो क्या अल्लाह, मै अपनी पहली और इस शादी को क़ायम रखती? (कुछ रुक कर, फिर आँख बन्द कर) क्या ... क्या हो रहा है फिर दिमाग़ मे? (कुछ रुक कर, आँखे खोल, चिल्लाकर) ए खुदा! खुदगर्ज़ों ने मेरे जिस्म का सौदा बिना मेरी मर्ज़ी के किया था! (धीमे स्वर मे, किन्तु जल्दी जल्दी) मैने जिस्म का सौदा नही, अपनी तमन्नाओं का सौदा, अपने दिल का सौदा, कपहली बार, एक ही लमहे मे, एक ही शख्स, निज़ाम से किया था. (आँख बन्दकर) उस ने मेरी तस्वीर तख्ते पर खींची थी और मैने खींची थी अपनी आइन्दा जिन्दगी के खयाली परदे पर. जो जल

دعا تجھ تک پہنچ گئی، میرے خدا! . . . . . اور .. . . اور میری درخواست منظور بھی ہوگئی! (اٹاھاس کر آنکھیں کھولتے ہوئے) ہوتی کیسے نہیں؟ (پھر گھٹنے ٹیک کر) پاک درخواست تھی، اللہ! (کھڑے ہوکر) وہ درخواست منظور نہ ہونا ہوتی تو اُس دن اُس جلتے ہوئے محل میں سے لونڈیاں مجھے جیتا ہوا کیسے نکال لائیں؟ . اُس کی پاک محبت نے مجھے محل کی آگ سے بچالیا تو کیا میری پاک محبت اُسے جنگ کی آگ سے نہ بچائیگی؟ (کچھ رک کر) کیسے کیسے نظام کہتا ھے کہ ھماری محبت پاک نہیں، میرے خدا؟ شوھر بیوی کی محبت پاک ھے! .. ... قاضی کے شادی کرا دینے کے سبب! ... . اور شادی ...... شادی کیسی پروردگار؟ .. شوھر اُسے طلاق دیکر توڑ سکتا ھے ... . ھندوؤں کا وواہ .. ان کا پتی ورت دھرم .... اسکا پاک ھونا، کچھ دور تک میری سمجھ میں بھی آتا ھے، پر جہاں شادی ٹوٹ سکتی ھے، ٹوٹنے کے بعد دوسری ھوسکتی ھے، وہ پاک کیسی؟ .. .. اگر بیوی کو بھی طلاق کا اختیار ھوتا تو کیا اللہ، میں اپنی پہلی اور اس شادی کو قائم رکھتی؟ (کچھ رک کر، پھر آنکھ بند کر) کیا . ..... کیا ھو رھا ھے پھر دماغ میں؟ (کچھ رک کر، آنکھیں کھول، چلاکر) اے خدا! خود غرضوں نے میرے جسم کا سودا بنا میری مرضی کے کیا تھا! (دھیمے سور میں، کنتو جلدی جلدی) میں نے جسم کا سودا نہیں، اپنی تمناؤں کا سودا، اپنے دل کا سودا، ایک ہی بار، ایک ھی لمحے میں، ایک ھی شخص، نظام سے کیا تھا۔ (آنکھیں بند کر) اُسنے میری تصویر تختے پر کھینچی تھی اور میں نے کھینچی تھی اپنی آئندہ زندگی کے خیالی پردے پر۔ جو جل

शेर शाह

(सेठ गोविन्द दास)

चौथा दृश्य

स्थान—बिहार शरीफ मे शेरशाह के मकान मे लाड मलिका के कमरे का बरामदा.

समय—संध्या

[यह बरामदा भी करीब करीब वैसा ही है, जैसा चुनार का था , अन्तर है दीवार के रंग और खम्भो तथा दीवार की बनावट मे बरामदे के इस ओर लाड मलिका घुटने टेके हुए, आँखे बन्द किये है उस ओर नसीम के पिंजरे का कुछ भाग दिखाई देता है, परन्तु पूरा पिंजरा नहीं दिखता और नसीम भी नही.]

लाड—(कुछ देर बाद दोनो हाथ जोड़ कर आगे फैलाकर, सामने की ओर देखते हुए) ए खुदा ! उन्हे जीत बख्शना ! आज ईद के दिन यही मेरी इलतजा है ... वह मुल्क के लिए अपनी जीत चाहते है, मैं मुल्क के लिए . निजाम की फतह चाहती हूँ (कुछ रुक कर) और और यह भी मिन्नत करती हूँ कि कन्नौज की यह जग मुगलो से आखिरी जग हो. निजाम का बाल बाँका न हो और वह जल्द से जल्द मेरे पास लौट आवे (कुछ देर फिर आँखे बन्द कर, फिर खोल कर, खड़े हो.) कभी कभी दिमाग मे कैसा कैसा फ़ितूर सा जान पड़ता है, अल्लाह ! (फिर आँख बन्द कर, कुछ देर पश्चात् आँखे बन्द ही किये हुए एकाएक) मालूम होता है

شیر شاہ

(سیٹھ گووندداس)

چوتھا درشیہ

استھان — بہار شریف میں شیر شاہ کے مکان میں لاڈ ملکہ کے کمرے کا برآمدہ۔

سمے — سندھیا

[یہ برآمدہ بھی قریب قریب ویسا ہی ہے' جیسا چنار کا تھا' انتر ہے دیوارکے رنگ اور کھمبھوں تتھا دیوار کی بناوٹ میں برآمدے کے اِس اور لاڈ ملکہ گھٹنے ٹیکے ہوئے' آنکھیں بند کئے ہے. اُس اور نسیم کے پنجرے کا کچھ بھاگ دکھائی دیتا ہے' پرنتو پورا پنجرہ نہیں دکھتا اور نسیم بھی نہیں .]

لاڈ — (کچھ دیر بعد دونوں ہاتھ جوڑ کر آگے پھیلاکر سامنے کی اور دیکھتے ہوئے) اے خدا ! اُنھیں جیت بخشنا ! آج عید کے دن یہی میری التجا ہے وہ ملک کے لئے اپنی جیت چاہتے ہیں میں ملک کے لئے نظام کی فتح چاہتی ہوں (کچھ رک‌کر) اور اور یہ بھی منت کرتی ہوں کہ قنوج کی یہ جنگ مغلوں سے آخری جنگ ہو نظام کا بال بانکا نہ ہو اور وہ جلد سےجلد میرے پاس لوٹ آوے (کچھ دیر پھر آنکھیں بند کر' پھر کھول کر' کھڑے ہو) کبھی کبھی .. دماغ میں کیسا کیسا فتور سا جان پڑتا ہے' اللہ ! (پھر آنکھ بند کر' کچھ دیر پشچات آنکھیں بند ہی کئےہوئے ایکا ایک) معلوم ہوتا ہے

८

बेढंगा प्रयोग पिशाच वाणी या जिन्नाती भाषा है. जैसी संस्कृत गर्भित हिन्दी आज लिखी जा रही है वह पढे लिखे मजदूरो की जीवन-धारा, उनके जीवन संस्कार, उनको मानसिक प्रेरणाओं, वृत्तियों, उनके कंठकी बनावट, उनकी जीभ और तालू, उनके सुन्ने और बोलने की शक्ति, उनके गुण, कर्म, स्वभाव सबके खिलाफ है. किताबी हिन्दी पढ़कर वह साक्षर हो जायँगे लेकिन किताबी हिन्दो को वह अपनाऐंगे कभी नहीं. उनकी मांग हमे पूरी करनी पड़ेगी और वह मांग होगी तद्‌द्भव प्रधान बोल चाल के हिन्दी साहित्य की. किताबी हिन्दी का प्रचार ही किताबी हिन्दी को मिटादेगा

इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से.

रटे और घोखे हुए शब्द, रटी और घोखी हुई पुस्तकें, घोट घोट कर पिलाये हुए शब्द, जीभ मरोड़ और जबड़ा तोड़ शब्द, वह शब्द और शैली जो हिन्दी का सांचा ही तोड़ ताड कर रखदेते है वह १५ करोड की मजदूर जनता मे चालू हो जायँगे, ऐसा सोचना पागल पन के सिवा और कुछ नही ऐसा प्रलय काल तक नहीं हो सकेगा. सुना आपने ? नए शब्द हर भाषा मे बराबर मिलते और खपते रहते हैं लेकिन प्रचलित और जीभो पर चढ़े हुए शब्दो मे ताल मेल खाने वाले, जनता की बोली के सांचे मे ढले हुए नये शब्द हिन्दी जनता आजकल की हिन्दी देख और सुनकर काप उठ ती है और उसको पढ़कर लोगों के मुंह दुखने लगते है

کا بے ڈھنگا پریوگ پشاچ وانی یا جناتی بھاشا هے. جیسی سنسکرت گربھت هندی آج لکھی جارهي هے وه پڑھے لکھے مزدوروں کی جیون دھارا ' ان کے جیون سنسکار' ان کی مانسک پر یرناؤں' ورتیوں' ان کے کنٹھ کی بناوٹ ا ن کی جیبھ اور تالو' ان کے سنّنے اور بولنے کي شکتی' ان کے گن' کرم سوبھاو سب کے خلاف هے کتابی هندی پڑھکر وه ساکچھر هوجائینگے لیکن کتابی هندی کو وه اپنائیں گے کبھي نہیں ان کی مانگ همیں پوری کرنی پڑیگی اور وه مانگ هوگی تدبھو پردھان بول چال کے هندی . ساهتیه کی . کتابی هندي کا پرچار هی کتابی هندی کو مٹادیگا

اس گھر کو آگ لگ گئي گھر کے چراغ سے

رٹے اور گھوکھے هوئے شبد' رٹی اور گھوکھي هوئی پستکیں' گھونٹ گھونٹ کر پلائے هوئے شبد' جیبھ مروڑ اور جبڑا توڑ شبد وه شبد اور شیلي جو هندي کا سانچا هے توڑ تاڑ کر رکھ دیتے هیں وه پندره کروڑ کی مزدور جنتا مین چالو هو جائیں گے ایسا سوچنا پاگل پن کے سوا اور کچھ نہیں ایسا پرلے کال تک نہیں هوسکیگا سنا آپ نے ؟ نئے شبد هر بھاشا میں برابر ملتے اور کھپتے رهتے هیں لیکن پر چلت اور جیبھوں پر چڑھے شبدوں سے تال میل کھانے والے' جنتا کی بولی کے سانچے میں ڈھلے هوئے نئے شبد ! هندي جنتا آج کل کی هندی دیکھ اور سن کر کانپ اُٹھتی هے اور اس کو پڑھکر لوگوں کے منه دکھنے لگتے هیں .

जब सब लोग या ४० फीसदी लोग भी किताबें पढ़ने लगेंगे उस दिन साहित्यकार मजबूर हो जायगे कि बोली को मिटा या बिगाड़ या बदल कर उसे किताबी भाषा बनाने के बदले किताबी भाषा को मिटाकर, बना कर और बदलकर जनता की सजीव भाषा मे साहित्य रचना करने लगें. हिन्दी साहित्यकारों को झकमार के तद्भव प्रधान भाषा और शैली सीखनी और बरतना होगी. और इस तद्भव प्रधान भाषा और शैली से अरबी फारसी के हजारों प्रचलित शब्द निकाले नहीं जा सकेंगे भावी हिन्दी समाज की रूप रेखा बिलकुल बदली हुई चीज होगी यह समाज पढ़ेलिखों का समाज होता हुआ भी "किताबी" समाज, मुन्शियों और पंडितों का समाज न होगा यह समाज मजदूरों का समाज होगा और वह भी मशीन चलाने वाले मजदूरों का वेदों के समय से या आदिकाल से आज तक इस समाज का कोई सम्बध मिश्रित व्यंजन वाले, जटिल और कठिन उच्चारण वाले तत्सम तसस्कृत शब्दों से नहीं रहा है यह भी न भूलिये कि जब संस्कृत का यहाँ १०—२० फीसदी लोगों में भी प्रचार था उस समय सस्कृत में कुछ नरमी और सुगमता भी थी हिन्दी साहित्यकार इतनी सस्कृत नहीं जान सकते कि सरल सस्कृत शब्दों को ही चुनें वह तो कोश से भारी भरकम और जटिल सस्कृत शब्द ही पा सकते और उठा सकते है. तुलसीदास तक सुगम और नरम सस्कृत शब्द ला सके है लेकिन पत, निराला गुप्त और प्रसाद जी के बस का यह काम नहीं सस्कृत से हिन्दी को सुगम रखते हुए सुन्दर बनाया जा सकता है. लेकिन यह भी न भूलिये कि संस्कृत से हिन्दी को भद्देस भी बनाया जा सकता है. देव वाणी का

جب سب لوگ یا ۴۰ فیصدی لوگ بھی کتابیں پڑھنے لگیں گے اس دن ساهتیه کار مجبور هوجائینگے که بولی کو مٹا یا بگاڑ یا بدل کر اُسے کتابی بھاشا بنانے کے بدلے کتابی بھاشا کو مٹاکر' بناکر اور بدل کر جنتا کی سجیو بھاشا میں ساهتیه رچنا کرنے لگیں. هندی ساهتیه کاروں کو جھک مارکے تدبھو پردھان بھاشا اور شیلی سیکھنی اور برتنی هوگی اور اس تدبھو پردھان بھاشا اور شیلی سے عربی فارسی کے هزاروں پرچلت شبد نکالے نہیں جاسکیں گے بھاوی هندی سماج کی روپ ریکھا بالکل بدلی هوئی چیز هوگی یه سماج پڑھے لکھوں کا سماج هوتا هوا بھی "کتابی" سماج' منشیوں اور پنڈتوں کا سماج نه هوگا یه سماج مزدوروں کا سماج هوگا اور وہ بھی مشین چلانے والے مزدوروں کا ویدوں کے سمے سے یا آدی کال سے آج تک اس سماج کا کوئی سمبندھ مشرت ویلجن والے' جٹل اور کٹھن اُچچارن والے تت سم سنسکرت شبدوں سے نہیں رها هے یه بھی نه بھولئے که جب سنسکرت کا یہاں ۱۰—۲۰ فیصدی لوگوں میں بھی پرچار تھا اس سمے سنسکرت میں کچھ نرمی اور سگمتا بھی تھی هندی ساهتیه کار اتنی سنسکرت نہیں جان سکتے که سرل سنسکرت شبدوں کو هی چنیں وہ تو کوش سے بھاری بھرکم اور جٹل سنسکرت شبد هی پاسکتے اور اٹھا سکتے هیں. تلسی داس تک سگم اور نرم سنسکرت شبد لاسکتے هیں. لیکن پنت نرالا' گپت اور پرساد جی کے بس کا یه کام نہیں سنسکرت سے هندی کو سگم رکھتے هوئے سندر بنایا جاسکتا هے لیکن یه بھی نه بھولئے که سنسکرت سے هندی کو بھدیس بھی بنایا جاسکتا هے. دیو وانی کا

लेकिन क्या ऐसा हो सकेगा कि जनता अपने कंठों और जीभों मे रची और बसी हुई बोली को भुला के टेढ़ी मेढी और अटपट किताबी भाषा बोलने लगे ? किताबी भाषा से पाला ९९ फीसदी लोगो का घन्टे आध घटे रोजाना होगा विराट समाज और उसकी बोली उनके जनम मरन के साथी होगे किताब के जटिल शब्द जे बार उनके कानो मे गूजेंगे उन से हजार गुना सीधे सादे प्रचलित बोल चाल के शब्द उनके कानो मे गूजेंगे किताबो द्वारा बोलिया नही बदला करती बोली की शक्ति किताबो को मिटा देती है. संस्कृत बदल कर हिन्दी बन गई सस्कृत मे न कोई अब बात चीत करता है न लिखता पढ़ता है. हिन्दी सस्कृत प्रधान भाषा कभी न बन सकेगी. ऐसा कभी नही हो सकेगा ऐसा होना भाषा विज्ञान, समाज शास्त्र, साहित्य और इतिहास के नियमो और शक्तियो के विरुद्ध होगा उलटी गगा बहाने का सपना, बालू की रस्सी बटने का सपना देखा कीजिये. यह सपना सपना ही रहेगा.

अत मे मुझे एक प्रबल सिद्धात एक अटल असूल की तरफ सब का ध्यान खींचना है. जब तक लोग अनपढ़ है जब तक हिन्दी को बनाने बिगाडने वाले एक हजार मे एक आध लोग है, जब तक मुट्ठी भर कलम के सूरमा साहित्य के मैदान मे पैतरे दिखा रहे है तभी तक हिन्दी को सस्कृत गर्भित और सस्कृत प्रधान भाषा बनाने की और जनता की हिन्दी के प्रचलित टकसाली तद्भव. देशज, अरबी फारसी शब्दो से ठिनकने और उनसे छुआछूत करने की जड़ता, मूर्खता, शरारत और प्रतिक्रिया चल सकती है.

لیکن کیا ایسا هوسکیگا که جنتا اپنے کنٹھوں اور جیبھوں میں رچی اور بسی هوئی بولی کو بھلا کے ٹیڑھی میڑھی اور اٹ پٹ کتابی بھاشا بولنے لگے ؟ کتابی بھاشاسے پالا ۹۹ فیصدی لوگوں کا گھنٹے آدھ گھنٹے روزانہ هوگا وراٹ سماج اور اس کی بولی ان کے جنم مرن کے ساتھی هونگے . کتاب کے جٹل شبد جے بار ان کے کانوں میں گونجیں گے ان سے هزار گنا سیدھے سادے پرچلت بول چال کے شبد اُن کے کانوں میں گونجیں گے کتابوں دوارا بولیاں نهیں بدلا کرتیں بولی کی شکتی کتابوں کو مٹا دیتی هے سنسکرت بدل کر هندی بن گئی سنسکرت میں نه کوئی اب بات چیت کرتا هے نه لکھتا پڑھتا هے . هندی سنسکرت پردھان بھاشاکبھی نه بن سکیگی ایسا کبھی نهیں هوسکے گا . ایسا هونا بھاشا وگیان، سماج شاستر، ساهتیه اور اتهاس کے نیموں اور شکتیوں کے وردھ هوگا . الٹی گنگا بهانے کا سپنا، بالو کی رسی بٹنے کا سپنا دیکھا کیجئے یه سپنا سپنا هی رهیگا

انت میں مجھے ایک پربل سدھانت، ایک اٹل اصول کی طرف سب کا دھیان کھینچنا هے جب تک لوگ ان پڑھ هیں، جب تک هندی کو بنانے بگاڑنے والے ایک هزار میں ایک آدھ لوگ هیں، جب تک مٹھی بھر قلم کے سورما ساهتیه کے میدان میں پینترے دکھا رهے هیں تبھی تک هندی کو سنسکرت گربھت اور سنسکرت پردھان بھاشا بنانے کی اور جنتا کی هندی کے پرچلت ٹکسالی تدبھو، دیشج عربی فارسی شبدوں سے ٹھنکنے اوران سے چھوا چھات کرنے کی جڑتا، مورکھتا، شرارت اور پرتی کریا چل سکتی هے

करोड़ कंठो मे बसी हुई और पंद्रह करोड़ जीभो पर चढ़ी हुई है. दस पांच भी प्रचलित शब्द पचासो बरस मे बदलते या मिटते हैं. चाहे वह हिन्दी के हो चाहे फारसी अरबी के चालू शब्द हो. तत्सम संस्कृत शब्द (पारिभाषिक या टेकनिकल शब्दो के अलावा जो बोली तो दूर रही उच्चतम पुस्तको मे भी जरूरत के मुताबिक एक आध फीसदी प्राय: आते है) भी जंची तुली तादाद मे ही हिन्दी मे खपाये और पचाये जा सकते हैं. यह भी उसी हालत में जब हिन्दी या प्रचलित सुगम सरल अरबी फारसी शब्द वह भाव या अर्थ देने वाले न हो और जब इन तत्सम शब्दो की बनावट और उनका रूप हिन्दी के साचे मे ढल सकता हो. ऐसा न हो तो दस बीस पचास बरस बाद साहित्य की हर किताब रद्दी और बेकार हो जायगी और हर पीढ़ी की बोली या दो तीन पीढ़ियो के बाद की बोली ऐसी बदल जायगी कि उसे पहचानना मुश्किल हो जाय. समाजी जीवन और उस जीवन की अनमोल उपज साहित्य की शृंखला टूट जायगी और आए दिन के झटको से हर दस बीस पचास बरस बाद टूटती रहेगी. किताबो को टाल से, कागज की चादरो से भाषा का गगन खेलता हुआ पानी, ठाठे मारता हुआ समुन्दर रोका नहीं जासकता जनता की बोली साहित्य की भाषा बनाती है. किताबे जनता की भाषा नही बनाती हा किताबे जनता की बोली और शब्द कोश मे बहुत थोड़े से नये लेकिन सुगम शब्दो की बढ़ती कर सकती है न कि जनता की बोली मे ऐसी तोड मरोड़ मचा देना जैसी हिन्दी किताबे ज्यादातर कर रही हैं, इस आशा मे कि यही एक दिन सब की बोली बन जायगी.

کروڑ کنٹھوں میں بسی ہوئی اور پندرہ کروڑ جیبھوں پر چڑھی ہوئی ہے دس پانچ بھی پرچلت شبد پچاسوں برس میں بدلتے یا مٹتے ہیں . چاہے وہ ہندی کے ہوں چاہے فارسی عربی کے چالو شبد ہوں . تت سم سنسکرت شبد (پاریبھاشک یا ٹکنیکل شبدوں کے علاوہ جو بولی تو دور رہی اُچچ تم پستکوں میں بھی ضرورت کے مطابق ایک آدھ فیصدی پرایہ آتے ہیں) بھی جنچی تلی تعداد میں ہی ہندی میں کھپائے اور پچائے جاسکتے ہیں یہ بھی اسی حالت میں جب ہندی یا پرچلت سگم سرل عربی فارسی شبد وہ بھاو یا ارتھ دینے والے نہ ہوں اور جب ان تت سم شبدوں کی بناوٹ اور اُن کا روپ ہندی کے سانچے میں ڈھل سکتا ہو . ایسا نہ ہو تو دس بیس پچاس برس بعد ساہتیہ کی ہر کتاب ردی اور بیکار ہو جائیگی اور ہر پیڑھی کی بولی یا دو تین پیڑھیوں کے بعد کی بولی ایسی بدل جائیگی کہ اُسے پہچاننا مشکل ہوجائے سماجی جیون اور اُس جیون کی انمول اُپج ساہتیہ کی شرنکھلا ٹوٹ جائیگی اور آئے دن کے جھٹکوں سے ہر دس بیس پچاس برس بعد ٹوٹتی رہے گی کتابوں کی ٹال سے' کاغذ کی چادروں سے بھاشا کا گگن کھیلتا ہوا پانی ' ٹھاٹھیں مارتا ہوا سمندر روکا نہیں جاسکتا . جنتا کی بولی ساہتیہ کی بھاشا بناتی ہے کتابیں جنتا کی بھاشا نہیں بناتیں. ہاں کتابیں جنتا کی بولی اور شبد کوش میں بہت تھوڑے سے نئے لیکن سگم شبدوں کی بڑھتی کر سکتی ہیں نہ کہ جنتا کی بولی میں ایسی توڑ مروڑ مچا دینا جیسی ہندی کتابیں زیادہ تر کر رہی ہیں اس آشا میں کہ یہی ایک دن سب کی بولی بن جائیگی .

दीजिये लेकिन इसे मान ज़रूर लीजिये. न जाने क्यो यहाँ मुझे अपना यह उर्दू शेर याद आगया—

दुबिधा पैदा करदे दिल मे ईमानो* को दे टकराने
बात वह कह ऐ इश्क़ कि सुनकर सब क़ायल हो कोई न माने.

अब मैं फिर मतलब पर आता हूं. इस लेख का शीर्षक है, क्या ऐसा हो मकेगा ? आप पूछेंगे क्या कैसा हो सकेगा ? कुछ लोग कहते हैं कि दस, बीस, पचास साल तक हिन्दी मे उन संस्कृत शब्दो की भरमार होने दीजिये जिन्हें आज कोई नही बोलता. कुछ दिनो बाद यही जटिल और अपरिचित शब्द, यही असाधारण शब्द करोड़ो आदमियो की जबानो पर चढ़ जांयगे. यह भी कहा जाता है कि उर्दू पढ़ना छोड़कर जब लोग हिन्दी पढ़ेंगे तो हिन्दी पुस्तको मे समाज व्यापी प्रचलित अरबी फ़ारसी शब्द जब न पायेगे तो थोड़े दिनो मे यह सुगम सरल टकसाली अरबी फारसी शब्द लोग भूल जांयगे. बोला हिन्दी की जय ! इस तरह सांप भी मर जायगा, लाठी भी न टूटेगी. मैं कहता हूँ ठीक, लेकिन क्या ऐसा हो सकेगा ?

भाषायें दस बीस पचास या सौ बरस में नही बदलती. हिन्दी पन्द्रह करोड़ के जीते जागते समाज की सजीव भाषा है. हिन्दी कोई खर पतवार नही कि उसे झाड़ बुहार कर फेंक दिया जाय. पूरे समाज की टकसाली बोली डेढ़ दो हजार बरसो मे इतना बदलनी है जितना मनमानी हिन्दी वाले, किताबी हिन्दी वाले, पंडिताऊ हिंदी वाले उस सजीव हिंदी को बदलने की सोच रहे हैं जो पंद्रह

* ईमानो = विश्वासो.

دیجئے لیکن اِسے مان ضرور لیجئے . نہ جانے کیوں یہاں مجھے اپنا یہ اردو شعر یاد آگیا —

دوبدھا پیدا کردے دلوں میں ایمانوں * کو دے ٹکرانے
بات وہ کہہ اے عشق کہ سن کر سب قایل ہوں کوئی نہ مانے

اب میں پھر مطلب پر آتا ہوں اس لیکھ کا شیر شک ہے' کیا ایسا ہوسکیگا ؟ آپ پوچھیں گے کیا کیسا ہوسکیگا ؟ کچھہ لوگ کہتے ہیں کہ دس، بیس، پچاس سال تک ہندی میں ان سنسکرت شبدوں کی بھرمار ہونے دیجئے جنھیں آج کوئی نہیں بولتا . کچھ دنوں بعد یہی جٹل اور اپرچت شبد' یہی اسا دھارن شبد کروڑوں آدمیوں کی زبانوں پر چڑھ جائینگے . یہ بھی کہا جاتا ہے کہ اردو پڑھنا چھوڑ کر جب لوگ ہندی پڑھینگے تو ہندی پستکوں میں سماج ویاپی پر چلت عربی فارسی شبد جب نہ پائینگے تو تھوڑے دنوں میں یہ سگم' سرل ٹکسالی عربی فارسی شبد لوگ بھول جائینگے . بولو ہندی کی جے ! اس طرح سانپ بھی مرجائیگا' لاٹھی بھی نہ ٹوٹے گی میں کہتا ہوں ٹھیک' لیکن کیا ایسا ہوسکیگا ؟

بھاشائیں دس بیس پچاس یا سو برس میں نہیں بدلتیں . ہندی پندرہ کروڑ کے جیتے جاگتے سماج کی سجیو بھاشا ہے . ہندی کوئی کھرپتوار نہیں کہ اُسے جھاڑ بہار کر پھینک دیا جائے پورے سماج کی ٹکسالی بولی ڈیڑھ دو ہزار برسوں میں اتنا بدلتی ہے جتنا من مانی ہندی والے' کتابی ہندی والے' پنڈتاؤ ہندی والے اُس سجیو ہندی کو بدلنے کی سوچ رہے ہیں جو پندرہ

ایمانوں = وشواسوں .

और विचार जाहिर करही नहीं सकते, जिनके बिना हम तुतले और गूंगे होजाते है

(५) शब्दो के महावरे दार प्रयोग और महावरो से अनजान रह कर. एक उर्दू कवि की रचना में जितने हिन्दी महावरे नगीनो की तरह जड़े हुए मिलते है सौ बरस के हिन्दी लेखको की कुल पुस्तको मे उतने महावरे नही मिलेगे बोल चाल का रस हिन्दी साहित्य मे मिलता ही नही

(६) चालू भाषा के बदले रट्टू भाषा लिखकर, कोश मे दिया हुआ हर तत्सम संस्कृत शब्द टकसाली होता है न टकसाली भाषा मे मिलाने के जोग होता है संस्कृत शब्दो की अन्धाधुन्द भरमार करके ज्यादा तर हिन्दी लेखक भाषा को कुरूप और विकराल बना देते हैं कोश से संस्कृत शब्दो के संकलन का सलीका होना चाहिये तभी भाषा और शैली मे सुघड़ापा आ सकता है इतनी सूझबूझ मै भी रखता हूँ कि हिन्दी रचनाओ मे तत्सम संस्कृत शब्दो की जरूरत आ पड़ती है लेकिन हर संस्कृत शब्द रत्न या नगीना नही है पिछले कई बरसो से हिन्दी मे जितने संस्कृत शब्द लाये गये हैं उनमें आधे से अधिक वर्जनीय (मतरूक) है. इसी लदाई से हिन्दी की चाल भैंसा गाड़ी की चाल होकर रह गई है. मेरी बात बुरी लगे तो लगने

اور وچار ظاہر کر ہی نہیں سکتے، جن کے بنا ہم تتلے اور گونگے ہو جاتے ہیں.

(۵) شبدوں کے محاورے دار پریوگ اور محاوروں سے ان جان رہ کر. ایک اردو کوی کی رچنا میں جتنے ہندی محاورے نگینوں کی طرح جڑے ہوے ملتے ہیں سو برس کے ہندی لیکھکوں کی کل پستکوں میں اتنے محاورے نہیں ملینگے بول چال کا رس ہندی ساہتیہ میں ملتا ہی نہیں

(۶) چالو بھاشا کے بدلے رٹو بھاشا لکھکر کوش میں دیا ہوا ہر تت سم سنسکرت شبد نہ ٹکسالی ہوتا ہے نہ ٹکسالی بھاشا میں ملانے کے جوگ ہوتا ہے. سنسکرت شبدوں کی اندھا دھند بھرمار کرکے زیادہ تر ہندی لیکھک بھاشا کو کوروپ اور وکرال بنا دیتے ہیں کوش سے سنسکرت شبدوں کے سنکلن کا سلیقہ ہونا چاہئے تبھی بھاشا اور شیلی میں سگھڑاپا آسکتا ہے. اتنی سوجھ بوجھ میں بھی رکھتا ہوں کہ ہندی رچناؤں میں تتسم سنسکرت شبدوں کی ضرورت آ پڑتی ہے. لیکن ہر سنسکرت شبد رتن یا نگینہ نہیں ہے. پچھلے کئی برسوں سے ہندی میں جتنے سنسکرت شبد لائے گئے ہیں ان میں آدھے سے ادھک ورجنیہ متروک) ہیں. اسی لدائی سے ہندی کی چال بھینسا گاڑی کی چال ہوکر رہ گئی ہے میری بات بری لگے تو لگنے

बना कर ज्यादातर हिन्दी साहित्यकार पेश कर रहे हैं यह किस तरह हो रहा है ? इस तरह :–

(१) जुमलो या वाक्यो को टेढे मेढ़े उलझे और फुसफुसे ढग से लिखकर, शब्दो का गलत चुनाव करके और शब्दक्रम को उलटा पलटा कर के, सीधी बात को गडबड झाला और गोरख धदा बना के, कही का रोड़ा कही की ईंट या मारे घुटना आँख

(२) चालू तद्भव शब्दो और तद्भव शब्दो के सुन्दर और सिजिल महावरो को तत्सम शब्दो से बदल कर.

(३) दुम कटी, अधूरी क्रियायें लिखकर ज्यादा तर बल्कि लग भग सभी हिन्दी लेखक खडी बोली की क्रियाओं के रूपों और उनकी शक्ति को जानते ही नहीं हिन्दी के दूसरे रूपों मे क्रियाओं का ऐसा विकास हुआ ही नहीं जैसा खडी बोली मे हुआ है क्रियायें खडी बोली की सब से महत्व पूर्ण विशेषता हैं. खड़ी बोली की पूरी शक्ति, उसका साग कस बल उसकी क्रियाओ मे है.

(४) सुन्दर तद्भव देशज यानी ठेठ हिन्दी शब्दो का देशनिकाला करने के साथ साथ उन तमाम अरबी फारसी के सुगम सरल शब्दो को निकाल कर, जो पूरा हिन्दी समाज बोलता है, जो खड़ी बोली के जन्म-दिन से हिन्दी मे शामिल रहे है, जो हिन्दी शब्दो की तरह हमारी भाषा मे रस बस गये है और जिनके बिना हम अपने बहुत से भाव

بناکر زیادہ تر ہندی ساھتیہ کار پیش کر رھے ھیں یہ کس طرح ہو رہا ھے ؟ اس طرح :—

(۱) جملوں یا واکیوں کو ٹیڑھے میڑھے الجھے اور پھس پھسے ڈھنگ سے لکھکر، شبدوں کا غلط چناؤ کر کے اور شبد کرم کو الٹا پلٹا کرکے، سیدھی بات کو گو بڑ جھالا اور گورکھ دھندا بناکے کہیں کا روڑا کہیں کی اینٹ یا مارے گٹھنا پھوٹے آنکھ .

(۲) چالو تدبھو شبدوں اور تدبھو شبدوں کے سندر اور سجل محاورں کو تت سم شبدوں سے بدل کر

(۳) دم کٹی، ادھوری کریائیں لکھکر زیادہ تر بلکہ لگ بھگ سبھی ہندی لیکھک کھڑی بولی کی کریاؤں کے روپوں اور انکی شکتی کو جانتے ھی نہیں . ہندی کے دوسرے روپوں میں کریاؤں کا ایسا وکاس ہوا ھی نہیں جیسا کھڑی بولی میں ہوا ھے کریائیں کھڑی بولی کی سب سے مہتو پورن وشیشتا ھیں کھڑی بولی کی پوری شکتی، اس کا سارا کس بل اس کی کریاؤں میں ھے

(۴) سندر تدبھو دیشج یعنی ٹھیٹھ ہندی شبدوں کا دیش نکالا کرنے کے ساتھ ساتھ ان تمام عربی فارسی کے سگم سرل شبدوں کو نکال کر جو پورا ہندی سماج بولتا ھے، جو کھڑی بولی کے جنم دن سے ہندی میں شامل رھے ھیں جو ہندی شبدوں کی طرح ھماری بھاشا میں رس بس گئے ھیں اور جن کے بنا ھم اپنے بہت سے بھاؤ

प्रबल और सजीव शक्ति है. हां तो हिन्दी का असली रूप और उसके सजीव प्रमाण क्या हैं ? वह हैं:—

(१) लगभग ४०,००० तद्भव या देशज ठेठ हिन्दी शब्द

(२) लगभग ४००० (चार हजार) अरबी, फारसी शब्द.

(३) कई सौ अंगरेजी और बहुत से दूसरी भाषाओं के शब्द.

(४) थोड़े से तत्सम संस्कृत शब्द.

(५) हजारों टुकड़े, महावरे, टकसाली भाषा के नमूने जो

(अ) सौ फीसदी तदभवदेशज शब्दों से बने हैं

(ब) अरबी फारसी और तदभव देशज शब्दों से मिलकर बने हैं.

यह है शब्द कोश उस सजीव हिन्दी का जिसे १५ करोड का सजीव समाज बोलता है इस भाषा को नीचा दिखाने की कोशिश, इसे बिगाड कर लिखने की कोशिश, हिन्दी से और हिन्दी बोलने वाले समाज से घृणा करने के बराबर है. ऐसा करने की कोशिश का कारण कुछ गवरपन है और कुछ शरारत यह बताना मुश्किल है कि इस बेढंगे प्रयत्न मे गवरपन अधिक है या शरारत.

खड़ी बोली हिन्दी का असली और सच्चा रूप देखना हो तो देहली में बहुत दिनों से बसे हुए लोगों की बोली सुनिये. उस बोली को बहुत बिगाड़ कर, बहुत भद्दा, फूहड़ और सुन्दर से उसे कुरूप

پربل اور سجیو شکتی هے . هاں تو هندی کا اصلی روپ اور اس کے سجیو پرمان کیا هیں ؟ وہ هیں :—

(۱) لگ بهگ ۴۰,۰۰۰ تدبهو یا دیشج ٹهیٹهہ هندی شبد .

(۲) لگ بهگ ۴۰۰۰ (چار هزار) عربی فارسی شبد

(۳) کئی سو انگریزی اور بهت سے دوسری بهاشاؤں کے شبد .

(۴) تهوڑے سے تت سم سنسکرت شبد .

(۵) هزاروں ٹکڑے' محاورے' ٹکسالی بهاشا کے نمونے جو

(الف) سو فیصدی تد بهو دیشج شبدوں سے بنے هیں .

(ب) عربی فارسی اور تدبهو دیشج شبدوں سے ملکر بنے هیں

یہ هے شبد کوش اس سجیو هندی کا جسے ۱۵ کروڑ کا سجیو سماج بولتا هے . اس بهاشا کو نیچا دکهانے کی کوشش' اسے بگاڑ کر لکهنے کی کوشش' هندی سے اور هندی بولنے والے سماج سے گهرنا کرنے کے برابر هے . ایسا کرنے کی کوشش کا کارن کچهہ گنوار پن هے' اور کچهہ شرارت . یہ بتانا مشکل هے کہ اس بے ڈهنگے پریتن میں گنوار پن ادهک هے یا شرارت .

کهڑی بولی هندی کا اصلی اور سچا روپ دیکهنا هو تو دهلی میں بهت دنوں سے بسے هوئے لوگوں کی بولی سنئے . اس بولی کو بهت بگاڑکر ' بهت بهدا' پهوهڑ اور سندر سے اسے کوروپ

रहीम और मलिक मुहम्मद जायसी की हिन्दी रचनाओं का भी है. जनता की भाषा साहित्य बन कर चमक उठा है. ऐसा नहीं हो सका तो पचास बरस तक झक मार कर हिन्दी के उन साहित्यकारों से जिनके शुभ नाम इस लेख के शुरू मे बता दिये गये है ऐसा नही हो सका आजकल के ९५ फी सदी हिन्दी लेखकों से. 'लिखे ईसा, पढ़ें मूसा" मैंने एक बार इस बारे मे कहा था:-

कब तक भूला भूलेगी,
तत्सम शब्दों की थैली
किस भाँति फले फूलेगी
यह गडबड़ सडबड शैली

जनता या समाज की बोली पहले आती है, साहित्य बाद को आता है. जनता की बोली साहित्य की माँ है, माँ की कोख और गोद और हिंडोला है हिंदी के जितने भी आपस मे मिलते जुलते रूप रूपान्तर है उन पर आँख खोल कर नजर डालिये जीती जागती पूरे समाज मे बोली जाने वाली हिंदी के दर्शन कीजिये. उसके नखशिख, उसकी नोक पलक देखिये इस हिंदी मे तत्सम संस्कृत शब्द हजारों मे एक दो नजर आयेंगे और वह भी इतने नरम और सहज कि अनपढ़ भी बोले और समझे. लेकिन फारसी अरबी शब्द सौ फीसदी हिन्दी बोलने वालों की बात बात में सुनाई देंगे. हिंदी बोलने वाला विराट समाज जिसे हम हिन्दी साहित्य कहते हैं उससे कहीं अधिक

رحیم اور ملک محمد جایسی کی هندي رچناؤں کا بهي هے جنتا کی بهاشا ساهتیه بن کر چمک اُٹهي هے ایسا نہیں هوسکا تو پچاس برس تک جهک مار کر هندی کے ان ساهتیه کاروں سے جن کے شبه نام اس لیکه کے شروع میں بتا دئے گئے هیں ایسا نہیں هوسکا آج کل کے ۹۵ فیصدی هندی لیکهکوں سے 'لکهیں عیسیٰ پڑهیں موسیٰ' میں نے ایک بار اس بارے میں کہا تها : —

کب تک جهولا جهولیگی'
تت سم شبدوں کی تهیلی
کس بهانت پهلے پهولیگی
یه گڑ بڑ سڑ بڑ شیلی

جنتا یا سماج کی بولي پہلے آتی هے' ساهتیه بعد کو آتا هے . جنتا کی بولي ساهتیه کی ماں هے' ماں کی کوکه اور گود اور هنڈوله هے هندی کے جتنے بهی آپس میں ملتے جلتے روپ رو پانتر هیں ان پر آنکهه کهولکر نظر ڈالئے جیتی جاگتی پورے سماج میں بولي جانے والی هندي کے درشن کیجئے . اس کے نکه شکه' اس کی نوک پلک دیکهئے اس هندی میں تت سم سنسکرت شبد هزاروں میں ایک دو نظر آئینگے اور وہ بهی اتنے نرم اور سہج که اَن پڑه بهی بولے او ر سمجهے . لیکن فارسی عربی شبد سو فیصدي هندي بولنے والوں کی بات بات میں سنائی دینگے هندي بولنے والا وراٹ سماج جسے هم هندی ساهتیه کہتے هیں اس سے کہیں ادهک

क्या ऐमा हो सकेगा?

(हिन्दी का भविष्य)

भाई रघुपति सहाय फिराक़—

हिन्दी क्या है ? क्या हिन्दी वह है जो हमें श्री मैथिली शरण गुप्त, श्री जयशंकर प्रसाद, श्री निराला, श्री सुमित्रानन्दन पंत और हिन्दी के ९५ फी सदी लेखकों की रचनाओं मे नजर आती है या हिन्दी वह है जो लगभग १५ करोड आदमी बोलते और समझते हैं ? अंगरेजी, फारसी और उर्दू लेखकों की रचनाओं की अंगरेजी, फ़ारसी और उर्दू इन भाषाओं के बोलने वालो की अंगरेजी, फ़ारसी और उर्दू से जितनी निकट है या जितनी मिलती जुलती है या दुनिया भर के साहित्यकारो की भाषा जनता की भाषा और शब्दावली से जितनी निकट है क्या हिंदी साहित्यकारो की भाषा हिंदी बोलने वालो की भाषा से उतनी ही मिलती जुलती और निकट है ? कोई दिन दहाड़े बेहयाई से झूट बोलना चाहे तो कह दे कि हाँ

अंगरेजी साहित्य मे कई लाख पन्नो मे ऊँचे दरजे की ऐसी रचनायें हैं जिन्हें सुन कर अनपढ़ अंगरेजी बोलने वाले अच्छी तरह समझ सकते है और जिन्हे दरजा ३ या ४ तक पढे हुए अंगरेज बेखटके पढ़ सकते हैं. यही हाल उर्दू, फारसी और दुनिया भर की साहित्य का है. यही हाल कबीर, सूर, तुलसी, मीरा बाई, रसखान,

کیا ایسا ھو سکے گا ؟

(ھندی کا بھوشیہ)

[بھائی رگھوپتی سہائے فراق]

ھندی کیا ھے ؟ کیا ھندی وہ ھے جو ھمیں شری میتھلی شرن گپت، شری جے شنکو پرساد، شری نرالا، شری سمترانندن پنت اور ھندی کے ۹۵ فیصدی لیکھکوں کی رچناؤں میں نظر آتی ھے یا ھندی وہ ھے جو لگ بھگ ۵ کروڑ آدمی بولتے اور سمجھتے ھیں ؟ انگریزی، فارسی، اور اردو لیکھکوں کی رچناؤں کی انگریزی، فارسی اور اردو ان بھاشاؤں کے بولنے والوں کی انگریزی فارسی اور اردو سے جتنی نکٹ ھے یا جتنی ملتی جلتی ھے یا دنیا بھر کے ساھتیہ کاروں کی بھاشا جنتا کی بھاشا اور شبداولی سے جتنی نکٹ ھے کیا ھندی ساھتیہ کاروں کی بھاشا ھندی بولنے والوں کی بھاشا سے اتنی ھی ملتی جلتی اور نکٹ ھے ؟ کوئی دن دھاڑے بے حیائی سے جھوٹ بولنا چاھے تو کہہ دے کہ ھاں .

انگریزی ساھتیہ میں کئی لاکھ پنوں میں اونچے درجے کی ایسی رچنائیں ھیں جنھیں سن کر ان پڑہ انگریزی بولنے والے اچھی طرح سمجھ سکتے ھیں اور جنھیں درجہ ۳ یا ۴ تک پڑھے ھوئے انگریز بے کھٹکے پڑہ سکتے ھیں یہی حال اردو فارسی اور دنیا بھر کی ساھتیہ کا ھے. یہی حال کبیر، سور، تلسی، میرا بائی، رس کھان،

तर लोगों से इस कठिन समस्या के हल करने मे मदद की आशा करना दुराशा मात्र है तब क्या होगा ? तब क्या होगा ?

वह लोग जिनमे अब भी देश प्रेम, मानव-प्रेम और बापू जी की परम्परा की रक्षा की इच्छा बाकी है, अब चेत जायं और शरणार्थियों की समस्या को हल करने मे जुट जायं. अगर समय रहते वह ऐसा न करेंगे तो हमारा शरणार्थी समाज, समाज दुश्मनों के हाथो मे, नैतिक दृष्टि से गिरे हुए लोगों के हाथो में, चोर बाजारी करने वालो के हाथो मे, दगे फसादो को बढ़ाकर अपना उल्लू सीधा करने वालो के हाथो मे चला जायेगा. ऐसे लोगो के हाथो से हमारे अभागे शरणार्थी भाई बहनो का क्या उपकार होगा ? इसका असर हमारे समाज पर, हमारे देश पर, हमारी आज़ादी पर, देश की भीतरी शांति, सुरक्षा और व्यवस्था पर क्या होगा ?

शरणार्थी समस्या इस समय हमारी मानवीय भावनाओं, इन्सान, जज्बात को ही चुनौती नही दे रही है, वह हमारी देशभक्ति और स्वाधीनता प्रेम को भी झंझोड़ने के लिए सामने आ रही है

تر لوگوں سے اس کٹھن سمسیا کے حل کرنے میں مدد کی آشا کرنا دراشا ماتر ہے تب کیا ہوگا ؟ تب کیا ہو گا ؟

وہ لوگ جن میں اب بھی دیش پریم ، مانو پریم اور باپوجی کی پرمپرا کی رکشا کی اچھا باقی ہے ، اب چیت جائیں اور شرنارتھیوں کی سمسیا کو حل کرنے میں جٹ جائیں . اگر سمے رہتے وہ ایسا نہ کرینگے تو ہمارا شرنارتھی سماج ، سماج دشمنوں کے ہاتھوں میں ، نیتک درشٹی سے گرے ہوئے لوگوں کے ہاتھوں میں ، چور بازاری کرنے والوں کے ہاتھوں میں ، دنگے فسادوں کو بڑھا کر اپنا الو سیدھا کرنے والوں کے ہاتھوں میں چلا جائیگا . ایسے لوگوں کے ہاتھوں سے ہمارے ابھاگے شرنارتھی بھائی بہنوں کا کیا اپکار ہوگا ؟ اس کا اثر ہمارے سماج پر ، ہمارے دیش پر اور ہماری آزادی پر ، دیش کی بھیتری شانتی ، سرکشا اور ویوستھا پر کیا ہو گا ؟

شرنارتھی سمسیا اس سمے ہماری مانوی بھاؤناؤں ، انسانی جذبات کو ہی چنوتی نہیں دے رہی ہے ، وہ ہماری دیش بھکتی اور سوادھینتا پریم کو بھی جھنجھوڑنے کے لئے سامنے آرہی ہے -

ज़िन्दगी पर, देश के रहने वालो की तन्दुरुस्ती पर, उनके नजरिये पर और उनकी दिमागी हालत पर पडता है, इसका तजरबा हमें हो ही चुका है.

इसलिए, इस समय जो लोग आबादी के तबादले और हिंसा प्रतिहिंसा, बदले और खूंरेज़ी की बात करते है उनकी नासमझी या समझकर भी समाज दुश्मनी पर दुख होता है. पूरबी बंगाल से आने वाले भाई बहनो की समस्या का हल करना सिर्फ सरकार के बूते को बात नही है. यह सिर्फ जनता के भी बूते की बात नही है. पिछले तजरबो के बाद हम जनता या सरकार की सिर्फ अपनी खुशी से की हुई सहायता का भरोसा भी नही कर सकते सरकार अपनी दफ्तरशाही की शिकार है. जनता पहले भावुकता, फिर बाद मे अपने स्वार्थों की शिकार है. जो खुद इन सर्वनाशी बुराइयो का शिकार हो वह दूसरो की मदद क्या करेगा ?

एक बात जो सबसे अधिक गम्भीर है वह यह है कि बापू के निधन के बाद सच्चे गाधीवादी कार्यकर्ता काम करने की अपनी स्वाभाविक लगन खो बैठे है बिहार के भूचाल और पिछले दगो के समय उन्होने जितने ज़ोर के साथ काम किया था वह बात अब इतिहास के पन्नो पर लिखी बात होकर गई है. आम काग्रेसी कार्यकर्त्ताओ का क्या कहना ' वह या तो इस समय हिन्दू मुसलमान रह गये हैं या चोर बाज़ारी, घूसखोरी और दूसरे समाज बिरोधी कामों में लगे हुए सब का सब कुछ हड़पने वाले मानव वीर ' इनमे अधिक

زندگی پر دیش کے رھنے والوں کی تندرستی پر' اُنکے نظریئے پر اور اُنکی دماغی حالت پر پڑتا ھے . اس کا تجربہ ھمیں ھوھی چکا ھے -

اِس لئے اِس سمے جو لوگ آبادی کے تبادلے اور ھنسا پرتی ھنسا ' بدلے اور خونریزی کی بات کرتے ھیں اُن کی ناسمجھی یا سمجھکر بھی سماج دشمنی پر دکھہ ھوتا ھے پوربی بنگال سے آنے والے بھائی بہنوں کی سمسیا کا حل کرنا صرف سرکار کے بوتے کی کی بات نہیں ھے . یہہ صرف جنتا کے بھی بوتے کی بات نہیں ھے پچھلے تجربوں کے بعد ھم جنتا یا سرکار کی صرف اپنی خوشی سے کی ھوئی سہایتا کا بھروسہ بھی نہیں کرسکتے . سرکار اپنی دفتر شاھی کی شکار ھے . جنتا پہلے بھاوکتا پھر بعد میں اپنے سوارتھوں کی شکار ھے جو خود اِن سروناشی برائیوں کا شکار ھو وہ دوسروں کی مدد کیا کریگا ؟

ایک بات جو سب سے ادھک گمبھیر ھے وہ یہہ ھے کہ باپو کے ندھن کے بعد سچے گاندھی وادی کاریہ کرتا کام کرنے کی اپنی سوابھاوک لگن کھو بیٹھے ھیں بہار کے بھونچال اور پچھلے دنگوں کے سمے اُنھوں نے جتنے زور کے ساتھہ کام کیا تھا وہ بات اب اتہاس کے پنوں پر لکھی بات ھوکر رہ گئی ھے عام کانگریسی کاریہ کرتاؤں کا کیا کہنا ! وہ یا تو اِس سمے ھندو یا مسلمان رہ گئے ھیں یا چوربازاری ' گھوس خوری اور دوسرے سماج ورودھی کاموں میں لگے ھوئے سب کا سب کچھہ ھڑپنے والے مانو ویر ! اِن میں ادھک

है पूरब देश से आने वाले सताये हुए भाई-बहनो की समस्या पर ग़ौर करने और खुद देश और उसकी सरकार के पुराने कारनामो को याद करने पर दिल दहल उठता है. (३) नैतिक पहलू. यह सबसे कठिन, सबसे ज्यादा खतरनाक और सबसे गंभीर प्रश्न है. दंगो और लड़ाई-झगडो का आरम्भ तभी होता है जब आदमी आदमी न रह कर जानवर, वहशी, खूनी और जंगली जानवर बन चुका होता है. ऐसे समय वह बच्चो की मासूमियत, औरतों की लाज और बूढो की जईफ़ी का ख़याल न करके उन्हे कत्ल कर डालता है, उनकी इज्जत लूट लेता है औरतो के साथ, बच्चो के साथ, बूढ़ो के साथ यह वहशियाना बर्ताव किस मनोदशा मे होता है, यह साफ है. इस मनोदशा के शिकार प्राणियो को अपना घर-बार छोड़कर सैकडो मील दूर दूसरो की दया पर निर्भर रहना पड़े तो उनका नैतिक पतन होना या एखलाकी तौर पर गिरना कुदरती है उनकी बेबसी से, उनकी गरीबी से और उनकी गिरी हुई हालत से बेजा फायदा उठाने वालो की कमी भी नही होती. समाज का अंकुश जरा सा भी ढीला हो जाने पर अनाचारो, बदचलनी और पतन का रास्ता खुल जाता है इसके नतीजे मे नैतिक बंधनो का ढीला होना, हर तरह के प्रेम और भाई चारे के सम्बन्धो का खत्म हो जाना, पैसो के बल पर इज्जत असमत की खरीदारी का आसान हो जाना, इसके नतीजे मे तरह तरह की बीमारियो का फैलना,. चोरी, जुआ, शराबखोरी वगैरह समाज दुश्मन प्रवृतियो का जोर पकड़ जाना भी स्वाभाविक है. शरणार्थी समस्याका यह पहलू भी कितना गंभीर है और इसका कितना गहरा असर देश की समाजी

ہے پورب دیش سے آنے والے ستائے ہوئے بھائی بہنوں کی سمسیا پر غور کرنے اور خود دیش اور اس کی سرکار کے پرانے کارناموں کو یاد کرنے پر دل دہل اُٹھتا ہے . (۳) نیتک پہلو یہ سب سے کٹھن' سب سے زیادہ خطرناک اور سب سے گمبھیر پرشن ہے . دنگوں اور لڑائی جھگڑوں کا آرمبھ تبھی ہوتا ہے جب آدمی آدمی نہ رہکر جانور' وحشی' خونی اور جنگلی جانور بن چکا ہوتا ہے ایسے سمے وہ بچوں کی معصومیت عورتوں کی لاج اور بوڑھوں کی ضعیفی کا خیال نہ کرکے انہیں قتل کرڈالتا ہے اور انکی عزت لوٹ لیتا ہے عورتوں کے ساتھ بچوں کے ساتھ' بوڑھوں کے ساتھ یہ وحشیانا برتاؤ کس منودشا میں ہوتا ہے یہ صاف ہے اس منودشا کے شکار پرانیوں کو اپنا گھر بار چھوڑ کر سیکڑوں میل دور دوسروں کی دیا پر نربھر رہنا پڑے تو انکا نیتک پتن ہونا یا اخلاقی طور پر گرنا قدرتی ہے . انکی بے بسی سے' انکی غریبی سے اور انکی گری ہوئی حالت سے بیجا فائدہ اُٹھانے والوں کی کمی بھی نہیں ہوتی سماج کا انکش ذرا سا بھی ڈھیلا ہو جانے پر اناچاروں' بدچلنی اور پتن کا راستہ کھل جاتا ہے اس کے نتیجے میں نیتک بندھنوں کا ڈھیلا ہونا' ہر طرح کے پریم اور بھائی چارے کے سمبندھوں کا ختم ہوجانا' پیسوں کے بل پر عزت عصمت کی خریداری کا آسان ہو جانا' اس کے نتیجے میں طرح طرح کی بیماریوں کا پھیلنا' چوری جوا' شراب خوری وغیرہ سماج دشمن پرورتیوں کا زور پکڑجانا بھی سوابھاوک ہے . شرنارتھی سمسیا کا یہہ پہلو بھی کتنا گمبھیر ہے اور اس کا کتنا گہرا اثر دیش کی سماجی

दोधारी तलवार बन कर दोनों ओर वार करने लगता है. (२) मनोवैज्ञानिक (नफ़सियाती) पहलू जो लोग बाहर से आते हैं उनके साथ सहानुभूति का जज्बाती दौर जब खत्म हो जाता है तब उन्ही से ईर्ष्या घृणा, द्वेष, जलन, दुश्मनी तक पैदा होने लगती है. शरणार्थी जब आते हैं तो यह समझ कर कि उनकी हर तरह की सेवा और इमदाद करना यहाँ वालो का फर्ज है. जहाँ सेवा और इमदाद मे जरा भी कमी हुई कि बर्दाश्त या इन्तजार करने की जगह वह यहाँ वालो को बुरा भला कहने लगते हैं. उन्हे रह रह कर 'अपने देश' की याद आती है, जहाँ की सही या झूट बखान करके वह यहाँ के लोगो को 'बेईमान' 'कमीना' स्वार्थी और जाने क्या क्या कहने लगते हैं. उनके मन की इस हालत के लिए सरकार की दफ्तरशाही तो जिम्मेदार है ही, साथ ही जनता की उपेक्षा और खुद उनकी खुदगर्जी भी (हालाँ कि लुटे-पिटे आदमी की गरजमंदी को माफ किया जा सकता है) जिम्मेदार है. उद्योग धन्धो, नौकरियों, रहने की जगहों वगैरह में दिक्कत तो है ही, इन नये आने वाले लोगो के कारन दिक्कत, परेशानी और होड़ बहुत बढ़ जाती है. खेती, कारबार, रहने की जगहो, नौकरियो और आमदनी के जरियो मे नये साझीदारों का आजाना सबको खलता है इससे जलन पैदा होती है, लड़ाई-झगड़ा और मनमुटाव के कारण आपस के सम्बन्ध बिगडने लगते हैं और कभी कभी हिंसा तक भी हो जाती है. ऐसी हालत में नये मेहमानों (शरणार्थियो) का स्वागत करना कठिन काम हो जाता है खासतौर से इस समय, जबकि शरणार्थियो के आने रहने का अनुभव लोगो को हो का है और उसके गन्दे पहलुओ का भी लोगो ने तजरबा कर लिया

دو دھاری تلوار بن کر دونوں اور وار کرنے لگتا ہے ۔ (۲) منو ویگیانک (نفسیاتی) پہلو جو لوگ باہر سے آتے ہیں ان کے ساتھ سہانو بھوتی کا جذباتی دور جب ختم ہوجاتا ہے تب انہیں سے ایرشیا گھرنا، دویش، جلن، دشمنی تک پیدا ہونے لگتی ہے ۔ شرنارتھی جب آتے ہیں تو یہ سمجھکر کہ ان کی ہر طرح کی سیوا اور امداد کرنا یہاں والوں کا فرض ہے ۔ جہاں سیوا اور امداد میں ذرا بھی کمی ہوئی کہ برداشت یا انتظار کرنے کی جگہ وہ یہاں والوں کو برا بھلا کہنے لگتے ہیں ۔ انہیں رہ رہکر اپنے دیش کی یاد آتی ہے ۔ جہاں کی سچی یا جھوٹ بکھان کرکے وہ یہاں کے لوگوں کو بے ایمان، کمینہ، سوارتھی، اور جانے کیا کیا کہنے لگتے ہیں ان کے من کی اس حالت کے لئے سرکار کی دفتر شاہی تو ذمہ دار ہے ہی ساتھ ہی جنتا کی اپیکچھا اور خود انکی خودغرض بھی (حالانکہ لٹے پٹے آدمی کی غرض مندی کو معاف کیا جاسکتا ہے) ذمہ دار ہے ۔ ادیوگ دھندوں، نوکریوں، رہنے کی جگہوں وغیرہ میں دقت تو ہے ہی، ان نئے آنے والے لوگوں کے کارن دقت، پریشانی اور ہوڑ بہت بڑھ جاتی ہے کھیتی، کاربار، رہنے کی جگہوں، نوکریوں اور آمدنی کے دریوں میں نئے ساجھی داروں کا آجانا سب کو کھلتا ہے ۔ اس سے جلن پیدا ہوتی ہے ۔ لڑائی جھگڑا اور من مٹاؤ کے کارن آپس کے سمبندھ بگڑنے لگتے ہیں اور کبھی کبھی ہنسا تک بھی ہوجاتی ہے ایسی حالت میں نئے مہمانوں (شرنارتھیوں) کا سواگت کرنا کٹھن کام ہو جاتا ہے ۔ خاص طور سے اس سمے جب کہ شرنارتھیوں کے آنے رہنے کا انوبھو لوگوں کو ہوچکا ہے اور اس کے گندے پہلوؤں کا بھی لوگوں نے تجربہ کرلیا

जारही हैं उनको भी भारत मे आकर अपने रहने-बसने के सम्बन्ध में उन्हीं मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा जिनका सामना अभी तक पच्छिमी सूबों से आये शरणार्थियों को करना पड़ रहा है. दिल के जज्बो को दबा कर दिमाग पर कुछ जोर दिया जाय और शरणार्थियों को समस्याओ पर गौर करके उनका कुछ हल निकाला जाय तो देश और राष्ट्र की बड़ी सेवा हो.

पिछले तीन बरस मे शरणार्थियो की समस्याओं पर काफी लिखा पढ़ा गया है. मगर अधिकतर या तो उस मसले पर जज्बाती ढंग से गौर किया गया है या खाली दिमागी तौर से. इस काम को करते समय (यानी शरणार्थियो की समस्याओं को हल करते समय) क्या क्या सवाल सचमुच सामने आते है और उनका हल किस तरह निकले इस पर सही ढंग से गौर बहुत कम होता है.

शरणार्थियों की समस्याओ के कई पहलू हैं (१) जज्बाती पहलू जो कोई भी लुटा, पिटा, सताया आदमी हमारे सामने आता है उसकी हालत देखकर दिल मे उसके लिए दर्द पैदा होना और उसकी इमदाद के लिए तैयार हो जाना स्वाभाविक है. यह दर्द बच्चो के यतीम होने पर या औरतो के बेइज्जत होने पर गहरी सहानुभूति के कारण गुस्से और बदले की भावना की शक्ल ले लेता है इसी समय सही इमदाद की जगह ऐसी गलत कारवाई के लिए हम आमादा हो जाते हैं जिससे देश का नुकसान तो होता ही है, साथ ही इन शरणार्थियो को भी बहुत नुकसान पहुंचता है. जज्बों का उभरना स्वाभाविक है. जज्बों का हद से बाहर होना खतरनाक है . तब वह

جا رهي هيں ان کو بهی بهارت ميں آکر اپنے رهنے بسنے کے سمبندھ ميں انهیں مشکلوں کا سامنا کرنا پڑے گا جن کا سامنا ابهي تک پچهمي صوبوں سے آئے شرنارتهیوں کو کرنا پڑ رها هے . دل کے جذبوں کو دبا کر دماغ پر کچهہ زور دیا جائے اور شرنارتهیوں کي سمسیاؤں پر غور کرکے ان کا کچهہ حل نکالا جائے تو دیش اور راشٹر کی بڑی سیوا هو .

پچهلے تین برس میں شرنارتهیوں کی سمسیاؤں پر کافی لکها پڑها گیا هے . مگر ادهک تر یا تو اس مسئلے پر جذباتی ڈهنگ سے غور کیا گیا هے یا خالی دماغی طور سے اس کام کو کرتے سمے (یعنی شرنارتهیوں کی سمسیاؤں کو حل کرتے سمے) کیا کیا سوال سچ مچ سامنے آتے هیں اور انکا حل کس طرح نکلے اس پر سهی ڈهنگ سے غور بہت کم هوتا هے .

شرنارتهیوں کی سمسیاؤں کے کئي پہلو هیں . (١) جذباتی پہلو . جو کوئی بهي لٹا پٹا ستایا آدمي همارے سامنے آتا هے اس کی حالت دیکهکر دل میں اس کے لئے درد پیدا هونا اور اس کی امداد کے لئے تیار هو جانا سوابهاوک هے . یہ درد بچوں کے یتیم هونے پر یا عورتوں کے بے عزت هونے پر گہری سہانو بهوتي کے کارن غصے اور بدلے کی بهاؤنا کي شکل لے لیتا هے اسی سمے سہي امداد کي جگہ ایسي غلط کارروائی کے لئے هم آمادہ هوجاتے هیں جس سے دیش کا نقصان تو هوتا هی هے' ساتھ هی ان شرنارتهیوں کو بهي بہت نقصان پہنچتا هے جذبوں کا ابهرنا سوابهاوک هے جذبوں کا حد سے باهر هونا خطرناک هے تب وہ

शरणार्थियों का सवाल

(भाई श्रीकृष्ण दास)

पिछले दंगो ने भारत सरकार और भारत की जनता के सामने जो सबसे बड़ा सवाल खडा किया वह था शरणार्थियो को बसाने उनको काम देने और उनको इज्जत के साथ जिन्दगी बसर करने की सहूलत देने का सवाल. इस सवाल का हल कितना कठिन था और इसमे क्या क्या दिक्क ते पडी यह तो सरकार और नेताओ के उन बयानो से जाहिर है जो उन्होने बार बार शाया किये है प्रधान मंत्री जवाहरलाल और उनके सहयोगी श्री मोहनलाल सक्सेना ने भी इस सवाल की अहमियत की ओर जनता का ध्यान बार बार खींचा है सरकार ने इस काम मे करोडो रूपये खर्च किये और अफसरो और सेवको की एक पूरी फौज इस काम मे लग गई. मगर फिर भी, जैसा कि सरकारी बयानो से साफ जाहिर है, इन मसलो को सुलझाने मे उसे पूरी कामयाबी नही हुई ऐसा क्यो ? यह काम तो ऐसा था जिसमे सरकार को जनता का पूरा सहयोग मिला था. फिर भी सरकार को नाकामयाबी क्यो हुई और करोड़ो रूपये बरबाद करने पर भी वह शरणार्थियो के फिर से बसने का पूरा इन्तजाम क्यो नही कर पाई ?

इस समय पूरबी बगाल से भागकर जो शरणार्थी आ रहे हैं और जिनको बीच मे डालकर चारो ओर से लम्बी लम्बी बातें कही

شرنارتھیوں کا سوال

(بھائی شری کرشن داس)

پچھلے دنگوں نے بھارت سرکار اور بھارت کی جنتا کے سامنے جو سب سے بڑا سوال کھڑا کیا وہ تھا شرنارتھیوں کو بسانے' انکو کام دینے اور انکو عزت کے ساتھ زندگی بسر کرنے کی سہولت دینے کا سوال . اس سوال کا حل کتنا کٹھن تھا اور اس میں کیا کیا دقتیں پڑیں یہ تو سرکار اور نیتاؤں کے اُن بیانوں سے ظاہر ہے جو انہوں نے بار بار شائع کئے ہیں پردھان منتری جواہر لال اور انکے سہیوگی شری موہن لال سکسینہ نے بھی اس سوال کی اہمیت کی اور جنتا کا دھیان باربار کھینچا ہے سرکار نے اس کام میں کروڑوں روپئے خرچ کئے اور افسروں اور سیوکوں کی ایک پوری فوج اس کام میں لگ گئی مگر پھر بھی جیسا کہ سرکاری بیانوں سے صاف ظاہر ہے' ان مسئلوں کو سلجھانے میں اسے پوری کامیابی نہیں ہوئی ایسا کیوں ؟ یہ کام تو ایسا تھا جس میں سرکار کو جنتا کا پورا سہیوگ ملا تھا پھر بھی سرکار کو ناکامیابی کیوں ہوئی اور کروڑوں روپے برباد کرنے پر بھی وہ شرنارتھیوں کے پھر سے بسنے کا پورا انتظام کیوں نہیں کر پائی ؟

اس سمے پوربی بنگال سے بھاگ کو جو شرنارتھی آرہے ہیں اور جن کو بیچ میں ڈال کر چاروں اور سے لمبی لمبی باتیں کہی

की एक बेन्च देखो. इस बेन्च पर जज बैठे हुए थे.

उन जजो मे एक ईमानदार आदमी भा था जिस को फीसागोरस पहचानता था उसने फीसागोरस को इस घटना की कथा सुनाई कि इन दो आदमियो की जरा भी यह इच्छा नही था कि इनको आग की भेंट कर दिया जावे और यह फैसला दूसरे जजो ने किया था कि वह दोनों जिन्दा जला दिये जावे। एकका कसूर यह था कि उसने झूटा बयान दिया था और दूसरे का खोट यह था कि उसने यह बताया था कि हर धर्म का आदमी मरने के बाद ही स्वर्ग पहुँच सकता है. गाँव की सीधी साधो स्त्रियाँ इन बातो से डर गई और जब तककि उन्हो ने जजो को उनको मरवादेने का फैसला देने पर मजबूर न कर दिया तब तक उन स्त्रियां ने जजो को चैन न लेने दिया.

फीसागोरस को विश्वास हो गया कि घास से लेकर आदमी तक हर एक गिरावट के मार्ग पर चल रहा है. फिर भी फीसागोरस ने उन दो आदमियो को छुड़ा लिया.

इसके बाद फीसागोरस क्रोटोना मे वियाख्यान देने चला गया. फिर एक कट्टर आदमो ने उसके मकान मे आग लगा दी और वह भी जल कर मर गया जिस ने दो आदमियो की जान बचाई थी.

کی ایک بنچ دیکھی . اس بنچ پر جج بیٹھے ہوئے تھے

اُن ججوں میں ایک ایماندار آدمی بھی تھا جس کو فیساگورس پہچانتا تھا اُس نے فیساگورس کو اس گھٹنا کی کتھا سنائی کہ ان دو آدمیوں کی ذرا بھی یہ اچھا نہیں تھی کہ ان کو آگ کی بھینٹ کردیا جاوے اور یہ فیصلہ دوسرے ججوں نے کیا تھا کہ وہ دونوں زندہ جلا دیئے جاویں ایک کا قصور یہ تھا کہ اس نے جھوٹا بیان دیا تھا اور دوسرے کا کھوٹ یہ تھا کہ اس نے یہ بتایا تھا کہ ہر دھرم کا آدمی مرنے کے بعد ہی سورگ پہونچ سکتا ہے گاؤں کی سیدھی سادھی اِستریاں ان باتوں سے ڈر گئیں اور جب تک کہ انھوں نے ججوں کو ان کو مروا دینے کا فیصلہ دینے پر مجبور نہ کر دیا تب تک ان استریوں نے ججوں کو چین نہ لینے دیا

فیساگورس کو وشواس ہوگیا کہ گھاس سے لے کر آدمی تک ہر ایک گراوٹ کے مارگ پر چل رہا ہے پھر بھی فیساگورس نے اُن دو آدمیوں کو چھڑا لیا .

اسکے بعد فیساگورس کروٹونا میں ویاکھیان دینے چلا گیا . ایک کٹر آدمی نے اسکے مکان میں آگ لگادی اور وہ بھی جل کر مرگیا جس نے دو آدمیوں کی جان بچائی تھی .

यह सुनकर वह काँप गया उसे ऐसा लगा कि वह बड़ा पाप करने वाला था उसने आँखों मे आँसू भर कर मछली से माफी माँगी और उसको वहीं चट्टान पर छोड़ दिया जैसे ही वह शहर वापस आ रहा था उसने मकड़ियों को मक्खी खाते देखा और अबाबीलों को मकड़ी खाते !!

फिर भी फीसागोरस ने अपने आप को तसल्ली देते हुए कहा— इनमे से एक भी फिलासफर नहीं है !!"

जैसे ही वह शहर मे दाखिल हुआ आदमियों की भीड़ उसे मिली लोग बाग इधर उधर चिल्लाते हुए दौड़ रहे थे—वह देखता रह गया उसके चोट लग गई और वह गिर भी पड़ा

बहुत अच्छा हुआ एक ने कहा—'वह इसी के लायक था।"

" कौन ?" फीसागोरस ने पूछा

आदमी इधर उधर बराबर दौड़ते रहे और चिल्लाते रहे—' इनको उबलते हुए देखना कितना अच्छा मालूम होगा !!"

फीसागोरस ने ख्याल किया कि शायद इन लोगों का मतलब साग सब्जी को उबलते देखने से है मगर वह गलती पर था उनका मतलब दो बदनसीब आदमियों से था

ओह ' फीसागोरस ने कहा—'यह दोनों बहुत ऊंचे फिलासफर होंगे जो अपनी जिन्दगी से उकता कर दूसरे रूप मे पैदा होना चाहते होंगे !!"

वह उस भीड़ के साथ उधर चल दिया जिधर सब लोग जारहे थे. वहाँ पहुँचकर उसने लकड़ियों का एक ढेर और उसके पास लकड़ी

یہ سنکر وہ کانپ گیا اُسے ایسا لگا کہ وہ بڑا پاپ کرنے والا تھا اسلئے آنکھوں میں آنسو بھر کر مچھلی سے معافی مانگی اور اسکو وہیں چٹان پر چھوڑدیا جیسے ہی وہ شہر واپس آرہا تھا اس نے مکڑیوں کو مکھی کھاتے دیکھا اور ابابیلوں کو مکڑی کھاتے !!

پھر بھی فیساگورس نے اپنے آپ کو تسلی دیتے ہوے کہا ان میں سے ایک بھی فلاسفر نہیں ہے!'

جیسے ہی وہ شہر میں داخل ہوا آدمیوں کی بھیڑ اُسے ملی لوگ باگ اِدھر اُدھر چلاتے ہوئے دوڑ رہے تھے — وہ دیکھتا رہ گیا اسکے چوٹ لگ گئی اور وہ گر بھی پڑا

"بہت اچھا ہوا" ایک نے کہا — "وہ اسی کے لائق تھا '

"کون ؟" فیساگورس نے پوچھا

آدمی اِدھر اُدھر برابر دوڑتے رہے اور چلاتے رہے — "ان کو اُبلتے ہوئے دیکھنا کتنا اچھا معلوم ہوگا !!'

فیساگورس نے خیال کیا کہ شاید اِن کا مطلب ساگ سبزی کو اُبلتے دیکھنے سے ہے مگر وہ غلطی پر تھا ان کا مطلب دو بدنصیب آدمیوں سے تھا

'اوہ ! فیساگورس نے کہا" — یہ دونوں بہت اونچے فلاسفر ہونگے جو اپنی زندگی سے اُکتا کر دوسرے روپ میں پیدا ہونا چاہتے ہونگے !!'

وہ اُس بھیڑ کے ساتھ اُدھر چلدیا جدھر سب جارہے تھے . وہاں پہونچ کر اسنے لکڑیوں کا ایک ڈھیر اور اسکے پاس لکڑی

मशहूर फ्रान्सीसी लेखक वालटेर की एक कहानी

भलाई का फल

(अनुवादक—शकर स्वरूप भटनागर एम. ए)

फीसा गोरस यूनान का एक फिलासफर था वह हिन्दुस्तान पढ़ने आया था जब वह हिन्दुस्तान मे पढ़ता था तो उसने जगली जानवरो और दरख्तो की जबाने सीखली थी एक दिन जब वह समुन्दर के किनारे टहल रहा था, उसने घास को यह कहते हुए सुना —

' मैं कितनी बदकिस्मत हूँ कि मै ने घा ा की जिन्दगी पाई—मैं मुशकिल से दो इच ही बढ़ पाती हूँ कि कोई मुझे अपने भारी पैरो से कुचल दे । है. जो जानवर मुझे खाता है उसके दॉत तेज भालो की तरह होते है जिनसे वह मुझे काटता है, चबाता है और निगल जाता है लोग उसे बकरी कहते है—मै खयाल करती हूँ कि इस से बढ़ कर नफरत की दूसरी कोई चीज नही है !''

फीसागोरस थोड़ी दूर ही गया होगा कि उसने एक मछली को चटान पर जॅमाही लेते देखा. उसने मछली को पकडना चाहा मगर वह इन दर्दनाक शब्दो मे बोली —

"ऐ भगवान—घास कितनी भागवान है तूने ही घास को बनाया है और तूने ही मुझ को—घास काट दी जाती है फिर भी उग आती है. पर हम बिचारी मछलियॉ दर्जनो नाशता की जाती है और सदा के लिये समाप्त हो जाती है—मछलियो की भी कितनी बुरी तकदीर है और आदमी भी कितने जंगली हैं !''

مشہور فرانسیسی لیکھک والٹیر کی ایک کہانی

بھلائی کا پھل

(انوادک—شنکر سروپ بھٹناگر ایم . اے)

فیسا گورس یونان کا ایک فلاسفر تھا وہ ہندستان پڑھنے آیا تھا جب وہ ہندستان میں پڑھتا تھا تو اس نے جنگلی جانوروں اور درختوں کی زبانیں سیکھ لی تھیں ایک دن جب وہ سمندر کے کنارے ٹہل رہا تھا' اسنے گھاس کو یہہ کہتے ہوئے سنا —

" میں کتنی بدقسمت ہوں کہ میں نے گھاس کی زندگی پائی میں مشکل سے دو اِنچ ہی بڑھ پاتی ہوں کہ کوئی مجھے اپنے بھاری پیروں سے کچل دیتا ہے جو جانور مجھے کھاتا ہے اسکے دانت تیز بھالو کی طرح ہوتے ہیں جن سے وہ مجھے کاٹتا ہے چباتا ہے اور نگل جاتا ہے . لوگ اُسے بکری کہتے ہیں — میں خیال کرتی ہوں کہ اس سے بڑھ کر نفرت کی دوسری کوئی چیز نہیں ہے !"

فیسا گورس تھوڑی دور ہی گیا ہوگا کہ اس نے ایک مچھلی کو چٹان پر جماہی لیتے دیکھا اسنے مچھلی کو پکڑنا چاہا مگر وہ ان دردناک شبدوں میں بولی —

"اے بھگوان—گھاس کتنی بھاگوان ہے تو نے ہی گھاس کو بنایا ہے اور تونے ہی مجھکو—گھاس کاٹ دی جاتی ہے پھر بھی اُگ آتی ہے پر ہم بیچاری مچھلیاں درجنوں ناشتہ کی جاتی ہیں اور سدا کے لئے سماپت ہوجاتی ہیں مچھلیوں کی بھی کتنی بری تقدیر ہے اور آدمی بھی کدلے جنگلی ہیں !"

अल्लामा जलालुद्दीन सियोती ने अब्दुलवाहिद लगवी से रवायत की है कि मुहम्मद बिन सलामअलजमई का बयान है कि मैंने अपने बुजुर्गो से सुना कि अरब मे मुहम्मद साहब के साथियों के बाद खलील बिन अहमद आर अजम (गैर अरब) मे इब्नुलमुकफ्फा से बढ़कर कोई आदमी पेदा नही हुआ यहया बिन खालिद बरमकी अब्बासी खलीफाओं का वजीर और खुद बहुत बडा अदीब और समालोचक था. वह कहता है— 'खलील बिन अहमद. अब्दुल्ला बिन अलमुकफ्फा और अबूहनीफा यह तीन आदमी ऐसे है जो अपने फन मे जवाब नही रखते '

इब्नुलफकीह जाफर बिन यहया बरमकी का एक कौल नक़ल करते है कि— अब्दुलमजीद जड है सोहैल बिन हारून शाख, इब्नुलमुकफ्फा मेवा और अहमद बिन यूसुफ फूल ' गरज अरब के सभी लेखकों ने इब्नुलमुकफ्फा को तारीफ की है

इब्नुलमुकफ्फा के नीचे लिखे तरजुमों और रचनाओं का अब तक पता लगा है—

(१) खुदाई नामा,
(२) आईन नामा,
(३) कलैला दमना,
(४) किताब मुजदक,
(५) किताब ताजदर सीरत नौशेरवा
(६) अलआदाब-लकबीर
(७) किताबुलअदब अलसग़ीर
(८) किताबुलयतीमा

علامہ جلال الدین سیوطی نے عبدالواحد لغوی سے روایت کی ھے کہ محمد بن سلام الجمعی کا بیان ھے کہ میں نے اپنے بزرگوں سے سنا کہ عرب میں محمد صاحب کے ساتھیوں کے بعد خلیل بن احمد اور عجم (غیر عرب) میں ابن المقفع سے بڑھ کر کوئی آدمی پیدا نہیں ہوا یحییٰ بن خالد برمکی عباسی خلیفاؤں کا وزیر اور خود بڑا ادیب اور سمالوچک تھا وہ کہتا ھے— 'خلیل بن احمد عبداللہ بن المقفع' اور ابوحنیفہ یہ تین آدمی ایسے ھیں جو اپنے فن میں جواب نہیں رکھتے "

ابن الفقیہ جعفر بن یحییٰ برمکی کا ایک قول نقل کرتے ھیں کہ—"عبدالمجید جڑ ھے' سہیل بن ھارون شاخ' ابن المقفع میوہ اور احمد بن یوسف پھول" غرض عرب کے سبھی لیکھکوں نے ابن المقفع کی تعریف کی ھے .

ابن المقفع کے نیچے لکھے ترجموں اور رچناؤں کا اب تک پتہ لگا ھے —

(١) خدائی نامہ'
(٢) آئین نامہ'
(٣) کلیلہ دمنہ'
(٤) کتاب مزدک'
(٥) کتاب تاج در سیرت نوشیروار'
(٦) الادب الکبیر'
(٧) کتاب الادب 'الصغیر'
(٨) کتاب الیتیمہ'

और ईरानी और अरबी तहज़ीब, कलचर और साहित्य पर पूरा क़ाबू हासिल किया.

इब्नुलमुकफ्फ़ा केवल पहलवी भाषा का ही अदीब नही था बल्कि अरबी अदब पर भी उसे पूरा अधिकार था यह भी अजीब इत्तिफ़ाक है कि अरबी ज़बान का सबसे पहला डिक्शेनरी लिखने वाला साहिबे कामूस अजमी (ग़ैर अरब) था और सबसे पहला अमर साहित्यकार इब्नुलमुकफ्फ़ा भी अजमी था. इब्नुलमुकफ्फ़ा की कलैला दमना अरबी साहित्य मे शाहकार मानी जाती है और बड़े बड़े साहित्यिकों ने उसकी तारीफ़ और नकल की है. अब तक अरबी ज़बान मे हज़ारों किताबें अदब और इन्शा पर लिखी गई और सैकड़ो अदीबों ने इससे बढ़ कर किताब पेश करने की कोशिश की मगर कोई कामयाब न हो सका.

इब्नुलमुक़फ़्फ़ा का चमत्कार तारीफ़ के क़ाबिल है. आज का अरबी विद्यार्थी और लेखक कलैला दमना मे वही लोच और मनोहरता पाता है जो आजकल के ऊँचे से ऊँचे साहित्य मे मिलती है. पुराना और बासीपन उसमे बिलकुल नही. जिस तरह फ़ारसी का अदीब ' गुलिस्ता ' को पढ़ता और उसमे पुराने और बासीपन की कोई झलक बिलकुल नही पाता है उसी तरह अरबी का अदीब भी इब्नुलमुक़फ़्फ़ा की कलैलादमना का पढ़ता और उसे अपने ही ज़माने की चीज समझता है. अरब के बड़े से बड़े लेखकों और विद्वानो ने इब्नुलमुकफ्फ़ा की तारीफ़ के गीत गाये है. तबकातुल अतिब्बा अलफ़ेहरिस्त, इब्नुलफ़कीह, माजमुलअदिबा, किताबुलमज़हरज वग़ैरा ने एक ज़बान से इब्नुलमुकफ्फ़ा की भाषा की तारीफ़ की है.

اور ایرانی اور عربی تہذیب، کلچر اور ساهتیه پر پورا قابو حاصل کیا .

ابن المقفع کیول پہلوی بھاشا کا هی ادیب نہیں تھا بلکه عربی ادب پر بھی اُسے پورا ادھیکار تھا . یه بھی عجیب اتفاق هے که عربی زبان کا سب سے پہلا ڈکشنری لکھنے والا صاحب قاموس عجمی (غیر عرب) تھا اور سب سے پہلا امر ساهتیک ابن المقفع بھی عجمی تھا. ابن المقفع کی کلیله‌دمنه عربی ساهتیه میں شاهکار مانی جاتی هے اور بڑے بڑے ساهتیکوں نے اس کی تعریف اور نقل کی هے . اب تک عربی زبان میں هزاروں کتابیں ادب اور انشا پر لکھی گئیں اور سیکڑوں ادیبوں نے اس سے بڑھ کر کتاب پیش کرنے کی کوشش کی مگر کوئی کامیاب نه هو سکا .

ابن المقفع کا چمتکار تعریف کے قابل هے . آج کا عربی ودیارتھی اور لیکھک کلیله دمنه میں وهی لوچ اور منوهرتا پاتا هے جو آج کل کے اُونچے سے اُونچے ساهتیه میں ملتی هے . پرانا اور باسی پن اُس میں بالکل نہیں . جس طرح فارسی کا ادیب 'گلستاں' کو پڑھتا اور اس میں پرانے اور باسی پن کی کوئی جھلک بالکل نہیں پاتا هے . اُسی طرح عربی کا ادیب بھی ابن المقفع کی کلیله دمنه کو پڑھتا اور اُسے اپنے هی زمانے کی چیز سمجھتا هے عرب کے بڑے سے بڑے لیکھکوں اور ودوانوں نے ابن المقفع کی تعریف کے گیت گائے هیں . طبقات الاطباء الفهرست، ابن الفقیه، معجم الادبا، کتاب المزهرج وغیرہ نے ایک زبان سے ابن المقفع کی بھاشا کی تعریف کی هے .

ने संस्कृत की यह सेवा की कि उसके एक अनमोल रतन को अमर बनादिया और दूसरी तरफ अरबी अदब की यह सेवा की कि कलैला दमना जैसा शाहकार उसमे बढ़ा दिया कलैला दमना की कहानियों का दोहराना फजूल है शायद ही कोई ऐसा आदमी हो जिसने उन्हे न पढ़ा या सुना हो अलबत्ता कलैलादमना के लिखने वाले इब्नुलमुकफ्फा को बहुत कम लोग जानते है

अब्दुल्ला इब्नुलमुकफ्फा ईरान के शहर जूर (जो अब फीरोजा-बाद कहलाता है) का रहने वाला था वह पुराने मजहब के ईरानियो मे स था इस्लाम कबूल करनेके बाद लेखक की हैसियत से अब्बासी खलीफाओं के दरबार मे दाखिल हुआ इस जमाने मे लेखक यानी कातिब और मुंशी बड़े विद्वान और जानकार और अच्छे अदीब (साहित्यकार) होते थे जाहिर है कि अब्बासी खलीफाओ का मुंशी और कातिब बड़ी काबलियत और योग्यता का था

अब्दुल्ला इब्नुलमुकफ्फा के बाप हजाज बिन यूसुफ के जमाने मे सररश्तेदार माल और तहसीलदार थे और इराक की मालगुजारी वसूल करते थे. वह कुछ सरकारी रकम अपने खर्च मे ले आये इसलिए हजाज ने उन्हे पिटवाया जिसकी वजह से उनके हाथ की उंगलियां टूट कर टेढी हो गई टेढी उंगलियो वाले को अरबी में कुफ्फा कहते है इसलिए यह उनका लकब बन गया और उनका बेटा अब्दुल्ला इब्नुलमुकफ्फा कहलाने लगा. अब्दुल्ला का नाम पहले दाजबा था. मुसलमान होने से पहले अपने बाप के साथ रहकर उन्होंने पहलवी जबान और ईरानी विद्यायें सीखीं फिर अरबी सीखी

نے سنسکرت کی یہ سیوا کی کہ اس کے ایک ان مول رتن کو امر بنا دیا اور دوسری طرف عربی ادب کی یہ سیوا کی کہ کلیلہ دمنہ جیسا شاہکار اس میں بڑھا دیا کلیلہ دمنہ کی کہانیوں کو دہرانا فضول ہے شاید ہی کوئی ایسا آدمی ہو جس نے انہیں نہ پڑھا یا سنا ہو البتہ کلیلہ دمنہ کے لکھنے والے ابن المقفع کو بہت کم لوگ جانتے ہیں

عبداللہ ابن المقفع ایران کے شہر جور (جو اب فیروزآباد کہلاتا ہے) کا رہنے والا تھا وہ پرانے مذہب کے ایرانیوں میں سے تھا. اسلام قبول کرنے کے بعد لیکھک کی حیثیت سے عباسی خلیفاؤں کے دربار میں داخل ہوا اس زمانے میں لیکھک یعنی کاتب اور منشی بڑے ودوان اور جانکار اور اچھے ادیب (ساہتیہ کار) ہوتے تھے ظاہر ہے کہ عباسی خلیفاؤں کا منشی اور کاتب بڑی قابلیت اور یوگیتا کا تھا

عبداللہ ابن المقفع کے باپ حجاج بن یوسف کے زمانے میں سر دفتر مال اور تحصیل دار تھے اور عراق کی مالگذاری وصول کرتے تھے وہ کچھ سرکاری رقم اپنے خرچ میں لے آئے اس لئے حجاج نے انہیں پٹوایا جس کی وجہ سے ان کے ہاتھ کی انگلیاں ٹوٹ کر ٹیڑھی ہوگئیں. ٹیڑھی انگلیوں والے کو عربی میں قفع کہتے ہیں. اس لئے یہ ان کا لقب بن گیا اور اُن کا بیٹا عبداللہ ابن المقفع کہلانے لگا. عبداللہ کا نام پہلے دا بہ تھا. مسلمان ہونے سے پہلے اپنے باپ کے ساتھ رہ کر انہوں نے پہلوی زبان اور ایرانی ودیائیں سیکھیں پھر عربی سیکھی

नौशेरवाँ ने अपने एक मत्री को हिन्दुस्तान भेजकर "पंचतत्र" किताब मंगवाई और हकीम बरज़ोया से उसका पहलवी जबान मे तरजुमा कराया. सन ५७० ई० मे इसका पहलवी से शामी (सीरियाई) जबान मे तरजुमा किया गया और सन ७५० ई० मे पहलवी से हो अरबी मे और उसके बाद अरबी से इबरानी (हेबरू), यूनानी (ग्रीक), लातीनी (लैटिन) जबानो मे तरजुमे हुए इसके बाद दुनिया की हर जबान मे इसका तरजुमा किया गया सिवाय अर्जील के दुनिया को कोई किताब ऐसी नही है जिसका तरजुमा इतनी जबानो मे किया गया हो

अब्दुल्ला बिन अल्मुकफ्फा ने जो सन् १४२ हिजरी मे मरा, 'पंचतत्र' के पहलवी तरजुमे से अरबी मे तरजुमा किया और 'कलैलादमना' उसका नाम रखा. यह दानो नाम उन दोनो लोमड़ियो के नाम है जिनकी कहानी से इस किताब का पहला बाब शुरू होता है. अब्दुल्ला बिन अलमुकफ्फा एक ईरानी नसल का नवमुस्लिम विद्वान था जो अरबी साहित्य का भी बडा आलिम था और अरबी अदब और अरबी जबान पर पूरी तरह हावी था. यह एक अनोखी बात है कि "पचतन्त्र" के जितने तरजुमे अलग अलग जबानो मे हुए वह या तो अब्दुल्ला बिन अलमुकफ्फा की अरबी कलैला दमना से हुए या इसी कलैला दमना के किसी तरजुमे से तरजुमे किये गये. सीधे संस्कृत से किसी ने भी तरजुमा नही किया सिर्फ एक आध जैसे मरहठी तरजुमा ऐसा मिलता है जो संस्कृत से किया गया खुद संस्कृत जबान मे असली शुरू का "पचतत्र" नही मिलता. जो किताबें मिलती हैं उनमें बहुत सी कहानियाँ बाद मे जोड़ी हुई हैं. इस तरह इब्नुलमुकफ्फा

نوشیرواں نے اپنے ایک منتری کو ہندستان بھیجکر "پنچ تنتر ' کتاب منگوائی اور حکیم برزویہ سے اس کا پہلوی زبان میں ترجمہ کرایا . سن ۵۷۰ع میں اس کا پہلوی سے شامی (سیریائی) زبان میں ترجمہ کیا گیا اور سن ۷۵۰ع میں پہلوی سے ہی عربی میں اور اسکے بعد عربی سے عبرانی (ہبرو) یونانی (گریک) لاطینی (لیٹن) زبانوں میں ترجمے ہوئے اسکے بعد دنیا کی ہر زبان میں اسکا ترجمہ کیا گیا سوائے انجیل کے دنیا کی کوئی کتاب ایسی نہیں ہے جس کا ترجمہ اتنی زبانوں میں کیا گیا ہو

عبداللہ بن المقفع نے' جو سن ۱۴۲ ہجری میں مرا' "پنچ تنتر" کے پہلوی ترجمے سے عربی میں ترجمہ کیا اور 'کلیلہ دمنہ' اس کا نام رکھا . یہ دونوں نام اُن دونوں لومڑیوں کے نام ہیں جن کی کہانی سے اس کتاب کا پہلا باب شروع ہوتا ہے عبداللہ بن المقفع ایک ایرانی نسل کا نو مسلم ودوان تھا جو عربی ساہتیہ کا بھی بڑا عالم تھا اور عربی ادب اور عربی زبان پر پوری طرح حاوی تھا یہ ایک انوکھی بات ہے کہ "پنچ تنتر" کے جتنے ترجمے الگ الگ زبانوں میں ہوئے وہ یا تو عبداللہ بن المقفع کی عربی کلیلہ دمنہ سے ہوئے یا اسی کلیلہ دمنہ کے کسی ترجمے سے ترجمے کئے گئے سیدھے سنسکرت سے کسی نے بھی ترجمہ نہیں کیا . صرف ایک آدھ جیسے مرہٹی ترجمہ ایسا ملتا ہے جو سنسکرت سے کیا گیا خود سنسکرت زبان میں اصلی شروع کا "پنچ تنتر" نہیں ملتا. جو کتابیں ملتی ہیں ان میں بہت سی کہانیاں بعد میں جوڑی ہوئی ہیں . اس طرح ابن المقفع

बच्चो को अपने घर लाकर कहानियो को सूरत मे तालीम देनी शुरू की. पन्डित जी ने अपनी तालीम को पांच हिस्सो मे बॉटा.

(१) मित्र भेद यानी दोस्तो को किस तरह एक दूसरे से जुदा किया जाय.

(२) मित्र संप्राप्ति यानी दोस्तो को कैसे हासिल किया जाय

(३) काकुलूकीयम्, यानी कौवो और उल्लुओ की जंग

(४) लब्ध प्रणाशम् यानी अपनी कमाई का नुकसान

(५) अपरीक्षित कारकम् ,यानी जल्दी मे जो काम किये जाते है उनके क्या नतीजे होते हैं.

यह कहानियाँ लोमडी, शेर भेड बैल, मगरमच्छ, कौवे, चूहे, बन्दर, उल्लू औरतो और देवो की कहानियाँ हैं इनको ऐसे दिलचस्प ढंग से बयान किया जाने लगा कि तीनों मोटी अकल के राजकुमार दिलचस्पी लेने लगे और उन्हे सच्ची बाते समझ कर उनमे सबक सीखने लगे. छै महीने भी न हुए थे कि राजकुमार राजनीति, शासन प्रबंध और दूसरे दुनिया के कामो मे न केवल माहिर हो गये बल्कि खुद लिखने पढ़ने और कविता करने लगे

यह कहानियाँ हिंदुस्तान मे आम हो गईं और इनको तरह तरह से सस्कृत जबान मे बयान करना और पढाना शुरू हो गया. कुछ लोगो ने इसमे "हितोपदेश" को, जो नारायन की लिखी मशहूर कहानी है शामिल कर दिया और कमडका की नीतिशास्त्र से अच्छी अच्छी कविताये भी इसमे शामिल कर दी गई

यह कहानियाँ ईसा से सौ बरस पहले से ही सारी दुनिया में मशहूर हो गईं, छठवीं सदी ईसवी में जब यह ईरान पहुंचीं तो

بچوں کو اپنے گھر لاکر کہانیوں کی صورت میں تعلیم دینی شروع کی . پنڈت جی نے اپنی تعلیم کو پانچ حصوں میں بانٹا .

(۱) متر بھید' یعنی دوستوں کو کس طرح ایک دوسرے سے جدا کیا جائے

(۲) متر سمپراپتی' یعنی دوستوں کو کیسے حاصل کیاجائے .

(۳) کاکولو کیم' یعنی کوؤں اور الوؤں کی جنگ

(۴) لبدھ پرناشم یعنی اپنی کمائی کا نقصان

(۵) اپریکشت کارکم یعنی جلدی میں جو کام کئے جاتے ہیں ان کے کیا نتیجے ہوتے ہیں .

یہ کہانیاں لومڑی شیر' بھیڑ بیل مگر مچھ کوے' چوہے' بندر الو عورتوں اور دیوں کی کہانیاں ہیں ان کو ایسے دلچسپ ڈھنگ سے بیان کیا جانے لگا کہ تینوں موٹی عقل کے راجکمار دلچسپی لینے لگے اور انہیں سچی باتیں سمجھکر ان سے سبق سیکھنے لگے . چھ مہینے بھی نہ ہوئے تھے کہ راج کمار راج نیتی شاسن پربندھ اور دوسرے دنیا کے کاموں میں نہ کیول ماہر ہوگئے بلکہ خود لکھنے پڑھنے اور کویتا کرنے لگے

یہ کہانیاں ہندستان میں عام ہوگئیں اور ان کو طرح طرح سے سنسکرت زبان میں بیان کرنا اور پڑھانا شروع ہوگیا کچھ لوگوں نے اس میں "ہتو پدیش" کو' جو نارائن کی لکھی مشہور کہانی ہے' شامل کردیا اور کمنڈکا کی نیتی شاستر سے اچھی اچھی کویتائیں بھی اس میں شامل کردی گئیں

یہ کہانیاں عیسیٰ سے سو برس پہلے سے ہی ساری دنیا میں مشہور ہوگئیں، چھٹویں صدی عیسوی میں جب یہ ایران پہونچیں تو

को तालीम दिला सकूँ." एक पंडित ने कहा—"आप उन्हें बारह साल तक क़वायद यानी व्याकरन पढ़ाइये और उसके बाद मनु का धर्मशास्त्र और चाणक्य का अर्थशास्त्र और वात्स्यायन का कामशास्त्र पढ़ाइये इससे उनको अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, प्रजा पालन, प्रेम और सदाचार में महारत हासिल हो जायगी." दूसरे पंडित ने कहा—"ज़िन्दगी थोड़े दिन की है और इन विद्याओं के हासिल करने के लिये एक उमर की ज़रूरत है, इसलिये अच्छा है कि कोई नया ढंग निकाला जाय यानी हमको दूध बिलोना चाहिये और उसका मस्का और बालाई राज कुमारों को देनी चाहिये, बिलकुल उस तरह जिस तरह हंस दूध से पानी को अलग कर के सिर्फ़ दूध पी लेता है. हम में विष्णु शर्मा जैसा विद्वान मौजूद है जो अपने वक़्त का महा पंडित है. ए राजा! आप अपने लड़कों को उसके हवाले करदें तो वह बहुत ही कम समय में इन बच्चों को क़ाबिल बना देगा."

राजा ने विष्णु शर्मा को बुला कर कहा—"गुरू जी! मेरे बच्चों पर कृपा कीजिये और इन्हें तालीम दीजिये. मैं हमेशा के लिये आपके नाम एक सौ गाँव की जागीर कर देता हूँ." विष्णु शर्मा ने कहा—"राजा! मैं विद्या को नहीं बेचूंगा. आप के सौ गाँवों का मेरे यहाँ कोई मूल्य नहीं है. मैं एक ब्राह्मण हूँ और हर विद्यार्थी को सिखाना अपना फ़र्ज़ समझता हूँ. मैं विश्वास दिलाता हूँ कि छै महीने के अन्दर आपके बच्चे राज काज और दुनिया के कामों में माहिर हो जायेंगे. मैं क़सम खाता हूँ कि अपने काम में कमी न करूँगा." राजा ने बच्चों को पंडित जी के हवाले करके इतमीनान का साँस लिया और यह महसूस किया कि उसके कन्धों से एक भारी बोझ उतर गया. विष्णु शर्मा ने इन

کی تعلیم دلا سکوں". ایک پنڈت نے کہا—" آپ اُنہیں بارہ سال تک قواعد یعنی ویاکرن پڑھائیے اور اِس کے بعد منّو کا دھرم شاستر اور چانکیہ کا ارتھ شاستر اور واتساین کا کام شاستر پڑھائیے. اس سے اُن کو ارتھ شاستر، نیتی شاستر، پرجا پالن، پریم اور سداچار میں مہارت حاصل ہوجائے گی" دوسرے پنڈت نے کہا—"زندگی تھوڑے دن کی ہے اور ان ودیاؤں کے حاصل کرنے کے لئے ایک عمر کی ضرورت ہے، اس لئے اچھا ہے کہ کوئی نیا ڈھنگ نکالا جائے یعنی ہم کو دودھ بلونا چاہئے اور اُس کا مسکہ اور بالائی راج کماروں کو دینی چاہئے. بالکل اُس طرح جس طرح ہنس دودھ سے پانی کو الگ کرکے صرف دودھ پی لیتا ہے. ہم میں وشنو شرما جیسا ودوان موجود ہے جو اپنے وقت کا مہاپنڈت ہے. اے راجا! آپ اپنے لڑکوں کو اُسکے حوالے کر دیں تو وہ بہت ہی کم سمے میں ان بچوں کو قابل بنا دے گا".

راجا نے وشنو شرما کو بلا کر کہا—" گرو جی! میرے بچوں پر کرپا کیجئے اور اُنہیں تعلیم دیجئے. میں ہمیشہ کے لئے آپ کے نام ایک سو گاؤں کی جاگیر کردیتا ہوں" وشنو شرما نے کہا—"راجا! میں ودیا کو نہیں بیچوں گا. آپکے سو گاؤں کا میرے یہاں کوئی مولیہ نہیں ہے. میں ایک براہمن ہوں اور ہر ودیارتھی کو سکھانا اپنا فرض سمجھتا ہوں. میں وشواس دلاتا ہوں کہ چھ مہینے کے اندر آپ کے بچے راج کاج اور دنیا کے کاموں میں ماہر ہو جائیں گے. میں قسم کھاتا ہوں کہ اپنے کام میں کمی نہ کروں گا". راجا نے بچوں کو پنڈت جی کے حوالے کرکے اطمینان کا سانس لیا اور یہ محسوس کیا کہ اُسکے کندھوں سے ایک بھاری بوجھ اُتر گیا. وشنو شرما نے اِن

" पंच तन्त्र "

संस्कृत से अरबी तरजुमा

(भाई सैयद तसकीन काज़िमी)

दुनिया की ज़बानों की माओं में संस्कृत ज़बान भी शामिल है जो न केवल हिन्दुओं की धर्म की भाषा है बल्कि उसमें ऊंचा साहित्य भी मौजूद है. यों तो संस्कृत में करोड़ों जवाहर पारे मौजूद हैं पर उनमें सब से अनमोल रत्न 'पंचतन्त्र' है जिसका दुनिया की तमाम ज़बानों में तरजुमा हो चुका है. यह किताब दूसरी सदी ईसा से पहले की यादगार है. इस को मशहूर विद्वान विष्णु शर्मा ने रचा था. विष्णु शर्मा का लक़ब (उपाधि) विद्यापति। था इस किताब के लिखे जाने की वजह यह बयान की जाती है। दक्खिन भारत में एक राजा महेला था. कुछ लोगों का कहना है कि वह दक्खिन भारत का नहीं बल्कि बिहार में पाटलीपुत्र का राजा था. जो हो. वह इस देश का एक राजा था. उसके तीन लड़के थे. यह तीनों बहुत खोटी अक़ल के और कम समझ थे. राजा ने इन लड़कों को तालीम दिलाने की बहुत कोशिश की पर यह तीनों किसी जोग न हो सके. आखिर राजा ने अपने वज़ीरों को और मुल्क के पाँच सौ बड़े बड़े पंडितों को जमा करके पूछा—"ऐसी औलाद से क्या लाभ जो विद्या से कोरी हो और ऐसी गाय रखने से क्या फ़ायदा जो दूध न देती हो. इससे तो अच्छा था कि औलाद ही न होती. आप लोग कोई ऐसा उपाय बतावें कि मैं अपनी औलाद को राज काज और शासन प्रबन्ध

"پنچ تنتر"

سنسکرت سے عربی ترجمہ

(بھائی سید تسکین کاظمی)

دنیا کی زبانوں کی ماؤں میں سنسکرت زبان بھی شامل ہے جو نہ کیول ہندوؤں کی دھرم کی بھاشا ہے بلکہ اُس میں اونچا ساہتیہ بھی موجود ہے یوں تو سنسکرت میں کروڑوں جواہر پارے موجود ہیں پر اُن میں سب سے اَن مول رتن 'پنچ تنتر' ہے جس کا دنیا کی تمام زبانوں میں ترجمہ ہوچکا ہے. یہ کتاب دوسری صدی عیسوی سے پہلے کی یادگار ہے. اس کو مشہور ودوان وشنو شرما نے رچا تھا وشنو شرما کا لقب (اُپادھی) ودیا پتی تھا. اس کتاب کے لکھے جانے کی وجہ یہ بیان کی جاتی ہے دکھن بھارت میں ایک راجا مہیلا تھا. کچھ لوگوں کا کہنا ہے کہ وہ دکھن بھارت کا نہیں بلکہ بہار میں پاٹلی پتر کا راجا تھا جو ہو، وہ اس دیش کا ایک راجا تھا. اس کے تین لڑکے تھے یہ تینوں بہت کھوٹی عقل کے اور کم سمجھ تھے. راجا نے ان لڑکوں کو تعلیم دلانے کی بہت کوشش کی مگر یہ تینوں کسی جوگ نہ ہوسکے. آخر راجا نے اپنے وزیروں کو اور ملک کے پانچ سو بڑے بڑے پنڈتوں کو جمع کرکے پوچھا—"ایسی اولاد سے کیا لابھ جو ودیا سے کوری ہو اور ایسی گائے رکھنے سے کیا فائدہ جو دودھ نہ دیتی ہو. اس سے تو اچھا تھا کہ اولاد ہی نہ ہوتی. آپ لوگ کوئی ایسا اپائے

उसका ज़रा भी ख़याल किये बग़ैर बढ़ना चाहिये. अगर वह रुके तो ग़लत इरादों और मूर्ख शक्तियों के हाथों होती हुई विशुद्ध मानवता यानी ख़ालिस इन्सानियत की शहादत के बेबस तमाशाई बन जायंगे. कामयाबी तभी होगी जब हम सचाई और इन्सानियत को सबसे ऊपर रखेंगे. क्योंकि सत्य और मानवता के बग़ैर पाई हुई शान्ति क़ब्र की शान्ति होगी, जिसके लिये शान्ति नाम ही ग़लत है.

चार साल पहले जब इन्सान के हाथों इन्सान के साथ जो ग़ैर इन्सानी बर्ताव हुए और उससे जब कुछ समय के लिये सत्य और परमेश्वर हमारे बीच से उठ गये थे तब गांधी जी ने अपनी नोआखाली, बिहार, कलकत्ता और देहली की कड़ी तपस्या से हमें अपने आप ही उन्हें फिर से पाने और अपने बीच बैठाने में मदद दी थी. अगर कम से कम कुछ ही चुने हुए काम करने वाले इस मौक़े के लिये तैयार हो जायं और उनमें काम करने की लगन और हिम्मत हो तो इस संकट के वक़्त भी गांधी जी की आत्मा हमारा साथ नहीं छोड़ेगी.

('हरिजन सेवक' से)

اسکا ذرا بھی خیال کئے بغیر بڑھنا چاھئے . اگر وہ رکے تو غلط ارادوں اور مورکھ شکتیوں کے ھاتھوں ھوتی ھوئی وشدھ مانوتا یعنی خالص انسانیت کی شہادت کے بے بس تماشائی بن جائیں گے . کامیابی تبھی ھوگی جب ھم سچائی اور انسانیت کو سب سے اوپر رکھیں گے . کیونکہ ستیہ اور مانوتا کے بغیر پائی ھوئی شانتی قبر کی شانتی ھوگی' جس کے لئے شانتی نام ھی غلط ھے .

چار سال پہلے جب انسان کے ھاتھوں انسان کے ساتھ جو غیر انسانی برتاؤ ھوئے اور اس سے جب کچھ سمے کے لئے ستیہ اور پرمیشور ھمارے بیچ سے اٹھ گئے تھے تب گاندھی جی نے اپنی نواکھالی' بہار' کلکتہ اور دھلی کی کڑی تپسیا سے ھمیں اپنے آپ ھی انہیں پھر سے پانے اور اپنے بیچ بیٹھانے میں مدد دی تھی . اگر کم سے کم کچھ ھی چنے ھوئے کام کرنے والے اس موقع کے لئے تیار ھوجائیں اور ان میں کام کرنے کی لگن اور ھمت ھو تو اس سنکٹ کے وقت بھی گاندھی جی کی آتما ھمارا ساتھ نہیں چھوڑے گی

('ھریجن سیوک' سے)

लेकिन वह हो या न हो, और दोनों सरकारें चाहे कुछ भी करें, जो शान्ति के तरीक़ों में विश्वास रखते हैं, और चूंकि उन्होंने तजरबे से समझ लिया है कि लड़ाई से कुछ भी फ़ायदा नहीं होता, उल्टा जिन बुराइयों को वह दूर करना चाहती है उन सारी बुराइयों से मिली खुद एक बुराई बनजाती है, इस लिये वह लड़ाई से नफ़रत करते हैं, ऐसे लोगों के सर भारी ज़िम्मेदारी आजाती है.

शान्ति सेवकों के लिये मौक़ा

भारत और पाकिस्तान दोनों देशोंमें फ्रेन्डस्सर्वीस युनिट के मेम्बरो जैसे पक्के शान्त वादी काम कर रहे है. मुझे आशा है कि भारत और पाकिस्तान में यूरोपियनो में हिन्दुस्तान के सबसे बड़े पादरी मरहूम वेस्टकाट जैसे श्रद्धालु लोग हैं, जो आज की घटनाओं के अपने लिये चैलेन्ज मान रहे हैं मैं ऐसे भी लोगो को जानता हूं जो इस नतीजे पर पहुंच गये हैं कि जहाँ तक इस बड़े मुलक का सम्बन्ध है, गांधी जी के अहिंसा के रास्ते के सिवा इसके लिये कहीं मुक्ति नहीं है. फिर अन्तर राष्ट्रीय रेड क्रास संगठन है. भारती मुसलमानो को भी अपनी सरहद से बाहर के ग़ैर-मुस्लिम भाइयों की सेवा करने की प्रेरणा (तहरीक) हो सकती है.

इन सब टोलियों के लिये यही मुनासिब है कि वह दंगे के इलाकों में सही हालतों की जानकारी हासिल करने के लिये जायें और वहां के बेकसूर लोगों को आशा दिलायें और उनकी मदद करे. किसी भी देश की सरकार उन्हें अपने मिशन पर आने से रोके तो उन्हें

لیکن وہ ہو یا نہ ہو، اور دونوں سرکاریں چاہے کچھ بھی کریں جو شانتی کے طریقوں میں وشواس رکھتے ہیں، اور چونکہ انہوں نے تجربہ سے سمجھ لیا ہے کہ لڑائی سے کچھ بھی فائدہ نہیں ہوتا، الٹا جن برائیوں کو وہ دور کرنا چاہتی ہے، ان ساری برائیوں سے ملی خود ایک برائی بن جاتی ہے، اسلئے وہ لڑائی سے نفرت کرتے ہیں، ایسے لوگوں کے سر بھاری ذمہ داری آجاتی ہے

شانتی سیوکوں کے لئے موقع

بھارت اور پاکستان دونوں دیشوں میں فرینڈس سروس یونٹ کے ممبروں جیسے پکے شانتی وادی کام کر رہے ہیں۔ مجھے آشا ہے کہ بھارت اور پاکستان میں یوروپینوں میں ہندستان کے سب سے بڑے پادری مرحوم ویسٹ کاٹ جیسے شردھالو لوگ ہیں، جو آج کی گھٹناؤں کو اپنے لئے چیلنج مان رہے ہیں میں ایسے بھی لوگوں کو جانتا ہوں جو اس نتیجے پر پہنچ گئے ہیں کہ جہاں تک اس بڑے ملک کا سمبندھ ہے گاندھی جی کے اہنسا کے راستے کے سوا اس کے لئے کہیں مکتی نہیں ہے پھر انتر راشٹری ریڈ کراس سنگٹھن ہے بھارتی مسلمانوں کو بھی اپنی سرحد سے باہر کے غیر مسلم بھائیوں کی سیوا کرنے کی پریرنا (تحریک) ہو سکتی ہے۔

ان سب ٹولیوں کے لئے یہی مناسب ہے کہ وہ دنگے کے علاقوں میں سہی حالتوں کی جانکاری حاصل کرنے کے لئے جائیں اور وہاں کے بےقصور لوگوں کو آشا دلائیں اور انکی مدد کریں کسی بھی [illegible]

यह साफ जाहिर है कि सरहदों को फिर से तय किये बिना निकासियों को मुआवजे का वादा करके बुलाना भारत सरकार की शक्ति के बाहर है. इससे तो वह बरसो के लिये कमजोर हो जायगी और अगर आम जनता पर उनका भार डालने की कोशिश की तो इससे जनता में यहाँ की कमगिनत जातियों के खिलाफ बुरे भाव पैदा हो सकते हैं जिसके कारन हमारे ग़ैर फिरक़ा वाराना (सेक्युलर) राज की बुनियाद ही खतरे में पड़ जायगी. यह भारत के लिये बड़ी ही बदनसीबी की बात होगी जिस की कल्पना तक नहीं की जासकती.

तीसरा रास्ता तो दोनो देशों के बीच जंग का ही रास्ता होगा जिससे किसी को फायदा होना तो दूर, उल्टे, जैसे गांधी जी हमे बार बार चेतावनी देते थे, हमारी नई मिली हुई आज़ादी हो हमारे हाथ से निकल जायगी. इससे विश्व युद्ध यानी आलमगीर जंग भी भड़क सकती है.

इसलिये हमारे सामने पहला ही रास्ता रहना है. और हमें साफ तौर से समझ लेना चाहिये कि अगर हम वक़्ती जोश में बहेंगे तो उससे हमें कुछ भी फायदा न होगा.

अफसोस कि पाकिस्तान सरकार ने भारत और पाकिस्तान की मिली जुली जाँच पड़ताल और दोनो देशों के प्रधानमंत्रियों के दंगे के इलाक़ों के दौरे की तजवीज को नामंजूर कर दिया है. लोगों में विश्वास पैदा करने के लिये इससे बढ़कर कोई इलाज नही हो सकता था. हम आशा करें कि पाकिस्तान सरकार अब भी अपने फ़ैसले पर फिर से ग़ौर करेगी.

یه صاف ظاهر هے که سرحدوں کو پهر سے طے کئے بنا نکاسیوں کو معاوضے کا وعدہ کرکے بلانا بهارت سرکار کی شکتی کے باهر هے . اس سے تو وہ برسوں کے لئے کمزور هو جائیگی اور اگر عام جنتا پر اُنکا بهار ڈالنے کی کوشش کی تو اُس سے جنتا میں یہاں کی کم گنت جاتیوں کے خلاف برے بهاؤ پیدا هو سکتے هیں جس کے کارن همارے غیر فرقه وارانه (سیکولر) راج کی بنیاد هی خطرے پرجائیگی . یه بهارت کے لئے بڑی هی بد نصیبی کی بات هوگی جس کی کلپنا تک نهیں کی جا سکتی .

تیسرا راسته تو دونوں دیشوں کے بیچ جنگ کا هی راسته هوگا جس سے کسی کو فائدہ هونا تو دور، اُلٹے، جیسے گاندهی جی همیں بار بار چیتاونی دیتے تهے، هماری نئی ملی هوئی آزادی هی همارے هاته سے نکل جائیگی . اس سے وشو یدھ یعنی عالمگیر جنگ بهی بهڑک سکتی هے .

اسلئے همارے سامنے پهلا هی راسته رهتا هے . اور همیں صاف طور سے سمجه لینا چاهئے که اگر هم وقتی جوش میں بهیں گے تو اُس سے همیں کچه بهی فائدہ نه هوگا

افسوس که پاکستان سرکار نے بهارت اور پاکستان کی ملی جلی جانچ پڑتال اور دونوں دیشوں کے پردهان منتریوں کے دنگے کے علاقوں کے دورے کی تجویز کو نامنظور کردیا هے . لوگوں میں وشواس پیدا کرنے کے لئے اس سے بڑه کر کوئی علاج نهیں هو سکتا تها . هم آشا کریں که پاکستان سرکار اب اپنے فیصلے پر پهر سے غور

सिर्फ़ तीन रास्ते

हक़ीक़त को देखते हुए हमारे सामने तीन रास्ते हैं :

१—तूफ़ान के शिकारों को उनकी हिफ़ाज़त का पूरा वादा करके उनके अपने घरों में फिर से बसाया जाय. कुछ तो भारत में आ गये हैं, कुछ पाकिस्तान में अपने लिये बने हुए कैम्पों में पड़े हैं और कुछ अपने अपने गाँवों में ही रह गये हैं. जहाँ उनके घर ज़बरदस्ती छीन लिये गये हों, वह उन्हें वापस दिलाये जाय. जहाँ उनके घरों को बरबाद कर दिया गया हो, वहाँ नुकसान के हरजाने के साथ नये घर बनवा दिये जाय. गुण्डों और बलवाइयों पर मुक़दमा चलाया जाय जिससे कि कम गिनत लोगों को यह विश्वास हो जाय कि आगे उनके साथ अच्छा बरताव होगा.

२—पूरबी बंगाल के कमगिनत लोगों को पूरी हिफ़ाज़त के साथ इकट्ठा रूप में निकाल लिया जाय और पूरबी बंगाल में उन्हें जो नुकसान उठाना पड़े उसके लिये भारत सरकार मुआवज़ा दे और उन्हें भारत में बसा लेने के लिये ज़रूरत के मुताबिक़ सरहदें भी फिर से तय की जायं.

३—सारी आबादी की लाज़मी अदला बदली, जिस में कमगिनत लोग दोनों देशों में से किसी में भी जितनी जायदाद छोड़ जायं, उनके दावों का सरकारों के बीच इन्साफ़ भरा निकास हो.

صرف تین راستے

حقیقت کو دیکھتے ہوئے ہمارے سامنے تین راستے ہیں :

ا — طوفان کے شکاروں کو ان کی حفاظت کا پورا وعدہ کرکے ان کے اپنے گھروں میں پھر سے بسایا جائے . کچھ تو بھارت میں آگئے ہیں، کچھ پاکستان میں اپنے لئے بنے ہوئے کیمپوں میں پڑے ہیں اور کچھ اپنے اپنے گاؤں میں ہی رہ گئے ہیں جہاں انکے گھر زبردستی چھین لئے گئے ہوں، وہ انہیں واپس دلائے جائیں۔ جہاں انکے گھروں کو برباد کردیا گیا ہو وہاں نقصان کے ہرجانے کے ساتھ نئے گھر بنوا دیئے جائیں . غنڈوں اور بلوائیوں پر مقدمہ چلایا جائے جس میں کہ کم گنت لوگوں کو یہ وشواس ہو جائے کہ آگے انکے ساتھ اچھا برتاؤ ہوگا

۲—پوربی بنگال کے کم گنت لوگوں کو پوری حفاظت کے ساتھ اکٹھا روپ میں نکال لیا جائے اور پوربی بنگال میں انہیں جو نقصان اٹھانا پڑے اس کے لئے بھارت سرکار معاوضہ دے اور انہیں بھارت میں بسا لینے کے لئے ضرورت کے مطابق سرحدیں بھی پھر سے طے کی جائیں .

۳—ساری آبادی کی لازمی ادلا بدلی، جس میں کم گنت لوگ دونوں دیشوں میں سے کسی میں بھی جتنی جائیداد چھوڑ جائیں، ان کے دعوں کا سرکاروں کے بیچ انصاف بھرا نکاس ہو .

और उन्हें दूसरे सब लोगों की तरह एक ही से हक़ पाने का अधिकार है. मैं जानता हूँ कि हमारे प्रधान मन्त्री और उप प्रधान मन्त्री इस बात को कितनी तेज़ी से महसूस करते हैं. हमने कम गिनत जातियों के लिये अपने विधान में जो गारन्टियां रखी हैं, अगर हम उन पर अमल न करेंगे तो हम अपने विधान से बेवफ़ाई करेंगे.

जो बात भारत के रहने वालों पर लागू होती है, वह पूरबी बंगाल से आने वाले शरणार्थियों पर तो और भी ज़्यादा लागू होती है. उन्हें अपने पीछे छोड़े हुए अभागे भाई बहनों का ख़याल करना चाहिये जो, अगर उन्होंने यहाँ बदला लेना शुरू किया तो, ख़तरे में पड़ जायंगे. भारती मुसलमानों ने उनका कुछ नहीं बिगाड़ा है. कानून को अपने हाथ में लेकर वह उस हमदर्दी को भी खो बैठेंगे जो उन्हें बिना किसी क़सूर के तकलीफ़ में पड़ने के कारन मिल रही है, और साथ ही इस मसले को पाकिस्तान सरकार के साथ हल करने में वह अपनी सरकार के रास्ते में भी रुकावट बनेंगे. मैं तो अपने आप को पाकिस्तान का सच्चा दोस्त मानता हूं, क्योंकि मैंने करीब दो साल तक उसकी—पूरबी बंगाल की—प्रजा की सेवा करने की कोशिश की है. क्या उस नाते मैं पाकिस्तान सरकार को भी यह सलाह दे सकता हूं ? मैं पूरबी और पच्छिमी दोनों पाकिस्तान के ऐसे लोगों को जानता हूं जिन्हें पूरबी बंगाल की घटनाओं से बेचैनी और बेइज़्ज़ती सी महसूस हो रही होगी. कितना अच्छा होता अगर वह अपनी आवाज़ बुलन्द कर पाते !

اور انهیں دوسرے سب لوگوں کی طرح ایک هی سے حق پانے کا ادهیکار هے . میں جانتا هوں که همارے پردهان منتری اور اپ پردهان منتری اس بات کو کتنی تیزی سے محسوس کرتے هیں . هم نے کم گنت جاتیوں کے لئے اپنے ودهان میں جو گارنٹیاں رکھی هیں' اگر هم ان پر عمل نه کریں گے تو هم اپنے ودهان سے بیوفائی کرینگے .

جو بات بهارت کے رهنے والوں پر لاگو هوتی هے' وہ پوربي بنگال سے آنے والے شرنارتهیوں پر تو اور بهی زیادہ لاگو هوتی هے . انهیں اپنے پیچھے چهوڑے هوئے ابهاگے بهائي بهنوں کا خیال کرنا چاهئے جو' اگر انهوں نے یہاں بدله لینا شروع کیا تو' خطرے میں پڑ جائینگے . بهارتي مسلمانوں نے ان کا کچھ نهیں بگاڑا هے . قانون کو اپنے هاتھ میں لیکر وہ اس همدردي کو بهي کهو بیٹھینگے جو انهیں بنا کسي قصور کے تکلیف میں پڑنے کے کارن مل رهی هے' اور ساتھ هي اس مسئلے کو پاکستان سرکار کے ساتھ حل کرنے میں وہ اپنی سرکار کے راستے میں بهي رکاوٹ بنیں گے . میں تو اپنے آپ کو پاکستان کا سچا دوست مانتا هوں' کیونکه میں نے قریب دوسال تک اس کی — پوربی بنگال کي — پرجا کی سیوا کرنے کی کوشش کي هے . کیا اس ناتے میں پاکستان سرکار کو بهي یه صلاح دے سکتا هوں ؟ میں پوربی اور پچھمی دونوں پاکستان کے ایسے لوگوں کو جانتا هوں جنهیں پوربي بنگال کی گهٹناؤں سے بےچینی اور بے عزتی سی محسوس هورهي هوگی . کتنا اچها هوتا اگر وہ اپنی آواز بلند کر پاتے !

पूरबी बंगाल का संकट

(भाई प्यारे लाल)

गांधी जी की जीवनी तैयार करने के लिये मैं जान बूझकर पूरबी बंगाल के अमली काम से अलग हुआ था, इसलिये पूरबी बंगाल और कलकत्ता की कभी कभी होने वाली घटनाओं पर चुप्पी साधे रहा. ऐसे भी मौक़े होते है जब आदमी अपनी चुप्पी से ही सबसे अच्छी सेवा कर सकता है. लेकिन चुप्पी से ग़लत फहमी भी पैदा हो सकती है. सच्ची खबरें न जान सकने के कारन अगर लोग अफ़वाहों पर ही यकीन करने लगें तो उन्हें कोई दोष नहीं दे सकता. जो कोई भी ऐसी जानकारी पाने की सहूलियत नहीं देता वह अपने सर पर भारी जवाबदारी लेता है लेकिन इस संकट की गंभीरता को देखते हुए हमारे लिये हद दर्जे का संयम (ज़ब्त) रखना ज़रूरी हो जाता है अगर हम अपनी कल्पना के साथ जज़्बात को बहने दें तो वह हमारी बेहद गैर ज़िम्मेदारी होगी और होसकता है उसके लिये दूसरों को बड़ी कुरबानी देनी पड़े

सबसे पहले तो हम तूफ़ान के उन शिकारों का ख़याल करें जिनका भाग्य कसौटी पर चढ़ा हुआ है. हम उन्हें सबसे अच्छी मदद तो यही दे सकते हैं कि हम अपने बीच रहने वाली कम गिनत जातियों के साथ भली बरताव करें. भारती नागरिकता (शहरियत) का कड़ा इम्तिहान हो रहा है. भारती मुसलमान हमारे देश भाई हैं

پورنبی بنگال کا سنکٹ

(بھائی پیارے لال)

گاندھی جی کی جیونی تیار کرنے کے لئے میں جان بوجھکر پوربی بنگال کے عملی کام سے الگ ہوا تھا' اس لئے پوربی بنگال اور کلکتہ کی کبھی کبھی ہونے والی گھٹناؤں پر چپی سادھے رہا ایسے بھی موقعے ہوتے ہیں جب آدمی اپنی چپی سے ہی سب سے اچھی سیوا کرسکتا ہے . لیکن چپی سے غلط فہمی بھی پیدا ہو سکتی ہے سچی خبریں نہ جان سکنے کے کارن اگر لوگ افواہوں پر ہی یقین کرنے لگیں تو انھیں کوئی دوش نہیں دے سکتا جو کوئی بھی ایسی جان کاری پانے کی سہولیت نہیں دیتا وہ اپنے سر پر بھاری جواب‌داری لیتا ہے لیکن اس سنکٹ کی گمبھیرتا کو دیکھتے ہوئے ہمارے لئے حد درجے کا سنیم (ضبط) رکھنا ضروری ہوجاتا ہے . اگر ہم اپنی کلپنا کے ساتھ جذبات کو بہنے دیں' تو وہ ہماری بیحد غیرذمہ‌داری ہوگی' اور ہوسکتا ہے 'اس کے لئے دوسروں کو بڑی قربانی دینی پڑے

سب سے پہلے تو ہم طوفان کے اُن شکاروں کا خیال کریں جن کا بھاگیہ کسوٹی پر چڑھا ہوا ہے ! ہم انہیں سب سے اچھی مدد تو یہی دے سکتے ہیں کہ ہم اپنے بیچ رہنے والی کم گنت جاتیوں کے ساتھ بھی برتاؤ کریں . بھارتی ناگرکتا (شہریت) کا کڑا امتحان ہو رہا ہے . بھارتی مسلمان ہمارے دیش بھائی ہیں

गर्मी के दिनों मे वह जब रहें
खस की टट्टियों में या बर्फानी चोटियों पर
यह रहे आग बरसती बस्तियो मे
और गर्म गम हवा की लपटो मे
—यह शांति राज कब ?

और भीगी रात मे इनकी जिन्दगी सख्त मुश्किलात में
—यह त्याग कब ?

वह दिन मे भी रहें बिजली की रोशनियो मे,
यह रात मे तरसे रोशनी को
इन की रात अँधेरी,
इनके दिन मे अँधेरा !
इनके जीवन मे अँधेरा !
अँधेरा ही अँधेरा ?

हिन्दू मुसलिम एकता

पंडित सुन्दर लाल के

चार लैक्चर जो उन्होने सेन्ट्रल कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर मे दिये.

सौ सफे की किताब की क़ीमत सिर्फ बारह आने.

किताब नागरी उर्दू दोनों लिखावटो मे मिल सकती है.

मैनेजर "नया हिन्द", ४८ बाई का बाग, इलाहाबाद

گرمی کے دنوں میں وہ جب رهیں
خس کی ٹٹیوں میں یا برفانی چوٹیوں پر
یہ هیں آگ برستی بستیوں میں
اور گرم گرم هوا کی لپٹوں میں
— یہ شانتی راج کب ؟

اور بھیگی رات میں اِن کی زندگی سخت مشکلات میں
— یہ تیاگ کب ؟

وہ دن میں بھی رهیں بجلی کی روشنیوں میں '
یہ رات میں ترسیں روشنی کو '
اِن کی رات اندھیری '
اِن کے دن میں اندھیرا !
اِن کے جیون میں اندھیرا !
اندھیرا هی اندھیرا ؟

هندو مسلم اتّیکا

پنڈت سندر لال کے

چار لکچر جو اُنھوں نے کنسیلیٹری بورد گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے . سو صفحے کی کتاب کی قیمت صرف بارہ آنے

کتاب ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے .

مینیجر ' نیا هند ' ۴۸ بائی کا باغ ' الہ آباد

वह खायें दूध मलाई और घी, इनको न मिले वनस्पति भी
वह खायें तर माल, यह खायें सिर्फ़ दाल उबाल
—यह न्याय कब ?

बहुत से इनमें ऐसे भी,
दाल साग भी जिनके भाग में नहीं
नमक की कंकरी से वह रोटी खायें
और ऊपर से ख़ून के घूंट पीकर रह जायें
—यह भाई चारा कब ?

वह ऐश पे ऐश उठायें और ऐश मे इनको भूल जायें
—यह प्रेम राज कब ?

उनको चार चार बार खाना पीना शोभा
इनको चार चार टुक के फ़ाक़े करना और बस सो रहना
—यह समता कब ?

उनकी जिन्दगी कितनी स्वादिष्ट और मीठी मीठी
इनकी जिन्दगी कितनी बेचैन और फीकी सीठी
—यह इन्साफ़ कब ?

उनके पास गर्म गर्म और नर्म नर्म बिस्तर
इनके पास धूप दूब और पत्थर
वह सोयें गर्म गर्म कमरों मे
यह रातें काटें ठंडी ठंडी सडकों पर
—यह मसावात कब ?

वह नंगे भूके थर थर कांपें
और ज़िंदगी के दिन मुश्किल से काटें

وہ کھائیں دودھ ملائی اور گھی، اِن کو نہ ملے بناسپتی بھی
وہ کھائیں تر مال، یہ کھائیں صرف دال اُبال
— یہ نیائے کب ؟

بہت سے اِن میں ایسے بھی،
دال ساگ بھی جن کے بھاگ میں نہیں
نمک کی کنکری سے وہ روٹی کھائیں
اور اوپر سے خون کے گھونٹ پی کر رہ جائیں
— یہ بھائی چارا کب ؟

وہ عیش پہ عیش اُٹھائیں اور عیش میں اِن کو بھول جائیں
— یہ پریم راج کب ؟

اُن کو چار چار بار کھانا پینا شوبھا
اِن کو چار چار ٹک کے فاقے کرنا اور بس سو رہنا
— یہ سمتا کب ؟

اُن کی زندگی کتنی سوادشٹ اور میٹھی میٹھی
اِن کی زندگی کتنی بے چین اور پھیکی سیٹھی
— یہ انصاف کب

اُن کے پاس گرم گرم اور نرم نرم بستر
اِن کے بستر دھوپ، دوب پتھر
وہ سوئیں گرم گرم کمروں میں
یہ راتیں کاٹیں ٹھنڈی ٹھنڈی سڑکوں پر
— یہ مساوات کب ؟

یہ ننگے بھوکے تھر تھر کانپیں
اور زندگی کے دن مشکل سے کاٹیں

सेवा और मसावात का विश्वास दिलाने वालों के काम कुछ हैं, एलान कुछ, प्रचार कुछ हैं, किरदार कुछ.

जमहूर राज ! शब्दों की ख़ूबसूरती से नहीं चलता, सियासी बातों से नहीं चलता और न इस साधन से जमहूरियत की दस बीस या पच्चास घोड़ों की बग्घी ज़्यादा दूर तक चलाई जा सकती है और न वह अपनी शान ज़्यादा देर तक बाक़ी रख सकती है.

जमहूरियत ! ख़ुलूसे नीयत और बेलौस ख़िदमत से फूलती फलती और परवान चढ़ती है. वह ईसार, त्याग और रूह की जाग से चलती है. वह प्रेम, मिलाप और मुहब्बत की आग से चलती है. वह इन्सानियत का गला घूंट कर नहीं चलती वह इंसाफ़ का ख़ून कर के नहीं चलती. वह आँखो पर पट्टी बाँध कर नही चलती. वह कानो को बंद करके नहीं चलती. वह जनता से मुंह मोड़ कर नही चलती. इबसेवा का रास्ता छोड़ कर नही चलती—वह सच का दामन थाम कर और सेवा का हलफ़ उठा कर चलती है. प्रेम का जाम पीकर चलती है—अवाम की ख़िदमत और बेलौस ख़िदमत, जनता की सेवा और निस्स्वार्थ सेवा से ही जमहूरियत अपने असल लक्ष की तरफ़ पहुंचती है.

अंधेरा ही अंधेरा

नेता खाये मक्खन अंडा, जनता खाये सर पर डंडा,
लीडर खाये पुलाव जर्दा, जनता खाये ग़म और ग़ुस्सा,
—यह समता कब ?

वह खायें पूरी, पेड़ा और कचौरी
यह खायें रूखी सूखी और बासी रोटी

سیوا اور مساوات کا وشواس دلانے والوں کے کام کچھ ھیں' اعلان کچھ' پرچار کچھ ھیں' کردار کچھ.

جمہور راج! شبدوں کی خوبصورتی سے نہیں چلتا' سیاسی باتوں سے نہیں چلتا' اور نہ اِس سادھن سے جمہوریت کی دس بیس یا پچاس گھوڑوں کی بگھی زیادہ دور تک چلائی جاسکتی ھے اور نہ وہ اپنی شان زیادہ دیر تک باقی رکھ سکتی ھے

جمہوریت! خلوص نیت اور بے لوث خدمت سے پھولتی پھلتی اور پروان چڑھتی ھے وہ ایثار' تیاگ اور روح کی جاگ سے چلتی ھے. وہ پریم' ملاپ اور محبت کی آگ سے چلتی ھے. وہ اِنسانیت کا گلا گھونٹ کر نہیں چلتی. وہ اِنصاف کا خون کرکے نہیں چلتی. وہ آنکھوں پر پٹی باندھ کر نہیں چلتی. وہ کانوں کو بند کرکے نہیں چلتی. وہ جنتا سے منہ موڑ کر نہیں چلتی وہ سیوا کا راستہ چھوڑ کر نہیں چلتی—وہ سچ کا دامن تھام کر اور سیوا کا حلف اُٹھا کر چلتی ھے. پریم کا جام پی کر چلتی ھے—عوام کی خدمت اور بے لوث خدمت' جنتا کی سیوا اور سوارتھ سیوا سے ھی جمہوریت اپنے اصل لکش کی طرف پہونچتی ھے

اندھیرا ھی اندھیرا

نیتا کھائے مکھن انڈا' جنتا کھائے سر پر ڈنڈا
لیڈر کھائے پلاؤ زردہ' جنتا کھائے غم اور غصہ
—یہ سمتا کب ؟

وہ کھائیں پوری' پیڑا اور کچوری
یہ کھائیں روکھی سوکھی اور باسی روٹی

की खूबसूरती समता से है और समता मे सुन्दरता इन्साफसे—समता और इन्साफ से ही लोक राज या तंत्र राज है. इसलिए जब तक समता और इंसाफ साथ साथ नही चलेगा——राजकाज नही चलेगा. और जब तक बराबरी बराबरी का संबध और सुखशाति का प्रबध न हो तो वह जमहूर या न्याय राज नही और वह जनता और समता राज नहीं.

× × × ×

प्रेम प्यार, मेल मिलाप, सदाचार' एख़लाक, इन्साफ न्याय—यह तमाम के तमाम इन्सानियत के ख़ूबसरत गुन हैं. इन्सान के शरीफ स्वभाव का भेद भाव इन्ही से उठता और खुलता है.

ग़रीबो के साथ दोस्ती, हमदर्दी, रहन सहन और मिलनसारी—इसी से रवादारी जागती है और मसावात की महफिल सजती है और महफ़िल मे शान्ति आकर रचती है—इसलाम ने इन गुनो को अधिकता के साथ शिक्षा दी है और सुदरता के साथ उनका नाम रोशन रक्खा है. महात्मा गांधी ने इन गुनो को अपने जीवन पर बरत कर अधिक तर इनका प्रचार किया है. रूसी आन्दोलन भी ग़रीब परवरी और मजदूर नवाज़ी के अन्दाजमें मसावात का प्रचार कर रहा है और इसी नाम पर वह मुल्क मुल्क चल रहा है और फैल रहा है. इसके अलावा आज दुनिया की हर आज़ाद और नाम की मुहज़्ज़ब (सभ्य) हुकूमत इंसाफ, मसावात और भाई चारे के राग अपने अपने बीन पर गा बजा रही है.

सच यह है कि कहने और करने में बड़ा फरक है इन्सानियत की

کی خوبصورتی سمتا سے ہے اور سمتا میں سندرتا انصاف سے——سمتا اور انصاف سے ہی لوک راج یا تنتر راج ہے. اِس لئے جب تک سمتا اور انصاف ساتھ ساتھ نہیں چلے گا——راج کاج نہیں چلے گا. اور جب تک برابری برابری کا سمبندھ اور سکھ شانتی کا پربندھ نہو تو وہ جمہوریا نیائے راج نہیں اور وہ جنتا اور سمتا راج نہیں.

× × × ×

پریم پیار ' میل ملاپ ' سداچار اخلاق ' انصاف نیائے——یہ تمام کے تمام اِنسانیت کے خوبصورت گن ہیں. اِنسان کے شریف سبھاؤ کا بھید بھاؤ اِنہیں سے اُٹھتا اور کھلتا ہے.

غریبوں کے ساتھ دوستی ' ہمدردی ' رہن سہن اور ملنساری——اسی سے رواداری جاگتی ہے اور مساوات کی محفل سجتی ہے اور محفل میں شانتی آکر رچتی ہے——اِسلام نے اِن گنوں کی ادھکتا کے ساتھ شکشا دی ہے اور سندرتا کے ساتھ اُن کا نام روشن رکھا ہے. مہاتما گاندھی نے اِن گنوں کو اپنے جیون پر برت کر ادھک تر اِن کا پرچار کیا ہے. روسی آندولن بھی غریب پروری اور مزدور نوازی کے انداز میں مساوات کا پرچار کر رہا ہے اور اِسی نام پر وہ ملک ملک چل رہا اور پھیل رہا ہے. اِس کے علاوہ آج دنیا کی ہر آزاد اور نام کی مہذب (سبھیہ) حکومت اِنصاف' مساوات اور بھائی چارے کے راگ اپنے اپنی بین پر گا بجا رہی ہے.

سچ یہ ہے کہ کہنے اور کرنے میں بڑا فرق ہے. اِنسانیت کی

अगर जात पात की फूट पड़ जाय तो इन्सानियत के बंधन टूट जाते हैं.

अगर आवाज़ आवाज़ में टूट पड़ जाय तो समता का नाता कट जाता है.

जमहूर राज और समता काल में हमे सोसायटी के हर मेम्बर को इन्साफ़ की तराज़ू मे तोलना होगा, उसका हक़ नापना होगा, उस का हिस्सा बाँटना होगा, चाहे वह किसी भी जात पात, ख़याल बिचार, रंग रूप और क़ौम या नस्ल का क्यो न हो, उससे हाथ मिलना होगा. उसको पास बिठाना होगा. दिल से छूत छात का भाव मिटा कर और दिमाग़ से बड़प्पन का ख़याल निकाल कर.

× × × ×

मालूम है जनता क्या है ?

जनता नाम है सब रंग रूप के मिले जुले भारी संगठन का

वक़्त आज इन्साफ़ के झूटे नाम लेवाओ के ख़िलाफ़ अपना निर्णय और फ़ैसला देना चाह रहा है, जिसके डर से इन्साफ़ के दोषी देवता जनता से मुंह छिपाये अपने अपने मन्दिरो मे छिपे बैठे है. सामने आने से हिचकिचा रहे है. उनकी ख़ुदाई पर वहशत छा रही है.

जन राज या लोक राज का पहला काम यह है कि मसावात और इंसाफ़ का दर्शन सुंदर और सच्चे रूप मे करे. जनता को शक्ति और संतोष पहुंचाये और आदर्श उसका ऊँचा उठाये.

लोक राज या जनता राज के लिये इन्साफ़ पहली चीज़ है. बिला

اگر جات پات کی پھوٹ پڑ جائے تو انسانیت کے بندھن ٹوٹ جاتے ہیں۔

اگر آواز آواز میں ٹوٹ پڑ جائے تو سمتا کا ناتا کٹ جاتا ہے

جمہور راج اور سمتا کال میں ہمیں سوسائٹی کے ہر ممبر کو انصاف کی ترازو میں تولنا ہوگا، اُس کا حق ناپنا ہوگا، اُس کا حصہ بانٹنا ہوگا، چاہے وہ کسی بھی جات پات، خیال وچار، رنگ روپ اور قوم یا نسل کا کیوں نہ ہو، اُس سے ہاتھ ملانا ہوگا۔ اُس کو پاس بٹھانا ہوگا۔ دل سے چھوت چھات کا بھاؤ مٹاکر اور دماغ سے بڑپن کا خیال نکال کر۔

× × × ×

معلوم ہے جنتا کیا ہے؟

جنتا نام ہے سب رنگ روپ کے ملے جلے بھاری سنگٹھن کا۔

وقت آج انصاف کے جھوٹے نام لیواؤں کے خلاف اپنا نرنے اور فیصلہ دینا چاہ رہا ہے، جس کے خوف سے انصاف کے دوشی دیوتا جنتا سے منہ چھپائے اپنے اپنے مندروں میں چھپے بیٹھے ہیں۔ سامنے آنے سے ہچکچا رہے ہیں اُن کی خدائی پر وحشت چھا رہی ہے۔

جن راج یا لوک راج کا پہلا کام یہ ہے کہ مساوات اور انصاف کا درشن سندر اور سچے روپ میں کرے۔ جنتا کو شکتی اور سنتوش پہونچائے اور آدرش اُس کا اونچا اُٹھائے۔

لوک راج یا جنتا راج کے لئے انصاف پہلی چیز ہے۔ بلا انصاف

यही मंत्री जनराज का नियम निज़ाम चलाते हैं. जनता उन पर विश्वास करके सारे काम उनको सौंप देती है, सारे अख़्तियार उनको दे देती है. यहाँ तक कि अपनी जान भी उनके हवाले कर देती है और अपनी क़िस्मत भी !

जमहूरी हुकूमत राज होता है विश्वास का, अमानत होती है अवाम की—

जनता राज या समता राज आपसी व्यवहार से बनता है और सेवा व सदाचार से, सच्चाई और इन्साफ़ से, रवादारी और त्याग से. जिसमे कोई अंतर मंतर न हो और किसी प्रकार का भेद-भाव न हो. भेद-भाव की जगह भाई चारा हो और राज काजमे भाई भाई का हक़ और इजारा हो. ख़ून के रिश्ते से नहीं.. इन्सानियत के नाते से !

मिली जुली बात और मिली जुली आवाज़ से ज़बरदस्त ताक़त और शक्ति मिलती है, जिसको हम सामाजिक शक्ति भी कहते हैं और जन का धन भी.

× × × ×

लेकिन जब मसावात और इन्सानियत ही नहीं तो फिर जमहूरियत का नाम क्यो ?

आज की जमहूरियत में इंसानियत की जो गत बन रही है और इन्साफ़ का जो ख़ून हो रहा है वह खुला अत्याचार है इस अधिक अत्याचार से यह बात सामने आती है कि ज़िम्मेदार लीडरो, नेताओं, सेवकों और राजनीतिकारो ने कितनी बुरी तरह जनता और समता के शब्दों, अर्थों और आदर्शों को पूरा करने के बारे में अपनी कमज़ोरी दिखलाई और ग़ैर ज़िम्मेदारी ज़ाहिर की है.

یہی منتری جن راج کا نیم نظام چلاتے ہیں . جنتا اُن پر وشواس کرکے سارے کام اُن کو سونپ دیتی ہے. سارے اختیار اُن کو دے دیتی ہے . یہانتک کہ اپنی جان بھی اُن کے حوالے کر دیتی ہے اور اپنی قسمت بھی !

جمہوری حکومت راج ہوتا ہے وشواس کا ' امانت ہوتی ہے عوام کی—

جنتا راج یا سمتا راج آپسی ویوہار سے بنتا ہے اور سیوا و سداچار سے ' سچائی اور انصاف سے ' روا داری اور تیاگ سے. جس میں کوئی انتر منتر نہ ہو اور کسی پرکار کا بھید بھاؤ نہ ہو. بھید بھاؤ کی جگہ بھائی چارا ہو اور راج کاج میں بھائی بھائی کا حق اور اجارا ہو خون کے رشتے سے نہیں .. انسانیت کے ناتے سے !

ملی جلی بات اور ملی جلی آواز سے زبردست طاقت اور شکتی ملتی ہے' جس کو ہم سماجک شکتی بھی کہتے ہیں اور جن کا دھن بھی.

× × × ×

لیکن جب مساوات اور انسانیت ہی نہیں تو پھر جمہوریت کا نام کیوں ؟

آج کی جمہوریت میں انسانیت کی جو گت بن رہی ہے اور انصاف کا جو خون ہو رہا ہے وہ کھلا اتیاچار ہے. اس ادھک اتیاچار سے یہ بات سامنے آتی ہے کہ ذمے دار لیڈروں ' نیتاؤں ' سیوکوں اور راج نیتی کاروں نے کتنی بری طرح جنتا اور سمتا کے شبدوں' ارتھوں اور آدرشوں کو پورا کرنے کے بارے میں اپنی کمزوری دکھلائی اور غیر ذمے داری ظاہر کی ہے .

जनता राज या समता राज

(भाई अब्दुल हलीम अन्सारी)

यह जनता राज है, यानी हमारा तुम्हारा राज।

यह समता राज है, यानी बराबरी बराबरी का राज !

——बराबरी का राज, यानी न्याय राज !

यह 'लोक राज' है, यानी लोगों का राज !

यह 'सब राज' है, यानी सभों का राज !

——सभों का राज, यानी समाज राज, अवाम राज।

यह राज, जन समाज की संस्था है. यह संस्था जनता की सेवा का केन्द्र है. इस केन्द्र से जमहूरियत की पुकार है. जमहूरी सरकार जनता की आवाज़ की मशीन है और यह मशीन अवाम के हाथ के आधीन है, जो अवाम के हाथ से चलती है.

लोक राज या जन राज—राज होता है राय का, राय का राज हुकूमत होती है बहुमत की, जो उसके चुने वज़ीरों के हाथों में दे दी जाती है, जिनको जनता अपने वोट की क़ीमत पर ख़रीदती है. इसलिए यह कहना ठीक कि वह चुने हुए वज़ीर जनता के "वोट ख़रीद" गुलाम होते हैं. दास और सेवक होते हैं. कारिन्दे और गुमाशते होते हैं. यही दूसरे शब्दों में जनता के नुमाइन्दे होते हैं और यही आख़िरी

جنتا راج یا سمتا راج

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

یہ جنتا راج ہے، یعنی ہمارا تمہارا راج !

یہ سمتا راج ہے، یعنی برابری برابری کا راج !

——برابری کا راج، یعنی نیائے راج !

یہ 'لوک راج' ہے، یعنی لوگوں کا راج !

یہ 'سب راج' ہے، یعنی سبھوں کا راج !

——سبھوں کا راج یعنی سماج راج، عوام راج !

یہ راج، جن سماج کی سنستھا ہے. یہ سنستھا جنتا کی سیوا کا کیندر ہے. اس کیندر سے جمہوریت کی پکار ہے. جمہوری سرکار جنتا کی آواز کی مشین ہے اور یہ مشین عوام کے ہاتھ کے آدھین ہے، جو عوام کے ہاتھ سے چلتی ہے.

لوک راج یا جن راج—راج ہوتا ہے رائے کا، رائے کا راج حکومت ہوتی ہے بہومت کی، جو اُس کے چنے وزیروں کے ہاتھوں میں دے دیجاتی ہے، جن کو جنتا اپنے ووٹ کی قیمت پر خریدتی ہے. اِس لئے یہ کہنا ٹھیک کہ وہ چنے ہوئے وزیر جنتا کے "ووٹ خرید" غلام ہوتے ہیں. داس اور سیوک ہوتے ہیں. کارندے اور گماشتے ہوتے ہیں یہی دوسرے شبدوں میں جنتا کے نمائندے ہوتے ہیں اور یہی آخری درجے میں اُس کے وزیر

कोआपरेटिव कारपोरेशन भी क़ायम हैं. सैकड़ों तनख़्वाह पाने वाले नौकर काम कर रहे हैं मगर दस साल बीत गये कि मंहगाई टलाये नहीं टलती. भाव का जो नया क़दम उठता है वही बढ़ी हुई मंहगाई का ह सन्देश लाता है.

आज़ाद तिजारत पर बंधन की सभी पैदावार चोर बाजारी है. चोर बाजार वाले सरकारी भाव से दुगने तिगुने दाम पर इन्सानी ज़रूरत की चीज़ों को बेचते हैं. ख़ुद कारपोरेशन के गोदामो में चोरी होती है. सरकार का हुक्म है कि लोग चोर बाजारी के ख़त्म करने में उसकी सहायता करें. भला बताइये आदमी अपना पेट देखे या चोर बाजार और सरकार के हुक्म को ! लोगो को पेट की आग बुझाना जरूरी है. प्रकृति कभी कभी उनको मजबूर करती है कि चोर बाजार से नाज ख़रीद कर वह अपने को ज़िन्दा रक्खें. अगर कोई हिम्मत भी करे चोर बाजारी को पकड़ाने की तो सरकारी दफ्तरों में उलटे मारे मारे फिरने की मुसीबत कौन उठाये ?

महात्मा गांधी, जो हिन्दुस्तान के आम लोगो की नब्ज़ को पहचानते थे और उनके सच्चे हित चिंतक थे, कन्ट्रोल के सख़्त ख़िलाफ़ थे. हमारा तजरबा भी हमें यही बता रहा है कि जब तक कंट्रोल और राशनिंग के मुहकमे ख़त्म नहीं होते तब तक यह आजकल की मंहगाई और जनता की मुसीबत भी दूर नहीं हो सकती.

کوآپریٹو کارپوریشن بھی قائم ھیں۔ سیکڑوں تنخواہ پانے والے نوکر کام کر رھے ھیں مگر دس سال بیت گئے کہ منہگائی ٹالے نہیں ٹلتی۔ بھاؤ کا جو نیا قدم اُٹھتا ھے وھی بڑھی ھوئی منہگائی کا ھی سندیش لاتا ھے۔

آزاد تجارت پر بندھن کی سب ھی پیداوار چور بازاری ھے چور بازار والے سرکاری بھاؤ سے دگنے تگنے دام پر انسانی ضرورت کی چیزوں کو بیچتے ھیں۔ خود کارپوریشن کے گوداموں میں چوری ھوتی ھے۔ سرکار کا حکم ھے کہ لوگ چور بازاری کے ختم کرنے میں اُسکی سہایتا کریں بھلا بتائے آدمی اپنا پیٹ دیکھے یا چور بازار اور سرکار کے حکم کو! لوگوں کو پیٹ کی آگ بجھانا ضروری ھے۔ پرکرتی کبھی کبھی اُن کو مجبور کرتی ھے کہ چور بازاری سے ناج خرید کر وہ اپنے کو زندہ رکھیں اگر کوئی ھمت بھی کرے چور بازاری کو پکڑانے کی تو سرکاری دفتروں میں اُلٹے مارے مارے پھرنے کی مصیبت کون اُٹھائے

مہاتما گاندھی جو ھندستان کے عام لوگوں کی کو نبض پہچانتے تھے اور اُن کے سچے ھت چنتک تھے کنٹرول کے سخت خلاف تھے۔ ھمارا تجربہ بھی ھمیں یہی بتا رھا ھے کہ جب تک کنٹروں اور راشننگ کے محکمے ختم نہیں ھوتے تب تک یہ آج کل کی منہگائی اور جنتا کی مصیبت بھی دور نہیں ھو سکتی۔

हुआ. आज़ाद ब्योपार पर बंधन लग गये. पटापट हर चीज़ मँहगी होने लगी यह एक माना हुआ असूल है कि अगर जीवन के लिए ज़रूरी चीज़े ज्यादा हो तो दूसरी सब चीज़े सस्ती होती है और अगर इसके ख़िलाफ़ हो तो हर चीज मँहगी होती है. जब नाज मँहगा हुआ तो दूसरी चीज़ो का दाम भी बढने लगा.

हैदराबाद रियासत नाज के मामले मे अपनी ज़रूरत ख़ुद पूरी कर सकती है. मेरा सालहा साल का तजरबा यह है कि शहर मे देहात के सिवा किसी और जगह से गल्ला नही आया करता था. हमेशा देहात से हर किस्म के अनाज की बंडियाँ (गाड़ियाँ) शहर की गंज (मंडी) को आती थी. इन मंडियो मे कई कई आढ़ता होते थे उनके नाज लाने के असामी मुक़र्रर होते थे जिसका असामी नाज लाता था वह आढ़ती फुटकर बेचने वाला को इकट्ठा करके नाज बेच देता था. दाम की बोली बोली जाती थी और ज्यादा बोली बोलने वाले को नाज मिल जाता था आढ़ती केवल सैकड़े पर सवा रुपया कमीशन लेता था और ज़रूरत के समय किसानो को पेशगी रुपया भी देता था इस तरह किसानो को सरकारी लगान और दूसरी ज़रूरतो के लिए रुपया मिल जाता था. और ब्योपारी फसल पर नाज तौला लिया करता था साहूकार हैदराबाद या सिकंदराबाद आकर नाज के बाजार भाव से किसान को दाम देता था. इसमे शक नही कि आढ़ती अपनी पुरानी आदत के अनुसार अनपढ़ किसानो से ज़रूरत से अधिक सूद लेता था जिससे किसानो को नुकसान होता था—मगर यह सब बीता बाते हैं अब तो सरकार ख़ुद बनिया बन गई है. कन्ट्रोल का मोहकमा खुल गया है. लाखों रुपए ख़र्च हो रहे हैं.

ھوا آزاد بیوپار پر بندھن لگ گئے پٹاپٹ ھر چیز منھگی ھونے لگی یہ ایک مانا ھوا اصول ھے کہ اگر جیون کے لئے ضروری چیزیں زیادہ ھوں تو دوسری سب چیزیں سستی ھوتی ھیں اور اگر اِس کے خلاف ھو تو ھر چیز منھگی ھوتی ھے جب ناج منھگا ھوا تو دوسری چیزوں کا دام بھی بڑھنے لگا .

حیدرآباد ریاست ناج کے معاملے میں اپنی ضرورت خود پوری کر سکتی ھے میرا سالہا سال کا تجربہ یہ ھے کہ شہر میں دیہات کے سوا کسی اور جگہ سے غلہ نہیں آیا کرتا تھا . ھمیشہ دیہات سے ھر قسم کے اناج کی بنڈیاں (گاڑیاں) شہر کی گنج (منڈی) کو آتی تھیں اِن منڈیوں میں کئی کئی آڑھتی ھوتے تھے اُن کے ناج لانے کے اسامی مقرر ھوتے تھے جس کا اسامی ناج لاتا تھا وہ آڑھتی پھٹکر بیچنے والوں کو اکٹھا کرکے ناج بیچ دیتا تھا . دام کی بولی بولی جاتی تھی اور زیادہ بولی بولنے والے کو ناج مل جاتا تھا. آڑھتی کیول سیکڑے پر سوا روپیہ کمیشن لیتا تھا اور ضرورت کے سمے کسانوں کو پیشگی روپیہ بھی دیتا تھا . اِس طرح کسانوں کو سرکاری لگان اور دوسری ضرورتوں کے لئے روپیہ مل جاتا تھا . اور بیوپاری فصل پر ناج تولا لیا کرتا تھا . ساھوکار حیدرآباد یا سکندرآباد آکرناج کےبازار بھاو سےکسان کو دام دیتا تھا . اِسمیں شک نہیں کہ آڑھتی اپنی پرانی عادت کے انوسار اَن پڑھ کسانوں سےضرورت سےادھک سود لیتا تھا جسسے کسانوں کو نقصان ھوتا تھا—مگر یہ سب بیتی باتیں ھیں اب تو سرکار خود بنیا بنگئی ھے . کنٹرول کا محکمہ کھل گیا ھے لاکھوں روپئے خرچ ھورھے ھیں .

रिआयों के आज़ाद ब्योपार पर बंधन लग गये हैदराबाद रियासत में सिकंदराबाद के सेठ सजन लाल को मनोपली (इजारह) दी गई कि वह जंग के खत्म तक एक रुपये को छै सेर ज्वार, चार सेर चावल और इसी भाव गेहूं बेचे वह इसी भाव बेचते रहे रिआया को ज्यादा परेशानी नहीं हुई. इसकी वजह यह थी कि बाहर देहात से और बरमा और दूसरी जगह से सस्ता नाज लाने की रिआया को इस रियासत में मनाही नहीं थी जिसकी वजह से अनाज हर समय मिलता था मैं खुद महबूब नगर से घर के लिए चार चार छै छै थैले चावल जब जरूरत पड़ती लाता था यहाँ बढ़िया 'सुलक पल्ली' का चावल पचास रुपये को एक 'पल्ला' मिलता था (एक पल्ला में २०० सेर होता था) और बरमा का भी चावल आम तरीके से एक रुपये का चार सेर मिलता था सन १८ ई में जंग खत्म हुई मनोपली (इजारह) भी खत्म हुई, और गल्ला सस्ता होने लगा

दूसरी बड़ी लड़ाई के आरंभ तक नाज का भाव एक रुपये का दस सेर गेहूं, सात सेर बढ़िया खिचड़ी चावल और पंद्रह सोलह सेर ज्वार बिकने लगा

सन ३९ ई में लड़ाई शुरू हुई पर १९४१ ई तक कम से कम हम लोगों को दक्खिन में मँहगाई मालूम नहीं हुई सन ४२ ई में खुद हैदराबाद सरकार की तरफ से पौने चार सेर गेहूं एक रुपये का और छै या आठ सेर ज्वार का भाव मुकर्रर हुआ इस लिए सन् ४३ ई. के आखिर तक लोग मँहगाई से बेखबर रहे

सन ४४ ई. से राशनिंग शुरू हुई. कन्ट्रोल का मोहकमा क़ायम

رعایا کے آزاد بیوپار پر بندھن لگ گئے حیدرآباد ریاست میں سکندرآباد کے سیٹھ سجن لال کو مونوپلی (اجارہ) دی گئی کہ وہ جنگ کے ختم تک ایک روپئے کی چھ سیر جوار، چار سیر چاول اور اسی بھاؤ گیہوں بیچیں وہ اسی بھاؤ بیچتے رہے رعایا کو زیادہ پریشانی نہیں ہوئی اسکی وجہ یہ تھی کہ باہر دیہات سے اور برما اور دوسری جگہ سے سستا اناج لانے کی رعایا کو اس ریاست میں مناہی نہیں تھی جسکی وجہ سے اناج ہر سمے ملتا تھا میں خود محبوب نگر سے گھر کے لئے چار چار چھ چھ تھیلے چاول جب ضرورت پڑتی لاتا تھا۔ یہاں بڑھیا 'سلک پلی' کا چاول پچاس روپئے کو ایک 'پلا' ملتا تھا (ایک پلا میں ۲۰۰ سیر ہوتا تھا) اور برما کا بھی چاول عام طریقے سے ایک روپئے کا چار سیر ملتا تھا سن ۱۸ء میں جنگ ختم ہوئی مونوپلی (اجارہ) بھی ختم ہوئی، اور غلہ سستا ہونے لگا۔

دوسری بڑی لڑائی کے آرمبھ تک اناج کا بھاؤ ایک روپیہ کا دس سیر گیہوں، سات سیر بڑھیا کھچڑی چاول اور پندرہ سولہ سیر جوار بکنے لگی۔

سن ۳۹ء میں لڑائی شروع ہوئی پر ۱۹۴۱ء تک کم سے کم ہم لوگوں کو دکھن میں مہنگائی معلوم نہیں ہوئی سن ۴۲ء میں خود حیدرآباد سرکار کی طرف سے پونے چار سیر گیہوں ایک روپئے کا اور چھ یا آٹھ سیر جوار کا بھاؤ مقرر ہوا اس لئے سن ۴۳ء کے آخر تک لوگ مہنگائی سے بیخبر رہے۔

سن ۴۴ء سے راشننگ شروع ہوئی، کنٹرول کا محکمہ قایم

यह सब कुदरती कहत थे और वक्ती सरकार की रिआया परवरी का चिट्ठा अब हमारी और आप की देखी हुई लडाई की गिरानियों और कुदरती कहत की गिरानियों का फरक सुनिये

मैने बहुत सी गिरानियां देखी है लेकिन किसी कहत मे एक रुपये का छै सेर ज्वार, चार सर चावल और पाँच सेर गेहूं से कम बिकते हुए नहीं देखा मजा यह कि हमारे यहाँ का सेर भी तौल का सवा सेर है कुदरती कहत की मुद्दत थोडी होती है लेकिन इन्सान के लाए हुए कहतों को जाने मे बहुत ज्यादा मुद्दत लगती है. सन् १९१४ ई का कहत तो सन २१ ई मे गया मगर सन ३९ ई का अभी तक बाक़ी है हालाँकि बारह बरस हो गये.

पहली जग सन् १४ ई. मे शुरू हुई यह लड़ाई कैसर जमनी ने दुनिया पर क़ब्ज़ा करने की गरज से छेडी थी. इंगलिस्तान इस लड़ाई का एक पार्टी था चूँकि लडाई मे जान खपाने के लिए आदमी नही मिलते थे इस लिए अँगरेजों ने गुलाम हिन्दुस्तान की बढी हुई आबादी को फौज में जबरिया भर्ती करना शुरू कर दिया इसके लिए उस समय के वाइसराय ने खाने की चीजों का एक नया मोहकमा कायम किया ताकि सस्ताई को मँहगाई से बदल दिया जाय वाइसराय ने खुल्लमखुल्ला कह भी दिया कि—' अगर एक रुपये की चार सेर ज्वार कर दी जावे तो हिन्दुस्तान के भूके कैसे फौज मे भर्ती नही होते, देखता हूं।''

नाज की खरीद व बिक्री का माहकमा खोला गया. उस वक्त के करोड गीरी (चुंगी) के डाइरेक्टर इस नये मोहकमे के डाइरेक्टर मुकर्रर हुए नाज का लगभग सारा व्योपार सरकार के हाथ में आगया.

یہ سب قدرتی قحط تھے اور وقتی سرکار کی رعایا پروری کا چٹھا اب ھماری اور آپ کی دیکھی ھوئی لڑائی کی گرانیوں اور قدرتی قحط کی گرانیوں کا فرق سنئے

میں نے بہت سی گرانیاں دیکھی ھیں لیکن کسی قحط میں ایک روپیے کا چھ سیر جوار ' چار سیر چاول اور پانچ سیر گیہوں سے کم بکتے ھوئے نہیں دیکھا مزہ یہ کہ ھمارے یہاں کا سیر بھی تول کا سوا سیر ھے . قدرتی قحط کی مدت تھوڑی ھوتی ھے لیکن اِنسان کے لائے ھوئے قحطوں کو جانے میں بہت زیادہ مدت لگتی ھے سن ۱۹۱۴ع کا قحط تو سن ۲۱ع میں گیا مگر سن ۱۹۳۹ع کا ابھی تک باقی ھے حالانکہ بارہ برس ھوگئے .

پہلی جنگ سن ۱۹۱۴ع میں شروع ھوئی یہ لڑائی قیصر جرمنی نے دنیا پر قبضہ کرنے کی غرض سے چھیڑی تھی . اِنگلستان اِس لڑائی کی ایک پارٹی تھا چونکہ لڑائی میں جان کھپانے کے لئے آدمی نہیں ملتے تھے اِس لئے انگریزوں نے غلام ھندستان کی بڑھی ھوئی آبادی کو فوج میں جبریہ بھرتی کرنا شروع کردیا اِس کے لئے اُس سمے کے وائسرائے نے کھانے کی چیزوں کا ایک نیا محکمہ قائم کیا تاکہ سستائی کو مھنگائی سے بدل دیا جائے . وائسرائے نے کھلم کھلا کہہ بھی دیا کہ — '' اگر ایک روپیہ کی چار سیر جوار کر دیجاوے تو ھندستان کے بھوکے کیسے فوج میں بھرتی نہیں ھوتے ' دیکھتا ھوں ''.

ناج کی خرید و بکری کا محکمہ کھولا گیا . اُس وقت کے کروڑ گیری (چونگی) کے ڈائرکٹر اِس نئے محکمے کے ڈائرکٹر مقرر ھوئے . ناج کا لگ بھگ سارا بیوپار سرکار کے ھاتھ میں آ گیا .

थी. कन्नड़ जबान मे इन्सान की खोपडी को 'डोगी' कहते है. इसीलिए इस कहत का नाम 'डोगीबरा' पड़ गया

सन् १२१६ फ०, सन् १२२६ फ० और सन् १२३६ फ० मे बारिश की कमी की वजह से दक्खिन मे तीन और कहत पड़े. यह जमाना सिकंदर जाह का था

नासिरुद्दौला के जमाने मे सन् १२४६ फ० मे और इसके बाद के बरसो मे तीन कहत बारिश की कमी के कारन पड़े

दक्खिन का चौदहवॉ कहत आला हजरत अफ़जलुद्दौला के जमाने मे सन् १२७६ फ० मे पडा नवाब सालार जग हैदराबाद रियासत के बड़े वज़ीर थे उन्होंने सवा पद्रह लाख रुपये का गल्ला तिलगाना के जिलो से मगाया मगर ठीक समय पर न पहुच सका. हजारो इन्सान और जानवर मौत के घाट उतर गये

इसी बादशाह के समय मे पद्रहवॉ कहत बारिश न होने की वजह से पडा और लाखो इन्सानो की जान गई

नवाब मीर महबूब अली खॉ के जमाने मे सन १३१३ व १४ फ० और १३१८ व १६ फ० मे दो दो साला महगाइयॉ बारिश की कमी के कारन हुई हैदराबाद सरकार ने नवाब रशीदुद्दीन खॉ और मिस्टर डनलप के इनजाम से एक करोड तिरसठ लाख रुपया का अनाज मगा कर रिआया की परवरिश की बारह रुपया माहवारी तनख्वाह पाने वाले नौकरो को एक रुपया माहवारी महगाई एलाउन्स छै बरस तक दिया जाता रहा और फिर उसके बाद तनख्वाह मे बढ़ोती कर दी गई.

تھی. کنڑ زبان میں انسان کی کھوپڑی کو 'ڈوگی' کہتے ہیں اسی لئے اس قحط کا نام 'ڈوگی برا' پڑ گیا

سن ١٢١٦ف، سن ١٢٢٦ف اور سن ١٢٣٦ف میں بارش کی کمی کی وجہ سے دکھن میں تین اور قحط پڑے یہ زمانہ سکندر جاہ کا تھا

ناصرالدولہ کے زمانے میں سن ١٢٤٦ف میں اور اس کے بعد کے برسوں میں تین قحط بارش کی کمی کے کارن سے پڑے

دکھن کا چودھواں قحط اعلیٰ حضرت افضل الدولہ کے زمانے میں سن ١٢٧٦ف میں پڑا نواب سالار جنگ حیدرآباد ریاست کے بڑے وزیر تھے. اُنھوں نے سوا پندرہ لاکھ روپیہ کا غلہ تلنگانہ کے ضلعوں سے منگایا مگر ٹھیک سمے پر نہ پہونچ سکا ہزاروں انسان اور جانور موت کے گھاٹ اُتر گئے

اِسی بادشاہ کے سمے میں پندرھواں قحط بارش نہ ہونے کی وجہ سے پڑا اور لاکھوں انسانوں کی جان گئی

نواب میر محبوب علی خاں کے زمانے میں سن ١٣١٣ و ١٤ف اور سن ١٣١٨ و ١٩ف میں دو دو سالہ مہنگائیاں بارش کی کمی کے کارن ہوئیں حیدرآباد سرکار نے نواب رشیدالدین خاں اور مسٹر ڈنلپ کے اِنتظام سے ایک کروڑ ترسٹھ لاکھ روپئے کا اناج منگا کر رعایا کی پرورش کی بارہ روپیہ ماہواری تنخواہ پانے والے نوکروں کو ایک روپیہ ماہواری مہنگائی الاؤنس چھ برس تک دیا جاتا رہا. اور پھر اُس کے بعد تنخواہ میں بڑھوتی کردی گئی.

शम्सुद्दीन बहमनी के समय मे दक्खिन में पहला क़हत पड़ा यह काल दुर्गादेवी के नाम से मशहूर है हजारों जानें इसमे काम आईं. उस समय के बादशाह ने उन इलाकों से, जहाँ से अनाज मिल सकता था, अनाज मँगाकर रिआया की मदद की

दूसरा कहत अब्दुल्ला कुतुबशाह के जमाने मे पडा जो गल्ला एक हुन (सोने का हैदराबादी सिक्का जिसकी कीमत चार रुपया आठ आना थी) मे बारह मन बिका करता था वह एक हुन मे तीन मन बिकने लगा बादशाह ने हजारो लंगर खाने खोल दिये. तीन साल के बाद फसिल अच्छी होने पर इस कहत से छुटकारा मिला कहत के तीन सालो मे बारिश बहुत हुई मूसा नदी बार बार उमड़ी, हजारो को बहा ले गई इस कहत को बारिश की ज्यादती का नतीजा समझना चाहिये.

इसी बादशाह के जमाने मे तीसरा कहत पडा इसका कारन शाहजहाँ की लड़ाई थी

तानाशाह के जमाने मे औरंगजेब ने लडाई छेड़ दी और दक्खिन मे चौथा कहत पड़ा.

सन ११४५ फ० और १२०२ फ० मे बारिश की ज्यादती के कारन पाँचवी और छठी मरतबा फिर दक्खिन को कहत का सामना करना पड़ा

सातवाँ क़हत 'डोगी बरा' का कहत हिंदुस्तान मे बहुत मशहूर है. यह कहत कर्नाटक का कहत भी कहलाता है. इसमे हजारो आदमी [illegible] इन्सानी खोपड़ियां जगह जगह ठोकर खा रही

شمس‌الدین بہمنی کے سمے میں دکھن میں پہلا قحط پڑا یہ کال درگا دیوی کے نام سے مسہور هے هزاروں جانیں اِس میں کام آئیں اُس سمے کے بادشاہ نے اُن علاقوں سے' جہاں سے اناج مل سکتا تھا' اناج منگا کر رعایا کی مدد کی

دوسرا قحط عبداللہ قطب شاہ کے زمانے میں پڑا . جو غلہ ایک هن (سونے کا حیدرآبادی سکہ جس کی قیمت چار روپیہ آٹھ آنہ تھی) میں بارہ من بکا کرتا تھا وہ ایک هن میں تین من بکنے لگا . بادشاہ نے هزاروں لنگر خانے کھول دئے تین سال کے بعد فصل اچھی ہونے پر اِس قحط سے چھٹکارا ملا . قحط کے تین سالوں میں بارش بہت ہوئی . موسیٰ ندی بار بار اُمڈی' هزاروں کو بہا لے گئی . اِس قحط کو بارش کی زیادتی کا نتیجہ سمجھنا چاهئے .

اِسی بادشاہ کے زمانے میں تیسرا قحط پڑا . اِس کارن شاہ جہاں کی لڑائی تھی

تانا شاہ کے زمانے میں اورنگ زیب نے لڑائی چھیڑ دی اور دکھن میں چوتھا قحط پڑا .

سن ١١٤٥ ف اور سن ١٢٠٢ ف میں بارش کی زیادتی کے کارن پانچویں اور چھٹی مرتبہ پھر دکھن کو قحط کا سامنا کرنا پڑا .

ساتواں قحط 'ڈوگی برا' کا قحط هندستان میں بہت مشہور هے . یہ قحط کرناٹک کا قحط بھی کہلاتا هے . اس میں هزاروں آدمی موت کو پیارے هو گئے . انسانی کھوپڑیاں جگہ جگہ ٹھوکر کھا رهی

गिरानी, मँहगाई या क़हत–दक्खिन का तजरबा

(भाई सैयद ख्वाजा साहब, वकील, हैदराबाद, दक्खिन)

महँगाई शब्द हिन्दुस्तानी महँगा और मरहटी माघ से निकला है इसी मतलब का फारसी लफ्ज गिरानी है कहत शब्द अरबी है स सार के जन्म से लेकर बारिश की कमी या ज्यादती कहत का कारन हुआ करती थी पर अब इस तरह के कुदरती कारनों से कहत नही होता अब नये जमाने के कहतो का होना न होना बहुत दरजे तक सौदागरों पर निर्भर है आज के व्योपारी का ध्यान ज्यादा से ज्यादा दाम लेने की तरफ है यह भी याद रखना चाहिये कि बहुत से मुल्कों की सरकारे भी खुद व्योपारी बन गई है और बनती चली जा रही है यह व्योपारी बहुत से हथकंडे चलते है—जैसे गल्ले को जला देना बाजार मे माल न भेजना वगैरा वगैरा इन दो बडी और भयानक लडाइयों के महगाई का कारन कुदरत नहीं बल्कि आदमी खुद है.

दक्खिन मे शम्सुद्दीन बहमनी के समय से लेकर १९४८ तक बीस कहत पडे, जिनमे से १८ का कारन तो कुदरती है बाकी दो आदमी के लाये हुए है—एक कहत सन् १४ ई० की लडाई के बाद लाया गया और दूसरा हाल मे खतम हुई लडाई के बाद जिसके असर से आज तक हम सब दोचार हैं.

گرانی، منہگائی یا قحط دکھن کا تجربہ

(بھائی سید خواجہ صاحب وکیل، حیدرآباد، دکھن)

مہنگائی شبد ھندستانی مہنگا اور مرھٹی ماگھ سے نکلا ھے ۔ اسی مطلب کا فارسی لفظ گرانی ھے قحط شبد عربی ھے سنسار کے جنم سے لیکر بارش کی کمی یا زیادتی قحط کا کارن ہوا کرتی تھی پر اب اس طرح کے قدرتی کارنوں سے قحط نہیں ھوتا اب نئے زمانے کے قحطوں کا ھونا نہ ھونا بہت درجے تک سوداگروں پر نربھر ھے آج کے بیوپاری کا دھیان زیادہ سے زیادہ دام لینے کی طرف ھے یہ بھی یاد رکھنا چاھئے کہ بہت سے ملکوں کی سرکاریں بھی خود بیوپاری بن گئی ھیں اور بنتی چلی جا رھی ھیں یہ بیوپاری بہت سے ھتھ کنڈے چلتے ھیں جیسے غلہ کو جلا دینا، بازار میں مال نہ بھیجنا وغیرہ وغیرہ ان دو بڑی اور بھیانک لڑائیوں کی مہنگائی کا کارن قدرت نہیں بلکہ آدمی خود ھے ۔

دکھن میں شمس‌الدین بہمنی کے سمے سے لے کر ۱۹۴۸ تک بیس قحط پڑے، جن میں سے اٹھارہ کا کارن تو قدرتی ھے باقی دو آدمی کے لائے ھوئے ھیں—ایک قحط سن ۱۴ء کی لڑائی کے بعد لایا گیا اور دوسرا حال میں ختم ھوئی لڑائی کے بعد، جس کے اثر سے آج تک ھم سب دو چار ھیں ۔

हम कहना यह चाहते है कि यह हालत अपने आप पैदा नहीं हो गई और यह भी कहना चाहते है कि इस हालत का न उन हिन्दुओ को पता था और न उन पाकिस्तानियो को पता था जिनके हाथ मे आज हिन्द और पाकिस्तान की हकूमतो की बाग डोर है पर अभी हमने कहा है कि यह हालत अपने आप पैदा नहीं हुई, यह पैदा की गई है और सोच समझ कर पैदा की गई है. और इस की पैदाइश के अगरेज ही बाप और वह ही मा है अब सवाल यह पैदा होता है कि इस रोने धोने से फायदा? इस साप की घसीटन को पीटने से लाभ? इस चिड़ियो के चुगे खेत पर पछताने का मतलब? मतलब साफ है कोई मरज कभी दूर नही होता जब तक कि उसकी असली वजह समझ मे न आ जाय. अगर हमारा यह निदान यानो हमारी यह तशखीस, हमारी यह डायग्नोसिस, हर छोटे बड़े के दिल मे उतार दी जाय और जेहन नशीन करा दी जाय तो हमारे माने हुए लीडरो की मामूली तकरीरो के नुस्खे भी काफी से ज्यादा असर कर सकते है और हम बहुत जल्दी इस ज्वालामुखी को हमेशा के लिए नहीं तो उस मुद्दत तक के लिए जरूर ठडा कर सकते है जिस वक्त हम इस क़ाबिल हो सकेंगे कि उसे हमेशा के लिए ठडा कर दें.

—भगवान दीन

ھم کہنا یہ چاھتے ھیں کہ یہ حالت اپنے آپ پیدا نہیں ھوگئی اور یہ کہنا چاھتے ھیں کہ اِس حالت کا نہ اُن ھندیوں کو پتہ تھا اور نہ اُن پاکستانیوں کو پتہ تھا جن کے ھاتھ میں آج ھند اور پاکستان کی حکومتوں کی باگ ڈور ھے پر ابھی ھملے کہا ھے کہ یہ حالت اپنے آپ پیدا نہیں ھوئی ' یہ پیدا کی گئی ھے اور سوچ سمجھ کر پیدا کی گئی ھے اور اُسکی پیدایش کے انگریز ھی باپ اور وہ ھی ماں ھیں اب سوال یہ پیدا ھوتا ھے کہ اِس رونے دھونے سے فایدہ؟ اس سانپ کی گھسیٹن کو پیٹنے سے لابھہ؟ اِس چڑیوں کے چگے کھیت پر پچھتانے کا مطلب؟ مطلب صاف ھے. کوئی مرض کبھی دور نہیں ھوتا جب تک کہ اُسکی اصلی وجہ سمجھ میں نہ آجاے اگر ھمارا یہ ندان یعنی ھماری یہ تشخیص ' ھماری یہ ڈایگنوسس ھر چھوٹے بڑے کے دل میں اُتار دیجاے اور ذھن نشین کرا دیجاے تو ھمارے مانے ھوئے لیڈروں کی معمولی تقریروں کے نسخے بھی کافی سے زیادہ اثر کر سکتے ھیں اور ھم بہت جلدی اِس جوالا مکھی کو ھمیشہ کے لئے نہیں تو اُس مدت تک کے لئے ضرور ٹھنڈا کرسکتے ھیں جس وقت ھم اِس قابل ھو سکینگے کہ اُسے ھم ھمیشہ کے لئے ٹھنڈا کردیں

— بھگوان دین

चाहते हैं. उन्हें चाहिए कि वह पंडित जवाहर लाल जी को थर्मामीटर मान कर उनकी हाल ही की तकरीर के बल पर समझ ले कि जब पाकिस्तान की छूट गिनतियों यानी हिन्दुओं पर कोई ज़ुल्म होता है तो उनका दिल उन हिन्दुओं की तरफ खिंचे बिना नहीं रहता. ऐसा होना कुदरती है क्योंकि अभी हिन्दुस्तान के टुकडे हुए दिन ही कितने हुए और बँटवारा हो जाने से मुहब्बत का रिश्ता टूट भी कैसे सकता है ? हिन्दुओं की बात छोडिये. हिन्द का हर हिन्दू और मुसलमान पाकिस्तानी अब्दुल गफ्फार खाँ की तकलीफ की बात सुन कर दुख मानता है और अगर कांग्रेसी हुआ तो तड़प उठता है, भडक उठता है, फुनफुना कर रह जाता है और ऐसा मालूम होता है कि कहीं उसके हाथ में हकूमत की बाग डोर होती तो उसने पाकिस्तान के खिलाफ लडाई का एलान करके फौजों के कूच का डंका ही बजा दिया होता. हिन्द का पाकिस्तान के हिन्दुओं से ही नहीं बहुत से मुसलमानों से भी भाइयों से ज्यादा मुहब्बत है बताइये, इस मुहब्बत के रिश्ते को किस हथियार से तोडा जाय ? क्या कोई ऐसा हथियार, आदमी की बुद्धि अब तक ईजाद कर सकी है ? जो बात हिन्द की तरफ से कही गई है वही कम ज्यादा पाकिस्तान की तरफ से कही जा सकती है हमारा ही जैसा उनकी छातियों में भी दिल है उनका भी नाते का डोरा अब तक नहीं टूटा है और न टूट सकता है वह भी यहाँ के मुसलमानों का दुख अपना ही दुख मानते हैं अब बताइये कि हिन्द जन्मनी और पाकिस्तान जन्मनी यानी हिन्दी और पाकिस्तानी नेशन बने तो कैसे बने ? और यह नहीं बनता है तो यह दंगे का ज्वालामुखी जब चाहे रंग ला सकता है.

چاہتے ہیں اُنہیں چاہئے کہ وہ پنڈت جواہر لال جی کو تھرمامیٹر مان کر اُن کی حال ہی کی تقریر کے بل پر سمجھ لیں کہ جب پاکستان کی چھوٹگنتیوں یعنی ہندوؤں پر کوئی ظلم ہوتا ہے تو اُن کا دل اُن ہندوؤں کی طرف کھنچے بنا نہیں رہتا۔ ایسا ہونا قدرتی ہے کیونکہ ابھی ہندستان کے ٹکڑے ہوئے دن ہی کتنے ہوئے اور بٹوارہ ہو جانے سے محبت کا رشتہ ٹوٹ بھی کیسے سکتا ہے؟ ہندوؤں کی بات چھوڑئیے۔ ہند کا ہر ہندو اور مسلمان پاکستانی عبدالغفار خاں کی تکلیف کی بات سن کر دکھ مانتا ہے اور اگر کانگریسی ہوا تو تڑپ اُٹھتا ہے، بھڑک اُٹھتا ہے، پھن پھنا کر رہ جاتا ہے اور ایسا معلوم ہوتا ہے کہ کہیں اِس کے ہاتھ میں حکومت کی باگ ڈور ہوتی تو اُسنے پاکستان کے خلاف لڑائی کا اعلان کر کے فوجوں کے کوچ کا ڈنکا ہی بجا دیا ہوتا ہند کو پاکستان کے ہندوؤں سے ہی نہیں، بہت سے مسلمانوں سے بھی بھائیوں سے زیادہ محبت ہے بتائیے، اس محبت کے رشتے کو کس ہتھیار سے توڑا جائے؟ کیا کوئی ایسا ہتھیار، آدمی کی بدھی اب تک ایجاد کرسکی ہے؟ جو بات ہند کی طرف سے کہی گئی ہے وہی کم زیادہ پاکستان کی طرف سے کہی جا سکتی ہے ہمارا ہی جیسا اُن کی چھاتیوں میں بھی دل ہے اُن کا بھی ناتے کا ڈورا اب تک نہیں ٹوٹا ہے اور نہ ٹوٹ سکتا ہے وہ بھی یہاں کے مسلمانوں کا دکھ اپنا ہی دکھ مانتے ہیں اب بتائیے کہ ہند جنملی اور پاکستان جنملی یعنی ہندی اور پاکستانی نیشن بنے تو کیسے بنے؟ اور یہ نہیں بنتی ہیں تو یہ دنگے کا جوالا مکھی جب چاہے رنگ لا سکتا ہے۔

इसी तरह से ईसाई राज आने पर कितने ही मुसलमान ईसाई बनगये और हिन्दू फाटक की आर्य समाजी खिडकी खुल जाने से कभी कभी दो चार मुसलमान अपने बाप दादो का धरम अपनाने लगे और मौका मिलने पर उसी खिड़की की राह कभी कभी सैकडो घुस कर मुसलमान से हिन्दू हो गये तो फिर आज करोडो मुसलमानो की हिन्दू बन जाने मे क्यो जान निकती है ? हो सकता है ऐसे जल्द बाजो को यह पता भी न हो कि उनका इस तरह का उफान इसी विचार की गरमी का फल है. ख़ैर, उनको जाने दीजिए. उनकी बात पर अमल करने के काबिल न अभी पाकिस्तान के हिन्दू हो पाये है और न हिन्द के मुसलमान.

कुछ लोग एक दूसरी ही तरह सोचते है उनका कहना है कि आख़िर एक तारीख़ ऐसी क्यो नही तय कर दी जाती कि उस तारीख़ के बाद पाकिस्तान का कोई हिन्दू किसी तरह भी हिन्दुस्तान का जन्मना यानी हिन्द का नेशनल नही माना जायगा ठीक उसी तरह पाकिस्तान यह क्यो नही तय कर देता कि इस महीने की इस तारीख़ के बाद से हिन्द का कोई मुसलमान पाकिस्तान का जन्मना यानी पाकिस्तान का नेशनल किसी तरह नही समझा जा सकता. और क्यो नही दोनो मुल्क कुछ दिनो के लिए इस तरह की कड़ी पाबन्दियाँ लगा देते जिससे कोई पाकिस्तानी फिर चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान हिन्द मे नही घुस सकता और कोई हिन्दी चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान पाकिस्तान मे नही घुस सकता.

इस तरह के सोचने वाले न अपने भाइयो का दिल टटोलना जानते हैं और न इन्सानी खासियत से वाकफियत हासिल करना

اسی طرح سے عیسائی راج آنے پر کتنے ھی مسلمان عیسائی بن گئے اور ھندو پھاٹک کی آریہ سماجی کھڑکی کھل جانے سے کبھی کبھی دو چار مسلمان اپنے باپ دادوں کا دھرم اپنانے لگے اور موقع ملنے پر اُسی کھڑکی کی راہ کبھی کبھی سیکڑوں گھس کر مسلمان سے ھندو ھوگئے تو پھر آج کروڑوں مسلمانوں کی ھندو بن جانے میں کیوں جان نکلتی ھے ؟ ھو سکتا ھے ایسے جلد بازوں کو یہ پتہ بھی نہ ھو کہ اُن کا اس طرح کا ابھار اسی وچار کی گرمی کا پھل ھے . خیر ' اُن کو جانے دیجئے اُن کی بات پر عمل کرنے کے قابل نہ ابھی پاکستان کے ھندو ھو پائے ھیں اور نہ ھند کے مسلمان .

کچھ لوگ ایک دوسری ھی طرح سوچتے ھیں . اُن کا کہنا ھے کہ آخر ایک تاریخ ایسی کیوں نہیں طے کر دیجاتی کہ اُس تاریخ کے بعد پاکستان کا کوئی ھندو کسی طرح بھی ھندستان کا جنمنا یعنی ھند کا نیشنل نہیں مانا جائیگا ٹھیک اُسی طرح پاکستان یہ کیوں نہیں طے کردیتا کہ اس مہینے کی اس تاریخ کے بعد سے ھند کا کوئی مسلمان پاکستان کا جنمنا یعنی پاکستان کا نیشنل کسی طرح نہیں سمجھا جا سکتا . اور کیوں نہیں دونوں ملک کچھ دنوں کے لئے اس طرح کی پابندی لگادیتے جس سے کوئی پاکستانی ' پھر چاھے وہ ھندو ھو یا مسلمان ' ھند میں نہیں گھس سکتا اور کوئی ھندی ' چاھے وہ ھندو ھو یا مسلمان ' پاکستان میں نہیں گھس سکتا .

اس طرح کے سوچنے والے نہ اپنے بھائیوں کا دل ٹٹولنا جانتے ھیں اور نہ انسانی خاصیت سے واقفیت حاصل کرنا

डाह स्वार्थ से इतने साफ़ हैं कि उनके दिल के किसी कोने में नाम को भी यह चीज़ें न मिलेंगी, पर अपने जोश में इतने जल्दबाज़ बन बैठते हैं कि कह बैठते हैं कि क्यों नहीं पाकिस्तान के सब हिन्दू मुसलमान होकर उस कमबख़्त ज्वालामुखी को हमेशा के लिए ठंडा कर देते? और क्यों हिन्द के सब मुसलमान हिन्दू बनकर हिन्द के ज्वालामुखी को जड़ से उखाड़ नहीं फेंकते? इस जोश में वह यह ज़रा भी नहीं सोचते कि वह यह नुस्ख़ा बता कर दो जन्मनी सिद्धान्त यानी दो नेशन थियुरी की झाड़ी को पानी दे रहे हैं भलेही वह अपने जोश में एक गलत और बहुतसों के मन को न लगती बात कहते ज़रूर हैं पर मन के इतने साफ़ हैं कि उनसे यह हरगिज़ उम्मीद नहीं की जासकती कि वह दो नेशन थियुरी जैसी कटीली और विषभरी झाड़ी को पानी देने की सोचेंगे आख़िर वह कौनसा बीज है जो उनके मुँह से ऐसी बात कहलवा देता है? वह बीज है हिन्दुस्तान में मुसलमानों की करोड़ों में गिनती यह करोड़ों मुसलमान न अरब से जहाज़ों में लदकर आये थे, न फ़ारस की खाड़ी में होकर नावों में बैठ कर हिन्दुस्तान के किनारे लगे थे और न हिमालय की घाटियों में होकर अफ़ग़ानिस्तान से भागते हुए पंजाब में आ धमके थे यह तो सब के सब न भी सही पर बहुत के बहुत हिन्दुस्तान के हिन्दू हैं जो थोड़े थोड़े मुसलमान बन गये थे दिल में छिपी हुई यही बात उन्हें यह कहने के लिए मजबूर कर देती है कि भलेमानसो, जब तुम पांच पांच दस दस मुसलमान बने तो आज लाख लाख मुसलमान बनने में तुम्हारा क्यों दम निकलता है? ठीक

اونچ نیچ اور ذاتی سوارتھ سے اتنے صاف ہیں کہ اُن کے دل کے کسی کونے میں نام کو بھی یہ چیزیں نہ ملیں گی پر اپنے جوش میں اتنے جلد باز بن بیٹھتے ہیں کہ کہہ بیٹھتے ہیں کہ کیوں نہیں پاکستان کے سب ہندو مسلمان ہو کر اُس کمبخت جوالا مکھی کو ہمیشہ کے لئے ٹھنڈا کردیتے؟ اور کیوں ہند کے سب مسلمان ہندو بن کر ہند کے جوالا مکھی کو جڑ سے اُکھاڑ نہیں پھینکتے؟ اس جوش میں وہ یہ ذرا بھی نہیں سوچتے کہ وہ یہ نسخہ بتاکر دو جنمنی سدھانت یعنی دو نیشن تھیوری کی جھاڑی کو پانی دے رہے ہیں بھلے ہی وہ اپنے جوش میں ایک غلط اور بہت سوں کے من کو نہ لگتی بات کہتے ضرور ہیں پر من کے اتنے صاف ہیں کہ اُن سے یہ ہرگز اُمید نہیں کی جا سکتی کہ وہ دو نیشن تھیوری جیسی کٹیلی اور وِش بھری جھاڑی کو پانی دینے کی سوچیں گے آخر وہ کون سا بیج ہے جو اُن کے منہ سے ایسی بات کہلوا دیتا ہے؟ وہ بیج ہے ہندستان میں مسلمانوں کی کروڑوں میں گنتی یہ کروڑوں مسلمان نہ عرب سے جہازوں میں لد کر آئے تھے، نہ فارس کی کھاڑی میں ہو کر ناؤ میں بیٹھ کر ہندستان کے کنارے لگے تھے اور نہ ہمالیہ کی گھاٹیوں میں ہو کر افغانستان سے بھاگتے ہوئے پنجاب میں آدھمکے تھے یہ تو سب کے سب نہ بھی سہی، پر بہت کے بہت ہندستان کے ہندو ہی ہیں جو دھیرے دھیرے مسلمان بن گئے تھے دل میں چھپی ہوئی یہی بات اُنھیں یہ کہنے کے لئے مجبور کر دیتی ہے کہ بھلے مانسو، جب تم پانچ پانچ دس دس مسلمان بنے تو آج لاکھ لاکھ مسلمان بننے میں تمہارا کیوں دم نکلتا ہے؟ ٹھیک

तरह पाकिस्तानी सरकार को क्या यह चाह नही कि यह आग उगलने वाले पहाड़ यानी कोह् आतिश फ़िशाँ हमेशा के लिए ठंडे कर दिये जायँ ? अगर है तो कोई राह क्यो नही निकलती ? अगर नही है तो क्यो नहीं ? किस वजह से नही ? और अगर होते हुए भी नही का जामा पहने हुए है तो क्यो पहने हुए है ? हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी सरकारे इस ज्वाला मुखी को उखाड फेंकना नही चाहती, यह ऐसी बात है कि किसी समझदार के गले नही उतर सकती. इस लिए हर समझदार को यही मानना पडता है कि दोनो सरकारे सच्चे जी से इस तरह की भडक को सख्त नापसन्द करती है. पर कोई ठीक राह न निकलने की वजह से हर समझदार को यह कहकर तसल्ली करनी पडती है कि चाह तो है पर दबी हुई है यानी नही का जामा पहने हुए है.

इस मामले मे ज्यादा गहरे जाने से पहले हम ज़रा ऐसे आदमियो की बात अपने पढ़ने वालो के सामने पहले रख देना चाहते है जो तड़प कर, जल भुनकर, तग आकर वक्त के लिहाज से इतनी बेतुकी सोचते और कह डालते है कि जिसकी वजह से नासमझो मे दुगुनी भडक पैदा होकर जो नतीजे निकलते है उनका असर उस बेतुकी बात कह डालने वाले पर उलट कर इतनी ज़ोर का होता है कि फिर वह भी जिस ढग की बेतुकी बात कह रहा था उससे उल्टी बेतुकी हॉकने लगता है

मिसाल के लिए ऐसे आदमियो को लेलीजिए जो इस समय सच्चे जी से हिन्द के जनराज को फला फूला देखना चाहिते है और छूत छात, धर्मों के भेदभाव, प्रान्तो के झगड़े, समाजी

طرح پاکستانی سرکار کو کیا یہ چاہ نہیں کہ یہ آگ اُگلنے والے پہاڑ یعنی کوہ آتش فشاں ہمیشہ کے لئے ٹھنڈے کر دئے جائیں ؟ اگر ھے تو کوئی راہ کیوں نہیں نکلتی ؟ اگر نہیں ھے تو کیوں نہیں ؟ کس وجہ سے نہیں ؟ اور اگر ہوتے ہوئے بھی نہیں کا جامہ پہنے ہوئے ھے تو کیوں پہنے ہوئے ھے ؟ ھندستانی اور پاکستانی سرکاریں اِس جوالا مکھی کو اُکھاڑ پھینکنا نہیں چاھتیں، یہ ایسی بات ھے کہ کسی سمجھدار کے گلے نہیں اُتر سکتی اِس لئے ہر سمجھدار کو یہی ماننا پڑتا ھے کہ دونوں سرکاریں سچے جی سے اِس طرح کی بھڑک کو سخت ناپسند کرتی ھیں پر کوئی ٹھیک راہ نہ نکلنے کی وجہ سے ہر سمجھدار کو یہ کہکر تسلی کرنی پڑتی ھے کہ چاہ تو ھے پر دبی ہوئی ھے یعنی نہیں کا جامہ پہنے ہوئے ھے

اِس معاملے میں زیادہ گہرے جانے سے پہلے ہم ذرا ایسے آدمیوں کی بات اپنے پڑھنے والوں کے سامنے پہلے رکھ دینا چاھتے ھیں جو تڑپ کر، جل بھن کر تنگ آکر وقت کے لحاظ سے اتنی بے تکی سوچتے اور کہہ ڈالتے ھیں کہ جسکی وجہ سے ناسمجھوں میں دوگنی بھڑک پیدا ہوکر جو نتیجے نکلتے ھیں اُن کا اثر اُس بے تکی بات کہہ ڈالنے والے پر اُلٹ کر اِتنی زور کا ہوتا ھے کہ پھر وہ بھی جس ڈھنگ کی بے تکی بات کہہ رہا تھا اُس سے اُلٹی بے تکی ھانکنے لگتا ھے

مثال کے لئے ایسے آدمیوں کو لے لیجئے جو اِس سمے سچے جی سے ھند کے جن راج کو پھلا پھولا دیکھنا چاھتے ھیں اور چھوت چھات، دھرموں کے بھید بھاو، پرانتوں کے جھگڑے، سماجی

विष के बीज

अंगरेज का रोना रोना हम बहुत बुरा समझते है. और जहॉ तक बन पडता है 'नया हिन्द' को इससे पाक रखते है. पर जब तक लाचारगी से, बेबसी से, नादूरन्देशी से या कुछ हिन्दुस्तानियो की करतूतो से हिन्दुस्तान ब्रिटिश न सही किसी बेतुकी कामन वेल्थ का हिस्सा बना हुआ है तब तक हम भी कभी कभी अंगरेजो का रोना न रोने के अहद से भटक जायॅ तो हमारे पढ़ने वाले हमे माफ़ करे

अगरेज बिल्ली की तरह मे दूध खिड़ा कर ही नही गया, दुटप्पिये की हैसियत से फूट और बैर के बीज बोकर ही नही गया वह तो पूर्बी बगाल और पच्छिमी बगाल मे और पच्छिमी पजाब और पूर्बी पजाब मे ज्वाला मुखियो की गहरी जड जमा कर गया है. यह कब भडक कर लावा उगलने लगे इस का क्या भरोसा ? यह ज्वालामुखी किसी तरह जड से नापैद किये जा सकते है या नही, या हमेशा के लिए मुरदा बनाये जा सकते है या नही यह ऐसे सवाल नही ह जिनके जवाब हो नहो 'जहॉ चाह है वहॉ राह होती है' यह कहावत सोलहो आना सच है. इसकी सच्चाई का सबसे बडा सुबूत यह है कि इस से उलटी कहावत यानी जहॉ चाह है वहॉ राह नही ' इतनी झूट है कि अपढ से अपढ भी उसे झूट कहते हुए जरा भी आगापीछा न सोचेगा. फिर क्या हमारी सरकार को और उसी

وش کے بیج

انگریز کا رونا رونا ہم بہت برا سمجھتے ہیں . اور جہاں تک بن پڑتا ہے ' نیا ہند ' کو اس سے پاک رکھتے ہیں پر جب تک لاچارگی سے ' بے بسی سے ' نا دور اندیشی سے یا کچھ ہندستانیوں کی کرتوتوں سے ہندستان برٹش نہ سہی کسی بے تکی کامن ویلتھ کا حصہ بنا ہوا ہے تب تک ہم بھی کبھی کبھی انگریزوں کا رونا نہ رونے کے عہد سے بھٹک جائیں تو ہمارے پڑھنے والے ہمیں معاف کریں .

انگریز بلی کی طرح سے دودھ کھڑا کر ہی نہیں گیا ' دو ٹپیئے کی حیثیت سے پھوٹ اور بیر کے بیج بو کر ہی نہیں گیا وہ تو پوربی بنگال اور پچھمی بنگال میں ' اور پچھمی پنجاب اور پوربی پنجاب میں جوالا مکھیوں کی گہری جڑ جما کر گیا ہے . یہ کب بھڑک کر لاوا اُگلنے لگے اِسکا کیا بھروسہ ؟ یہ جوالا مکھی کسی طرح جڑ سے نابید کئے جا سکتے ہیں یا نہیں ' یا ہمیشہ کے لئے مردا بنائے جا سکتے ہیں یا نہیں ' یہ ایسے سوال نہیں ہیں جنکے جواب ہی نہ ہوں ' جہاں چاہ ہے وہاں راہ ہوتی ہے ' یہ کہاوت سولہوں آنا سچ ہے . اسکی سچائی کا سب سے بڑا ثبوت یہ ہے کہ اِس سے اُلٹی کہاوت یعنی ' جہاں چاہ ہے وہاں راہ نہیں ' اتنی جھوٹ ہے کہ اپڑھ سے اپڑھ بھی اُسے جھوٹ کہتے ہوئے ذرا بھی آگا پیچھا نہ سوچیگا . پھر کیا ہماری سرکار کو اور اُسی

दोनो ने एक माँ की गोदी मे आँख खोली
मिल जुल के जिसमे बरसो खेली है सबने होली
वह जिसने आर्यों को बेटा बना के रक्खा
तुर्क आ बसे तो उनको अपना बना के रक्खा
परनाम करके जिसने चिश्ती को ला बसाया
प्रजा ने पाँव पूजे राजा ने सर झुकाया
अकबर ने जिस जमी मे चाहत के बीज बोये
वह राज जिसके होते सब सुख की नीद सोये
हर बस्ती दोस्ती की शाहिद* बनी हुई है
झुर्मट मे मन्दिरो के मसजिद बनी हुई है
गौतम जहाँ अहिन्सा की धुन सुना चुका हो
बन्दानवाज़ जिस मे दर्शन दिखा चुका हो
वह देश करबला के स्वामी का जो भगत हो
जिसको हुसैन चाहे‡ जिसमे हुसैनियत हो

---

* शाहिद = गवाह.

‡ कहा जाता है कि हज़रत इमाम हुसैन ने करबला की घटना से पहले हिन्दुस्तान भेज दिये जाने की इच्छा प्रकट की थी —एडीटर

دونوں نے ایک ماں کی گودی میں آنکھ کھولی
مل جل کے جس میں برسوں کھیلی ہے سب نے ہولی
وہ جس نے آریوں کو بیٹا بنا کے رکھا
ترک آ بسے تو اُن کو اپنا بنا کے رکھا
پرنام کرکے جس نے چشتی کو لا بسایا
پرجا نے پاؤں پوجے راجا نے سر جھکایا
اکبر نے جس زمیں میں چاہت کے بیج بوئے
وہ راج جس کے ہوتے سب سکھ کی نیند سوئے
ہر بستی دوستی کی شاہد* بنی ہوئی ہے
جھرمٹ میں مندروں کے مسجد بنی ہوئی ہے
گوتم جہاں اہنسا کی دھن سنا چکا ہو
بندہ نواز جس میں درشن دکھا چکا ہو
وہ دیش کربلا کے سوامی کا جو بھگت ہو
جسکو حسین چاہیں‡ جس میں حسینیت ہو

---

* شاہد - گواہ

‡ کہا جاتا ہے کہ حضرت امام حسین نے کربلا کی گھٹنا سے پہلے هندستان بھیج دیئے جانے کی اِچھا پرکٹ کی تھی—ایڈیٹر

उस देस की कहानी क्यो होगी रूखी फीकी
वह देस जिसमे नहरें बहती थीं दूध घी की

हलचल जहाँ मचा दे कोयल की कूक दिल मे
बरखा जहाँ बढ़ादे चाहत की भूक दिल मे

बागों मे डाली डाली डोले जहाँ पपीहा
बिरहन का रूप भर कर बोले जहाँ पपीहा

वहदत की लय बढ़ायें तुलसी कबीर जिसमे
नानक जहाँ बिराजे, पैदा हों सूर जिस मे

सरहिन्द को बसाये नासिर अली सा शायर
बाबाय शायरी हो जिसका वली सा शायर

खुसरो जहाँ जनम ले जिस मे नजीर भी हो
जिसका रहीम जैसा शायर महा कवि हो

चकबस्त शायरी मे उर्दू का ले सहारा
एकबाल की हो बानी हिन्दोस्ताँ हमारा

मन के भजन सुनावे मीरा के गीत जिस मे
झूला झुला रहे हों रूपा के गीत जिस मे

वह रानियाँ कि जिनकी मर्दों मे है कहानी
दक्खिन की चाँद बीबी झाँसी की राज रानी

सुख जिस मे पत्ते पत्ते आराम डाली डाली
हर दिन हो ईद जिसका हर रात हो दिवाली

हिन्दू जहाँ हजारों ईदें मना चुके हैं
मुस्लिम सपूत जिसके राखी बंधा चुके हैं

اُس دیس کی کہانی کیوں ہوگی روکھی پھیکی
وہ دیس جس میں نہریں بہتی تھیں دودھ گھی کی

ہلچل جہاں مچادے کوئل کی کوک دل میں
برکھا جہاں بڑھا دے چاہت کی بھوک دل میں

باغوں میں ڈالی ڈالی ڈولے جہاں پپیہا
برہن کا روپ بھر کر بولے جہاں پپیہا

وحدت کی لے بڑھائیں تلسی کبیر جس میں
نانک جہاں براجے پیدا ہوں سور جس میں

سر ہند کو بسائے ناصر علی سا شاعر
بابائے شاعری ہو جس کا ولی سا شاعر

خسرو جہاں جنم لے جس میں نظیر بھی ہو
جس کا رحیم جیسا شاعر مہا کوی ہو

چکبست شاعری میں اُردو کا لے سہارا
اقبال کی ہو بانی ہندوستاں ہمارا

من کے بھجن سناوے میرا کے گیت جس میں
جھولا جھلا رہے ہوں روپا کے گیت جس میں

وہ رانیاں کہ جنکی مردوں میں ہے کہانی
دکھن کی چاند بی بی جھانسی کی راج رانی

سکھ جس میں پتے پتے آرام ڈالی ڈالی
ہر دن ہو عید جس کا ہر رات ہو دوالی

ہندو جہاں ہزاروں عیدیں منا چکے ہیں
مسلم سپوت جس کے راکھی بندھا چکے ہیں

चलता रहा है जिसका बेरोक टोक चक्कर
है आज उस वतन का झंडा अशोक चक्कर

गंगा है जिसमे बहती, रावी है, ताप्ती है
मीठे सुरों मे जिसकी धरती अलापती है

चरनो मे सर झुकाये ऊँचा हिमालिया है
आकाश का भी दामन जिसने दबा लिया है

पंजाब के नशीले पानी मे मस्तियाँ है
सरहद की घाटियो मे शेरो की बस्तियाँ है

यू. पी. प्रेम रूपी आँखे लड़ाने वाला
बंगाल ज़िन्दगी का जादू जगाने वाला

सोने मे जैसे दिल हो यो बीच बीच सी. पी.
चुप चाप देखता है सब ऊँच नीच सी. पी.

गुजरात की वह सज धज और वह दखिन की शोभा
आँखो मे खुबने वाली तन मन को धन की शोभा

मथुरा वह गोपियों की प्रेमी है जिसके बस मे
डूबी हुई है अब तक बंसी के रंग रस मे

जमना के तीर धरती अकबर के राज वाली
वह आगरा की बस्ती दुनिया मे ताज वाली

उस देस की न पूछो जिस देस मे अवध हो
माथे पे जैसे टीका नैनो मे जैसे मध हो

वह सब्ज़ा ज़ार धरती जंगल मे जो है मंगल
कश्मीर जिसके सर पर डाले हुए है आँचल

چلتا رھا ھے جس کا بے روک ٹوک چکر
ھے آج اُس وطن کا جھنڈا اشوک چکر

گنگا ھے جس میں بہتی، راوی ھے، تاپتی ھے
میٹھے سروں میں جسکی دھرتی الاپتی ھے

چرنوں میں سر جھکائے اونچا ھمالیا ھے
آکاش کا بھی جس نے دامن دبا لیا ھے

پنجاب کے نشیلے پانی میں مستیاں ھیں
سرحد کی گھاٹیوں میں شیروں کی بستیاں ھیں

یو۔ پی پریم روپی آنکھیں لڑانے والا
بنگال زندگی کا جادو جگانے والا

سینے میں جیسے دل ھو یوں بیچ بیچ سی پی
چپ چاپ دیکھتا ھے سب اونچ نیچ سی پی

گجرات کی وہ سج دھج اور وہ دکھن کی شوبھا
آنکھوں میں کھبنے والی تن من کی دھن کی شوبھا

متھرا وہ گوپیوں کی پریمی ھیں جسکے بس میں
ڈوبی ھوئی ھے اب تک بنسی کے رنگ رس میں

جمنا کے تیر دھرتی اکبر کے راج والی
وہ آگرہ کی بستی دنیا میں تاج والی

اُس دیس کی نہ پوچھو جس دیس میں اودھ ھو
ماتھے پہ جیسے ٹیکا نینوں میں جیسے مدھ ھو

وہ سبزہ زار دھرتی جنگل میں جو ھے منگل
کشمیر جس کے سر پر ڈالے ھوئے ھے آنچل

नया हिन्द — نیا ہند

जल्द ८ अप्रैल '५० नम्बर ४

جلد ۸ اپریل ۵۰ نمبر ۴

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिए प्रेम की झोली

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

हिन्दुस्तान

(भाई नज्म आफन्दी)

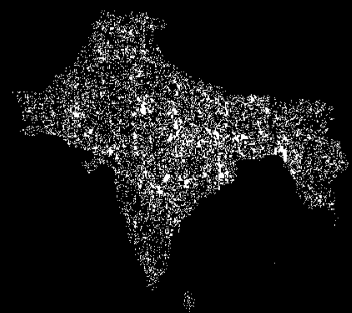
फूलों का देश है एक दक्खिन में एशिया के
घायल जो आज कल है काटों से घाव खा के
देहलीज जिसकी देहली नगरी बड़ी पुरानी
परजा का सुख सहारा, राजा की राजधानी
हर सूरमा ने जिसकी चौखट पे बाज रक्खा
मुग़लों ने जिसके सर पर अनमोल ताज रक्खा

ہندستان

(بھائی نجم آفندی)

پھولوں کا دیش ہے ایک دکھن میں ایشیا کے
گھائل جو آجکل ہے کانٹوں سے گھاؤ کھا کے
دہلیز جسکی دہلی نگری بڑی پرانی
پرجا کا سکھ سہارا راجا کی راجدھانی
ہر سورما نے جسکی چوکھٹ پہ باج رکھا
مغلوں نے جس کے سر پر انمول تاج رکھا

नया हिन्द نیا ہند



Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.

Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Society, 48 Bai ka Bagh, Allahabad.

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमे सब हिन्दुस्तानी शामिल हों

(२) एकता फैलाने के लिये किताबो, अखबारों, रिसालों वग़ैरह का छापाना

(३) पढ़ाई घरो, किताब घरों, सभाओं, कानफरेंसों, लेक्चरो से सब धर्मों, जातों, बिरादरियो और फ़िर्क़ों मे आपस मे मेल बढाना

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; —

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मज़हर अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, प० विशम्भर नाथ महात्मा भगवान दीन, सेठ पूनम चन्द रांका, काज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम् प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदो के लिये लिखिए

सुन्दर लाल

सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक

مقصد

(۱) ایک ایسی هندوستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب هندستانی شامل هوں -

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا -

(۳) پڑھائی گھروں، کتب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، ذاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا -

---

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ— مسٹر عبدالمجید خواجہ، وائس پریسیڈنٹ— ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس، سکریٹری پنڈت سندلال،

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند - مولی سید سلیمان ندوی، مسٹر مظفر علی سوختہ، سری بی - جی - کھیر، مسٹر ایس- کے- رودرا، پنڈت وشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال،

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے -

سندر لال

سکریٹری هندستانی کلچر سوسائٹی،

۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے - "نیا هند" کے جو گاهک ممبر بننا چاهیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر هی ممبر بنا لیا جائیگا-الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی هوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی هوگی مفت لے

'जिन्दगी की सुनहरी किरने देखने के लिये बेताब है आज का शायर और कलाकार जनता की इस मांग को ठुकरा कर खुद अपनी अदबी मौत को अपने नजदीक बुलाता है. 'धरती की करवट' सरमायादारी निज़ाम और अन्याय के भरोसे राज करने वाले तबक़ो के लिये ही चुनौती नही है बल्कि वह उन अदीबो, शायरो और कलाकारो को भी ललकारती है जो भाषा और कला की रक्षा के नाम पर दिन पर दिन जनता से दूर होते जा रहे है.

बच्चो की दुनिया

'नया हिन्द' के अगले नम्बर से हम 'बच्चो की दुनिया' नाम का नया कालम खोल रहे है. इस कालम मे बच्चो को खुश करने वाले, उन्हे देश विदेश के बच्चो से मिलाने वाले, उन की जानकारी बढ़ाने वाले, दिलचस्प लेख, कवितायें, नाटक, कहानियाँ, चुटकुले वगैरह छपा करेंगे. उर्दू टाइप के कारन अब हम आसानी से तस्वीरे भी छाप सकेंगे, आशा है कि हमारी यह कोशिश बच्चो और बड़ो दोनो मे पसन्द की जायगी

अगले महीने से हम आये हुए खत और उनके जवाब भी बराबर छापने की कोशिश करेंगे. हम चाहते है कि 'नया हिन्द' के पढ़ने वाले हमे अपनी राय लिखे कि 'नया हिन्द' मे और क्या क्या सुधार किये जाये. हम हर मुनासिब सुझाव का स्वागत करे गे.

'हुनर' वास्ते एडीटर

زندگی کی سنہری کرنیں دیکھنے کے لئے بیتاب ہے آج کا شاعر اور کلاکار جنتا کی اس مانگ کو ٹھکرا کر خود اپنی ادبی موت کو اپنے نزدیک بلاتا ہے 'دھرتی کی کروٹ' سرمایہ‌داری نظام اور انیائے کے بھروسے راج کرنے والے طبقوں کے لئے ہی چنوتی نہیں ہے بلکہ وہ اُن ادیبوں، شاعروں اور کلاکاروں کو بھی للکارتی ہے جو بھاشا اور کلا کی رکشا کے نام پر دن پر دن جنتا سے دور ہوتے جا رہے ہیں۔

بچوں کی دنیا

'نیا ہند' کے اگلے نمبر سے ہم 'بچوں کی دنیا' کے نام کا نیا کالم کھول رہے ہیں۔ اس کالم میں بچوں کو خوش کرنے والے، اُنہیں دیش بدیش کے بچوں سے ملانے والے، اُن کی جانکاری بڑھانے والے، دلچسپ لیکھ کویتائیں، ناٹک، کہانیاں، چٹکلے وغیرہ چھپا کریں گے۔ اُردو ٹائپ کے کارن اب ہم آسانی سے تصویریں بھی چھاپ سکیں گے۔ آشا ہے کہ ہماری یہ کوشش بچوں اور بڑوں دونوں میں پسند کی جائیگی۔

اگلے مہینے سے ہم آئے ہوئے خط اور اُن کے جواب بھی برابر چھاپنے کی کوشش کریں گے۔ ہم چاہتے ہیں کہ 'نیا ہند' کے پڑھنے والے ہمیں اپنی رائے لکھیں کہ 'نیا ہند' میں اور کیا کیا سدھار کئے جائیں۔ ہم ہر مناسب سجھاؤ کا سواگت کریں گے۔

'ہنر' واسطے اڈیٹر

'धरती की करवट'

नया हिन्द के इस अंक में हम उर्दू के मशहूर शायर और लेखक भाई रघुपति सहाय 'फ़िराक' की नई कविता 'धरती की करवट' आपको भेंट कर रहे हैं. 'फिराक' साहब शायरी की दुनिया मे ही नहीं अदब की दुनिया मे भी अपनी ख़ास जगह रखते हैं. जबान पर उन्हे कितना अधिकार है, अपने विचारो को वह कितने ज़ोरदार तरीके से, कितनी सफ़ाई और ख़ूबी के साथ, कितने लोच और बाँक पन के साथ, चलते-फिरते, हल्के-फुल्के शब्दो मे कह जाते हैं. कैसी चोट कर जाते हैं, किसतरह तड़पा देते है और किसतरह बेसाख्ता वाह वाह करने पर मजबूर कर देते है इसका अन्दाजा उनकी अकेली इसी कविता को पढ़ कर लगाया जा सकता है.

'फ़िराक़' साहब शायर और अदीब ही नही, ऊचे दरजे के और सुलझे हुऐ विचारक भी हैं हिन्दुस्तानी के वारे मे उनके विचार 'नया हिन्द' के पढ़ने वालो को मालूम है 'धरती की करवट' मे उन्हो ने नई आजादी, नई जिन्दगी और नई जंग की जो तस्वीर हमारे सामने रखी है, जिन शब्दो और मुहावरो और टुकडो मे रखी है वह सबूत है उस नई करवट का जो फिराक़ साहब की शायरी मे आरही है. यह करवट हर मानी मे अच्छी, जरूरी और बहुत जरूरी है. समाजी हालतो ने अदब की दुनिया पर भी एक काली चादर डालदी है. उस काली चादर के नीचे दबी हुई जनता आशा और

' دهرتی کی کروٹ '

' نیا هند ' کے اس انک میں هم اُردو کے مشہور شاعر اور لیکھک بھائی رگھوپتی سہائے ' فراق ' کی نئی کویتا ' دهرتی کی کروٹ ' آپ کو بهینٹ کر رهے هیں فراق صاحب شاعری کی دنیا میں هی نہیں ادب کی دنیا میں بهی اپنی خاص جگه رکھتے هیں . زبان پر اُنهیں کتنا ادهیکار هے ' اپنے وچاروں کو وہ کتنے زور دار طریقے سے ' کتنی صفائی اور خوبی کے ساتھ ' کتنے لوچ اور بانکپن کے ساتھ چلتے پهرتے ' هلکے پهلکے شبدوں میں کهه جاتے هیں ' کیسی چوٹ کر جاتے هیں ' کس طرح پڑهنے والوں کو تڑپا دیتے هیں اور کس طرح بےساخته واہ واہ کرنے پر مجبور کردیتے هیں ' اسکا اندازہ اُن کی اکیلی اسی کویتا کو پڑهکر لگایا جاسکتا هے .

' فراق ' صاحب شاعر اور ادیب هی نہیں ' اونچے درجے کے اور سلجھے هوئے وچارک بهی هیں هندستانی کے بارے میں اُن کے وچار ' نیا هند ' کے پڑهنے والوں کو معلوم هیں ' دهرتی کی کروٹ میں اُنهوں نے نئی آزادی ' نئی زندگی اور نئی جنگ کی جو تصویر همارے سامنے رکھی هے اور جس طرح رکھی هے ' جن شبدوں ' محاوروں اور ٹکڑوں میں رکھی هے وہ ثبوت هے اُس نئی کروٹ کا جو فراق صاحب کی شاعری میں آرهی هے یه کروٹ هر معنی میں اچھی ' ضروری اور بہت ضروری هے . سماجی حالتوں نے ادب کی دنیا پر بهی ایک کالی چادر ڈال دی هے . اُس کالی چادر کے نیچے دبی هوئی جنتا آشا اور

लिहाज़ से तो वह उतनी ही हंसी की बात है जैसे कोई पैसे बचाने की ग़रज़ से मोटर मे बैठ कर चार पैसे का पालक का साग ख़रीदने बड़ी मंडी जाय, या वक़्त बचाने के लिए हवाई जहाज़ से दिल्ली से शाहादरा जाने की सोचे.

हम तो अब तक यही सुनते आये हैं कि एक एक लाठी फ़िकैत सौ सौ लाठी वालो का अकेला मुक़ाबला कर लिया करता था. हां, सौ सौ का नही तो दस दस का हमने भी मुक़ाबला करते देखा है. फिर समझ मे नहीं आता कि इन पुलिस और जेल के सिपाहियो को आये दिन क्यो गोलियॉं चलाने की जरूरत पड़ जाती है. सन् ३२ मे हमारी इन्ही आंखो ने, जिनकी मदद से हम यह नोट लिख रहे है, अमरावती जेल मे सौ कैदियो को पाच पाच वार्डरो को सिर्फ़ बैट्न (छोटा सा डंडा) के जरिये काबू मे करते देखा था. हमें पता नही, आजकल किस चीज़ के बने हुए पुलिस और जेल के सिपाही नौकर रखे जाते हैं जो बग़ैर गोली चलाये कुछ कर ही नही सकते. कही नया नाइ बांस का नहन्ना' वाली बात तो नही है ?

यह मामूली बात नही है. इसे सूबे की सरकारो के साथ साथ बड़ी सरकार को भी सोचने की जरूरत है.—भगवान दीन

भूल सुधार

फरवरी के नया हिन्द मे 'हमारी राय' के नोट 'हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' के नीचे भाई किशोरी लाल मशरूवाला का नाम और हरिजन केवक का हवाला छपने से रह गया था पाठक सुधार कर ले. 'हुनर' वास्ते एडीटर

لحاظ سے تو وہ اتنی ہی ھنسی کی بات ھے جیسے کوئی پیسے بچانے کی غرض سے موٹر میں بیٹھ کر چار پیسے کا پالک کا ساگ خریدنے بڑی منڈی جائے ' یا وقت بچانے کے لئے ھوائی جہاز سے دلی سے شاھدرا جانے کی سوچے ۔

ھم تو اب تک یہی سنتے آئے ھیں کہ ایک ایک لاٹھی پھیکیت سو سو لاٹھی والوں کا اکیلا مقابلہ کر لیا کرتا تھا . ھاں ' سو سو کا نہیں تو دس دس کا ھم نے بھی مقابلہ کرتے دیکھا ھے . پھر سمجھ میں نہیں آتا کہ ان پولیس اور جیل کے سپاھیوں کو آئے دن کیوں گولیاں چلانے کی ضرورت پڑ جاتی ھے . سن ۳۲ میں ھماری انہیں آنکھوں نے جنکی مدد سے ھم یہ نوٹ لکھ رہے ھیں ' امراؤتی جیل میں سو قیدیوں کو پانچ پانچ وارڈروں کو صرف بیٹن (چھوٹا سا ڈنڈا) کے ذریعے قابو میں کرتے دیکھا تھا . ھمیں پتہ نہیں ' آج کل کس چیز کے بنے ھوئے پولیس اور جیل کے سپاھی نوکر رکھے جاتے ھیں جو بغیر گولی چلائے کچھ کر ھی نہیں سکتے کہیں ' نیا نائی بانس کا نہنا ' والی بات تو نہیں ھے ؟

یہ معمولی بات نہیں ھے . اسے صوبے کی سرکاروں کے ساتھ ساتھ بڑی سرکار کو بھی سوچنے کی ضرورت ھے .—بھگوان دین

بھول سدھار

فروری کے 'نیا ھند' میں 'ھماری رائے' کے نوٹ 'ھندو مہا سبھا اور راشٹریہ سویم سیوک سنگھ' کے نیچے بھائی کشوری لال مشرو والا کا نام اور ھریجن سیوک کا حوالہ چھپنے سے رہ گیا تھا . پاٹھک سدھار کرلیں . 'ھنر' واسطے ایڈیٹر

ऐसा करने से देश-वासियों और देश की काम करने की शक्ति बढ़ने के साथ साथ बहुत सा रुपया विदेश जाने से बच जायगा, और यही है बाढ़ से पहले नहर बना रखने की बात . और यही हो सकता है धुन बिखराव की तरक्की का भेद. —भगवानदीन

सुनते सुनते कान पक गये .

आये दिन कहीं न कहीं से गोली चलने की खबर आही जाती है. यह ठीक है कि आजाद होने से नहीं, आजाद होने की बात सुनने के दिन से न जाने किस देवता ने हिन्दुस्तानी रैयत के हाथ मे बन्दूके थमा दी और जेबो मे कारतूस भर दिये थे और वही अपनो पर गोलिया दागने लगे और उन्हीं की गोलियो की आवाज बहुत दिनो तक आती रही पर अब कुछ दिनो से तो सरकारी सिपाहियो की गोली की आवाज की खबरो से अखबारो के कालम रंगे रहते हैं और अहिंसात्मक जम्हूरियत की नींव जिस दिन से तोपो की सलामी के साथ रखी गई उस दिन से तो गोली की आवाज घटने के बजाय कुछ बढ ही है . यह लिख कर हम सरकार को यह सलाह देने की बात नहीं सोच रहे हैं कि सरकार गोलिया चलाना छोड़ दे हम तो उलटी यह सलाह देने को तैयार है कि वह दस गोली की जगह बीस गोली चलाये मगर बीस गोली तभी चलाये जब वह अपने मुकाबले मे आने वाले की सौ गोलिया खराब करा ले . यही है अच्छे लड़ने वालो का उसूल निहत्थो पर गोली चलाना, फिर वह तादाद मे कितने ही ज्यादा क्यो न हो, न दूरन्देशी है न बुद्धिमानी न बहादुरी. पैसे की बचत तो उसमे हरगिज है ही नहीं . उस

ایسا کرنے سے دیش واسیوں اور دیش کی کام کرنے کی شکتی بڑھنے کے ساتھ ساتھ بہت سا روپیہ ودیش جانے سے بچ جائیگا . اور یہی ہے باڑھ سے پہلے نہر بنا رکھنے کی بات . اور یہی ہو سکتا ہے دھن بکھراؤ کی ترقی کا بھید .

— بھگوان دین

سنتے سنتے کان پک گئے .

آئے دن کہیں نہ کہیں سے گولی چلنے کی خبر آ ہی جاتی ہے . یہ ٹھیک ہے کہ آزاد ہونے سے نہیں ' آزاد ہونے کی بات سننے کے دن سے نہ جانے کس دیوتا نے ھندستانی رعیت کے ھاتھ میں بندوقیں تھما دیں اور جیبوں میں کارتوس بھر دئے تھے اور وھی اپنوں پر گولیاں داغنے لگے اور انھیں کی گولیوں کی آواز بہت دنوں تک آتی رھی پر اب کچھ دنوں سے تو سرکاری سپاھیوں کی گولی کی آواز کی خبروں سے اخباروں کے کالم رنگے رھتے ھیں اور اھنساتمک جمہوریت کی نیو جس دن سے توپوں کی سلامی کے ساتھ رکھی گئی اس دن سے تو گولی کی آواز گھٹنے کے بجائے کچھ بڑھی ھی ھے . یہ لکھ کر ھم سرکار کو یہ صلاح دینے کی بات نہیں سوچ رھے ھیں کہ سرکار گولیاں چلانا چھوڑ دے . ھم تو الٹی یہ صلاح دینے کو تیار ھیں کہ وہ دس گولی کی جگہ بیس گولی چلائے مگر بیس گولی تبھی چلائے جب وہ اپنے مقابلے میں آنے والے کی سو گولیاں خراب کرالے یہی ہے اچھے لڑنے والوں کا اصول . نہتوں پر گولی چلانا پھر وہ تعداد میں کتنے ھی زیادہ کیوں نہوں نہ دور اندیشی ہے نہ بدھی مانی نہ بہادری . پیسے کی بچت تو اس میں ہرگز ہے ہی نہیں . اس

नुक़सान से ही हम नहीं बच जाते, कुछ फायदा भी उठा लेते हैं ठीक उसी तरह से धुन बिखराव की बाढ़ से होने वाले पैसे के नुकसान को बहुत कुछ बचाया जा सकता है . इतना ही नही उसमे बहुत कुछ कमाया भी जा सकता है. हमारी सरकार पैसे की कमी की वजह से एक ओर धुनबिखराव पड़ावो यानी ब्राडकास्टिंग स्टेशनो का ख़र्च कम करती जा रही है और दूसरी तरफ अमरीका से रेडियो सुनिये यानी रेडियो रिसीवर आने देकर और इस तरह आयासी यानी इम्पोर्ट बढ़ा कर देश की डालर शक्ति को कम करती जा रही है और साथ ही साथ डालर का रोना भी रोती जा रही है ? सरकार अगर आज इस बात की छूट दे दे कि लोग अपने "रेडियो सुनिये" आप तैयार कर सकते है तो बहुत जल्दी हिन्द मे "रेडियो सुनिये" बनने की बाढ़ सी आ जायगी . स्थानी धुन बिखराव यानी लोकल ब्राडकास्टिंग सुनने के लिए "रेडियो सुनिये" तीस रुपये से पचास रुपये तक मे आसानी से तैयार हो सकते हैं . जिन छोटी छोटी चीजो से ऐसे सुनिये तैयार होते है उनमे से कुछ तो बहुत आसानी से हिन्द मे ही तैयार हो सकती हैं . और कुछ ऐसी जगह से मंगाई जा सकती है जहाँ डालर का चलन नही है . इस ओर ध्यान देने से कुछ ही दिन मे यह नतीजा निकलेगा कि गांव गांव रेडियो सुनिये दिखाई देने लगेंगे . और क़सबो और शहरो मे तो उनकी भरमार हो जायगी . उनके लैसंस की आमदनी इतनी काफी हो सकती है कि जिसकी मदद से "स्थानी भेजिये पड़ाव" यानी लोकल ट्रांसीमिटिंग स्टेशन बहुत ज्यादा ताकतवर बनाये जा सकते हैं.

نقصان سے ہی ہم نہیں بچ جاتے ، کچھ فائدہ بھی اُٹھا لیتے ہیں، ٹھیک اُسی طرح سے دھن بکھراؤ کی باڑھ سے ہونے والے پیسے کے نقصان کو بہت کچھ بچایا جا سکتا ہے ۔ اتنا ہی نہیں اُس سے بہت کچھ کمایا بھی جا سکتا ہے ۔ ہماری سرکار پیسے کی کمی کی وجہ سے ایک اور دھن بکھراؤ پڑاؤں یعنی براڈ کاسٹنگ اسٹیشنوں کا خرچ کم کر رہی ہے اور دوسری طرف امریکہ سے ریڈیو سنئے یعنی ریڈیو رسیور آنے دیکر اور اِس طرح آیا سی یعنی امپورٹ بڑھا کر دیش کی ڈالر شکتی کو کم کرتی جا رہی ہے اور ساتھ ہی ساتھ ڈالر کا رونا بھی روتی جا رہی ہے ۔ سرکار اگر آج اس بات کی چھوٹ دیدے کہ لوگ اپنے "ریڈیو سنئے" آپ تیار کر سکتے ہیں تو بہت جلدی ہند میں "ریڈیو سنئے" بننے کی باڑھ سی آجائے گی ۔ استھانی دھن بکھراؤ یعنی لوکل براڈ کاسٹنگ سننے کے لئے "ریڈیو سنئے" تیس روپیہ سے پچاس روپیہ تک میں آسانی سے تیار ہو سکتے ہیں جن چھوٹی چھوٹی چیزوں سے ایسے سنئے تیار ہوتے ہیں اُن میں سے کچھ تو بہت آسانی سے ہند میں ہی تیار ہو سکتی ہیں اور کچھ ایسی جگہ سے منگائی جا سکتی ہیں جہاں ڈالر کا چلن نہیں ہے ۔ اِس اور دھیان دینے سے کچھ ہی دن میں یہ نتیجہ نکلے گا کہ گاؤں گاؤں میں ریڈیو سنئے دکھائی دینے لگیں گے اور قصبوں اور شہروں میں تو اُن کی بھرمار ہو جائے گی ۔ اُن کے لیسنس کی آمدنی اِتنی کافی ہو سکتی ہے کہ جس کی مدد سے "استھانی بھیجئے پڑاؤ" یعنی لوکل ٹرانسمیٹنگ اسٹیشن بہت زیادہ طاقتور بنائے جا سکتے ہیں۔

हम भी यही समझते हैं कि रेलये को प्लेट फार्म टिकट का पैसा लेने का कोई हक़ नही होना चाहिए. इन्तज़ाम के सुभीते के लिए वह ज़्यादा से ज़्यादा उतने दाम ले सकती है ज तन, उन टिकटो की लागत पर खर्च हो. लेकिन अगर किसी वजह से रेलवे उन टिकटो की लागत पर एक आने से ज़्यादा खर्च कर दे तब भी उसको एक आने से ज़्यादा दाम हरगिज़ नहीं लेना चाहिए. ज़्यादा लगी हुई रक़म को प्रचार खाते मे डाल देना चहिए.

प्लेट फार्म टिकटो के दाम बढ़ाये जाना न अच्छे बनियापने का ही सबूत है और न सरकारी दूरन्देशी का.

हमे उम्मीद है कि ज़िम्मेदार आदमी इस ओर ध्यान देंगे और जल्दी ही प्लेट फार्म टिकटो का दाम एक पैसा या ज़्यादा से ज़्यादा दो पैसा कर देंगे.

—भगवानदीन

धुन बिखराव यानी ब्राड कास्टिंग

धुन बिखराव दिनो दिन बढ़ता जाय यह हमे कुछ ज़्यादा पसन्द नहीं है . पर सरकार की हैसियत मे जाकर हमे बहुत सी अपनी पसन्दो को कुचल डालना ही चाहिये . और जन पसन्दो को ध्यान मे रख कर ही हुकूमत का काम करना चाहिये जिस तरह बाढ़ को रोकना असम्भव होता है पर उसके नुकसानो से बचना ज़रूरी होता है और उनसे बचने की कोई न कोई तरकीब भी निकाली जाती है उसी तरह इस धुन बिखराव यानी ब्राडकास्टिंग की बाढ़ से बचना असम्भव है . हां, इस के कुछ नुकसानो से बचना ज़रूरी है . जिस तरह नदी मे आई बाढ़ से नहरें तैयार रख कर उसके

ہم بھی یہی سمجھتے ہیں کہ ریلوے کو پلیٹ فارم ٹکٹ کا پیسہ لینے کا کوئی حق نہیں ہونا چاہئیے . انتظام کے سبھیتے کے لئے وہ زیادہ سے زیادہ اُتنے دام لے سکتی ہے جتنا اُن ٹکٹوں کی لاگت پر خرچ ہو . لیکن اگر کسی وجہ سے ریلوے اُن ٹکٹوں کی لاگت پر ایک آنے سے زیادہ خرچ کردے تب بھی اُس کو ایک آنہ سے زیادہ دام ہرگز نہیں لینا چاہئیے . زیادہ لگی ہوئی رقم کو پرچار کھاتے میں ڈال دینا چاہئیے .

پلیٹ فارم ٹکٹوں کے دام بڑھائے جانا نہ اچھے بنیا پنے کا ہی ثبوت ہے اور نہ سرکاری دور اندیشی کا .

ہمیں اُمید ہے کہ ذمہ دار آدمی اِس اُور دھیان دیں گے اور جلد ہی پلیٹ فارم ٹکٹوں کا دام ایک پیسہ یا زیادہ سے زیادہ دو پیسہ کو دینگے .

— بھگوان دین

دھن بکھراو یعنی براڈ کاسٹنگ

دھن بکھراو دن دن بڑھتا جائے یہ ہمیں کچھ زیادہ پسند نہیں ہے . پر سرکار کی حیثیت میں جا کر ہمیں بہت سی اپنی پسندوں کو کچل ڈالنا ہی چاہئیے ' اور جن پسندوں کو دھیان میں رکھکر ہی حکومت کا کام کرنا چاہئیے . جس طرح باڑھ کا روکنا اسمبھو ہوتا ہے پر اُس کے نقصانوں سے بچنا ضروری ہوتا ہے اور اُن سے بچنے کی کوئی نہ کوئی ترکیب بھی نکالی جاتی ہے اُسی طرح اِس دھن بکھراو یعنی براڈ کاسٹنگ کی باڑھ سے بچنا اسمبھو ہے ہاں ' اِس کے نقصانوں سے بچنا ضروری ہے . جس طرح ندی میں آئی باڑھ سے نہریں تیار رکھ کر اُس کے

शोहरत के मशहूर जनरल अपारी ने भी नागपुर के स्टेशन पर प्लेटफार्म टिकट-सत्याग्रह किया था और स्टेशन मास्टर के यह पूछने पर कि अपारी साहब, आप ही बताइये कि अगर रेलवे कम्पनी प्लेटफार्म टिकट का इन्तजाम न रखे तो बेटिकट वालो की जांच पड़ताल किस तरह कर सके? के जवाब मे जनरल अपारी का यह कहना था कि खद्दर के कपड़े से ज्यादा अच्छा प्लेट-फार्म टिकट और क्या हो सकता है? और इसमे शक नही कि उन दिनो खद्दर पहनने वाले बहुत ज्यादा ऐसे थे जो अपने मतलब के लिए कभी झूट बोलना पसन्द नही करते थे. आखिर अपारी जी के साथ यही हुआ कि उनसे कुछ लिए बगैर उन्हे जाने दिया गया और नागपुर के स्टेशन के अमले ने सब खद्दरधारियो के साथ तो नही जनरल अपारी के साथ यह बर्ताव करना शुरू कर दिया कि वह कभी उनसे टिकट नही मांगता था. जनरल अपारी बेहद सच्चे आदमी हैं. उन्होने कभी इस रिआयत का गलत फायदा नहीं उठाया. इसी सिलसिले मे यहाँ उनके चरित्र के बारे में इतना और कह देना चाहते है कि अगर वह तीसरे दर्जे का टिकट लेकर सफर कर रहे हो और तीसरे दर्जे मामूली से ज्यादा भरे हुए हो तो वह बिना झिझक उसी तीसरे दर्जे के टिकट से सेकण्ड क्लास में बैठ जाते हैं और चोरी छिपे नही, खुले दिल से बैठते है रेल के अमले के उतारे उतरते भी नही और किराया भी नहीं देते. यह उनका अपने ढंग का अलग सत्याग्रह है. इस खयाल से हमारे बहुत से पढ़ने वाले सहमत भी हो सकते हैं और असहमत भी.

شهرت کے مشهور جنرل اپاری نے بهی ناگ‌پور کے استیشن پر پلیت فارم تکت ستیا گره کیا تها اور استیشن ماستر کے یه پوچهنے پر که اپاری صاحب ، آپ هی بتائیے که اگر ریلوے کمپنی پلیت فارم تکت کا انتظام نه رکهے تو بے تکت والوں کی جانچ پڑتال کس طرح کر سکے ؟ کے جواب میں جنرل اپاری کا یه کهنا تها که کهدر کے کپڑے سے زیاده اچها پلیت فارم تکت اور کیا هو سکتا هے ؟ اور اِس میں شک نهیں که اُن دنوں کهدر پهننے والے بهت زیاده ایسے تهے جو اپنے مطلب کیلئے کبهی جهوت بولنا پسند نهیں کرتے تهے . آخر اپاری جی کے ساته یهی هوا که اُن سے کچه لئے بغیر اُنهیں جانے دیا گیا اور ناگ پور کے استیشن کے عملے نے سب کهدر دهاریوں کے ساته تو نهیں ، جنرل اپاری کے ساته یه برتاؤ کرنا شروع کر دیا که وه کبهی اُن سے تکت نهیں مانگتا تها . جنرل اپاری بے حد سچے آدمی هیں . اُنهوں نے کبهی اِس رعایت کا غلط فائده نهیں اُتهایا . اِسی سلسلے میں یهاں اُن کے چرتر کے بارے میں اتنا اور کهه دینا چاهتے هیں که اگر وه تیسرے درجے کا تکت لیکر سفر کر رهے هوں اور تیسرے درجے معمولی سے زیاده بهرے هوئے هوں تو وه بنا جهجهک اُسی تیسرے درجے کے تکت سے سکنڈ کلاس میں بیته جاتے هیں اور چوری چهپے نهیں ، کهلے دل سے بیتهتے هیں . ریل کے عملے کے اُتارے اُترتے بهی نهیں اور کرایه بهی نهیں دیتے . یه اُن کا اپنے ڈهنگ کا الگ ستیا گره هے . اِس خیال سے همارے بهت سے پڑهنے والے سهمت بهی هو سکتے هیں اور اسهمت بهی .

कि मोती सागर जी सत्याग्रह कर बैठे. वह देहली के स्टेशन पर प्लेटफार्म टिकट लिए बिना गये और वापस आने पर टिकट कलेक्टर से रोके गये. सत्याग्रही के नाते उन्होंने सच सच बात कह दी. मोती सागर जी देहली के मशहूर वकीलों में थे और स्टेशन का क़रीब क़रीब सारा अमला उनको अच्छी तरह से जानता और पहचानता था. टिकट कलेक्टर भी उनको अच्छी तरह पहचानता था. उसने उनसे कोई किराया या जुर्माना लिए बग़ैर चले जाने की इजाज़त दे दी. इसपर मोती सागर जी ने उस टिकट कलेक्टर से पूछा कि क्या वह उनको रेल के कायदों के अनुसार बाहर जाने दे रहा है, या जान पहचान का सूद चुकाने की वजह से कोई रिआयत दिखा रहा है. टिकट कलेक्टर ने जवाब में कहा कि वह कर तो रिआयत ही रहा है. कायदे से तो उसको किराया और जुर्माना दोनों ही लेने चाहिए. मोती सागर जी ने जवाब में कहा, "मैं रिआयत नहीं चाहता. मुझसे किराया और जुर्माना दोनों वसूल कीजिए और रसीद दीजिये.' टिकट कलेक्टर ने फ़ौरन किराया और जुर्माना लेकर रसीद काट दी.

मोती सागर जी ने अदालत का दरवाज़ा खटखटाया और रेलवे कम्पनी के एड़ी चोटी के ज़ोर लगाने पर भी देहली की अदालत से मोती सागर जी के हक़ में फ़ैसला हुआ. हाँ, यह ठीक है कि वह लाहौर की हाई कोर्ट से मुकदमा हार गये और उसकी वजह जो थी उसकी तह में न जाना ही ठीक है

हमारे पढ़ने वाले यहाँ यह और सुन रखें कि तलवार सत्याग्रह

که موتی ساگر جی ستیا گره کر بیٹھے وه دهلی کے اسٹیشن پر پلیٹ فارم ٹکٹ لئے بغا گئے اور واپس آنے پر ٹکٹ کلکٹر سے روکے گئے ستیا گرهی کے ناتے اُنهوں نے سچ سچ بات کهه دی. موتی ساگر جی دهلی کے مشهور وکیلوں میں تهے اور اسٹیشن کا قریب قریب سارا عمله اُن کو اچهی طرح سے جانتا اور پهچانتا تها ٹکٹ کلکٹر بهی اُن کو اچهی طرح پهچانتا تها . اُس نے اُن کو کوئی کرایه یا جرمانه لئے بغیر چلے جانے کی اجازت دے دی اِس پر موتی ساگر جی نے اُس ٹکٹ کلکٹر سے پوچها که کیا وه اُن کو ریل کے قاعدوں کے انوسار باهر جانے دے رها هے ' یا جان پهچان کا سود چکانے کی وجه سے کوئی رعائت دکها رها هے . ٹکٹ کلکٹر نے جواب میں کها که وه کر تو رعائت هی رها هے قاعدے سے تو اُس کو کرایه اور جرمانه دونوں هی لینے چاهئے موتی ساگر جی نے جواب میں کها : "میں رعائت نهیں چاهتا مجه سے کرایه اور جرمانه دونوں وصول کیجئے اور رسید دیجئے ٹکٹ کلکٹر نے فوراً کرایه اور جرمانه لیکر رسید کاٹ دی .

موتی ساگر جی نے عدالت کا دروازه کهٹکهٹایا اور ریلوے کمپنی کے ایڑی چوٹی کے زور لگانے پر بهی دهلی کی عدالت سے موتی ساگر جی کے حق میں فیصله هوا . هاں' یه ٹهیک هے که وه لاهور کی هائیکورٹ سے مقدمه هار گئے اور اُس کی وجه جو تهی اس کی تهه میں نه جانا هی ٹهیک هے .

همارے پڑهنے والے یهاں یه اور سن رکهیں که تلوار ستیا گره

हमारी राय

<u>प्लेटफार्म टिकट</u>

प्लेटफार्म टिकट का रिवाज क्यों चला, कब से चला इसके। इतिहास में न जाकर हम इससे संबंध रखती हुई एक सच्ची बात सुना देना ज़रूरी समझते हैं.

बीस पचीस बरस पहले जब यहाँ विदेशी हुकूमत थी तब एक बार देहली के एक मशहूर वकील (और बाद मे जस्टिस) मोती सागर जी को यह बात सूझी थी कि रेलवे कम्पनी को प्लेट-फार्म टिकट लगाने का कोई अधिकार नहीं होना चाहिए. अपनी सूझी हुई बात उनको इतनी ठीक जंची कि वह प्लेटफार्म टिकट के दाम लेने के काम को रेलवे कम्पनी का जुल्म समझने लगे. अब दिल में तड़प होनी क़ुदरती थी. और तड़प रंग लाये बगैर कैसे रह सकती थी. वह न गांधी भक्त थे और न गांधी अभक्त. और फिर सत्याग्रह (यानी अत्याचार के खिलाफ सच्ची नियत से डट कर खड़े हो जाना) किसी एक आदमी की बपौती नहीं. फिर वह चाहे कितना ही बड़ा सन्त या महन्त क्यों न हो. सत्याग्रह तो एक ईश्वरी शक्ति है और वह उतनी हद तक हर एक में जागती रहती है जितनी हद तक उसमें सचाई जागी हुई है. और उतनी ही हद तक वह अपना चमत्कार दिखाती रहती है जितनी हद तक उस आदमी में हिम्मत जागी हुई होती है. बस, फिर यही नतीजा हुआ

ہماری رائے

پلیٹ فارم ٹکٹ

پلیٹ فارم ٹکٹ کا رواج کیوں چلا، کب سے چلا اسکے اِتہاس میں نہ جاکر ہم اِس سے سمبندھ رکھتی ہوئی ایک سچی بات سنا دینا ضروری سمجھتے ہیں۔

بیس پچیس برس پہلے جب یہاں بدیشی حکومت تھی تب ایک بار دھلی کے ایک مشہور وکیل (اور بعد میں جسٹس) موتی ساگر جی کو یہ بات سوجھی کہ ریلوے کمپنی کو پلیٹ فارم ٹکٹ لگانے کا کوئی ادھیکار نہیں ہونا چاہئے۔ اپنی سوجھی ہوئی بات اُن کو اتنی ٹھیک جنچی کہ وہ پلیٹ فارم ٹکٹ کے دام لینے کے کام کو ریلوے کمپنی کا ظلم سمجھنے لگے۔ اب دل میں تڑپ ہونی قدرتی تھی اور تڑپ رنگ لائے بغیر کیسے رہ سکتی تھی۔ وہ نہ گاندھی بھگت تھے اور نہ گاندھی ابھگت۔ اور پھر ستیہ گرہ (یعنی اتیا چار کے خلاف سچی نیت سے تن کر کھڑے ہو جانا) کسی ایک آدمی کی بپوتی نہیں۔ پھر وہ چاہے کتنا ہی بڑا سنت یا مہنت کیوں نہو۔ ستیہ گرہ تو ایک ایشوری شکتی ہے اور وہ اتنی ہی حد تک ہر ایک میں جاگتی رہتی ہے ' جتنی حد تک اسمیں سچائی جاگی ہوئی ہے۔ اور اتنی ہی حد تک وہ اپنا چمتکار دکھاتی رہتی ہے جتنی حد تک اس آدمی میں ہمت جاگی ہوئی ہوتی ہے۔ بس' پھر یہی نتیجہ ہوا

की बातें और पंडित नेहरू की तारीफ़ें की हैं पर उनकी निगाहें शान्ति पर नहीं बल्कि आने वाली लड़ाई पर लगी हैं. और जब तक इस लड़ाई के बादल नहीं छँटते या हिन्दुस्तान से पच्छिमी राष्ट्रों की कोई ग़रज़ नहीं अटकती उस समय तक कश्मीर के मामले में उनसे इन्साफ़ की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती.

हिन्द के विधान

की

अंगरेज़ी हिन्दुस्तानी शब्दावली

(अंगरेज़ी नागरी लिखावट में)

जिसमें

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ ख़ास ख़ास अंगरेज़ी शब्द के लिए आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवान दीन और कुछ दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं.

शुरू में 'दो शब्द' लिखे हैं—काका कालेलकर, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, श्री मो० सत्यनारायण और पंडित सुन्दर लाल ने.

निकाली है—हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा ने.

क़ीमत दो रुपै.

मिलने का पता—मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

کی باتیں اور پنڈت نہرو کی تعریفیں کی ہیں مگر ان کی نگاہیں شانتی پر نہیں بلکہ آنے والی لڑائی پر لگی ہیں اور جب تک اس لڑائی کے بادل نہیں چھنٹتے یا ہندستان سے پچھمی راشٹروں کی کوئی بڑی غرض نہیں اٹکتی اس سمے تک کشمیر کے معاملے میں ان سے انصاف کی کوئی امید نہیں کی جا سکتی۔

ہند کے ودھان

کی

انگریزی ہندستانی شبداولی

(انگریزی ناگری لکھاوٹ میں)

جس میں ہند کا جو نیا ودھان پاس ہوا ہے اس کے لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزی شبدوں کے لئے آسان ہندستانی شبد مہاتما بھگوان دین اور کچھ دوسرے ودوانوں نے سجھائے ہیں۔

شروع میں 'دو شبد' لکھے ہیں—کاکا کالیلکر، شریمتی رامیشوری نہرو، شری م. ستیہ نارائن اور پنڈت سندر لال نے۔

نکالی ہے—ہندستانی پرچار سبھا وردھا نے۔

قیمت ۲ روپے

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

पच्छिमी राष्ट्रों को झगड़ा चुकाने की उतनी चिन्ता नहीं है जितनी कि अपना उल्लू सीधा करने की. कश्मीर की सरहद चीन और रूस से मिलती है और यहाँ लड़ाई के बड़े अच्छे अड्डे बन सकते हैं. इसीलिए वह उसे किसी ऐसे देश के साथ नहीं रहने देना चाहते जो पूरी तरह और पहले से उनका साथी न बन जाय. हिन्दुस्तान कामनवेल्थ में रहते हुए भी रिपब्लिक बन चुका है. इन्डोनेशिया की आज़ादी के लिये लड़ने, उत्तरी अफ्रीक़ा के मुस्लिम देशों की आज़ादी के लिए आवाज़ उठाने, हिन्द चीन में बावडाई की कठपुतली सरकार को न मानने, पैसिफ़िक सागर की जथाबन्दी से अलग रहने और अपनी विदेशी नीति को पूरी तरह आज़ाद रखने के कारन इस तराज़ू में पूरा नहीं उतरता और इसीलिए उसकी बात सच्ची होने पर भी अमरीका और बरतानिया के गले से नहीं उतरती. इन दोनो ने नार्वे और क्यूबा के साथ पिछले महीने के आख़ीर में सुरक्षा कौंसिल के सामने जो प्रस्ताव रखा है उससे मालूम होता है कि वह झगड़े की जड़ तक जाना नहीं चाहते बल्कि उसकी डाल पर अपना घोंसला बना लेना चाहते हैं. इस राह में एक रुकावट यह थी कि कश्मीर कमीशन में चेकोसलावेकिया का नुमाइन्दा शामिल था और अगर कोई दूसरा कमीशन बनता तो उसमें भी रूस का कोई न कोई आदमी आ जाता. इसीलिए प्रस्ताव में कहा गया है कि कमीशन का काम एक आदमी के सुपुर्द कर दिया जाय. यह आदमी पच्छिमी राष्ट्रों की पसन्द का होगा और जैसा वह चाहेंगे वैसा ही करेगा. इन राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने दिखावे के लिए शान्ति

پچھمی راشٹروں کو جھگڑا چکانے کی اتنی چنتا نہیں ہے جتنی کہ اپنا الو سیدھا کرنے کی. کشمیر کی سرحد چین اور روس سے ملی ہے اور یہاں لڑائی کے اچھے اڈے بن سکتے ہیں. اسی لئے وہ اسے کسی ایسے دیش کے ساتھ نہیں رہنے دینا چاہتے جو پوری طرح اور پہلے سے ان کا ساتھی نہ بن جائے. ہندستان کامن ویلتھ میں رہتے ہوئے بھی ری پبلک بن چکا انڈونیشا کی آزادی کے لئے لڑنے' اتری افریقہ کے مسلم دیشوں کی آزادی کے لئے آواز اٹھانے' ہند چین میں باؤ ڈائی کی کٹھ پتلی سرکار کو نہ ماننے' پیسفک ساگر کی جتھہ بندی سے الگ رہنے اور اپنی ودیشی نیتی کو پوری طرح آزاد رکھنے کے کارن اس ترازو میں پورا نہیں اترتا اور اسی لئے اس کی بات سچی ہونے پر بھی امریکہ اور برطانیہ کے گلے سے نہیں اترتی. ان دونوں نے ناروے اور کیوبا کے ساتھ پچھلے مہینے کے آخر میں سرکشا کونسل کے سامنے جو پرستاؤ رکھا ہے اس سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ جھگڑے کی جڑ تک جانا نہیں چاہتے بلکہ اس کی ڈال پر اپنا گھونسلا بنا لینا چاہتے ہیں. اس راہ میں ایک رکاوٹ یہ تھی کہ کشمیر کمیشن میں زیکوسلاویکیہ کا نمائندہ شامل تھا اور اگر کوئی دوسرا کمیشن بنتا تو اس میں بھی روس یا اس کے گروہ کا کوئی نہ کوئی آدمی آ جاتا اسی لئے پرستاؤ میں کہا گیا ہے کہ کمیشن کا کام ایک آدمی کے سپرد کر دیا جائے. یہ آدمی پچھمی راشٹروں کی پسند کا ہوگا اور جیسا وہ چاہیں گے ویسا ہی کرے گا. ان راشٹروں کے پرتی ندھیوں نے دکھاوے کے لئے شانتی

होने के कारन अमरीका अगर उसका समर्थन नहीं करेगा तो उसका विरोध भी नहीं करेगा. वह यह भी देखते हैं कि रूस के खिलाफ मोर्चाबन्दी में अमरीका को उनकी मदद की ज़रूरत है और उनको उम्मीद है कि जब इस मोर्चाबन्दी के लिए अमरीका स्पेन में फ्रांको की फांशिस्ट सरकार से, जिसे यू. एन. ओ. से, बाहर रखा गया है, मेल जोल बढ़ाने की बातें कर रहा है तो वह जर्मनी मे नाज़ीवाद के नये जनम से भी अधिक नाराज़ नहीं होगा.

कश्मीर का झगड़ा

बड़े राष्ट्रों के आपसी झगड़ों के कारन छोटे राष्ट्रों के झगड़े भी चुकने को नहीं आते. इसकी सबसे बड़ी मिसाल कश्मीर का झगड़ा है और इस सिलसिले मे पिछले महीने की सब से अहम घटना यू. एन. ओ. की सुरक्षा कौंसिल की बहस नहीं बल्कि हिन्दुस्तान के प्रधान मन्त्री का वह बयान है जिसमे उन्होंने कहा है कि हिन्दुस्तान के खिलाफ़ बाहर के देशों मे प्रोपैगन्डा किया जा रहा है और हमारे ऊपर कश्मीर के मामले मे दबाव डालने की कोशिश की जा रही है उन्होंने इस दबाव का कोई हाल नहीं बताया और अमरीका के घूमते हुए राजदूत फ़िल्प जेसप ने कहा है कि उनके देश पर यह दोष नहीं लगाया जा सकता. फिर भी सुरक्षा कौंसिल ने जिस तरह हिन्दुस्तान की असल शिकायत यानी कश्मीर पर हमले मे पाकिस्तान के हाथ को टाला है और पाकिस्तान और आज़ाद कश्मीर फ़ौज को जिस तरह हिन्दुस्तानी और रियासती फ़ौज के बराबर का दर्जा दे दिया है उससे पता चलता है कि कौंसिल मे बहुमत रखने वाले

ہونے کے کارن امریکہ اگر اس کا سمرتھن نہیں کرے گا تو اس کا ورودھ بھی نہیں کرے گا. وہ یہ بھی دیکھتے ہیں کہ روس کے خلاف مورچہ بندی میں امریکہ کو اُن کی مدد کی ضرورت ہے اور ان کو اُمید ہے کہ جب اِس مورچہ بندی کے لئے امریکہ اسپین میں فرینکو کی فاشسٹ سرکار سے، جسے یو. این. او. سے باہر رکھا گیا ہے، میل جول بڑھانے کی باتیں کر رہا ہے تو وہ جرمنی میں نازی واد کے نئے جنم سے بھی ادھک ناراض نہیں ہوگا.

کشمیر کا جھگڑا

بڑے راشٹروں کے آپسی جھگڑوں کے کارن چھوٹے راشٹروں کے جھگڑے بھی چکنے کو نہیں آتے. اس کی سب سے بڑی مثال کشمیر کا جھگڑا ہے اور اس سلسلہ میں پچھلے مہینے کی سب سے اہم گھٹنا یو. این. او. کی سرکشا کونسل کی بحث نہیں بلکہ ہندستان کے پردھان منتری کا وہ بیان ہے جس میں انہوں نے کہا ہے کہ ہندستان کے خلاف باہر کے ملکوں میں پروپیگنڈا کیا جا رہا ہے اور ہمارے اوپر کشمیر کے معاملے میں دباؤ ڈالنے کی کوشش کی جارہی ہے. انہوں نے اس دباؤ کا کوئی حال نہیں بتایا اور امریکہ کے گھومتے ہوئے راج دوت فلپ جیسپ نے کہا ہے کہ ان کے دیش پر یہ دوش نہیں لگایا جا سکتا. پھر بھی سرکشا کونسل نے جس طرح ہندستان کی اصل شکایت یعنی کشمیر پر حملے میں پاکستان کے ہاتھ کو ٹالا ہے اور پاکستان اور آزاد کشمیر فوج کو جس طرح ہندستانی اور ریاستی فوج کے برابر کا درجہ دیدیا ہے اس سے پتہ چلتا ہے کہ کونسل میں بہومت رکھنے والے

से दबने वाला नहीं है. ख़ासकर ऐसी हालत में कि जब चीन जैसा बड़ा देश उसके साथ आ गया है, दक्खिनी पूरबी एशिया के देशों में आर्थिक संकट ने कम्युनिज्म के लिए मैदान तैयार कर दिया है और हर जगह की जनता पच्छिमी राष्ट्रों की साम्राजी चालो के कारन उनके ख़िलाफ़ हो गई है. रूस की नीति अमरीका की नीति से अलग है. उसका वार बाहर से नही बल्कि अन्दर से होता है. वह हथियारो से नहीं बल्कि हालात से फ़ायदा उठाता है उसकी इस कारवाई को हथियारों के ज़रिये रोका नहीं जा सकता और इसी कारन तीसरी लड़ाई क़रीब आजाने पर भी अच्छी ख़ासी दूर है और उसके छिड़ने मे अभी बहुत देर है.

नाज़ीवाद का नवजीवन.

यह दूर और देर और बढ़ाई जा सकती है अगर बड़े राष्ट्र एक दूसरे के क़रीब आने की कोशिश करें. मगर इस तरफ़ कोई ध्यान नही देता और इसी कारन पुराने झगड़े चुकने के बजाय पुराने फ़ितने जाग रहे हैं, जैसा कि जर्मन पार्लिमेन्ट मे 'हिटलर ज़िन्दाबाद' के नारो से ज़ाहिर होता है. यह नारे एक ऐसी संस्था के स्वागत में लगाये गये हैं जो नाज़ी पार्टी से बहुत कुछ मिलती जुलती है और हालाँ कि पच्छिमी जर्मनी के अमरीकी हाई कमिश्नर ने कहा है कि नाज़ीवाद को किसी तरह उभरने नहीं दिया जायगा लेकिन नाज़ी विचार वाले जर्मन अमरीका और रूस की तनातनी से फ़ायदा उठा रहे हैं. वह जानते हैं कि जर्मनों का जो इलाक़ा लड़ाई के बाद पोलैन्ड को दे दिया गया था उसकी वापसी की मांग रूसी गरोह के ख़िलाफ़

سے دبنے والا نہیں ہے۔ خاص کر ایسی حالت میں کہ جب چین جیسا بڑا دیش اس کے ساتھ آگیا ہے' دکھنی پوربی ایشیا کے دیشوں میں آرتھک سنکٹ نے کمیونزم کے لئے میدان تیار کر دیا ہے اور ہر جگہ کی جنتا پچھمی راشٹروں کی سامراجی چالوں کے کارن ان کے خلاف ہو گئی ہے۔ روس کی نیتی امریکہ کی نیتی سے الگ ہے۔ اسکا وار باہر سے نہیں بلکہ اندر سے ہوتا ہے۔ وہ ہتھیاروں سے نہیں بلکہ حالات سے فائدہ اٹھاتا ہے اس کی اس کارروائی کو ہتھیاروں کے ذریعہ روکا نہیں جا سکتا اور اسی کارن تیسری بڑی لڑائی قریب آجانے پر بھی اچھی خاصی دور ہے اور اس کے چھڑنے میں ابھی بہت دیر ہے۔

نازی واد کا نو جیون

یہ دوری اور دیر اور بڑھائی جا سکتی اگر بڑے راشٹر ایک دوسرے کے قریب آنے کی کوشش کریں۔ مگر اس طرف کوئی دھیان نہیں دیتا۔ اور اسی کارن پرانے جھگڑے چکنے کے بجائے پرانے فتنے جاگ رہے ہیں' جیسا کہ جرمن پارلیمنٹ میں 'ہٹلر زندہ باد' کے نعروں سے ظاہر ہوتا ہے۔ یہ نعرے ایک ایسی سنستھا کے سواگت میں لگائے گئے ہیں جو نازی پارٹی سے بہت کچھ ملتی جلتی ہے۔ اور حالانکہ پچھمی جرمنی کے امریکی ہائی کمشنر نے کہا ہے کہ نازی واد کو کسی طرح ابھرنے نہیں دیا جائے گا' لیکن نازی وچار والے جرمن امریکہ اور روس کی تنا تنی سے فائدہ اٹھا رہے ہیں۔ وہ جانتے ہیں کہ جرمنی کا جو علاقہ لڑائی کے بعد پولینڈ کو دیدیا گیا تھا اس کی واپسی کی مانگ روسی گروہ کے خلاف

कमज़ोर है. हो सकता है कि डाक्टर हो को मदद देने के लिए रूस और चीन उनकी सरकार से कोई समझौता करलें और यह भी हो सकता है कि इसके लिए रूस और चीन के समझौते की उस दफ़ा की आड़ ली जाय जिसमें उन दोनों ने साम्राज की रोकथाम करने का एलान किया है. इसलिए कि उनकी राय में बाव की सरकार की स्थापना .फ्रान्स की एक सामृाजी चाल है.

बाव की सरपरस्ती

दूसरी तरफ अमरीका ने बाव की सरकार को मानने के साथ साथ यह भी किया है कि वह हिन्द चीन की तरक़्क़ी को बाहर के इशारों पर उभरने वाले झगड़ो से बचाने की कोशिश करेगा. यह डाक्टर हो और उनके चीनी और रूसी साथियो के लिए एक अगाही है जिससे पता चलता है कि अमरीका हिन्द चीन मे वही नीति अपनायेगा जिसके अनुसार वह चीन मे च्यांगकाई शेक को मदद देता रहा है. लेकिन इस नीति में उसे सफलता की आशा तब ही हो सकती है जब वह बाव की सरकार को अधिक से अधिक आर्थिक और फौजी मदद दे क्योंकि बावडाई में खुद कोई ज्यादा दम नहीं है. और हो ची मॅह के दम का अन्दाज़ा इसी बात से होता है कि उन्होंने पिछले चार बरस की लड़ाई मे फ्रान्स के दांत खट्टे कर दिये हैं. इसके अलावा रूस और चीन की मदद मिल जाने से डाक्टर हो की ताक़त और बढ़ जायगी. यही सोचकर अमरीका पैसिफिक सागर में अपनी फ़ौज बढ़ा रहा है. शायद उसे आशा है कि रूस उसकी शक्ति से डरकर हो की मदद, से हाथ उठा लेगा. लेकिन रूस आसानी

کمزور ہے ۔ ہو سکتا ہے کہ ڈاکٹر ہو کو مدد دینے کے لئے روس اور چین اُن کی سرکار سے کوئی سمجھوتہ کرلیں اور یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اس کے لئے روس اور چین کے سمجھوتے کی اس دفعہ کی آڑ لی جائے جس میں ان دونوں نے سامراج کی روک تھام کرنے کا اعلان کیا ہے ۔ اس لئے کہ اُن کی رائے میں باؤ کی سرکار کی استھاپنا فرانس کی ایک سامراجی چال ہے ۔

باؤ کی سرپرستی

دوسری طرف امریکہ نے باؤ کی سرکار کو ماننے کے ساتھ ساتھ یہ بھی کیا ہے کہ وہ ہند چین کی ترقی کو باہر کے اِشاروں پر اُبھرنے والے جھگڑوں سے بچانے کی کوشش کرے گا ۔ یہ ڈاکٹر ہو اور اُن کے چینی اور روسی ساتھیوں کے لئے ایک آگاہی ہے جس سے پتہ چلتا ہے کہ امریکہ ہند چین میں وہی نیتی اپنائے گا جس کے انوسار وہ چین میں چیانگ کائی شیک کو مدد دیتا رہا ہے ۔ مگر اس نیتی میں اسے سپھلتا کی آشا تب ہی ہو سکتی ہے جب وہ باؤ کی سرکار کو ادھک سے ادھک آرتھک اور فوجی مدد دے کیونکہ باؤ ڈائی میں خود کوئی زیادہ دم نہیں ہے ۔ اور ہو چی منہ کے دم کا اندازہ اسی بات سے ہوتا ہے کہ انہوں نے پچھلے چار برس کی لڑائی میں فرانس کے دانت کھٹے کردئے ہیں اس کے علاوہ روس اور چین کی مدد مل جانے سے ڈاکٹر ہو کی طاقت اور بڑھ جائے گی ۔ یہی سوچ کر امریکہ پیسفک ساگر میں اپنی فوج بڑھا رہا ہے ۔ شاید اسے یہ اُمید ہے کہ روس اس کی شکتی سے ڈر کر ہو کی مدد سے ہاتھ اُٹھا لے گا ۔ لیکن روس آسانی

अगर वह डाक्टर हो की सरकार को माने बिना उनकी सहायता करता तो उसपर दूसरे देश के घरेलू मामलों में दख़ल देने का इलज़ाम लगाया जा सकता था. लेकिन अब वह इस इलज़ाम से बच सकता है और अगर पच्छिमी राष्ट्र यह कहें कि बावडाई की सरकार हिन्द चीन में फ़्रान्सीसी सरकार की सच्ची जानशीन यानी उत्तराधिकारिनी है तो इसके जवाब में वह यह कह सकता है कि बाव को जो आज़ादी दी गई है वह सच्ची नहीं है और हो की जनता की बाव से कहीं अधिक ताईद हासिल है. अपने इस जवाब का ज़ोर बढ़ाने के लिए रूस ने इन्डोनेशी सरकार को (जिसे उसने यू. एन. ओ. में हालैन्ड की कठपुतली कहा था) इन्डोनेशिया का अधिकारी मान लिया है.

हो की मदद

डाक्टर हो की सरकार को मान लेने के लिए रूस और चीन उसे मदद देने में अपने हिसाब से कोई ग़लती नहीं करेंगे और अगर यह ख़बर ठीक है कि हो को मास्को बुलाया गया है तो शायद वहां इस मदद का नक़्शा तैयार हो जायेगा. हिन्द चीन की सरहद चीन से और चीन की सरहद रूस से मिली होने के कारन डाक्टर हो की सरकार को चीन और रूस की मदद उतनी ही आसानी से मिल सकेगी जितनी आसानी से यूनानी सरकार के कम्युनिस्ट बाग़ियों को हंगरी, रूमानिया और बलग़ारिया से मिलती थी. और यह मदद यूनानी कम्युनिस्टों को मिलने वाली मदद से अधिक कारगर होगी. इसलिए कि बाव की सरकार यूनानी सरकार की बनिस्बत बहुत ही

اگر وہ ڈاکٹر ہو کی سرکار کو مانے بنا اُن کی سہایتا کرتا تو اسپر دوسرے دیش کے گھریلو معاملوں میں دخل دینے کا الزام لگایا جا سکتا تھا لیکن اب وہ اس الزام سے بچ سکتا ہے اور اگر پچھمی راشٹر یہ کہیں کہ باؤ ڈائی کی سرکار ہند چین میں فرانسیسی سرکار کی سچی جانشین یعنی اُترادھیکارنی ہے تو اس کے جواب میں وہ یہ کہہ سکتا ہے کہ باؤ کو جو آزادی دی گئی ہے وہ سچی نہیں ہے اور ہو کو جنتا کی باؤ سے کہیں ادھک تائید حاصل ہے. اپنے اِس جواب کا زور بڑھانے کے لئے روس نے انڈونیشی سرکار کو (جسے اس نے یو. این. او. میں ہالینڈ کی کٹھ پتلی کہا تھا) انڈونیشیا کا ادھیکاری مان لیا ہے.

ہو کی مدد

ڈاکٹر ہو کی سرکار کو مان لینے کے لئے روس اور چین اسے مدد دینے میں اپنے حساب سے کوئی غلطی نہیں کرینگے اور اگر یہ خبر ٹھیک ہے کہ ہو کو ماسکو بلایا گیا ہے تو شاید وہاں اس مدد کا نقشہ تیار ہوجائے گا. ہند چین کی سرحد چین سے اور چین کی سرحد روس سے ملی ہونے کے کارن ڈاکٹر ہو کی سرکار کو چین اور روس کی مدد اتنی ہی آسانی سے مل سکے گی جتنی آسانی سے یونانی سرکار کے کمیونسٹ باغیوں کو ہنگری، رومانیہ اور بلغاریہ سے ملتی تھی. اور یہ مدد یونانی کمیونسٹوں کو ملنے والی مدد سے ادھک کارگر ہوگی. اس لئے کہ باؤ ڈائی سرکار یونانی سرکار کی بہ نسبت بہت ہی

यह दोनों कारवाइयाँ लागडाट पर हुई हैं. चीन और रूस ने यह देखकर कि बरतानिया और अमरीका हिन्द-चीन मे, जिसकी सरहद चीन से मिली हुई है, अपने मतलब की सरकार क़ायम करके उनके मुक़ाबले पर एक मोर्चा बनाने वाले हैं, हो चो मॅह की सरकार को मान लिया और बरतानिया और अमरीका ने यह सोचकर कि अगर हो चो मॅह का आन्दोलन सफल हो गया तो कम्युनिज़्म के नाते रूस का असर एक मंजिल और आगे बढ़ आयगा, बावडाई की मदद करने का फ़ैसला कर लिया. इस मामले में उनकी नीति उससे बहुत कुछ हटी हुई है जो इन्डोनेशिया के बारे मे थी. वहाँ हालैन्ड ने जिन नेताओ से बातचीत की थी, उनको जनता का विश्वास प्राप्त था और जो समझौता हुआ था उसकी बुनियाद सच्ची आज़ादी पर थी लेकिन हिन्द चीन और फ़्रान्स के समझौते मे आज़ादी सिर्फ नाम की है और बावडाई की हैसियत एक पुराने पापी की है. फ़्रान्स की कठपुतली होने के कारन, उनको न तो पहले हिन्द चीनी जनता को ताईद हासिल थी और न आज हासिल है रूस ने भी यूनान की कम्युनिस्ट विरोधी सरकार को आख़ीर तक नही माना और चीन की कम्युनिस्ट सरकार को उस वक्त माना जब क़रीब क़रीब पूरे देश पर उसका अधिकार हो गया. जबकि डाक्टर हो ची मॅह की सरकार को उसने बहुत जल्दी मान लिया. शायद उसे यह डर था कि अगर उसने देर लगाई तो फ़्रान्स, बरतानिया और अमरीका बावडाई की सरकार को हिन्द चीनी जनता के सर मंढ़ देंगे और फिर उसको राजसिंहासन से हटाना बहुत कठिन होगा।

یہ دونوں کاروائیاں لاگ ڈاٹ پر ہوئی ہیں. چین اور روس نے یہ دیکھ کر کہ برطانیہ اور امریکہ ہند چین میں، جس کی سرحد چین سے ملی ہوئی ہے، اپنے مطلب کی سرکار قائم کرکے ان کے مقابلے پر ایک مورچہ بنانے والے ہیں، ہوچی منہ کی سرکار کو مان لیا اور برطانیہ اور امریکہ نے یہ سوچ کر کہ اگر ہو چی منہ کا اندولن سپھل ہو گیا تو کمیونزم کے ناتے روس کا اثر ایک منزل اور آگے بڑھ آئے گا، باؤ ڈائی کی مدد کرنے کا فیصلہ کرلیا. اس معاملے میں ان کی نیتی اس سے بہت کچھ ہٹی ہوئی ہے جو انڈونیشیا کے بارے میں تھی. وہاں ہالینڈ نے جن نیتاؤں سے بات چیت کی تھی، ان کو جنتا کا وشواس پراپت تھا اور جو سمجھوتہ ہوا تھا اس کی بنیاد سچی آزادی پر تھی لیکن ہند چین اور فرانس کے سمجھوتے میں آزادی صرف نام کی ہے اور باؤ ڈائی کی حیثیت ایک پرانے پاپی کی ہے. فرانس کی کٹھ پتلی ہونے کے کارن ان کو نہ تو پہلے ہند چینی جنتا کی تائید حاصل تھی اور نہ آج حاصل ہے. روس نے بھی یونان کی کمیونسٹ ورودھی سرکار کو آخر تک نہیں مانا اور چین کی کمیونسٹ سرکار کو اس وقت مانا جب قریب قریب پورے دیش پر اسکا ادھیکار ہوگیا جب کہ ڈاکٹر ہوچی منہ کی سرکار کو اس نے بہت جلدی مان لیا. شاید اسے یہ ڈر تھا کہ اگر اس نے دیر لگائی تو فرانس، برطانیہ اور امریکہ باؤ ڈائی کی سرکار کو ہند چینی جنتا کے سر منڈھ دیں گے. اور پھر اس کو راج سنگھاسن سے ہٹانا بہت کٹھن ہوگا.

अलावा उन दूसरे देशों के प्रतिनिधि भी शरीक न हों जो बातचीत वाले सवालों से सम्बन्ध रखते हैं. इस बारे में अमरीका के प्रधान और विदेश मन्त्री ने एक और बात यह कही है कि वह रूस के साथ किसी दबाव के होते हुए समझौते की कोई बातचीत नहीं करेंगे. लेकिन उन्होंने खुद "ताक़तवर हालात" पैदा करने का जो एलान किया है वह भी एक तरह का दबाव है और इसलिए सम्भावना की तराज़ू में टक्कर का पल्ला समझौते के पल्ले से भारी है

हिन्द चीन में लागडाट.

यह टक्कर कब कहां और कैसे होगा इसके बारे में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता, फिर भी पिछले महीने एक ऐसा मामला उठ खड़ा हुआ है जो रूस और अमरीका के बीच टक्कर का कारन बन सकता है. यह मामला हिन्द चीन का है. वहाँ की जनता फ्रान्स के साम्राजी चंगुल से आजादी हासिल करने के लिए पिछले चार बरस से लड़ रही है. इस लड़ाई के सरदार डाक्टर होचीमिंह हैं. जब फ्रान्स अपनी फ़ौजों के ज़रिये उनके आन्दोलन को खतम नहीं कर सका तो उसने वहाँ पिछले शहन्शाह बावडाई को होचीमिंह के मुक़ाबिले पर लाकर खड़ा कर दिया और बावडाई से एक समझौता कर लिया. इस समझौते को आज़ादी का समझौता कहा जाता है और इसी के आधार पर बरतानिया और अमरीका और उनके कुछ साथियों ने बावडाई की सरकार को हिन्द चीन का अधिकारी मान लिया है. दूसरी तरफ़ चीन, रूस और उसके कुछ साथियों ने होचीमिंह की सरकार को स्वीकार कर लिया है.

علاوہ اُن دوسرے دیشوں کے پرتی ندھی بھی شریک نہ ہوں جو بات چیت والے سوالوں سے سمبندھ رکھتے ہیں ۔ اس بارے میں امریکہ کے پردھان اور ودیش منتری نے ایک اور بات یہ کہی ہے کہ وہ روس کے ساتھ کسی دباؤ کے ہوتے ہوئے سمجھوتے کی کوئی بات چیت نہیں کریں گے ۔ لیکن انہوں نے خود '' طاقتور حالات '' پیدا کرنے کا اعلان کیا ہے وہ بھی ایک طرح کا دباؤ ہے اور اس لئے سمبھاونا کی ترازو میں ٹکر کا پلا سمجھوتے کے پلے سے بھاری ہے ۔

ہند چین میں لاگ ڈانٹ

یہ ٹکر کب ' کہاں اور کیسی ہوگی اس کے بارے میں ابھی کچھ نہیں کہا جا سکتا پھر بھی پچھلے مہینے ایک ایسا معاملہ اٹھ کھڑا ہوا ہے جو روس اور امریکہ کے بیچ ٹکر کا کارن بن سکتا ہے ۔ یہ معاملہ ہند چین کا ہے ۔ وہاں کی جنتا فرانس کے سامراجی چنگل سے آزادی حاصل کرنے کے لئے پچھلے چار برس سے لڑ رہی ہے ۔ اس لڑائی کے سردار ڈاکٹر ہوچی منہ ہیں جب فرانس اپنی فوجوں کے ذریعے اُن کے آندولن کو ختم نہیں کر سکا تو اُس نے وہاں سابق شہنشاہ باؤڈائی کو ہوچی منہ کے مقابلہ پر لاکر کھڑا کردیا اور باؤڈائی سے ایک سمجھوتا کرلیا ۔ اس سمجھوتے کو آزادی کا سمجھوتا کہا جاتا ہے اور اسی کے آدھار پر برطانیہ اور امریکہ اور ان کے کچھ دوسرے ساتھیوں نے باؤ ڈائی کی سرکار کو ہند چین کا ادھیکاری مان لیا ہے ۔ دوسری طرف چین روس اور اس کے کچھ ساتھیوں نے ہوچی منہ کی سرکار کو سویکار کرلیا ہے ۔

और च्यांगकाईशेक की चीनी सरकार के आखिरी ठिकाने फ़ार्मोसा के लिए मंजूर की गई है. हालांकि एशिया के दूसरे देशों के सामने उनकी हैसियत वैसी ही है जैसी एक बड़े सागर के सामने दो छोटी छोटी नदियों की. इन नदियों का पाट बहुत छोटा और पानी बहुत ही कम है और इनमें से दूसरी नदी तो थोड़े ही दिनों में सूखनेवाली है. इसलिए कि फ़ार्मोसा में च्यांगकाईशेक की सरकार चीन की कम्यूनिस्ट फौजों के धावे के सामने अधिक दिनों तक टिक नहीं सकती.

अमरीका की पालिसी

अमरीका की यह कारवाइयाँ रूस के बारे में उसकी इस पालिसी का कुदरती नतीजा है जो उसके विदेश मन्त्री डीन एचसन ने पिछले महीने बहुत साफ़ तौर से बयान कर दी है. उन्होंने कहा है कि रूस अपने मक़सदों के लिए उसूलों और साम्राजी इरादों को मिला कर अपनी पालिसी बनाता और उसे हालात के अनुसार बदलता रहता है इसलिए उसके साथ समझौते की सूरत सिर्फ़ यह है कि अमरीका ऐसे हालात पैदा करदे जिनको बदलना रूस के बस के बाहर हो नहीं तो जहां कहीं उसने हालात को कमज़ोर पाया वहाँ वह उनसे लाभ उठाने लगेगा. इसीलिए अमरीका न तो एटम शक्ति कन्ट्रोल के बारे में अपनी नीति बदलने के लिए तैयार है और न च्यांगकाईशेक की मदद से हाथ उठाने के लिए तैयार है. वह रूस से कोई बातचीत करने के लिए भी नहीं तैयार है जब तक कि यह बातचीत वाशिंगटन में न हो और इसमें रूस और अमरीका के

اور چیانگ کائی شیک کی چینی سرکار کے آخری ٹھکانے فارموسا کے لئے منظور کی گئی ہے۔ حالانکہ ایشیا کے دوسرے دیشوں کے سامنے اُن کی حیثیت ویسی ہی ہے جیسی ایک بڑے ساگر کے سامنے دو چھوٹی چھوٹی ندیوں کی۔ ان ندیوں کا پاٹ بہت چھوٹا اور پانی بہت ہی کم ہے اور انمیں سے دوسری ندی تو تھوڑے ہی دنوں میں سوکھنے والی ہے۔ اس لئے کہ فارموسا میں چیانگ کائی شیک کی سرکار چین کمیونسٹ فوجوں کے دھاوے کے سامنے ادھک دنوں تک ٹک نہیں سکتی۔

امریکہ کی پالیسی

امریکہ کی یہ کاروائیاں روس کے بارے میں اس کی اس پالیسی کا قدرتی نتیجہ ہے جو اس کے ودیش منتری ڈین ایچ سن نے پچھلے مہینے بہت صاف طور سے بیان کردی ہے۔ انہوں نے کہا ہے کہ روس اپنے مقصدوں کے لئے اُصولوں اور سامراجی ارادوں کو ملاکر اپنی پالیسی بناتا اور اسے حالات کے انوسار بدلتا رہتا ہے اس لئے اس کے ساتھ سمجھوتے کی صورت صرف یہ ہے کہ امریکہ ایسے حالات پیدا کردے جن کو بدلنا روس کے بس سے باہر ہو۔ نہیں تو جہاں کہیں اس نے حالات کو کمزور پایا وہاں وہ ان سے لابھ اُٹھانے لگے گا اسی لئے امریکہ نہ تو ایٹم شکتی کے کنٹرول کے بارے میں اپنی نیتی بدلنے کے لئے تیار ہے اور نہ چیانگ کائی شیک کی مدد سے ہاتھ اُٹھانے کے لئے تیار ہے۔ وہ روس سے کوئی بات چیت کرنے کے لئے بھی نہیں تیار ہے جبتک کہ یہ بات چیت واشنگٹن میں نہ ہو اور اس میں روس اور امریکہ کے

के साथ इतने दिनों तक मास्को में क्यों ठहरे रहे और चीन के कश्मीर और तिब्बत से मिले हुए प्रान्त सिंक्याँग के गवरनर को वहाँ क्यों बुलाया गया. इसी कारन अमरीका के सरकारी और ग़ैर सरकारी आदमी और अख़बार यह कह रहे हैं कि माउ और स्टालिन मे बहुत सी दूसरी बातें भी तय हुई हैं जिनको अभी छिपा दिया गया है. कहा जाता है कि इन दोनों ने पूरब के देशों में कम्युनिज़्म को फैलाने, रूस के असर को बढ़ाने और अमरीका की काट करने के लिए कुछ तरकीबें सोची हैं.

टक्कर की सम्भावना.

इन्हीं तरकीबों का तोड़ करने के लिए पूरब के देशों के अमरीकी राजदूत पिछले महीने बंकाक मे जमा हुए थे, जहाँ उन्होंने इन देशों की आर्थिक ज़रूरतो और इनकी मदद के तरीक़ों पर सोच विचार किया और इन्हीं तरकीबों का तोड़ करने के लिए अमरीकी फ़ौजी अफ़सरों ने पैसीफ़िक सागर में लड़ाई के अड्डों को मज़बूत करने और समुन्दरी फ़ौज को बढ़ाने की सिफ़ारिश की है. इसका कारन उन्होंने यह बताया है कि रूसी और अमरीकी गरोहों में टक्कर की सम्भावना योरप में उतनी नहीं है जितनी कि एशिया में. और मालूम होता है कि अमरीकी सरकार को टक्कर की यह सम्भावना आर्थिक मदद की ज़रूरत से ज़्यादा जल्दी सूझ गई. इसलिए वह पैसीफ़िक सागर में अपनी शक्ति बड़ी तेज़ी से बढ़ा रही है और अमरीका के एटलान्टिक बेड़े के कुछ जहाज़ वहाँ से पैसिफ़िक बेड़े के लिए भेज दिये गये हैं जबकि आर्थिक मदद अभी तक केवल दक्खिनी कोरिया

کے ساتھ اتنے دنوں تک ماسکو میں کیوں ٹھہرے رہے اور چین کے کشمیر اور تبت سے ملے ہوئے پرانت سنکیانگ کے گورنر کو وہاں کیوں بلایا گیا۔ اسی کارن امریکہ کے سرکاری اور غیر سرکاری آدمی اور اخبار یہ کہہ رہے ہیں کہ ماؤ اور اسٹالن میں بہت سی دوسری باتیں بھی طے ہوئی ہیں جن کو ابھی چھپا دیا گیا ہے۔ کہا جاتا ہے کہ ان دونوں نے پورب کے دیشوں میں کمیونزم کو پھیلانے، روس کے اثر کو بڑھانے اور امریکہ کی کاٹ کرنے کے لئے کچھ ترکیبیں سوچی ہیں

ٹکر کی سمبھاونا

انہی ترکیبوں کا توڑ کرنے کے لئے پورب کے دیشوں کے امریکی راج دوت پچھلے مہینے بنکاک میں جمع ہوئے تھے۔ جہاں انہوں نے ان دیشوں کی آرتھک ضرورتوں اور ان کی مدد کے طریقوں پر سوچ وچار کیا۔ اور انہیں ترکیبوں کا توڑ کرنے کے لئے امریکی فوجی افسروں نے پیسفک ساگر میں لڑائی کے اڈوں کو مضبوط کرنے اور سمندری فوج کو بڑھانے کی سفارش کی ہے۔ اسکا کارن انہوں نے یہ بتایا ہے کہ روسی اور امریکی گروہوں میں ٹکر کی سمبھاونا یورپ میں اتنی نہیں ہے جتنی کہ ایشیا میں۔ اور معلوم ہوتا ہے کہ امریکی سرکار کو ٹکر کی یہ سمبھاونا آرتھک مدد کی ضرورت سے زیادہ جلدی سوجھ گئی۔ اس لئے وہ پیسفک ساگر میں اپنی شکتی بڑی تیزی سے بڑھا رہی ہے اور امریکہ کے اٹلانٹک بیڑے کے کچھ جہاز وہاں سے پیسفک بیڑے کے لئے بھیج دئے گئے ہیں۔ جبکہ آرتھک مدد ابھی تک کیول دکھنی کوریا

रूस और चीन का समझौता

माओ-त्से-तुंग के मास्को जाने में अचरज की कोई बात नहीं थी इसलिए कि चीन की कम्युनिस्ट सरकार को वहीं से सहायता मिल सकती है. और पिछले पचीस बरस मे घरेलू मारकाट और जापान की लड़ाई में चीन की अर्थिक हालत इतनी ख़राब हो चुकी है कि वह बाहरी मदद के बिना पनप नहीं सकता. मगर यह ताज्जुब की बात जरूर है कि अपने देश को इस हालत में छोड़ कर चीन के प्रधान दो महीने तक बाहर रहे और यह ताज्जुब चीन और रूस के समझौते से कम नहीं होता इस समझौते मे रूस ने चीन को पांच साल के अन्दर तीस करोड़ डालर का कर्ज़ा देना मंज़ूर किया है जो उसकी जरूरत को देखते हुए बहुत कम है इसके अलावा चीन की दो गोदियो आर्थर और डायरीन और मंचूरिया के आर पार जाने वाली रलवे में १९४५ के समझौते से रूस को जो साझा मिल गया था उसके बारे मे यह तय हुआ है कि जब जापान से सुलह का समझौता हो जायगा तो रूस यह साझा छोड देगा. हा, अगर जापान या उसके किसी साथी की तरफ़ से इन दोनो में से किसी देश पर कोई धावा हुआ तो दोनों एक साथ मिल कर इस धावे का मुकाबिला करेंगे और इन गोदियों को जो इस मुकाबले मे बडी अहमियत रखती है, मिलजुल कर इस्तेमाल करेंगे. वैसे भी रूस और चीन साम्राज की रोक थाम की कोशिश करेंगे

समझौते के बारे में रूसी रेडियो ने इतना ही बतलाया है और इससे यह सवाल हल नहीं होता कि माउ अपने कई सलाहकारों

روس اور چین کا سمجھوتہ

ماؤ زے تنگ کے ماسکو جانے میں اچرج کی کوئی بات نہیں تھی اس لئے کہ چین کی کمیونسٹ سرکار کو وہیں سے سہایتا مل سکتی ہے۔ اور پچھلے پچیس برس میں گھریلو مارکاٹ اور جاپان کی لڑائی میں چین کی آرتھک حالت اتنی خراب ہو چکی ہے کہ وہ باہری مدد کے بنا پلپ نہیں سکتا۔ مگر یہ اچنبھے کی بات ضرور ہے کہ اپنے دیش کو اس حالت میں چھوڑ کر چین کے پردھان دو مہینے تک باہر رہے۔ اور یہ تعجب چین اور روس کے سمجھوتے سے کم نہیں ہوتا اس سمجھوتے میں روس نے چین کو پانچ سال کے اندر تیس کروڑ ڈالر کا قرضہ دینا منظور کیا ہے جو اس کی ضرورت کو دیکھتے ہوئے بہت کم ہے اس کے علاوہ چین کی دو گودیوں آرتھر اور ڈائرین اور منچوریا کے آرپار جانے والی ریلوے میں ۱۹۴۵ کے سمجھوتے سے روس کو جو ساجھا مل گیا تھا اس کے بارے میں یہ طے ہوا ہے کہ جب جاپان سے صلح کا سمجھوتا ہوجائے گا تو روس یہ ساجھا چھوڑ دے گا۔ ہاں اگر جاپان یا اس کے کسی ساتھی کی طرف سے ان دونوں میں سے کسی دیش پر کوئی دھاوا ہوا تو دونوں ایک ساتھ ملکر اس دھاوے کا مقابلہ کریں گے اور ان گودیوں کو جو اس مقابلہ میں بڑی اہمیت رکھتی ہیں مل جلکر استعمال کریں گے۔ ویسے بھی روس اور چین سامراج کی روک تھام کی کوشش کریں گے۔

سمجھوتے کے بارے میں روسی ریڈیو نے بس اتنا ہی بتایا ہے اور اس سے یہ سوال حل نہیں ہوتا کہ ماؤ اپنے کئی صلاح کاروں

दुनिया का हाल

(भाई इशरत अली सिद्दीक़ी)

चीन के कम्युनिस्ट प्रधान माउ-त्से-तुंग लगभग दो महीने तक रूस में रहकर अपने देश वापस आ गये हैं और दूसरी तरफ़ अमरीका के दूर पूरब वाले मुल्कों के राजदूत, जो स्याम की राजधानी बेंकाक मे सलाह मशविरे के लिए जमा हुए थे, अपने अपने ठिकानो पर चले गए. इसके अलावा अमरीका की जमीन, हवा और समुन्दर की फौजों के बड़े अफ़सरों ने दूर पूरब का दौरा करने के बाद अपने प्रधान ट्रूमेन के सामने कुछ सुझाव पेश कर दिये हैं. यह सुझाव, बेंकाक कानफ्रेंस के फ़ैसले और माउ और स्टालिन के समझौते अभी पूरी तरह से सामने नहीं आये हैं और शायद लड़ाई के नक़्शों की तरह कभी साफ़ साफ़ बयान न किये जायें फिर भी उन्होंने उनके बारे में जो कुछ कहा है उससे दो बातों का पता चलता है.

एक यह कि अब अंतरराष्ट्री राजनीति की धारा पूरब की तरफ बह रही है और दूसरे यह कि अमरीका और रूस की तनातनी कुछ और बढ़ गई है. दोनों तरफ लड़ाई की तैयारियां, साथियों की खोज और विरोधी राष्ट्रों की चालों का तोड़ तेजी के साथ शुरू हो गया है.

دنیا کا حال

(بھائی عشرت علی صدیقی)

چین کے کمیونسٹ پردھان ماؤزے تنگ لگ بھگ دو مہینے تک روس میں رہ کر اپنے دیش واپس آگئے ہیں اور دوسری طرف امریکہ کے دور پورب والے ملکوں کے راج دوت، جو سیام کی راجدھانی بنکاک میں صلاح مشورے کے لئے جمع ہوئے تھے، اپنے اپنے ٹھکانوں پر چلے گئے۔ اس کے علاوہ امریکہ کی زمین، ہوا اور سمندر کی فوجوں کے بڑے افسروں نے دور پورب کا دورہ کرنے کے بعد اپنے پردھان ٹرومین کے سامنے کچھ سجھاؤ پیش کردئیے ہیں۔ یہ سجھاؤ بنکاک کانفرنس کے فیصلے اور ماؤ اور اسٹالن کے سمجھوتے ابھی پوری طرح سے سامنے نہیں آئے ہیں اور شاید لڑائی کے نقشوں کی طرح کبھی صاف صاف بیان نہ کئے جائیں۔ پھر بھی انہوں نے ان کے بارے میں جو کچھ کہا ہے اس سے دو باتوں کا پتہ چلتا ہے

ایک یہ کہ اب انترراشٹری راج نیتی کی دھارا پورب کی طرف بہہ رہی ہے اور دوسرے یہ کہ امریکہ اور روس کی تناتنی کچھ اور بڑھ گئی ہے۔ دونوں طرف لڑائی کی تیاریاں، ساتھیوں کی کھوج اور ورودھی راشٹروں کی چالوں کا توڑ تیزی کے ساتھ شروع ہو گیا ہے۔

बापू की क़ुर्बानी के बाद थोड़े दिन के लिए ऐसी फ़िज़ा बन गई थी कि जैसे फ़िर्क़ावारी ज़ेहनियत सदा के लिए देश से चली गई हो लेकिन हम आज फिर उसे धीरे धीरे उभरते हुए देख रहे हैं.

यह किताब शायद भटकने वालो को चौकन्ना कर सके इसलिए हम अपने पाठकों को इसके पढ़ने की सलाह देते हैं.

मुस्लिम देश भक्त

[लेखक श्री० रतन लाल बंसल]

इस किताब में कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये हैं जिन्होंने अंग्रेजों के मनहूस क़दम यहां जमने के पहले ही उनके राज की बुराइयों का अन्दाजा कर लिया था और उनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमों ने सन् १८५७ से भी पहले से आज़ादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होंने हिन्दुस्तान और विदेशों मे रहते हुए भी अंगरेजी हकूमत का मुक़ाबला किया यह सब हाल पढ़कर आप दंग रह जायंगे किताब दोनो लिखावटो मे छपी है क़ीमत १ रुपया १२ आने.

मैनेजर, 'नया हिन्द,'

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

باپو کی قربانی کے بعد تھوڑے دن کے لئے ایسی فضا بن گئی تھی کہ جیسے فرقہ واری ذہنیت سدا کے لئے دیش سے چلی گئی ہو لیکن ہم آج پھر اسے دھیرے دھیرے ابھرتے ہوئے دیکھ رہے ہیں۔

یہ کتاب شاید بھٹکنے والوں کو چوکنا کر سکے۔ اس لئے ہم اپنے پاٹھکوں کو اس کے پڑھنے کی صلاح دیتے ہیں۔

مسلم دیش بھگت

[لیکھک — شری رتن لال بنسل]

اس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھگتوں کے جیون کا حال اور انکے کارنامے بیان کئے گئے ہیں جنھوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ہی انکے راج کی برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور ان کو ہندستان سے نکال بھگانے میں ہند کی بھلائی دیکھی تھی۔

اس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ہوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے سنہ ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادی کی لڑائی شروع کر رکھی تھی۔ اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر انہوں نے ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھی انگریزی حکومت کا مقابلہ کیا۔ یہ سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے۔

کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپی ہے۔ قیمت ۱ روپیہ ۱۲ آنے

منیجر، 'نیا ہند'

۴۸ بائی کا باغ – الہ آباد

कुछ किताबें

बापू को न बचा सका

लेखक—डाक्टर जगदीशचन्द्र जैन, एम.ए., पी.एच.डी.

छापनेवाले—जागरण साहित्य मंदिर, बनारस, पृष्ठ १२८; दाम २)।

इस किताब के लेखक डाक्टर जगदीशचन्द्र जैन गांधी हत्या-काण्ड के एक खास गवाह थे. उनहोंने इस किताब में कुछ ऐसी सनसनी खेज बातों पर रोशनी डाली है जो अभी तक जनता के सामने नहीं आई थी. किताब पढ़ने से मालूम होता है कि किस तरह मदन लाल उनसे षड्यंत्र का भेद प्रकट करता है, कैसे उसे वह बम्बई सरकार के अधिकारियों तक पहुँचाने की कोशिश करते हैं, किस तरह उन्हें अधिकारियों की डाँट-फटकार का शिकार होना पड़ता है, किस तरह अदालत में बचाव पक्ष के वकील उनसे दलील करते हैं इन सब बातों का रोमांचकारी वर्णन इस किताब में किया गया है. लेखक ने जैसा कि लिखा है उससे गांधी जी की रक्षा के संबंध में अधिकारी वर्ग की लापरवाही को पढ़ कर बड़ा दुख होता है और यह सोचकर हमारा सर शर्म से झुक जाता है कि हम बापू को न बचा सके.

इस किताब में लेखक ने साम्प्रदायिकता की आलोचना करते हुए यह साबित करने की सफल कोशिश की है कि इस आग की भयंकर ज्वाला देश और राष्ट्र को भस्म कर सकती है.

کچھ کتابیں

باپو نہ کو بچا سکا

لیکھک—ڈاکٹر جگدیش چندر جین ایم. اے پی ایچ ڈی.

چھاپنے والے—جاگرن ساھتیہ مندر' بنارس' پرشٹھ ۱۲۸' دام دو روپیہ.

اس کتاب کے لیکھک ڈاکٹر جگدیش چندر جین گاندھی ھتیا کانڈ کے ایک خاص گواہ تھے. اُنھوں نے اِس کتاب میں کچھ ایسی سنسنی خیز باتوں پر روشنی ڈالی ھے جو ابھی تک جنتا کے سامنے نہیں آئی تھیں. کتاب پڑھنے سے معلوم ھوتا ھے کہ کس طرح مدن لال اُن سے سڑینتر کا بھید پرکٹ کرتا ھے' کیسے اُسے وہ بمبئی سرکار کے ادھیکاریوں تک پہونچانے کی کوشش کرتے ھیں' کس طرح اُنھیں ادھیکاریوں کی ڈانت' پھٹکار کا شکار ھونا پڑتاھے' کس طرح عدالت میں بچاؤ پکش کے وکیل اُن سے دلیل کرتے ھیں. اِن سب باتوں کا رومانچکاری برنن اِس کتاب میں کیا گیا ھے. لیکھک نے جیسا کہ لکھا ھے اُس سے گاندھی جی کی رکشا کے سمبندھ میں ادھیکاری ورگ کی لاپرواھی کو پڑھ کر بڑا دکھ ھوتا ھے اور یہ سوچ کر ھمارا سر شرم سے جھک جاتا ھے کہ ھم باپو کو نہ بچا سکے.

اُس کتاب میں لیکھک نے سامپردائکتا کی آلوچنا کرتے ھوئے یہ ثابت کرنے کی سپھل کوشش کی ھے کہ اِس آگ کی بھینکر جوالا دیش اور راشٹر کو بھسم کر سکتی ھے.

ब्रह्मादित्य—आप तशरीफ ले चलें, जहाँ पनाह, मैं (निजाम की ओर संकेत कर) शाहजादे साहब के ठहरने आदि का प्रबन्ध कर अभी आता हूँ.

शेरशाह—(चलते हुए) हाँ, हाँ, तुम पहले उनके ठहरने का इन्तजाम कर दो, लेकिन बहुत जल्द आना. (कुछ रुक कर, निजाम की ओर घूम, जैसे कोई बात याद आ गई हो) हाँ, अच्छे तो हो निजाम ? कुछ दुबले नजर आते हो

निजाम—(भर्राये हुए स्वर में) बहुत अच्छा हूँ, जहाँपनाह, (कुछ रुक कर) दुबला तो सफर के सबब से दिखता

[निजाम के अंतिम शब्द के पूरे होने के पहले ही शेरशाह का प्रस्थान. निजाम के मुख से एक दीर्घ निश्वास निकल जाती है. ब्रह्मादित्य उसकी ओर देखता है]

लघु-यवनिका

برهمه دتیه—آپ تشریف لے چلیں جہاں پناہ، میں (نظام کی اور سنکیت کر) شہزادے صاحب کے ٹھہرنے آدی کا پربندھ کر ابھی آتا ہوں۔

شیر شاہ—(چلتے ہوئے) ہاں ہاں تم پہلے ان کے ٹھہرنے کا انتظام کر دو، لیکن بہت جلد آنا۔ (کچھ رک کر، نظام کی اور گھوم، جیسے کوئی بات یاد آگئی ہو) ہاں اچھے تو ہو نظام ؟ کچھ دبلے نظر آتے ہو۔

نظام—(بھرائے ہوئے سور میں) بہت اچھا ہوں، جہاں پناہ (کچھ رک کر) دبلا تو سفر کے سبب سے دیکھتا

[نظام کے انتم شبد کے پورے ہونے کے پہلے ہی شیر شاہ کا پرستھان ۔ نظام کے مکھ سے ایک دیرگھ نشواس نکل جاتی ہے برہما دتیہ اس کی اور دیکھتا ہے]

لگھو یونیکا

[दरबान के साथ निजाम का प्रवेश. वह बहुत दुर्बल और उद्विग्न दिखाई पड़ता है. दरबान का सलाम कर प्रस्थान. निजाम आगे बढ़ कर सिजदा करता है. शेरशाह भी उठ कर, आगे बढ़, उसे हृदय से लगाता है. निजाम के नेत्रों से आँसू निकल आते हैं. दोनों अलग अलग होते हैं. ब्रह्मादित्य भी खड़ा हो गया है. ब्रह्मादित्य और निजाम भी एक दूसरे का अभिवादन करते हैं. सब बैठ जाते हैं. निजाम भी ब्रह्मादित्य के साथ गद्दी के नीचे ही बैठता है]

निजाम—माफ़ कीजियेगा, भाईजान, चुनार के मानिन्द यहाँ भी बिना बुलाए ही चला आया. वहाँ शादी की मुबारकबाद देनी थी, यहाँ तख्तनशीनी की. फिर इस दफ़ा तो मुगलों के साथ होने वाली जंग में मैं भी शरीक होना चाहता हूं. आपने सुना होगा कि हुमायूँ फ़ौज के साथ रवाना हो चुका है.

शेरशाह—(ऐसी मुद्रा से, मानो अन्तिम बात सुनकर शेष सब बातें विस्मृत हो गई हों) अच्छा, हुमायूँ रवाना हो गया ?

निजाम—जी हाँ, मैंने आज ही रास्ते में सुना. आपके पास शाही खुफिया भी इत्तला लाते ही होंगे.

शेरशाह—(उठते हुए ब्रह्मादित्य से) अच्छा, पंडित, तो हमें भी दीवाने खास में चलकर, जंग की तमाम तैयारी के बारे में सलाह करके एकदम रवाना होना चाहिये.

[शेरशाह के उठते ही निजाम और ब्रह्मादित्य भी खड़े हो जाते हैं. परन्तु निजाम का मुख और उतर जाता है.]

[دربان کے ساتھ نظام کا پرویش، وہ بہت دربل اور ادوگن دکھائی پڑتا ہے۔ دربان کا سلام کر پرستھان۔ نظام آگے بڑھ سجدہ کرتا ہے۔ شیر شاہ بھی اٹھ کر آگے بڑھ، اسے ہردے سے لگاتا ہے۔ نظام کے نیتروں سے آنسو نکل آتے ہیں۔ دونوں الگ الگ ہوتے ہیں۔ برہما دتیہ بھی کھڑا ہو گیا ہے۔ برہما دتیہ اور نظام بھی ایک دوسرے کا ابھی وادن کرتے ہیں۔ سب بیٹھ جاتے ہیں۔ نظام بھی برہما دتیہ کے ساتھ گدی کے نیچے ہی بیٹھتا ہے۔]

نظام—معاف کیجئے گا، بھائی جان، چنار کے مانند یہاں بھی بنا بلائے ہی چلا آیا۔ وہاں شادی کی مبارکباد دینی تھی، یہاں تخت نشینی کی۔ پھر اس دفعہ تو مغلوں کے ساتھ ہونے والی جنگ میں میں بھی شریک ہونا چاہتا ہوں۔ آپ نے سنا ہوگا کہ ہمایوں فوج کے ساتھ روانہ ہو چکا ہے۔

شیر شاہ—(ایسی مدرا سے، مانو انتم بات سنکر شیش سب باتیں وسمرت ہوگئیں ہوں) اچھا، ہمایوں روانہ ہو گیا؟

نظام—جی ہاں، میں نے آج ہی راستے میں سنا۔ آپکے پاس شاہی خفیہ بھی اطلاع لاتے ہی ہوں گے۔

شیر شاہ—(اٹھتے ہوئے، برہما دتیہ سے) اچھا، پنڈت، تو ہمیں بھی فوراً دیوان خاص میں چلکر، جنگ کی تمام تیاری کے بارے میں صلح کرکے ایک دم روانہ ہونا چاہئے۔

[شیر شاہ کے اٹھتے ہی نظام اور برہما دتیہ بھی کھڑے ہو جاتے ہیں، پرنتو نظام کا مکھ اور اتر جاتا ہے]

अधिकांश को मैं भड़का सकता हूं. फिर चौसा युद्ध में उसकी हार और आप की जीत ने हमारी ऐसी धाक जमा दी है कि मेरा विश्वास है कि जीत फिर भी अपनी ही होगी.

[बहुमूल्य वर्दी पहने हुए दरबान का प्रवेश. वह आकर अदब से सलाम करता है.]

दरबान—जहाँ पनाह, एक साहब आए हैं, अपना नाम निज़ाम बताते हैं, कहते हैं—हुज़ूर के बिरादर हैं. जहाँपनाह से मुलाक़ात चाहते हैं.

शेरशाह—हाँ, हाँ, फौरन फौरन उन्हे ले आओ.

[दरबान का सलाम कर प्रस्थान.]

शेरशाह—पंडित, हम लोग तख्त नशीनी के वक़्त इन लोगो को बिहार शरीफ़ से न बुलाकर ग़लती कर बैठे.

ब्रह्मादित्य—परन्तु युद्ध के पश्चात् राजतिलक इतने शीघ्र हुआ कि इन्हें बुलाना सम्भव ही न था.

शेरशाह—तुम जानते हो, पंडित, निज़ाम मुझे कितना चाहता है, फिर हम यह जंग लाड मलिका के दौलत से ही जीत सके (हुक्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) तख्त नशीनी कुछ वक्त के लिए मुल्तवी करना चाहिये थी. इन्हे बुलाकर, इनके आने पर ही तख्त नशीनी होनी थी.

ब्रह्मादित्य - व्यक्तिगत कारनो से देश के कार्यों को इस प्रकार आगे नहीं बढ़ाया जा सकता, जहाँपनाह.

ادھیکانش کو میں بھڑکا سکتا ھوں ۔ پھر چوسا یدھ میں اسکی ھار اور آپکی جیت نے ھماری ایسی دھاک جما دی ھے کہ میرا وشواس ھے کہ جیت پھر بھی اپنی ھی ھوگی ۔

[بہو مولیہ وردی پہنے دربان کا پرویش وہ آکر ادب سے سلام کرتا ھے]

دربان — جہاں پناہ ' ایک صاحب آئے ھیں ' اپنا نام نظام بتاتے ھیں ' کہتے ھیں حضور کے برادر ھیں ' جہاں پناہ سے ملاقات کرنا چاھتے ھیں ۔

شیرشاہ — ھاں ' ھاں ' فوراً ۔ فوراً انہیں لے آؤ

[دربان کا سلام کر پرستھان]

شیر شاہ — پنڈت ' ھم لوگ تخت نشینی کے وقت ان لوگوں کو بہار شریف سے نہ بلا کر غلطی کر بیٹھے

برھما دتیہ — پرنتو یدھ کے پشچات راج تلک اتنے شیگھر ھوا کہ انہیں بلانا سمبھو ھی نہ تھا

شیر شاہ — تم جانتے ھو ' پنڈت ' نظام مجھے کتنا چاھتا ھے ' پھر ھم یہ جنگ لاڈ ملکہ کی دولت سے ھی جیت سکے (حقہ گڑ گڑا کر دھواں چھوڑتے ھوئے) تخت نشینی کچھ وقت کے لئے ملتوی کرنا چاھئے تھی ۔ انہیں ' بلاکر ۔ ان کے آنے پر ھی تخت نشینی ھونی تھی ۔

برھما دتیہ — ویکتی گت کارنوں سے دیش کے کاریوں کو اس پرکار آگے نہیں بڑھایا جا سکتا ' جہاں پناہ ۔

भी मुझसे छिपा नहीं है. आपके हृदय को मुझसे अधिक और कौन जानता है, साथ ही आपके गुणों के कारण आपके भविष्य को भी सब से ज्यादा मैं ही जानता हूँ. चरणों पर लोटते हुए पदों को अनिच्छा, सच्चे विराग से जो ग्रहण करता है, वही उन पदों से प्राप्त अधिकार का सदुपयोग कर सकता है. यदि वह आपके सदृश प्रतिभावान हो, साथ ही दूरदर्शी, शूर, साहसी, त्यागी और धैर्यवान, तब तो पूछना ही क्या है ? बंगाल क्या, वह समय समीप है जब आप समूचे हिन्दुस्तान के सिंहासन पर बैठेंगे. आपके सिंहासनासीन होने के पश्चात् इस देश में हिन्दू मुसलमानों का संयुक्त राज होगा. आर्य, अनार्यों के संयुक्त राम-राज्य के समान सुखी और समृद्धिशाली. मेरी पुरानी भविष्य वाणियाँ सच निकली हैं, यह भी सच होकर रहेगा.

शेरशाह—लेकिन, पंडित, हुमायूँ बहुत बड़ी फौज जमा कर रहा है. सुना नहीं, उसके भाइयों के मदद न देने पर भी उसने काफ़ी फ़ौज जमा कर ली है. उसके मुक़ाबले में हमारी फ़ौज तो अभी नहीं के बराबर है. (धीरे धीरे धुआँ नाक से छोड़ता है),

ब्रह्मादित्य—इसकी अब मुझे अधिक चिन्ता नहीं है. एक तो उसके सैनिक किराये के टट्टू हैं, और हमारे सैनिक देशभक्त. दूसरे अब जो सेना वह इकट्ठी कर रहा है, उसमें मुग़ल कम और इस देश के निवासी अधिक होंगे. चौसा युद्ध के पूर्व आप की आज्ञा से मैं कुछ दिन हुमायूँ की सेना में रह कर वहाँ की स्थिति से परिचित हो आया हूं हुमायूँ की इस सेना में से

بھی مجھ سے چھپا نہیں ھے . آپ کے ھردے کو مجھ سے ادھک اور کون جانتا ھے ' ساتھ ھی آپکے گنوں کے کارن آپکے بھوشیه کو بھی سب سے زیادہ میں ھی جانتا ھوں چرنوں پر لوٹتے ھوئے پدوں کو اَن اِچھا ' سچے وراگ سے جو گرھن کرتا ھے وھی اُن پدوں سے پراپت ادھیکار کا سدوپیوگ کر سکتا ھے . یدی وہ آپکے سدرش پرتی بھاوان ھو ' ساتھ ھی دور درشی ' شور ' ساھسی ' تیاگی اور دھیریه وان ' تب تو پوچھنا ھی کیا ھے ؟ بنگال کیا ' وہ سمے سمیپ ھے جب آپ سموچے ھندستان کے سنگھاسن پر بیٹھیں گے . آپکے سنگھاسنا سین ھونے کے پشچات اِس دیش میں ھندو مسلمانوں کا سنیکت راج ھوگا . آریه ' ان آریه کے سنیکت رام راجیه کے سمان سکھی اور سمردھ شالی . میری پرانی بھوشیه وانیاں سچ نکلی ھیں یه بھی سچ ھوکر رھے گی .

شیر شاہ—لیکن ' پنڈت ' ھمایوں بہت بڑی فوج جمع کر رھا ھے . سنا نہیں ' اُس کے بھائیوں کے مدد نه دینے پر بھی اُس نے کافی فوج جمع کرلی ھے . اُس کے مقابلے میں ھماری فوج تو ابھی نہیں کے برابر ھے . (دھیرے دھیرے دھواں ناک سے چھوڑتا ھے)

برھما دتیه—اِسکی اب مجھے ادھک چنتا نہیں ھے . ایک تو اُس کے سینک کرائے کے ٹٹو ھیں اور ھمارے سینک دیش بھکت دوسرے اب جو سینا وہ اکٹھی کر رھا ھے ' اُس میں مغل کم اور اِس دیش کے نواسی ادھک ھونگے . چوسا یدھ کے پورو آپکی آگیا سے میں کچھ دن ھمایوں کی سینا میں رہ کر وھاں کی استھتی سے پرچت ھو آیا ھوں . ھمایوں کی اِس سینا میں سے

जाय हो जाय. गद्दी पर इसलिए नहीं बैठता कि कम से कम दरबान को किसी के आने की सूचना देने, अथवा अन्य किसी कार्य के लिए आ ही सकता है.......नौकरो के सामने पदप्रतिष्ठा की रक्षा जितनी आवश्यक है, उतनी अन्य किसी के सन्मुख नही.

शेरशाह—लेकिन, पंडित, फ़रीद से शेर ख़ाँ होने पर मुझे जितनी तकलीफ़ हुई उससे कहीं ज़्यादा शेर ख़ाँ से शेरशाह होने में हो रही है.

ब्रह्मादित्य—देश के लिए आपने तकलीफो का सामना किया है, अब आराम के कष्ट भी भोगिये.

शेरशाह—दुनिया मे मामूली मकान से महल कहीं आरामदेह चीज़ समझी जाती है, और महल के साथ जो दूसरी चीज़े मिलती है, वह उससे भी ज़्यादा. (हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) पर...पर पंडित, ख़ुदा जानता है कि मुझे यह महल, जहाँ का यह आरामदेह सामान, सब के सब, न जाने कैसे अटपटे मालूम होते है.

ब्रह्मादित्य—यही...यही तो आप की विशेषता है. मैं जानता हूं कि बिहार शरीफ़ मे उस दिन हिन्दू मुसलमानो का एक मत से आपको बादशाह बनाने का प्रस्ताव, तथा जनाब ईसा ख़ाँ शेरवानी, जिनके पिता के यहाँ आपके पिता नौकर रह चुके थे, उनके द्वारा किया गया प्रस्ताव, आपने दिखावे के लिए अस्वीकृत नहीं किया था. बंगाल विजय के पश्चात् जब फिर वही बात उठी तब भी आपने कितनी हिचकिचाहट और कठिनाई से यह पद स्वीकार किया, यह

استھانی ہو جائے . گدی پر اس لئے نہیں بیٹھتا کہ کم سے کم دربان تو کسی کے آنے کی سوچنا دیئے ' اتھوا انیہ کسی کاریہ کے لئے آ ہی سکتا ہے...نوکروں کے سامنے پد پرتشٹھا کی رکشا جتنی آوشیک ہے ' اُتنی انیہ کسی کے سنمکھ نہیں

شیر شاہ—لیکن پنڈت ' فرید سے شیر خاں ہونے پر مجھے جتنی تکلیف ہوئی اُس سے کہیں زیادہ شیر خاں سے شیر شاہ ہونے میں ہو رہی ہے .

برھما دتیہ—دیش کے لئے آپ نے تکلیفوں کا سامنا کیا ہے ' اب آرام کے کشٹ بھی بھوگئے .

شیر شاہ—دنیا میں معمولی مکان سے محل کہیں آرام دہ چیز سمجھی جاتی ہے ' اور محل کے ساتھ جو دوسری چیزیں ملتی ہیں ' وہ اُس سے بھی زیادہ . (حقہ گڑ گڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) پر.. پر پنڈت ' خدا جانتا ہے کہ مجھے یہ محل ' یہاں کا یہ آرام دہ سامان ' سب کے سب ' نہ جانے کیسے اٹ پٹے معلوم ہوتے ہیں .

برھما دتیہ—یہی تو آپکی وشیشتا ہے . میں جانتا ہوں کہ بہار شریف میں اُس دن ہندو مسلمانوں کا ایک مت سے آپکو بادشاہ بنانے کا پرستاؤ ' تتھا جناب عیسیٰ خاں شیروانی ' جنکے پتا کے یہاں آپکے پتا نوکر رہ چکے تھے ' اُن کے دوارا کیا گیا پرستاؤ آپ نے دکھاوے کے لئے اسویکرت نہیں کیا تھا ' بنگال وجے کے پشچات جب پھر وہی بات اُٹھی تب بھی آپ نے کتنی ہچکچاہٹ اور کٹھنائی سے یہ پد سویکار کیا ' یہ

मलमल के पतले रंगीन परदे पड़े हैं. छत से लटकने वाले झाड़ बहुत बड़े हैं. ज़मीन पर का क़ालीन भी अत्यधिक मूल्यवान है गद्दी और तकियों की चादर और खोलियाँ ढाके की इतनी महीन मलमल की हैं कि उनके नीचे का कमख़ाब चादर और खोलियों के रहते हुए भी खूब जगमगा रहा है. गद्दी के सामने चाँदी की चौकियों पर सोने का हुक़्क़ा, पानदान इत्यादि अनेक बहुमूल्य वस्तुऐं रखी और सजी हुई है. गद्दी पर शेरशाह और उसके सामने क़ालीन पर ब्रह्मादित्य बैठा हुआ है. सुलतान होने पर भी न शेरशाह की मुद्रा पर कोई अन्तर पड़ा है और न उसकी पोशाक में ही. ब्रह्मादित्य भी वैसा ही है. शेरशाह हुक़्क़ा पी रहा है.]

शेरशाह—लेकिन, पंडित, जो बादशाहत, दो जिगरी दोस्तो के आपसी ताल्लुक़ात में भी फ़र्क़ होना चाहिये, इसके लिए मजबूर करती है, वह...वह क्या...कहूं मैं ?

ब्रह्मादित्य—जहाँपनाह, हृदयो में अन्तर नहीं पड़ना चाहिये, बाहरी व्योहार के यह फ़र्क़ तो पदो की प्रतिष्ठा के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य हैं.

शेरशाह—तो अकेले में भी तुम्हारे मुझे जहाँपनाह न कहने, गद्दी पर बैठकर ज़मीन पर न बैठने से ओहदों की इज्ज़त चली जायगी. ?

ब्रह्मादित्य—(मुस्कुराते हुए) एकान्त में भी जहाँपनाह तो मैं इसलिए कहता हूं कि सबके सामने जहाँपनाह कहने का

ململ کے پتلے رنگین پردے پڑے هیں. چهت سے لٹکنے والے جهاڑ بهت بڑے هیں. زمین پر کا قالین بهی اتیادهک مولیه ون هے. گدی اور تکیوں کی چادر اور خولیاں ڈهاکے کی اتنی مهین ململ کی هیں که اُن کے نیچے کا کمخواب چادر اور خولیوں کے رهتے هوئے بهی خوب جگمگا رها هے. گدی کے سامنے چاندی کی چوکیوں پر سونے کا حقه ' پاندان اتیادی ایک بهو مولیه وستوئیں رکهی اور سجی هوئی هیں. گدی پر شیرشاه اور اُس کے سامنے قالین پر برهما دتیه بیٹها هوا هے. سلطان هونے پر بهی نه شیر شاه کی مدرا پر کوئی انتر پڑا هے اور نه اُس کی پوشاک میں هی. برهما دتیه بهی ویسا هی هے. شیرشاه حقه پی رها هے.]

شیر شاه—لیکن' پنڈت' جو بادشاهت' دو جگری دوستوں کے آپسی تعلقات میں بهی فرق هونا چاهئے ' اِسکے لئے مجبور کرتی هے ' وه...وه کیا...کهوں میں ؟

برهما دتیه—جهاں پناه ' هردیوں میں انتر نهیں پڑنا چاهئے ' باهری بیوهار کے یه فرق تو پدوں کی پرتشٹها کے لئے آوشیک هی نهیں انی وارئیه هیں.

شیر شاه—تو اکیلے میں بهی تمهارے مجهے جهاں پناه نه کهنے ' گدی پر بیٹهکر زمین پر نه بیٹهنے سے عهدوں کی عزت چلی جائیگی ؟

برهما دتیه—(مسکراتے هوئے) ایکانت میں بهی جهاں پناه تو میں اسی لئے کهتا هوں که سب کے سامنے جهاں پناه کهنے کا

रुक कर गम्भीर हो) तस्वीर मुहब्बत को पैदा कर सकती है, पर तस्वीर का जलना मुहब्बत को फ़ना नहीं कर सकता. (आग बहुत बढ़ जाती है. कुछ रुक कर) पागल!...दीवाने!.. पागल! (अट्टहास कर मूर्छित हो गिरती है.)

[रहमान का तेज़ी से प्रवेश]

रहमान—(चारो ओर को आग को देख कर चिल्लाकर) छोटे मियाँ! छोटे मियाँ!. अरे!...अरे! आग!. .आग लग गई है. (लाड को देख कर) है... मलका भी यहाँ! (अत्यधिक घबराकर ज़ोर ज़ोर से चिल्लाते हुए) दौड़ो! दौड़ो!.. आग!, आग! .. बचाओ! .... .

[नेपथ्य से कई मनुष्यों के दौड़ कर आने की आहट सुन पड़ती है. आग और बढ़ती है]

लघु-यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान—गोड़ के राजमहल मे शेरशाह का कमरा.

समय—दोपहर.

[कमरा यद्यपि उन दिनो के कमरो के सदृश्य ही बना है तथापि अब तक के सभी कमरो से कहीं बड़ा और कहीं अधिक सजा हुआ है. इस कमरे की दीवारों और छत की चित्रकारी बहुत बढ़िया है. दीवारों पर कई बड़े बड़े शीशे भी लगे है. दरवाजो की चौखटों और किवाड़ों की लकड़ी में खुदाव का काम है. दरवाजों पर ढाके की

رک کر گمبھیر ہو) تصویر محبت کو پیدا کر سکتی ہے ' پر تصویر کا جلنا محبت کو فنا نہیں کر سکتا . (آگ بہت بڑھ جاتی ہے کچھ رک کر) پاگل ! دیوانے ! . پاگل ! (اتہاس کر مورچھت ہو گرتی ہے)

[رحمان کا تیزی سے پرویش]

رحمان—(چاروں اور کی آگ کو دیکھ کر ' چلاکر) چھوٹے میاں ! چھوٹے میاں ! . ارے ! آگ ! .. آگ لگ گئی ہے . (لاڈ کو دیکھ کر) ہیں . ملکہ بھی یہاں ! (اتیادھک گھبرا کر زور زور سے چلاتے ہوئے) دوڑو ! دوڑو ! . آگ ! .. آگ ! . . بچاؤ . .

[نیپتھ سے کئی منشیوں کے دوڑ کر آنے کی آہٹ سن پڑتی ہے آگ اور بڑھتی ہے]

لگھو یونیکا

تیسرا درشیہ

استھان—گوڑ کے راج محل میں شیر شاہ کا کمرہ

سمے—دوپہر

[کمرہ یدیپی اُن دنوں کے کمروں کے سدرش ہی بنا ہے تتھاپی اب تک کے سبھی کمروں سے کہیں بڑا اور کہیں ادھک سجا ہوا ہے . اِس کمرے کی دیواروں اور چھت کی چترکاری بہت بڑھیا ہے . دیواروں پر کئی بڑے بڑے شیشے بھی لگے ہیں . دروازوں کی چوکھٹوں اور کواڑوں کی لکڑی میں کھداو کا کام ہے . دروازوں پر ڈھاکے کی

शेरशाह

(सेठ गोविन्द दास)

पांचवाँ अंक

दूसरा दृश्य*

[लाड लौट कर अंगीठी के निकट आती है और अपने आगरे वाले चित्र को जलता देख कर कुछ स्तब्ध सी रह जाती है.]

लाड (कुछ देर पश्चात) धीरे धीरे जल रही है!...इसे भी जला कर गये हो...यह...यह तस्वीर जो तुम्हारी और मेरी मुहब्बत की पहली निशानी थी ; पाक से पाक मुहब्बत की पाक से पाक निशानी! (कुछ रुक कर) पर...पर फिर तेजी से ही क्यो न जले ? (चिमटे को उठा कर आग इस तरह तेज करती है कि अब अंगीठी से ज्वाला सी निकलने लगती है. और एकाएक यह ज्वाला एक परदे में लगती है. आग फैलने लगती है, पर वह उस ओर कोई ध्यान न देकर चुपचाप अंगीठी की ओर ही देखती है. एकाएक अट्टहास कर) पगले!......दीवाने! (आग शीघ्रता से बढ़ती है, कुछ

---

* फरवरी के 'नया हिन्द' में शेरशाह नाटक जहाँ खतम हुआ है वहाँ भूल से लघु यवनिका छप गया है. दूसरा सीन खतम नहीं हुआ है. इस परचे मे भी वही सीन चल रहा है. 'हुनर' वास्ते एडिटर.

شیرشاہ

(سیٹھ گوبند داس)

پانچواں انک

دوسرا درشیہ *

[لاڈ لوٹ کر انگیٹھی کے نکٹ آتی ہے اور اپنے آگرے والے چتر کو جلتا دیکھ کر کچھ استبدھ سی رہ جاتی ہے]

لاڈ (کچھ دیر پشچات) دھیرے دھیرے جل رہی ہے!... اسے بھی جلا کر گئے ہو... یہ... یہ تصویر جو تمہاری اور میری محبت کی پہلی نشانی تھی ' پاک سے پاک محبت کی پاک سے پاک نشانی! (کچھ رُک کر) پر... پر پھر تیزی سے ہی کیوں نہ جلے (چمٹے کو اُٹھا کر آگ اِس طرح تیز کرتی ہے کہ اب انگیٹھی سے جوالا سی نکلنے لگتی ہے اور یکایک یہ جوالا ایک پردے میں لگتی ہے . آگ پھیلنے لگتی پر وہ اُس اور کوئی دھیان نہ دیکر چپ چاپ انگیٹھی کی اور ہی دیکھتی ہے . یکایک (اٹہاس کر) پگلے!...دیوانے! (آگ شیگھرتا سے بڑھتی ہے ' کچھ

---

* فروری کے ' نیا ھند ' میں شیر شاہ ناٹک جہاں ختم ہوا ہے وہاں بھول سے لگھو یونیکا چھپ گیا ہے . دوسرا سین ختم نہیں ہوا ہے . اس پرچے میں بھی وہی سین چل رہا ہے . ' ھنر ' واسطے ایڈیٹر .

बनाई और उन्हें भी व्याकरनी कहा जाता है जिन्होंने शब्दों के मूल (जड़) की खोज की. इन दो क़िस्मों के व्याकरनी तो पानिनी से सौ दो सौ बरस और शायद इससे भी कुछ और पहले हुए हों. लेकिन जो नई ज़बान संस्कृत गढ़ी गई उसके व्याकरनी पानिनी से पहले दो तीन ही हुए, और उनमें से कोई भी पानिनी से ५० बरस से ज़्यादा पहले नहीं हुआ.

मैंने सिर्फ़ ताज़ा तरीन किताबों का हवाला दिया है. वजह यह है कि इन पिछले दस बीस बरसों में भाषा शास्त्र और ख़ासकर संस्कृत की बहुत खोज ताज़ हुई है. जिसकी बाबत हमारी यूनिवर्सिटियों को अभी तक इल्म नहीं हुआ. अगर उन्हें इल्म होता तो उम्मीद है कि हमारी एसेम्बली ज़बान पर यह फ़ैसला न करती. देखना तो यह है कि देश को कब तक धोका दिया जा सकता है.

بنائی اور انهیں بهی ویاکرنی کہا جاتا ہے جنهوں نے شبدوں کے مول (جڑ) کی کهوج کی . ان دو قسموں کے ویاکرنی تو پانٹی سے سو دو سو برس اور شاید اس سے بهی کچه اور پہلے هوئے هوں . لیکن جو نئی زبان سنسکرت گڑهی گئی اس کے ویاکرنی پانٹی سے پہلے دو تین هی هوئے اور ان میں سے کوئی بهی پانٹی سے پچاس برس سے زیادہ پہلے نہیں هوا

میں نے صرف تازہ ترین کتابوں کا حوالہ دیا ہے . وجہ یہ ہے کہ ان پچهلے دس بیس برسوں میں بهاشا شاستر اور خاصکر سنسکرت کی بہت کهوج تاز هوئی ہے جس کی بابت هماری یونیورسٹیوں کو ابهی تک علم نہیں هوا . اگر انهیں علم هوتا تو اُمید ہے کہ هماری اسمبلی زبان پر یہ فیصلہ نہ کرتی دیکهنا تو یہ ہے کہ دیش کو کب تک دهوکا دیا جا سکتا ہے .

इन प्रमानों से यह तो साफ है कि पानिनी बुद्ध के बाद हुआ और एडीटर साहब का यह नोट कि पानिनी का ज़माना बुद्ध से लगभग ५०० बरस पहले का आम तौर पर माना जाता है, ठीक नहीं है. असल सवाल जो है वह यह है कि संस्कृत ज़बान जो खुद कहती है कि वह बनावटी है और क्यों और कब बनाई गई थी और वह क्यों फली फूली ? हमारे पंडित इस सवाल से कन्नी कतराते हैं. वजह साफ है. वह हिन्दी के बहाने संस्कृत का फिर प्रचार करने पर तुले हुए हैं ताकि फिर किसी तरह ब्राह्मन राज क़ायम किया जा सके.

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका जिल्द १९ सफ़ा ९६२ मे यों लिखा है " गो ज़बान की खोज हिन्दुस्तान मे सदियों से हो रही है, संस्कृत का व्याकरन उसी ज़माने मे बना जब बौद्ध धर्म फैला और इस में शक नहीं कि इस मत ने हिन्दुस्तान की ज़बानों के फैलने मे बहुत मदद दी. सफ़ा ९५४ मे लिखा है ' संस्कृत ज़बान मे जो सब से पहला पत्थर मिला है वह १५० ईस्वी का है. पत्थरों पर खोदे जाने की सरकारी ज़बान संस्कृत चौथी सदी ईसवी मे बनी. लेकिन इससे बहुत अर्सा पहले व्याकरनियों ने (जिन मे सबसे ज़्यादा मशहूर पानिनी चौथी सदी (ईसा से पहले) मे हुआ है) संस्कृत को इल्मी ज़बान बना लिया था.

इस मे शक नहीं कि पानिनी से पहले बहुत से व्याकरनी हुए हैं. चौसठ का नाम तो पानिनी मे दर्ज है लेकिन व्याकरनी व्याकरनी मे बहुत अन्तर है. एक तो व्याकरनी वह थे जिन्हो ने वैदिक ग्रामर

ان پرمانوں سے یہ تو صاف ہے کہ پانِنی بدھ کے بعد ہوا اور ایڈیٹر صاحب کا یہ نوٹ کہ پانِنی کا زمانہ بدھ سے لگ بھگ پانچسو برس پہلے کا عام طور پر مانا جاتا ہے ' ٹھیک نہیں ہے . اصل سوال جو ہے وہ یہ ہے کہ سنسکرت زبان جو خود کہتی ہے کہ وہ بناوٹی ہے اور کیوں اور کب بنائی گئی تھی اور وہ کیوں پھلی پھولی ؟ ہمارے پنڈت اس سوال سے کنی کتراتے ہیں وجہ صاف ہے . وہ ہندی کے بہانے سنسکرت کا پھر پرچار کرنے پر تلے ہوئے ہیں تاکہ پھر کسی طرح براہمن راج قائم کیا جا سکے

انسائیکلوپیڈیا برٹانیکا جلد ۱۹ صفحہ ۹۶۲ میں یوں لکھا ہے " گو زبان کی کھوج ہندستان میں صدیوں سے ہو رہی ہے سنسکرت کا ویاکرن اُسی زمانہ میں بنا جب بودھ دھرم پھیلا اور اس میں شک نہیں کہ اس مت نے ہندستان کی زبانوں کے پھیلنے میں بہت مدد دی " صفحہ ۹۵۴ میں لکھا ہے " سنسکرت زبان میں جو سب سے پہلا پتھر ملا ہے وہ ۱۵۰ عیسوی کا ہے . پتھروں پر کھودے جانیکی سرکاری زبان سنسکرت چوتھی صدی عیسوی میں بنی لیکن اس سے بہت عرصہ پہلے ویاکرنیوں نے (جسمیں سب سے زیادہ مشہور پانِنی چوتھی صدی (عیسیٰ سے پہلے) میں ہوا ہے) سنسکرت کو علمی زبان بنا لیا تھا .

اس میں شک نہیں کہ پانِنی سے پہلے بہت سے ویاکرنی ہوئے ہیں . ۶۴ کا نام تو پانِنی میں درج ہے . لیکن ویاکرنی ویاکرنی میں بہت انتر ہے . ایک ویاکرنی وہ تھے جنھوں نے ویدک گرامر

और पाँचवीं सदी ईस्वी के बीच ब्राह्मनों ने जितनी पुरानी संस्कृत की किताबें थीं उन्हें उलट पुलट दिया और उनमें बहुत सी मनगढ़न्त बातें जोड़ दीं.

जिन किताबों के आधार पर मैंने यह लेख लिखा था उनका प्रमान तो मैं अब दे नहीं सकता क्योंकि वह किताबें थीं इल्म जबान यानी भाषा शास्त्र पर और सारे देहली में ऐसी कोई लायब्रेरी नहीं जहां इस मजमून पर कोई ताज़ा किताब मिल सके अच्छा हुआ कि प्रमान ढूंढने के लिए सिर्फ तीन चार ही किताबें देखनी पड़ीं (१) इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका १९४६, (२) पानीकर की सर्वे आफ इंडियन हिस्ट्री, (३) मजूमदार राय चौधरी की एडवान्स्ड हिस्ट्री आफ इन्डिया. मजूमदार की हिस्ट्री के अनुसार बुद्ध सन् ५६६ (ईसा से पहले) में पैदा हुए और पानिनी और उसके चेले तीसरी सदी (ईसा से पहले) में हुए पानीकर की हिस्ट्री बुद्ध का जन्म सन् ६२३ (ईसा से पहले) याना सातवीं सदी (ईसा से पहले) और पानिनी की छठी सदी (ईसा से पहले) यानी लगभग एक सौ बरस बाद का बताती है इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका कहती है कि बौद्ध मत का प्रचार छठी सदी (ईसा से पहले) में हुआ (जिल्द ४ सफा ३२५) और जिल्द १९ और सफा ९७० में लिखा है कि पानिनी की तारीख की बाबत बहुत मतभेद रहा है लेकिन अब सही तौर से कहा जा सकता है कि वह सन ४०० (ईसा से पहले) में हुआ.

اور پانچویں صدی عیسوی کے بیچ براهمنوں نے جتنی پرانی سنسکرت کی کتابیں تھیں انهیں الٹ پلٹ دیا اور ان میں بہت سی من گهڑت باتیں جوڑ دیں ۔

جن کتابوں کے آدهار پر میں نے یہ لیکھ لکھا تھا ان کا پرمان تو میں اب دے نہیں سکتا کیونکہ وہ کتابیں تھیں علم زبان یعنی بھاشا شاستر پر اور سارے دهلی میں ایسی کوئی لائبریری نہیں جہاں اس مضمون پر کوئی تازہ کتاب مل سکے اچھا ہوا کہ پرمان ڈھونڈنے کے لئے صرف تین چار ہی کتابیں دیکھنی پڑیں (۱) انسائیکلوپیڈیا برٹانیکا ۱۹۴۶ (۲) پانیکر کی سروے آف انڈین هسٹری (۳) موجمدار رائے چودھری کی ایڈوانسڈ هسٹری آف انڈیا موجمدار کی هسٹری کے انوسار بدھ سن ۵۶۶ (عیسیٰ سے پہلے) میں پیدا ہوئے اور پانِنی اور اسکے چیلے تیسری صدی (عیسیٰ سے پہلے) میں ہوئے پانیکر کی هسٹری بدھ کا جنم سن ۶۲۳ (عیسیٰ سے پہلے) یعنی ساتویں صدی (عیسیٰ سے پہلے) اور پانِنی کو چھٹی صدی (عیسیٰ سے پہلے) یعنی لگ بھگ ایک سو برس بعد کا بتاتی ہے. انسائیکلوپیڈیا برٹانیکا کہتی ہے کہ بدھ مت کا پرچار چھٹی صدی (عیسیٰ سے پہلے) میں ہوا (جلد ۴ صفحہ ۳۲۵) اور جلد ۱۹ صفحہ ۹۷۰ میں لکھا ہے کہ پانِنی کی تاریخ کی بابت بہت مت بھید رہا ہے لیکن اب صحیح طور سے کہا جا سکتا ہے کہ وہ سن ۴۰۰ (عیسیٰ سے پہلے) میں ہوا

संस्कृत ज़बान

(भाई मदन गोपाल)

सितम्बर १९४९ के 'नया हिन्द' मे मेरा एक लेख 'संस्कृत जबान पर छपा था जिसका निचोड यह था कि बौद्ध धर्म के प्रचार को रोकने और ब्राह्मन राज कायम रखने के लिए ब्राह्मनो ने सस्कृत गढ़ी थी उसपर एडीटर साहब ने यह नोट दिया था कि 'पानिनी का जमाना आम तौर पर बुद्ध से लगभग ५०० बरस पहले का माना जाता है और यह भी माना जाता है कि पानिनी से पहले संस्कृत रूप ले चुकी थी और सस्कृत व्याकरन बन चुका था. लेखक ने अपनी राय के लिए कुछ प्रमान दे दिये होते तो अच्छा होता. हम इस लेख को केवल एक राय के तौर पर छाप रहे है." अचरज की बात यह है कि एडीटर साहब खुद तो कोई प्रमान नही देते, सिर्फ इतना ही कहना काफ़ी समझते है कि आम तौर पर यह माना जाता है. इसमे शक नहीं कि आम तौर पर बहुत सी गलत बाते सच्ची मानी जाती है, जैसे ब्राह्मन ब्रह्मा के सर से पैदा हुए और सूरज दुनिया के इर्द गिर्द फिरता है. यह भी मुमकिन है कि किसी पुरानी संस्कृत किताब मे किसी ब्राह्मन ने संस्कृत की बड़ाई जताने के लिए यह गप्प कहीं ठूँस दी हो. मुश्किल यह है कि आज कल किसी ऐतिहासिक बात के मामले मे पुरानी संस्कृत किताबो पर विश्वास नहीं रहा. क्योंकि आज कल के सब विद्वान जानते है कि दूसरी

سنسکرت زبان

(بھائی مدن گوپال)

ستمبر ۱۹۴۹ کے ' نیا ہند ' میں میرا ایک لیکھ سنسکرت زبان پر چھپا تھا جس کا نچوڑ یہ تھا کہ بودھ دھرم کے پرچار کو روکنے اور براھمن راج قائم رکھنے کے لئے براھمنوں نے سنسکرت گھڑی تھی . اسپر ایڈیٹر صاحب نے یہ نوٹ دیا تھا کہ '' پانینی کا زمانہ عام پر بدھ سے لگ بھگ پانچسو برس پہلے کا مانا جاتا ھے اور یہ بھی مانا جاتا ھے کہ پانینی سے پہلے سنسکرت روپ لے چکی تھی اور سنسکرت ویاکرن بن چکا تھا . لیکھک نے اپنی رائے کے لئے کچھ پرمان دیدئے ھوتے تو اچھا ھوتا . ھم اس لیکھ کو کیول ایک رائے کے طور پر چھاپ رھے ھیں '' اچرج کی بات یہ ھے کہ ایڈیٹر صاحب خود تو کوئی پرمان نہیں دیتے ' صرف اتنا ھی کہنا کافی سمجھتے ھیں کہ عام طور پر یہ مانا جاتا ھے اس میں شک نہیں کہ عام طور پر بہت سی غلط باتیں سچی مانی جاتی ھیں ' جیسے براھمن برھما کے سر سے پیدا ھوئے اور سورج دنیا کے ارد گرد پھرتا ھے . یہ بھی ممکن ھے کہ کسی پرانی سنسکرت کتاب میں کسی براھمن نے سنسکرت کی بڑائی جتانے کے لئے یہ گپ کہیں ٹھونس دی ھو . مشکل یہ ھے کہ آجکل کسی اتہاسک بات کے معاملے میں پرانی سنسکرت کتابوں پر وشواس نہیں رھا . کیونکہ آجکل کے سب ودوان جانتے ھیں کہ دوسری

आप का यह बाग़ गुलज़ार हुआ है और उन्ही की बदौलत मुझे यह अशर्फ़ियाँ मिली हैं.'

'ऐं! तब तो मैं बड़े अँधेरे मे रहा अब तक! अफ़सोस! अब आजाद होकर कहाँ जाओगे मेरे भाई ?'

'जिनकी बदौलत यह दिन देखना नसीब हुआ है, अब उनके कदम मुबारक छोड़कर और कहाँ जाऊँगा !'

'मुझे भी अपने साथ ले चलो भाई! गुनाहो का बोझ ढोते ढोते, गुलामो को सताते सताते मैंने अपनी इतनी जिन्दगी बिता दी. अब उनकी पनाह लूँगा, तौबा करूँगा. मुमकिन है, मेरी भी आकबत सुधर जाए.'

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गाधी की सलाह से, अक्तूबर १९४७ मे पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान मे उन्होने वहाँ की भयकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगो को भुगतने पड़ रहे है उनका बहुत ही दर्दनाक वर्नन किया है आखीर मे, आजकल की मुसीबतो को हल करने के लिये, कुछ सुभाव भी पेश किये है हमे विश्वास है कि पजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने मे इस बयान से बडी मदद मिलेगी

किताब उर्दू और नागरी दोनो लिखावटो मे मिल सकती है क़ीमत चार आने.

मैनेजर 'नया हिन्द' ४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

آپ کا یہ باغ گلزار ہوا ہے اور انھی کی بدولت مجھے یہ اشرفیاں ملی ھیں.'

'ایں! تب تو میں بڑے اندھیرے میں رہا اب تک! افسوس! اب آزاد ہوکر کہاں جاؤ گے میرے بھائی؟'

'جنکی بدولت یہ دن دیکھنا نصیب ہوا ہے' اب ان کے قدم مبارک چھوڑ کر اور کہاں جاؤں گا؟'

'مجھے بھی اپنے ساتھ لے چلو بھائی! گناہوں کا بوجھ ڈھوتے ڈھوتے غلاموں کو ستاتے ستاتے میں نے اپنی اتنی زندگی بتادی. اب ان کی پناہ لونگا' توبہ کروں گا ممکن ہے' میری بھی عاقبت سدھر جائے.'

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

لیکھک پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورا کیا تھا. اِس چھوٹے سے بیان میں اُنہوں نے وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ھیں اُن کا بہت ھی دردناک ورنن کیا ھے. آخیر میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کیلئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ھیں. ھمیں وشواس ھے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اِس بیان سے بڑی مدد ملے گی

کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ھے. قیمت چار آنے.

منیجر 'نیا ھند' ۴۸ بائی کا باغ' الہ آباد.

सामने पहुंचा और बोला—'आज मेरी आजादी का दिन है. जरा बाग़ तक चलिए और देखिए कि साढ़े तीन सौ दरख़्त मय फलो के खुली हुई हवा मे कितनी मस्ती से झूम रहे है.'

याक़ूब की आँखो मे ताज्जुब उतर आया. वह हक्का बक्का सा होकर सुलेमान का मुंह ताकने लगा और बोला—'क्या कह रहे हो सुलेमान ?

सुलेमान ने ख़ुशी मे झूमते झूमते जवाब दिया—'बाग़ में चलकर साढ़े तीन सौ पौधे देख लीजिए और मुझे इस ग़ुलामी की क़ैद से छुटकारा दीजिए.'

याक़ूब उसी वक्त बाग़ मे पहुँचा. उसने दरख्तो पर नजर डालते-डालते ताज्जुब मे डूब कर कहा—'क्या तुम जादू जानते हो सुलेमान ?'.

सुलेमान हँस कर बोला—'जादू ? क्या आपकी समझ मे यह दरख़्त जादू की करामात हैं ? जी नही, इन दरख्तो मे उस जादूगर की नजरे इनायत मुसकुरा रही है, जो इस वक़्त आप मे और मुझ में बोल रहा है.' इसके साथ ही उसने अशर्फ़ियो की थैली याक़ूब की तरफ़ बढ़ा दी और कहा—'लीजिए, यह अशर्फ़ियाँ। आप की शर्तें पूरी हो गईं, अब मैं आजाद हूं'

याक़ूब सन्नाटे में आ गया. जरा ठहर कर बोला—'ताज्जुब है ! तुमने इतना धन कहाँ पाया सुलेमान ?'

सुलेमान ने जवाब दिया—'सच बतलाऊँ ? आप जिन हज़रत मुहम्मद साहब को हमेशा गालियाँ दिया करते है, उन्ही की बदौलत

سامنے پھونچا اور بولا—'آج میری آزادی کا دن ھے . ذرا باغ تک چلئے اور دیکھئے کہ ساڑھے تین سو درخت مع پھلوں کے کھلی ھوئی ھوا میں کتنی مستی سے جھوم رھے ھیں .'

یعقوب کی آنکھوں میں تعجب اُتر آیا . وہ ھکا بکا سا ھوکر سلیمان کا منہ تاکنے لگا اور بولا—' کیا کہہ رھے ھو سلیمان ؟ '

سلیمان نے خوشی میں جھومتے جھومتے جواب دیا—'باغ میں چلکر ساڑھے تین سو پودے دیکھ لیجئے اور مجھے اِس غلامی کی قید سے چھٹکارا دیجئے .'

یعقوب اُسی وقت باغ میں پھونچا . اُس نے درختوں پر نظر ڈالتے ڈالتے تعجب میں ڈوب کر کہا—' کیا تم جادو جانتے ھو سلیمان ؟'

سلیمان ھنسکر بولا—'جادو ؟ کیا آپ کی سمجھ میں یہ درخت جادو کی کرامات ھیں ؟ جی نہیں . اِن درختوں میں اُس جادوگر کی نظر عنایت مسکرا رھی ھے' جو اس وقت آپ میں اور مجھ میں بول رھا ھے !' اس کے ساتھ ھی اس نے اشرفیوں کی تھیلی یعقوب کی طرف بڑھا دی اور کہا—' لیجئے' یہ اشرفیاں ! آپ کی شرطیں پوری ھو گئیں . اب میں آزاد ھوں .'

یعقوب سناٹے میں آگیا . ذرا ٹھہرکر بولا—' تعجب ھے ! تم نے اتنا دھن کہاں پایا سلیمان ؟'

سلیمان نے جواب دیا—' سچ بتلاؤں ؟ آپ جن حضرت محمد صاحب کو ھمیشہ گالیاں دیا کرتے ھیں' انھیں کی بدولت

भला यह कैसे हो सकता था कि मुहम्मद साहब जमीन खोदते या पौधे रोपते रहते और उनके प्रेमी चुपचाप हाथ पर हाथ रक्खे बैठे-बैठे देखा करते. वह सब मुहम्मद साहब के हज़ार मना करने पर भी न माने, खुरपी, फावड़े वग़ैरह लेकर बाग में जापहुंचे. नतीजा यह हुआ कि महीनो का काम दिनो मे खत्म हो गया.

नेक इरादो का नतीजा भी हमेशा नेक होता है. जब सुलेमान के साथ इतने प्रेमियो की नेक नियती के साथ मेहनत थी तो उसकी तमन्ना क्योंकर नाकाम रह सकती थी? देखते ही देखते पौधे लहलहा उठे उनमे पत्ते निकले, फूल खिले और फल भी उतर आए. सुलेमान खुशी से मतवाला हो गया दौड़ा-दौड़ा मुहम्मद साहब के पास पहुंचा और हाथ बांध कर बोला— हुजूर, तमाम दरख्त फलो से लद रहे है. आप को तकलीफ़ तो जरूर होगी, मगर जरा चलिए और मुलाहिजा कर लीजिए. मैने तो ख्वाब मे भी न सोचा था कि मेरी आजादी इतने क़रीब है .

मुहम्मद साहब के होठो पर फिर मुसकान की वही लकीरे खिच गई. उन्हों ने दोनो हाथ सामने फैलाकर बार बार अल्लाह का शुकिया अदा किया. इसके बाद सुलेमान को बैतुलमाल से चालीस अशर्फ़ियाँ दिलवा दी और कहा— ' जाइए आजादी हासिल कीजिए. मेरी दुआ है कि अल्लाह करे, आप को यह आजादी मुबारक हो और आप की बाकी जिन्दगी हॅसते-हॅसते बीते. आमीन ''

सुलेमान खिल उठा. नई जिन्दगी के उजाले ने उसके चेहरे को चमका दिया. मारे खुशी के वह पागल की तरह भागा, याकूब के

' بھلا یہ کیسے ہو سکتا تھا کہ محمد صاحب زمین کھودتے یا پودے روپتے رہتے اور اُن کے پریمی چپ چاپ پر ہاتھ رکھے بیٹھے بیٹھے دیکھا کرتے . وہ سب محمد صاحب کے ہزار منع کرنے پر بھی نہ مانے . کھرپی، پھاوڑے وغیرہ لے کر باغ میں جا پہونچے . نتیجہ یہ ہوا کہ مہینوں کا کام دنوں میں ختم ہو گیا .

نیک ارادوں کا نتیجہ بھی ہمیشہ نیک ہوتا ہے . جب سلیمان ساتھ اتنے پریموں کی نیک نیتی کے ساتھ محنت تھی تو اُس کی تمنا کیونکر نا کام رہ سکتی تھی ؟ دیکھتے ہی دیکھتے پودے لہلہا اُٹھے اُن میں پتے نکلے ' پھول کھلے اور پھل بھی اُتر آئے . سلیمان خوشی سے متوالا ہوگیا دوڑا دوڑا محمد صاحب کے پاس پہنچا اور ہاتھ باندھکر بولا— 'حضور ! تمام درخت پھلوں سے لد رہے ہیں . آپ کو تکلیف تو ضرور ہوگی ' مگر ذرا چلئے اور ملاحظہ کرلیجئے . میں نے تو خواب میں بھی نہ سوچا تھا . کہ میری آزادی اتنے قریب ہے '

محمد صاحب ہونٹوں پر پھر مسکان کی وہی لکیریں کھنچ گئیں اُنھوں نے دونوں ہاتھ سامنے پھیلاکر بار بار اللہ کا شکریہ ادا کیا . اسکے بعد سلیمان کو بیت المال سے چالیس اشرفیاں دلوائیں اور کہا— 'جائیے آزادی حاصل کیجئے میری دعا ہے کہ اللہ کرے آپ کو یہ آزادی مبارک ہو اور آپ کی باقی زندگی ہنستے ہنستے بیتے . آمین !'

سلیمان کھل اُٹھا' نئی زندگی کے اُجالے نے اُسکے چہرے کو چمکا دیا . مارے خوشی کے وہ پاگل کی طرح بھاگا ' یعقوب کے

पौधे भी लग जायँगे, फल भी देने लगेंगे और अशर्फियों की भी कमी न रहेगी'.

मुहम्मद साहब की बातों में कुछ ऐसा असर था कि वह सुलेमान के हृदय में उतर गया. उसके चेहरे से उदासी की छाया जाती रही, वह पक्का इरादा लेकर उठा और मुहम्मद साहब के सामने सर झुका कर चला गया.

सबेरा हुआ, तो मुहम्मद साहब हवा खोरी के लिए निकले और घूमते फिरते याक़ूब के बाग़ की तरफ़ जा पहुंचे देखते क्या हैं कि सुलेमान अपने काम में जुटा हुआ है. जिस्म पर पसीने की बूंदें झलमला आई हैं, मगर वह बराबर ज़मीन खोदे और पौधे रोपे जा रहा है. मुहम्मद साहब की आँखें भर आईं. वह भी उसके साथ ज़मीन खोदने और पौधे रोपने लगे.

सुलेमान घबरा कर बोला—' या हज़रत, यह क्या ग़ज़ब करते हैं आप, मुझे काँटों में क्यों घसीटते हैं. रहने दीजिए, यह तकलीफ़ न कीजिए. आप को दुआ भर चाहिए. मैं ख़ुद ही कुल काम निबटा लूँगा.'

मुहम्मद साहब ने सुलेमान के कन्धे पर हाथ रख कर जवाब दिया—' नहीं भाई, यह नहीं हो सकता. आप ग़ुलाम हैं, ग़ुलामी से छुटकारा पाने के लिये जो भी कोशिश करें, मेरा फ़र्ज़ है कि उस में दिल से आप का हाथ बटाऊँ. यह तो आप जानते ही हैं कि एक और एक ग्यारह हो जाते हैं. अगर हम दोनों मिल कर अपनी कोशिश चालू रक्खेंगे तो दो दिन का काम एक दिन में निबट जायगा.'

پودے بھی لگ جائیں گے ' پھل بھی دینے لگیں گے اور اشرفیوں کی بھی کمی نہ رہے گی ''

محمد صاحب کی باتوں میں کچھ ایسا اثر تھا کہ وہ سلیمان کے ھردے میں اتر گیا . اس کے چہرے سے اداسی کی چھایا جاتی رہی . وہ پکا ارادہ لیکر اٹھا اور محمد صاحب کے سامنے سر جھکا کر چلا گیا .

سویرا ہوا تو محمد صاحب ہوا خوری کے لئے نکلے اور گھومتے پھرتے یعقوب کے باغ کی طرف جا پہونچے . دیکھتے کیا ھیں کہ سلیمان اپنے کام میں جٹا ہوا ہے . جسم پر پسینے کی بوندیں جھلجھلا آئی ھیں مگر وہ برابر زمین کھودے اور پودے روپے جا رہا ہے . محمد صاحب کی آنکھیں بھر آئیں وہ بھی اس کے ساتھ زمین کھودنے اور پودے روپنے لگے .

سلیمان گھبرا کر بولا ' یا حضرت ' یہ کیا غضب کرتے ھیں آپ ! مجھے کانٹوں میں کیوں گھسیٹتے ھیں . رہنے دیجئے . یہ تکلیف نہ کیجئے . آپ کی دعا بھر چاھئے . میں خود ھی کل کام نبٹا لوں گا . '

محمد صاحب نے سلیمان کے کندھے پر ھاتھ رکھکر جواب دیا — ' نہیں بھائی ' یہ نہیں ہو سکتا . آپ غلام ھیں ' غلامی سے چھٹکارا پانے کے لئے جو بھی کوشش کریں ' میرا فرض ہے کہ اس میں دل سے آپ کا ھاتھ بٹاؤں یہ تو آپ جانتے ھی ھیں کہ ایک اور ایک گیارہ ہو جاتے ھیں . اگر ہم دونوں ملکر اپنی کوشش چالو رکھیں گے تو دو دن کا کام ایک دن میں نبٹ جائیگا . '

न होगी. मतलब यह कि मै न साढ़े तीन सौ पौधे लगा सकूंगा, न चालीस अशर्फ़ियाँ ला सकूंगा और न आज़ादी का हक़दार हो सकूंगा. अब तो आप ही का भरोसा है. अगर मुमकिन हो, तो मेरे लिए कुछ कीजिए नही तो इसी तरह घुट-घुट कर मर जाऊँगा।'

सुलेमान की उदासी और भी बढ़ गई और उसकी आँखो से टप-टप आँसू बरसने लगे

मुहम्मद साहब ने कहा—यह क्या करते है आप! पोंछिए—पोंछिए, आँसू पोंछिए! आँसू बहाना मर्द का काम नही, मर्द का काम है किस्मत से लड़ना, मर्द का काम है कोशिश करना आप कल से ही याक़ूब के बाग मे पौधे लगाना शुरू कर दीजिए.'

सुलेमान रंजीदा होकर बोला—'या हज़रत, यह क्या फरमाते हैं आप! भला मै साढ़े तीन सौ पौधे कैसे लगा सकूंगा? यह काम तो मेरी क़ूवत और हिम्मत से बाहर है—क़तई बाहर! और फिर चालीस अशर्फ़ियाँ? इतना धन तो मै तमाम जिन्दगी मे न कमा सकूंगा.

मुहम्मद साहब ने उसे तसल्ली दी और बड़े मीठे ढंग से कहा—'कोशिश कीजिए. कोशिश बहुत बड़ी चीज़ है अभी आप नही जानते कि अल्लाह कितना रहीम है—कितना कारसाज़ है! अगर इन्सान नेक नीयत से कोई काम करे. तो अल्लाह उसे उसका फल ज़रूर देता है. बस मेरा कहना मानिये कल सुबह से ही अपने काम मे लग जाइए. नतीजा अल्लाह की मर्ज़ी पर छोड़ दीजिये. वह चाहेगा, तो

نہ ہوگی. مطلب یہ کہ میں نہ ساڑھے تین سو پودے لگا سکوں گا ' نہ چالیس اشرفیاں لا سکوں گا . اور نہ آزادی کا حقدار ہو سکونگا . اب تو آپ ہی کا بھروسہ ہے اگر ممکن ہو تو میرے لئے کچھ کیجئے نہیں تو اسی طرح گھٹ گھٹ کر مر جاؤں گا . '

سلیمان کی اداسی اور بھی بڑھ گئی اور اُسکی آنکھوں سے ٹپ ٹپ آنسو برسنے لگے .

محمد صاحب نے کہا— ' یہ کیا کرتے ہیں آپ ! پونچھئے پونچھئے ' آنسو پونچھئے ! آنسو بہانا مرد کا کام نہیں مرد کا کام ہے قسمت سے لڑنا ' مرد کا کام ہے کوشش کرنا آپ کل سے ہی یعقوب کے باغ میں پودے لگانا شروع کر دیجئے

سلیمان رنجیدہ ہوکر بولے— ' یا حضرت ' یہ کیا فرماتے ہیں آپ ! بھلا میں ساڑھے تین سو پودے کیسے لگا سکوں گا ؟ یہ کام تو میری قوت اور ہمت سے باہر ہے—قطعی باہر ! اور پھر چالیس اشرفیاں ؟ اتنا دھن تو میں تمام زندگی میں نہ کما سکوں گا '

محمد صاحب نے اُسے تسلی دی اور بڑے میٹھے ڈھنگ سے کہا— ' کوشش کیجئے کوشش بہت بڑی چیز ہے ابھی آپ نہیں جانتے کہ اللہ کتنا رحیم ہے—کتنا کار ساز ہے ! اگر انسان نیک نیت سے کوئی کام کرے تو اللہ اُسے اُس کا پھل ضرور دیتا ہے بس میرا کہنا مانئے . کل صبح سے ہی اپنے کام میں لگ جائیے . نتیجہ اللہ کی مرضی پر چھوڑ دیجئے . وہ چاہے گا تو

सँभालते ही मैंने बरसों ज़रतुश्त के कलाम पर गौर किया मगर मेरी तसल्ली नही हुई. आख़िर मैं सौदागरो के एक काफले के साथ अरब की तरफ चल पड़ा. इरादा यह था कि यहाँ मूसाई और ईसाई मज़हब मे दिलचस्पी लूंगा. मगर हुआ कुछ और ही. सौदागरो ने मेरे साथ दग़ा की और मुझे यहाँ—यसरब के रहने वाले याक़ूब नाम के एक धनी यहूदी के हाथो बेच दिया. तब से इसी दोज़ख मे पड़ा हुआ हूँ और ख़ून के आँसू बहा बहा कर ज़िन्दगी की घड़ियाँ काट रहा हूं. क्या कहूं, मौत भी मुझसे दूर भागती है.'

'कैसा आदमी है याक़ूब ?'—मुहम्मद साहब ने सवाल किया.

'बहुत ही कमीना ! दिल तो जैसे उसका पत्थर है. ग़ुलामो को ज़ुल्म की चक्की मे पीसने वाला, दुनिया भर को बुराई करने वाला, आप को तो वह हमेशा गालियाँ दिया करता है'—सुलेमान ने जवाब दिया.

'आप ने ग़ुलामी से छुटकारा पाने के लिये उससे दरख्वास्त नहीं की ?'

'की क्यो नहीं—बीसो बार की ! मगर पत्थर पसीजना क्या जाने.'

'आख़िर वह कहता क्या है ?'

'कहता है कि हमारे बाग़ में छुहारो के साढ़े तीन सौ पौधे लगा दो और चालीस अशर्फ़ियाँ दो. साथ ही एक शर्त और है, जब तक पौधो में फल न उतरेंगे, तब तक आज़ादी हासिल

سنبهالتے هي ميں نے زر تشت کے کلام پر غور کیا مگر میري تسلي نہیں هوئی . آخر میں سوداگروں کے ایک قافلے کے ساتھ عرب کي طرف چل پڑا . ارادہ یہ تھا کہ یہاں موسائی اور عیسائي مذهب میں دلچسپی لوں گا . مگر هوا کچھ اور هي سوداگروں نے میرے ساتھ دغا کی اور مجھے یہاں—یثرب کے رهنے والے یعقوب نام کے ایک دهني یہودی کے هاتهوں بیچ دیا تب سے اسی دوزخ میں پڑا هوا هوں اور خون کے آنسو بہا بہا کر زندگي کی گهڑیاں کاٹ رها هوں . کیا کہوں ' موت بهی مجھسے دور بهاگتی هے '

' کیسا آدمی هے یعقوب ؟ ' محمد صاحب نے سوال کیا

' بہت هي کمینہ ! دل تو جیسے اُس کا پتھر هے . غلاموں کو ظلم کي چکی میں پیسنے والا ' دنیا بهر کي برائی کرنے والا' آپ کو تو وہ همیشہ گالیاں دیا کرتا هے '—سلیمان نے جواب دیا .

' آپنے غلامی سے چهٹکارا پانے کے لئے اُس سے درخواست نہیں کی ؟'

' کی کیوں نہیں—بیسوں بار کی ! مگر پتھر پسیجنا کیا جانے .'

' آخر وہ کہتا کیا هے .'

' کہتا هے کہ همارے باغ میں چهوهاروں کے ساڑهے تین سو پودے لگادو اور چالیس اشرفیاں دو . ساتھ هی ایک شرط اور هے ' جب تک پودوں میں پهل نہ اُتریں گے ' تب تک آزادي حاصل

'बड़ी ख़ुशी की बात है. बतलाइए, मैं आप के लिए क्या कर सकता हूँ?'

'मगर मैं आप को धोके में नही डालना चाहता. साफ साफ बतलाए देता हूँ कि मैं पारसी हूं—आग की पूजा करने वाला. आप के अल्लाह वाले असूल पर मेरा जरा भी यक़ीन नहीं है.'

'अल्लाह पर यकीन करें, चाहे न करें—यह तो आप की तबीयत का मामला है. मैं तो इतना ही जानता हूं कि आजादी हर इन्सान का पैदायशी हक है, फिर वह चाहे मुस्लिम हो, चाहे ईसाई, चाहे मूसाइ, चाहे बुत परस्त या चाहे और कोई मुझे आप अपना नाचीज ख़ादिम समझिए अगर मेरी कोशिश से आप की जरा भी भलाई हो सके, तो मै हमेशा तैयार रहूंगा—यह इतमीनान रखिए.'

पारसी की आँखो से झरझर आँसू बहने लगे. मुहम्मद साहब बोले—'सब्र से काम लो मेरे भाई! सब्र बेकसों और मोहताजो का सब से बडा सहारा है. सब्र ही बड़ी बड़ी मुश्किलों पर फतह पाता है बात चीत से मालूम होता है कि आप काबिल हैं, बडी साफ़ तबीयत रखते हैं. फिर इस नापाक ग़ुलामी की कैद मे क्यों कर फँस गए ?'

पारसी ने कहना शुरू किया—'अपनी बदक़िस्मती से. मुसीबत कहकर थोड़े ही आती है. वह तो इन्सान पर अचानक बिजली की तरह टूट पड़ती है. हजरत मैं ईरान का रहने वाला हूँ सुलेमान मेरा नाम है. मुझे मजहबी बातो का शौक़ बचपन से ही रहा है. होश

' بڑی خوشی کی بات ھے . بتلائیے ' میں آپ کے لئے کیا کر سکتا ھوں ؟ '

' مگر میں آپ کو دھوکے میں نہیں ڈالنا چاھتا . صاف صاف بتلائے دیتا ھوں کہ میں پارسی ھوں—آگ کی پوجا کرنے والا . آپ کے اللہ والے اصول پر میرا ذرا بھی یقین نہیں ھے . '

' اللہ پر یقین کریں ' چاھے نہ کریں—یہ تو آپ کی طبیعت کا معاملہ ھے . میں تو اتنا ھی جانتا ھوں کہ آزادی ھر انسان کا پیدائشی حق ھے . پھر وہ چاھے مسلم ھو ' چاھے عیسائی ' چاھے موسائی ' چاھے بت پرست یا چاھے اور کوئی . مجھے آپ اپنا ناچیز خادم سمجھئے اگر میری کوشش سے آپ کی ذرا بھی بھلائی ھو سکے تو میں ھمیشہ تیار رھونگا—یہ اطمینان رکھئے '

پارسی کی آنکھوں سے جھر جھر آنسو بہنے لگے . محمد صاحب بولے—' صبر سے کام لو میرے بھائی ! صبر بے کسوں اور محتاجوں کا سب سے بڑا سہارا ھے . صبر ھی بڑی بڑی مشکلوں پر فتح پاتا ھے بات چیت سے معلوم ھوتا ھے کہ آپ قابل ھیں ' بڑی صاف طبیعت رکھتے ھیں پھر اس ناپاک غلامی کی قید میں کیوں کر پھنس گئے ؟ '

پارسی نے کہنا شروع کیا—' اپنی بدقسمتی سے ' مصیبت کہکر تھوڑے ھی آتی ھے . وہ تو انسان پر اچانک بجلی کی طرح ٹوٹ پڑتی ھے . حضرت میں ایران کا رھنے والا ھوں سلیمان میرا نام ھے . مجھے مذھبی باتوں کا شوق بچپن سے ھی رھا ھے ھوش

दूसरे दिन की बात है. धुँधली शाम को निगलता हुआ रात का अँधेरा गहरा हो रहा था. मुहम्मद साहब मग़रिब की नमाज़ अदा कर चुके थे उनके सामने चराग़ का टिमटिमाता हुआ उजाला था और कितने ही प्रेमी आदमी मौजूद थे. सवाल जवाब चालू थे. प्रेमी लोग अपना अपना शक ज़ाहिर करते और मुहम्मद साहब बड़ी ख़ूबसूरती से उसका जवाब देते जाते थे. इतने मे झिझकते सहमते दबे पैरो वही आदमी दाख़िल हुआ. आज वह एक छोटी सी पोटली भी साथ लाया था. उसने बैठते बैठते पोटली मुहम्मद साहब के सामने बढ़ा दी.

मुहम्मद साहब ने दोनो हाथो से वह पोटली ले ली और अल्लाह का शुक्र अदा किया. फिर पोटली खोली तो उसमें कुछ सूखे हुए छुहारे नि ले. मुहम्मद साहब ने फ़ौरन तमाम छुहारे आस पास बैठे हुए लोगो को बाँट दिए—अपने लिए एक भी छुहारा न रक्खा. इसके बाद अपनी ख़ुशी भरी नज़रें उस आदमी पर डालीं, जिसके उदास चेहरे पर उम्मीद का धीमा सा उजाला झलक रहा था.

मुहम्मद साहब के होठो पर मुसकान की हलकी हलकी लकीरें उभर आईं और इसके साथ ही सुरीले गले से मीठी मीठी आवाज़ फूट निकली—'कहिए, मेरे लायक़ कोई ख़िदमत है ?'

'ऐ हज़रत, मैं एक बदनसीब ग़ुलाम हूं. ग़ुलामी से छुटकारा चाहता हूँ.'

دوسرے دن کی بات ہے . دھندھلی شام کو نگلتی ہوئی رات کا اندھیرا گہرا ہو رہا تھا . محمد صاحب مغرب کی نماز ادا کر چکے تھے اُن کے سامنے چراغ کا ٹمٹماتا ہوا اُجالا تھا اور کتنے ہی پریمی آدمی موجود تھے . سوال جواب چالو تھے پریمی لوگ اپنا اپنا شک ظاہر کرتے اور محمد صاحب بڑی خوبصورتی سے اُس کا جواب دیتے جاتے تھے اتنے میں جھجھکتے سہمتے دبے پیروں وہی آدمی داخل ہوا آج وہ ایک چھوٹی سی پوٹلی بھی ساتھ لایا تھا . اُس نے بیٹھتے بیٹھتے پوٹلی محمد صاحب کے سامنے بڑھادی .

محمد صاحب نے دونوں ہاتھوں سے وہ پوٹلی لے لی اور اللہ کا شکر ادا کیا . پھر پوٹلی کھولی تو اُس میں کچھ سوکھے ہوئے چھوہارے نکلے . محمد صاحب نے فوراً تمام چھوہارے آس پاس بیٹھے ہوئے لوگوں کو بانٹ دئیے—اپنے لئے ایک بھی چھوہارا نہ رکھا . اس کے بعد اپنی خوشی بھری نظریں اُس آدمی پر ڈالیں ، جسکے اُداس چہرے پر اُمید کا دھیما سا اُجالا جھلک رہا تھا .

محمد صاحب کے ہونٹھوں پر مسکان کی ہلکی ہلکی لکیریں اُبھر آئیں اور اسکے ساتھ ہی سریلے گلے سے میٹھی میٹھی آواز پھوٹ نکلی—' کہئے ' میرے لائق کوئی خدمت ہے ؟'

' اے حضرت ' میں ایک بدنصیب غلام ہوں . غلامی سے چھٹکارا چاہتا ہوں .'

आक़बत का सुधार

(भाई ज़हूर बख़्श)

बात उन दिनो की है, जब हज़रत मुहम्मद साहब मक्का छोड़ कर यसरब चले गए थे और कोबा पहाड़ पर रहने लगे थे. यसरब के लोग उनको बहुत चाहते और उनकी नसीहत से फ़ायदा उठाने के लिए अक्सर कोबा पहाड़ पर जाया करते थे.

एक दिन हज़रत ने फरमाया—'दुनिया मे ग़ुलामी सब से बड़ा गुनाह है जो इस गुनाह से बचता है वह अपने अल्लाह को ख़ुश रखता है जो इन्सान ग़ुलामों को आज़ादी देता है. वह अपने अल्लाह का सब से प्यारा काम करता है. कोई भी ग़ुलाम अपनी कमाई हुई दौलत से आज़ाद हो सकता है. मगर जो ग़ुलाम पैसा कमाने से मजबूर हो, उसे बैतुल-माल के ज़रिये आज़ादी मिलनी चाहिए'

सुनने वालो मे उतरती उम्र का एक ऐसा भी आदमी था जो हज़रत की यह बात सुनते ही मारे ख़ुशी के पागल सा हो उठा उसकी बुझी हुई आँखो मे आँसू छलछला आए मगर मन की बात ज़ाहिर करने के लिए शायद ठीक मौका नही था. इस लिए वह शहर की तरफ लौटती हुई भीड़ मे मिलकर धीरे धीरे ग़ायब हो गया.

عاقبت کا سدھار

(بھائی ظہور بخش)

بات اُن دنوں کی ھے ' جب حضرت محمد صاحب مکہ چھوڑ کر یثرب چلے گئے تھے اور کوبا پہاڑ پر رہنے لگے تھے ۔ یثرب کے لوگ اُن کو بہت چاہتے اور اُن کی نصیحت سے فائدہ اُٹھانے کے لئے اکثر کوبا پہاڑ پر جایا کرتے تھے ۔

ایک دن حضرت نے فرمایا—'دنیا میں غلامی سب سے بڑا گناہ ھے ۔ جو اس گناہ سے بچتا ھے وہ اپنے اللہ کو خوش رکھتا ھے جو انسان غلاموں کو آزادی دیتا ھے وہ اپنے اللہ کا سب سے پیارا کام کرتا ھے ۔ کوئی بھی غلام اپنی کمائی ہوئی دولت سے آزاد ہو سکتا ھے ۔ مگر جو غلام پیسہ کمانے سے مجبور ہو اُسے بیت المال کے ذریعے آزادی ملنی چاھئے '

سننے والوں میں اُترتی عمر کا ایک ایسا بھی آدمی تھا جو حضرت کی یہ بات سنتے ہی مارے خوشی کے پاگل سا ھو اُٹھا اُس کی بجھی ہوئی آنکھوں میں آنسو چھلچھلا آئے مگر من کی بات ظاہر کرنے کے لئے شاید ٹھیک موقع نہیں تھا اس لئے وہ شہر کی طرف لوٹتی ہوئی بھیڑ میں ملکر دھیرے دھیرے غائب ھو گیا ۔

सीरिया, ईराक़ सभी जगह मज़दूर आन्दोलन को दबाने का बहाना मिल गया और इस तरह साम्राजशाही की फिरक़ावाराना नीति कामयाब हुई इन सभी बातो मे साम्राजशाही को स्टालिनवादी भूटी कम्यूनिस्ट पार्टियो की ग़लत नीति से बड़ी मदद मिली. इसका ज़िक्र मै 'नया हिन्द' मे पिछले साल एक मज़मून मे कर चुका हूँ.

अगर यहूदी या अरब अब भी यह नही समझते कि क़ौमी तहरीक से ताल्लुक़ रखने वाले किसी मसले का हल देसी सरमायादारो की मदद से नही निकल सकता, और इस के लिये मज़दूर इनक़लाब. और दुनिया भर का मज़दूर इनक़लाब ज़रूरी है; तो उन्हे कामयाबी नही हो सकती और जहाँ तक यहूदी तहरीक का ताल्लुक है, उस का तो 'फ़िलिस्तीन चलो' का नारा भी क़ौमी तहरीक के अन्दर नही आता.

سیریا ' عراق سبھی جگہ مزدور آندولن دبانے کا بہانہ مل گیا اور اس طرح سامراج شاہی کی فرقہ وارانہ نیتی کامیاب ہوئی ۔ ان سبھی باتوں میں سامراج شاہی کو اسٹالن وادی جھوٹی کمیونسٹ پارٹیوں کی غلط نیتی سے بڑی مدد ملی . اس کا ذکر میں 'نیا ھند' میں پچھلے سال ایک مضمون میں کرچکا ہوں .

اگر یہودی یا عرب اب بھی یہ نہیں سمجھتے کہ قومی تحریک سے تعلق رکھنے والے کسی مسئلے کا حل دیسی سرمایہ‌داروں کی مدد سے نہیں نکل سکتا ' اور اس کے لئے مزدور انقلاب اور دنیا بھر کا مزدور انقلاب ضروری ہے تو انہیں کامیابی نہیں ہو سکتی . اور جہاںتک یہودی تحریک کا تعلق ہے ' اس کا تو 'فلسطین چلو' کا نعرہ بھی قومی تحریک کے اندر نہیں آتا

मैदान से उनका भागना, अरब की मजदूर जमाअत की भारी बरबादी थी. हैफ़ा की सन् १९४६ की सरकारी कर्मचारियों की बड़ी हड़तालें और १९४७ की तेल की सफ़ाई वाले कारखानों के मजदूरों की हड़तालें सारे अरब की सियासत में बड़ी अहमियत रखती थीं. इनमें अरब और यहूदी मजदूरों का पूरा सहयोग था और इनसे साम्राज्यशाही की जातीयता को उकसाने वाली नीति को भारी धक्का लगता था. मिस्र में भी, जहाँ फरवरी सन् १९४६ में मजदूर आन्दोलन अपनी आख़िरी हद तक पहुंच चुका था और कई दिनों तक मजदूर और विद्यार्थियों की कमेटियाँ कैरो और इस्कन्दरिया की गलियों पर काबिज थीं, मजदूर आन्दोलन फिर उस ऊँचाई तक नहीं पहुंचा. फिर भी सन् १९४७ में मेहालुलकुब्रा के बड़े सूती कारखाने में जिस में, ३०,००० मजदूर काम करते थे, हड़ताल का एलान हुआ, जिस में हथियार बन्द पुलिस से मुठ-भेड़ हुई. ५ अप्रैल सन् ४८ में पुलिस ने खुद हड़ताल की. इस्कन्द्रिया में भी हजारों मजदूरों ने हड़ताल की, जिन के जुलूस में हड़ताली पुलिस भी शामिल हुई. इस में मिस्री फौज को अमन क़ायम करने में दो दिन लग गये. इन हड़तालों में तेल की कम्पनियों, सूती मिलों, चीनी की मिलों में काम करने वाले मजदूरों ने हिस्सा लिया. इन आख़िरी हड़तालों के एक माह बाद ही, जब फ़िलिस्तीन पर हमला हुआ, तब मिस्री सरकार ने फ़ौजी कानून 'मारशल ला' के ज़रिये मजदूर तहरीक को दबा दिया. ट्रेड यूनियनों को दबाया गया और बायें बाजू के नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया गया. इसी तरह

میدان سے اُن کا بھاگنا ' عرب کی مزدور جماعت کی بھاری بربادی تھی . حیفہ کی ۱۹۴۶ کی سرکاری کرمچاریوں کی بڑی ہڑتالیں اور ۱۹۴۷ کی تیل کی صفائی والے کارخانوں کے مزدوروں کی ہڑتالیں سارے عرب کی سیاست میں بڑی اہمیت رکھتی تھیں . ان میں عرب اور یہودی مزدوروں کا پورا سہیوگ تھا اور ان سے سامراج شاہی کی جاتیتا کو اکسانے والی نیتی کو بھاری دھکا لگتا تھا . مصر میں بھی ' جہاں فروری سنہ ۱۹۴۶ میں مزدور آندولن اپنی آخری حد تک پہونچ چکا تھا اور کئی دنوں تک مزدور اور ودیارتھیوں کی کمیٹیاں کیرو اور اسکندریہ کی گلیوں پر قابض تھیں ' مزدور آندولن پھر اُس اونچائی تک نہیں پہونچا . پھر بھی سن ۱۹۴۷ میں محلہ الکبریٰ کے بڑے سوتی کارخانے میں جس میں ۳۰۰۰۰ مزدور کام کرتے تھے ' ہڑتال کا اعلان ہوا ' جس میں ہتھیار بند پولیس سے مٹھ بھیڑ ہوئی . ۵ اپریل سن ۴۸ میں پولس نے خود ہڑتال کی . اسکندریہ میں بھی ہزاروں مزدوروں نے ہڑتال کی ' جن کے جلوس میں ہڑتالی پولیس بھی شامل ہوئی . اس میں مصری فوج کو امن قایم کرنے میں دو دن لگ گئے . ان ہڑتالوں میں تیل کی کمپنیوں ' سوتی ملوں ' چینی کی ملوں میں کام کرنے والے مزدوروں نے حصہ لیا . اِن آخری ہڑتالوں کے ایک ماہ بعد ہی ' جب فلسطین پر حملہ ہوا ' تب مصری سرکار نے فوجی قانون ' مارشل لا ' کے ذریعے مزدور تحریک کو دبا دیا . ٹریڈ یونینوں کو دبایا گیا اور بائیں بازو کے نیتاؤں کو گرفتار کر لیا گیا . اِسی طرح

मजदूर आन्दोलन को धक्का

सामृाजशाही जमाने मे पिछड़े हुए मुल्कों की क़ौमी तहरीक का अगुआ वहाँ का सरमायादार नहीं हो सकता. यह बात दुनिया के दूसरे पिछड़े हुए मुल्कों की तरह बीच पूरब के अरब मुल्कों मे भी साफ़ है. मजदूर तहरीक ही इन क़ौमी तहरीकों की रहनुमा है पिछली लड़ाई के बाद सारी दुनिया मे मजदूर आन्दोलन की लहर उभरी या उभरने का रुख रखती थी. मगर इस तहरीक मे पिछड़े हुए देश का सरमायादार खास तौर से बहुत डरता था और उसने इस तहरीक को दबाने में मुल्क के साथ कोई भी गद्दारी का काम उठा नही रक्खा. जब कभी यह तहरीक जोर पकड़ती दिखाई देती थी, देसी सरमायादार सामृाजशाही खेमे मे जाकर इसे दबाने पर तुल जाते थे. जहाँ देशी सरमायादार कमजोर नजर आते थे, वहाँ सामृराजशाही अपनी तरफ से ऐसे जाल बिछा देती थी कि किसी को पता भी न चले और तहरीक खत्म हो जाये. यही बीच पूरब के देशों मे हुआ.

अगरचे यह नही कहा जा सकता कि अरब का मजदूर आन्दोलन कुचलने मे सामृाजशाही या देसी सरमायादारों की चाले पूरी तरह कामयाब हुई हैं, फिर भी सन् १९४८-४९ मे यह तहरीक बहुत दब गई. हाँ फिलिस्तीन मे जरूर अरब मजदूर जमाअत को भारी धक्का लगा. अरबों का फिलिस्तीन के मजदूरों के केन्द्र यानी मरकज हैफा से बडी तादाद मे भागना और इसी तरह जाफा और दूसरे किनारे के

مزدور آندولن کو دھکا

سامراج شاہی زمانے میں پچھڑے ہوئے ملکوں کی قومی تحریک کا اگوا وہاں کا سرمایہ دار نہیں ہو سکتا یہ بات دنیا کے دوسرے پچھڑے ہوئے ملکوں کی طرح بیچ پورب کے عرب ملکوں میں بھی صاف ہے مزدور تحریک ہی ان قومی تحریکوں کی رہنما ہے پچھلی لڑائی کے بعد ساری دنیا میں مزدور آندولن کی لہر ابھری یا ابھرنے کا رخ رکھتی تھی ۔ مگر اس تحریک سے پچھڑے ہوئے دیش کا سرمایہ‌دار خاص طور سے بہت ڈرتا تھا اور اس نے اس تحریک کو دبانے میں ملک کے ساتھ کوئی بھی غداری کا کام اٹھا نہیں رکھا جب کبھی یہ تحریک زور پکڑتی دکھائی دیتی تھی ' دیسی سرمایہ دار سامراج شاہی خیمے میں جاکر اسے دبانے پر تل جاتے تھے ۔ جہاں دیسی سرمایہ دار کمزور نظر آتے تھے وہاں سامراج شاہی اپنی طرف سے ایسے جال بچھا دیتی تھی کہ کسی کو پتہ بھی نہ چلے اور تحریک ختم ہو جائے۔ یہی بیچ پورب کے دیشوں میں ہوا ۔

اگرچہ یہ نہیں کہا جا سکتا کہ عرب کا مزدور آندولن کچلنے میں سامراج شاہی یا دیسی سرمایہ داروں کی چالیں پوری طرح کامیاب ہوئی ہیں پھر بھی ۱۹۴۸-۴۹ میں یہ تحریک بہت دب گئی ۔ ہاں فلسطین میں ضرور عرب مزدور جماعت کو بھاری دھکا لگا ۔ عربوں کا فلسطین کے مزدوروں کے کیندر یعنی مرکز حیفہ سے بڑی تعداد میں بھاگنا اور اسی طرح جافہ اور دوسرے کنارے کے

की ओर किया. फिलिस्तीन की जग के बहाने ब्रिटिश सरकार ने सूडान को मिस्र से पूरी तरह से अलग कर दिया और वहाँ एक झूटी लेजिस्लेटिव असेम्बली बनाई, जिस मे ब्रिटिश सरकार के हामी सरमायादार भर दिये गये, जिनको ब्रिटिश गवर्नर मुकर्रर करता है. अब मिस्र का सरमायादर ब्रिटिश साम्राजशाही से सूडान की जनता को लूटने के लिए सौदा करने मे मसरूफ है. यही हालत इराक़ मे हुई. वहां जब जनवरी १९४८ मे वेविन और बरतानिया की हामी इराकी सरकार के बीच मे पोर्ट समाउथ का समझौता हुआ, जिसमे ब्रिटिश सरकार को यह हक दिया गया कि वह अपने बीच-पूरब के फायदो की रक्षा के लिए इराक को अपने फौजी अड्डे की तरह इस्तेमाल करे, तब इराक के मजदूरो और विद्यार्थियो ने डटकर इसका विरोध किया और एक हफ्ते तक विरोध जाहिर करने का नतीजा यह हुआ कि इराकी रीजेन्ट को इस समझौते को रद्द करने का एलान करना पड़ा मगर फिलिस्तीन की लड़ाई के नतीजे मे एक साल बाद अक्तूबर १९४८ से बरतानिया के हामी इराकी नेता फिर इराक के मंत्रि मण्डल मे घुसने लगे और ६ जनवरी १९४९ को बीच पूरब मे ब्रिटिश सरकार का सबसे बड़ा हामी नूरी पाशा सईद इराक का वज़ीर आज़म चुना गया. इधर सीरिया और लेबनान को अलग अलग करने मे भी साम्राजशाही कामयाब रही और आखिर मे फिलिस्तीन का बटवारा करने के बाद साम्राजशाही इस बात मे पूरी तरह कामयाब हुई कि बालकन की तरह बीच पूरब के भी टुकड़े टुकड़े होगये

کی اور کیا. فلسطین کی جنگ کے بہانے برٹش سرکار نے سوڈان کو مصر سے پوری طرح سے الگ کردیا اور وهاں ایک جھوٹی لیجسلیٹو اسمبلی بنائی' جس میں برٹش سرکار کے حامی سرمایه دار بھر دئے گئے' جن کو برٹش گورنر مقرر کرتا هے. اب مصر کا سرمایه دار برٹش سامراج شاهی سے سوڈان کی جنتا کو لوٹنے کے لئے سودا کرنے میں مصروف هے. یہی حالت عراق میں هوئی. وهاں جب جنوری ۱۹۴۸ میں بیون اور برطانیه کی حامی عراقی سرکار کے بیچ میں پورٹس ماؤتھ کا سمجھوته هوا' جس میں برٹش سرکار کو یه حق دیا گیا که وه اپنے بیچ پورب کے فائدوں کی رکشا کے لئے عراق کو اپنے فوجی اڈے کی طرح استعمال کرے' تب عراق کے مزدوروں اور ودیارتھیوں نے ڈٹ کر اسکا وروده کیا اور ایک هفتے تک وروده ظاهر کرنے کا نتیجه یه هوا که عراقی ریجنٹ کو اس سمجھوتے کو رد کرنے کا اعلان کرنا پڑا مگر فلسطین کی لڑائی کے نتیجے میں ایک سال بعد اکتوبر ۱۹۴۸ سے برطانیه کے حامی عراقی نیتا پھر عراق کے منتری منڈل میں گھسنے لگے اور ۶ جنوری ۱۹۴۹ کو بیچ پورب میں برٹش سرکار کا سب سے بڑا حامی نوری پاشا سعید عراق کا وزیر اعظم چنا گیا ادھر سیریا اور لبنان کو الگ الگ کرنے میں بھی سامراج شاهی کامیاب رهی. اور آخر میں فلسطین کا بٹوارہ کرنے کے بعد سامراج شاهی اس بات میں پوری طرح کامیاب هوئی که بالکن کی طرح بیچ پورب کے بھی ٹکڑے ٹکڑے هوگئے.

में ३२ मे से सिर्फ़ २ मिस्री डायरेक्टर है. इस तरह हम देखते हैं कि अरब देशो की नीति मे साम्राजशाही दिन बदिन अपना असर बढ़ाती ही जा रही है.

साम्राजशाही की सियासी जीत

इन तमाम बातो मे साम्राजशाही की सियासी जीत भी साफ़ ज़ाहिर है. पहले ही कहा जा चुका है कि अरबी और यहूदी जनता को लड़ा कर साम्राजवादियो ने दोनो का ध्यान अपनी ओर से हटा दिया और वह फ़िलहाल यह भूल गये कि दोनो की तबाही की असल वजह साम्राजशाही लूट है. इराक मे यहूदियो की फाँसी और देश छोड़ने वाले यहूदियो का सजाय मौत, सीरिया, दमिश्क़ और अलप्पो मे, यहूदियो पर ज़ुल्म, मिस्र मे बहुत से यहूदियों को नज़रबंद करना वग़ैरह काम फ़िरक़ावाराना जज़्बे को भड़काते गये. सितम्बर १९४७ में जब यू० एन० ओ० ने मिस्रियो की मांग को नहीं माना था, तब मिस्र मे साम्राजशाही के विरोध की आग भड़क उठी थी. मगर एक साल के बाद जब ब्रिटिश सरकार ने यह एलान किया कि अन्तराष्ट्रीय हालत को निगाह मे रखकर ब्रिटिश सरकार इस बात के लिये तैयार नहीं है कि वह मिस्र से अपनी फ़ौज हटाय, तब मिस्र में इसके ख़िलाफ़ कोई आन्दोलन नहीं हुआ. ब्रिटिश साम्राज शाही के ख़िलाफ़ कुछ करने के बजाय मिस्र को फ़ौजी तानाशाही, सामन्त शाही गुट्ट ने मिस्र की जनता को वहाँ की कम गिनत जातियों के ख़िलाफ़ आतंकवाद की ओर भड़काया. ब्रिटिश सरकार ने इससे भी ज्यादा पक्का काम दक्खिन

میں ۳۲ میں سے صرف ۲ مصری ڈائرکٹر ہیں. اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ عرب دیشوں کی نیتی میں سامراج شاہی دن بدن اپنا اثر بڑھاتی ہی جا رہی ہے.

سامراج شاہی کی سیاسی جیت

ان تمام باتوں میں سامراج شاہی کی سیاسی جیت بھی صاف ظاہر ہے. پہلے ہی کہا جا چکا ہے کہ عربی اور یہودی جنتا کو لڑا کر سامراج وادیوں نے دونوں کا دھیان اپنی اور سے ہٹا دیا اور وہ فی الحال یہ بھول گئے کہ دونوں کی تباہی کی اصل وجہ سامراج شاہی لوٹ ہے. عراق میں یہودیوں کی پھانسی اور دیش چھوڑنے والے یہودیوں کو سزائے موت، سیریا، دمشق اور الیپو میں یہودیوں پر ظلم، مصر میں بہت سے یہودیوں کو نظر بند کرنا وغیرہ کام فرقہ وارانہ جذبے کو بھڑکاتے گئے. ستمبر ۱۹۴۷ میں جب یو. این. او. نے مصریوں کی مانگ کو نہیں مانا تھا، تب مصر میں سامراج شاہی کے ورودھ کی آگ بھڑک اٹھی تھی. مگر ایک سال کے بعد جب برٹش سرکار نے یہ اعلان کیا کہ انتر راشٹری حالت کو نگاہ میں رکھکر برٹش سرکار اس بات کے لئے تیار نہیں ہے کہ وہ مصر سے اپنی فوج ہٹائے، تب مصر میں اسکے خلاف کوئی آندولن نہیں ہوا. برٹش سامراج شاہی کے خلاف کچھ کرنے کے بجائے مصر کی فوجی تانا شاہی، سامنت شاہی گٹ نے مصر کی جنتا کو وہاں کی کم گنت جاتیوں کے خلاف آتنک واد کی اور بھڑکایا. برٹش سرکار نے اس سے بھی زیادہ پکا کام دکھن

साम्राजशाही फिर घुसी

सामृाजशाही ने, ख़ास कर अमरीकी सामृाजशाही ने इस हालत का फायदा उठा कर फिर घुसना शुरू किया. देशी सरमायादारों को कर्ज़ देना और देशी रोजगार मे अपना रुपया लगाना सामृाजशाही का खास प्रोग्राम हो गया सब से पहले तेल पर निगाह थी. सीरिया के देशी सरमायादारों को अमरीकी कम्पनियों को ज्यादा से ज्यादा रिआयत देनी पड़ी ब्रिटिश कम्पनिया लताकिया बन्दरगाह और करात जल योजना मे रुपया लगाने का मौका ढूंढ रही है. अमरीकी कम्पनियाँ स्वेज़ नहर के दोनो ओर मिस्र मे तेल के सोतों का पता लगा रही है इराक ने अमरीका से ४ करोड़ ८० लाख डालर और १० करोड डालर का कर्ज़ा मागा है साथ ही डेढ दो करोड़ का कर्ज़ उसने ब्रिटिश सामृाजशाही से मांगा है इसी तरह मिस्र ने इन्टर नैशनल बक से क़र्ज़ मागा है इसराईल को अमरीका ने १० करोड़ डालर का कर्ज़ दिया है. ४ नवम्बर १९४७. मे जब मिस्री सरमायादार आज की निस्बत अच्छी हालत मे था, 'मिस्री कम्पनी ला' का एलान हुआ जिसके मुताबिक किसी भी मिस्री ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनी मे ४० फी सदी डाइरक्टर मिस्री होने लाज़िमा थे. साम्राजशाही ने थोड़े ही अरसे मे इस कानून को तोड़ना शुरू किया. और ७ मार्च १९४९ को मिस्री सरकार एक नये इक़रार नामे के लिए मजबूर हुई, जिसके मुताबिक अब मिस्रीयों को स्वेज़ कनाल कम्पनी मे ११ सीटों की जगह ५ सीटों पर ही सब्र करना पड़ा. आज इस कम्पनी

سامراج شاهي پهر گهسی

سامراج شاهی نے، خاص کر امریکي سامراج شاهي نے اس حالت کا فائدہ اُٹھاکر پهر گهسنا شروع کیا دیشي سرمایه داروں کو قرض دینا اور دیشی روزگار میں اپنا روپیه لگانا سامراج شاهي کا خاص پرو گرام هوگیا. سب سے پہلے تیل پر نگاہ تهی. سیریا کے دیشي سرمایه داروں کو امریکي کمپنیوں کو زیادہ سے زیادہ رعایت دینی پڑي. برٹش کمپنیاں لتاکیا بندرگاہ اور فرات جل یوجنا میں روپیه لگانے کا موقع ڈهونڈ رهي هیں. امریکی کمپنیاں سوئز نهر کے دونوں اور مصر میں تیل کے سوتوں کا پته لگا رهي هیں عراق نے امریکه سے ۴ کروڑ ۸۰ لاکھ ڈالر اور ۱۰ کروڑ ڈالر کا قرضه مانگا هے. ساتھ هی ڈیڑھ دو کروڑ کا قرض اُسنے برٹش سامراج شاهی سے مانگا هے. اسی طرح مصر نے انٹر نیشنل بینک سے قرض مانگا هے. اسرائیل کو امریکه نے ۱۰ کروڑ ڈالر کا قرض دیا هے ۴ نومبر ۱۹۴۷ میں جب مصري سرمایه دار آج کی نسبت اچھی حالت میں تها ' مصري کمپنی لا ' کا اعلان هوا جس کے مطابق کسي بهی مصري جوائنٹ اسٹاک کمپنی میں ۴۰ فیصدي ڈائرکٹر مصری هونے لازمی تهے. سامراج شاهي نے تهوڑے هی عرصے میں اس قانون کو توڑنا شروع کیا' اور ۷ مارچ ۱۹۴۹ کو مصری سرکار ایک نئے اقرارنامے کے لئے مجبور هوئی جس کے مطابق اب مصریوں کو سوئز کنال کمپنی میں ۱۱ سیٹوں کی جگه ۵ سیٹوں پر هی صبر کرنا پڑا. آج اس کمپنی

फंस जाय, और मजदूरों व दूसरे शोषितों की तहरीक दब जाय, फिलिस्तीन मे पिछले तीस साल से साम्राजशाही बंदर यहूदी अरब बिल्लियों के झगड़े मे कभी इसका तो कभी उसका साथ देते रहे. यह कहने की जरूरत नही कि साम्राजशाही अपने सभी मनसूबो मे पूरी तरह कामयाब हुई है

अरबी यहूदी जंग मे लगकर बीच पूरब के सभी देशो को अपने देश का बहुत सा धन बरबाद करने के लिए मजबूर होना पड़ा। १९४६–४७ के आखिर मे मिस्री सरकार की रिजर्व खाते की रक़म ७ करोड़ मिस्री पौण्ड थी, फिलिस्तीन की लड़ाई मे मिस्र का खर्चा लगभग ३ करोड़ पौण्ड हुआ. इसके अलावा अप्रैल १९४९ मे ८० लाख पौण्ड ग़ैर मामूली फौजी खर्चा पास करने के लिए मिस्री सरकार मजबूर हुई. और खर्चों को निगाह मे रखने पर मुश्किल से अब मिस्री रिजर्व फण्ड एक करोड़ पौण्ड रह गया होगा, इराक की सरकार के १९४८–४९ के बजट मे ७ करोड़ ५० लाख इराकी दीनार का घाटा हुआ. इराक़ मे एक खौफ़नाक माली संकट है. सीरिया का रिजर्व फण्ड १९४९ तक सब खत्म हो गया. १९४९–५० के बजट मे सीरिया का कुल खर्च १२ करोड ९० लाख सीरिया का पौण्ड है. जिस मे लड़ाई की मद मे अब तक ७ करोड सीरिया का पौण्ड पास हो चुका है. यही हाल सभी अरब देशो का है. सरमायादारो ने पूरी कोशिश की कि लड़ाई का बोझ मजदूरों और बाक़ी ग़रीब जनता पर पड़े. लेकिन इस सब के बाद भी उनका भारी मुनाफा बरबाद हो गया.

پھنس جائے ' اور مزدوروں و دوسرے شوشتوں کی تحریک دب جائے . فلسطین میں پچھلے ۳۰ سال سے سامراج شاہی بندر یہودی عرب بلیوں کے جھگڑے میں کبھی اِس کا تو کبھی اُس کا ساتھ دیتے رہے یہ کہنے کی ضرورت نہیں کہ سامراج شاہی اپنے سبھی منصوبوں میں پوری طرح کامیاب ہوئی ہے .

عربی یہودی جنگ میں لگ کر بیچ پورب کے سبھی دیشوں کو اپنے دیش کا بہت سا دھن برباد کرنے کے لئے مجبور ہونا پڑا . ۱۹۴۶–۴۷ کے آخر میں مصری سرکار کی ریزرو کھاتے کی رقم سات کروڑ مصری پونڈ تھی . فلسطین کی لڑائی میں مصر کا خرچہ لگ بھگ ۳ کروڑ پونڈ ہوا اس کے علاوہ اپریل ۱۹۴۹ میں ۸۰ لاکھ پونڈ غیر معمولی فوجی خرچہ پاس کرنے کے لئے مصری سرکار مجبور ہوئی اور خرچوں کو نگاہ میں رکھنے پر مشکل سے اب مصری ریزرو فنڈ ایک کروڑ پونڈ رہ گیا ہوگا . عراق کی سرکار کے ۱۹۴۸–۴۹ کے بجٹ میں ۷ کروڑ ۵۰ لاکھ عراقی دینار کا گھاٹا ہوا . عراق میں ایک خوفناک مالی سنکٹ ہے . سیریا کا ریزرو فنڈ ۱۹۴۹ تک سب ختم ہو گیا . ۱۹۴۹–۵۰ کے بجٹ میں سیریا کا کل خرچ ۱۲ کروڑ ۹۰ لاکھ سیریا کا پونڈ ہے ' جس میں لڑائی کی مد میں اب تک ۷ کروڑ سیریا کا پونڈ پاس ہوچکا ہے یہی حال سبھی عرب دیشوں کا ہے . سرمایہ‌داروں نے پوری کوشش کی کہ لڑائی کا بوجھہ مزدوروں اور باقی غریب جنتا پر پڑے لیکن اِس سب کے بعد بھی اُن کا بھاری منافع برباد ہو گیا .

और सामान दिये, जिनसे वह चेकोस्लोवाकिया से लड़ाई के हथियार ख़रीद सका. १९४८ मे अरबो के गॉवो पर क़ब्ज़ा करके और ख़ाली कराके जेरूसलम के लिए सडक खोलने के लिए ब्रिटिश फौज ने यहूदियो को मौका दिया. डान और ग़ार वोल्ड की यहूदी बस्तियो मे उनकी मदद की और जून १९४८ मे यू० एन० ओ० ने जेरुसलम के यहूदियो को भूको मरते देख और उनकी पूरी फौजी हार को यक़ीनी देखकर पहला 'लड़ाई रोको' समझौता कराया और इस तरह उन्हे बचा लिया.

सन् १९४८ के शुरू मे फौजी ख़याल से यहूदी अच्छी हालत मे थे. इसलिए नहीं कि अरब कमज़ोर थे बल्कि इसलिए कि अरब नेता प्रतिगामी तरक्की के खिलाफ थे और उनको डर था कि ज़ोरदार क़ौमी तहरीक उनका भी ख़ात्मा कर देगी. अब ब्रिटिश सरकार ने मिस्र इराक. ट्रान्सजार्डन को हथियार दिये कि वह अरबो की मदद करे. अमरीका ने मार्च सन ४८ मे बॅटवारा करने से इनकार कर दिया अरबो को हमला करने को उकसाया, यहूदियो का हारते देखकर समझौता कराया और मिस्रियो को हारते देख फिर सुलह कराई. यह सब क्यो ? इसलिए कि यहूदी और अरब आपस मे लड़ते रहे. अरब सरमायादारो का पिछली लड़ाई में कमाया हुआ बड़ा सरमाया और मुनाफ़ा यहूदियो से लडने में बरबाद हो और बीच पूरब की अरब जनता साम्राज विरोधी तहरीक से अलग होकर फ़िरक़ावाराना मज़हबी लड़ाई में

اور سامان دئیے ' جن سے وہ چیکو سلوواکیا سے لڑائی کے ہتھیار خرید سکا . ۱۹۴۸ میں عربوں کے گاؤں پر قبضہ کرکے اور خالی کراکے یروسلم کے لئے سڑک کھولنے کے لئے برٹش فوج نے یہودیوں کو موقع دیا ' ڈان اور غارزولڈ کی یہودی بستیوں میں اُن کی مدد کی اور جون ۱۹۴۸ میں یو این . او نے یروسلم کے یہودیوں کو بھوکوں مرتے دیکھ اور اُن کی پوری فوجی ہار کو یقینی دیکھکر پہلا ' لڑائی روکو' سمجھوتہ کرایا اور اس طرح اُنھیں بچا لیا .

سن ۴۸ کے شروع میں فوجی خیال سے یہودی اچھی حالت میں تھے اس لئے نہیں کہ عرب کمزور تھے بلکہ اس لئے کہ عرب نیتا پرتی گامی ترقی کے مخالف تھے اور اُن کو ڈر تھا کہ زوردار قومی تحریک اُن کا خاتمہ کردیگی اب برٹش سرکار نے مصر' عراق اور ٹرانس جارڈن کو ہتھیار دیئے کہ وہ عربوں کی مدد کریں . امریکہ نے مارچ سن ۴۸ میں بٹوارہ کرانے سے انکار کردیا . عربوں کو حملہ کرنے کو اُکسایا یہودیوں کو ہارتے دیکھ سمجھوتہ کرایا مصریوں کو ہارتے دیکھ پھر صلح کرائی ' یہ سب کیوں ؟ اس لئے کہ یہودی اور عرب آپس میں لڑتے رہیں ' عرب سرمایہداروں کا پچھلی لڑائی میں کمایا ہوا بڑا سرمایہ اور منافع یہودیوں سے لڑنے میں برباد ہو اور بیچ پورب کی عرب جنتا سامراج ورودھی تحریک سے الگ ہوکر فرقہوارانہ مذہبی لڑائی میں

हद तक तरक्क़ी देने की ताक़त नहीं है. इन सभी मुल्को की क़ौमी तहरीक की कामयाबी के लिये मजदूरों की रहनुमाई शर्त है. जहाँ तक यहूदी जाति को वतन यानी रहने की जगह देने का ताल्लुक़ है, यह उस समूची दुनिया के इन्क़लाब पर मुनहसर है, जिसका मक़सद उस सरमायादारी को मिटाना है, जिसकी वजह से दुनिया के हर मुल्क के मजदूर और दूसरे ग़रीब हर तरह की परेशानी बरदाश्त कर रहे है और कहने की जरूरत नहीं कि दर बदर मारे मारे फिरने वाले यहूदियो को भी इसी तरह की एक और परेशानी का शिकार होना पड़ रहा है.

फ़िलिस्तीन का बँटवारा

कुछ लोगो का खयाल है कि फ़िलिस्तीन के बँटवारे से यहूदी क़ौमी तहरीक कामयाब हो गई और इसराईल का नया यहूदी राज क़ायम करके अंग्रेजी अमरीकी साम्राजशाही को नीचा देखना पड़ा. जो लोग नाम की यहूदी क़ौमी तहरीक मे साम्राज-विरोधी जंग की कामयाबी देखते है, उन्हे तह तक जाने पर मालूम होगा कि दर असल इस सिलसिले मे साम्राजशाही को ही हर मानी में कामयाबी हुई है और जो कुछ हुआ है अंग्रेजी अमरीकी साम्राजशाही की ही रजामंदी और कोशिशों का नतीजा है, जो इसकी सारी दुनिया मे बरती जाने वाली नई नीति के बिलकुल मुआफ़िक है. यू० एन० ओ० मे अमरीकी नुमाइन्दो ने अपने असर वाले फ़िलिपाइन्स वग़ैरा मुल्को के नुमाइन्दो से फ़िलिस्तीन के बँटवारे का समर्थन कराया. अमरीका ने इसराईल को रूपये

حد تک ترقی دینے کی طاقت نہیں ہے . ان سبھی ملکوں کی قومی تحریک کی کامیابی کے لئے مزدوروں کی رہنمائی شرط ہے . جہاں تک یہودی جاتی کو وطن یعنی رہنے کی جگہ دینے کا تعلق ہے ' یہ اس سموچی دنیا کے انقلاب پر منحصر ہے جسکا مقصد اُس سرمایہداری کو مٹانا ہے ' جس کی وجہ سے دنیا کے ہر ملک کے مزدور اور دوسرے غریب ہر طرح کی پریشانی برداشت کر رہے ہیں اور کہنے کی ضرورت نہیں کہ در بدر مارے مارے پھرنے والے یہودیوں کو بھی اسی طرح کی ایک اور پریشانی کا شکار ہونا پڑ رہا ہے

فلسطین کا بٹوارہ

کچھ لوگوں کا خیال ہے کہ فلسطین کے بٹوارے سے یہودی قومی تحریک کامیاب ہوگئی اور اسرائیل کا نیا یہودی راج قائم کرکے انگریزی امریکی سامراج شاہی کو نیچا دیکھنا پڑا . جو لوگ نام کی یہودی قومی تحریک میں سامراج وردھی جنگ کی کامیابی دیکھتے ہیں ' انہیں تہ تک جانے پر معلوم ہوگا کہ دراصل اِس سلسلے میں سامراج شاہی کو ہی ہر معنی میں کامیابی ہوئی ہے اور جو کچھ ہوا ہے انگریزی امریکی سامراج شاہی کی ہی رضامندی اور کوششوں کا نتیجہ ہے ' جو اسکی ساری دنیا میں برتی جانے والی نئی نیتی کے بالکل موافق ہے یو . این . او . میں امریکی نمائندوں نے اپنے اثر والے فلپائنس وغیرہ ملکوں کے نمائندوں سے فلسطین کے بٹوارے کا سمرتھن کرایا . امریکہ نے اسرائیل کو روپئے

फ़िलिस्तीन मे वापस जा कर नये सिरे से उद्योग धन्धे कायम करना और फिर उसके लिये दुनिया मे बाज़ार खोजना और इसके लिये दूसरी साम्राजशाही ताक़तो के मुक़ाबले मे फौजें खडी करना उनकी पतन की हालत मे गैर मुमकिन था. अपनी बचत का उन्हे भी एक ही रास्ता सूझा—फ़िलिस्तीन वापस जाने की तहरीक का हामी होना. उन्होंने सोचा कि यूरोप के यहूदी जितनी तादाद मे फ़िलिस्तीन वापस जायंगे, उतना ही वहाँ की यहूदी-विरोधी तहरीक कमज़ोर पड़ेगी और उनको वहाॅ रहने दिया जायगा. यह बात और है कि वह अच्छी तरह जानते थे कि अगर उन्हे फ़िलिस्तीन पूरा का पूरा मिल भी जाय तो उसके रकबे मे इतनी ताकत नहीं है कि दुनिया के यहूदियो के एक हिस्से को भी बसा सके. इसी तरह यह बात भी और है कि जहाॅ कहीं यहूदी सरमायादार मुल्क छोडने के लिये मजबूर होते रहे है, वहाॅ वह यहूदी कौमी तहरीक के भी हामी हो जाते रहे है—सब कुछ हाथ से जाता हो तो जो मिले उसी पर सन्तोष होना चाहिए! इन सारी बातो का नतीजा यह निकलता है कि यहूदी कौमी तहरीक का रहनुमा दुनिया मे बिखरा हुआ और फ़िलिस्तीन का निचला दरमियानी तबका और फ़िलिस्तीन का देसी सरमायादार है. जिसमे साम्राजशाही ज़माने मे इस तहरीक को मुकम्मल बनाने की खुद कोई ताक़त नहीं है—उसी तरह जैसे हिंदुस्तान, लंका, बर्मा, मलाया, स्याम इंडोनेशिया चीन वगैरह के सरमायादारो और निचले दरमियानी तबके के लोगो मे इन मुल्को की कौमी तहरीक को कामयाब बनाने, यानी सरमायादारी को पूर

فلسطین میں واپس جاکر نئے سرے سے اُدیوگ دھندے قائم کرنا اور پھر اس کے لئے دنیا میں بازار کھوجنا اور اس کے لئے دوسری سامراج شاہی طاقتوں کے مقابلے میں فوجیں کھڑی کرنا اُن کی پتن کی حالت میں غیر ممکن تھا ۔ اپنی بچت کا اُنہیں بھی ایک ہی راستہ سوجھا۔فلسطین واپس جانے کی تحریک کا حامی ہونا ۔اُنہوں نے سوچا کہ یورپ کے یہودی جتنی تعداد میں فلسطین واپس جائینگے ، اُتنا ہی وہاں کی یہودی ویرودھی تحریک کمزور پڑےگی اور اُن کو وہاں رہنے دیا جائیگا ۔ یہ بات اَور ہے کہ وہ اچھی طرح جانتے تھے کہ اگر اُنہیں فلسطین پورا کا پورا مل بھی جائے تو اس کے رقبے میں اتنی طاقت نہیں ہے کہ دنیا کے یہودیوں کے ایک حصے کو بھی بسا سکے اسی طرح یہ بات بھی اَور ہے کہ جہاں کہیں یہودی سرمایہدار ملک چھوڑنے کے لئے مجبور ہوتے رہے ہیں ، وہاں وہ یہودی قومی تحریک کے بھی حامی ہوجاتے رہے ہیں — سب کچھ ہاتھ سے جاتا ہو ، تو جو ملے اُسی پر سنتوش ہونا چاہئے ! اِن ساری باتوں کا نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ یہودی قومی تحریک کا رہنما دنیا میں بکھرا ہوا اَور فلسطین کا نچلا درمیانی طبقہ اور فلسطین کا دیسی سرمایہدار ہے ، جس میں سامراج شاہی زمانے میں اس تحریک کو مکمل بنانے کی خود کوئی طاقت نہیں ہے — اُسی طرح جیسے ہندستان لنکا برما ، ملایا ، سیام ، انڈونیشیا چین وغیرہ کے سرمایہداروں اور نچلے درمیانی طبقے کے لوگوں میں اِن ملکوں کی قومی تحریک کو کامیاب بنانے یعنی سرمایہ داری کو پوری

सरमायादारी का वह इन्कलाबी दौर, जिसमे उसने साम तवाद के ख़िलाफ़ जेहाद बोलकर, नये ज़माने की बड़े पैमाने पर होने वाली सनअत व हरफ़त को तरक़्क़ी दी थी, ख़त्म हो चुका था अब सरमायादारी अपनी आख़िरी मंज़िल पर पहुंच कर सड़ने लगी थी. सरमायादारी अपनी इस मंज़िल पर, जिसे हम साम्राजवाद कहते है, पहुंच कर उन सब ताक़तो को खो देती है. जो उसे अपने शुरू के ज़माने मे हासिल थीं. इसका लाज़िमी नतीजा यह था कि दूसरी जातियो की तरह यहूदी जाति के भी मुख़्तलिफ़ तबक़े पूंजीवाद की सड़न की बदबू महसूस करते. होशियार यहूदी सरमायादार अपने मसलो को दुनिया के दूसरे सरमायादारो की तरह सोच रहे थे. इधर निचले दरमियानी तबक़े के यहूदी किसानें वग़ैरा, जो सर-मायादारी की इस आख़िरी मंज़िल पर दूसरी क़ौमो के निचले दरमियानी तबक़े के लोगो की तरह ही बढ़ती हुई ग़रीबी, बेरोज़गारी और लूट के शिकार हो रहे थे, के सामने एक जाति विरोधी तहरीक खड़ी हो गई रूसी, पोलिश किसान अपनी तबाही की वजह यहूदियो को समझ कर, उनके ख़िलाफ़ भड़क उठे. इधर पच्छिमी मुल्को के सर-मायादारो ने भी यहूदी सरमायादारो के मुक़ाबले को अपनी तबाही का कारन समझा. यहूदी नस्ल के ख़िलाफ़ एक तहरीक उठ गइ, जिसका जवाब यहूदी निचले दरमियानी तबक़े के लोगों ने अपनी 'फ़िलिस्तीन वापस चलो' की तहरीक की शकल मे दिया. बड़े बड़े यहूदी सरमाया-दार इस तहरीक से दिली हमदर्दी नही रखते थे. वह जानते थे कि

سرمایہ داری کا وہ انقلابی دور، جسموں اُس نے سامنت واد کے خلاف جہاد بول کر، نئے زمانے کی بڑے پیمانے پر ہونے والی صنعت و حرفت کو ترقی دی تھی، ختم ہو چکا تھا اب سرمایہ داری اپنی آخری منزل پر پہونچ کر سڑنے لگی تھی۔ سرمایہ داری اپنی اِس منزل پر، جسے ہم سامراج واد کہتے ہیں پہونچ کر اُن سب طاقتوں کو کھو دیتی ہے، جو اُسے اپنے شروع کے زمانے میں حاصل تھی۔ اِس کا لازمی نتیجہ یہ تھا کہ دوسری جاتیوں کی طرح یہودی جاتی کے بھی مختلف طبقے پونجی واد کی سڑن کی بدبو محسوس کرتے۔ ہوشیار یہودی سرمایہ دار اپنے مسئلوں کو دنیا کے دوسرے سرمایہ داروں کی طرح سوچ رہے تھے۔ اِدھر نچلے درمیانی طبقے کے یہودی کسان وغیرہ، جو سرمایہ داری کی اس آخری منزل پر دوسری قوموں کے نچلے درمیانی طبقے کے لوگوں کی طرح ہی بڑھتی ہوئی غریبی، بے روزگاری اور لوٹ کے شکار ہو رہے تھے، کے سامنے ایک جاتی وِرودھی تحریک کھڑی ہوگئی روسی، پولش کسان، اپنی تباہی کی وجہ یہودیوں کو سمجھکر اُن کے خلاف بھڑک اُٹھے۔ اِدھر پچھمی ملکوں کے سرمایہ داروں نے بھی یہودی سرمایہ داروں کے مقابلے کو اپنی تباہی کا کارن سمجھا. یہودی نسل کے خلاف ایک تحریک اُٹھ گئی، جس کا جواب یہودی نچلے درمیانی طبقے کے لوگوں نے اپنی "فلسطین واپس چلو" کی تحریک کی شکل میں دیا. بڑے بڑے یہودی سرمایہ دار اس تحریک سے دلی ہمدردی نہیں رکھتے تھے۔ وہ جانتے تھے کہ

यहूदी क़ौमी तहरीक, उसकी ख़ामियां और नतीजे

(भाई ओंकार नाथ शास्त्री)

सन् ७० के जेरूसलम के पतन के बाद यहूदी यूरोप और दुनिया के अलग अलग हिस्सो में जाकर बसने के लिये मजबूर हुए. तब से लगभग १८०० बरस तक वह जहाँ कहीं गये वहाँ की हालत से ही सन्तुष्ट होकर वहाँ की तिजारत और दूसरे पेशो से अपना ताल्लुक पैदा करके जिन्दगी बिताने लगे. इस लम्बे अरसे तक न उन्हें फ़िलिस्तीन वापस जाने की बात सूझी, न सेमिटिक जाति पर होने वाले जुल्मो के विरोध का सवाल ही उनके सामने पेश हुआ. क्या वजह है कि उन्नीसवी सदी के आख़िरी हिस्से मे 'एकाएक' दुनिया के यहूदी एक क़ौमी तहरीक के हामी होगये और 'फ़िलिस्तीन वापस चलो' उनका नारा होगया ? इस सवाल को हमने लेख के शुरू मे ही इसलिये पेश किया है, क्योंकि इसके जवाब से यहूदी क़ौमी तहरीक की वह सारी ख़ामियाँ ज़ाहिर होजाती है, जिनपर हम रोशनी डालना चाहते है.

इस सवाल का जवाब देने के लिए उन्नीसवी सदी के आख़िरी हिस्से को, यूरोप के मुख़तलिफ़ मुल्को की सामाजिक-आर्थिक हालत का ज़िक्र करना जरूरी है. इस वक़्त तक रूस के अलावा यूरोप के सभी मुल्कों में क़ौमी तहरीकें अपनी मंज़िल 'पूरी' कर चुकी थीं.

یہودی قومی تحریک، اُسکی خامیاں اور نتیجے

(بھائی اونکار ناتھ شاستری)

سن ۷۰ کے یروسلم کے پتن کے بعد یہودی یورپ اور دنیا کے الگ الگ حصوں میں جاکر بسنے کے لئے مجبور ہوئے. تب سے لگ بھگ ۱۸۰۰ برس تک وہ جہاں کہیں گئے، وہاں کی حالت سے ہی سنتشٹ ہو کر، وہاں کی تجارت اور دوسرے پیشوں سے اپنا تعلق پیدا کرکے زندگی بتانے لگے. اِس لمبے عرصے تک نہ انہیں فلسطین واپس جانے کی بات سوجھی نہ سیمیٹک جاتی پر ہونے والے ظلموں کے ورودھ کا سوال ہی اُن کے سامنے پیش ہوا کیا وجہ ہے کہ انیسویں صدی کے آخری حصے میں 'ایکایک' دنیا کے یہودی ایک قومی تحریک کے حامی ہوگئے اور 'فلسطین واپس چلو' اُن کا نعرہ ہو گیا؟ اس سوال کو ہم نے لیکھ کے شروع میں ہی اس لئے پیش کیا ہے کیونکہ اس کے جواب سے یہودی قومی تحریک کی وہ ساری خامیاں ظاہر ہو جاتی ہیں، جن پر ہم روشنی ڈالنا چاہتے ہیں

اس سوال کا جواب دینے کے لئے اُنیسویں صدی کے آخری حصے کی، یورپ کے مختلف ملکوں کی ساماجک آرتھک حالت کا ذکر کرنا ضروری ہے. اس وقت تک روس کے علاوہ یورپ کے سبھی ملکوں میں قومی تحریکیں اپنی منزل 'پوری' کر چکی تھیں.

कोना कोना जाग उठेगा
चप्पा चप्पा जाग उठेगा
तप्पा तप्पा जाग उठेगा
क़स्बा क़स्बा जाग उठेगा
सूबा सूबा जाग उठेगा
दरिया दरिया जाग उठेगा
सहरा सहरा जाग उठेगा
जीवन सपना जाग उठेगा

کونا کونا جاگ اُٹھے گا
چپہ چپہ جاگ اُٹھے گا
تپہ تپہ جاگ اُٹھے گا
قصبہ ' قصبہ جاگ اُٹھے گا
صوبہ ' صوبہ جاگ اُٹھے گا
دریا ' دریا جاگ اُٹھے گا
صحرا صحرا جاگ اُٹھے گا
جیون سپنا جاگ اُٹھے گا

भारत के आकाश पे साथी
उदयाचल की ओट से साथी
वह रक्तिम पो फूट रही है
　　अंगड़ाई तोड़ता एशिया
　　बद आंखे मलता अफरीक़ा
　　दमन दलित हबशी अमरीका
　　गहरी नींद से चौंक उठे हैं
देश देश मे महा क्रान्ति की
रनचंडी हुंकार रही है
सौ बल खाती हुई कुचल कर
या नागिन फुफकार रही है
　　कारीगर, मज़दूर, किसान
　　कडीयल और बिगडैल जवान
　　काँधे से काँधा जोड़ेंगे
　　दुनिया पर धावा बोलेंगे
धरती का तख़्ता उलटेंगे
दुनिया मे सर्वोदय होगा
नया समाज आंखे खोलेगा
नई सभ्यता क़ायम होगी
　　ज़र्रा ज़र्रा जाग उठेगा
　　कतरा कतरा जाग उठेगा
　　पत्ता पत्ता जाग उठेगा
　　बूटा बूटा जाग उठेगा

بھارت کے آکاش میں ساتھی
اُدیا چل کی اوٹ سے ساتھی
وہ رکتم پو پھوٹ رھی ھے
　　انگڑائی توڑتا ایشیا
　　بند آنکھیں ملتا افریقہ
　　دمن، دلت حبشی امریکہ
　　گہری نیند سے چونک اُٹھے ھیں
دیش دیش میں مہا کرانتی کی
رن چنڈی، ھنکار رھی ھے
سو بل کھاتی ھوئی کچل کر
یا ناگن پھنکار رھی، ھے
　　کاریگر مزدور، کسان
　　کڑیل اور بگڑیل جوان
　　کاندھے سے کاندھا جوڑیں گے
　　دنیا پر دھاوا بولیں گے
دھرتی تختہ کا اُلٹیں گے
دنیا میں سروودے ھوگا
نیا سماج آنکھیں کھولے گا
نئی سبھیتا قائم ھوگی
　　ذرہ ذرہ جاگ اُٹھے گا
　　قطرہ قطرہ جاگ اُٹھے گا
　　پتہ پتہ جاگ اُٹھے گا
　　بوٹا بوٹا جاگ اُٹھے گا

बीता हुआ "कल" औरों का था
आने वाला "कल" अपना है

सर्वोदय के सुख सपने मे
कौन पुकार रहा है साथी ?
जीवन सागर नई दिशा में
ठाठें मार रहा है साथी

कोई दिन की बात है साथी
मजदूर अब मजबूर नही है
जब हो जमी पर अपनी खुदाई
साथी वह दिन दूर नही है

[नई दुनिया]

रूस, चीन की कम्पित किरनें*
नव प्रभात की आभा लाई
नव जुग का संदेशा लाई

उत्तर, दक्खिन, पूरब, पच्छिम
आगे, पीछे, ऊपर, नीचे
देश देश मे दुनिया भर में
तोड़ रही है दम तारीकी*
सुर्ख़ सबेरा होने को है

* तारीकी—अन्धकार.

بیتا ھوا " کل " اوروں کا تھا
آنے والا " کل " اپنا ھے

سرووُدے کے سکھ سپنے میں
کون پکار رھا ھے ساتھی ؟
جیون ساگر نئی دشا میں
تھاٹھیں مار رھا ھے ساتھی

کوئی دن کی بات ھے ساتھی
مزدور اب مجبور نہیں ھے
جب ھو زمیں پر اپنی خدائی
ساتھی وہ دن دور نہیں ھے

[نئی دنیا]

روس ' چین کی کمپت کرنیں
نو پربھات کی آبھا لائیں
نو جگ کا سندیشہ لائیں

اُتر ' دکھن ' پورب ' پچھم
آگے ' پیچھے ' اوپر ' نیچے
دیش دیش میں دنیا بھر میں
توڑ رھی ھے دم تاریکی*
سرخ سویرا ھونے کو ھے

* تاریکی = اندھکار .

दुम मे रस्सा बांध चुके है
ठोकर देंगे, धक्का देंगे
उसी घड़ी हम दम लेंगे जब
चोर को घर तक पहुंचा देंगे

अब क्यो देर लगायें साथी
अब तो कमर दुश्मन की खम है
आधी दुनिया जीत चुके है
अब तो मंज़िल चार क़दम है

दुनिया नई बसायेंगे हम
सुन्दर साज सजा देंगे
धन्ना सेठो के महलों की
ईंट से ईंट बजा देंगे

दुनिया हाथ नहीं आती है
दुनिया ले ली जाती है
क़िस्मत नहीं बदलती साथी
क़िस्मत बदली जाती है

मज़दूरो की दुनिया जागी
कटते कटते रात कटी
वह आकाश कलस हिलते हैं
धरती ने करवट बदली

दुनिया जिसे "आज" कहती है
संगम कई जुगों का है

ہم میں رسا باندھ چکے ہیں
ٹھوکر دیں گے، دھکا دیں گے
اُسی گھڑی ہم دم لیں گے جب
چور کو گھر تک پہونچا دیں گے

آب کیوں دیر لگائیں ساتھی
آب تو کمر دشمن کی خم ہے
آدھی دنیا جیت چکے ہیں
آب تو منزل چار قدم ہے

دنیا نئی بسائیں گے ہم
سندر ساج سجا دیں گے
دھنا سیٹھوں کے محلوں کی
اینٹ سے اینٹ بجا دیں گے

دنیا ہاتھ نہیں آتی ہے
دنیا لے لی جاتی ہے
قسمت نہیں بدلتی ساتھی
قسمت بدلی جاتی ہے

مزدوروں کی دنیا جاگی
کٹتے کٹتے رات کٹی
وہ آکاش کلس ہلتے ہیں
دھرتی نے کروٹ بدلی

دنیا جسے "آج" کہتی ہے
سنگم کئی جگوں کا ہے

जबरदस्त जर्मन फौजो से
लड़े अकेले तुम या रूस ?
जीत हुए दुशमन को भगाते
बर्लिन पहुंचे तुम या रूस ?

नगल लिये जाने पर किसने
पेट अजगर का फाड़ दिया है ?
सब से पहिले राइचस टाग पर
किसने झंडा गाड़ दिया है ?

आज रूस फुक जाने पर भी
पनप उठा है चमक उठा है
तुम पर आंच न आई लेकिन,
बाग तुम्हरा सूख चला है

दुनिया भर बाजार है जिसका
एक मंडी हेरा फेरी की
उस अमरीका की यह हालत ?
यह बेकारी, धत तेरी की *

ठंडी लड़ाई आखिर कब तक
एक दुनिया से रहेगी जारी
अम्न के सच्चे दिलदारो से
बात न की. तुमने झक मारी

‡ इस समय अमरीका मे एक करोड़ मजदूर बेकार है.

زبردست جرمن فوجوں سے
لڑے اکیلے تم یا روس ؟
جیتے ہوئے دشمن کو بھگاتے
برلن پہونچے تم یا روس ؟

نگل لئے جانے پر کس نے
پیٹ اجگر کا پھاڑ دیا ھے ؟
سب سے پہلے رائچس ٹاگ پر
کس نے جھنڈا گاڑ دیا ھے ؟

آج روس پھلک جانے پر بھی
پنپ اٹھا ھے چمک اٹھا ھے
تم پر آنچ نہ آئی لیکن '
باغ تمھارا سوکھ چلا ھے

دنیا بھر بازار ھے جسکا
ایک منڈی ھیرا پھیری کی
اس امریکہ کی یہ حالت ؟
یہ بیکاری دھت تیری کی *

ٹھنڈی لڑائی آخر کب تک
اک دنیا سے رھیگی جاری
امن کے سچے دلداروں سے
بات نہ کی ' تم نے جھک ماری

* اس سمے امریکہ میں ایک کروڑ مزدور بیکار ھیں .

चीन से जब निकले तो तुमने
हिन्दी चीन में टाँग अड़ाई*
डट गये नये अखाड़े में तुम
और जो यहाँ भी मुंह की खाई

मार्शल एड, एटलांटिक-पेक्ट
खाने तड़ पड़ भरते जाओ
इसी तरह दुनिया भर मे तुम
गड़बड़, सड़बड़ करते जाओ

वाल स्ट्रीट के सट्टे बाजो
कांप जाओ इस लशकर से
हिटलर, च्यांग के उड़ा दिये सर
जिसने अपनी ठोकर से

जङ्ग से तुमको लाभ हुआ जो
उसको जोड़ो और शरमाओ
कण्ठ मे अटके जीत के दावे
गिनो अगर तुम रूस के घाव

तुमने हिटलर को शिकस्त दी
कहते शर्म नही आती ?
इतने दात तुम्हारे मुंह मे
झूट को आखे है झुक जाती

* Indo-China

چین سے جب نکلے تو تم نے
ہند چین میں ٹانگ آڑائی*
ڈٹ گئے نئے اکھاڑے میں تم
اور جو یہاں بھی منہ کی کھائی

مارشل ایڈ' ایٹلانٹک پیکٹ
خانے تڑ پڑ بھرتے جاؤ
اِسی طرح دنیا بھر میں تم
گڑ بڑ' سڑ بڑ کرتے جاؤ

وال اِسٹریٹ کے سٹے بازو
کانپ جاؤ اُس لشکر سے
ہٹلر' چیانگ کے اُڑا دئے سر
جس نے اپنی ٹھوکر سے

جنگ سے تمکو لابھ ہوا جو
اُسکو جوڑو اور شرماؤ
کنٹھ میں اٹکیں جیت کے دعوے
گنو اگر تم روس کے گھاؤ

تم نے ہٹلر کو شکست دی
کہتے شرم نہیں آتی ؟
اِتنے دانت تمہارے منھ میں
جھوٹ کی آنکھیں ہیں جھک جاتی

* Indo-China.

यू. एन. ओ. मे यूनेस्को मे*
रूस पे दोष लगाते जाओ
करके बेहया तकरीरें तुम
अपनी झेंप मिटाते जाओ

जापान और पच्छिमी जर्मनी
यूनान, इटली, यूगोसलाविया,
कश्मीर और नैपाल और तिब्बत
साउथ 'कोरिया और मलाया

तोड़ फोड़ मे हर्ज नही है
कुछ तो करें जब जी ललचाये
चोर अगर चोरी न करे तो
हेराफेरी से... भी जाये

चीन को मत तसलीम करो
यारो ने ढब क्या क्या सोचे
ठीक तो है, खिसियानी बिल्ली
कुछ न बने तो खम्बा नोचे

अब फ़ारमूसा पर नज़रें हैं
गो यह जगह है निहायत छोटी
लेकिन अब इसको क्या कीजे
भागे भूत को बहुत लंगोटी

* UNESCO.

یو. این. او میں یونیسکو میں*
روس پہ دوش لگاتے جاؤ
کرکے بے حیا تقریریں تم
اپنی جھینپ مٹاتے جاؤ

جاپان اور پچھمی جرمنی
یونان، اٹلی، یوگو سلاویا
کشمیر اور نیپال اور تبت
ساؤتھ کوریا اور ملایا

توڑ پھوڑ میں حرج نہیں ہے
کچھ تو کریں جب جی للچائے
چور اگر چوری نہ کرے تو
ھیرا پھیری سے بھی جائے

چین کو مت تسلیم کرو
یاروں نے ڈھب کیا کیا سوچے
ٹھیک تو ہے، کھسیانی بلی
کچھ نہ بنے تو کھمبا نوچے

اب فارموسا پر نظریں ہیں
گو یہ جگہ ہے نہایت چھوٹی
لیکن اب اِسکو کیا کیجے
بھاگے بھوت کو بہت لنگوٹی

* UNESCO.

बेवस जनता की यह दुरगत
सबकी जड़ सरमायादारी

ठोकर पर ठोकर खाके भी
अपनी मंज़िल से बेगाने
आँख के अंधे नाम नयनसुख
हमको चले है राह बताने

आज वही खाते वालो से
सदियो का लेखा हम लेगे
आटे दाल का भाव खुलेगा
जिस दम जमा खर्च समझेगे

लाल, जवाहर, सोना, चाँदी
कोमिटाँग पर किया निछावर
क्यो न हो ? डालर-साम्राज का
नाच रहा था भूत जो सर पर

उस दौलत से अमरीका का
जोवन और सँवारा होता
आज अमरीका एक जमाने की
आँखो का तारा होता

बैको, मिलो, कारखानो को
हम जो हाथो मे ले लेते
हुन बरसा देते साथी हम
देश को सोने से मढ़ देते

६

بے بس جنتا کی یہ درگت
سب کی جڑ سرمایہ داری

ٹھوکر پر ٹھوکر کھا کر بھی
اپنی منزل سے بیگانے
آنکھ کے اندھے نام نین سکھ
ہم کو چلے ہیں راہ بتانے

آج یہی کھاتے والوں سے
صدیوں کا لیکھا ہم لیں گے
آٹے دال کا بھاؤ کھلیگا
جس دم جمع خرچ سمجھینگے

لال، جواہر، سونا چاندی
کومنٹانگ پر کیا نچھاور
کیوں نہ ہو؟ ڈالر سامراج کا
ناچ رہا تھا بھوت جو سر پر

اس دولت سے امریکہ کا
جوبن اور سنوارا ہوتا
آج امریکہ ایک زمانے کی
آنکھوں کا تارا ہوتا

بینکوں، ملوں، کارخانوں کو
ہم جو ہاتھوں میں لے لیتے
ہن برسا دیتے ساتھی ہم
دیش کو سونے میں مڑھ دیتے

यह सब मदुमखोर हैं साथी
इनके साथ मुरौवत कैसी
यह दुनिया है इनकी मिलकियत
इस दुनिया की ऐसी तैसी

निपटो अब बिफरी जनता से
करनी धरनी ले कर चाटो
मुट्ठी भर भर के दुनिया मे
बोई हवा बवंडर काटो

सङ्गीनो से बन्दूकों से
तुमने किये हजारो वार
बारी है अब मजदूरो की
"इक कचलोहिया आड़ो हमार" (आल्हा)

दबसठ से कब काम चला है
लोहा ही लोहे को काटे
साथी सुना नही क्या तूने
सीधे का मुंह कुत्ता चाटे

खेत्यौनी मे खड़ग-खम्ब मे
सब में व्यापे हम हुशियार
इन्ही ड्योढ़ियो के खम्बों से
लेंगे हम नरसिंह औतार

बेकारी, भुकमरी, लड़ाई
रिशवत और चोर बाजारी

یہ سب مردم خور ھیں ساتھی
ان کے ساتھ مروت کیسی
یہ دنیا ہے ان کی ملکیت
اس دنیا کی ایسی تیسی

نپٹو اب بپھری جنتا سے
کرنی دھرنی لیکر چاٹو
مٹھی بھر بھر کے دنیا میں
بوئی ہوا بونڈر کاٹو

سنگینوں سے بندوقوں سے
تم نے کئے ہزاروں وار
باری ہے اب مزدوروں کی
" اک کچلوھیا آڑو ھمار " (آلہا)

دب سٹھ سے کب کام چلا ہے
لوہا ہی لوہا کو کاٹے
ساتھی سنا نہیں کیا تونے
سیدھے کا منھ کتا چاٹے

کھیتونی میں کھڑگ کھمب میں
سب میں بیاپے ہم ھشیار
انہیں ڈیوڑھیوں کے کھمبوں سے
لیں گے ہم نر سنگھ اوتار

بیکاری ، بھوک مری ، لڑائی
رشوت اور چور بازاری

अर्बों के हैं वारे न्यारे
दांव भी है दोहरे दोहरे
चाले इनकी बाज़ी इनकी
हम है बस शतरंज के मोहरे

यह हमसे इनसाफ करेंगे?
क्या बकते हो?—राम कहो
इनके बही खाते से हमें क्या
लेना एक न देना दो

यह और उगलें अपना मुनाफा?
कह सुन कर सब हार गये
नोटों के, सोने चाँदी के
यह तो पहाड़ डकार गये

नर्म भी पड़ के, गर्म भी पड़ के
दुनिया को देते है भर्रे
यह जीवन का रथ खींचेंगे?
राह के अड़ियल, थान के टर्रे

काले रुपयों* से बेखटके
भरते गये यह अपनी तिजोरी
सब भौचक्के रह जाते थे
करता कौन इनसे बरजोरी

* Black money.

اربوں کے ہیں وارے نیارے
داؤں بھی ہیں دوہرے دوہرے
چالیں ان کی باری ان کی
ہم ہیں بس شطرنج کے مہرے

یہ ہم سے انصاف کریں گے ؟
کیا بکتے ہو؟ — رام کہو
ان کے بہی کھاتے سے ہمیں کیا
لینا ایک نہ دینا دو

یہ اور اگلیں اپنا منافع؟
کہہ سنکر سب ہار گئے
سوتوں کے ، سونے چاندی کے
یہ تو پہاڑ ڈکار گئے

نرم بھی پڑکے ، گرم بھی پڑکے
دنیا کو دیتے ہیں بھرے
یہ جیون کا رتھ کھینچیں گے ؟
راہ کے اڑیل ، تھان کے ترے

کالے روپیوں* سے بے کھٹکے
بھرتے گئے یہ اپنی تجوری
سب بھو چکے رہ جاتے تھے
کرتا کون ان سے بر جوری

Black money. *

हमको निर्धन रख के इन्हों ने
पाट लिये हैं अपने खजाने
हमें उजाड के इन सेठों ने
सजा लिये अपने काशाने*

बाग़ में बस इनको ज़हरीले
काँटे बोना आता है
इनके अनर्थ को देख देख कर
साथी रोना आता है.

कैसा अपना देस अपना घर
साथी अपना बस है उतना
फटे नाखूनों मे जितना है
टुकड़ा भारत की मिट्टी का

पानी मे यह आग लगा दे
सेठ, महाजन, एक काइयाँ
जंग की घातें सुलह की बातें
धमा चौकड़ी उड़न घाइयाँ

जब जब जंग छिड़ी देशो मे
जो भी पड़ा हम पर ही पड़ी
भुस मे चिङ्गी देकर साथी
देख जमालो दूर खड़ी,

---

* काशाने = बड़े बड़े घर या महल.

همکو نردهن رکھ کے اِنهوں نے
پاٹ لئے هیں اپنے خزانے
همیں اُجاڑکے اِن سیٹھوں نے
سجا لئے اپنے کاشانے*

باغ میں بس اِن کو زهریلے
کانٹے بونا آتا هے
اِن کے انرتھ کو دیکھ دیکھ کر
ساتھی رونا آتا هے

کیسا اپنا دیس اپنا گھر
ساتھی اپنا بس هے اُتنا
پھٹے ناخنوں میں جتنا هے
ٹکڑا بھارت کی متّی کا

پانی میں یہ آگ لگا دیں
سیٹھ، مهاجن، ایک کائیاں
جنگ کی گھاتیں صلح کی باتیں
دهما چوکڑی، اُڑن گھائیاں

جب‌جب جنگ چھڑی دیشوں میں
جو بھی پڑی هم پر هی پڑی
بھس میں چنگی دیکر ساتھی
دیکھ جمالو دور کھڑی

---

*کاشانے = بڑے بڑے گھر یا محل .

हम दुनिया के चलाने वाले
और हमीं पामाल, यह क्या है ?
हम दुनिया को बचाने वाले
और इतने बदहाल, यह क्या है ?

हमको भूका रख कर हमसे
धन कुबेर का काम लिया है
अपनी दशा सोच कर अकसर
हमने कलेजा थाम लिया है

साथी मरता क्या नहीं करता
किस किस पर इल्ज़ाम धरे
जम जम जिये यह प्यारी दुनिया
लेकिन हम बे मौत मरे

अपने पसीने का जम जाना*
धन, पूँजी, सरमायादरी
सब अपने ही लहू से पले हैं
सेठ, महाजन, राज अधिकारी

सब अपनी ही धमा धमी है
आये दिन जो माल उड़ते हैं
सब अपनी ही लहर बहर है
अपने लहू से गुलाल उड़ते हैं

* "Capital is congealed labour"—Marx.

ہم دنیا کو چلانے والے
اور ہمیں پامال، یہ کیا ہے ؟
ہم دنیا کے بچانے والے
اور اتنے بدحال، یہ کیا ہے ؟

ہمکو بھوکا رکھ کر ہم سے
دھن کبیر کا کام لیا ہے
اپنی دشا سوچ کر اکثر
ہم نے کلیجہ تھام لیا ہے

ساتھی مرتا کیا نہیں کرتا
کس کس پر الزام دھرے
جم جم جئے یہ پیاری دنیا
لیکن ہم بے موت مرے

اپنے پسینے کا جم جانا*
دھن، پونجی، سرمایہ داری
سب اپنے ہی لہو سے پلے ہیں
سیٹھ، مہاجن، راج ادھیکاری

سب اپنی ہی گھما گھمی ہے
آئے دن جو مال اُڑتے ہیں
سب اپنی ہی لہر بحر ہے
اپنے لہو سے گلال اُڑتے ہیں

* "Capital is congealed labour"—Marx.

जीवन की काली रातों का
धरती जहाँ पता देती है
गाती हुई मशीनो की लय
वहाँ चराग़ जला देती है

रेलो की घन गरज, जहाज़ो
का वह सागर फाड़ बढ़ाव
साफ़ मण्डलाकार फ़ज़ा मे
तैय्यारो का निडर चढ़ाव*

नदियों का मुंह मोड़ दिया है
वीराना लहराता है
रेगिस्तानो में अब पानी
गगन खेलता जाता है

मज़दूरो के करामात है
मज़दूरो के पस्तो बलन्द
किस करवट से चन्द्रलोक पर
फेंकी है बेलाग कमन्द

कर्मयोग की महा शक्ति को
हमने अपने साथ लिया है
इस जीवन के शेष नाग को
इन हाथों ने नाथ लिया है

* फ़ज़ा—वायुमण्डल. तैयारो—जहाज़ो.

جیون کی کالی راتوں کا
دھرتی جہاں پتہ دیتی ہے
گاتی ہوئی مشینوں کی لے
وہاں چراغ جلا دیتی ہے

ریلوں کی گھن گرج ' جہازوں
کا وہ ساگر پھاڑ بڑھاؤ
صاف منڈلاکار فضا میں
طیاروں کا نڈر چڑھاؤ*

ندیوں کا منھ موڑ دیا ہے
ویرانہ لہراتا ہے
ریگستانوں میں اب پانی
گگن کھیلتا جاتا ہے

مزدوروں کے کرامات ہیں
مزدوروں کے پست و بلند
کس کروٹ سے چندر لوک پر
پھینکی ہے بے لاگ کمند

کرم یوگ کی مہا شکتی کو
ہم نے اپنے ساتھ لیا ہے
اس جیون کے شیش ناگ کو
ان ہاتھوں نے ناتھ لیا ہے

*فضا—وایو منڈل طیاروں—جہازوں.

घन घन घन अनगिनत मशीनों
के पहियों का चक्कर खाना
यह घड़ घड़ घड़, यह ज़ीरो बम*
सय्यारों** का मिल कर गाना

दहड़ दहड़ जलते फ़रनेस से
सूरज-मंडल झपक गया है
अन्धकार के सीने मे भी
अकसर कोंदा लपक गया है

लाख करवटें लेता शोला
बज्र को भी पिघला देता
ब्वायलर होंक रहा है गोया
ज्वालामुखी सांसे लेता है

बरसाती है फूल अंजन के
लाल अंगारों की बौछारें
सुनो खनकते कल पुर्ज़ों मे
सौते सरमदी की झनकारें ‡

यह मशीन की गड़गड़ाहटें
धरती की छाती हिल जाय
धुआं चिमनियों से उठता है
गत पर जैसे नाग लहराय

* ज़ीरो बम = ताल सम ** सय्यारों—नक्षत्रों.
‡ सौते सरमदी = स्वर्गीय संगीत.

گھن گھن گھن ان گنت مشینوں
کے پہیوں کا چکر کھانا
یہ گھڑ گھڑ گھڑ ، یہ زیر و بم*
سیاروں** کا مل کر گانا

دھڑ دھڑ جلتے فرنس سے
سورج منڈل جھپک گیا ہے
اندھکار کے سینے میں بھی
اکثر کوندا لپک گیا ہے ۔

لاکھ کروٹیں لیتا شعلہ
بجر کو بھی پگھلا دیتا ہے
بوائلر ہونک رہا ہے گویا
جوالا مکھی سانسیں لیتا ہے

برساتی ہیں پھول انجن کے
لال انگاروں کی بوچھاریں
سنو کھنکتے کل پرزوں میں
صوت سرمدی کی جھنکاریں‡

یہ مشین کی گڑ گڑاہٹیں
دھرتی کی چھاتی ہل جائے
دھواں چمنیوں سے اٹھتا ہے
گت پر جیسے ناگ لہرائے

* زیرو بم = تال سم ۔ **سیاروں — نچھتروں ۔
‡ صوت سرمدی = سورگی سنگیت ۔

मारीशस, कीनिया, टंगानिका
लङ्का, बन्का, सिंगापूर
यह किसने लहलहा दिया है
जल थल को नज़दीक और दूर

झलक रहा है नगर मास्को
नव युग का वह जरोसलीम
वह जादू निर्मान कला के
लेनिनग्राड और नीपरडेन*

भूमण्डल पर जुग का जुग से
रिश्ता नाता जोड़ आये है
क़दम क़दम पर इस दुनिया में
अपनी निशानी छोड़ आये है

सहरा को जो चमन बना दें
ऐसे दीवाने कम होंगे
आँख उठा कर हद्दे नजर तक
देखोगे तो हमीं हम होंगे

"पत्ता पत्ता, बूटा बूटा
हाल हमारा जाने है
जाने न जाने गुल ही न जाने
बाग़ तो सारा जाने है"

(महा कवि 'मीर')

* रूस में नेपर नदी के बांध पर पानी का सब से बड़ा खज़ाना।

ماریشس ، کینیا ، ٹنگانیکا
لنکا ، بنکا ، سنگا پور
یہ کس نے لہلہا دیا ہے
جل تھل کو نزدیک اور دور

جھلک رہا ہے نگر ماسکو
نو یگ کا وہ جروسلیم
وہ جادو نرمان کلا کے
لینن گراڈ اور نیپر ڈین*

بھومنڈل پر جگ کا جگ سے
رشتہ ناتا جوڑ آئے ہیں
قدم قدم پر اس دنیا میں
اپنی نشانی چھوڑ آئے ہیں

صحرا کو جو چمن بنادیں
ایسے دیوانے کم ہوں گے
آنکھ اٹھاکر حد نظر تک
دیکھو گے تو ہمیں ہم ہونگے

"پتہ پتہ ، بوٹا بوٹا
حال ہمارا جانے ہے
جانے نہ جانے گل ہی نہ جانے
باغ تو سارا جانے ہے"

(مہا کوی 'میر')

* روس میں نیپر ندی کے باندھ پر پانی کا سب سے بڑا خزانہ ۔

रूम, यूनान की वह फ़नकारी*
मिस्र देश के वह अहराम
कुस्तुनतुनिया के कगूरे
कस्रे कै, कस्रे बहराम**

काशी, दिल्ली, इलियम, पीसा‡
के वह धौरहरे मीनार
उज्जैन और शीराज और गजनी
अल हमरा के दरो दीवार

नीले सपनों की झिलमिल में§
एटलाटिस का वह जल-सेज
जुग जुगान्तर के विर्से को
पीढ़ी पीढ़ी दिया सहेज

* कलाकारी.

**चक्रवर्ती राजा केकाउस और शाह बहराम के राज महल

‡ इलियम—ट्राय नगर का एक नाम इलियम भी है. पीसा—नगर इटली में है जहाँ का तिरछा मीनार मशहूर है.

§ कहा जाता है कि अब से कई हजार बरस पहले इटली में रूम सागर से के तट पर एटलाटिस नामी एक बहुत बड़ा नगर बसा हुआ था, जो अचानक रूम सागर में डूब गया

روم ، یونان کی وہ فنکاری
مصر دیش کے وہ اہرام*
قسطنطنیہ کے کنگورے
قصر کے ، قصر بہرام**

کاشی ، دلی ، ایلیم ، پیسا ‡
کے وہ دھور ھرے ، مینار
اُجین اور شیراز اور غزنی
الحمرا کے درو دیوار

نیلے سپنوں کی جھلمل میں§
اٹلانٹس کا وہ جل سیج
جگ جگانتر کے ورثے کو
پیڑھی پیڑھی دیا سہیج

* کلا کاری .

** چکرورتی راجہ کیکاؤس اور شاہ بہرام کے راج محل.

‡ الیم—ترائے نگر کا ایک نام الیم بھی ہے ، پیسا—نگر اٹلی میں ہے جہاں کا ترچھا مینار مشہور ہے .

§ کہا جاتا ہے کہ ابسے کئی ہزار برس پہلے اٹلی میں روم ساگر کے تٹ پر اٹلانٹس نامی ایک بہت بڑا نگر بسا ہوا تھا ، جو اچانک روم ساگر میں ڈوب گیا .

कड़ी चटानों के, तेशे से
हमने सीने फाड़ दिये है
चार खूँट रहती दुनिया मे
हमने झंडे गाड़ दिये हैं

इस धरती को छूकर हमने
चाँद सितारो को छेड़ा है
करके बसर काँटो पर साथी
हमने बहारो को छेड़ा है

अकसर इस धरती की छूटें
देव लोक पर पड़ जाती है
आज इसी दुनिया की आँखें
इन्द्रपुरी से लड़ जाता है

अपने इरादो की उठान में
रूहे तमद्दुन की बरनाई*
इन्ही हथौड़ो के सरगम मे
**तारीखो ने ली अँगड़ाई

मुहिन जदाड़ो और हड़प्पा
लाल किला और ताज महल
देख यलोरा और अजन्ता
कपिलवस्तु का राज महल

*सभ्यता की आत्मा का जवान होना.
**इतिहासो

کڑی چٹانوں کے ' تیشے سے
ہم نے سینے پھاڑ دئے ہیں
چار کھونٹ رہتی دنیا میں
ہم نے جھنڈے گاڑ دئے ہیں

اِس دھرتی کو چھوکر ہم نے
چاند! ستاروں کو چھیڑا ہے
کرکے بسر کانٹوں پر ساتھی
ہم نے بہاروں کو چھیڑا ہے

اکثر اِس دھرتی کی چھوٹیں
دیو لوک پر پڑ جاتی ہیں
آج اِسی دنیا کی آنکھیں
اندر پوری سے لڑ جاتی ہیں

اپنے اِرادوں کی اُٹھان میں
روح تمدن کی برنائی*
انھیں ھتھوڑوں کے سرگم میں
**تاریخوں نے لی انگڑائی

موہن جداڑوں اور ہڑپا
لال قلعہ اور تاج محل
دیکھ ایلورا اور اجنتا
کپل وستو کا راج محل

* سبھیتا کی آتما کا جوان ہونا .
** اِتہاسوں .

बेल और बूटो के पर्दे मे
हमने क्या क्या काम किये है
मुंह बन्धी कलियो की गिरहो मे
हमने शोले बांध दिये है

महरमे आबेरवां—छनती है*
सात तहो से बदन की ज्योत
पर्दे पर्दे मे रह रह कर
जैसे जागे मन की ज्योत

बारह अब रङ्ग सोलह सिंगार
गोकुल की राधा सजती है
इस दुनिया के वृन्दाबन मे
किसकी बंसी बजती है

कोख उजड जाये धरती की
फूट जाय मानव का भाग
याद रहे हम उठ जाये तो
लुट जाये दुनिया का सुहाग

हाथ हमारा ही घर घर मे
लेके चरागे शाम आया है
बुनियादो से रहा रहा
खून हमारा काम आया है

* शहजादी जैबुन्निसा औरंगजेब के दरबार मे ढाका का आबेरवाँ सात तह करके पहन कर आई थी तब भी औरंग जेब ने कहा था—"बेटी तुम नंगी हो."

بیل اور بوٹوں کے پردے میں
هم نے کیا کیا کام کئے هیں
منه بندهی کلیوں کی گرهوں میں
هم نے شعلے باندھ دئے هیں

محرم آب رواں—چھلتی هے *
سات تہوں سے بدن کی جیوت
پردے پردے میں رہ رہ کر
جیسے جاگے من کی جیوت

بارہ ابرنگ سولہ سنگار
گوکل کی رادھا سجتی ہے
اس دنیا کے برندا بن میں
کس کی بنس بجتی ہے

کوکھ اجڑ جائے دھرتی کی
پھوٹ جائے مانو کا بھاگ
یاد رہے هم اٹھ جائیں تو
لٹ جائے دنیا کا سہاگ

هاتھ همارا هی گھر گھر میں
لے کے چراغ شام آیا هے
بنیادوں سے رہا رہا
خون همارا کام آیا هے

* شہزادي زیب‌النسا اورنگ زیب کے دربار میں ڈھاکہ کا آب رواں سات تہہ کر کے پہن کر آئي تھی تب بھي اورنگ زیب نے کہا تھا—"بیٹي تم ننگی هو".

नाम उभरने का न कभी ले
पेचो ख़म मे निगाह जो डूबे
नक्काशो के अमर मोजज़े
मीनाकारी के वह अजूबे

इन हाथो की गुलकारी मे
सुबहे बहार सांस लेती है
हमने दबा दी वह आंचे
मिट्टी लौ पर लौ देती है

चौड़ी बुर्जों को जो देखे
शक़्क़ुल कमर याद आ जाये
बुतख़ानो के रूप नगर मे
सेहरे सामरी गश खा जाये

यूं जगमगा दिया धातो को
हो ठहराव पे चाल का धोका
साफ़ आंखो को हो जाता है
जामिद पर सय्याल का धोका

इन्हीं खुरदरे हाथो का जस है
या सन्नाई बोल उठी है
देख ज़रा बच्चो के खिलौने
साथी, मिट्टी बोल उठो है

मोजज़े = चमत्कार. शक़्क़ुलक़मर = मुहम्मद साहब ने एक बार इशारे से चाँद के दो टुकड़े कर दिये थे. सेहरे सामरी = जादूगर का जादू. जामिद = जड़. सैयाल = तरल. सन्नाई = शिल्पि कला.

نام اُبھرنے کا نہ کبھی لے
پیچ و خم میں نگاہ جو ڈوبے
نقاشی کے امر معجزے
مینا کاری کے وہ عجوبے

اِن ہاتھوں کی گلکاری میں
صبح بہار سانس لیتی ہے
ہم نے دبا دی ہیں وہ آنچیں
مٹی لو پر لو دیتی ہے

چوڑی برجوں کو جو دیکھے
شق القمر یاد آ جائے
بتخانوں کے روپ نگر میں
سحر سامری غش کھا جائے

یوں جگمگا دیا دھاتوں کو
ہو ٹھہراؤ پہ چال کا دھوکا
صاف آنکھوں کو ہوجاتا ہے
جامد پر سیال کا دھوکا

اِنھیں کھردرے ہاتھوں کا جس ہے
یا صناعی بول اُٹھی ہے
دیکھ ذرا بچوں کے کھلونے
ساتھی، مٹی بول اُٹھی ہے

معجزے = چمتکار شق القمر = محمد صاحب نے ایک بار اشارے سے چاند کے دو ٹکڑے کر دئے تھے. سحر سامری = جادوگر کا جادو. جامد = جڑ. سیال = ترل. صناعی = شلپی کلا.

चाँद और सूरज की किरनों से
चादर बुन कर रख देते हैं
इसी हथौड़े की ज़रबों से
लोहा धुन कर रख देते हैं

करके बेराबर रख देते हैं
ऊबड़ खाबड़ पेची ख़म
कड़े कोस नरमा देते हैं
अपने धरती-तोड़ कदम

ज़रा ठेस लगते ही साथी
नींद की दुनिया जाग उठती है
ठुकरा दें जिस पड़ी शिला को
बन के अहिल्या जाग उठती है

यूं गुदगुदा दिया है हमने
संग का पहलू फड़क रहा
यू उकसाया है जड़ता को
पत्थर का दिल धड़क रहा है

जान डाल दी तस्वीरों मे
यू हर ख़त चमकाया हमने
लौ दे उठते हैं वह नुक़ते
चूम लिया है जिनको क़लम ने

ज़रबों = चोटों. संग = पत्थर. ख़त = रेखा.

چاند اور سورج کی کرنوں سے
چادر بن کر رکھ دیتے ہیں
اسی ہتھوڑے کی ضربوں سے
لوہا دھن کر رکھ دیتے ہیں

کرکے برابر رکھ دیتے ہیں
اوبڑ کھابڑ پیچ و خم
کڑے کوس نرمادیتے ہیں
اپنے دھرتی توڑ قدم

ذرا ٹھیس لگتے ہی ساتھی
نیند کی دنیا جاگ اٹھتی ہے
ٹھکرادیں جس پڑی شلا کو
بن کے اہلیا جاگ اٹھتی ہے

یوں گد گدا دیا ہے ہم نے
سنگ کا پہلو پھڑک رہا ہے
یوں اکسایا ہے جڑتا کو
پتھر کا دل دھڑک رہا ہے

جان ڈالدی تصویروں میں
یوں ہر خط چمکایا ہم نے
لودے اٹھتے ہیں وہ نقطے
چوم لیا ہے جنکو قلم نے

ضربوں = چوٹوں ۔ سنگ = پتھر ۔ خط = ریکھا ۔

लाख जतन से जीवन खेती
मुरझाने से रोका किसने?
सूरज की इस अगिन गेंद को
किसने उछाला ?—लोका किसने?

कई बार रहती दुनिया की
आई को हम टाल चुके हैं
कई बार तक़दीरे जहाँ की
आँखो मे आँखें डाल चुके हैं

जब फ़ाक़ों पर फ़ाक़े थे
जब कोई उम्मीद नहीं थी
हमने जहां उंगलियां रख दीं
नब्ज़ें चलने लगी दुनिया की

इस अधमरी दलित दुनिया को
अपने लहू से अमर किया
सुन लेना रन बोल उठेगा
मौत को हमने जीत लिया

जिस दम हल्ला बोल दिया है
दरिया, सहरा, काँप उठे हैं
हम से टक्कर लेकर साथी
परबत, सागर, हाँप उठे हैं

اٹھ، جتن سے جیون کھیتی
مرجھانے سے روکا کس نے؟
سورج کی اس اگن گیند کو
کس نے اچھالا؟ لوکا کس نے؟

کئی بار رہتی دنیا کی
آئی کو ہم ٹال چکے ہیں
کئی بار تقدیر جہاں کی
آنکھوں میں آنکھیں ڈال چکے ہیں

جب فاقوں پر فاقے تھے
جب کوئی امید نہیں تھی
ہم نے جہاں انگلیاں رکھ دیں
نبضیں چلنے لگیں دنیا کی

اس ادھ مری دلت دنیا کو
اپنے لہو سے امر کیا
سن لینا، رن بول اٹھے گا
موت کو اپنے جیت لیا

جس دم حملہ بول دیا ہے
دریا، صحرا، کانپ اٹھے ہیں
ہم سے ٹکر لیکر ساتھی
پربت، ساگر، ہانپ اٹھے ہیں

अपनी कमर के बूते से हम
पेंग चढ़ाते हैं जीवन की
दो झटकों मे हिला कर रख दें
साथी चूले इन्द्रासन की

सरकश पंच भूत का गट्टा
हमने झटक के तोड़ दिया है
जिस किस्मत की मार गजब थी
उसका पंजा मोड़ दिया है

दह्र की हर तखरीबी कुव्वत*
को साँचे मे ढाल लिया है
कुदरत के चैलेंज का हमने
कल्ला तोड़ जवाब दिया है

खून पसीने के हिलोर मे
तदबीरें मुंह देख रही हैं
इस लहराते आईने मे
तकदीरें मुंह देख रही हैं

अपने कस बल से सीनो मे
तूफानों को बन्द किया है
सधे हुए सौ सौ हाथों मे
भूचालों को थाम लिया है

* दुनिया की हर एक विनाशकारी शक्ति.

اپنی کمر کے بوتے سے ھم
پینگ چڑھاتے ھیں جیون کی
دو جھٹکوں میں ھلاکر رکھدیں
ساتھی چو لیں اندراسن کی

سرکش پنچ بھوت کا گٹھ
ھم نے جھٹک کے توڑ دیا ھے
جس قسمت کی مار غضب تھی
اُس کا پنجہ موڑ دیا ھے

دھر کی ھر تخریبی قوت*
کو سانچے میں ڈھال لیا ھے
قدرت کے چیلنج کا ھم نے
کلا توڑ جواب دیا ھے

خون پسینے کے ھلور میں
تدبیریں منھ دیکھ رھی ھیں
اس لہراتے آئینے میں
تقدیریں منھ دیکھ رھی ھیں

اپنے کس بل سے سینوں میں
طوفانوں کو بند کیا ھے
سدھے ھوئے سو سو ھاتھوں سے
بھو چالوں کو تھام لیا ھے

* دنیا کی ھر وناش کاری شکتی ۔

इस भूकी प्यासी दुनिया में
हुन पर हुन बरसाया किसने?

हर आफत से हर मुशकिल से
मजदूरों की जोड़ रही है
उलटी पलटी आड़ी टेढ़ी
तक़दीरों से होड़ रही है

क्या यह वही दुनिया है साथी
कल जो फटे हाल में फिरती थी?
क्या यह वही बेचारी है जो
बार बार उठ कर गिरती थी?

साथी बोल लहू खौला कर
जीवन रूप रचाया किसने?
इस नंगी उजड़ी दुनिया को
सज कर दुल्हन बनाया किसने?

नभचुम्बी शिखरों पर साथी
हम बेखटके चढ़ जाते थे
जहाँ मौत जाते हुए झिझके
ताल ठोक कर बढ़ आते थे

आकाशो के पातालो के
दिल का चोर निकाला किसने?
खाली था, भर कर छलकाया
इस जीवन का प्याला किसने?

إس بهوکی پیاسی دنیا میں
هن پر هن برسایا کس نے ؟

هر آفت سے هر مشکل سے
مزدوروں کی جوڑ رهی هے
اُلٹی پلٹی آڑی ٹیڑهی
تقدیروں سے هوڑ رهی هے

کیا یہ وهی دنیا هے ساتهی
کل جو پهٹے حالوں پهرتی تهی؟
کیا یہ وهی بیچاری هے جو
بار بار اٹھ کر گرتی تهی ؟

ساتهی بول لهو کهولا کر
جیون روپ رچایا کس نے ،
اس ننگی ، اُجڑی دنیا کو
سج کر دولهن بنایا کس نے

نبھ چمبی شکھروں پر ساتهی
هم بے کهٹکے چڑھ جاتے تهے
جهاں موت جاتے هوئے جهجهکے
تال ٹهونک کر بڑھ آتے تهے

آکاشوں کے پاتالوں کے
دل کا چور نکالا کس نے
خالی تها ، بهر کر چهلکایا
اِس جیون کا پیالا کس نے

आोट में छिपी हुई तहज़ीबो
का घूँघट सरकाया किसने ?
शरमीली तक़दीर की देवी
का आँचल ढलकाया किसने ?

काम चोर सपनो की काया
में शोला भड़काया किसने ?
बदन चोर इस प्रकृति कामिनी
का सीना धड़काया किसने ?

परत परत को इस धरती के
साथी खोल दिया है किसने ?
छिपे दफ़ीनो पर क़ुदरत के
धावा बोल दिया है किसने ?

जीवन के समुद्र मंथन मे
हमने भंवर क्या डाले हैं
भव सागर से इन हाथो ने
क्या क्या रतन निकाले है

वन उपवन थे, हर काँटे से
हसता फूल खिलाया किसने ?
पत्थर के पथरीले दिल को
तप तप कर पिघलाया किसने ?

इस ऊसर बंजर धरती पर
धन का ढेर लगाया किसने ?

४

اوٹ میں چھپی ہوئی تہذیبوں
کا گھونگھٹ سرکا یا کس نے ؟
شرمیلی تقدیر کی دیوی
کا آنچل ڈھلکایا کس نے ؟

کام چور سپنوں کی کایا
میں شعلہ بھڑکایا کس نے ؟
بدن چور اِس پرکرتی کامنی
کا سینہ دھڑکایا کس نے ؟

پرت پرت کو اِس دھرتی کے
ساتھی ، کھول دیا ہے کس نے ؟
چھپے دفینوں پر قدرت کے
دھاوا بول دیا ہے کس نے ؟

جیون کے سمندر بلکھن میں
ہم نے بھنور کیا ڈالے ہیں
بھوساگر سے اِن ہاتھوں نے
کیا کیا رتن نکالے ہیں

بن ، اُپون تھے ہر کانٹے سے
ہنستا پھول کھلایا کس نے ؟
پتھر کے پتھریلے دل کو
تپ تپ کر پگھلایا کس نے ؟

اِس اُوسر ، بنجر دھرتی پر
دھن کا ڈھیر لگایا کس نے ؟

अपने हाथो मे लेलेंगे
कलावन्त भी कलाकार भी
अब होगी इनकी सन्तान
अब किसान मज़दूर और अफसर

सेना पति, जर्नैल, मिनिस्टर
बड़े वजीर गवर्नर जनरल
यह सब एक वर्ग के होंगे
भेद भाव सब मिट जाये गे

एक अछेद, अभेद, अखंड
एक सजीव सुयोग समाज
भारत मे आँखे खोलेगा
नई सभ्यता कायम होगी

[मजदूरो, कारीगरो शिल्पकारों की ललकार]

तोड़ा धरती का सन्नाटा
किसने ? हम मज़दूरो ने
डंका बजा दिया आदम का
किसने ? हम मज़दूरो ने

दुनिया की अधी नगरी मे
जगमग दीप जलाया किसने
जग मे रंगा रंग चमाचम
यह बाजार सजाया किसने

اپنے ھاتھوں میں لے لینگے
کلاونت بھی کلاکار بھی
اب ہوگی اِن کی سنتان
اب کسان' مزدور اور افسر

سینا پتی' جرنیل' منسٹر
بڑے وزیر گورنر جنرل
یہ سب ایک ورگ کے ہوں گے
بھید بھاؤ سب مٹ جائیں گے

ایک اچھید' ابھید' اکھنڈ
ایک سجیو' سیوگ سماج
بھارت میں آنکھیں کھولے گا
نئی سبھیتا قائم ہوگی

[مزدوروں' کاریگریوں شلپی کاروں کی للکار]

توڑا دھرتی کا سناٹا
کس نے؟ ہم مزدوروں نے
ڈنکا بجا دیا آدم کا
کس نے؟ ہم مزدوروں نے

دنیا کی اندھی نگری میں
جگ مگ دیپ جلایا کس نے؟
جگ میں رنگا رنگ چما چم
یہ بازار سجایا کس نے؟

पत्रकार, लेखक, लासानी
चित्रकार, शायर. सैलानी
वीर, सूरमा, धर्मी, दानी
आठो गाँठ कुमैत जवानी
जिसकी छबि नहिं जाय बखानी
"गिरा अनैन नैन बिन बानी"

लेकिन कब तक यह मनमानी ?
यारो दुनिया आनी जानी
किस बिरते पर तत्ता पानी
अब न चलेगी आना कानी
" का बरखा जब कृषी सुखानी
समय चूकि पुनि का पछतानी"
अब यह सब दुनिया बदलेगी
अब यह सब काया पलटेगी

अब यह धरती करवट लेगी
अब किसान मजदूर के बच्चे
जिनको तुमने सडा रखा था
जिनको गधा बना रक्खा था
सब कुछ पढ़ लिख कर निकलेंगे
यही सजायेंगे हर कुरसी
यही सँभालेंगे सब ओहदे
तलवार और क़लम दोनों को

پترکار ، لیکھک ، لاثانی
چتر کار ، شاعر ، سیلانی
ویر ، سورما دھرمی ، دانی
آٹھوں گانٹھ ، کمیت جوانی
جسکی چھبی نہیں جائے بکھانی
" گرا انین نین بن بانی "

لیکن کب تک یہ من مانی
یارو دنیا آنی جانی
کس برتے پر تتا پانی
اب نہ چلے گی آنا کانی
" کا برکھا جب کرشی سکھانی
سمے چوکی پنی کا پچھتانی "
اب یہ سب دنیا بدلے گی
اب یہ سب کایا پلٹے گی

اب یہ دھرتی کروٹ لیگی
اب کسان مزدور کے بچے
جنکو تم نے سڑا رکھا تھا
جنکو گدھا بنا رکھا تھا
سب کچھ پڑھ لکھ کر نکلیں گے
یہی سجائیں گے ہر کرسی
یہی سنبھالیں گے سب عہدے
تلوار اور قلم دونوں کو

सिर्फ़ लक्ष्मी नहीं ख़फ़ा है
सरस्वती भी रूठ गई है
हम से सब करते है छूत
अब तक यही रवाज रहा है

''ऊँची जात'' ऊँचे घर वाले
पैसे वाले, ऊपर वाले
विद्या हासिल कर सकते थे
लिख सकते थे पढ़ सकते थे

उनके बच्चे हो सकते थे
चचा भतीजे हो सकते थे
भाई भांजे हो सकते थे
जज्ज, क़लक्टर और कमिशनर

राज सभा के चौकस मेम्बर
डाक्टर और वकील, बैरिस्टर
इंजीनियर, टीचर, प्रोफ़ेसर
वाइस चांसलर और चांसलर

फौज के नायक फौज के अफसर
बैंक डिरेक्टर, बैंक मनेजर
कम्पनियो के शेयर होल्डर
एम.ए., बी.ए., बी टी सी. टी.

बागी, रागी, रतन पारखी
कलाकार, ज्ञानी, विज्ञानी

صرف لکشمی نہیں خفا ہے
سرسوتی بھی روٹھ گئی ہے
ہم سے سب کرتے ہیں چھوت
اب تک یہی رواج روا ہے

''اونچی ذات'' اونچے گھر والے
پیسے والے' اوپر والے
ودیا حاصل کر سکتے تھے
لکھ سکتے تھے پڑھ سکتے تھے

اُن کے بچے ہو سکتے تھے
چچا بھتیجے ہو سکتے تھے
بھائی بھانجے ہو سکتے تھے
جج' کلکٹر اور کمشنر

راج سبھا کے چوکس ممبر
ڈاکٹر اور وکیل بیرسٹر
انجینیر' ٹیچر' پروفیسر
وائس چانسلر اور چانسلر

فوج کے نائک' فوج کے افسر
بینک ڈایرکٹر' بینک منیجر
کمپنیوں کے شیر ہولڈر
ایم اے،' بی اے،' بی.ٹی.سی.ٹی.

باگی' راگی' رتن پارکھی
کلاکار' گیانی' وگیانی

जिनको जनता समझ न पाये
जिनको जनता सुन डर जाये

कोष घोट लेने वालों का
सतरें पढ़ लेने वालो का
क़लम पकड़ लेने वालो का
कागज़ रँग देने वालो का

गिटपिट कर लेने वालो का
एक दरबार सजा रक्खा था
ज्ञान सभ्यता का अपने को
ठेकेदार बना रक्खा था

यारों ने हड़बोग मचा कर
ढोंग रचा कर, स्वाँग रचा कर
तंतर, जतर, छू मन्तर से
हौआ बना दिया विद्या को

सरस्वती के मंदिर को भी
बना दिया मछली बाजार
विद्या के पवित्र मंडप मे
जब हम हाथ जोड कर जाते

पंडित हमको धता बताते
हम मुंह देखते रह जाते थे
यही सोचते रह जाते थे
हम निर्धन कंगालो से

جن کو جنتا سمجھ نہ پائے
جن کو جنتا سن ڈر جائے

کوش گھونٹ لینے والوںکا
سطریں پڑھ لینے والوں کا
قلم پکڑ لینے والوں کا
کاغذ رنگ دینے والوں کا

گٹ پٹ کر لینے والوں کا
اک دربار سجا رکھا تھا
گیان سبھیتا کا اپنے کو
ٹھیکے دار بنا رکھا تھا

یاروں نے ہڑ بونگ مچا کر
ڈھونگ رچاکر ، سوانگ رچا کر
تنتر ، جنتر ، چھو منتر سے
ہوا بنا دیا ودیا کو

سرسوتی کے مندر کو بھی
بنا دیا مچھلی بازار
ودیا کے پوتر منڈپ میں
جب ہم ہاتھ جوڑ کر جاتے

پنڈت ہم کو دھتا بتاتے
ہم منہ دیکھتے رہ جاتے تھے
یہی سوچتے رہ جاتے تھے
ہم نردھن کنگالوں سے

अब तक यह साजिश थी लेकिन
अब यह जादू टूट चुका है
अब यह भाँडा फूट चुका है
पूरा ढोंग रचा रक्खा था
क्या अंधेर मचा रक्खा था
विद्या को दफ़ना रक्खा था
उस का रूप छिपा रक्खा था
दिन को रात बना रक्खा था
शब्दों का आडम्बर रच कर
मन गढ़न्त से एक बात का
सौ विस्तार बना रक्खा था
एक व्योपार जमा रक्खा था
कारोबार चला रक्खा था
ब्रह्मानंद सहोदर कविता
को बेकार बना रक्खा था
सीधी सादी बातों में भी
झूठी ऐंठन दे रक्खी थी
सहज को कठिन बना रक्खा था
सीध में टेढ़ लगा रक्खी थी
अड़बड़ शब्द गढ़े कुछ ऐसे
जिनको जनता सीख न पावे
जिनको जनता बोल न पावे

اب تک یہ سازش تھی لیکن
اب یہ جادو ٹوٹ چکا ہے
اب یہ بھانڈا پھوٹ چکا ہے
پورا ڈھونگ رچا رکھا تھا
کیا اندھیر مچا رکھا تھا
ودیا کو دفنا رکھا تھا
اُس کا روپ چھپا رکھا تھا
دن کو رات بنا رکھا تھا
شبدوں کا آڈمبر رچ کر
من گھڑنت سے ایک بات کا
سو بستار بنا رکھا تھا
اِک بیوپار جما رکھا تھا
کاروبار چلا رکھا تھا
برہما نند سہودر کویتا
کو بیکار بنا رکھا تھا
سیدھی سادی باتوں میں بھی
جھوٹی اینٹھن دے رکھی تھی
سہج کو کٹھن بنا رکھا تھا
سیدھ میں ٹیڑھ لگا رکھی تھی
اڑ بڑ شبد گڑھے کچھ ایسے
جن کو جنتا سیکھ نہ پائے
جن کو جنتا بول نہ پائے

पढ़ने लिखने की उमंग को
निर अधिकार चेष्टा माना
इनके इतनी अक़्ल नही है
इनके पास दिमाग़ नही

सूझ नहीं है बूझ नही है
माँ की कोख से यह जनमे
जनम लँडूरे जनम गँवार

इन्हें अँधेरे ही मे रक्खो
रैन बसेरे ही मे रक्खो
कभी न उभरे इनकी जात
कभी न चमके इनकी बात
कभी न दिन हो इनकी रात

चगढ़ चतुर दुनिया मे इनको
अंधा बहरा गूँगा रक्खो
घामड अनपढ़ डग्गा रक्खो
मैला और कुचैला रक्खो

हेटा रक्खो नीचा रक्खो
इनको चोगा पोंगा रक्खो
कलम न इनके हाथ मे आये
फिर तलवार भी छिन जायेगी

राज की लगरदार नाव की
फिर पतवार भी छिन जायेगी
अपना भरम बनाये रक्खो
जनता को भरमाये रक्खो

پڑھنے لکھنے کی اُمنگ کو
نر ادھیکار چیشٹا مانا
اِن کے اتنی عقل نہیں ہے
اِن کے پاس دماغ نہیں ہے

سوجھ نہیں ہے بوجھ نہیں ہے
ماں کی کوکھ سے یہ جنمے ہیں
جنم لنڈورے جنم گنوار

انہیں اندھیرے ہی میں رکھو
رین بسیرے ہی میں رکھو
کبھی نہ اُبھرے اِن کی ذات
کبھی نہ چمکے ان کی بات
کبھی نہ دن ہو اِن کی رات

چگڑ چتر دنیا میں اِن کو
اندھا بہرا گونگا رکھو
گھامڑ اَن پڑھ ڈگا رکھو
میلا اور کچیلا رکھو

ہیٹا رکھو نیچا رکھو
اِن کو چونگا پونگا رکھو
قلم نہ اِن کے ہاتھ میں آئے
پھر تلوار بھی چھن جائیگی

راج کی لنگردار ناؤ کی
پھر پتوار بھی چھن جائےگی
اپنا بھرم بنائے رکھو
جنتا کو بھرمائے رکھو

जान, माल, धन और हकूमत
बड़ी बड़ी जागीर, रियासत
पढ़ना, लिखना, सनद, लियाकत
बैठक बाजों की थी दौलत

पा कर क़िस्मत के पत्तों के
चौवे, पंजे, सत्ते, अट्ठे
क्या ख़ुश थे उल्लू के पट्ठे

लगे हैं जब धक्के पर धक्के
छुटे तिड़ी बाजों के छक्के
सब जगहे यों ले बैठे थे
सब कुछ यों हथिया बैठे थे
यों दुनिया पर छाये हुए थे

जैसे उनकी हो यह बपौती
अब देता है समय चुनौती
करीगर, मजदूर, किसान
इनकी बदनसीब सन्तान

पढ़ने लिखने का हक़ इनसे
छल बल कल से छीन लिया था
एक धोका फैला रक्खा था
"नीची" जात पॉत वालो के
बच्चों को मनुष्य कब जाना

جان ' مال ' دهن اور حکومت
بڑی بڑی جاگیر ریاست
پڑهنا ' لکهنا ' سند ' لیاقت
بیٹهک بازوں کی تهی دولت

پاکر قسمت کے پتوں کے
چوئے ' پنجے ' ستے ' اٹهے
کیا خوش تهے الو کے پٹهے

لگے هیں جب دهکے پر دهکے
چهٹے تڑی بازوں کے چهکے
سب جگهیں یوں لے بیٹهے تهے
سب کچه یوں هتهیا بیٹهے تهے
یوں دنیا پر چهائے هوئے تهے

جیسے ان کی هو یه بپوتی
اب دیتا هے سمے چنوتی
کاریگر ' مزدور ' کسان
ان کی بد نصیب سنتان

پڑهنے لکهنے کا حق ان سے
چهل بل کل سے چهین لیا تها
اک دهوکا پهیلا رکها تها
"نیچی" ذات پات والوں کے
بچوںکو منشیه کب جانا

फुसलाने मे बहकाने मे
डरवाने मे धमकाने मे

लुट्टस पिट्टस की हलचल मे
धन्ना सेठ के छल, बल, कल मे
चतुर किसान नहीं आयेगा
वह अपना हिस्सा, अपना हक़

लेके रहेगा लेके रहेगा
जी के रहेगा मर के रहेगा
लेकिन अब कुछ करके रहेगा

हर बीघा मे, हर एकड़ मे
पैदावार अठगुनी होगी
भूक मिटेगी और घर घर मे
अन्नपूरना बास करेगी

[शिक्षा मे गोलमाल]

जात पात का भेद मिटेगा
ऊच नीच का भेद मिटेगा
हिन्दू मुसलिम भेद मिटेगा
ब्राह्मन शुद्र बराबर होगे

औरत मर्द बराबर होगे
छोटे बड़े बराबर होगे
बल, विद्या, धन, मान और पद
ओहदा, कुर्सी, इज्जत, शोहरत

پھسلانے میں بہکانے میں
ڈروانے میں دھمکانے میں

لٹس، پٹس کی ہلچل میں
دھناسیٹھ کے چھل، بل، کل میں
چتر کسان نہیں آئے گا
وہ اپنا حصہ، اپنا حق

لیکے رھیگا، لیکے رھیگا.
جی کے رھیگا، مر کے رھیگا
لیکن اب کچھ کرکے رھیگا

ہر بیگھہ میں، ہر ایکڑ میں
پیداوار آٹھ گنی ہوگی
بھوک مٹے گی اور گھر گھر میں
ان پورنا باس کرے گی

[شکشا میں گول مال]

ذات پات کا بھید مٹے گا
اونچ نیچ کا بھید مٹے گا
ہندو مسلم بھید مٹے گا
براھمن شودر برابر ہونگے

عورت مرد برابر ہونگے
چھوٹے بڑے برابر ہونگے
بل، ودیا، دھن، مان اور پد
عہدہ، کرسی، عزت، شہرت

दिन बदलेगा पाप कटेगा
साथी सब सन्ताप कटेगा
अन खलिहान से घर मे आये
इसकी नौबत कब आती थी

अब तक छाती फाड़ परिश्रम
करके जो कुछ फ़सल उगाई
वह गाढ़ी भरपूर कमाई
दो दिन अपने काम न आई

ऊपर ऊपर उड़ जाती थी
रह जाते भूके के भूके
रह जाते नंगे के नंगे
रह जाते क़र्ज़े में डूबे

जीवन कटता ब्याज चुकाते
लेकिन अब कुछ होने को है
खेती, बाड़ी, बाग़ और जंगल
दूध, दही, घी, नाज और फल

गाँव मे जो दौलत उपजेगी
वह सब की सब अपनी होगी
अब यह दुर्व्यवहार मिटेगा
अब यह अत्याचार मिटेगा

चालाकी मे धौंस धाँस मे
दल्लालो की फोड़ फाँस मे

دن بدلے گا' پاپ کٹے گا
ساتھی سب سنتاپ کٹے گا
ان کھلیان سے گھر میں آئے
اس کی نوبت کب آتی تھی

اب تک چھاتی پھاڑ پرشرم
کرکے جو کچھ فصل اُگائی
وہ گاڑھی بھر پور کمائی
دو دن اپنے کام نہ آئی

اوپر اوپر اُڑ جاتی تھی
رہ جاتے بھوکے کے بھوکے
رہ جاتے ننگے کے ننگے
رہ جاتے قرضے میں ڈوبے

جیون کٹتا بیاج چکاتے
لیکن اب کچھ ہونے کو ہے
کھیتی' باڑی' باغ اور جنگل
دودھ' دہی' گھی' ناج اور پھل

گاؤں میں جو دولت اپجے گی
وہ سب کی سب اپنی ہوگی
اب یہ دربیوہار مٹے گا
اب یہ اتیا چار مٹے گا

چالاکی میں دھونس دھانس میں
دلالوں کی پھوڑ پھانس میں

[किसानो की पुकार]

नये नियम से नये रूप से
नये रंग से नये ढंग से
खेती होगी
खेत और खलिहान का रोना

बीज, खाद, पानी का रोना
गाय की हाय, बैल का रोना
घास, खली, भूसे का रोना
जमींदार की मार का रोना

गाली और फटकार का रोना
धर पकड़ और बेगार का रोना
क़र्ज़े और ब्याज का रोना
बनिये और बज़ाज़ का रोना

इज़्ज़त और लाज का रोना
पटवारी की चाल का रोना
दंड, राजपड़ताल का रोना
साथी, लाल, बाल, का रोना

आये दिन के काल का रोना
हर चीज़ और हर बात का रोना
जुग जुग से दिन रात का रोना
नहीं रहेगा नहीं रहेगा

[کسانوں کی پکار]

نئے نیم سے نئے روپ سے
نئے رنگ سے، نئے ڈھنگ سے
کھیتی ہوگی
کھیت اور کھلیان کا رونا

بیج، کھاد، پانی کا رونا
گئے کی ہائے، بیل کا رونا
گھاس، کھلی، بھوسے کا رونا
زمیندار کی مار کا رونا

گالی اور پھٹکار کا رونا
دھر، پکڑ اور بیگار کا رونا
قرضے اور بیاج کا رونا
بنیئے اور بزاز کا رونا

عزت اور لاج کا رونا
پٹواری کی چال کا رونا
دلق، راج پڑتال کا رونا
ساتھی، لال، بال کا رونا

آئے دن کے کال کا رونا
ہر چیز اور ہر بات کا رونا
جگ جگ سے، دن رات کا رونا
نہیں رہیگا، نہیں رہیگا

हमको जान हमे पहिचान
यही सँभालेगे सब काम

राज पाट के मालिक होंगे
राज के करता धरता होंगे
सतजुग से भी बढ़कर होगा
राम राज से बढ़कर होगा

हर एक जुग से बढ़कर होगा
ब्राह्मण राज से बढ़कर होगा
क्षत्री राज से बढ़कर होगा
वैश्य राज से बढ़कर होगा

हिन्दू राज से बढ़कर होगा
बौद्ध राज से बढ़कर होगा
मुसलिम राज से बढ़कर होगा
मेहनत करने वालों का राज

खेती करने वालो का राज
माल बनाने वालो का राज
धन उपजाने वालो का राज
हुन बरसाने वालो का राज

इस ऊसर बंजर धरती को
इस जलती तपती परती को
स्वर्ग बनाने वालो का राज

هم کو جان همیں پہچان
یہی سنبھالیں کے سب کام

راج پاٹ کے مالک ہونگے
راج کے کرتا دھرتا ہوں گے
ست جگ سے بھی بڑھ کر ہوگا
رام راج سے بڑھ کر ہوگا

ہر اک جگ سے بڑھ کر ہوگا
براھمن راج سے بڑھ کر ہوگا
چھتری راج سے بڑھ کر ہوگا
ویشیہ راج سے بڑھ کر ہوگا

ھندو راج سے بڑھ کر ہوگا
بودھ راج سے بڑھ کر ہوگا
مسلم راج سے بڑھ کر ہوگا
محنت کرنے والوں کا راج

کھیتی کرنے والوں کا راج
مال بنانے والوں کا راج
دھن اُپجانے والوں کا راج
ھن برسانے والوں کا راج

اِس اوسر بنجر دھرتی کو
اِس جلتی' تپتی پرتی کو
سورگ بنانے والوں کا راج

पंडित, ठाकुर, शेख़ और सैयद
साहब, मिस्टर, हाकिम, अफ़सर
सोना वाले चाँदी वाले
आढ़त वाले मंडी वाले
कोट, महल और कोठी वाले
गद्दी वाले, कुर्सी वाले
मसनद वाले, फ़र्शी वाले
परमिट वाले, लाइसेंस वाले
घिस्से वाले, ठस्से वाले
पट्टे वाले, सट्टे वाले
इनके चट्टे बट्टे वाले
अब तक इनका राज रहा है
देश पर अत्याचार रहा है
अब यह धरती करवट लेगी
अब यह दुनिया पलटा लेगी
भारत की काया पलटेगी
सब की क़िस्मत चमक जायेगी
कारीगर, मज़दूर, किसान
भारत के बेचैन जवान
दबे दबे बेनामो निशान
उभरेंगे बेशानो गुमान
मान न मान तेरा मेहमान

پنڈت ، ٹھاکر ، شیخ اور سید
صاحب ، مسٹر ، حاکم ، افسر
سونا والے ، چاندی والے
آڑہت والے ، منڈی والے
کوٹ ، محل اور کوٹھی والے
گدی والے ، کرسی والے
مسند والے ، فرشی والے
پرمٹ والے ، لیسنس والے
گھسے والے ، ٹھسے والے
پٹے والے سٹے والے
ان کے چٹے بٹے والے
اب تک ان کا راج رہا ہے
دیش پر اتیاچار رہا ہے
اب یہ دھرتی کروٹ لے گی
اب یہ دنیا پلٹا لے گی
بھارت کی کایا پلٹے گی
سب کی قسمت چمک جائے گی
کاریگر ، مزدور ، کسان
بھارت کے بیچین جوان
دبے دبے بے نام و نشان
ابھریں گے بے شان و گمان
مان نہ مان ترا مہمان

धरती की करवट

(भाई रघुपति सहाय "फिराक")

सूरज चाँद अँगड़ाई लेंगे
तारे अपनी गति बदलेंगे
परबत, सागर लहरायेंगे
जब यह धरती करवट लेगी

हल, कुदाल, फावड़े, बसूले
उठे हथौड़े बोल उठेंगे
नया जनम है आज़ादी का
देश के राजा, देश निवासी

परजा ही है देश का राजा
घर की चटाई राज सिंघासन
सब की टोपी राज मुकुट है
फूस का घर भी राज महल है

जनम जनम का पाप कटेगा
अब तक किस का राज रहा है ?
राजे, बाबू, सेठ, महाजन,
जमींदार, दीवान, दरोगा,

دھرتی کی کروٹ

(بھائی رگھوپتی سہائے 'فراق')

سورج چاند انگڑائی لیں گے
تارے اپنی گتی بدلیں گے
پربت، ساگر لہرائیں گے
جب یہ دھرتی کروٹ لیگی

ہل، کدال، پھاوڑے، بسولے
اُٹھے ہتھوڑے بول اُٹھیں گے
نیا جنم ہے آزادی کا
دیش کے راجہ، دیش نواسی

پرجا ہی ہے دیش کا راجہ
گھر کی چٹائی راج سنگھاسن
سب کی ٹوپی راج مکٹ ہے
پھوس کا گھر بھی راج محل ہے

جنم جنم کا پاپ کٹے گا
اب تک کس کا راج رہا ہے ؟
راجے، بابو، سیٹھ، مہاجن
زمیندار، دیوان، داروغہ،

सावरकर के कलकत्ते पहुँचने पर वहाँ के हिन्दू भाइयो ने जो भद्दे पोस्टर निकाले थे उनमे पूरबी पाकिस्तान को फिर से जीतने की बातें लिखी गई थी. श्री जितेन्द्रनाथ ने उन पोस्टरो की खास तौर पर आलोचना की..

श्री जितेन्द्रनाथ के भाषन के बाद श्री किशोरलाल मशरूवाला, काहिरा युनिवर्सिटी के प्रोफेसर श्री एच. आई. हसन, फ्रान्स की मागदा ट्रोकम और डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद के भाषन हुए. उन सभी के भाषनो से यह आशा जाहिर होती थी कि अगर कुछ कार्य कर्ता अपने जीवन को खतरे मे डालकर दोनो देशो मे एकता और प्रेम का प्रचार करें तो हालत काफी सुधर सकती है, दरअसल यह एक बहुत बड़ी सचाई है, लेकिन आज इस सचाई पर अमल करने वाले हैं कितने ? असल सवाल तो यह है.

हिन्दू, मुस्लिम एकता

पंडित सुन्दर लाल

चार लैक्चर जो उन्होंने सेन्ट्रल कन्सीलिएटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर मे दिये.

सौ सफे की किताब की कीमत सिर्फ बारह आने

किताब नागरी उर्दू दोनो लिखावटों मे मिल सकती है.

मैनेजर "नया हिन्द", ४८ बाई का बाग, इलाहाबाद

ساورکر کے کلکتے پہونچنے پر وہاں کے ہندو بھائیوں نے جو بھدے پوسٹر نکالے تھے اُن میں پوربی پاکستان کو پھر سے جیتنے کی باتیں لکھی گئی تھیں. شری جتیندر ناتھ نے اُن پوسٹروں کی خاص طور پر آلوچنا کی.

شری جتیندر ناتھ کے بھاشن کے بعد شری کشور لال مشرو والا، قاہرہ یونیورسٹی کے پروفیسر شری ایچ - آئی - حسن، فرانس کی ماگدا ٹروکم اور ڈاکٹر راجیندر پرساد کے بھاشن ہوئے. اُن سبھی کے بھاشنوں سے یہ آشا ظاہر ہوتی تھی کہ اگر کچھ کاریہ کرتا اپنے جیون کو خطرے میں ڈالکر دونوں دیشوں میں ایکتا اور پریم کا پرچار کریں، تو حالت کافی سدھر سکتی ہے دراصل یہ ایک بہت بڑی سچائی ہے لیکن آج اس سچائی پر عمل کرنے والے ہیں کتنے؟ اصل سوال تو یہ ہے

ہندو، مسلم ایکتا

پنڈت سندر لال کے

چار لیکچر جو اُنھوں نے کنسیلیئٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے. سو صفحے کی قیمت صرف بارہ آنے کتاب ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے.

مانیجر 'نیا ہند' - ۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

तो इन सब घटनाओं और हक़ीक़तों से यही नतीजा निकलता है कि फ़िरकावारियत का एक बड़ा कारन हमारे समाज मे फैली हुई अमीरी ग़रीबी का भयंकर भेद है. अकसर ऐसा भी हुआ है और हो रहा है कि समाज मे जो आन्दोलन आर्थिक समानता कायम करने के लिए चलते है, उनको दबाने के लिए समाज के पूंजीपति फ़िरकावारियत को उभारते है और जो गुस्सा उनके ख़िलाफ़ पैदा होता है उसे एक दूसरी तरफ़ मोड़ देते है आज अगर इस बात की जांच की जाय कि हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अकाली दल, मुस्लिम लीग और इसी तरह की दूसरी साम्प्रदायिक संस्थाओं को सबसे ज्यादा माली मदद कौन लोग देते हैं, तो हमें पता चलेगा कि इस सूची मे सबसे ज्यादा नाम उन बड़े बड़े सरमायेदारों के हैं, जो एक तरफ़ चोरबाज़ारी करके समाज को चूस रहे है और दूसरी तरफ़ हमेशा अपनी जाति या फिरके की फ़िक्र मे दुबले होने का स्वाँग रचाये रहते हैं. इसका साफ मतलब यह है कि हमारे देश मे जब तक अमीरी ग़रीबी का भेद भाव कायम है तब तक फिरकावारियत को हवा भी मिलती ही रहेगी. इस लिए फ़िरकावारियत को मिटाने के लिये इस बात की भी ज़रूरत है कि हम उन आन्दोलनों की मदद करें, जो सरमायेदारी के ख़िलाफ़ चल रहे हैं.

श्री जितेन्द्रनाथ ने दूसरी बात यह कही कि पूरबी बंगाल मे हिन्दुओं की हालत को बिगाड़ने और उनको ख़तरे में डालने के लिए वह लोग भी ज़िम्मेदार हैं, जो अकसर हिन्दुस्तान मे यह कहा करते हैं कि पाकिस्तान बहुत दिनों तक क़ायम नहीं रह सकेगा. वीर

تو اُن سب گھٹناؤں اور حقیقتوں سے یہی نتیجہ نکلتا ہے کہ فرقہ واریت کا ایک بڑا کارن ہمارے سماج میں پھیلی ہوئی امیری غریبی کا بھینکر بھید ہے. اکثر ایسا بھی ہوا ہے اور ہو رہا ہے کہ سماج میں جو آندولن آرتھک سمانتا قائم کرنے کے لئے چلتے ہیں، اُن کو دبانے کے لئے سماج کے پونجی پتی فرقہ واریت کو اُبھارتے ہیں اور جو غصہ اُن کے خلاف پیدا ہوتا ہے، اُسے ایک دوسری طرف موڑ دیتے ہیں. آج اگر اِس بات کی جانچ کی جائے کہ ہندو مہاسبھا، راشٹریہ سویم سیوک سنگھ، اکالی دل، مسلم لیگ اور اِسی طرح کی دوسری سامپردایک سنستھاؤں کو سب سے زیادہ مالی مدد کون لوگ دیتے ہیں، تو ہمیں پتہ چلے گا کہ اِس سوچی میں سب سے زیادہ نام اُن بڑے بڑے سرمایہ داروں کے ہیں، جو ایک طرف چور بازاری کرکے سماج کو چوس رہے ہیں اور دوسری طرف ہمیشہ اپنی جاتی یا فرقے کی فکر میں دبلے ہونے کا سوانگ رچائے رہتے ہیں. اِس کا صاف مطلب یہ ہے کہ ہمارے دیش میں جب تک امیری غریبی کا بھید بھاو قائم ہے، تب تک فرقہ واریت کو ہوا بھی ملتی ہی رہے گی. اِس لئے فرقہ واریت کو مٹانے کے لئے اِس بات کی بھی ضرورت ہے کہ ہم اُن آندولنوں کی مدد کریں جو سرمایہ داری کے خلاف چل رہے ہیں.

شری جتیندر ناتھ نے دوسری بات یہ کہی کہ پوربی بنگال میں ہندوؤں کی حالت کو بگاڑنے اور اُن کو خطرے میں ڈالنے کے لئے وہ لوگ بھی ذمہ دار ہیں، جو اکثر ہندستان میں یہ کہا کرتے ہیں کہ پاکستان بہت دنوں تک قائم نہیں رہ سکیگا. ویر

बलवे शुरू होने से पहिले वहां के हिन्दू अछूत, मुसलमानो के साथ मिल गये थे, क्यों कि वह भी ऊँची जाति के धनी हिन्दुओं से माली हालत में उसी तरह पिछड़े हुए थे, जिस तरह वहाँ के मुसलमान पिछड़े हुए थे.

यह हक़ीक़त, जो श्री जितेन्द्रनाथ ने बताई, एक बहुत बड़ी सचाई को रोशनी में लाती है. आज हमारे समाज का इक़्तसादी तवाज़ुन यानी आर्थिक सन्तुलन इतना बिड़ग गया है और एक तबक़े के लोग दूसरे तबक़े से इतने चूसे जा रहे हैं कि उनके दिलों में हमेशा बदले की आग भड़कती रहती है. यही कारन है कि पिछले ज़माने में हिन्दुस्तान भर के अछूतो की एक बहुत बड़ी तादाद मुस्लिम लीग के साथ थी और आज भी उनके दिलो मे ऊँची जाति के हिन्दुओ के खिलाफ कम नफरत और गुस्सा नहीं पाया जाता. सन् १९४८ मे जब गान्धी जी की हत्या हुई, तो इस बहाने को लेकर महाराष्ट्र और बम्बई सूबे मे वहाँ के गैर ब्राह्मण लोगो ने सैकड़ों ब्राह्मणो के घर फूंक दिये थे और पचासो ब्राह्मणो को मौत के घाट उतार दिया था. आज भी वहाँ ब्राह्मणो और गैर ब्राह्मणो के बीच कम तनाव नहीं है. इसी तरह बगाल मे आज हर एक बगाली के मन मे मारवाड़ियो के खिलाफ नफरत पाई जाती है और वह इसी लिए कांग्रेस का भी विरोध करते हैं क्यो कि उनका ख्याल है कि पश्चिमी बगाल की कांग्रेस सरकार अपने सूबे के मारवाड़ी पूँजीपतियो से मिली हुई है.

بلوے شروع ہونے سے پہلے وہاں کے ہندو اچھوت' مسلمانوں کے ساتھ مل گئے تھے' کیونکہ وہ بھی اونچی جاتی کے دھنی ہندوؤں سے مالی حالت میں اُسی طرح پچھڑے ہوئے تھے' جس طرح وہاں کے مسلمان پچھڑے ہوئے تھے۔

یہ حقیقت' جو شری جتیندر ناتھ نے بتائی' ایک بہت بڑی سچائی کو روشنی میں لاتی ہے۔ آج ہمارے سماج کا اقتصادی توازن یعنی آرتھک سنتلن اتنا بگڑ گیا ہے اور ایک طبقے کے لوگ دوسرے طبقے سے اتنے چوسے جا رہے ہیں کہ اُنکے دلوں میں ہمیشہ بدلے کی آگ بھڑکتی رہتی ہے۔ یہی کارن ہے کہ پچھلے زمانے میں ہندستان بھر کے اچھوتوں کی ایک بہت بڑی تعداد مسلم لیگ کے ساتھ تھی اور آج بھی اُن کے دلوں میں اونچی جاتی کے ہندوؤں کے خلاف کم نفرت اور غصہ نہیں پایا جاتا۔ سن ۱۹۴۸ میں جب گاندھی جی کی ہتیا ہوئی تو اس بہانے کو لیکر مہاراشٹر اور بمبئی صوبے میں وہاں کے غیر برہمن لوگوں نے سیکڑوں برہمنوں کے گھر پھونک دیئے تھے اور پچاسوں برہمنوں کو موت کے گھاٹ اُتار دیا تھا آج بھی وہاں برہمنوں اور غیر برہمنوں کے بیچ کم تناؤ نہیں ہے اسی طرح بنگال میں آج ہر ایک بنگالی کے من میں مارواڑیوں کے خلاف نفرت پائی جاتی ہے اور وہ اسی لئے کانگریس کا بھی ورودھ کرتے ہیں کیونکہ اُن کا خیال ہے کہ پچھمی بنگال کی کانگریسی سرکار اپنے صوبے کے مارواڑی پونجی پتیوں سے ملی ہوئی ہے

फिरक़ावारियत के अलावा कुछ दूसरे कारन भी थे. श्री प्यारे लाल ने यह भी बताया कि देहाती किसानो के बीच इस तरह का कोई झगड़ा नहीं था

इसके बाद प्यारे लाल जी ने बताया कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मे एकता का काम दूसरे देशो के लोग ज़्यादा आसानी से कर सकते है इससे शायद उनका मतलब यह था कि दोनो देशो के लोग एक दूसरे पर यकीन नही रखते और उनकी नीयत पर शक करने लगते है.

बात किसी हद तक ठीक है, लेकिन इसका एक पहलू यह भी है कि हम अपने अपने देशो मे ही क्यो न इस काम को करें. यहाँ तो यह सवाल पैदा नही होता शान्ति सम्मेलन के शान्ति निकेतन में होने वाले अधिवेशन मे तो राजकुमारी अमृत कोर ने यह कहा भी था कि अगर हिन्दुस्तान मे हम अपने मुसलमान भाइयो को प्रेम से गले लगाले और उनको किसी शिकायत का मका न दें तो पाकिस्तान मे रहने वाले हिन्दुओ का मसला किसी हद तक हल हो ही जावेगा.

श्री प्यारे लाल के बाद इस सवाल पर सबसे अहम भाषण पूरबी बगाल के हिन्दू नुमाइन्दे श्री जितेन्द्रनाथ ने दिया. उन्होने यह साफ साफ कहा कि पूरबी बगाल मे जो फिरकेवाराना बलवे हुए, उनका मूल कारन आर्थिक यानी इक़्तसादी था. मिसाल के लिये उन्होंने बताया कि नोआखाली जिले की अस्सी फीसदी ज़मीन वहाँ के बीस फ़ीसदी हिन्दुओ के कबजे मे थी. इसी तरह ढाका में

فرقہ واریت کے علاوہ کچھ دوسرے کارن بھی تھے. شری پیارے لال نے یہ بھی بتایا کہ دیہاتی کسانوں کے بیچ اس طرح کا کوئی جھگڑا نہیں تھا.

اس کے بعد پیارے لال جی نے بتایا کہ ہندستان اور پاکستان میں ایکتا کا کام دوسرے دیشوں کے لوگ زیادہ آسانی سے کر سکتے ہیں اس سے شاید اُن کا مطلب یہ تھا کہ دونوں دیشوں کے لوگ ایک دوسرے پر یقین نہیں رکھتے اور اُن کی نیت پر شک کرنے لگتے ہیں.

بات کسی حد تک ٹھیک ہے، لیکن اِس کا ایک پہلو یہ بھی ہے کہ ہم اپنے اپنے دیشوں میں ہی کیوں نہ اِس کام کو کریں. یہاں تو یہ سوال پیدا نہیں ہوتا شانتی سمیلن کے شانتی نکیتن میں ہونے والے ادھیویشن میں تو راج کماری امرت کور نے یہ کہا بھی تھا کہ اگر ہندستان میں ہم اپنے مسلمان بھائیوں کو پریم سے گلے لگالیں اور اُن کو کسی شکایت کا موقع نہ دیں تو پاکستان میں رہنے والے ہندوؤں کا مسئلہ کسی حد تک حل ہو ہی جاوے گا.

شری پیارے لال کے بعد اس سوال پر سب سے اہم بھاشن پوربی بنگال کے ہندو نمائندے شری جتیندر ناتھ نے دیا. اُنہوں نے یہ صاف صاف کہا کہ پوربی بنگال میں جو فرقہ وارانہ بلوے ہوئے، اُن کا مول کارن آرتھک یعنی اقتصادی تھا. مثال کے لئے اُنہوں نے بتایا کہ نواکھالی ضلع کی اسی فیصدی زمین وہاں کے ۲۰ فیصدی ہندوؤں کے قبضے میں تھی. اِسی طرح ڈھاکہ میں

एक रियासत में जब वहाँ की प्रजा ने सत्याग्रह करके अपने अपने राजाओं को हिन्दुस्तान की सरकार की मातहती कबूल करने के लिए मजबूर करना चाहा, तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवक किस तरह उन सत्याग्रहियों पर लाठियाँ बरसाते थे.

यह तमाम असलियत हम जनता के सामने रख कर आसानी से उसे यह बात समझा सकेंगे कि 'अखंड हिन्दुस्तान' और 'हिन्दू राष्ट्र' के नारे सिर्फ अपने हाथों में ताकत लेने की चालें हैं और यह नारे लगाने वाले खुद अपने पिछले जमाने मे इन उसूलों के खिलाफ काम करते रहे हैं.

प्रोफ़ेसर हुसैन ने अपने भाषन में कांग्रेस को इसके लिए सराहा कि उसने अपना गैर फिरकेवाराना रुप कायम रक्खा है. इससे यह साबित हो गया कि हमारे देश मे हर एक ऐसी तहरीक या हलचल से, जो फिरकेवारियत के खिलाफ होती है, पाकिस्तान के उन लोगों को मदद पहुँचती है, जो फिरकेवारियत के खिलाफ लड रहे है और कम तादाद वाली हिन्दू जातियों मे भरोसा पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं. काश! हिन्दुस्तान के हिन्दू इससे कुछ सीख सकें

प्रोफेसर हुसैन के बाद गांधी जी के प्राइवेट सैकरेट्री श्री प्यारे लाल ने इस सवाल पर रोशनी डाली श्री प्यारे लाल खुद बहुत दिनो तक नोआखाली के इलाकों मे रह कर हिन्दू मुसलिम एकता का काम कर चुके हैं और वहाँ का जाती तजरबा रखते हैं.

श्री प्यारे लाल ने प्रोफेसर हुसैन की इस बात की ताईद की कि पूरबी बंगाल मे जो फ़िरक़ेवाराना बलवे हुए, उनके मजहबी

ایک ریاست میں جب وہاں کی پرجا نے ستیا گرہ کرکے اپنے اپنے راجاؤں کو ہندستان کی سرکار کی ماتحتی قبول کرنے کیلئے مجبور کرنا چاہا' تو راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کے سویم سیوک کس طرح اُن ستیا گرہیوں پر لاٹھیاں برساتے تھے.

یہ تمام اصلیت ہم جنتا کے سامنے رکھ کر آسانی سے اُسے یہ بات سمجھا سکیں گے کہ 'اکھنڈ ہندستان' اور 'ہندو راشٹر' کے نعرے لگانے والے خود اپنے پچھلے زمانے میں اِن اصولوں کے خلاف کام کرتے رہے ہیں.

پروفیسر حسین نے اپنے بھاشن میں کانگریس کو اِس کے لئے سراہا کہ اُس نے اپنا غیر فرقہ وارانہ روپ قائم رکھا ہے. اِس سے یہ ثابت ہوگیا کہ ہمارے دیش میں ہر ایک ایسی تحریک یا ہلچل سے' جو فرقہ واریت کے خلاف ہوتی ہے' پاکستان کے اُن لوگوں کو مدد پہونچتی ہے' جو فرقہ واریت کے خلاف لڑ رہے ہیں اور کم تعداد والی ہندو جاتیوں میں بھروسہ پیدا کرنے کی کوشش کر رہے ہیں. کاش! ہندستان کے ہندو اِس سے کچھ سیکھ سکیں.

پروفیسر حسین کے بعد گاندھی جی کے پرائیویٹ سکریٹری شری پیارے لال نے اِس سوال پر روشنی ڈالی. شری پیارے لال خود بہت دنوں تک نو اکھالی کے علاقوں میں رہ کر ہندو مسلم ایکتا کا کام کر چکے ہیں اور وہاں کا ذاتی تجربہ رکھتے ہیں.

شری پیارے لال نے پروفیسر حسین کی اِس بات کی تائید کی کہ پوربی بنگال میں جو فرقہ وارانہ بلوے ہوئے اُن کے مذہبی

सकेंगे. आज हिन्दू मुसलमानों की मजहबी एकता के प्रचार से ज्यादा जरूरत इस प्रचार की है कि हिन्दू महासभा ने किस किस मौके पर देश के साथ गद्दारी की. पिछले जमाने में किस तरह वह हमेशा उन मुसलमानों के साथ साँठ गाँठ करती रही, जो कट्टर फिरक़ा परस्त थे १९४२-४३ मे किस तरह 'हिन्दू राष्ट्र' का नारा लगाने वाले सावरकर साहब ने उत्तरी पच्छिमी सरहदी सूबे मे डाक्टर खान साहब की कांग्रेसी मिनस्ट्री को गिराने मे मदद की थी और लीगी मिनस्ट्री कायम कराई थी मास्टर तारा सिंह साहब भी उस मौके पर किस तरह से मुस्लिम लीग के साथ मिल गये थे और अकाली दल के नुमाइन्दे सरदार अजीत सिंह ने किस तरह लीगी मिनस्ट्री मे एक ओहदा संभाल लिया था

आज हिन्दुस्तान पाकिस्तान को फिर से एक करने का नारा भी हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की तरफ से लगाया जा रहा है. एकता के प्रचारकों को आज यह बात घर घर पहुँचानी है कि आज जो लोग फिर से 'अखण्ड हिन्दुस्तान' बनाने की क़समे खा रहे हैं, उन्होंने सन् १९४७ के नाजुक वक्त मे हर एक रियासती राजा को हिन्दुस्तान से अलग रहने के लिए किस तरह उकसाया था. ट्रावनकोर के दीवान सर पी. सी. रामास्वामी अय्यर ने जब एक मुसलमान को पाकिस्तान मे राजदूत मुक़र्रर करके अपनी रियासत को बिलकुल आज़ाद रखने का फैसला किया था तो सावरकर साहब ने तार से उनको आशीर्वाद भेज कर किस तरह उनके इरादों के साथ अपना इत्तिफ़ाक़ जाहिर किया था और हर

سکیں گے . آج هندو مسلمانوں کي مذهبی ایکتا کے پرچار سے زیادہ ضرورت اِس پرچار کی هے که هندو مهاسبها نے کس کس موقع پر دیش کے ساتھ غداري کی هے پچھلے زمانے میں کس طرح وہ همیشه اُن مسلمانوں کے ساتھ سانٹھ گانٹھ کرتی رهی' جو کٹر فرقه پرست تھے ١٩٤٢-٤٣ میں کس طرح 'هندو راشٹر' کا نعرہ لگانے والے ساورکر صاحب نے اُتری پچھمی سرحدی صوبه میں ڈاکٹر خان صاحب کی کانگریسی منسٹری کو گرانے میں مدد کی تھی اور لیگی منسٹری قائم کرائي تھی ماسٹر تارا سنگھ صاحب بھی اس موقع پر کس طرح سے مسلم لیگ کے ساتھ مل گئے تھے اور اکالی دل کے نمائندے سردار اجیت سنگھ نے کس طرح لیگی منسٹری میں ایک عهدہ سنبھال لیا تھا .

آج هندستان پاکستان کو پھر سے ایک کرنے کا نعرہ بھی هندو مهاسبها اور راشٹریه سویم سیوک سنگھ کي طرف سے لگایا جا رها هے . ایکتا کے پرچارکوں کو آج یه بات گھرگھر پهونچانی هے که آج جو لوگ پھر سے اکھنڈ هندستان بنانے کی قسمیں کھا رهے هیں' اُنھوں نے سن ١٩٤٧ کے نازک وَقت میں هر ایک ریاستي راجا کو هندستان سے الگ رهنے کیلئے کس طرح اُکسایا تھا . ٹراونکور کے دیوان سر پی . سی . راما سوامی آییر نے جب ایک مسلمان کو پاکستان میں راج دوت مقرر کرکے اپنی ریاست کو بالکل آزاد رکھنے کا فیصله کیا تھا تو ساورکر صاحب نے تار سے اُن کو آشیرواد بھیج کر کس طرح اُن کے اِرادوں کے ساتھ اپنا اتفاق ظاهر کیا تھا اور هر

साम्प्रदायिकता की आग सुलगा रहे है. आम तौर पर एकता के प्रचारको की ताकत जनता को यह समझाने मे खर्च होती है कि हिन्दू मुसलमानो मे या सिक्खो के बीच कोई खास मजहबी फर्क नहीं है और जो फर्क है उससे बहुत ज्यादा ऐसी बाते है जो दोनो मजहबो मे एकसी मिलती है.

लेकिन जब फूट डालने वाले प्रचारक इन दोनो मजहबो के बीच जो फर्क पाये जाते है, उन पर ज़ोर देते है तो लोग एकता के प्रचारको की बात भूल जाते है. आम तौर पर यह इन्सानी फितरत है कि नफरत फैलाने वाली बात आदमी के मन पर ज्यादा असर करती है और यही कारन है कि जनता अक्सर उनके पीछे चलती है जो नफरत का प्रचार करते है, यह दूसरी बात है कि कुछ लोग पापो के खिलाफ नफरत का प्रचार करते है, जैसा कि बुद्ध, महावीर हजरत मुहम्मद, हजरत ईसा और महात्मा गान्धी ने किया यानी इन लोगो ने समाज मे फैली हुई बुराइयो को उधेड कर रख दिया और उसके खिलाफ इस कदर नफरत पैदा कर दी, जिसकी वजह से उन बुराइयो का बिलकुल ही या किसी हद तक खात्मा हो गया इसके खिलाफ कुछ लोगो ने एक खास फिरका या जाति के खिलाफ नफरत पैदा कराई, जिसकी वजह से बड़े बड़े धर्म युद्ध यानी जिहाद हुये या एक देश और दूसरे देश के बीच लडाइयाँ हुई और इन्सानियत को खून से नहला दिया गया.

आज एकता के प्रचारको को फूट परस्तो की हरकतो के खिलाफ भी नफरत फैलानी होगी, तभी वह अपने मिशन मे कामयाब हो

سامپردائکتا کی آگ سلگا رہے ھیں عام طور پر ایکتا کے پرچارکوں کی طاقت جنتا کو یہ سمجھانے میں خرچ ھوتی ھے کہ ھندو مسلمانوں یا سکھوں کے بیچ کوئی خاص مذھبی فرق نہیں ھے اور جو فرق ھے اُس سے بہت زیادہ ایسی باتیں ھیں جو دونوں میں ایک سی ملتی ھیں۔

لیکن جب پھوٹ ڈالنے والے پرچارک اِن دونوں مذھبوں کے بیچ جو فرق پائے جاتے ھیں اُن پر زور دیتے ھیں تو لوگ ایکتا کے پرچارکوں کی بات بھول جاتے ھیں عام طور پر یہ انسانی فطرت ھے کہ نفرت پھیلانے والی بات آدمی کے من پر زیادہ اثر کرتی ھے اور یہی کارن ھے کہ جنتا اکثر اُن کے پیچھے چلتی ھے جو نفرت کا پرچار کرتے ھیں یہ دوسری بات ھے کہ کچھ لوگ پاپوں کے خلاف نفرت کا پرچار کرتے ھیں، جیسا کہ بدھ، مہاویر، حضرت محمد، حضرت عیسیٰ اور مہاتما گاندھی نے کیا یعنی اِن لوگوں نے سماج میں پھیلی ھوئی برائیوں کو اُدھیڑ کر رکھ دیا اور اُس کے خلاف اِس قدر نفرت پیدا کردی، جس کی وجہ سے اُن برائیوں کا بالکل ھی یا کسی حد تک خاتمہ ھو گیا اِس کے خلاف کچھ لوگوں نے ایک خاص فرقہ یا جاتی کے خلاف نفرت پیدا کرائی، جس کی وجہ سے بڑے بڑے دھرم یدھ یعنی جہاد ھوئے یا ایک دیش اور دوسرے دیش کے بیچ لڑائیاں ھوئیں اور انسانیت کو خون سے نہلا دیا گیا

آج ایکتا کے پرچارکوں کو پھوٹ پرستوں کی حرکتوں کے خلاف بھی نفرت پھیلانی ھوگی، تبھی وہ اپنے مشن میں کامیاب ھو

मसले पर उनको बहुत संभल कर बोलना चाहिये और उसी भावना से इस समस्या को सुलझाने की कोशिश करनी चाहिये, जो भावना गान्धी जी की थी. डाकूर जानसन गान्धी जी से बहुत प्रभावित दिखाई देते थे

डाकूर जानसन के बाद ढाका यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर के एम हुसैन का भाषण हुआ. उन्होने सब से पहिले यह बात साफ की कि वह बिलकुल जाती तौर पर इस सम्मेलन मे शरीक हुए हैं और न तो पूरबी पाकिस्तान की सरकार और न वहॉ की जनता के किसी सङ्गठन के वह नुमाइन्दे हैं. इसके बाद उन्होने बताया कि इस सवाल की तह मे खास बात यह नही है कि हिन्दू, मुसलमानो के बीच कुछ मजहबी मत भेद हैं, बल्कि असल बात यह है कि इस सवाल को उकसा कर कुछ ताक़तें राजकाजी अधिकारो और गद्दियों पर अपना क़ब्जा जमाये रखना चाहती है.

आज जो लोग हिन्दू मुसलिम एकता के मुश्किल काम में लगे हुए है, उनके लिए प्रोफेसर हुसैन की इस सच्ची और खरी बात की बहुत बड़ी क़ीमत है. सच मुच आज सब से बड़ी ज़रूरत इस बात की है कि हम हिन्दू मुसलमानो के उन नेताओ और उन सङ्गठनो की पिछली जिन्दगी की सही तस्वीर आम जनता के सामने पेश करें, जो यह फितने उठाया करते हैं. मिसाल के लिए हमारे देश मे आज कल हिन्दू महा सभा और राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ की ओर से खास तौर पर हिन्दू फिरक़ावारियत को उभारा जा रहा है और मास्टर तारा सिंह साहब व उनका अकाली दल सिक्खो मे

مسئے پر اُنکو بہت سنبھل کر بولنا چاہئے اور اُسی بھاونا سے اِس سمسیا کو سلجھانے کی کوشش کرنی چاہئے، جو بھاونا گاندھی جی کی تھی. ڈاکٹر جانسن گاندھی جی سے بہت پربھاوت دکھائی دیتے تھے.

ڈاکٹر جانسن کے بعد ڈھاکہ یونیورسٹی کے پروفیسر کے ایم. حسین کا بھاشن ہوا. اُنھوں نے سب سے پہلے یہ بات صاف کی کہ وہ بالکل ذاتی طور پر اِس سمیلن میں شریک ہوئے ہیں اور نہ تو پوربی پاکستان کی سرکار اور نہ وہاں کی جنتا کے کسی سنگٹھن کے وہ نمائندے ہیں. اِس کے بعد اُنھوں نے بتایا کہ اِس سوال کی تہہ میں خاص بات یہ نہیں ہے کہ ہندو مسلمانوں کے بیچ کچھ مذہبی مت بھید ہیں، بلکہ اصل بات یہ ہے کہ اِس سوال کو اُکساکر کچھ طاقتیں راج کاجی ادھیکاروں اور گدیوں پر اپنا قبضہ جمائے رکھنا چاہتی ہیں.

آج جو لوگ ہندو مسلم ایکتا کے مشکل کام میں لگے ہوئے ہیں، اُن کے لئے پروفیسر حسین کی اِس سچی اور کھری بات کی بہت بڑی قیمت ہے. سچ مچ آج سب سے بڑی ضرورت اِس بات کی ہے کہ ہم ہندو مسلمانوں میں اُن نیتاؤں اور اُن سنگٹھنوں کی پچھلی زندگی کی سچی تصویر عام جنتا کے سامنے پیش کریں، جو یہ فتنے اُٹھایا کرتے ہیں. مثال کے لئے ہمارے دیش میں آج کل ہندو مہا سبھا اور راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کی اور سے خاص طور پر ہندو فرقہ واریت کو اُبھارا جا رہا ہے اور ماسٹر تارا سنگھ صاحب و اُن کا اکالی دل سکھوں میں

विश्व शान्ति सम्मेलन में हिन्दू मुस्लिम एकता पर बहस

[भाई रतन लाल बंसल]

पिछले दिसम्बर महीने के पहले और आखिरी हफ्ते मे शान्ति निकेतन और सेवा ग्राम मे दुनिया भर के शान्ति वादियो की जो कानफ्रेन्स हुई थी, उस मे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान और इन दोनो देशो मे रहने वाली कम व ज्यादा तादाद वाली जातियो के बीच फैले हुए मन मुटाव को दूर करने के सवाल पर भी गौर किया गया था. इस सिलसिले मे वहाँ जो बहस हुई, उसमे कई ऐसी बाते रोशनी मे आईं, जिनको अगर इन दोनो देशो की आम जनता तक पहुंचाया जा सके तो इस सवाल को हल करने मे बड़ी मदद मिल सकती है.

बहस को अमरीका के हबशी नुमाइन्दे डाक्टर मोर्डेकाई जानसन ने अपने भाषण से शुरू किया. डाक्टर मोर्डेकाई हावर्ड यूनिवर्सिटी वाशिंगटन मे प्रोफेसर हैं और उनके देश मे भी गोरी व हबशी जातियो मे बिलकुल इसी तरह का तनाव रहता है, जिस तरह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मे हिन्दू, मुसलमानो के बीच रहता है. डाक्टर मोर्डेकाई का मिशन इस तनाव को प्रेम और मुहब्बत मे बदलने का है. इसी लिए हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की इस कठिन समस्या पर भी उनकी नजर पडना स्वाभाविक ही था अपने भाषण मे उन्होंने बार बार दूसरे नुमाइन्दो से यह प्रार्थना की कि इस नाज़ुक

وشو شانتی سمیلن میں ھندو مسلم ایکتا پر بحث

(بھائی رتن لال بنسل)

پچھلے دسمبر مہینے کے پہلے اور آخری ھفتے میں شانتی نکیتن اور سیوا گرام میں دنیا بھر کے شانتی وادیوں کی جو کانفرنس ھوئی تھی' اسمیں ھندستان اور پاکستان اور اِن دونوں دیشوں میں رھنے والی کم و زیادہ تعداد والی جاتیوں کے بیچ پھیلے ھوئے من مٹاؤ کو دور کرنے کے سوال پر بھی غور کیا گیا تھا ۔ اِس سلسلے میں وھاں جو بحث ھوئی اسمیں کئی ایسی باتیں روشنی میں آئیں' جنکو اگر اِن دونوں دیشوں کی عام جنتا تک پہونچایا جا سکے تو اِس سوال کو حل کرنے میں بڑی مدد مل سکتی ھے ۔

بحث کو امریکہ کے حبشی نمائندے ڈاکٹر موردِکے کائی جانسن نے اپنے بھاشن سے شروع کیا ڈاکٹر موردِکے کائی ھاورڈ یونیورسٹی واشنگٹن میں پروفیسر ھیں اور اُن کے دیش میں بھی گوری و حبشی جاتیوں میں بالکل اِسی طرح کا تناؤ رھتا ھے' جس طرح ھندستان اور پاکستان میں ھندو' مسلمانوں کے بیچ رھتا ھے ڈاکٹر موردِکے کائی کا مشن اِس تناؤ کو پریم اور محبت میں بدلنے کا ھے' اِسی لئے ھندستان اور پاکستان کی اِس کٹھن سمسیا پر بھی اُن کی نظر پڑنا سوابھاوک ھی تھا ۔ اپنے بھاشن میں اُنھوں نے بار بار دوسرے نمائندوں سے یہ پرارتھنا کی کہ اِس نازک

पूरब का आकाश लाल है,
धन वालो का नाश काल है,
सूरज किरनो के हाथों से

सुबह का परचम खोल रहा है
भोर का पंछी बोल रहा है।

विश्व-शान्ति सम्मेलन इस मे,
जग का शान्ति-निकेतन इस मे,
भारत मां को देख देख कर

ऐटम का दिल डोल रहा है
भोर का पंछी बोल रहा है!

پورب کا آکاش لال هے
دهن والوں کا ناش کال هے
سورج کرنوں کے هاتهوں سے

بهور کا پرچم کهول رها هے
صبح کا پنچهی بول رها هے!

وشو شانتی سمیلن اِس میں
جگ کا شانتی-نکیتن اِس میں
بهارت ماں کو دیکھ دیکھ کر

ایٹم کا دل ڈول رها هے
بهور کا پنچهی بول رها هے

नया हिन्द | نیا ہند

जल्द ८ मार्च '५० नम्बर ३

جلد ۸ مارچ ۵۰ نمبر ۳

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली

حات آدمی ' پریم دھرم ہے ' ھندستانی بولی '
' نیا ھند ' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

भोर का गीत

(भाई चरन सरन नाज़)

भोर का पंछी बोल रहा है!

अंधियारे मे लूटा जिसने
उसका हृदय डोल रहा है.
भोर का पंछी बोल रहा है!

(१९५)

بھور کا گیت

(بھائی چرن سرن ناز)

بھور کا پنچھی بول رہا ہے

اندھیارے میں لوٹا جس نے
اُس کا ھردے ڈول رہا ہے
بھور کا پنچھی بول رہا ہے

(۱۹۵)

हि?दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

राचन्द, भगवानदीन, मुज़फ्फर हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

मार्च १९५०

मत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने .

मनीजर
'नया हिन्द'
न्द, बाई का बाग, इलाहाबाद .

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر--

تارا چند' بھگوان دین' مظفر حسن' وشمبھر ناتھ' سندر لال'

مارچ ۱۹۵۰

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال- باہر دس روپیہ سال
ایک رچہ دس آنے

منیجر
'نیا ہند'
۴۸' بائی کا باغ' الہ آباد -


नया हिन्द
نیا ہند
मार्च
सन् १९५०
दस आना
مارچ
سنہ ۱۹۵۰ء
دس آنہ

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

इसके बाद गीता के लिखे जाने के वक्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आखिर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की … के ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, काफ़िर, … किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों की इन दो पाक पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. कोई तीन सौ सफ़ों की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपये, डाक खर्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے۔

اس کے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے۔

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے۔ اسمیں … آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے … قرآن میں جہاد، کافر … وغیرہ کسے کہا گیا ہے۔

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو پاک پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے۔

کتاب ہندستانی زبان میں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے۔ کوئی تین سو صفحے سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ ڈاک خرچ الگ۔

مینیجر "نیا ہند"
۴۸ – بائی کا باغ، الٰہ آباد

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.
Publisher—… Hindustani Culture Society, 48 Bai ka Bagh, Allahabad.

[illegible] हिन्दुस्तानी [illegible] बढ़ाना, फैलाना और [illegible] जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) प्रकाश फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, मिलाप घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब [illegible] जातों, बिरादरियों और फ़िरकों में आपस में मेल बढ़ाना.

—o—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़ ; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास, सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल ;—

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवान दीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम् प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिए.

सुन्दर लाल

सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ [illegible] रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो ग्राहक मेम्बर बनना चाहें [illegible] सिर्फ़ [illegible] रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से [illegible] की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो [illegible]

[illegible] اور [illegible] جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(۲) [illegible] پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں' ملاپ گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لکچروں سے سب [illegible] جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ— مسٹر عبد [illegible] خواجہ' وائس پریسیڈنٹ— ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق' گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ— ڈاکٹر بھگوان داس' سکریٹری پنڈت سندرلال

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی۔ جی۔ کھیر' مسٹر ایس۔ کے۔ رودرا' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین' سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے—

سندر لال

سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی'

۴۸ بائی کا باغ' الہ آباد

نوٹ— سوسائٹی کے نئے قاعدے کے مطابق ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کر دی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک [illegible] ان کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی [illegible] [illegible] ممبروں کی فیس دینے والے سوسائٹی [illegible]

اور برادریوں کے لوگوں میں ایک دوسرے کا آدر، پریم اور میل جول بڑھانے کے لئے جو کچھ کر سکونگا کرونگا۔

دستخط.........................

پورا نام.........................

پورا پتہ.........................

....

ہندستانی کلچر سوسائٹی کے لائف ممبروں کو سوسائٹی کا ماہواری رسالہ "نیا ہند" اور سوسائٹی کی سب کتابیں مفت دی جاتی ہیں۔ معمولی ممبر اگر "نیا ہند" کے گاہک بنیں یا سوسائٹی کی ایک یا زیادہ کتاب خریدیں تو ممبری کے چندے کا ایک روپیہ انہیں "نیا ہند" کے سالانہ چندے میں یا کتابوں کی قیمت میں مجرا دیا جا سکیگا۔

और बिरादरियों के लोगों में एक दूसरे का आदर, प्रेम और मेल जोल बढ़ाने के लिये जो कुछ कर सकूँगा करूँगा.

दस्तखत ———————————

पूरा नाम ———————————

पूरा पता ———————————

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी के लाइफ मेम्बरों को सोसाइटी का माहवारी रिसाला "नया हिन्द" और सोसाइटी की सब किताबें मुफ्त दी जाती हैं. मामूली मेम्बर अगर "नया हिन्द" के गाहक बनें या सोसाइटी की एक या ज्यादा किताबें खरीदें तो मेम्बरी के चन्दे का एक रुपया उन्हें "नया हिन्द" के सालाना चन्दे में या किताबों की क़ीमत में मुजरा दिया जा सकेगा.

हिन्दुस्तानी कलचर सोमाइटी की मेम्बरी

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी के मेम्बर दो तरह के होते है एक मामूली मेम्बर और दूसरे लाइफ़ मेम्मबर. मामूली मेम्बरों से पहले तीन रुपया सालाना मेम्बरी का चन्दा लिया जाता था अब सोसइटी की इन्तज़ामी कमेटी ने इस चन्दा को तीन रुपया सालाना से घटा कर एक रुपया सालाना कर दिया है ताकि ज़्यादा से ज़्यादा भाई बहन सोसाइटी के मेम्बर बन सके लाइफ़ मेम्बरों को हमेशा के लिये एक मरतबा सौ रुपया चन्दा देना होता है दोनो तरह के मेम्बरो को नीचे लिखे मेम्बरी के एलान पर दस्तख़त कर के फ़ार्म सोसाइटी के दफ़्तर मे भेजना होता है.

मेम्बरी का एलान

मैंने हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी के मकसद और "सोसाइटी बनाने की ज़रूरत" नाम का पैम्फ़लेट पढ़ा है मै सोसाइटी के मकसदो को और उन मकसदो को पूरा करने के लिये सोसाइटी जो जो काम करना चाहती है उन्हे पसन्द करता हूँ मै सब बड़े बड़े धर्म मज़हबो और कलचरो को बुनियादी एकता को मानता हूँ मै मानता हूँ कि पिछले ज़माने मे हिन्दुस्तान के रहने वालो के अन्दर एक मिली जुली कलचर और एक मिली जुली समाजी ज़िन्दगी पैदा हो रही थी. और आज भी हमारा भला इसी मे है कि हिन्दुस्तानी कलचर की एकता को बढ़ावे मैं वादा करता हूँ कि मैं सोसाइटी के मकसदो को पूरा करने के लिये और सब धर्मों, जातो

ہندوستانی کلچر سوسائٹی کی ممبری

ہندستانی کلچر سوسائٹی کے ممبر دو طرح کے ہوتے ہیں۔ ایک معمولی ممبر اور دوسرے لائف ممبر - معمولی ممبروں سے پہلے تین روپیہ سالانہ ممبری کا چندا لیا جاتا تھا اب سوسائٹی کی انتظامی کمیٹی نے اس چندہ کو تین روپیہ سالانہ سے گھٹا کر ایک روپیہ سالانہ کر دیا ہے تاکہ زیادہ سے زیادہ بھائی بہن سوسائٹی کے ممبر بن سکیں - لائف ممبروں کو ہمیشہ کے لئے ایک مرتبہ سو روپیہ چندہ دینا ہوتا ہے دونوں طرح کے ممبروں کو نیچے لکھے ممبری کے اعلان پر دستخط کرکے فارم سوسائٹی کے دفتر میں بھیجنا ہوتا ہے۔

ممبری کا اعلان

میں نے ہندستانی کلچر سوسائٹی کے مقصد اور "سوسائٹی بنانے کی ضرورت" نام کا پمفلٹ پڑھا ہے میں سوسائٹی کے مقصدوں کو اور اُن مقصدوں کو پورا کرنے کے لئے سوسائٹی جو جو کام کرنا چاہتی ہے اُنہیں پسند کرتا ہوں - میں سب بڑے بڑے دھرم مذہبوں اور کلچروں کی بنیادی ایکتا کو مانتا ہوں میں مانتا ہوں کہ پچھلے زمانے میں ہندستان کے رہنے والوں کے اندر ایک ملی جلی کلچر اور ایک ملی جلی سماجی زندگی پیدا ہو رہی تھی۔ اور آج بھی ہمارا بھلا اسی میں ہے کہ ہندوستانی کلچر کی ایکتا کو بڑھائیں۔ میں وعدہ کرتا ہوں کہ میں سوسائٹی کے مقصدوں کو پورا کرنے کے لئے اور سب دھرموں جاتوں

हिन्दू भाषा क़बूल कर लेनी चाहिये, हिन्दू धर्म के लिए आदर और सम्मान की भावना रखना सीख लेना चाहिये, हिन्दू जाति और संस्कृति के लिए पूज्य भावना के सिवा और कोई ख़याल नहीं रखना चाहिये, मतलब यह कि इस देश और इसकी पुरानी परम्पराओं की ओर उनके मन मे ग़ैर रवादारी और नफ़रत की भावना न हो, इतना ही नहीं, बल्कि उनके लिए, उन्हें अपने मन मे आदर और इज्ज़त के भाव भी पैदा करने चाहियें—थोड़े मे कहे, तो उन्हे विदेशीपन छोड़ देना चाहिये या फिर उन्हें राष्ट्र के आधीन होकर इस देश मे रहना होगा हिन्दू राष्ट्र मे उनका न कोई अधिकार हो सकता है, न उन्हे कोई रिआयत मिल सकती है खास मेहरबानी के व्यवहार की तो बात ही क्या, शहरी अधिकार भी उन्हे नहीं हो सकते उनके लिए इसके सिवा और कोई रास्ता नहीं है, कम से कम नहीं रहना चाहिये'' [सफ़ा ५२-५३.]

अब कांग्रेसी हिन्दू तय करें कि यह विचार धारा किस हद तक कांग्रेस से मिलती जुलती है और क्या राष्ट्रीय स्वय सेवक स घ.को राजनीति से अलग सिर्फ एक कलचरी सङ्गठन ही माना जा सकता है ?

هندو بهاشا قبول کرلیني چاهئے' هندو دهرم کے لئے آدر اور سمان کی بهاؤ نا رکهنا سیکھ لینا چاهئے' هندو جاتي اور سنسکرتي کے لئے پوجیه بهاؤنا کے سوا اور کوئي خیال نهیں رکهنا چاهئے' مطلب یه که اِس دیش اور اس کي پراني پرمپراؤں کی اور اُن کے من میں غیر رواداری اور نفرت کی بهاؤنا نه هو' اتنا هي نهیں' بلکه اُن کے لئے اُنهیں اپنے من میں آدر اور عزت کے بهاؤ بهی پیدا کرنے چاهئیں—تهوڑے میں کهیں' تو اُنهیں ودیشی پن چهوڑ دینا چاهئے یا پهر اُنهیں راشٹر کے ادهین هوکر اِس دیش میں رهنا هوگا هندو راشٹر میں اُن کا نه کوئی ادهیکار هو سکتا هے' نه اُنهیں کوئی رعایت مل سکتی هے خاص مهربانی کے بیوهار کي تو بات هی کیا' شهری ادهیکار بهی اُنهیں نهیں هو سکتے اُن کے لئے اِس کے سوا اور کوئي راسته نهیں هے کم سے کم نهیں رهنا چاهئے." [صفحه ٥٢–٥٣]

اب کانگریسی هندو طے کریں که یه وچار دهارا کس حد تک کانگریس سے ملتی جلتی هے' اور کیا راشٹریه سویم سیوک سنگھ کو راج نیتي سے الگ صرف ایک کلچري سنگٹھن هي مانا جا سکتا هے ؟"

वे सिर्फ भूले भटके हुए अज्ञान, बेवकूफ हैं." [सफा ४८-४६. तीसरा एडीशन]

इसके बाद के अध्याय मे श्री गोलवलकर यह सवाल उठाते हैं :—

" जो आज इस देश मे बसते है लेकिन हिन्दू जाति, धर्म और संस्कृति के नहीं हैं, उनका नसीब क्या होगा ?" [सफा ५०].

और इसका जवाब वह इस तरह देते है :—

" जो राष्ट्र की पांच मर्यादाओं के बाहर है, उन सब के लिए जब तक वह अपने भेदो को दूर न करदे और राष्ट्र की जाति के, साथ बिलकुल एक रूप न हो जायें तब तक राष्ट्रीय जीवन मे कोई भी जगह नहीं हो सकती, जब तक वह अपने जाति, धर्म और संस्कृति के भेद कायम रखते है, तब तक उन्हे विदेशी ही मानना होगा, जो राष्ट्र के दोस्त भी हो सकते हैं और दुश्मन भी. " [सफा ५०]

" विदेशी तत्वो यानी जुज़ों के लिए दो ही रास्ते है : या तो उन्हे देश की जाति मे घुलमिल जाना चाहिये और उसकी संस्कृति स्वीकार कर लेनी चाहिये, या फिर उसकी मेहरबानी पर रहना चाहिये यही सच्ची दलील और सही हल है ..... हिन्दुस्थान के ग़ैर हिन्दुओ को या तो हिन्दू संस्कृति और

وے صرف بھولے' بھٹکے ہوئے اگیان' بے وقوف ہیں " [صفحہ ۴۸-۴۹' تیسرا اڈیشن]

اِس کے بعد کے ادھیائے میں شری گول ولکر یہ سوال اُٹھاتے ہیں :—

" جو آج اِس دیس میں بستے ہیں لیکن ہندو جاتی' دھرم اور سنسکرتی کے نہیں ہیں' اُن کا نصیب کیا ہوگا " [صفحہ ۵۰]

اور اِس کا جواب وہ اِس طرح دیتے ہیں :—

"جو راشٹر کی پانچ مریاداؤں کے باہر ہیں' اُن سب کے لئے جب تک وہ اپنے بھیدوں کو دور نہ کردیں اور راشٹر کی جاتی کے ساتھ بالکل ایک روپ نہ ہوجائیں' تب تک راشٹریہ جیون میں کوئی بھی جگہ نہیں ہو سکتی' جب تک وہ اپنے جاتی' دھرم اور سنسکرتی کے بھید قائم رکھتے ہیں تب تک اُنھیں ودیشی ہی ماننا ہوگا' جو راشٹر کے دوست بھی ہوسکتے ہیں اور دشمن بھی . ' [صفحہ ۵۰]

" ودیشی تتووں یعنی جزوں کے لئے دو ہی راستے ہیں یا تو اُنھیں دیش کی جاتی میں گھل مل جانا چاہیئے اور اُس کی سنسکرتی سویکار کرلینی چاہئے' یا پھر اُس کی مہربانی پر رہنا چاہئے یہی سچی دلیل اور سہی حل ہے .....ہندستھان کے غیر ہندوؤں کو یا تو ہندو سنسکرتی اور

शाखो पर शाखो या (का ?) कुदरती परिवार) के कारन पूरे अर्थ मे एक कौम है और ज्यादा, हिन्दुस्थान मे पुराना हिन्दू राज्य ही होना चाहिए, हिन्दू राष्ट्र के सिवा यहाँ दूसरा क हो ही नही सकता जो लोग इस राष्ट्र यानी हिन्दू जाति, धर्म, संस्कृति और भाषा के अग नही है वह कुदरती तौर पर सच्चे राष्ट्रीय जीवन के मैदान के बाहर हो जाते है.

" हम दोहराते है : हिन्दूओ की मातृभूमि हिन्दुस्थान मे हिन्दू राष्ट्र रहता है और रहना चाहिए. आज के जमाने मे राष्ट्र की साइन्टफिक कल्पना के पाचो बुनियादी तत्वो (जुजो) का उसमे पूरे रूप मे कायदे के साथ मेल होता है इस लिए वह ही आन्दोलन सच्चे (राष्ट्रीय) आन्दोलन है, जो हिन्दू राष्ट्र की दोबारा रचना करने, उसे फिर से जिलाने और मौजूदा बेहोशी से जगाने के लिए किये जाय वह ही राष्ट्रीय देश भक्त है जो हिन्दू जाति और राष्ट्र की महिमा बढ़ाने की अभिलाषा लिए हुए उस दिशा मे कदम बढ़ाते है और उस मकसद के पूरा करने के लिए कोशिश करते है. दूसरे सब जो देश भक्त होने का दम भरते है और जान बूझ कर ऐसे काम करते है, जो हिन्दू राष्ट्र के लिए घातक है वह या तो सब देश-द्रोही और राष्ट्र के हित के दुशमन है, या अगर वह बिना इरादे और बिना ख्वाहिश के, उस रास्ते पर लग गये हो, और उनपर उदार दृष्टि से विचार किया जाय, तो कहना होगा कि

شاخوں پر شاخوں یا (کا ؟) قدرتی پریوار) کےکارن پورے ارتھ میں ایک قوم ھے . اور زیادہ ' ھندستھان میں پرانا ھندو راجیہ ھی ہونا چاھئے ' ھندو راشٹر کے سوا یہاں دوسرا کوئی ہو ھی نہیں سکتا . جو لوگ اِس راشٹر یعنی ھندو جاتی ' دھرم سنسکرتی اور بھاشا کے رنگ نہیں ھیں وہ قدرتی طور پر سچے راشٹریہ جیون کے میدان کے باہر ہو جاتے ھیں

'' ہم دوھراتے ھیں : ھندؤں کی ماتر بھومی ھندستھان میں ھندو راشٹر رھتا ھے اور رھنا چاھئے . آج کے زمانے کے راشٹر کی سائنٹفک کلپنا کے پانچوں بنیادی تتوں (جزوں) کا اُسمیں پورے روپ میں قاعدے کے ساتھ میل ہوتا ھے . اِس لئے وہ ھی آندولن سچے (راشٹریہ) آندولن ھیں ' جو ھندو راشٹر کی دو بارہ رچنا کرنے ' اسے پھر سے جلانے اور موجودہ بے ہوشی سے جگانے کے لئے کئے جائیں وہ ھی راشٹریہ دیش بھکت ھیں جو ھندو جاتی اور راشٹر کی مہما بڑھانے کی ابھیلاشا لئے ہوئے اُس دشا میں قدم بڑھاتے ھیں اور اُس مقصد کے پورا کرنے کیلئے کوشش کرتے ھیں دوسرے سب جو دیش بھکت ہونے کا دم بھرتے ھیں اور جان بوجھ کر ایسے کام کرتے ھیں جو ھندو راشٹر کے لئے گھاتک ھیں ' وہ یا تو سب دیش دروھی اور راشٹر کے ھت کے دشمن ھیں ' یا اگر وہ بنا ارادے اور بنا خواھش کے ' اُس راستے پر لگ گئے ھوں اور اُن پر اُدار درشٹی سے وچار کیا جائے' تو کہنا ہوگا کہ

यह कथन बाहरी रूप मे मौजूदा सरकार की रचना से नही टकराता। लेकिन खुद डाक्टर खरे का यह खयाल नही है. वह कहते हैं :—

"सरकार से हमारी कोई दुश्मनी नही है, फिर भी विचार धारा मे हमारा उससे सख्त मतभेद है"

रिपोर्ट मे बतलाया गया है कि उन्होने यह भी कहा था कि "धर्म निर्पेक्ष (सेकुलर) राज्य का विचार साफ नही है और रोगी मन का प्रदर्शन (मज़ाहिरा) कराता है."

श्री सावरकर की भाषा ज्यादा साफ है. उनके विचारो के बारे में यह रिपोर्ट दी गई है :—

"जिस देश मे ज्यादातर हिन्दू आबादी हो वहां सेकुलर राज्य की बात बेहूदी है और उनके (हिन्दू महासभा के) ऊपर हिन्दू राष्ट्र कायम करने का बड़ा काम है"

यह सवाल किया जा सकता है कि हिन्दू महासभा के नेताओ के बयान राष्ट्रीय स्वयं सेवक के लिए बन्धन कैसे माने जा सकते है ? इसके लिये खुद श्री गोलवालकर के लेख देख लेना ठीक है. उन्होने अपनी किताब 'वी आर अवर नेशनहुड डिफाइन्ड (हम या हमारी राष्ट्रीयता की परिभाषा) मे लिखा है :—

"... ... अगर राष्ट्र का मौजूदा अर्थ (मानी) हमारी मौजूदा हालतो पर लागू किया जाय, तो बिला शक यह नतीजा निकलता है कि इस हिन्दुस्थान, देश मे हिन्दू जाति ही अपने हिन्दू धर्म, हिन्दू सस्कृति और हिन्दू भाषा (संस्कृत और उसकी

یہ کتھن باهری روپ میں موجودہ سرکار کی رچنا سے نہیں ٹکراتا . لیکن خود ڈاکٹر کھرے کا یہ خیال نہیں ہے وہ کہتے ہیں :—

" سرکار سے هماری کوئی دشمنی نہیں ہے ' پھر بھی وچار دھارا میں همارا اُس سے سخت مت بھید ہے "

رپورٹ میں بتلایا گیا ہے کہ اُنھوں نے یہ بھی کہا تھا کہ " دھرم نر پیکش (سیکولر) راجیہ کا وچار صاف نہیں ہے اور روگی من کا پر درشن (مظاهرہ) کراتا ہے "

شری ساورکر کی بھاشا زیادہ صاف ہے اُن کے وچاروں کے بارے میں یہ رپورٹ دی گئی ہے :—

" جس دیش میں زیادہ تر هندو آباد هوں وهاں سکولر راجیہ کی بات بیہودی ہے اور اُن کے (هندو مہا سبھا کے) اوپر هندو راشٹر قائم کرنے کا بڑا کام ہے "

یہ سوال کیا جا سکتا ہے کہ هندو مہا سبھا کے نیتاؤں کے بیان راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کے لئے بندھن کیسے مانے جا سکتے هیں ؟ اِس کے لئے خود شری گول والکر کے لیکھ دیکھ لینا ٹھیک ہے. اُنھوں نے اپنی کتاب "وی آر آور نیشن هڈ ڈفائنڈ ' (هم یا هماری راشٹریتا کی پری بھاشا) میں لکھا ہے :—

" .. اگر راشٹر کا موجودہ ارتھ (معنی) هماری موجودہ حالتوں پر لاگو کیا جائے ' تو بلا شک یہ نتیجہ نکلتا ہے کہ اِس هندستھان دیش میں هندو جاتی هی اپنے هندو دھرم ' هندو سنسکرتی اور هندو بھاشا (سنسکرت اور اسکی

हमारी राय

हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ

हिन्दू महासभा के नये सभापति डाक्टर खरे ने हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ के सम्बंध का ख़ुलासा करके जनता पर एहसान किया है. प्रेस ट्रस्ट आफ इण्डिया ने उनके कथन की इस तरह रिपोर्ट दी है :—

"राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ और हिन्दू महासभा के बीच किसी तरह का विधानी सम्बन्ध नहीं है लेकिन इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि चूंकि दोनों की विचार धारा एक ही है. इसलिये दोनों मे देह-प्राण (वाइटल आरगेनिक) का सम्बन्ध है. दोनों ही 'भारती सस्कृति' के आधार पर कायम है."

यह एक ही विचार धारा कौन सी है ? डाक्टर खरे के कहने के मुताबिक :—

"महासभा धर्म निर्पेक्ष या अधिक साफ परिभाषा मे कहे तो गै़र-फ़िरकावारी (सेकुलर) राज्य चाहती है जिसमे सभी लोग, फिर वह किसी भी धर्म या समाज के हो, कानून की निगाह मे समान माने जायगे और सबको समान फायदे मिलेगे."

ھماری رائے

ھندو مہاسبھا اور راشٹریہ سویم سیوک سنگھ

ھندو مہاسبھا کے نئے سبھا پتی ڈاکٹر کھرے نے ھندو مہاسبھا اور راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کے سمبندھ کا خلاصہ کرکے جنتا پر احسان کیا ھے۔ پریس ٹرسٹ آف انڈیا نے اُن کے کتھن کی اِس طرح رپورٹ دی ھے —

" راشٹریہ سویم سیوک سنگھ اور ھندو مہا سبھا کے بیچ کسی طرح کا ودھانی سمبندھ نہیں ھے لیکن اِس بات سے انکار نہیں کیا جا سکتا کہ چونکہ دونوں کی وچار دھارا ایک ھی ھے، اِس لئے دونوں میں دیہہ پران (وائٹل آرگنیک) کا سمبندھ ھے۔ دونوں ھی 'بھارتی سنسکرتی' کے آدھار پر قائم ھیں۔"

یہ ایک ھی وچار دھارا کون سی ھے ؟ ڈاکٹر کھرے کے کہنے کے مطابق :—

"مہا سبھا دھرم نرپیکش یا ادھک صاف پری بھاشا میں کہیں تو غیر فرقہ واری (سیکولر) راجیہ چاھتی ھے جس میں سبھی لوگ، پھر وہ کسی بھی دھرم یا سماج کے ھوں، قانون کی نگاہ میں سمان مانے جائیں گے اور سب کو سمان فائدے ملیں گے۔"

कर्नल जईम को कत्ल कर दिया तो अब्दुल्ला की उम्मीदें फिर उजागर हो गईं. लेकिन जल्द ही जईम के साथी आबिद ने हिनावी की बनाई हुई सरकार का खात्मा कर दिया. नौ महीने के अन्दर शाम के यह तीन इन्क़लाब पिछले साल मे बीच पूरब की सब से अजीब घटना है. और नये साल का सब से बड़ा वाकया यह है कि मिस्र में वफ्द पार्टी ने पारलियामेन्ट का चुनाव अधिक मतो से जीत लिया है. यह पार्टी हिन्दुस्तान मे काम्ग्रेस से बहुत कुछ मिलती जुलती है और इसके लीडर मुस्तफा नहास पाशा की हैसियत मिस्र मे वही है जो हिन्दुस्तान मे पडित नेहरू की या चीन मे माउ जे तुङ्ग की.

अगर यह तीनो लीडर एक साथ मिलकर काम कर सकें और इन सब मे कोई किसी बड़े राष्ट्र की कपुठतली न बने और किसी छोटे राष्ट्र पर कब्जा करने की कोशिश न करे तो एशिया गरीब होने पर भी योरप से जल्दी तरक्की कर सकेगा. क्या ऐसा मुमकिन है ?

کرنل زعیم کو قتل کر دیا تو عبداللہ کی امیدیں پھر اجاگر ہو گئیں لیکن جلدی ہی زعیم کے ساتھی عابد نے حناوی کی بنائی ہوئی سرکار کا خاتمہ کر دیا نو مہینے کے اندر شام کے یہ انقلاب پچھلے سال میں بیچ پورب کی سب سے عجب گھٹنا ہے اور نئے سال کا سب سے بڑا واقعہ یہ ہے کہ مصر میں وفد پارٹی نے پارلیامنٹ کا چناؤ ادھک متوں سے جیت لیا ہے . یہ پارٹی ہندستان میں کانگریس سے بہت کچھ ملتی جلتی ہے اور اس کے لیڈر مصطفی نحاس پاشا کی حیثیت مصر میں وہی ہے جو ہندستان میں پنڈت نہرو کی یا چین میں ماؤزی تنگ کی .

اگر یہ تینوں لیڈر ایک ساتھ ملکر کام کر سکیں اور ان سب میں کوئی کسی بڑے راشٹر کی کٹھ پتلی نہ بنے اور کسی چھوٹے راشٹر پر قبضہ کرنے کی کوشش نہ کرے تو ایشیا غریب ہونے پر بھی یورپ سے جلدی ترقی کرسکے گا . کیا ایسا ممکن ہے ؟

के इस्लामिस्तान के आन्दोलन का मकसद यह है कि हिन्दुस्तान के मुक़ाबले पर पाकिस्तान का पल्ला दुरुस्त हो जाय. इन बातो के बे असर रहने की सब से बडी वजह हिन्दुस्तान की आज़ादी पसन्द नीति और उस का अमन पसन्द रवय्या है.

इस्लामी दुनिया

इस्लामिस्तान की बेल के मढे न चढ़ने की एक वजह यह भी है कि चौधरी साहब ने इसे रूस-दुशमनी की रङ्गत दे दी थी जिसे पाकिस्तान सरकार ने बेवक्त समझा इसके अलावा बीच पूरब के इस्लामी और ख़ासकर अरब देशो मे आपस के झगड़े चल रहे है जो उनको एक प्लेटफार्म पर इकट्ठा होने से रोकते है. उनकी इस फूट ने फिलस्तीन को टुकड़े टुकड़े करा दिया और इस इलाके मे पिछले साल की सब से ज्यादा अफ़सोसनाक बात यह है कि सात लाख अरब बे घर हो गये जिनको न तो यहूदी उनके घरो मे वापस आने देते है और न दूसरे अरब देश अपने यहा बसाते है.

फिलस्तीन के अरब हिस्से को ट्रान्स जार्डन के बादशाह अब्दुल्ला ने हड़प कर लिया है और इसके बाद वह शाम और इराक के किसी न किसी शक्ल मे एक होजाने का सपना देख रहे थे ताकि फिर अपने मुल्क को भी इस गठबन्धन मे मिलाकर एक बडी सी सलतनत बना ले शाम मे पिछले साल के शुरू मे एक फौजी लीडर कर्नल जईम ने हुकूमत पर कब्जा करके अब्दुल्ला की इन उम्मीदो को मिट्टी मे मिला दिया था और इसी लिए उन्होने इस इन्क़लाब की निन्दा की थी. चन्द महीने बाद जब कर्नल हिनावी ने

کے اسلامستان کے آندولن کا مقصد یہ ھے کہ ھندستان کے مقابلہ پر پاکستان کا پلہ درست ھوجائے ان باتوں کے بے اثر رھنے کی سب سے بڑی وجہہ ھندستان کی آزادی پسند نیتی اور اُسکا امن پسند رویہ ھے۔

اسلامی دنیا

اسلامستان کی بیل کے منڈھے نہ چڑھنے کی ایک وجہہ یہ بھی ھے کہ چودھری صاحب نے اسے روس دشمنی کی رنگت دیدی تھی جسے پاکستانی سرکار نے بے وقت سمجھا اس کے علاوہ بیچ پورب کے اسلامی اور خاص کر عرب دیشوں میں آپس کے جھگڑے چل رھے ھیں جو اُن کو ایک پلیٹ فارم پر اکٹھا ھونے سے روکتے ھیں۔ اُن کی اس پھوٹ نے فلسطین کو ٹکڑے ٹکڑے کرا دیا اور اس علاقے میں پچھلے سال کی سب سے زیادہ افسوسناک بات یہ ھے کہ سات لاکھ عرب بے گھر ھوگئے جنکو نہ تو یہودی انکے گھروں میں واپس آنے دیتے ھیں اور نہ دوسرے عرب دیش اپنے یہاں بساتے ھیں۔

فلسطین کے عرب حصے کو ٹرانس جارڈن کے بادشاہ عبداللہ نے ھڑپ کر لیا ھے اور اس کے بعد وہ شام اور عراق کے کسی نہ کسی شکل میں ایک ھوجانے کا سپنا دیکھ رھے تھے تاکہ پھر اپنے ملک بھی کو اس گٹھ بندھن میں ملاکر ایک بڑی سی سلطنت بنا لیں۔ شام میں پچھلے سال کے شروع میں ایک فوجی لیڈر کرنل زعیم نے حکومت پر قبضہ کرکے عبداللہ کی ان امیدوں کو مٹی میں ملا دیا تھا۔ اور اسی لئے انھوں نے اس انقلاب کی نندا کی تھی۔ چند مہینے بعد جب کرنل حناوی نے

नुकसान और फ़ायदा

हिन्दुस्तान को इस नीति ने हालाँकि अमरीका को राज़ी किये बिना रूस को नाराज़ कर दिया है. लेकिन आज की दुनिया में एक ही नीति ऐसी है जो एशियाई देशो को अमरीका की ग़ुलामी और रूस की ताबेदारी से बचा सकती है. इसी नीति के मुताबिक़ हिन्दुस्तान ने चीन की नई सरकार को मान लिया जिसे अमरीका ने कम्यूनिस्ट होने के कारन अभी तक नही माना है और इसी के मुताबिक़ हिन्दुस्तान ने इन्डोनेशिया की आज़ादी के लिए आवाज उठाई और उसका स्वागत किया, हालांकि रूस इन्डोनेशी लीडरो के कम्यूनिस्ट न होने के कारन उनके देश को आज़ाद मानने के लिए नही तैयार है. इसी नीति के कारन हिन्दुस्तान ने यू० एन० ओ० मे बरतानिया की मर्ज़ी के खिलाफ़ उत्तरी अफ़रीका के अरब देश लीबिया की आज़ादी के लिये कोशिश की और इसी नीति की बदौलत हिन्दुस्तानी रिपब्लिक के जन्म लेने पर एशियाई देशों ने अपने सन्देशों में उसके लीडरो को तारीफ़ की और उसकी कामयाबी के लिए शुभ कामना की है.

हिन्दुस्तान को बधाई देने और उसके लिये कामना करने वाले इन एशियाई देशो मे ज्यादातर इस्लामी देश हैं, (और इन्डोनेशिया अपनी आबादी के हिसाब से सब से बड़ा इस्लामी देश है) जिनको हिन्दुस्तान के खिलाफ भड़काने के लिए पाकिस्तानी सरकार ने एड़ी चोटी का जोर लगा दिया और पाकिस्तानी मुस्लिम लीग के लीडर चौधरी ख़लीक़ुज़्ज़माँ साहब ने साफ़ साफ़ कह दिया कि उन

نقصان اور فائدہ

ہندستان کی اِس نیتی نے حالانکہ امریکہ کو راضی کئے بنا روس کو ناراض کردیا ہے . لیکن آج کی دنیا میں ایک ہی نیتی ایسی ہے جو ایشیائی دیشوں کو امریکہ کی غلامی اور روس کی تابعداری سے بچا سکتی ہے . اِسی نیتی کے مطابق ہندستان نے چین کی نئی سرکار کو مان لیا جسے امریکہ نے کمیونسٹ ہونے کے کارن ابھی تک نہیں مانا ہے اور اسی کے مطابق ہندستان نے انڈونیشیا کی آزادی کے لئے آواز اُٹھائی اور اس کا سواگت کیا ' حالانکہ روس انڈونیشی لیڈروں کے کمیونسٹ نہ ہونے کے کارن ان کے دیش کو آزاد ماننے کے لئے نہیں تیار ہے . اسی نیتی کے کارن ہندستان نے یو . این . او . میں برطانیہ کی مرضی کے خلاف اُتری افریقہ کے عرب دیش لیبیا کی آزادی کے لئے کوشش کی اور اسی نیتی کی بدولت ہندستانی ری پبلک کے جنم لینے پر ایشیائی دیشوں نے اپنے سندیشوں میں اس کے لیڈروں کی تعریف کی اور اس کی کامیابی کے لئے شبھ کامنا کی ہے .

ہندستان کو بدھائی دینے اور اس کے لئے کامنا کرنے والے اِن ایشیائی دیشوں میں زیادہ تر اسلامی دیش ہیں ' (اور انڈونیشیا اپنی آبادی کے حساب سے سب سے بڑا اسلامی دیش ہے) جنکو ہندستان کے خلاف بھڑکانے کے لئے پاکستانی سرکار نے ایڑی چوٹی کا زور لگا دیا اور پاکستانی مسلم لیگ کے لیڈر چودھری خلیق الزماں صاحب نے صاف صاف کہدیا کہ ان

और इस असूल की रूल से फ्रान्स को हिन्द-चीन पर से और बरतानिया को मलाया पर से अपना राज उठा लेना चाहिये. अगर इस असूल को सामने रख कर ईमानदारी से काम किया जाय तो कम्युनिस्ट आन्दोलन को तरक़्क़ी करने का मौक़ा नहीं मिल सकेगा और अगर किसी देश की जनता कम्यूनिज़्म ही को पसन्द करती है तो दूसरे देशों को इस से कोई नुक़सान नहीं पहुंच सकेगा.

नेहरू की निगाह कामन वेल्थ के दूसरे लीडरों की निगाह से अलग थी. आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैन्ड ने इस बात का गिला किया कि इस बिरादरी के कुछ देशों ने अपने दूसरे साथियों के फ़ैसले की राह देखे बिना चीन की नई सरकार को मान लिया इसी तरह कुछ देशों ने जापानी जनता की आज़ादी का इतना ख़याल नहीं किया जितना कि वहाँ कम्यूनिज़्म को रोकने का दृष्टि का यह फ़रक़ सात दिन की कानफ़रेन्स में ख़तम नहीं हो सकता था, फिर भी यह कानफ़रेन्स बिलकुल बेफ़ायदा नहीं रही इसके आख़िरी इजलास में प्रधान मंत्री नेहरू ने कहा था कि इस क़िस्म की कानफ़रेन्स से हालात को एक बिलकुल ही गलत राह पर लग जाने से रोकने में मदद मिलती है और ऐसी एक राह अंधा-धुंध कम्युनिज़्म दुश्मनी और रूस-दुश्मन जत्थाबन्दी की थी जिसपर चल पड़ने से तीसरी बड़ी लड़ाई क़रीब आ जाती और एशियाई देशों की राजनैतिक आज़ादी और आर्थिक तरक़्क़ी दूर जा पड़ती. कामन वेल्थ को इस राह से रोकने का सेहरा बड़ी हद तक पंडित नेहरू के सर है.

اور اس اصول کی رو سے فرانس کو ہند چین پر سے اور برطانیہ کو ملایا پر سے اپنا راج اٹھا لینا چاہئے اگر اس اصول کو سامنے رکھکر ایمانداری سے کام کیا جائے تو کمیونسٹ آندولن کو ترقی کرنے کا موقع نہیں مل سکے گا اور اگر کسی دیش کی جنتا کمیونزم ہی کو پسند کرتی ہے تو دوسرے دیشوں کو اس سے کوئی نقصان نہیں پہنچ سکے گا ۔

نہرو کی نگاہ کامن ویلتھ کے دوسرے لیڈروں کی نگاہ سے الگ تھی۔ آسٹریلیا اور نیوزی لینڈ نے اس بات کا گلہ کیا کہ اس برادری کے کچھ دیشوں نے اپنے دوسرے ساتھیوں کے فیصلے کی راہ دیکھے بنا چین کی نئی سرکار کو مان لیا اسی طرح کچھ دیشوں نے جاپانی جنتا کی آزادی کا اتنا خیال نہیں کیا جتنا کہ وہاں کمیونزم کو روکنے کا ۔ درشٹی کا یہ فرق سات دن کی کانفرنس میں ختم نہیں ہوسکتا تھا، پھر بھی یہ کانفرنس بالکل بے فائدہ نہیں رہی ۔ اس کے آخری اجلاس میں پردھان منتری نہرو نے کہا تھا کہ اس قسم کی کانفرنس سے حالات کو ایک بالکل ہی غلط راہ پر لگ جانے سے روکنے میں مدد ملتی ہے اور ایسی ایک راہ اندھا دھند کمیونزم دشمنی اور روس دشمن جتھہ بندی کی تھی جس پر چل پڑنے سے تیسری بڑی لڑائی قریب آجاتی اور ایشیائی دیشوں کی راج نیتک آزادی اور آرتھک ترقی دور جا پڑتی کامن ویلتھ کو اس راہ سے روکنے کا سہرا بڑی حد تک پنڈت نہرو کے سر ہے ۔

के लिए रख छोड़ेगा या यह कि रूस ऐटमी दौड़ मे उसके आगे निकल जाने को खामोशी के साथ बरदाश्त कर लेगा यह एक बिलकुल कुदरती बात है कि वह भी ऐसी ही शक्ति वाला कोई हथियार बनाने की कोशिश करेगा और जब हथियार होगे तो उनको इस्तेमाल करने की हिम्मत भी पैदा हो जायगी—और जब हिम्मत पैदा होजायगी, तो मामूली सी बात पर भी जङ्ग छिड़ जायेगी.

हिन्दुस्तान की दृष्टि

इस जङ्ग की बुनियादी वजह कम्यूनिज़्म को आगे बढ़ाने और उसे पीछे ढकेलने वालो की खीच तान होगी. हिन्दुस्तान ने अपने आप को इस खीच तान से बडी हद तक अलग रक्खा है वह दुनिया के हालात को एक बिलकुल दूसरी दृष्टि से देखता है, जिसका पता प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की उन बातो से चलता है जो उन्होने कोलम्बो की कामन वेल्थ कानफरेन्स मे कही. वह चीन की नई सरकार से डरते नही बल्कि उसका स्वागत करते है इस लिये कि उनकी राय मे चीन की जनता ने यह सरकार बना कर जागीरदारी के जुए को उतार फेंका है और सैकड़ो बरस के बाद वहां एक ऐसी सरकार बनी है जिसका हुक्म पूरे मुल्क पर चल सकेगा. इसी तरह जापान के बारे मे उनकी राय यह है कि वहां से विदेशी फौजें जल्द से जल्द हटा ली जायें. इस राय की बुनियाद इस असूल पर है कि एशयाई देशो को जल्द से जल्द हर तरह की राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक लूट खसोट से छुटकारा मिलना चाहिये.

کے لئے رکھ چھوڑے گا یا یہ کہ روس ایٹمی دوڑ میں اُس کے آگے نکل جائے کو خاموشی کے ساتھ برداشت کرلے گا یہ ایک بالکل قدرتی بات ھے کہ وہ بھی ایسی ھی شکتی والا کوئی ھتھیار بنانے کی کوشش کرے گا . اور جب ھتھیار ھوں گے تو ان کو استعمال کرنے کی ھمت بھی پیدا ھوجائے گی—اور جب ھمت پیدا ھوجائے گی' تو معمولی سی بات پر بھی جنگ چھڑ جائے گی .

ھندستان کی درشتی

اس جنگ کی بنیادی وجہ کمیونزم کو آگے بڑھانے اور اسے پیچھے ڈھکیلنے والوں کی کھینچ تان ھوگی ھندستان نے اپنے آپ کو اس کھینچ تان سے بڑی حد تک الگ رکھا ھے . وہ دنیا کے حالات کو ایک بالکل دوسری درشتی سے دیکھتا ھے ' جسکا پتہ پردھان منتری پنڈت جواھرلال نہرو کی اُن باتوں سے چلتا ھے جو اُنھوں نے کولمبو کی کامن ویلتھ کانفرنس میں کہیں . وہ چین کی نئی سرکار سے ڈرتے نہیں بلکہ اس کا سواگت کرتے ھیں اس لئے کہ ان کی رائے میں چین کی جنتا نے یہ سرکار بناکر جاگیرداری کے جوئے کو اُتار پھینکا ھے اور سینکڑوں برس کے بعد وھاں ایک ایسی سرکار بنی ھے جس کا حکم پورے ملک پر چل سکے گا اسی طرح جاپان کے بارے میں اُن کی رائے یہ ھے کہ وھاں سے ودیشی فوجیں جلد سے جلد ھٹالی جائیں . اس رائے کی بنیاد اس اصول پر ھے کہ ایشیائی دیشوں کو جلد سے جلد ھر طرح کی راج نیتک' آرتھک اور سماجک لوٹ کھسوٹ سے چھٹکارا ملنا چاھئیے .

बात सच मान ली गई है कि रूस ने भी इस क़िस्म का बम बना लिया है. उसके इस तरह बराबर या लगभग बराबर आ जाने पर अब अमरीका एक ऐसा बम (हाइड्रोजन बम) बनाने की कोशिश कर रहा है जो जापान पर गिराये जाने वाले बम से हज़ार गुना अधिक ताक़तवर होगा. और जापान पर जो बम गिराया गया था उसकी तबाह करने की शक्ति का अन्दाज़ा अमरीका के ऐटमी कमीशन की उस रिपोर्ट से लगाया जा सकता है जिसमे ऐटमी हमले से बचाव की तरकीबे बताई गई हैं. इस रिपोर्ट मे लिखा है कि ऐटम बम से जल जाने वाले सिर्फ एक आदमी के इलाज के लिए आक्सीजन की ४२ टैन्कों, ७० लाख मील लम्बा गाज, ४० पाइन्ट .खून, १०० पाइन्ट तरल (सैयाल) दवाये और बहुत सी दूसरी चीज़े चाहिये होंगी. याद रहे कि यह इलाज सिर्फ एक आदमो का है जबकि एक बम से कम से कम चालीस हज़ार आदमी जलेंगे, और न जाने कितने आदमियों को जलने के अलावा या उसके साथ साथ कितनी दूसरी बीमारियॉ हो जायगी . यह भी याद रहे कि नया बम इस बम से जिसकी बुनियाद पर अन्दाज़ा लगाया गया है, हज़ार गुना ज्यादा ताक़तवर होगा.

अभी यह बात ठीक से नही मालूम हुई है कि अमरीका ने हाइड्रोजन बम बना लिया है या बना रहा है. मगर इस बम की बातें अमरीकी पारलियामेंट की ऐटमी कमेटी के एक मेम्बर ने की हैं. इस लिए इन बातो को बे बुनियाद नही कहा जा सकता और न यह कहा जा सकता है कि अमरीका इस बम को सिर्फ नुमाइश

بات سچ مان لی گئی ہے کہ روس نے بھی اس قسم کا بم بنا لیا ہے . اس کے اسطرح برابر یا لگ بھگ برابر آجانے پر اب امریکہ ایک ایسا بم (ہائیڈروجن بم) بنانے کی کوشش کر رہا ہے جو جاپان پر گرائے جانے والے بم سے ہزار گنا ادھک طاقتور ہوگا . اور جاپان پر جو بم گرایا گیا تھا اس کی تباہ کرنے کی شکتی کا اندازہ امریکہ کے ایٹمی کمیشن کی اس رپورٹ سے لگایا جا سکتا ہے جس میں ایٹمی حملے سے بچاؤ کی ترکیبیں بتائی گئی ہیں . اس رپورٹ میں لکھا ہے کہ ایٹم بم سے جل جانے والے صرف ایک آدمی کے علاج کے لئے آکسیجن کی ۴۲ ٹینکوں، ۷۰ لاکھ میل لمبا گاز، ۴۰ پائنٹ خون، ۱۰۰ پائنٹ ترل (سیال) دوائیں اور بہت سی دوسری چیزیں چاہئے ہوں گی یاد رہے کہ یہ علاج صرف ایک آدمی کا ہے جبکہ ایک بم سے کم سے کم چالیس ہزار آدمی جلینگے اور نہ جانے کتنے آدمیوں کو جلنے کے علاوہ یا اس کے ساتھ ساتھ کتنی دوسری بیماریاں ہوجائیں گی یہ بھی یاد رہے کہ نیا بم اس بم سے، جس کی بنیاد پر اندازہ لگایا گیا ہے، ہزار گنا زیادہ طاقتور ہوگا.

ابھی یہ بات ٹھیک سے نہیں معلوم ہوئی ہے کہ امریکہ نے ہائیڈروجن بم بنا لیا ہے یا بنا رہا ہے مگر اس بم کی باتیں امریکی پارلیامنٹ کی ایٹمی کمیٹی کے ایک ممبر نے کی ہیں اس لئے ان باتوں کو بے بنیاد نہیں کہا جانا سکتا. اور نہ یہ کہا جاسکتا ہے کہ امریکہ اس بم کو صرف نمائش

के विदेश मन्त्रियों की कानफ़रेन्स मे, जो लंका की राजधानी कोलम्बो मे हुई थी, बरतानिया के विदेश-मन्त्री को यह कहने की जरूरत पेश आई कि अभी ऐसे किसी समझौते का कोई सवाल नही पैदा होता. इस कानफरेन्स ने एक तरह से यह बात मान ली है कि कम्यूनिज्म को रोक थाम के लिये देश की आर्थिक तरक्क़ी और जनता के रोटी कपड़े का अच्छा बन्दोबस्त जरूरी है. लेकिन कामनवेल्थ के मुल्कों मे जिस तरह की सरकारें क़ायम है, वह जिस तरह से काम कर रही है और उनके पास अलग अलग और मिलाकर जितनी दौलत मौजूद है उसे देखते हुए रोटी कपड़े और आर्थिक तरक्क़ी का बन्दोबस्त अमरीका की मदद के बिना नामुमकिन है और अमरीका हालांकि ऐसी मदद देने पर तैयार है फिर भी कुछ तो चीन के तजर्बे और कुछ हथियारो की शक्ति पर अपने भरोसे के कारन उसने अपने नये साल के बजट मे इसके लिये कोई बड़ी रक़म नही रखी है. इसके बजाय वह फ़ौज के खर्च और हथियारो की शकल मे दूसरे देशो की मदद पर पहले से ज्यादा पैसा लगा रहा है जिस से ख़याल होता है कि वह कम्युनिस्ट आन्दोलन को रूस का धावा समझता है और अपनी फौजी ताकत को बढ़ाकर इस धावे का मुक़ाबला करना चाहता है

नया बम

ताक़त का अन्दाज़ा आज की दुनिया में उतना फौजो की गिनती से नही होता जितना कि हथियारो की शक्ति से और अभी तक हथियारो मे सब से अधिक शक्ति ऐटम बम की समझी जाती है, जो सब से पहले अमरीका ने बनाया था लेकिन पिछले साल यह

کے ودیش منتریوں کی کانفرنس میں، جو لنکا کی راجدھانی کولمبو میں ہوئی تھی، برطانیہ کے ودیش منتری کو یہ کہنے کی ضرورت پیش آئی کہ ابھی ایسے کسی سمجھوتے کا کوئی سوال نہیں پیدا ہوتا۔ اس کانفرنس نے ایک طرح سے یہ بات مان لی ہے کہ کمیونزم کی روک تھام کے لئے دیش کی آرتھک ترقی اور جنتا کے روٹی کپڑے کا اچھا بندوبست ضروری ہے۔ لیکن کامن ویلتھ کے ملکوں میں جس طرح کی سرکاریں قائم ہیں وہ جسطرح سے کام کر رہی ہیں اور ان کے پاس الگ الگ اور ملاکر جتنی دولت موجود ہے اسے دیکھتے ہوئے روٹی کپڑے اور آرتھک ترقی کا بندوبست امریکہ کی مدد کے بنا ناممکن ہے۔ اور امریکہ حالانکہ ایسی مدد دینے پر تیار ہے پھر بھی کچھ تو چین کے تجربے اور کچھ ہتھیاروں کی شکتی پر اپنے بھروسے کے کارن اس نے اپنے نئے سال کے بجٹ میں اس کے لئے کوئی بڑی رقم نہیں رکھی ہے۔ اس کے بجائے وہ فوج کے خرچ اور ہتھیاروں کی شکل میں دوسرے دیشوں کی مدد پر پہلے سے زیادہ پیسہ لگا رہا ہے جس سے خیال ہوتا ہے کہ وہ کمیونسٹ آندولن کو روس کا دھاوا سمجھتا ہے اور اپنی فوجی طاقت کو بڑھاکر اس دھاوے کا مقابلہ کرنا چاہتا ہے۔

نیا بم

طاقت کا اندازہ آج کی دنیا میں اتنا فوجوں کی گنتی سے نہیں ہوتا جتنا کہ ہتھیاروں کی شکتی سے اور ابھی تک ہتھیاروں میں سب سے ادھک شکتی ایٹم بم کی سمجھی جاتی ہے، جو سب سے پہلے امریکہ نے بنایا تھا لیکن پچھلے سال یہ

के बिना उसका पल्ला अमरीका और बरतानिया के मुकाबले में बहुत हलका हो जायगा और उसे दूर पूरब मे अपना असर बढ़ाने का कोई मौका नही मिलेगा, चीन को मदद देने और उसके साथ रिआयतें करने पर मजबूर है. इसी कारन अगर्चे रूस ने योगो-स्लावी कम्युनिस्ट लीडर टीटो और उनकी सरकार को, कम्युनिज्म के तरीको को अपनी राष्ट्री जरूरतो के अनुसार ढालने के जुर्म मे कम्युनिस्ट बिरादरी से निकाल दिया था, लेकिन उसने चीन के कम्युनिस्टो और उनके लीडर माउ जे तु ग को इसकी इजाज़त दे दी है.

तोड़ की तरकीब

इस तरह स्टालिन और माउ मे स्टालिन और टीटो की तरह कोई बड़ा भेद भाव पैदा होने की सम्भावना नही है और अमरीका व बरतानिया को रूस का तोड करने के लिए कोई दूसरी तरकीब सोचनी पड़ेगी ऐसी एक तरकीब यह है कि जिस तरह योरप मे एटलान्टिक सागर के किनारे वाले देशो की जत्थाबन्दी की गई है उसी तरह एशिया मे एक 'पैसिफिक सागर बचाव समझौता' हो जाय पिछले साल पहले फिलिपाइन और फिर बरमा ने इसके लिए एक सुझाव पेश किया था लेकिन हिन्दुस्तान ने ऐसी जत्था-बन्दी मे शरीक होने से इन्कार कर दिया और हिन्दुस्तान के बिना पैसिफिक समझौता ऐसा ही बेजान होगा जैसा बरतानिया के बिना एटलान्टिक समझौता हिन्दुस्तान के इन्कार कर देने पर भी इस तरह को बाते चल रही थी और इसी लिए जनवरी मे कामनवेल्थ

کے بنا اسکا پلہ امریکہ اور برطانیہ کے مقابلے میں بہت ھلکا ھوجائے گا اور اسے دور پورب میں اپنا اثر بڑھانے کا کوئی موقع نہیں ملے گا' چین کو مدد دینے اور اس کے ساتھ رعایتیں کرنے پر مجبور ھے. اسی کارن اگرچہ روس نے یوگوسلاوی کمیونسٹ لیڈر ٹیٹو اور اُن کی سرکار کو' کمیونزم کے طریقوں کو اپنی راشٹری ضرورتوں کے انوسار ڈھالنے کے جرم میں کمیونسٹ برادری سے نکال دیا تھا لیکن اس نے چین کے کمیونسٹوں اور ان کے لیڈر ماؤزےتنگ کو اس کی اجازت دیدی ھے

توڑ کی ترکیب

اس طرح استالن اور ماؤ میں استالن اور ٹیٹو کی طرح کوئی بڑا بھید بھاؤ پیدا ھونے کی سمبھاونا نہیں ھے اور امریکہ و برطانیہ کو روس کا توڑ کرنے کے لئے کوئی دوسری ترکیب سوچنی پڑے گی ایسی ایک ترکیب یہ ھے کہ جسطرح یورپ میں اٹلانٹک ساگر کے کنارے والے دیسوں کی جتھہ بندی کی گئی ھے اسی طرح ایشیا میں ایک 'پیسفک ساگر بچاؤ سمجھوتہ' ھوجائے پچھلے سال پہلے فلپائن اور پھر برما نے اس کے لئے ایک سجھاؤ پیش کیا تھا لیکن ھندستان نے ایسی جتھہ بندی میں شریک ھونے سے انکار کردیا اور ھندستان کے بنا پیسفک سمجھوتہ ایسا ھی بے جان ھوگا جیسا برطانیہ کے بنا اٹلانٹک سمجھوتہ ھندستان کے انکار کردینے پر بھی اسطرح کی باتیں چل رھی تھیں اور اسی لئے جنوری میں کامن ویلتھ

गया है और इसी लिये अमरीका चीन की नई सरकार को मानने मे टाल मटोल कर रहा है और पुरानी सरकार के चीन से बाहर चले जाने पर भी उसके प्रतिनिधि को यू० एन० ओ० और सिक्योरिटी कौंसिल की कुर्सी पर बैठाये रखना चहता है दूसरी तरफ रूस ने यू० एन० ओ० की बहुत सी कमेटियो मे बैठने से उस समय तक के लिये इन्कार कर दिया है जबतक कि चीन की नई सरकार के प्रतिनिधि को उनमे न ले लिया जाय और इस तरह यू० एन० ओ० का काम रुका पडा है. इस मामले मे बरतानिया का रुख अमरीका और रूस के बीच मे है. उसने चीन की नई सरकार को तो मान लिया है लेकिन यू० एन० ओ० मे वह एक तरह से अमरीका का साथ दे रहा है और अपनी सफ़ाई मे बार बार यह कह रहा है कि किसी सरकार को मान लेने का मतलब यह नही है कि उसे पसन्द भी कर लिया गया है.

अब अमरीका और उसके साथ साथ बरतानिया इस बात की कोशिश करेंगे कि कम्युनिज्म के नाते रूस के बढ़ते हुए असर का तोड़ किया जाय. ऐसी एक कोशिश का पता अमरीका के विदेश मन्त्री के इस बयान से चलता है कि रूस चीन के तीन सूबो पर क़ब्जा किये ले रहा है. लेकिन इस बयान के बाद रूस और चीन की नई सरकार के बीच दोस्ती के जिस समझौते की ख़बर आई है उससे पता चलता है कि अमरीका का यह वार ख़ाली गया. दर असल नया चीन अपने बारे मे अमरीका के रुख़ के कारन रूस की तरफ झुकने के लिए मजबूर है और दूसरी तरफ रूस, यह देखते हुए कि चीन

گیا ھےاور اسی لئے امریکہ چین کی نئی سرکار کو ماننے میں ٹال مٹول کر رھا ھے اور پرانی سرکار کے چین سے باھر چلے جانے پر بھی اس کے پرتی ندھی کو یو این. او. اور سکیورٹی کونسل کی کرسی پر بیٹھائے رکھنا چاھتا ھے دوسری طرف روس نے یو این او کی بہت سی کمیٹیوں میں بیٹھنے سے اس سمے تک کے لئے انکار کردیا ھے جب تک کہ چین کی نئی سرکار کے پرتی ندھی کو ان میں نہ لے لیا جائے اور اس طرح یو این او کا کام رکا پڑا ھے اس معاملے میں برطانیہ کا رخ امریکہ اور روس کے بیچ میں ھے اس نے چین کی نئی سرکار کو تو مان لیا ھے لیکن یو این او میں وہ ایک طرح سے امریکہ کا ساتھ دے رھا ھے اور اپنی صفائی میں بار بار یہ کہہ رھا ھے کہ کسی سرکار کو مان لینے کا مطلب یہ نہیں ھے کہ اسے پسند بھی کر لیا گیا ھے.

اب امریکہ اور اس کے ساتھ ساتھ برطانیہ اس بات کی کوشش کریں گے کہ کمیونزم کے ناتے روس کے بڑھتے ھوئے اثر کا توڑ کیا جائے ایسی ایک کوشش کا پتہ امریکہ کے ودیش منتری کے اس بیان سے چلتا ھے کہ روس چین کے تین صوبوں پر قبضہ کئے لے رھا ھے لیکن اس بیان کے بعد روس اور چین کی نئی سرکار کے بیچ دوستی کے جس سمجھوتے کی خبر آئی ھے اس سے پتہ چلتا ھے کہ امریکہ کا یہ وار خالی گیا. در اصل نیا چین اپنے بارے میں امریکہ کے رخ کے کارن روس کی طرف جھکنے کے لئے مجبور ھے اور دوسری طرف روس، یہ دیکھتے ھوئے کہ چین

और इन्डो नेशिया की आज़ादी के लिये तो उसने खुल्लम खुल्ला काम किया. पिछले साल के शुरू मे उसने इन्डोनेशिया के सवाल पर विचार करने के लिये एशियाई मुल्को की एक कानफरेन्स बुलाई थी और इस साल के आख़िर मे इन्डोनेशिया और हालैंड के बीच आज़ादी की बुनियाद पर जो समझौता हुआ उसमे इस कानफरेन्स का अच्छा ख़ासा हिस्सा था. उसने पच्छिमी राष्ट्रो ख़ास कर बरतानिया और अमरीका को यह जता दिया कि एशिया के मुल्क इन्डोनेशिया की गुलामी बरदाश्त नही कर सकते. इससे पहले अमरीका और बरतानिया योरप मे रूस और कम्युनिज्म के ख़िलाफ़ अपने मोर्चे मे हालैंड को साथ लेने के लिये इन्डोनेशिया मे उसकी साम्राजी हरकतो की तरफ से आँखे या कम से कम ज़बान बन्द किये हुए थे. मगर हिन्दुस्तान ने उनको यह बात समझाने की कोशिश की कि कम्युनिज्म, जिसको पच्छिमी राष्ट्र हौवा समझते है, साम्राजी तरीको से खत्म होने की जगह और ज़ोर पकड़ जायगा यही सोचकर इन राष्ट्रो और यू० एन० ओ० की सिक्योरिटी कौन्सिल ने भी अपना रुख बदला और हालैंड पर इन्डोनेशिया की आज़ादी मानने के लिये दबाव डाला

चीन, अमरीका और रूस

चीन के इन्कलाब और इन्डोनेशिया की आज़ादी से इन दोनो मुल्को के सब देशी और विदेशी मसले न तो हल हुए है और न इस साल उनके हल होने की कोई उम्मीद है. दर असल चीन का मामला तो ऐसा है कि वह एक बड़ी लडाई का कारन बन सकता है. वहाँ म्युक निस्टों की सरकार बन जाने से अमरीका का जत्था कमज़ोर हो

२३

اور انڈو نیشیا کی آزادی کے لئے تو اس نے کھلم کھلا کام کیا. پچھلے سال کے شروع میں اس نے انڈونیشیا کے سوال پر وچار کرنے کے لئے ایشیائی ملکوں کی ایک کانفرنس بلائی تھی اور اِس سال کے آخر میں انڈونیشیا اور ہالینڈ کے بیچ آزادی کی بنیاد پر جو سمجھوتا ہوا اُس میں اِس کانفرنس کا اچھا خاصا حصہ تھا. اُس نے پچھمی راشٹروں خاص کر برطانیہ اور امریکہ کو یہ جتا دیا کہ ایشیا کے ملک انڈو نیشیا کی غلامی برداشت نہیں کرسکتے اس سے پہلے امریکہ اور برطانیہ یورپ میں روس اور کمیونزم کے خلاف اپنے مورچے میں ہالینڈ کو ساتھ لینے کے لئے انڈونیشیا میں اس کی سامراجی حرکتوں کی طرف سے آنکھیں یا کم سے کم زبان بند کئے ہوئے تھے. مگر ہندستان نے ان کو یہ بات سمجھانے کی کوشش کی کہ کمیونزم، جسکو پچھمی راشٹر ہووا سمجھتے ہیں، سامراجی طریقوں سے ختم ہونے کی جگہ اور زور پکڑ جائے گا یہی سوچ کران راشٹروں اور یو. این. او. کی سکیورٹی کونسل نے بھی اپنا رخ بدلا اور ہالینڈ پر انڈونیشا کی آزادی ماننے کے لئے دباؤ ڈالا.

چین امریکہ اور روس.

چین کے انقلاب اور انڈو نیشیا کی آزادی سے ان دونوں ملکوں کے سب دیشی اور بدیشی مسئلے نہ تو حل ہوئے ہیں اور نہ اس سال ان کے حل ہونے کی کوئی امید ہے. در اصل چین کا معاملہ تو ایسا ہے کہ وہ ایک بڑی لڑائی کا کارن بن سکتا ہے. وہاں کمیونسٹوں کی سرکار بن جانے سے امریکہ کا جتھا کمزور ہو

दुनिया का हाल

(भाई इशरत अली सिद्दीक़ी)

दो बड़े इन्क़लाब

दुनिया ने अपनी यात्रा मे, जो न जाने कब शुरू हुई थी और न जाने कब तक जारी रहेगी, एक साल और तय करलिया. इस बीते हुए साल में सब से बड़ी बात यह हुई कि पूरब के सवालो ने पच्छिम के सवालो को मांद कर दिया. और पूरब के लिये पिछला साल इन्क़लाबों का साल था. सब से बड़ा इन्क़लाब चीन मे हुआ जहाँ कम्यूनिस्टों ने च्यांग काई शेक की सरकार को हराकर पूरे मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया और एक नई सरकार बनाली. दूसरा नम्बर इन्डोनेशिया का रहा, जहाँ की जनता ने हालैंड के साम्राज को हार मानने और आज़ादी देने पर मजबूर कर दिया. इन्डो चीन और मलाया की जनता फ्रांस और बरतानिया की सरकारो के ख़िलाफ़ साल भर बराबर लड़ती रही और चीन के इन्क़लाब और इन्डोनेशिया की आज़ादी का इन दोनो देशो पर भी असर पड़ेगा.

इन दोनो इन्क़लाबो मे हिन्दुस्तान ने भी हिस्सा लिया. अगरचे वह चीन की जनता को रुपये पैसे और सामान की कोई मदद नही देसका फिर भी रूस और दूसरे कम्युनिस्ट मुल्को को छोड़ कर हिन्दुस्तान ही ने सब से पहले चीन की नई सरकार को मान लिया.

دنیا کا حال

(بھائی عشرت علی صدیقی)

دو بڑے انقلاب

دنیا نے اپنی یاترا میں ' جو نہ جانے کب شروع ہوئی تھی اور نہ جانے کبتک جاری رہے گی ' ایک سال اور طے کر لیا . اس بیتے ہوئے سال میں سب سے بڑی بات یہ ہوئی کہ پورب کے سوالوں نے پچھم کے سوالوں کو ماند کر دیا . اور پورب کے لئے پچھلا سال انقلابوں کا سال تھا . سب سے بڑا انقلاب چین میں ہوا جہاں کمیونسٹوں نے چیانگ کائی شیک کی سرکار کو ہرا کر پورے ملک پر قبضہ کر لیا اور ایک نئی سرکار بنا لی دوسرا نمبر انڈو نیشیا کا رہا' جہاں کی جنتا نے ہالینڈ کے سامراج کو ہار ماننے اور آزادی دینے پر مجبور کر دیا . انڈو چین اور ملایا کی جنتا فرانس اور برطانیہ کی سرکاروں کے خلاف سال بھر برابر لڑتی رہی . اور چین کے انقلاب اور انڈو نیشیا کی آزادی کا ان دونوں دیشوں پر بھی اثر پڑے گا.

اِن دونوں اِنقلابوں میں ھندستان نے بھی حصہ لیا . اگرچہ وہ چین کی جنتا کو روپے پیسے اور سامان کی کوئی مدد نہیں دے سکا پھر بھی روس اور دوسرے کمیونسٹ ملکوں کو چھوڑ کر ھندستان ھی نے سب سے پہلے چین کی نئی سرکار کو مان لیا

नेपथ्य से—निज़ाम !.. आई, निज़ाम !

[लाड का दूसरी ओर से प्रवेश शीघ्रता से आने के कारन उसके सिर का पललू उघड़ गया है और कुछ अस्त व्यस्त सी है.]

लाड—(किसी को न देख कर आश्चर्य से) किसने पुकारा मुझे ?...निज़ाम !.. निज़ाम की ही तो आवाज़ थी. (चारों ओर देखती है) उसकी दृष्टि फटे और जलते हुए चित्र पर पड़ती है.) निज़ाम !. .निज़ाम ! यह.. यह क्या किया तुमने ? कहाँ... कहाँ गये तुम ? (जिस दरवाज़े से निज़ाम गया है, उसकी ओर बढ़ते हुए) निज़ाम ! निज़ाम ! निज़ाम !. क्या सचमुच चले गये तुम ? (एक हाथ दरवाज़े पर रख चेहरा बाहर निकाल कर, ज़ोर से) निज़ाम! निज़ाम ! (कुछ देर निस्तब्धता) चले गये ! आख़िर चले गये तुम !

लघु यवनिका

نیپتھیه سے—نظام !.. آئی ' نظام !

[لاڈ کا دوسری اور سے پرویش شیگھرتا سے آنے کے کارن اُس کے سر کا پلو اُگھڑ گیا ھے اور وہ کچھ است ویست سی ھے .]

لاڈ—(کسی کو نه دیکھ کر آشچریه سے) کس نے پکارا مجھے ؟ ...نظام ! . نظام کی ھی تو آواز تھی . (چاروں اور دیکھتی ھے اُس کی درشٹی پھٹے اور جلتے ھوئے چتر پر پڑتی ھے) نظام !.. نظام !. .! یه . یه کیا کیا تم نے ؟ .کہاں . . ؟ کہاں گئے تم ؟ (جس دروازہ سے نظام گیا ھے ' اُس کی اور بڑھتے ھوئے) نظام ! نظام ! نظام ! کیا سچ مچ چلے گئے تم ؟ (ایک هاتھ دروازے پر رکھ چھرہ باهر نکال کر زور سے) نظام ! .. نظام ! (کچھ دیر ستبدھتا) چلے گئے ! آخر چلے گئے تم !

لگھو یونیکا

इससे ज्यादा फ़ासला है निजात की ......चाहता था जंग में आप की मौत !......इस गन्दी से गन्दी नापाक से नापाक चाह के लिए तो ,खुद लड़ाई में मर कर ही नजात हो सकती है. .. अब... अब मुग़लों से आखरी जंग होगा, और इसी मे मेरी नजात, (फिर कुछ रुक कर) तो...तो आ रहा हूं, भाई जान ! आप के पास आ रहा हूं. (तस्वीर का सदूकचा उठा कर) अभी.. फौरन रवाना हुआ. (एक तस्वीर उतार कर संदूकचे मे रखते हुए) लेकिन इसे. .इसे क्यों साथ ले चल रहा हूँ ?...जागीर छोड़ते वक्त भी इसे ले चलने की आपने इजाज़त दे दी थी,.. अब.. . अब तो मरने आ रहा हूं. ...मुमकिन है यह मरने न दे...वापस ही लौटा लाए. (संदूक़चे को एक ओर फेंक कर) क़लम से रुख़सत ले ली थी, सितार ने रुख़सत दे दी. (तस्वीर को अंगीठी मे फेंकते हुए) तुम . तुम सब से भी रुख़सत. (एक एक कर तस्वीरो को आग मे फेंकता है. उन्हे जलते देख कर उसके मुख पर उन्माद जैसे चिन्ह दिखने लगते है. अब वह बार बार अट्टाहास करता है. लाड के आगरे वाले चित्र को हाथ मे उठा कर) नहीं, नही, भाभी, अब मे तुम्हारी एक न सुनूंगा...तुम बानू नही हो सकती और मै भाभी से कैसे ही मुहब्बत नही कर सकता!.. तुम से भी रुख़सत ! (चित्र को अंगीठी में फेंकते हुए चिल्ला कर) अलविदा, भाभी ! . अलविदा बानू !... अलविदा मेरे दिल की सच्ची मलिका ! (कहते कहते एक ओर शीघ्रता से जाता है.)

اُس سے زیادہ ضرورت ھے نجات کی۔ . . چاھتا تھا جنگ میں آپ کی موت !... اِس گندی سے گندی ناپاک سے ناپاک چاہ کیلئے تو خود لڑائی میں مرکر ھی نجات ھو سکتی ھے ..اب ...اب مغلوں سے آخری جنگ ھوگی' اور اِسی میں میری نجات' (پھر کچھ رک کر) تو.. تو آرھا ھوں' بھائی جان ! آپ کے پاس آ رھا ھوں (تصویر کا صندوقچہ اُٹھا کر) ابھی فوراً روانہ ھوا . (ایک تصویر اُتار کر صندوقچے میں رکھتے ھوئے) لیکن اِسے .. اِسے کیوں ساتھ لے چل رھا ھوں ؟ . جاگیر چھوڑتے وقت بھی، اِسے لے چلنے کی آپ نے اجازت دیدی تھی' اب اب تو مرنے آرھا ھوں . ممکن ھے یہ مرنے نہ دے . واپس ھی لوٹا لائے (صندوقچے کو ایک اور پھینک کر) قلم سے رخصت لے لی تھی ' ستار نے رخصت دے دی۔ (تصویر کو انگیٹھی میں پھینکتے ھوئے) تم .. تم سب سے بھی رخصت (ایک ایک کر تصویروں کو آگ میں پھینکتا ھے۔ اُنھیں جلتے دیکھ کر اُس کے مکھ پر اُنماد جیسے چنھ دیکھنے لگتے ھیں۔ اب وہ بار بار اٹہاس کرتا ھے (لاڈ کے آگرے والے چتر کو ھاتھ میں اُٹھا کر) نہیں' نہیں بھابھی' اب میں تمھاری ایک نہ سنونگا ! . تم بانو نہیں ھوسکتیں اور میں بھابھی سے کیسے ھی محبت نہیں کر سکتا ! . تم سے بھی رخصت ! (چتر کو انگیٹھی میں پھینکتے ھوئے چلا کر) الوداع بھابھی ! الوداع بانو !. . الوداع میرے دل کی سچی ملکہ ! (کہتے کہتے ایک اور شیگھرتا سے جاتا ھے .)

.सकता. (फिर कुछ रुक कर) तो...तो इस शराब में इतनी ताक़त नहीं कि यह ग़म ही न होने दे, और ग़म...ग़म मे इतनी क़ूवत नही कि इस शराब के नज़दीक न जाने दे. (फिर कुछ रुक कर) मुहब्बत, ...मुहब्बत, भाई जान, आप की है ..आप की मुल्क की मुहब्बत में इतनी ताकत है क अपने फ़र्ज़ को छोड़ कर आप सब कुछ भूल गये है, . अरे ! अपने माँ जाए भाई, और जिसकी दौलत से आप ने यह फतह हासिल की उस तक को .तख़्तनशीनी के मौके पर भी आपने याद न किया,. करते भी क्यो ? रिआया. जिसपर आप की मुहब्बत है, वह वहाँ मौजूद थी (फिर कुछ रुक कर) आप की मुहब्बत. मुहब्बत है, वह पाक है, और मेरी मेरी मुहब्बत नापाक मुहब्बत भी नहीं, वह ..वह तो नशा है, ... और कैसा कैसा नशा ?.. ऐसा नशा जिसके सबब से मैं आप की मौत तक चाह सकता हूँ ! (फिर कुछ रुक कर) मैं गिर रहा हूं, ..गिरने की रफ़्तार दिनों दिन तेज़ होती जा रही है !...पूरे . पूरे गिरने के बाद तो यह गिरना शायद ऐसा गिरना होगा कि उठना ही मुशकिल हो जायगा...अभी...अभी भी शायद वक़्त है.. अभी भी अगर हट जाऊँ यहाँ से !...हमेशा के लिए छोड़ दूँ यह साथ ! (कुछ रुक कर) लेकिन ज़िन्दा रह सकूंगा ? (फिर कुछ रुक कर) मर तो सकता हूं, पूरा गुनाहगार होने के पहले, पाक रहते हुए. जान तो दे सकता हूं. (फिर कुछ रुक कर) मुग़लों की मदद से जागीर लेने के लिये आपने जागीर को छोड़ कर नजात हासिल की थी....मुझे...मुझे

سکتا ۔ (پھر کچھ رک کر) تو ....تو اِس شراب میں اتنی طاقت نہیں کہ یہ غم ہی نہ ہونے دے' اور غم ۔ غم میں اتنی قوت نہیں کہ اِس شراب کے نزدیک نہ جانے دے (پھر کچھ رک کر) محبت... ..محبت' بھائی جان' آپ کی ہے .... آپ کی ملک کی محبت میں اتنی طاقت ہے کہ اپنے فرض کو چھوڑ کر آپ سب کچھ بھول گئے ہیں' ارے ! اپنے ماں جائے بھائی' اور جس کی دولت سے آپ نے یہ فتح حاصل کی اُس تک کو .. تخت نشینی کے موقع پر بھی آپ نے یاد نہ کیا' . . ...کرتے بھی کیوں ؟ رعایا' جس پر آپ کی محبت ہے ' وہ وہاں موجود تھی ۔ (پھر کچھ رک کر) آپ کی محبت' محبت ہے ۔ وہ پاک ہے' اور میری میری محبت ناپاک محبت بھی نہیں' وہ وہ تو نشہ ہے' اور کیسا کیسا نشہ ؟ .. ایسا نشہ جس کے سبب سے میں آپ کی موت تک چاہ سکتا ہوں ! (پھر کچھ رک کر) میں گر رہا ہوں گرنے کی رفتار دنوں دن تیز ہوتی جارہی ہے ! ۔ پورے پورے گرنے کے بعد تو یہ گرنا شاید ایسا گرنا ہوگا کہ اُٹھنا ہی مشکل ہو جائیگا .. ابھی ۔ ابھی بھی شاید وقت ہے ابھی بھی اگر ہٹ جاؤں یہاں سے ! ہمیشہ کیلئے چھوڑ دوں یہ ساتھ ! (کچھ رک کر) لیکن زندہ رہ سکوں گا ؟ (پھر کچھ رک کر) مر تو سکتا ہوں' پورا گناہ گار ہونے کے پہلے' پاک رہتے ہوئے' جان تو دے سکتا ہوں۔ (پھر کچھ رک کر) مغلوں کی مدد سے جاگیر لینے کے لئے آپ نے جاگیر کو چھوڑ کر نجات حاصل کی تھی.....مجھے.. مجھے

मैं क्या गिर सकता हूँ ? (.ऑंसू बहाते हुए) उस...उस दिन तो मैं आप से माफ़ी माँगने के क़ाबिल था, लेकिन...अब तो उसके लायक़ भी नहीं. (उठकर, कुछ देर रुक, ऑंसू पोंछते हुए) आप ... आप ठीक फ़रमाते थे——मेरी मुहब्बत पाक मुहब्बत नहीं, और भाभी के लिए उस..उसी नापाक मुहब्बत की वजह से आपके लिए यह गन्दे .. निहायत गन्दे ख़याल उठते है. (फिर कुछ रुक कर) लेकिन . लेकिन भाई साहब, जब भाभी के सामने जाता हूँ, भूल...भूल जाता हूं, यह सब, वह ..वह बहस मे यक़ीन दिला देती हैं कि हमारी मुहब्बत पाक है, पाक से पाक...पर..पर फिर यह यक़ीन क़ायम क्यों नहीं रहता ?...जब तक भाभी सामने रहती हैं, यह यक़ीन रहता है, पर ज्यं ही वह सामने से ग़ायब हुईं कि सारी पाक इमारत गिर पड़ती है और उसकी जगह गुनाह की ख़न्दक़ नज़र आने लगती ...जिस...जिस यक़ीन को क़ायम रखने के लिए किसी बाहरी सहारे की इस क़दर ज़रूरत रहती है. वह...वह यक़ीन कितने दिनों तक ठहरेगा ? (कुछ रुक कर) नापाक मुहब्बत ही नहीं,...यह... यह तो नशा जान पड़ता है ! नशे...नशे में ही इस तरह का उतार चढ़ाव होता है...और नशे को क़ायम रखने के लिए अब . अब तो भाभी की मौजूदगी की शराब हर लमहे पर ज़रूरी मालूम होती है...जब तक शराब, तब तक नशा, ज्योंही शराब ग़ायब, नशे का लुत्फ़ ख़त्म !...इतना...इतना ही नहीं, इस नशे की ख़ुमारी तो ऐसा ग़म पैदा करती है, जिसका ज़िक्र लफ़्ज़ों में नहीं किया जा

میں کیا کر سکتا ہوں ؟ (آنسو بہاتے ہوئے) اُس اُس دن تو میں آپ سے معافی مانگنے کے قابل تھا، لیکن . .اب تو اُس کے لائق بھی نہیں (اُٹھ کر، کچھ دیر رک آنسو پونچھتے ہوئے) آپ .....آپ ٹھیک فرماتے تھے——میری محبت پاک محبت نہیں ' اور بھابھی کے لئے اُس . ..اُسی ناپاک محبت کی وجہ سے آپ کے لئے یہ گندے . نہایت گندے خیال اُٹھتے ہیں . (پھر کچھ رک کر) لیکن لیکن بھائی صاحب، جب بھابھی کے سامنے جاتا ہوں ' بھول بھول جاتا ہوں ' یہ سب' وہ...وہ بحث میں یقین دلا دیتی ہیں کہ ہماری محبت پاک ہے' پاک سے پاک.. ..پر . . پر پھر یہ یقین قائم کیوں نہیں رہتا ؟... جب تک بھابھی سامنے رہتی ہیں ' یہ یقین رہتا ہے ' پر جیوں ہی وہ سامنے سے غائب ہوئیں کہ ساری پاک عمارت گر پڑتی ہے اور اُس کی جگہہ گناہ کی خندق نظر آنے لگتی ہے . .. جس...... جس یقین کو قائم رکھنے کے لئے کسی باہری سہارے کی اِس قدر ضرورت رہتی ہے ' وہ .. . وہ یقین کتنے دنوں تک ٹھہرے گا ؟ (کچھ رک کر) ناپاک محبت ہی نہیں'.. ...یہ...یہ تو نشہ جان پڑتا ہے ! نشے .. نشے میں ہی اِس طرح کا اُتار چڑھاؤ ہوتا ہے...اور نشے کو قائم رکھنے کے لئے اب . اب تو بھابھی کی موجودگی کی شراب ہر لمحے پر ضروری معلوم ہوتی ہے ...... جب تک شراب، تب تک نشہ، جیوں ہی شراب غائب، نشے کا لطف ختم !......اتنا .....اتنا ہی نہیں ' اِس نشے کی خماری تو ایسا غم پیدا کرتی ہے، جس کا ذکر لفظوں میں نہیں کیا جا

निज़ाम—(गीत पूरा होते होते सितार का तार टूट जाता है. सितार को एक ओर पटकते हुए) तू .. ..तू भी साथ नही देता !,... गाता हूँ तो गाने अन्दर ही से गला सा घोटने लगते हैं !...... क़लम ने मुसव्विरी छोड़ दी !.. . तस्वीरो को देखता हूँ तो वह क़हक़हा लगाकर मज़ाक सा उडाती हैं ! . ख़फ़ा है सारी दुनिया ! .. ख़फ़ा है दिल !.. और ख़फ़ा है मेरी मुहब्बत मुझसे ! . उठकर शेर ख़ाँ की तस्वीर के सामने आकर) उस दिन उस दिन जब आप से माफ़ी माँगने गया, तब ..तब भाई जान, आप . आप भी ख़फ़ा हो गये.. मेरी बात तक न सुनी .. उस दिन अगर आप मेरी बात सुन लेते तो ...तो जो कुछ उसके बाद हुआ है, वह....वह हरगिज़ न हो पाता !....मैं गिर रहा हूं, ..लगातार गिरता जा रहा हूँ,... नहीं तो कभी ऐसी..... ऐसी भी बातें दिल मे उठ सकती थीं, जैसी आज कल उठ रही है ! (घुटने टेक कर) बंगाल के इस मर्तबे के कूच के वक़्त एकाएक दिल मे आया कि (भर्राये हुए स्वर मे कि .ख़ुदा न ख़ास्ता जंग मे अगर आप को कुछ .. आप को कुछ... ज़बान से वह गन्दी बात निकलना ही मुशकिल है....तो ....तो ताज ख़ाँ के बाद लाड जैसे आप की हो गई....उसी ... उसी तरह आप के बाद मेरी ....उफ़ ! (कुछ रुक कर) और...और आज जब ख़बर मिली कि बंगाल को आपने फ़तह कर लिया,.. ..वहाँ आपकी तख़्त नशीनी हो गई . . अब आप अल् सुलतान उल आदिल शेर शाह हैं,.. तब....तब दिल को कैसी ठेस सी लगी !......इससे ज्यादा नीचे और

نظام—(گیت پورا ہوتے ہوتے ستار کا تار ٹوٹ جاتا ہے . ستار کو ایک اور پٹکتے ہوئے) تو بھی بھی ساتھ نہیں دیتا! گاتا ہوں تو گانے اندر ہی سے گلا سا گھونٹنے لگتے ہیں ! قلم نے مصوری چھوڑ دی ! .تصویروں کو دیکھتا ہوں تو وہ قہقہہ لگا کر مذاق سا اڑاتی ہیں ! خفا ہے ساری دنیا ! خفا ہے دل ! .. اور خفا ہے میری محبت مجھ سے ! (اٹھ کر شیر خاں کی تصویر کے سامنے آکر) اس دن اس دن جب آپ سے معافی مانگنے گیا، تب تب بھائی جان ، آپ آپ بھی خفا ہو گئے میری بات تک نہ سنی اس دن اگر آپ میری بات سن لیتے تو . . تو جو کچھ اس کے بعد ہوا ہے، وہ وہ ہرگز نہ ہو پاتا! . میں گر رہا ہوں لگاتار گرتا جا رہا ہوں، نہیں تو کبھی ایسی . ایسی بھی باتیں دل میں اٹھ سکتی تھیں ، جیسی آج کل اٹھ رہی ہیں ! (گھٹنے ٹیک کر) بنگال کے اس مرتبے کے کوچ کے وقت یکایک دل میں آیا کہ (بھرائے ہوئے سور میں) کہ . خدا نخواستہ جنگ میں اگر آپ کو کچھ آپ کو کچھ زبان سے وہ گندی بات نکلنا ہی مشکل ہے تو . تو تاج خاں کے بعد لاڈ جیسے آپ کی ہوگئی اسی اسی طرح آپ کے بعد میری اف ! (کچھ رک کر) اور اور آج جب خبر ملی کہ بنگال کو آپ نے فتح کر لیا وہاں آپ کی تخت نشینی ہو گئی . اب آپ السلطان العادل شیر شاہ ہیں تب... تب دل کو کیسی ٹھیس سی لگی! اس سے زیادہ نیچے اور

[ईसा ख़ॉ तथा ब्रह्मादित्य खड़े खड़े और शेष व्यक्ति बैठे बैठे एक टक शेर ख़ाँ की ओर देखते हैं. कुछ देर निस्तब्धता.]

शेर ख़ॉ—(कुछ देर पश्चात् गम्भीरता से सोचने के बाद खड़े होकर) अच्छा, देखिये, इस मामले को हम लोग बंगाल की फतह के बाद सोचेंगे. फिलहाल इसे मुल्तवी कर दीजिये.

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) नहीं, नहीं.

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) हरगिज़ नहीं. हरगिज़ नहीं.

शेर ख़ॉ—(सभी को आदाब बजाते और जाते हुए). मानिये... कहना मान जाइये....

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—बिहार शरीफ मे शेर ख़ॉ के महल में निज़ाम का कमरा.

समय—रात्रि.

[जाड़े के कारण कमरे मे एक अँगीठी जल रही है. निज़ाम बैठा हुआ सितार बजाकर गा रहा है.]

गीत

टूट गया है दिल का साज़
अब बेजान है यह आवाज़.
आँखो ने सब खोल दिये
दिल ने छिपाये थे जो राज़.
काश न उसने सीखे होते
दिल लेने के यह अन्दाज़.

[عیسی خاں تتھا برھما دتیہ کھڑے کھڑے اور شیش ویکتی بیٹھے بیٹھے ایک ٹک شیر خاں کی اُور دیکھتے ھیں ۔ کچھ دیر نستبدھتا]

شیر خاں ۔ (کچھ دیر پشچات گمبھیرتا سے سوچنے کے بعد کھڑے ھوکر) اچھا دیکھئے' اِس معاملے کو ھم لوگ بنگال کی فتح کے بعد سوچیں گے ۔ فی الحال اسے ملتوی کر دیجئے ۔

کچھ ویکتي—(ایک ساتھ) نہیں ' نہیں

کچھ ویکتي—(ایک ساتھ) ھرگز نہیں ' ھرگز نہیں ۔

شیر خاں—(سبھوں کو آداب بجاتے اور جاتے ھوئے) مانئے . . کہنا مان جائیے . .

لگھو یونیکا

دوسرا درشیہ

استھان—بہار شریف میں شیر خاں کے محل میں نظام کا کمرہ.

سمے—راتری ۔

[جاڑے کے کارن کمرے میں ایک انگیٹھی جل رھي ھے ۔ نظام بیٹھا ھوا ستار بجا کر گا رھا ھے]

گیت

ٹوٹ گیا ھے دل کا ساز
اب بے جان ھے یہ آواز
آنکھوں نے سب کھول دئے
دل نے چھپائے تھے جو راز
کاش نہ اُس نے سیکھے ھوتے
دل لینے کے یہ انداز

हैं, तब एक व्यक्ति के हाथ में सारी सत्ता रहे बिना हमारा काम नहीं चल सकता. न जाने कितने समय से इस देश की प्रजा को सम्राटो और बादशाहो के दर्शनो का अभ्यास हो गया है. अधिकांश सम्राटो और बादशाहों ने अपने व्यक्तिगत उत्कर्ष के लिए इन पदो को प्राप्त किया था हुमायूँ ही क्या कर रहे है. आप की इस प्रकार की इच्छाये तथा अभिलाषाये नहीं हैं, यह हम जानते हैं, किन्तु आप के सिंहासनासीन हुए बिना देश का उद्धार और उत्कर्ष दोनो ही सम्भव नहीं दिखते. बिना एक केन्द्र की स्थापना के शक्ति का न संग्रह हो सकता है और न ठीक तरह से संचालन

एक हिन्दू—असम्भव है.

कुछ हिन्दू—(एक साथ) सर्वथा असम्भव.

एक मुसलमान—ग़ैर मुमकिन है.

कुछ मुसलमान—(एक साथ) क़तई ग़ैर मुमकिन.

ईसा ख़ाँ—(जो अब तक खड़ा हुआ है) मुल्क और रिआया के लिए आपको बादशाहत मन्ज़ूर करना है. मस्जिद में आपके नाम का ख़ुतबा पढ़े बग़ैर आगे का काम नहीं हो सकता.

ब्रह्मादित्य—(जो अब तक खड़ा हुआ है) और टकसाल में आप के नाम के सिक्के ढले बिना नहीं.

एक हिन्दू—इस देश के हिन्दुओ के लिये आप यह पद स्वीकार कीजिये.

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) सब के लिए, सब के लिए.

ہیں، تب ایک ویکتی کے ہاتھ میں ساری ستّا رہے بنا ہمارا کام نہیں چل سکتا. نہ جانے کتنے سمے سے اِس دیش کی پرجا کو سمراٹوں اور بادشاہوں کے درشنوں کا ابھیاس ہوگیا ہے. ادھیکانش سمراٹوں اور بادشاہوں نے اپنے ویکتی گت اُتکرش کے لئے اِن پدوں کو پراپت کیا تھا. ہمایوں ہی کیا کر رہے ہیں. آپ کی اِس پرکار کی اچھائیں تتھا ابھلاشائیں نہیں ہیں، یہ ہم جانتے ہیں، کنتو آپ کے سنگھاسنا سین ہوئے بنا دیش کا اُدھار اور اُتکرش دونوں ہی سمبھو نہیں دکھتے. بنا ایک کیندر کی ستھاپنا کے شکتی کا نہ سنگرہ ہو سکتا ہے اور نہ ٹھیک طرح سے سنچالن.

ایک ہندو - اسمبھو ہے.

کچھ ہندو - (ایک ساتھ) سروتھا اسمبھو.

ایک مسلمان - غیر ممکن ہے.

کچھ مسلمان - (ایک ساتھ) قطعی غیر ممکن.

عیسیٰ خاں - (جو ابتک کھڑا ہوا ہے) ملک اور رعایا کے لئے آپ کو بادشاہت منظور کرنا ہے. مسجد میں آپ کے نام کا خطبہ پڑھے بغیر آگے کا کام نہیں ہو سکتا.

برہما دتیہ - (جو اب تک کھڑا ہوا ہے) اور ٹکسال میں میں آپ کے نام کے سکے ڈھلے بنا نہیں

ایک ہندو - اِس دیش کے ہندوؤں کے لئے آپ یہ پد سویکار کیجئے.

کچھ ویکتی - (ایک ساتھ) سب کے لئے، سب کے لئے.

एक हिन्दू—हम सब आप को अपने सम्राट के रुप में देखना चाहते हैं.

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) हाँ, सब के सब.

बहुत से व्यक्ति—(एक साथ) सारे हिन्दू मुसलमान !

[शेर खाँ खड़ा होता है, ईसा खाँ बैठ जाता है]

शेर खाँ—आप सब हिन्दू मुसलमान भाई इस वक्त मुझपर कितने ख़ुश है, इसे मैं बख़ूबी जानता हूँ, और इसके लिए शुक्रिये के सिवा मेरे पास क्या है, जो मैं आपकी नज़र करूँ. मुझे वह दिन भी याद है जब आप मुझे मुल्क का दुशमन और मुग़लों का ग़ुलाम जानकर मुझपर अज़हद ख़फ़ा थे. लेकिन न उस नाराज़ी ने मेरा दिल गिराया था और न इस ख़ुशी से मुझे नशा चढ़ सकता है. अपने एक छोटे से फ़र्ज़ को अदा कर मैं आपका बादशाह होने की क़ाबलियत नहीं रखता. मैं ज़िन्दगी भर आपका ख़ादिम ही रह कर आप की ख़िदमत करना चाहता हूँ. (बैठ जाता है)

ईसा ख़ाँ—(खड़े होकर) लेकिन बिना बादशाह के हमारा काम नहीं चल सकता.

एक हिन्दू—बिना राजा के कहीं काम चला है ?

शेर खाँ—हिन्दोस्तान और यूनान मे तो पुराने ज़माने मे अच्छी तरह चलता था.

ब्रह्मादित्य—(खड़े होकर) सब समय एक से नहीं होते. जब विदेशी इस देश में मौजूद हैं, देश को ग़ुलाम बनाने के प्रयत्न मे बादशाह हुमायूँ आगरा लौट कर फिर से युद्ध की तैयारी कर रहे

ایک هندو—هم سب آپکو اپنے سمراٹ کے سروپ میں دیکھنا چاهتے هیں .

کچھ ویکتی—(ایک ساتھ) هاں ، سب کے سب .

بہت سے ویکتی—(ایک ساتھ) سارے هندو مسلمان !

[شیر خاں کھڑا هوتا هے . عیسی خاں بیٹھ جاتا هے]

شیر خاں—آپ سب هندو مسلمان بھائی اِس وقت مجھ پر کتنے خوش هیں ، اِسے میں بخوبی جانتا هوں ، اور اِس کے لئے شکریے کے سوا میرے پاس کیا هے ، جو میں آپکی نذر کروں مجھے وہ دن بھی یاد هے جب آپ مجھے ملک کا دشمن اور مغلوں کا غلام مان کر مجھ پر ازحد خفا تھے لیکن نہ اُس ناراضی نے میرا دل گرایا تھا اور نہ اِس خوشی سے مجھے نشہ چڑھ سکتا هے اپنے ایک چھوٹے سے فرض کو ادا کر میں آپ کا بادشاہ هونے کی قابلیت نہیں رکھتا . میں زندگی بھر آپ کا خادم هی رہ کر آپ کی خدمت کرنا چاهتا هوں . (بیٹھ جاتا هے)

عیسی خاں—(کھڑے هو کر) لیکن بنا بادشاہ کے همارا کام نہیں چل سکتا .

ایک هندو—بنا راجہ کے کہیں کام چلا هے ؟

شیر خاں—هندستان اور یونان میں تو پرانے زمانے میں اچھی طرح چلتا تھا .

برهما دتیہ—(کھڑے هوکر) سب سمے ایک سے نہیں هوتے . جب بدیشی اِس دیش میں موجود هیں ، دیش کو غلام بنانے کے پریتن میں بادشاہ همایوں آگرہ لوٹ کر پھر سے یدھ کی تیاری کر رهے

भी, इस समय देश मे और कोई नहीं है. जनाब ईसा खां शेरवानी साहब ने आपके सामने जो प्रस्ताव रखा है उसका मैं हृदय से समर्थन करता हूँ.

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) हम इस प्रस्ताव से सहमत हैं.

बहुत व्यक्ति—(एक साथ) सब सब के सब!

[ब्रह्मादित्य बैठ जाता है, ईसा खां फिर खड़ा होता है]

ईसा खां—तो फिर हजरते आला को बुलाया जाय?

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) जरूर! जरूर!

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) अवश्य! अवश्य!

[ब्रह्मादित्य—(खड़े होकर मैं उन्हे अभी लाता हूँ

[ब्रह्मादित्य जाता है ईसा खॉ बैठ जाता है लोगों मे कानाफूसी होने लगती है. कुछ लोग अलग अलग समूहो मे बाते करते हैं पर किसी की कोई बात समझ मे नही आती ब्रह्मादित्य का शेर खॉं के साथ प्रवेश. शेर खॉ का सर कुछ झुका हुआ है उसकी मुद्रा मे अत्याधिक गम्भीरता टपक रही है उसे देखते ही सब लोग खड़े होकर आदाब बजाते हैं और 'हजरते आला की जय' शेर खाँ जिन्दाबाद' आदि नारो से बैठक गूँज उठती है शेर खाँ विनम्रता से सबके अभिवादन का उत्तर देते हुए ईसा खाँ के नजदीक आकर बैठता है. शेष सब लोग भी बैठ जाते हैं]

ईसा खाँ—(खड़े होकर शेर खाँ से) हम लोगों ने आपको क्यों तकलीफ दी है यह तो (ब्रह्मादित्य की ओर सकेत कर) पंडित साहब ने आपको बतला ही दिया होगा.

بھی، اِس سمے دیش میں اور کوئی نہیں ہے جناب عیسیٰ خاں شیروانی صاحب نے آپ کے سامنے جو پرستاؤ رکھا ہے اُس کا میں ہردے سے سمرتھن کرتا ہوں

کچھ ویکتی—(ایک ساتھ) ہم اِس پرستاؤ سے سہمت ہیں۔

بہت ویکتی—(ایک ساتھ) سب سب کے سب!

[برہما دتیہ بیٹھ جاتا ہے عیسیٰ خاں پھر کھڑا ہوتا ہے]

عیسیٰ خاں—تو پھر حضرت اعلیٰ کو بلایا جائے؟

کچھ ویکتی—(ایک ساتھ) ضرور! ضرور!

کچھ ویکتی—(ایک ساتھ) اوشیہ! اوشیہ!

[برہما دتیہ جاتا ہے عیسیٰ خاں بیٹھ جاتا ہے لوگوں میں کانا پھوسی ہونے لگتی ہے کچھ لوگ الگ الگ سموہوں میں باتیں کرتے ہیں۔ پر کسی کی کوئی بات سمجھ میں نہیں آتی۔ برہمادتیہ کا شیر خاں کیساتھ پرویش۔ شیر خاں کا سر کچھ جھکا ہوا ہے۔ اُسکی مدرا سے اَتی ادھک گمبھیرتا ٹپک رہی ہے اُسے دیکھتے ہی سب لوگ کھڑے ہوکر آداب بجاتے ہیں اور 'حضرت اعلیٰ کی جے' شیر خاں زندہ باد' آدی نعروں سے بیٹھک گونج اُٹھتی ہے۔ شیر خاں ونمرتا سے سب کے ابھی وادن کا اُتر دیتے ہوئے عیسیٰ خاں کے نزدیک آکر بیٹھتا ہے۔ شیش سب لوگ بھی بیٹھ جاتے ہیں]

عیسیٰ خاں—(کھڑے ہوکر شیر خاں سے) ہم لوگوں نے آپ کو کیوں تکلیف دی ہے یہ تو (برہما دتیہ کی اور سنکیت کر) پنڈت صاحب نے آپکو بتلا ہی دیا ہوگا۔

शेरखाँ बनाया था, हम शेरखाँ को शेरखाँ से शेरशाह बनाना चाहते हैं.

कुछ व्यक्ति (एक साथ) आमीन ! आमीन !

[ईसा खां बैठ जाता है ब्रह्मादित्य खड़ा होता है.]

ब्रह्मादित्य—यह तो सभी जानते है कि शेर खां साहब से जितना मैं परिचित हूँ उतना कोई नहीं उनमे जितनी शूरता है, उतनी ही दूरदर्शिता, और जिस धैर्य तथा त्याग के बिना शूरता और दूरदर्शिता सद्‌गुण के स्थान पर दुर्गुण हो सकते है. वह धैर्य और त्याग भी उनमे कूट कूट कर भरे है. बिना धैर्य के शूर अपने को ही नष्ट कर सकता है, बिना त्याग के के शूर स्वार्थी हो सकता है इसी प्रकार बिना धैर्य के दूरदर्शी सच्चा दूरदर्शी हो ही नही सकता तथा बिना त्याग के दूरदर्शी कायर हो जाता है. इन सारे गुणों का शेर खां साहब मे असाधारण सम्मिलन है. फिर अपने लिए वह न कभी कुछ सोचते हैं और न कभी कुछ करते है उन मे अपने और अपने देश के लिये कोई भेद नहीं रह गया है और हमारा देश कैसा है ? इसमे हिन्दू मुसलमान दोनो ही रहते है शेर खा साहब को देश से प्रेम है. इसी लिए हिन्दू, मुसलमान दोनो से प्रेम है. वह मुसलमान इस लिए है कि मुसलमान के घर उनका जन्म हुआ है, लेकिन हिन्दुओं का भला करने वाला उनसे अधिक कोई हिन्दू नही है. हिन्दुओ के भी वे उतने ही प्यारे हैं जितने मुसलमानो के. शेर खा साहब के सदृश असाधारण प्रतिभा और बुद्धि का व्यक्ति जिसे राजनैतिक और सामाजिक कार्य के करने का महान अनुभव भी हो, और साथ ही कार्य करने की शक्ति

شیر خاں بنایا تھا ' ہم شیر خاں کو شیر خاں سے شیر شاہ بنانا چاھتے ھیں

کچھ ویکتی (ایک ساتھ) آمین ! آمین !

[عیسیٰ خاں بیٹھ جاتا ھے برھمادتیہ کھڑا ھوتا ھے .]

برھما دتیہ — یہ تو سبھی جانتے ھیں کہ شیر خاں صاحب سے جتنا میں پریچت ھوں اُتنا کوئی نہیں . اُن میں جتنی شورتا ھے' اُتنی ھی دور درشتا ' اور جس دھیریہ تتھا تیاگ کے بنا شورتا اور دور درشتا سدگن کے استھان پر درگن ھوسکتے ھیں وہ دھیریہ اور تیاگ بھی اُن میں کوٹ کوٹ کر بھرے ھیں . بنا دھیریہ کے شور اپنے کو ھی نشٹ کر سکتا ھے بنا تیاگ کے شور سوارتھی ھو سکتاھے اِسی پرکار بنا دھیریہ کے دور درشی سچا دور درشی ھو ھی نہیں سکتا تتھا بنا تیاگ کے دور درشی کایر ھوجاتا ھے اِن سارے گنوں کا شیر خاں صاحب میں اسادھارن سملن ھے پھر اپنے لئے وہ نہ کبھی کچھ سوچتے ھیں اور نہ کبھی کچھ کرتے ھیں. اُن میں اپنے اور اپنے دیش کے لئے کوئی بھید نہیں رہ گیا. اور ھمارا دیش کیساھے ؟ اِس میں ھندو مسلمان دونوں ھی رھتے ھیں . شیر خاں صاحب کو دیش سے پریم ھے ' اِسی لئے ھندو' مسلمان دونوں سے پریم ھے وہ مسلمان اِس لئے ھیں کہ مسلمان کے گھر میں اُن کا جنم ھوا ھے لیکن ھندوؤں کا بھلا کرنے والا اُن سے ادھک کوئی ھندو نہیں ھے ھندوؤں کے بھی وے اُتنے ھی پیارے ھیں جتنے مسلمانوں کے شیر خاں صاحب کے سدرش اسادھارن پرتبھا اور بدھی کا ویکتی ' جسے راج نیتک اور سماجک کاریہ کے کرنے کا مہان انوبھو بھی ھو اور ساتھ ھی کاریہ کرنے کی شکتی

मरहूम की नौकरी मे थे, लेकिन इससे क्या ? ··इससे यह नहीं कहा जा सकता कि पठान सल्तनत की बादशाहत के मैं क़ाबिल हूँ. जिन मुगलों के सामने सुल्तान इब्राहीम लोदी, राना साँगा, सुल्तान महमूद लोदी और बहादुर शाह के मानिन्द बादशाह और राजा नही ठहर सके, उनके चौसा मे दाँत खट्टे किये हमारे जनाब 'शेरख़ाँ साहब ने. और उस एक भिश्ती ने हुमायूं की जान बचा दी, नहीं तो हुमायूं नाम की कोई चीज ही दुनिया मे बाक़ी नही रहती. पठानों मे इस वक्त सुल्तान महमूद लोदी और सुल्तान बहादुर शाह से ज्यादा ताकतवर और कोई न था दोनो शाही खानदानो के थे, दोनो के पास पुश्तैनी सलतनते थीं, और फौज, लेकिन मुगलो के सामने कोई न ठहर सका और हमारे सूबेदार जलाल ख़ाँ साहब ने तो बिहार को बगाल की नजर कर के लुटिया ही डुबो दी थी पठानो की ऐसी गई गुजरी हालतो मे एक मामूली जागीरदार के यहाँ पैदा होकर, बिना किसी पुश्तैनी ख़िताब, सल्तनत और फ़ौज के शेरख़ाँ साहब ने जो कुछ किया, वह तवारीख़ मे एक नया सबक़ सिखाता है. लेकिन आगरा लौट कर बादशाह हुमायू अभी तैयारी करके हम पर हमला करेंगे. अगर हम इस हमले का सामना कर. बाहर से आए हुए इन मुग़लो को मुल्क से निकाल कर, इस मुल्क मे फिर से इस मुल्क में ही रहने वालो की सल्तनत क़ायम करना चाहते हैं, तो यह बिना क़ाबिल और बहादुर बादशाह के मुमकिन नहीं. शेरख़ाँ साहब से ज्यादा क़ाबिल और बहादुर शख्स इस वक़्त पठान कौम में नहीं है. हमारे सूबेदार बहार ख़ाँ साहब मरहूम ने फ़रीद को, फ़रीद से

مرحوم کی نوکری میں تھے، لیکن اِس سے کیا ؟.. .. اِس سے یہ نہیں کہا جا سکتا کہ پٹھان سلطنت کی بادشاہت کے میں قابل ہوں. جن مغلوں کے سامنے سلطان ابراہیم لودی، رانا سانگا، سلطان محمود لودی اور بہادر شاہ کی مانند بادشاہ اور راجہ نہیں ٹھہر سکے، اُن کے چوسا میں دانت کھٹے کئے ہمارے جناب شیر خاں صاحب نے اور اُس ایک بہشتی نے ہمایوں کی جان بچادی، نہیں تو ہمایوں نام کی کوئی چیز ہی دنیا میں باقی نہیں رہتی. پٹھانوں میں اِس وقت سلطان محمود لودی اور سلطان بہادر شاہ سے زیادہ طاقتور اور کوئی نہ تھا. دونوں شاہی خاندانوں کے تھے، دونوں کے پاس پشتینی سلطنتیں تھیں اور فوج، لیکن مغلوں کے سامنے کوئی نہ ٹھہر سکا ہمارے صوبے دار جلال خاں صاحب نے تو بہار کو بنگال کے نذر کر لٹیا ہی ڈبو دی تھی پٹھانوں کی ایسی گئی گذری حالتوں میں ایک معمولی جاگیر دار کے یہاں پیدا ہوکر، بنا کسی پشتینی خطاب سلطنت اور فوج کے شیر خاں صاحب نے جو کچھ کیا، وہ تواریخ میں ایک نیا سبق سکھاتا ہے لیکن آگرہ لوٹ کر بادشاہ ہمایوں ابھی تیاری کرکے ہم پر حملہ کریں گے. اگر ہم اِس حملے کا سامنا کر، باہر سے آئے ہوئے ان مغلوں کو ملک سے نکال اِس ملک میں پھر سے اِس ملک میں ہی رہنے والوں کی سلطنت قائم کرنا چاہتے ہیں تو یہ بنا قابل اور بہادر بادشاہ کے ممکن نہیں. شیر خاں صاحب سے زیادہ قابل اور بہادر شخص اِس وقت پٹھان قوم میں نہیں ہے. ہمارے صوبےدار بہار خاں صاحب مرحوم نے فرید کو، فرید سے

शेर शाह

(सेठ गोविन्द दास)

पांचवां अंक

पहला दृश्य

स्थान—बिहार शरीफ मे सूबेदार के मकान की बैठक

समय—दोपहर

[बैठक की बनावट सहसराम की बैठक के सदृश ही है परन्तु यह बैठक उससे बहुत बड़ी तथा बहुत अधिक सजी हुई है. बैठक हिन्दू तथा पठान अमीर उमरा और सरदारो से भरी हुई है. इन्ही मे ईसा खाँ शेरवानी तथा ब्रह्मादित्य भी है. ईसा खाँ शेरवानी की अवस्था लगभग चालीस वर्ष की है वह गोर वर्ण का ऊँचा-पूरा मोटा ताजा आदमी है. सिर पर पट्टे तथा मुख पर बड़ी बड़ी मूछे तथा दाढ़ी है. अँगरखा तथा पायजामा पहने है, सर पर पगड़ी लगाये है वह खड़े हुए बोल रहा है. शेष सब व्यक्ति बैठे हुए है.]

ईसा खाँ—हाँ, मै · · · मैं तजवीज़ करता हूँ कि शेरखाँ साहब को तमाम पठान सल्तनत का बादशाह बनाया जाय. उनके वालिद जनाब हसन ।सूर मरहूम मेरे वालिद जनाब उमर खाँ साहब

شیر شاہ

(سیٹھ گوبند داس)

پانچواں انک

پہلا درشیہ

استھان—بہار شریف میں صوبے دار کے مکان کی بیٹھک

سمے—دوپہر

[بیٹھک کی بناوٹ سہسرام کی بیٹھک کے سدرش ہی ہے' پرنتو یہ بیٹھک اُس سے بہت بڑی تتھا بہت ادھک سجی ہوئی ہے . بیٹھک ہندو تتھا پٹھان امیر امرا اور سرداروں سے بھری ہوئی ہے . انہیں میں عیسیٰ خان شیروانی تتھا برہمادتیہ بھی ہیں عیسیٰ خاں شیروانی کی اوستھا لگ بھگ چالیس ورش کی ہے . وہ گور ورن کا اونچا پورا موٹا تازہ آدمی ہے سر پر پٹے تتھا مکھ پر بڑی بڑی مونچھیں تتھا ڈاڑھی ہیں انگرکھا تتھا پائجامہ پہنے ہے' سر پر پگڑی لگائے ہے وہ کھڑے ہوئے بول رہا ہے . شیش سب ویکتی بیٹھے ہوئے ہیں .]

عیسیٰ خاں—ہاں' میں . میں تجویز کرتا ہوں کہ شیر خاں صاحب کو تمام پٹھان سلطنت کا بادشاہ بنایا جائے اُن کے والد جناب حسن سور مرحوم میرے والد جناب عمر خاں صاحب

कांग्रेस जो 'काल युग' मे मर चुकी थी वह 'आज युग' मे नया जन्म लेकर खुद को जिन्दा साबित करे और महात्मा के विधान के अनुसार अपने को "लोक सेवक सघ" के रूप मे ढाल कर लोक सेवा और देश सुधार के काम मे सच्चे दिल, सच्ची नियत और ईमानदारी से जुट जाय और अपने पिछले गुनाहो का कफ़्फ़ारा अदा करे तो इसी मे सब का भला है और इसी तरह, और केवल इसी तरह कांग्रेस जिन्दा रह सकता है

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन '४७ मे पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था इस छोटे से बयान मे उन्होने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगो को भुगतने पड रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है आख़ीर मे आजकल की मुसीबतो को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये हैं हमे विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने मे इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनो लिखावटो मे मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द
४८ बाई का बाग, इलाहाबाद.

کانگریس جو 'کال یگ' میں مرچکی تھی' وہ 'آج یگ' میں نیا جنم لے کر خود کو زندہ ثابت کرے اور مہاتما کے ودھان کے انوسار اپنے کو "لوک سیوک سنگھ" کے روپ میں ڈھال کر لوک سیوا اور دیش سدھار کے کام میں سچے دل' سچی نیت اور ایمانداری سے جٹ جائے اور اپنے پچھلے گناہوں کا کفارہ ادا کرے تو اسی میں سب کا بھلا ہے اور اسی طرح اور کیول اسی طرح کانگریس زندہ رہ سکتی ہے

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے 'مہاتما گاندھی کی صلاح سے' اکتوبر سنہ ۱۹۴۷ع میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورا کیا تھا اس چھوٹے سے بیان میں انہوں نے وہاں کی بھیانکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں ان کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے آخیر میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کےلئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اس بیان سے بڑی مدد ملے گی۔

کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے قیمت چار آنے۔

'نیا ہند
۴۸ 'بائی کا باغ' الہ آباد۔

और विश्वास की शक्ति को जहां तक हो सके बढ़ाया जाय. उसी के साथ एखलाक़ी शक्ति को भी और रूहानी शक्ति को भी, यानी नैतिक ताकत भी और आत्मबल भी ! इन शक्तियों के हासिल हो जाने पर ही जनता आगे अपने जीवन के असल लक्ष्य की तरफ कदम उठा सकती है.

महात्मा जी के गहरे विचारों और रूहानी इशारों को समझने के लिये आत्मिक दिल, आत्मिक भाव और आत्मिक सलाहियत की जरूरत है बलन्द नजर और बलन्द फिक्र की जरूरत है बिना इसके उनके विचारों की गहराइयों और ऊंचाइयों तक पहुंचना और उन रोशनियों से लाभ उठाना हर एक का काम नहीं, न हर एक का भाग.

अपने विधान में महात्मा गांधी कांग्रेस के बारे में कह चुके हैं "अब उसका काम नहीं रह गया है" और इसकी मौजूदा हालत को बेकार और बेसूद बतलाते हुए उन्होंने निर्णय दे दिया कि 'कांग्रेस अपना संगठन तोड़ दे"

अगर खुदा कांग्रेस को नेक तौफ़ीक दे और वह अब भी इस विधान को अपनी ज़िन्दगी के लिये दस्तूर या मशाल बनाये तो सिर्फ कांग्रेस और न सिर्फ केन्द्र बल्कि हिन्दुस्तान और पूरे हिन्दुस्तान का भविष्य उत्तम, सुन्दर, रोशन और शानदार बन सकता है. उसी की बरकत से राज के जीवन में शक्ति और सुन्दरता जाग सकती है. उसी के उपयोग से देश की रचना में ख़ूबसूरती और पायदारी आ सकती है.

اور وشواس کی شکتی کو جہاں تک ہو سکے بڑھایا جائے . اُسی کے ساتھ اخلاقی شکتی کو بھی اور روحانی شکتی کو بھی یعنی نیتک طاقت بھی اور آتم بل بھی ! اِن شکتیوں کے حاصل ہوجانے پر ہی جنتا آگے اپنے جیون کے اصل لکش کی طرف قدم اُٹھا سکتی ہے .

مہاتما جی کے گہرے وچاروں اور روحانی اشاروں کو سمجھنے کے لئے آتمک دل، آتمک بھاؤ اور آتمک صلاحیت کی ضرورت ہے . بلند نظر اور بلند فکر کی ضرورت ہے بنا اس کے اُن کے وچاروں کی گہرائیوں اور اونچائیوں تک پہونچنا اور اُن روشنیوں سے لابھ اُٹھانا ہر ایک کا کام نہیں، نہ ہر ایک کا بھاگ

اپنے ودھان میں مہاتما گاندھی کانگریس کے بارے میں کہہ چکے ہیں "اب اُس کا کام نہیں رہ گیا ہے" اور اس کی موجودہ حالت کو "بے کار اور بے سود" بتلاتے ہوئے انھوں نے نرنے دیدیا کہ "کانگریس اپنا سنگٹھن توڑ دے"

اگر خدا کانگریس کو نیک توفیق دے اور وہ اب بھی اس ودھان کو اپنی زندگی کے لئے دستور یا مشعل بنالے تو صرف کانگریس اور نہ صرف کیندر بلکہ ہندستان اور پورے ہندستان کا بھوشیہ اتم، سندر، روشن اور شاندار بن سکتا ہے . اُسی کی برکت سے راج کے جیون میں شکتی اور سندرتا جاگ سکتی ہے اُسی کے اپیوگ سے دیش کی رچنا میں خوبصورتی اور پائیداری آ سکتی ہے .

बिछाओ. महलों से निकल कर झोपड़ियों की सैर करो. पार्कों को छोड़ कर देहातों की हवा खाओ. ऐशों के भवन से निकल कर सेवाओं के बन मे आओ. फूलों को छोड़ कर कॉटों का मज़ा लो और मूल सेवा का आनन्द पाओ——ग़रीबों के साथ रहो सहो उनका रहन सहन देखो. सोतों को जगाओ बैठों को उठाओ. उठों को आगे बढ़ाओ. उन के साथ सम्बन्ध कायम करो भाई चारा कायम करो नाता जोड़ो दामन जोड़ो. एक समाजी सङ्गठन बनाओ एक इन्सानी बिरादरी सजाओ—उनकी जिन्दगी देखो भालो. उनके हालात जानो समझो और अपनी जिन्दगी के लिए नये नये तजरबे हासिल करो और अपने को सच्चा सेवक बनाओ.

सत्य को अपनाओ नैतिक क्रान्ति लाओ रचनात्मक कार्यक्रम पर ज़ोर लगाओ प्रेम और सेवा का भाव नगर नगर फैलाओ किसानों को शक्ति दो गरीबों को मुक्ति दो मजदूरों को हिम्मत दो

उनके दिल का भाव यह था कि आम जनता के अन्दर अपने पैरों पर खड़ा होने की शक्ति पैदा की जाय. उसकी कमज़ोरी दूर की जाय. उसको गफ़लत की नींद से होशियार किया जाये उसके कान खोले जाये उसकी आखों के पर्दे हटाये जाये उसका हौसला बढ़ाया जाय. उसका आदर्श उठाया जाय——इन साधनों और कारनों से उन्होंने यह बतलाया कि केवल जनता की जागृति ही उसके जीवन में क्रान्ति ला सकती है.

महात्मा जी की बड़ी आशा थी कि खुद एतमादी यानी अपने ऊपर विश्वास और भरोसा करने की आदत हर एक में डाली जाय

بچھاؤ۔ محلوں سے نکل جھونپڑوں کی سیر کرو پارکوں کو چھوڑ کر دیہاتوں کی ہوا کھاؤ عیشوں کے بھون سے نکل کر سیواؤں کے بن میں آؤ۔ پھولوں کو چھوڑ کر کانٹوں کا مزہ لو اور مول سیوا کا آنند پاؤ——غریبوں کے ساتھ رہو سہو۔ اُن کا رہن سہن دیکھو۔ سوتوں کو جگاؤ۔ بیٹھوں کو اُٹھاؤ اُٹھوں کو آگے بڑھاؤ ان کے ساتھ سمبندھ قائم کرو بھائی چارہ قائم کرو۔ ناتا جوڑو دامن جوڑو ایک سماجی سنگٹھن بناؤ۔ ایک اِنسانی برادری سجاؤ—اُن کی زندگی دیکھو بھالو ان کے حالات جانو سمجھو اور اپنی زندگی کے لئے نئے نئے تجربے حاصل کرو اور اپنے کو سچا سیوک بناؤ

ستیہ کو اپناؤ۔ نیتک کرانتی لاؤ رچناتمک کاریہ کرم پر زور لگاؤ۔ پریم اور سیوا کا بھاؤ نگر نگر پھیلاؤ کسانوں کو شکتی دو غریبوں کو مکتی دو مزدوروں کو ہمت دو

اُن کے دل کا بھاؤ یہ تھا کہ عام جنتا کے اندر اپنے پیروں پر کھڑا ہونے کی شکتی پیدا کی جائے اس کی کمزوری دور کی جائے۔ اُس کو غفلت کی نیند سے ہوشیار کیا جائے اس کے کان کھولے جائیں۔ اس کی آنکھوں کے پردے ہٹائے جائیں۔ اس کا حوصلہ بڑھایا جائے۔ اس کا آدرش اُٹھایا جائے—اِن سادھنوں اور کارنوں سے انہوں نے یہ بتلایا کہ کیول جنتا کی جاگرتی ہی اس کے جیون میں کرانتی لا سکتی ہے۔

مہاتما جی کی بڑی آشا تھی کہ خود اعتمادی یعنی اپنے اوپر وشواس اور بھروسہ کرنے کی عادت ہر ایک میں ڈالی جائے

कि उनके रूहानी विधान में भी यही सुनहरे असूल पग पग पर झलक रहे हैं.

महात्मा जी मानव प्रेम के मैदान मे जब भी निकले हैं, और जहां भी निकले हैं, अपने सियासी चेलो और प्रेमियो को उसी तरफ़ बुलाया है उसी दिशा में आवाज़ दी है. पर उन लोगो ने हाथ जोड़ कर अक्सर जवाब दिया है— महाराज ! हम राज काज के कामो मे लगे हुए है. हमारे कामो मे दख़ल न दीजिये. हम पर बडी भारी ज़िम्मेदारियां हैं. हम इस वक्त ज़िम्मेदार हकूमत चला रहे हैं हमको बिलकुल फ़ुरसत नहीं है. न बात सुनने की न बात करने की. इस कारन इस समय हमसे न बोलिये और हमे माफ़ रखिये.

उस लङ्गोटी वाले की बात कौन सुनता ?

और इस राज काजी नक्कार ख़ाने मे तूती की आवाज़ पर कौन ध्यान देता ?

वह ग़रीब सोच सोच कर ही रह गया. वह बेचारा चीख़ चीख़ कर ही चला गया और जीवन के पिंजरे से उसकी बेचैन रूह हमेशा के लिये उड़ गई.

बापू के विधान और समग्र ग्राम सेवा के मकसद को अगर समझ लिया जाय और उसकी असल स्प्रिट को जान लिया जाय तो क़ौम के नेताओ, सेवको, लीडरो और वर्करो के ऊपर यह कानून लागू होता है और वक़्त का तकाज़ा उनको हुक्म देता है कि अब :— शहरो और क़स्बों का ख़याल हटा कर गांव गांव फिरो. देहात देहात जगाओ. ग्राम ग्राम जाओ. दिशा दिशा समग्र सेवा के जाल

که اُن کے روحانی ودهان میں بھی یہی سنھرے اُصول پگ پگ پر جھلک رہے ہیں ۔

مہاتما جی مانو پریم کے میدان میں جب بھی نکلے ہیں ' اور جہاں بھی نکلے ہیں ' اپنے سیاسی چیلوں اور پریمیوں کو اُسی طرف بلایا ہے ۔ اُسی دشا میں آواز دی ہے ۔ پر اُن لوگوں نے ہاتھ جوڑ کر اکثر جواب دیا ہے—مہاراج ! ہم راج کاج کے کاموں میں لگے ہوئے ہیں ہمارے کاموں میں دخل نہ دیجئے ۔ ہم پر بڑی بھاری ذمے داریاں ہیں ۔ ہم اِس وقت ذمے دار حکومت چلا رہے ہیں ہم کو بالکل فرصت نہیں ہے ۔ نہ بات سننے کی نہ بات کرنے کی ۔ اِس کارن اس سمے ہم سے نہ بولئے اور ہمیں معاف رکھئے

اُس لنگوٹی والے کی بات کون سنتا ؟

اور اس راج کاجی نقارخانے میں طوطی کی آواز پر کون دھیان دیتا ؟

وہ غریب سوچ سوچ کر ہی رہ گیا ۔ وہ بے چارا چیخ چیخ کر ہی چلا گیا اور جیون کے پنجرے سے اُسکی بے چین روح ہمیشہ کے لئے اڑ گئی ۔

باپو کے ودھان اور سمگر گرام سیوا کے مقصد کو اگر سمجھ لیا جائے اور اس کی اصل اسپرٹ کو جان لیا جائے تو قوم کے نیتاؤں ' سیوکوں ' لیڈروں اور ورکروں کے اوپر یہ قانون لاگو ہوتا ہے اور وقت کا تقاضا اُن کو حکم دیتا ہے کہ اب :— شہروں اور قصبوں کا خیال ہٹاکر گاؤں گاؤں پھرو ۔ دیہات دیہات جگاؤ ۔ گرام گرام جاؤ ۔ دشا دشا سمگر سیوا کے جال

लिया था. उसके रोग को पहिचान लिया था और अपने अनुभव की बिना पर हुक्म लगा दिया था कि वह अपनी शक्ति खो चुकी है. उसकी असल रूह फना हो चुकी है. इसी लिये राष्ट्र के वैद्य ने उसकी हालत के मुताबिक़ एक क़ीमती और अकसीर नुस्ख़ा तजवीज़ और तैयार किया, जिसको "नये विधान" के नाम से कांग्रेस कमेटी मे भेजा, ताकि रोगी उसको अपने ऊपर उपयोग करके अपना रोग दूर कर सके और सेहत पा सके. मगर कांग्रेस पच्छिमी चोरयो की गुलाम और अङ्ग्रेज़ी दवाइयो की लागू. बापू के नुस्ख़े से मुह फेर गई और जान चुरा गई. सत्य का उसमे सत था इसलिये कड़वा लगा.

कांग्रेस यह समझी कि अगर ऐसी गलती की तो गद्दी भी जाती है, राज पाट भी जाता है हाथ से हकूमत जाती है करी कराई मेहनत जाती है. बनी बनाई इज्ज़त जाती है.

सच यह है कि गद्दी छोड़ना बहुत मुशकिल काम है और बड़ा कठिन—यह केवल उन वीरो का ही काम है जो अपने दिल पर क़ाबू रखते हैं और जो शैतान की चालो से अपने को बचाये रखते हैं.

महात्मा गांधी बड़े सीधे सादे इन्सान थे. इसलिये उनकी यह आशा भी कितनी सीधी सादी थी और कितनी अहिन्सात्मक! महात्मा जी की ज़िन्दगी का बुनियादी असूल सत्य और अहिंसा रहा है. वह जो भी इन्क़लाब लाये हैं या लाना चाहा है, अपने इन्हीं कामयाब असूलो के ज़रिये—यही कारन है

لیا تھا. اُس کے روگ کو پہچان لیا تھا اور اپنے انوبھو کی بنا پر حکم لگا دیا تھا کہ وہ اپنی شکتی کھو چکی ہے. اُسکی اصل روح فنا ہو چکی ہے. اِسی لئے راشٹر کے وید نے اس کی حالت کے مطابق ایک قیمتی اور اکسیر نسخہ تجویز اور تیار کیا جس کو "نئے ودھان" کے نام سے کانگریس کمیٹی میں بھیجا تاکہ روگی اس کو اپنے اوپر اپیوگ کرکے اپنا روگ دور کر سکے اور صحت پا سکے مگر کانگریس پچھمی چھروں کی غلام اور انگریزی دوائیوں کی لاگو. باپو کے نسخے سے منہہ پھیر گئی اور جان چرا گئی. ستیہ کا اُس میں ست تھا اس لئے کڑوا لگا.

کانگریس یہ سمجھی کہ اگر ایسی غلطی کی تو گدی بھی جاتی ہے، راج پاٹ بھی جاتا ہے ہاتھ سے حکومت جاتی ہے کری کرائی محنت جاتی ہے. بنی بنائی عزت جاتی ہے.

سچ یہ ہے کہ گدی چھوڑنا بہت مشکل کام ہے اور بڑا کٹھن— یہ کیول اُن ویروں کا ہی کام ہے جو اپنے دل پر قابو رکھتے ہیں اور جو شیطان کی چالوں سے اپنے کو بچائے رکھتے ہیں

مہاتما گاندھی بڑے سیدھے سادھے انسان تھے اس لئے اُن کی یہ آشا بھی کتنی سیدھی سادی تھی اور کتنی اہنسا تمک! مہاتما جی کی زندگی کا بنیادی اُصول ستیہ اور اہنسا رہا ہے وہ جو بھی انقلاب لائے ہیں یا لانا چاہا ہے، اپنے اِنہی کامیاب اُصولوں کے ذریعے—یہی کارن

चाहिये. अगर यह असूल क़बूल नही तो फिर न उनकी सेवा सच्ची न उनका प्रेम सच्चा.

राज की फुट दो फुट की गद्दी से उठाकर सेवा के विराट मैदान मे लाने से महात्मा जी का मतलब यह था कि कौम के वह नेता जो नेता पीछे, सेवक पहले होने चाहिये, जन सेवा, जन रचना और जन रक्षा के कामो मे लग जाये—राज काजी ठाठो को छोड़ कर

महात्मा जी अपने विधान मे कहते हैं, "कांग्रेस का मक़सद राज काजी आजादी हासिल करना नही था बल्कि उसके आगे की मंजिले तै करनी थीं. अगर यह दूसरी आजादी हासिल नही हुई तो सिर्फ राज काजी आजादी बेकार और बेसूद है यह तो सिर्फ उन दूसरी आजादियो के हासिल करने का जरिया है.''

महात्मा जी ने इन विचारो और खयालो के अनुसार कांग्रेस को राज गद्दी छोड़ कर असल आजादी और सच्ची जमहूरियत की तरफ दूसरा कदम उठाने की दावत दी थी. वह चूंकि देख रहे थे कि कांग्रेस सही रास्त से भटक चुकी है और असल मकसद से हट गई है, इसलिये उन्होने उसको सही राह पर लाना और लगाना चाहा था—वह महान् लीडर थे, सही रास्ता बताना उनका फर्ज़ था. वह देश के उपदेशक थे, नेक सलाह देना उनका काम था.

महात्मा गांधी क़ौम के हकीम थे—उन्होने कांग्रेस की नाड़ी टटोल कर उसकी भीतरी और नाजुक नाजुक हालत का पता लगा लिया था. उसकी खतरनाकी को समझ लिया था—उन्होने बीमार कांग्रेस का पीला चेहरा देखकर उसकी कमजोरी और मरज़ की भांप

چاہئے۔ اگر یہ اُصول قبول نہیں تو پھر نہ اُن کی سیوا سچی نہ اُن کا پریم سچا۔

راج کی فٹ دو فٹ کی گدی سے اُٹھاکر سیوا کے وراٹ میدان میں لانے سے مہاتماجی کا مطلب یہ تھا کہ قوم کے وہ نیتا جو نیتا پیچھے، سیوک پہلے ہونے چاہئیں، جن سیوا، جن رچنا اور جن رکشا کے کاموں میں لگ جائیں—راج کاجی ٹھاٹھوں کو چھوڑ کر۔

مہاتماجی اپنے ودھان میں کہتے ہیں، "کانگریس کا مقصد راج کاجی آزادی حاصل کرنا نہیں تھا بلکہ اُس کے آگے کی منزلیں طے کرنی تھیں اگر یہ دوسری آزادی حاصل نہیں ہوئی تو صرف راج کاجی آزادی بےکار اور بے سود ہے یہ تو صرف اُن دوسری آزادیوں کے حاصل کرنے کا ذریعہ ہے"

مہاتما جی نے اِن وچاروں اور خیالوں کے انوسار کانگریس کو راج گدی چھوڑ کر اصل آزادی اور سچی جمہوریت کی طرف دوسرا قدم اُٹھانے کی دعوت دی تھی۔ وہ چونکہ دیکھ رہے تھے کہ کانگریس صحیح راستے سے بھٹک چکی ہے اور اصل مقصد سے ہٹ گئی ہے، اِس لئے انہوں نے اس کو صحیح راہ پر لانا اور لگانا چاہا تھا——وہ مہان لیڈر تھے، صحیح راستہ بتانا اُن کا فرض تھا۔ وہ دیش کے اُپدیشک تھے، نیک صلاح دینا اُن کا کام تھا۔

مہاتما گاندھی قوم کے حکیم تھے۔——اُنھوں نے کانگریس کی ناڑی ٹٹول کر اسکی بھیتری اور نازک نازک حالت کا پتہ لگا لیا تھا۔ اُس کی خطرناکی کو سمجھ لیا تھا——انھوں نے بیمار کانگریس کا پیلا چہرا دیکھ کر اُسکی کمزوری اور مرض کو بھانپ

जाता है. अगर सेवक मुख़लिस और बेलौस है, अगर सेवक प्रेमी और त्यागी है तो इसी मे उसको आनन्द मिलता है. शान्ति मिलती है, रस मिलता है, बल मिलता है

हम जानते हैं कि वह प्रेम के भाव अपने अन्दर रखते हैं हम को मा'लूम है कि उनकी ज़बानों पर सेवा का शब्द आता रहता है और उनकी आवाज़ो से प्रेम का राग निकलता रहता है—लेकिन यहां एक सवाल है क्या जनता से बच बच कर उसकी सेवा हो सकती है ?

क्या ऐश-घरो मे रह कर और जनता को भूका नङ्गा रख कर उसपर प्रेम का छाप डाली जा सकती है ?

प्रेम के लिए ज़रूरी है दिल पर क़ाबू पाना और दिल से दिल मिलाना.

सेवा के लिए ज़रूरत है ग़रीब के घर पर जाने की. क़रीब से क़रीब जाने की और मन से छुआ छूत की आदत छुड़ाने की.

सेवा आराम-घरो मे रह कर नहीं की जाती, सोफ़ो के ऊपर बैठ कर नहीं की जाती.

सेवा कांटेदार घाटियो मे चल फिर कर की जाती है

सेवा पैरों में छाले लाकर की जाती है.

सेवा वक़्त की   कर की जाती है.

सेवा मन की ख़्वाहिश पी पी कर की जाती है.

अगर यह तकलीफ़ गवारा नहीं, तो सेवा का मैदान छोड़ देना

جاتا هے . اگر سیوک مخلص اور بے لوث هے ' اگر سیوک پریمی اور تیاگی هے تو اِسی میں اس کو آنند ملتا هے . شانتي ملتی هے ' رس ملتا هے ' بل ملتا هے .

هم جانتے هیں که وہ پریم کے بهاؤ اپنے اندر رکھتے هیں هم کو معلوم هے که اُن کي زبانوں پر سیوا کا شبد آتا رهتا هے اور اُن کی آوازوں سے پریم کا راگ نکلتا رهتا هے—لیکن یہاں ایک سوال هے ! کیا جنتا سے بچ بچ کر اس کي سیوا هو سکتی هے ؟

کیا عیش گهروں میں رہ کر اور جنتا کو بهوکا ننگا رکھ کر اُس پر پریم کی چهاپ ڈالي جا سکتي هے ؟

پریم کے لئے ضروري هے دل پر قابو پانا اور دل سے دل ملانا .

سیوا کے لئے ضرورت هے غریب کے گهر پر جانے کی . قریب سے قریب جانے کی اور من سے چهوا چهوت کی عادت چهڑانے کی .

سیوا آرام گهروں میں رہ کر نهیں کیجاتی صوفوں کے اوپر بیٹھ کر نهیں کي جاتی .

سیوا کانٹوں دار گهاٹیوں میں چل پهر کر کیجاتی هے

سیوا پیروں میں چهالے لاکر کیجاتي هے .

سیوا وقت کی تیز تیز دهوپ کها کر کیجاتي هے .

سیوا من کي خواهش پي پي کر کی جاتي هے .

اگر یہ تکلیف گوارا نهیں ' تو سیوا کا میدان چهوڑ دینا

मगर कांग्रेसी नेता उसको देख कर चौक पड़े, सिटपटा गये और घबरा गए.

महात्मा गांधी उनकी हालत को जानते थे. यही कारन था कि बापू ने उनको पुकारा और अपने दिल की आवाज़ उन तक पहुँचा कर उनके कान खोले. जिससे मतलब यह था कि हकूमत के सुनहरी जालो से निकल कर वह निस्वार्थ सेवा के मैदान मे उतर आयें. लेकिन महात्मा की आवाज़ कौन सुनता है और दुनिया की मोह-माया के आगे रूहानी उपदेशक का कहा कौन मानता है ?

उस नये विधान की रू से जनता को पूरी आज़ादी और अधिकार मिलता था. पूरी ताक़त और शक्ति मिलती थी.

वह विधान मूल मे निज़ाम था बेलौसी, बेग़रज़ी, प्रेम, त्याग और सदाचार के साथ जन-सेवा और जन रक्षा का !

बेशक महात्मा जी दीवाने थे. यानी अपनी धुन के पक्के और प्रेम में सच्चे.

प्रेम के विकास का नाम ही तो दीवानापन है. यही दीवानगी सच्ची दीवानगी है और इसी दीवानगी मे असली होशमन्दी है. इस लिए वही दीवाना आज की सियासी दुनिया मे सब से बड़ा सयाना माना गया है.

यह बात जान लेनी चाहिये कि जन-सेवा और मानव प्रेम का काम दीवाना बनकर ही किया जाता है. निस्वार्थ और बेलौसी के साथ किया जाता है. प्रेम और ख़ुलूस के साथ किया जाता है दर दर फिर कर किया जाता है. पग पग ठोकरें खाकर किया

مگر کانگریسی نیتا اُس کو دیکھ کر چونک پڑے ' سٹ پٹا گئے اور گھبرا گئے۔

مہاتما گاندھی اُن کی حالت کو جانتے تھے۔ یہی کارن تھا کہ باپو نے اُن کو پکارا اور اپنے دل کی آواز اُن تک پہونچا کر اُن کے کان کھولے۔ جس سے مطلب یہ تھا کہ حکومت کے سنہری جالوں سے نکل کر وہ نسوارتھ سیوا کے میدان میں اُتر آئیں۔ لیکن مہاتما کی آواز کون سنتا ہے اور دنیا کی موہ مایا کے آگے روحانی اپدیشک کا کہا کون مانتا ہے ؟

اُس نئے ودھان کی رو سے جنتا کو پوری آزادی اور ادھیکار ملتا تھا۔ پوری طاقت اور شکتی ملتی تھی۔

وہ ودھان مول میں نظام تھا بے لوثی ' بے غرضی ' پریم ' تیاگ اور سداچار کیساتھ جن سیوا اور جن رکشا کا !

بے شک مہاتما جی دیوانے تھے۔ یعنی اپنی دھن کے پکے اور پریم میں سچے۔

پریم کے وکاس کا نام ہی تو دیوانہ پن ہے یہی دیوانگی سچی دیوانگی ہے اور اسی دیوانگی میں اصلی ہوشمندی ہے اس لئے وہی دیوانہ آج کی سیاسی دنیا میں سب سے بڑا سیانا مانا گیا ہے۔

یہ بات جان لینی چاہئے کہ جن سیوا اور مانو پریم کا کام دیوانہ بن کر ہی کیا جاتا ہے۔ نسوارتھ اور بے لوثی کے ساتھ کیا جاتا ہے۔ پریم اور خلوص کے ساتھ کیا جاتا ہے۔ در در پھر کر کیا جاتا ہے۔ پگ پگ ٹھوکریں کھاکر کیا

एक क़ीमती नुसख़ा था देश के राजवैद्य का

वह एक सही इलाज था कांग्रेस के रोग का.

महात्मा गांधी के इस नये विधान की व्याख्या (तशरीह) श्री मंज़र अली सोख़्ता ने बड़ी मेहनत, लगन और सुंदरता के साथ जुलाई, अगस्त के 'नया हिन्द' मे की है

हम उस व्याख्या मे पड़ना नही चाहते.

ख़ुद बापू के शब्दो मे उसका ख़ुलासा यह है, 'जो साधन कांग्रेस ने राजकाजी आज़ादी हासिल करने के लिए निकाले थे, उन साधनो से हिंदुस्तान ने राजकाजी आज़ादी ले ली है. इसलिए कांग्रेस को आज की शक्ल-सूरत का, यानी उस सूरत का कि जिसमे वह प्रचार का एक ज़रिया और पार्लिमेन्टरी मशीन बन गई है, अब कोई काम नही रहा है. हिन्दुस्तान को अब शहरों और क़स्बों का ख़याल हटा कर सात लाख गाँवों के लिए समाजी, सदाचारी और माली आज़ादी हासिल करनी चाहिए. हिन्दुस्तान जैसे जैसे इस लक्ष्य की तरफ़ बढ़ेगा, वैसे वैसे शहरी ज़िन्दगी फ़ौजी ताक़त पर क़ाबू पाने के लिए टक्कर लेगी......'' आख़िर मे महात्माजी ने सलाह दी है कि कांग्रेस का मौजूदा संगठन तोड़ दिया जाय और उसे एक लोक सेवक संघ बना दिया जावे.

कितना सुन्दर विधान है, और कैसा रचनात्मक !

कितनी नेक सलाह है, और कितनी नैतिक !

जनता की भलाई और सुधार के लिए—कांग्रेस की शक्ति बढ़ाने के लिए भी और उसको ऊंचा उठाने के लिए भी.

ایک قیمتی نسخہ تھا دیش کے راج وید کا ۔

وہ ایک صحیح علاج تھا کانگریس کے روگ کا

مہاتما گاندھی کے اس نئے ودھان کی ویاکھیا (تشریح) شری منظور علی سوختہ نے بڑی 'محنت' لگن اور سندرتا کے ساتھ جولائی، اگست کے 'نیا ہند' میں کی ہے ۔

ہم اس ویاکھیا میں پڑنا نہیں چاہتے ۔

خود باپو کے شبدوں میں اس کا خلاصہ یہ ہے ' " جو سادھن کانگریس نے راج کاجی آزادی حاصل کرنے کے لئے نکالے تھے ان سادھنوں سے ہندستان نے راج کاجی آزادی لے لی ہے اس لئے کانگریس کی آج کی شکل صورت کا' یعنی اس صورت کا کہ جس میں وہ پرچار کا ایک ذریعہ اور پارلیمنٹری مشین بن گئی ہے' اب کوئی کام نہیں رہا ہے ہندستان کو اب شہروں اور قصبوں کا خیال ہٹا کر ٧ لاکھ گاؤں کے لئے سماجی' سدا چاری اور مالی آزادی حاصل کرنی چاہئے۔ ہندستان جیسے جیسے اس لکش کی طرف بڑھے گا' ویسے ویسے شہری زندگی فوجی طاقت پر قابو پانے کے لئے ٹکر لے گی . . . ' آخر میں مہاتما جی نے صلاح دی ہے کہ کانگریس کا موجودہ سنگٹھن توڑ دیا جائے اور اسے ایک لوک سیوک سنگھ بنا دیا جاوے

کتنا سندر ودھان ہے ' اور کیسا رچناتمک !

کتنی نیک صلاح ہے ' اور کتنی نیتک !

جنتا کی بھلائی اور سدھار کے لئے — کانگریس کی شکتی بڑھانے کے لئے بھی اور اسکو اونچا اٹھانے کے لئے بھی ۔

कांग्रेस के नाम

जनवरी का सन्देश

(भाई अब्दुल हलीम अन्सारी)

जनवरी मास का सम्बन्ध गांधी जी की जात के साथ खास है.

जब जनवरी का मास आता है तो हमे महात्मा जी की याद दिलाता है.

इसी महीने मे महात्मा गांधी ने आखिरी सन्देश भी दिया है और इसी मे बलिदान का पद भी लिया है.

इसी तारीख और इसी दिन यानी ३० जनवरी, शुक्रवार को अपनी मौत से चन्द घन्टे पहले महात्मा गांधी ने "आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी" में पेश होने के लिये अपना एक 'सुझाव भेजा था. वह सुझाव "लोक सेवक संघ" के विधान का एक खाका था .

वह खाका सन्देश था जनवरी का और कांग्रेस के लिये एक योजना.

वह योजना आत्मा की आवाज थी, कांग्रेस के नये जीवन के लिये.

वह भविष्य वानी थी महात्मा की जबानी, कांग्रेस को आने वाले खतरे से बचाने के लिए और उसका मुस्तक़बिल कामयाब बनाने के लिये.

वह एक दीपक था हर सेवक के पास रहने का.

کانگریس کے نام

جلوری کا سندیش

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

جلوری ماس کا سمبندھ گاندھی جی کی ذات کے ساتھ خاص ہے ۔

جب جلوری کا ماس آتا ہے تو ہمیں مہاتما جی کی یاد دلاتا ہے ۔

اِسی مہینے میں مہاتما گاندھی نے آخری سندیش بھی دیا ہے اور اِسی میں بلیدان کا پد بھی لیا ہے ۔

اِسی تاریخ اور اِسی دن یعنی ۳۰ جلوری، شکروار کو اپنی موت سے چند گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے "آل اِنڈیا کانگریس کمیٹی" میں پیش ہونے کے لئے اپنا ایک سجھاؤ بھیجا تھا وہ سجھاؤ "لوک سیوک سنگھ" کے ودھان کا ایک خاکہ تھا ۔

وہ خاکہ سندیش تھا جلوری کا اور کانگریس کے لئے ایک یوجنا ۔

وہ یوجنا آتما کی آواز تھی، کانگریس کے نئے جیون کے لئے

وہ بھوشیہ بانی تھی مہاتما کی زبانی، کانگریس کو آنے والے خطرے سے بچانے کے لئے اور اس کا مستقبل کامیاب بنانے کے لئے.

وہ ایک دیپک تھا ہر سیوک کے پاس رہنے کا ۔

शूद्र के लिये धन जमा करना मना है क्योंकि धन जमा करने से शूद्र बेसिरा हो जाता है और ब्राह्मण जैसे ऊँचे वर्ण के लोगो को वह अपने अधीन कर लेता हैं.

अब मैं शूद्रों की रोजी के साधन तुम्हे बतलाता हूँ. तीनो वर्णों के पुरुषो को चाहिये कि वह शूद्र को पाले पोसें, सेवक शूद्र को पुराना छाता, बल्कि कपड़ा, जूता, पखा वग़ैरा देवें. जो कपड़े ख़ुद पहनते पहनते फट गये हो, वह शूद्र सेवक को दे देने चाहियें

चाहे कैसी भी आफ़त आवे, शूद्र को अपने स्वामी का त्याग कभी नही करना चाहिये. शूद्र भले ही धनवान हो जाय लेकिन वह धन उस शूद्र का नही हो सकता, क्योंकि उसके धन का मालिक तो उसका मालिक है.

شودر کیلئے دھن جمع کرنا منع ہے . کیوں کہ دھن جمع کرنے سے شودر بے سرا ہو جاتا ہے اور براہمن جیسے اونچے ورن کے لوگوں کو وہ اپنے آدھین کر لیتا ہے .

اب میں شودروں کی روزی کے سادھن تمہے بتلاتا ہوں تینوں ورنوں کے پرشوں کو چاہئے کہ وہ شودر کو پالیں پوسیں' سیوک شودر کو پرانا چھاتا' بلکہ کپڑا' جوتا' پنکھا وغیرہ دیویں جو کپڑے خود پہنتے پہنتے پھٹ گئے ہوں وہ شودر سیوک کو دے دینے چاہئیں .

چاہے کیسی بھی آفت آوے' شودر کو اپنے سوامی کا تیاگ کبھی نہیں کرنا چاہئے . شودر بھلے ہی دھن وان ہو جائے لیکن وہ دھن اُس شودر کا نہیں ہوسکتا کیونکہ اُس کے دھن کا مالک تو اُس کا مالک ہے .

बढ़ाई करने को तैयार रहें, क्योंकि यही तो राजधर्म की जड़ है." यह असूल नाज़ीवाद से भी बढ़ा चढ़ा है.

जातपात और ग़ुलाम.

वर्णाश्रम धर्म की मर्यादा हिन्दू संस्कृति का ऐसा आधार है, जिसका राग सभी जगह अलापा गया है. इसमे शूद्रो का स्थान देखिये. सेवा ही उनका धर्म है, ब्राह्मण की सेवा सबसे बड़ा धर्म और उपहार है—मनुस्मृति दसवां अध्याय

"शूद्र को जूठा खाना, फटे पुराने कपड़े, अन्न की फटकन वग़ैरा और बची खुची चीजें देनी चाहिये."

"धन जमा कर सकने वाला शूद्र भी धन जमा न करे. क्योंकि धनी शूद्र ब्राह्मणो को पीड़ा देता है."

ग़ौर करने की बात है. आज दिन मज़दूरो का बड़ा आन्दोलन चल रहा है. इतना कि वह महज़ समाजी और राजकाजी आज़ादी ही नहीं चाहते, माली आज़ादी भी चाहते है. पर यहॉ तो सेवा को छोड़ सभी आज़ादी मना है. तुलसी दास जी कहते है :—

"ढोल, गंवार, शुद्र, पशु, नारी
ये सब ताड़न के अधिकारी"

शूद्र और नारी पिटने के हक़दार हैं. इसी तरह की व्यवस्था महाभारत मे भी मिलती है. शान्ति पर्व मे भीष्म धर्मराज से कहते है:—

"हे धर्मराज...प्रजापति ने शुद्रो को तीनो वर्णों का यानी ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का दास बनाया है. इसलिये शूद्रो को तीनो वर्णों की सेवा करनी चाहिये. क्योंकि ऐसा करने से ही शूद्र परम सुखी होता है.

چڑهائی کرنے کو تیار رهیں، کیونکه یهی تو راج دهرم کی جڑ هے." یه اصول نازی واد سے بهی بڑها چڑها هے.

جات پات اور غلامی.

ورناشرم دهرم کی مریادا هندو سنسکرتی کا ایسا آدهار هے، جس کا راگ سبهی جگه آلاپا گیا هے. اسمیں شودروں کا استهان دیکهئے. سیوا هی اُن کا دهرم هے، براهمن کی سیوا سب سے بڑا دهرم اور اُپهار هے.' —منوسمرتی دسواں ادهیائے.

'' شودر، کو جوٹها کهانا، پهٹے پرانے کپڑے، اَن کی پهٹکن وغیره اور بچی کهچی چیزیں دینی چاهئیں.''

'' دهن جمع کرسکنے والا شودر بهی دهن جمع نه کرے کیونکه دهنی شودر براهمنوں کو پیڑا دیتا هے.''

غور کرنے کی بات هے. آج دن مزدوروں کا بڑا آندولن چل رها هے. اتنا که وه محض سماجی اور راج کاجی آزادی هی نهیں چاهتے، مالی آزادی بهی چاهتے هیں. پر یهاں تو سیوا کو چهوڑ سبهی آزادی منع هے. تلسی داس جی کهتے هیں:—

'' ڈهول، گنوار، شودر، پشو، ناری
یه سب تاڑن کے ادهیکاری ''

شودر اور ناری پٹنے کے حقدار هیں. اسی طرح کی ویوستها مهابهارت میں بهی ملتی هے. شانتی پرو میں بهیشم دهرم راج سے کهتے هیں:—

'' هے دهرم راج .. .پرجا پتی نے شودروں کو تینوں ورنوں کا یعنی براهمن، چهتری اور ویشیه کا داس بنایا هے. اس لئے شودروں کو تینوں ورنوں کی سیوا کرنی چاهئے کیونکه ایسا کرنے سے هی شودر پرم سکهی هوتا هے.

अर्थ, और काम को जानने वाले राजा को उस दण्ड का देने वाला कहा है.”—मनुस्मृति अध्याय सात

अगर ऐसा राजा न मिले, या अगर राजा सचाई और ईमानदारी से काम न करे, तो उसे हटाने के लिये बग़ावत या क्रांति की जरूरत नहीं. राजा अपने आप नष्ट हो जायगा. मनुस्मृति के इस सारे सातवें अध्याय में शासन के बारे मे कुछ विषयों के अलावा, जिनमें एक सबल राजा की तसवीर खींची गई है, कही भी यह नहीं बताया गया है कि अगर राजामे यह सब खूबियाँ न हो और वह ठीक राज न करता हो तो उसके साथ प्रजा का क्या फर्ज़ है.

और यह बात महज़ मनुस्मृति ही मे नही है, और किताबो मे भी इसी तरह की पुरानी दकियानूसी बाते भरी हैं. महाभारत मे शान्ति पर्व के एक सौ तैंतीसवें अध्याय मे भीष्म ने युधिष्ठिर को नसीहत देते हुए कहा है—‘हे कुन्ती के पुत्र’ राजा को चाहिये कि वह अपने राज से या शत्रु के राज से धन लेकर अपने खज़ाने को भरे. ऐसा करने से ही राजा धर्माचरण कर सकता है और राज की जड मज़बूत कर सकता है....अगर राजा चाहे कि वह धर्म और न्याय से धन जमा करे, तो यह नही हो सकता.

इसी पर्व के ५६वें अध्याय में लिखा है :

“राजा को अपने नौकरो से हँसी दिल्लगी कभी नहीं करनी चाहिये ..” समाजवादी असूल समाजी बराबरी में विश्वास करता है. पर बृहस्पति महाराज कहते हैं—“राजाओं को चाहिये कि

ارتهه اور کام کو جانلے والے راجه کو اُس دنڈ کا دینے والا کہا هے"۔— ملوسمرتی ادهیائے سات

اگر ایسا راجه نه ملے، یا اگر راجه سچائي اور ایمانداری سے کام نه کرے، تو اُسے هٹانے کے لئے بغاوت یا کرانتی کی ضرورت نهیں ۔ راجه اپنے آپ نشٹ هو جائیگا ۔ ملو سمرتی کے اِس سارے ساتویں ادهیائے میں شاسن کے بارے میں کچھ وشیوں کے علاوہ، جنمیں ایک سبل راجه کی تصویر کهینچي گئی هے، کهیں بهی یه نهیں بتایا گیا هے که اگر راجه میں یه سب خوبیاں نه هوں اور وہ ٹهیک راج نه کرتا هو تو اُس کے ساتھ پرجا کا کیا فرض هے

اور یه بات محض ملو سمرتي هي میں نهیں هے، اور کتابوں میں بهی اِسی طرح کي پرانی دقیانوسي باتیں بهری هیں ۔ مهابهارت میں شانتی پرو کے ایک سو تیلتیسویں ادهیائے میں بهیشم نے یدهشٹهر کو نصیحت دیتے هوئے کہا هے—"هے کنتی کے پتر! راجه کو چاهئے که وہ اپنے راج سے یا شترو کے راج سے دهن لیکر اپنے خزانے کو بهرے ۔ ایسا کرنے سے هی راجه دهرماچرن کر سکتا هے اور راج کی جڑ مضبوط کر سکتا هے ... اگر راجه چاهے که وہ دهرم اور نیاے سے دهن جمع کرے، تو یه نهیں هوسکتا ۔

اِسی پرو کے ٥٦ویں ادهیائے میں لکها هے:

"راجه کو اپنے نوکروں سے هنسی دلگی کبهی نهیں کرنی چاهئے..." سماج وادی اصول سماجی برابری میں وشواس کرتا هے ۔ برهسپتی مهاراج کہتے هیں—"راجاؤں کو چاهئے که

और मनुस्मृति के उसी अध्याय में लिखा है—

"यह राजा देखने वालो की आँखो और उनके मन को सूरज की तरह तपाता है. पृथ्वी मे इस राजा को सामने होकर कोई देख नही सकता."

बालक राजा को भी आदमी समझ कर उससे बेपरवाही नहीं करना चाहिये. क्योंकि वह एक बड़ा देवता मनुष्य के रूप मे होता है. और इस कभी भूल न करने वाले राजा का ख़ास हथियार दण्ड यानी सजा है.

"दण्ड ही सारी रिआया को क़ाबू मे रखता है. दण्ड ही हिफ़ाज़त करता है और दण्ड ही सबके सो जाने पर जगाता है और दण्ड ही को पंडितो ने धर्म कहा है."

"दण्ड से जीता हुआ सारा संसार अच्छे रास्ते पर कायम रहता है, क्योंकि आदतन सच्चा आदमी मुश्किल से मिलता है और दण्ड से ही सबको सब चीजें भोगने को मिलती हैं." मनुस्मृति अध्याय सात.

यह ठीक है कि राजा की इस तानाशाही पर भी लगाम है, पर लगाम के लगाते वक़्त इस बात का ख़याल नही किया गया कि ऐसा राजा कैसे मिल सकता है, जिसमे नीचे दिये हुए गुण हो, न यह बताया गया है कि ख़ुद ब्रह्मा जी ने राजाओं मे ऐसे गुण क्यो नहीं पैदा किये ?

"सच्चे, शास्त्र के मुताबिक़ काम करने वाले, होशियार, धर्म,

اور منو سمرتی کے اُسی ادھیائے میں لکھا ھے—

"یہ راجہ دیکھنے والوں کی آنکھوں اور اُن کے من کو سورج کی طرح تپاتا ھے پرتھوی میں اِس راجہ کو سامنے ھو کر کوئی دیکھ نہیں سکتا".

بالک راجہ کو بھی آدمی سمجھ کر اُس سے بے پرواھی نہیں کرنا چاھئے. کیونکہ وہ ایک بڑا دیوتا منشیہ کے روپ میں ھوتا ھے اور اِس کبھی بھول نہ کرنے والے راجہ کا خاص ھتھیار دنڈ یعنی سزا ھے.

"دنڈ ھی ساری رعایا کو قابو میں رکھتا ھے، دنڈ ھی حفاظت کرتا ھے اور دنڈ ھی سب کے سو جانے پر جگاتا ھے اور دنڈ ھی کو پنڈتوں نے دھرم کہا ھے."

"دنڈ سے جیتا ھوا سارا سنسار اچھے راستے پر قائم رھتا ھے، کیونکہ عادتاً سچا آدمی مشکل سے ملتا ھے، اور دنڈ سے ھی سب کو سب چیزیں بھوگنے کو ملتی ھیں" —منو سمرتی ادھیائے سات.

یہ ٹھیک ھے کہ راجہ کی اِس تانا شاھی پر بھی لگام ھے، پر لگام کے لگاتے وقت اِس بات کا خیال نہیں کیا گیا کہ ایسا راجہ کیسے مل سکتا ھے، جس میں نیچے دیئے ھوئے گن ھوں، نہ یہ بتایا گیا ھے کہ خود برھما جی نے راجاؤں میں ایسے گن کیوں نہیں پیدا کئے ؟

"سچے شاستر کے مطابق کام کرنے والے، ھوشیار، دھرم،

"औरत को चाहिये कि वह फूल, मूल और फलों को खाकर अपने शरीर को दुबला कर दे, लेकिन पति के मरने पर दूसरे पुरुष का नाम भी न ले." और देखिये—

" 'नेक औरत को बदचलन, किसी दूसरी औरत से मुहब्बत करने वाले, इल्म वग़ैरह से ख़ाली पति की भी देवता की तरह से पूजा करनी चाहिये."

स्त्री को आज़ाद देखना हमारे आचार्यों को मंज़ूर नहीं था—मनु महाराज कहते हैं :—

"बालिका, जवान स्त्री, बुढ़िया किसी उमर की भी औरत को किसी हालत मे घर के किसी काम मे आज़ादी का हक नहीं है. क्योंकि उनके स्वभाव में ही बड़ी बुराइयाँ हैं."

"शराब पीना, बुरों की संगत में रहना, पति से वियोग, चारो ओर घूमना, बे समय सोना और दूसरो के घर रहना यह औरतों के छै दोष है."

राज का रूप

बादशाही या एक तंत्र के समर्थन में हिन्दू धर्म शास्त्र किसी भी धर्म शास्त्र से पीछे नहीं हैं. उनमें यह साफ़ कहा गया है कि राजा के सब अधिकार ईश्वर के दिये होते हैं.

"राजा न होने के कारन सभी को डरा हुआ देख कर संसार की हिफ़ाज़त के लिये ब्रह्मा जी ने राजा को रचा है."—मनुस्मृति अध्याय सात.

" عورت کو چاہئے کہ وہ پھول، مول اور پھلوں کو کھاکر اپنے شریر کو دبلا کردے، لیکن پتی کے مرنے پر دوسرے پرش کا نام بھی نہ لے"۔ اور دیکھئے —

"نیک عورت کو بد چلن کسی دوسری عورت سے محبت کرنے والے، علم وغیرہ سے خالی پتی کی بھی دیوتا کیطرح سے پوجا کرنی چاہئے۔"

استری کو آزاد دیکھنا ہمارے آچاریوں کو منظور نہیں تھا منو مہاراج کہتے ہیں :—

"بالکا، جوان استری، بڑھیا کسی عمر کی بھی عورت کو کسی حالت میں گھر کے کسی کام میں آزادی کا حق نہیں ہے کیونکہ اُن کے سوبھاؤ میں ہی بڑی برائیاں ہیں۔"

"شراب پینا، بروں کی سنگت میں رہنا پتی سے ویوگ، چاروں اور گھومنا، بے سمے سونا اور دوسروں کے گھر رہنا، یہ عورتوں کے چھ دوش ہیں۔"

راج کا روپ۔

بادشاہی یا ایک تنتر کے سمرتھن میں ہندو دھرم شاستر کسی بھی دھرم شاستر سے پیچھے نہیں ہیں۔ اُن میں یہ صاف کہا گیا ہے کہ راجہ کے سب ادھیکار ایشور کے دیئے ہوتے ہیں۔

" راجہ نہ ہونے کے کارن سبھی کو ڈرا ہوا دیکھ کر سنسار کی حفاظت کے لئے برھما جی نے راجہ کو رچا ہے"—منو سمرتی ادھیائے سات۔

जन्म में विधवा होने का जो डर है ! और क्या जानकी जी ने ऐसा आदर्श नहीं स्थापित किया.

जद्दपि गृह सेवक सेवकानी
विपुल सकल सेवा बिधि खानी

और क्या इतनी पतिव्रता स्त्री को भी राम राज के अन्दर जिसमे—

नह दरिद्र कोउ दुखी न दीना
नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना
....
नर अरु नारि चतुर सब गूनी

सभी आदर्श बातें मौजूद थी, यह हक़ नही था कि अपने चरित्र की सफ़ाई देकर भी, उसी राज के एक 'चतुर' 'नर' के व्यंग वचन के सामने राज महल में रह सके ? सीता का दूसरा बनवास, जिस श्रुति पथ धर्म की रक्षा के लिये हुआ, बहुत से नाम धारी हिन्दू आज उसी को हिन्दू या भारती संस्कृति मान रहे हैं और उसी के लिये जान दे रहे हैं. इसके खिलाफ़ स्त्रियो का आन्दोलन हमारे देश मे और दुनिया में एक ऐसी आदर्श संस्कृति के लिये चल रहा है, जिसमे झूठे इलज़ामो की सफ़ाई दी जा सके और अगर सफ़ाई देने पर भी पति रखने के लिये तैयार न हो, तो तलाक़ देने का अधिकार तो है ही. यह है न्याय, सच्ची आज़ादी और बराबरी.

अब स्त्रियो के बारे मे मनुस्मृति की व्यवस्था को देखिये. उसमे लिखा है :—

جنم میں ودھوا ہونے کا جو ڈر ہے ! اور کیا جانکی جی نے ایسا آدرش نہیں استھاپت کیا .

جدیپی گرہ سیوک سیو کانی
وپل سکل سیوا بدھی کھانی

اور کیا اتنی پتی برتا اِستری کو بھی رام راج کے اندر جس میں

نہیں دردر کوؤ دکھی نہ دینا
نہیں کوؤ ابدھ نہ لچھن ھینا
.. . .
نر اور ناری چتر سب گونی

سبھی آدرش باتیں موجود تھیں، یہ حق نہیں تھا کہ اپنے چرتّر کی صفائی دیکر بھی، اُس راج کے ایک 'چتر' 'نر' کے وینگ بچن کے سامنے راج محل میں رہ سکے ؟ سیتا کا دوسرا بن باس، جس شرتی پتھ دھرم کی رکشا کیلئے ہوا، بہت سے نام دھاری ھندو آج اُسی کو ھندو یا بھارتی سنسکرتی مان رہے ھیں اور اُسی کیلئے جان دے رہے ھیں. اس کے خلاف استریوں کا آندولن ھمارے دیش میں اور دنیا میں ایک ایسی آدرش سنسکرتی کیلئے چل رہا ہے، جسمیں جھوٹے الزاموں کی صفائی دی جا سکے اور اگر صفائی دینے پر بھی پتی رکھنے کے لئے تیار نہ ہو تو طلاق دینے کا ادھیکار تو ہے ہی . یہ ہے نیائے، سچی آزادی اور برابری .

اب اِستریوں کے بارے میں منو سمرتی کی ویوستھا کو دیکھئے . اُس میں لکھا ہے —

पर जड़ और क्रोधी पति के साथ भी नारी क्यों प्रेम दिखलाने के लिये मजबूर की जाय ? इसलिये नही कि वह मनुष्य है, इसलिये कि वह उसका पति है, क्योंकि :—

बिनु स्रम नारि परम गति लहई, पतिव्रत-धरम छाड़ि छल गहई.
पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई, विधवा होई पाई तरुनाई.

नारी केवल पति सेवा से जीवन की सब मुरादे पूरी कर सकती है, उसे दूसरी किसी बात की जरूरत नही पति आलसी हो तो स्त्री उसे कमा कर खिलावे, पति जुआरी हो तो स्त्री उस के लिये अपने जेवर बेच दे, पति नशेबाज हो तो स्त्री उसके लिये जहाँ तहाँ मे कर्ज लेकर भी उसकी आवश्यकता को पूरा करे. वह चोरी करे, उसे बुरा न कहे. वह वेश्या के यहाँ जाय, सब माफ़ ! दुनिया का बुरे से बुरा कर्म, पुरुष के लिये माफ़. स्त्री उसकी निन्दा नही कर सकती शायद उपदेश भी नही दे सकती, बहुत से बहुत सच्ची मुहब्बत से अपने पति की तबीयत और आदते बदलने की कोशिश कर सकती है ! फिर यहाँ तलाक़ की क्या गुन्जाइश. यहाँ किसी भी स्वतन्त्रता की क्या गुन्जाइश. फिर तो इस आदर्श के सामने स्त्रियों के अधिकारो की सारी तहरीक बेकार. कहा जा सकता है. कि आदर्श हिन्दू संस्कृति के क़ायम होने पर ऐसे आवारा पुरुष नही रह जायँगे. अब तो स्त्रियाँ मानें कि

बिनु स्रम नारि परमगति लहई

की मुराद पूरी सकें ! इस पर भी अगर कोई पुरुष खराब निकल गया, तो भी सतीत्व की रक्षा तो होनी ही चाहिये, नहीं तो दूसरे

پر جڑ اور کرودھی پتی کے ساتھ بھی ناری کیوں پریم دکھلانے کے لئے مجبور کیجائے ؟ اِس لئے نہیں کہ وہ منشیہ ہے' اِس لئے کہ وہ اُس کا پتی ہے' کیونکہ :—

بن سرم نار پرم گتی لہئی پتی برت دھرم چھاڑی چھل گہئی
پتی پرتی کول جنم جہلہ جائی ودھوا ہوئی پائی تر و نائی

ناری کیول پتی سیوا سے جیون کی سب مرادیں پوری کرسکتی ہے' اُسے دوسری کسی بات کی ضرورت نہیں . پتی آلسی ہو تو استری اُسے کماکر کھلاوے' پتی جواری ہو تو اِستری اُس کے لئے اپنے زیور بیچ دے' پتی نشے باز ہو تو اِستری اُسکے لئے جہاں تہاں سے قرض لیکر بھی اُس کی آوشیکتا کو پورا کرے . وہ چوری کرے' اُسے برا نہ کہے . وہ ویشیا کے یہاں جائے ' سب معاف ! دنیا کا برا سے برا کرم پرش کیلئے معاف' استری اُس کی نندا نہیں کر سکتی شاید اُپدیش بھی نہیں دے سکتی بہت سے بہت سچی محبت سے اپنے پتی کی طبیعت اور عادتیں بدلنے کی کوشش کر سکتی ہے پھر یہاں طلاق کی کیا گنجائش یہاں کسی بھی سوتنترتا کی کیا گنجائش پھر تو اِس آدرش کے سامنے اِستریوں کے ادھیکاروں کی ساری تحریک بیکار کہا جا سکتا ہے کہ آدرش ہندو سنسکرتی کے قائم ہونے پر ایسے آوارہ پرش نہیں رہ جائیں گے اب تو اِستریاں مانیں کہ

بن سرم ناری پرم گت لہئی

کی مراد پوری کرسکیں ! اِس پر بھی اگر کوئی پرش خراب نکل گیا' تو بھی ستیتو کی رکشا تو ہونی ہی چاہئے' نہیں تودوسرے

और बातें दिखाना चाहते हैं.

<u>भारतीय संस्कृति मे स्त्रियो का दर्जा</u>

तुलसीकृत रामायन भारती संस्कृति का एक बड़ा आधार माना जाता है सभी जानते है कि रामायन में स्त्रियो का दर्जा क्या है श्री रामचन्द्र जी कहते है—

महावृष्टि चलि फूटि कियारी
जिमि स्वतंत्र होइ बिगड़हि नारी

स्त्रियां स्वतन्त्र होने पर इस तरह बिगड़ जाती है जिस तरह बहुत बारिश होने पर क्यारियॉ फूट निकलती हैं यह है मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी की शिक्षा! हमारे देश का राष्ट्री आन्दोलन समानता के आदर्श पर निर्भर रहा है, जिसमे स्त्रियो की समानता एक खास अहमियत रखती रही है. दुनिया भर की स्त्रियॉ पुरुषो के बराबर अधिकार के लिये लड़ती रही है. सारे संसार में तलाक़का अधिकार माना जाता है. इस देश मे भी स्त्रियो की पढ़ाई पर बहुत ज़ोर दिया जा रहा है. तालीम और आज़ादी का गहरा सम्बन्ध है. क्या कोई हिन्दू रामायनी शिक्षा का वह आदर्श मानना चाहेगा, जिसमे स्त्रियो की स्वतंत्रता का स्वप्न भी ग़लत माना गया है?

केवल स्वतन्त्रता की बात नही तुलसीकृत रामायन कहती है :—

वृद्ध रोगवस जड़ धन दीना. अंधबधिर क्रोधी अति दीना
ऐसेहु पति कर किय अपमाना, नारि पाव जमपुर दुख नाना.

यों तो अपमान किसी का भी करना, बुरा कहा जा सकता है.

اور باتیں دکھانا چاہتے ہیں ۔

<u>بھارتی سنسکرتی میں استریوں کا درجہ</u>

تلسی کرت رامائن بھارتی سنسکرتی کا ایک بڑا آدھار مانا جاتا ہے ۔ سبھی جانتے ہیں کہ رامائن میں استریوں کا درجہ کیا ہے ۔ شری رام چندر جی کہتے ہیں —

مہا برشٹی چلی پھوٹ کیاری
جیمی ستونتر ہوے بگرہی ناری

استریاں سوتنتر ہونے پر اِس طرح بگڑ جاتی ہیں جس طرح بہت بارش ہونے پر کیاریاں پھوٹ نکلتی ہیں ۔ یہ ہے مریادا پرشوتم شری رام چندر جی کی شکشا ! ہمارے دیش کا راشٹری آندولن سمانتا کے آدرش پر نربھر رہا ہے ، جس میں استریوں کی سمانتا ایک خاص اہمیت رکھتی رہی ہے ۔ دنیا بھر کی استریاں پرشوں کے برابر ادھیکار کے لئے لڑتی رہی ہیں ۔ سارے سنسار میں طلاق کا ادھیکار مانا جاتا ہے ۔ اِس دیش میں استریوں کی پڑھائی پر بہت زور دیا جا رہا ہے ۔ تعلیم اور آزادی کا گہرا سمبندھ ہے ۔ کیا کوئی ہندو رامائنی شکشا کا وہ آدرش ماننا چاہے گا ، جس میں استریوں کی سوتنترتا کا سوپن بھی غلط مانا گیا ہے ؟

کیول سوتنترتا کی بات نہیں ، تلسی کرت رامائن کہتی ہے :—

بردھ ، روگ بس ، جڑ ، دھن ہینا ۔ اندھ بدھر کرودھی آتی دینا
ایسیہو پتی کر کئے اپمانا ۔ ناری پاو جم پور دکھ نانا

یوں تو اپمان کسی کا بھی کرنا برا کہا جاسکتا ہے

मतलब है,आजाद भारती सरकार की स्थापना.अगर ब्रिटिश साम्राज शाही यहाँ न आती तो यहाँ की क़ौमी तहरीक की क्या शक्ल होती ? क्या उसके आने से पहिले मुल्क की तारीख ने भारत की मुखतलिफ़ जातियो का मेल मिलाप इस हद तक पहुंचा दिया था, जिसके सामने जुग़राफ़िया की चन्द दीवारे कोई अहमियत नही रखती थी ? क्या मरहठो, सिक्खो, मुग़लो, राजपूतो, निज़ाम आदि मे इतनी ताक़त थी कि अपनी अपनी रियासती चहार दीवारियो के भीतर योरप की तरह मुखतलिफ़ आज़ाद क़ौमे बना सकते ? यह सवाल आज कोई अर्थ नहीं रखता—भारत के एक राष्ट्र बनने मे अगर पहले कुछ सन्देह भी था, तो ब्रिटेश सरकार की डेढ़ सौ बरसो की गुलामी ने उसे तरह तरह से दूर कर दिया. हमारी कौमी तहरीक की ताकत ने साबित कर दिया कि आजाद हिन्द एक क़ौम होगा और इस क़ौमी इन्कलाब से क़ौमी तहज़ीब को रूप देने में भी मदद मिलेगी आज इस कौमी तहज़ीब, इस राष्ट्री कलचर के विकास का सुनहरा मौका है पर अफ़सोस कि मुल्क की दकियानूसी ताकतें झूटे नारो से तारीख की सारी कामयाबियो को बरबाद करके, भारती संस्कृति के नाम पर हिन्दू साम्प्रदायिक संस्कृति का नारा देती हैं वह यह भूल जाती हैं कि भारती संस्कृति जैसी कोई बनी बनाई चीज मौजूद नही है. दर असल उसे बनाना और बढ़ाना है, और बढ़ाना है एक नई सतह जमीन पर जहाँ उसे अन्तर राष्ट्रीय, सारे संसार की नई विश्वव्यापी यानी आलमगीर संस्कृति के रंग मे रंगना पड़ेगा. पिछले लेख में हिन्दू साम्प्रदायिक संस्कृति के खोखलेपन को दिखाया गया है.अब हम कुछ

१६

مطلب ہے ' آزاد بھارتی سرکار کی استھاپنا . اگر برٹش سامراج شاہی یہاں نہ آتی تو یہاں کی قومی تحریک کی کیا شکل ہوتی ؟ کیا اُس کے آنے سے پہلے ملک کی تاریخ نے بھارت کی مختلف جاتیوں کا میل ملاپ اِس حدتک پہونچا دیا تھا کہ جس کے سامنے جغرافیہ کی چند دیواریں کوئی اہمیت نہیں رکھتی تھیں ؟ کیا مرہٹوں' سکھوں' مغلوں' راجپوتوں' نظام آدی میں اتنی طاقت تھی کہ اپنی اپنی ریاستی چہاردیواریوں کے بھیتر یورپ کی طرح مختلف آزاد قومیں بنا سکتے ؟ یہ سوال آج کوئی ارتھ نہیں رکھتا—بھارت کے ایک راشٹر بننے میں اگر پہلے کچھ سندیہ بھی تھا تو برٹش سرکار کی ڈیڑھ سو برسوں کی غلامی نے اُسے طرح طرح سے دور کردیا . ہماری قومی تحریک کی طاقت نے ثابت کردیا کہ آزاد ہند ایک قوم ہوگا اور اِس قومی انقلاب سے قومی تہذیب کو روپ دینے میں بھی مدد ملے گی . آج اِس قومی تہذیب' اس راشٹری کلچر کے وکاس کا سنہرا موقع ہے . پر افسوس کہ ملک کی دقیانوسی طاقتیں جھوٹے نعروں سے تاریخ کی ساری کامیابیوں کو برباد کر کے بھارتی سنسکرتی کے نام پر ہندو سامپردائک سنسکرتی کا نعرہ دیتی ہیں وہ یہ بھول جاتی ہیں کہ بھارتی سنسکرتی جیسی کوئی بنی بنائی چیز موجود نہیں ہے . دراصل اُسے بنانا اور بڑھانا ہے ' اور بڑھانا ہے ایک نئی سطح زمین پر جہاں اُسے انتر راشٹری ' سارے سنسار کی نئی وشوویاپی یعنی عالمگیر سنسکرتی کے رنگ میں رنگنا پڑے گا . پچھلے لیکھ میں ہندو سامپردائک سنسکرتی کے کھوکھلے پن کو دکھایا گیا ہے . اب ہم کچھ

पिछले एक लेख मे मैंने यह दिखलाने की कोशिश की थी कि अगर आज हम इस बात की खोज करें कि भारती संस्कृति नाम की कोई चीज़ हमे पूरी तरह से बनी बनाई और सांचे मे ढली ढलाई मिल जाय तो हमारी यह कोशिश बेकार जायगी किसी भी मुल्क की मुल्की सस्कृति के बनने मे एक जमाना लगता है इस पर भी वह पूरी तरह उस व क्त तक नहीं बन पाती जब तक उस मुल्क के कौमी इन्कलाब ने, वहाॅ सनअत, कारीगरी और विज्ञान के इन्कलाब से मिल कर ऐसी सहूलियते नहीं पैदा कर दी, जो क़ौमी तहजीब और तमद्दुन के सपने को अमली जामा पहिना सके हिन्दुस्तान एक बड़ा मुल्क है, जिसे महाद्वीप कहा जा सकता है. यों भी यहाॅ दर्जनो जातियाॅ रही हैं, दर्जनो बाहर से आईं और सैकडों, हज़ारों बरसो तक यह मुल्क दर्जनो रियासतो और हकूमतो मे बंटा रहा यहाॅ तक कि जब योरप के कई मुल्को मे कौमी इन्कलाब पूरा हो गया था, और जहाॅ नहीं पूरा हुआ था, वहाँ उसकी शुरुआत हो गई थी, तब यहाँ का सच्चा कौमी इन्कलाब शुरू भी नहीं हो पाया था कि ब्रिटिश साम्राज शाही ने अपना सिक्का जमा कर उसके सारे रुख़ को पलट दिया. जहाॅ फ्रान्स या इंगलैन्ड के कौमी इन्कलाब अपने ही यहाँ की राज शक्तियो के खिलाफ कौमी एकता पैदा करना चाहते थे, वहाॅ ब्रिटिश साम्राज शाही ने सारे मुल्क पर अपना सिक्का जमा कर, इस मुल्क की एकता के सवाल को एक नई अहमियत दे दी. दूसरे लफ्ज़ो मे यहाॅ की कौमी तहरीक यह मान कर चली कि हिन्द एक मुल्क है, हिन्द एक क़ौम है, और कौमी इन्कलाब का

پچھلے ایک لیکھ میں میں نے یہ دکھلانے کی کوشش کی تھی کہ اگر آج ہم اِس بات کی کھوج کریں کہ بھارتی سنسکرتی نام کی کوئی چیز ہمیں پوری طرح سے بنی بنائی اور سانچے میں ڈھلی ڈھلائی مل جائے تو ہماری یہ کوشش بیکار جائےگی ۔ کسی بھی ملک کی ملکی سنسکرتی کے بننے میں ایک زمانہ لگتا ہے اس پر بھی وہ پوری طرح اُس وقت تک نہیں بن پاتی جب تک اُس ملک کے قومی انقلاب نے وہاں صنعت، کاریگری اور وگیان کے انقلاب سے ملکر اِیسی سہولیتیں نہیں پیدا کر دیں، جو قومی تہذیب اور تمدن کے سپنے کو عملی جامہ پہنا سکیں ہندستان ایک بڑا ملک ہے جسے مہادویپ کہا جا سکتا ہے ۔ یوں بھی یہاں درجنوں جاتیاں رہی ہیں، درجنوں باہر سے آئیں اور سیکڑوں، ہزاروں برسوں تک یہ ملک درجنوں ریاستوں اور حکومتوں میں بٹا رہا یہاں تک کہ جب یورپ کے کئی ملکوں میں قومی انقلاب پورا ہو گیا تھا، اور جہاں نہیں پورا ہوا تھا، وہاں اُس کی شروعات ہوگئی تھی، تب یہاں کا سچا قومی انقلاب شروع بھی نہیں ہو پایا تھا کہ برٹش سامراج شاہی نے اپنا سکہ جما کر اُس کے سارے رخ کو پلٹ دیا ۔ جہاں فرانس یا انگلینڈ کے قومی انقلاب اپنے یہاں کی راج شکتیوں کے خلاف قومی ایکتا پیدا کرنا چاہتے تھے، وہاں برٹش سامراج شاہی نے سارے ملک پر اپنا سکہ جما کر اِس ملک کی راشٹری ایکتا کے سوال کو ایک نئی اہمیت دے دی ۔ دوسرے لفظوں میں یہاں کی قومی تحریک یہ مان کر چلی کہ ہند ایک ملک ہے، ہند ایک قوم ہے اور قومی انقلاب کا

कलचर क्या है ?

(भाई ओंकार नाथ शास्त्री)

नोट :—

रामायन, महाभारत और मनुस्मृति तीनो दुनिया की अच्छी से अच्छी किताबो मे से हैं. विद्वान लेखक ने ऐतराज़ की जो बातें इन किताबो मे से नक़ल की हैं उनके अलावा इन तीनों किताबो से सैकड़ो ऐसी अच्छी बातें भी नक़ल की जा सकती हैं जो दुनिया के करोड़ो आदमियो को राह दिखाने वाली हैं. इसी तरह जिस तरह की बातें लेखक ने रामयण, महाभारत और मनुस्मृति से नक़ल की हैं उसी तरह की या लगभग उसी तरह की दुनिया के हर देश की पुरानी किताबो मे से नकल की जा सकती है. यह दोष उन किताबो का नहीं, यह सारा फेर समय का है. हम इस लेख को इसलिये 'नया हिन्द' में जगह दे रहे हैं कि किसी भी देश के जो लोग लकीर के फ़क़ीर बन कर अपने यहाँ की सब पुरानी बातो को अपनी सस्कृति के नाम पर फिर से जिन्दा करना चाहते हैं और बाहर की हर नई चीज़ का निरादर करके उससे बचना चाहते हैं वह केवल अपनी ही भलाई और तरक्की के रास्ते मे पहाड खड़ा करते हैं. अपनी अलग अलग स स्कृतियो की आवाजे गलत और घातक आवाजे हैं अपनी अपनी बुराइयों और कमज़ोरियो को समझकर उन्हे दूर करने की कोशिश करने मे और सब की अच्छी बातो को अपनाते हुए एक मानव स स्कृति यानी आलमगीर कलचर की तरफ़ बढ़ने मे ही हमारा और सारी दुनिया का भला है.—एडीटर

کلچر کیا ھے ؟

(بھائی اونکار ناتھ شاستری)

نوٹ :—

رامائن ' مہا بھارت اور منوسمرتی تینوں دنیا کی اچھی سے اچھی کتابوں میں سے ھیں ۔ ودوان لیکھک نے اعتراض کی جو باتیں اِن کتابوں میں سے نقل کی ھیں اُن کے علاوہ اِن تینوں کتابوں سے سیکڑوں ایسی اچھی باتیں بھی نقل کیجا سکتی ھیں جو دنیا کے کروڑوں آدمیوں کو راہ دکھانے والی ھیں ۔ اِسی طرح جس طرح کی باتیں لیکھک نے رامائن ' مہا بھارت اور منوسمرتی سے نقل کی ھیں اُسی طرح کی یا لگ بھگ اُسی طرح کی دنیا کے ہر دیش کی پرانی کتابوں میں سے نقل کیجاسکتی ھیں یہ دوش اُن کتابوں کا نہیں یہ سارا پھیر سمے کا ھے ھم اِس لیکھ کو اِس لئے ' نیا ھند میں جگہ دے رھے ھیں کہ کسی بھی دیش کے جو لوگ لیکر کے فقیر بن کر اپنے یہاں کی سب پرانی باتوں کو اپنی سنسکرتی کے نام پر پھر سے زندہ کرنا چاھتے ھیں اور باھر کی ھر نئی چیز کا نرادر کر کے اُس سے بچنا چاھتے ھیں وہ کیول اپنی ہی بھلائی اور ترقی کے راستے میں پہاڑ کھڑا کرتے ھیں ۔ اپنی الگ الگ سنسکرتیوں کی آوازیں غلط اور گھاتک آوازیں ھیں ۔ اپنی اپنی برائیوں اور کمزوریوں کو سمجھ کر اُنہیں دور کرنے کی کوشش کرنے میں اور سب کی اچھی باتوں کو اپناتے ھوئے ایک مانو سنسکرتی یعنی عالمگیر کلچر کی طرف بڑھنے میں ھی ھمارا اور ساری دنیا کا بھلا ھے —ایڈیٹر

मंजूर करेंगे या 'हिन्दुस्तानी' को या फिर 'हिन्दी' शब्द पर ही डटे रहेंगे.

ऊपर जो सवाल ऽऽ.ऽ गये वह सिर्फ इसलिये कि सूबों या प्रदेशों का नाम बदलने, भाषा का नाम बदलने या नदियों और पहाड़ों का नाम बदलने में अगर जल्द बाजी को । , गलत मनोवृत्तियों का सहारा लिया गया और सावधानी से काम न लिया गया तो फ्रॉस वाली हालत यहाँ भी पैदा हो सकती है. फ्रांस की घटना हमें होशियार करती है और सही कदम उठाने के लिये आगाह भी करती है. जोश में आकर हमें ऐसा काम नहीं करना चाहिये जिससे कि हम अपने देश के सुलझे लोगों और दुनिया वालों की निगाह में मूर्ख और रजत पसन्द (प्रतिगामी) साबित हों. देश के प्रान्तों का नाम अपनी प्रजातंत्रवादी परम्पराओं को ध्यान में रख कर ही हमें रखना है.

منظور کریں گے یا 'هندستانی' کو یا پھر هندی شبد پر هی ڈٹے رهیں گے.

اوپر جو سوال اُٹھائے گئے وہ صرف اس لئے کہ صوبوں یا پردیشوں کا نام بدلنے، بھاشا کا نام بدلنے یا ندیوں اور پہاڑوں کا نام بدلنے میں اگر جلد بازی کی گئی، غلط منوورتیوں کا سہارا لیا گیا اور ساودھانی سے کام نہ لیا گیا تو فرانس والی حالت یہاں بھی پیدا ہو سکتی ھے. فرانس کی گھٹنا ھمیں ھوشیار کرتی ھے اور سہی قدم اُٹھانے کے لئے آگاہ بھی کرتی ھے. جوش میں آکر ھمیں ایسا کام نہیں کرنا چاھئے جس سے کہ ھم اپنے دیش کے سلجھے لوگوں اور دنیا والوں کی نگاہ میں مورکھ اور رجعت پسند (پرتی گامی) ثابت ھوں. دیش کے پرانتوں کا نام اپنی پرجاتنتر وادی پرمپراؤں کو دھیان میں رکھکر ھی ھمیں رکھنا ھے.

करती है या यो कहे कि देश की भाषा का उसके नाम के साथ सीधा लगाव है. हमारे देश मे प्रदेशो और प्रान्तो का बॅटवारा अभी तक भाषा के आधार पर नही,राज काज की आसानियो को ही निगाह मे रख कर किया गया सभी जानते है कि यह आधार गलत है अंग्रेजो ने ऐसा जान बूझकर किया था. आज की हुकूमत भी अंग्रेजो के रास्ते पर ही चलना चाहती है वह भाषा के आधार पर प्रान्तो और प्रदेशो का बटवारा करने के लिये तैयार नही है यह बात खतरनाक है यह प्रगति का नहीं ठहराव का, रुकने का कदम है।

एक बात और हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी मान ली गई है. 'जय-हिन्द' हिन्द का कौमी नारा भी बन चुका है इसके अनुसार देश का नाम 'हिन्द' ही होना चाहिये मगर 'हिन्द' की जगह 'भारत' नाम की चर्चा जोरो के साथ सुनाई देने लगी है जय-हिन्द' की जगह 'जय-भारत' को कौमी नारा बनाने की कोशिश शुरू हो गई. अगर 'हिन्द' के जगह 'भारत' नाम मान लिया गया तो हिन्दी की जगह 'भारती' शब्द को भी मानना पड़ेगा ऐसा इसलिये कि राष्ट्रभाषा के नाम पर ही देश का नाम या देश के नाम पर ही राष्ट्र-भाषा का नाम रखा जा सकता है. क्या हिन्दी के समर्थक हिन्दी की जगह 'भारती' शब्द को मानने को राजी है अगर नही, तो फिर भारत नाम का क्या होगा ? और अगर हां तो फिर हिन्दुस्तानी शब्द ने ही क्या बिगाड़ा था ? हिन्दी शब्द पर ही ना इतने दिनो तक इतने झगड़े हुए हैं इस हालत मे हिन्दी वाले भाई क्या करेगे. वह 'भारती' को

کرتی ھے یا یوں کہیں کہ دیش کی بھاشا کا اُس کے نام کے ساتھ سیدھا لگاؤ ھے۔ ھمارے دیش میں پردیشوں اور پرانتوں کا بٹوارہ ابھی تک بھاشا کے آدھار پر نہیں ' راج کاج کی آسانیوں کو ھی نگاہ میں رکھ کر کیا گیا۔ سبھی جانتے ھیں کہ یہ آدھار غلط ھے۔ انگریزوں نے ایسا جان بوجھ کر کیا تھا۔ آج کی حکومت بھی انگریزوں کے راستے پر ھی چلنا چاھتی ھے۔ وہ بھاشا کے آدھار پر پرانتوں اور پردیشوں کا بٹوارہ کرنے کے لئے تیار نہیں ھے۔ یہ بات خطرناک ھے یہ پرگتی کا نہیں ' ٹھہراؤ کا ' رکنے کا قدم ھے۔

ایک بات اور ھمارے دیش کی راشٹر بھاشا ھندی مان لی گئی ھے۔ 'جے ھند' ھند کا قومی نعرہ بھی بن چکا ھے۔ اِس کے انوسار دیش کا نام 'ھند' ھی ھونا چاھئے مگر 'ھند' کی جگہ 'بھارت' نام کی چرچا زوروں کے ساتھ سنائی دینے لگی ھے 'جے ھند' کی جگہ 'جے بھارت' کو قومی نعرہ بنانے کی کوشش شروع ھوگئی اگر 'ھند' کی جگہ 'بھارت' نام مان لیا گیا تو پھر 'ھندی' کی جگہ 'بھارتی' شبد کو بھی ماننا پڑیگا ایسا اِس لئے کہ راشٹر بھاشا کے نام پر ھی دیش کا نام یا دیش کے نام پر ھی راشٹر بھاشا کا نام رکھا جاسکتا ھے کیا ھندی کے سمرتھک ھندی کی جگہ 'بھارتی' شبد کو ماننے کو راضی ھیں۔ اگر نہیں ' تو بھارت نام کا کیا ھوگا؟ اور' اگر ھاں تو پھر ھندستانی ' شبد نے کیا بگاڑا تھا؟ ھندی شبد پر ھی تو اِتنے دنوں تک اِتنے جھگڑے ھوئے ھیں۔ اِس حالت میں ھندی والے بھائی کیا کریں گے۔ وہ 'بھارتی' کو

चाहते हैं. अगर दोनों ने यह नाम रख लिया तब क्या होगा ? इस से तो ग़लतफ़हमी फैलेगी और तरह-तरह की दिक्कतें पैदा होगी. पूरबी पजाब कहने से ऐसा लगता है कि पंजाब का जो हिस्सा कट कर पाकिस्तान मे चला गया है अभी उससे कुछ ,लगाव बाकी है 'पूरबी' शब्द हटा कर इस लगाव को ख़त्म करना ही लोगो का मंशा मालूम होता है यह स्वाभाविक है इसलिये इस प्रदेश का नाम भी बदलना होगा. आन्ध्र के अलग होने की बात करीब करीब पक्की हो चुकी है मद्रास सूबे मे तामिल, 'तेलगू, मलयालम और कन्नड भाषा बोलने वाले लोग रहते है इन सबका नाम अलग-अलग रखना ही होगा. इसी तरह निज़ाम के मातहत जो तरह-तरह की भाषा वाले प्रदेश है वह सब एक न एक दिन ज़रूर अलग हो जायेंगे कर्नाटक का मसला सामने आ भी गया है महाराष्ट्र और गुजरात वालो के बीच इस बात पर तना तनी है कि बम्बई का क्या हो इसके फैसले को भी ज्यादा दिनो तक टाला नही जा सकता पच्छिमी बगाल का मसला भी सामने है हॉला कि पच्छिमी बगाल को कूच बिहार मिल गया है मगर उसके कई बड़े-बड़े मसले है जिनको तय करना ही होगा. उस सूबे का नाम क्या हो ? यह मसला भी ग़ौर तलब है.

"नाम मे क्या रखा है ?" कह कर नाम रखने के सवाल को आसानी के साथ टाला नहीं जा सकता. ज्यो-ज्यो नये प्रदेश भाषा के आधार पर बनते जायेंगे त्यो-त्यो उनके नामो का मसला भी सामने आता जायेगा सवाल यह है इन नये नामो का आधार क्या हो ? दुनिया भर में किसी भी देश की या प्रान्त की भाषा ही उसका नाम निश्चित

چاهتے هیں اگر دونوں نے یہ نام رکھ لیا تب کیا هوگا ؟ اس سے تو غلط فہمي پھیلے گی اور طرح طرح کی دقتیں پیدا هونگي پوربی پنجاب کہنے سے ایسا لگتا هے کہ پنجاب کا جو حصہ کٹ کر پاکستان میں چلا گیا هے ابھي اُس سے کچھ لگاؤ باقی هے ' پوربی ' شبد هٹا کر اس لگاؤ کو ختم کرنا هي لوگوں کا منشا معلوم هوتا هے . یہ سوابھاوک هے . اس لئے اس پردیش کا نام بھی بدلنا هوگا. آندھر کے الگ هونے کی بات قریب قریب پکی هو چکی هے . مدراس صوبے میں تامل ' تیلگو' ملیالم اور کنڑ بھاشا بولنے والے لوگ رهتے هیں ان سب کا نام الگ الگ رکھنا هی هوگا اس طرح نظام کے ماتحت جو طرح طرح کي بھاشا والے پردیش هیں وہ سب ایک نہ ایک دن ضرور الگ هوجائیں گے. کرناٹک کا مسئلہ سامنے آ بھی گیا هے مہاراشٹر اور گجرات والوں کے بیچ اس بات پر تنا تنی هے کہ بمبئي کا کیا هو اس کے فیصلے کو بھی زیادہ دنوں تک ٹالا نہیں جا سکتا پچھمی بنگال کا مسئلہ بھی سامنے هے . حالانکہ پچھمی بنگال کو کوچ بہار مل گیا هے. مگر اس کے کئی بڑے بڑے مسئلے هیں جن کو طے کرنا هی هوگا. اس صوبہ کا نام کیا هو ؟ یہ مسئلہ بھی غور طلب هے .

" نام میں کیا رکھا هے ؟ " کہکر نام رکھنے کے سوال کو آساني کے ساتھ ٹالا نہیں جاسکتا جیوں جیوں نئے پردیش بھاشا کے آدھار پر بنتے جائیں گے تیوں تیوں اُن کے ناموں کا مسئلہ بھي سامنے آتا جائیگا. سوال یہ هے کہ اِن نئے ناموں کا آدھار کیا هو ؟ دنیا بھر میں کسي بھي دیش کي یا پرانت کی بھاشا هی اُس کا نام نشچت

पर पानी फेर कर फिर पीछे चले जाने की कोशिश थी. 'आर्यावर्त' नाम रख कर पिछले एक हजार साल की कलचरी एकता—जिस का सबसे खूबसूरत और शानदार नमूना ताज महल है—की परम्परा को खत्म कर देना पड़ता ब्रज-कोशल नाम 'आर्यावर्त' से ज्यादा अच्छा था. इसमे ब्रजभाषा बोलने वाली जनता और अवधी बोलने वाली जनता का विशेष स्थान माना गया था धर्म की और जाति की कट्टरता से बाहर निकल कर भाषा के आधार पर चुना गया यह नाम सचमुच हर तरह से आर्यावर्त से अच्छा था मगर इस नाम मे एक खामी थी. इसमे भोजपुरी, बैसवाडी, बघेलखण्डी, बुन्देलखण्डी, काशिका आदि बोलियो के बोलने वालो के लिए स्थान न था. ब्रज और कोशल कह देने के बाद दूसरी बोलियो वालो के लिये गुंजायश ही कहा थी ? दूसरे जितने भी नाम आये थे उन सबमे ब्रज-कोशल सब से अच्छा होने पर भी इस खामी के कारन मही न होता, तो फिर हमारे सूबे का नाम क्या होता ? हमे खुशी है अब 'उत्तर प्रदेश' नाम रख कर उन झगडो को मिटा दिया गया है जो इस नाम के सवाल को लेकर लोगो के दिलो और दिमागो मे पैदा हो रहे थे. आर्यावर्त नाम रखने वालो को जेहनियत को तो इससे ठेस जरूर पहुंची होगी मगर जो लोग हिन्दुस्तान को केवल आर्यो या हिन्दुओ का देश न मान कर सभी जातियो का देश मानते है उनको इस नाम से सन्तोष ही होगा.

पूरबी पंजाब का नाम पजाब रखने की भी सूचना अखबारों मे निकली है. पाकिस्तान वाले पच्छिमी पजाब को भी पंजाब कहना

پر پانی پھیر کر پھر پیچھے چلے جانے کی کوشش تھی 'آریہ ورت' نام رکھکر پچھلے ایک ہزار سال کی کلچری ایکتا—جس کا سب سے خوبصورت اور شاندار نمونہ تاج محل ہے—کی پرمپرا کو ختم کردینا پڑتا. برج کوشل نام 'آریہ ورت' سے زیادہ اچھا تھا. اس میں برج بھاشا بولنے والی جنتا اور اودھی بولنے والی جنتا کا وشیش استھان مانا گیا تھا. دھرم کی اور جاتی کی کٹرتا سے باہر نکل کر بھاشا کے آدھار پر چنا گیا یہ نام سچ مچ ہر طرح سے آریہ ورت سے اچھا تھا. مگر اس نام میں ایک خامی تھی اس میں بھوج پوری بیسواڑی، بگھیل کھنڈی، بندیلکھنڈی، کاشیکا آدی بولیوں کے بولنے والوں کے لئے استھان نہ تھا برج کوشل کہہ دینے کے بعد دوسری بولیوں والوں کے لئے گنجائش ہی کہاں تھی؟ دوسرے جتنے بھی نام آئے تھے اُن سب میں برج کوشل سب سے اچھا ہونے پر بھی اس خامی کے کارن سہی نہ ہوتا تو پھر ہمارے صوبے کا نام کیا ہوتا؟ ہمیں خوشی ہے اب 'اُتّر پردیش' نام رکھکر اُن جھگڑوں کو مٹا دیا گیا ہے جو اس نام کے سوال کو لیکر لوگوں کے دلوں اور دماغوں میں پیدا ہو رہے تھے آریہ ورت نام رکھنے والوں کی ذہنیت کو تو اس سے ٹھیس ضرور پہنچی ہوگی' مگر جو لوگ ہندستان کو کیول آریوں یا ہندوؤں کا دیش نہ مان کر سبھی جاتیوں کا دیش مانتے ہیں اُن کو اِس نام سے سنتوش ہی ہوگا

پوربی پنجاب کا نام پنجاب رکھنے کی بھی سوچنا اخباروں میں نکلی ہے. پاکستان والے پچھمی پنجاب کو بھی پنجاب کہنا

उत्तराखंड भी कहा जाता है. इतना ही नहीं, विन्ध्याचल पहाड़ियों की जो करधनी-सी देश को कमर में बन गई है उसके उत्तरी या ऊपरी हिस्से को, पूरे के पूरे को, उत्तराखंड कहा गया है इसलिये, अगर उस परम्परा को माना जाय और उत्तराखंड का बदला हुआ रूप उत्तर प्रदेश को मान लिया जाय तो बात बनती नहीं. संयुक्त प्रान्त (सूबजात मुत्तहिदा) को उत्तर प्रदेश फिर क्यों कहा गया और यह कहाँ तक सही हुआ ?

जैसा कि सभी जानते है पिछले दिनों से स्थानों का नाम बदलने की कोशिश जारी है. कानपूर को कर्ण पुर (महा भारत के कर्ण के नाम पर) और लखनऊ को लक्ष्मण पुर (रामायण के लक्ष्मण के नाम पर) बनाने की कोशिश की गई थी मेरठ सम्मेलन के समय मेरठ को मयराष्ट्र (महाभारत वाले 'मयराष्ट्र' के आधार पर) बनाने की भी सख्त कोशिश हुई थी इसी तरह, इन्हीं रुचियों और रुजहानों का सहारा लेकर सयुक्त प्रान्त का नाम 'आर्यावर्त' रखने की कोशिश की गई थी 'आर्यावर्त' नाम भी बहुत पुराना है और हमारे पुराने साहित्य में बार बार आता है. ब्रज-कोशल नाम भी सामने आया था. 'आर्यावर्त' नाम आज के ज़माने में इस क्षेत्र के लिये ग़लत था. पिछले आर्यों के या हिन्दुओं के ज़माने में विन्ध्या के उत्तरी हिस्से को या जहाँ तक आर्यों का साम्राज फैल गया था उस सारे क्षेत्र को आर्यावर्त पुकारना समझ में आता है. मगर आज के ज़माने में जब कि गंगा का पानी इन हज़ारों बरसों में इतना अधिक बह चुका है, ऐसा करना बिलकुल बेमानी था और इन हज़ारों बरसों के इतिहास

اُتتراکھنڈ بھی کہا جاتا ھے. اِتناھی نہیں، وندھیاچل پہاڑیوں کی جو کردھنی سی دیش کی کمر میں بن گئی ھے اُس کے اُت تری یا اوپری حصے کو پورے کے پورے کو، اُت ترا کھنڈ کہا گیا ھے اس لئے اگر اُس پرمپرا کو مانا جائے اور اُت ترا کھنڈ کا بدلا ھوا روپ اُت تر پردیش کو مان لیا جائے تو بات بنتی نہیں. سنیکت پرانت (صوبجات متحدہ کو اُت تر پردیش کیوں کہا گیا اور یہ کہاں تک سہی ھوا ؟

جیسا کہ سبھی جانتے ھیں پچھلے دنوں سے ستھانوں کا نام بدلنے کی کوشش جاری ھے کان پور کو کرن پور (مہابھارت کے کرن کے نام پر) اور لکھنؤ کو لکشمن پور (رامائن کے لکشمن کے نام پر) بنانے کی کوشش کی گئی تھی میرٹھ سمیلن کے سمے میرٹھ کو مے راشٹر (مہا بھارت والے' مے راشٹر ' کے آدھار پر) بنانے کی بھی سخت کوشش ھوئی تھی. اسی طرح انھیں رچیوں اور رحجانوں کا سہارا لے کر سنیکت پرانت کا نام 'آریہ ورت ' رکھنے کی کوشش کی گئی تھی. 'آریہ‌ورت' نام بھی بہت پرانا ھے اور ھمارے پرانے ساھتیہ میں بار بار آتا ھے برج‌کوشل نام بھی سامنے آیا تھا 'آریہ‌ورت' نام آج کے زمانے میں اس چھیتر کے لئے غلط تھا. پچھلے آریوں کے یا ھندوؤں کے زمانے میں وندھیا کے اُت تری حصے کو یا جہاں تک آریوں کا سامراج پھیل گیا تھا اُس سارے چھیتر کو آریہ‌ورت پکارنا سمجھ میں آتا ھے. مگر آج کے زمانے میں جبکہ گنگا کا پانی اِن ھزاروں برسوں میں اتنا ادھک بہہ چکا ھے ' ایسا کرنا بالکل بے معنی تھا اور ان ھزاروں برسوں کے اتہاس

हिन्दुस्तान के लिये फ्रांस वालों का यह तजरबा काफी अहमियत रखता है. हमारे सूबे का नाम अब 'उत्तर प्रदेश' हो गया है. उत्तर प्रदेश नाम बहुत अच्छा, सीधा और सरल है. संस्कृत साहित्य मे इस प्रदेश को 'उत्तराखण्ड' कहा जाता था. बाल्मीकि रामायण और महाभारत मे भी इसकी चर्चा मिलती है. उसके बाद इसका नाम कई बार बदला है. आर्यों के जमाने से आज तक के जमाने तक जब-जब जैसा दौर आया तब तब उसी के मुताबिक़ इसका नाम बदल गया. इस पूरे सूबे मे तरह तरह की बोली बोलने वाले, कपड़े पहनने वाले और रहन- सहन वाले लोग रहते हैं. सहारन पूर मे रहने वाले लोगों की खड़ी बोली और बलिया मे रहने वालो की भोजपुरी और बुन्देल खन्ड मे रहने की बुन्देलखन्डी मे बहुत फर्क है मगर बुनियादी तौर से सब की संस्कृति और इतिहास और मनोविज्ञान मे पूरी एकता है हिमाचल प्रदेश की पहाड़ी भाषा और भोज पूर की भाषा मे बहुत कम एकता है. शब्दों के उच्चारण (तलफ़्फ़ुज़) की निगाह से इन मे जरा भी मेल नहीं है इसी तरह बघेलखण्डी, बुन्देलखण्डी, बैसवाड़ी, अवधी और ब्रज भाषा मे भी काफी अन्तर है. यहाँ तक कि बहुत से ऐसे शब्द हैं जो जब इन बोलियों मे इस्तेमाल होते है तो उनका अर्थ बदल जाता है. गोडवानी और राजस्थानी भाषाओं मे भी टकसाली हिन्दी भाषा से अलग प्रवृतियाँ (रुजहानात) मिलती है. फिर भी आबू पहाड से लेकर उत्तर में पूरबी पजाब तक, पूरबी बिहार से लेकर नीचे बरार प्रान्त तक सारा इलाक़ा हिन्दी क्षेत्र माना जाता है. इस पूरे क्षेत्र को

هندستان کے لئے فرانس والوں کا یہ تجربہ کافی اهمیت رکھتا هے . همارے صوبے کا نام اب ' اُتتر پردیش ' هوگیا هے اُتتر پردیش نام بہت اچھا ' سیدھا اور سرل هے. سنسکرت ساهتیه میں اِس پردیش کو ' اُتتراکھنڈ ' کہا جاتا تھا . بالمیکی رامائن اور مہا بھارت میں بھی اِسکی چرچا ملتی هے اُس کے بعد اس کا نام کئی بار بدلا هے آریوں کے زمانے سے آج تک کے زمانے تک جب جیسا دور آیا تب تب اُسی کے مطابق اِس کا نام بدل گیا اِس پورے صوبے میں طرح طرح کی بولی بولنے والے ' کپڑے پہننے والے اور رهن سہن والے لوگ رهتے هیں سہارن پور میں رهنے والے لوگوں کی کھڑی بولی اور بلیا میں رهنے والوں کی بھوجپوری اور بندیلکھنڈ میں رهنے والوں کی بندیلکھنڈی میں بہت فرق هے مگر بنیادی طور سے سب کی سنسکرتی اور اِتہاس اور منو وگیان میں پوری ایکتا هے هماچل پردیش کی پہاڑی بھاشا اور بھوجپور کی بھاشا میں بہت کم ایکتا هے شبدوں کے اُچچارن (تلفظ) کی نگاہ سے اُس میں ذرا بھی میل نہیں هے اِسی طرح بگھیل کھنڈی ' بندیلکھنڈی ' بیسواڑی اودھی اور برج بھاشا میں بھی کافی انتر هے . یہاں تک که بہت سے ایسے شبد هیں جو جب اِن بولیوں میں اِستعمال هوتے هیں تو اُن کا اَرتھ بدل جاتا هے گونڈوانی اور راجستھانی بھاشاؤں میں بھی ٹکسالی هندی بھاشا سے الگ پرورتیاں (رجحانات) ملتی هیں. پھر بھی آبو پہاڑ سے لیکر اُتتر میں پوربی پنجاب تک ' پوربی بہار سے لیکر نیچے براز پرانت تک سارا علاقه هندی چھیتر مانا جاتا هے. اِس پورے چھیتر کو

सूबों के नाम

(भाई श्री कृष्ण दास)

फ्रांस मे जब इन्कलाब हुआ और ताकत सामन्तो के हाथ से नकलकर आम लोगो के हाथ मे आई तो उस समय सारे योरप में तहलका मच गया था और दूसरे देशो के राजकाज चलाने वाले तबक़े घबरा गये थे. खुद फ्रांस मे किस क़दर जोश और उत्साह था! जोश और उत्साह के कारन और हर चीज़ और हर बात मे नयापन लाने की कोशिश के कारन एक मजेदार घटना हुई जिसका आज के जमाने से सीधा ताल्लुक है. फ्रांस के इन्कलाबी साथियो ने इस कोशिश मे कि नये फ्रांस मे कोई भी पुराना सामन्त वादी निशान बाक़ी न रह जाय, नदियो, पहाड़ो और शहरो तक के नाम बदल डाले और उनके नये नाम रख दिये. उस वक्त तक लिखे इतिहासों, भूगोलो, साइंस की किताबो और साहित्य, कविता वगैरा में बार बार आये पुराने नामो की जगह पर नये नाम रख दिये गये.

कुछ दिनो बाद लोगो को महसूस होने लगा कि इस तरह जल्दी-जल्दी मे पुरानी चीजो का नाम बदल कर उन्होने बहुत अच्छा नही किया. रोज़मर्रा के कामो मे, दफ़्तरी कागज़ात मे, पढ़ाई-लिखाई और दूसरे देशो से सम्बन्ध कायम करने मे दिक्क़त महसूस होने लगी. धीरे-धीरे तजरबे से सीख कर फिर वहां वालो ने अपने पुराने नामों को ही इस्तेमाल करना शुरू कर दिया.

صوبوں کے نام

(بھائی شری کرشن داس)

فرانس میں جب اِنقلاب ہوا اور طاقت سامنتوں کے ہاتھ سے نکلکر عام لوگوں کے ہاتھ میں آئی تو اُس سمے سارے یورپ میں تہلکہ مچ گیا تھا اور دوسرے دیشوں کے راج کاج چلانے والے طبقے گھبرا گئے تھے. خود فرانس میں کس قدر جوش اور اُتساہ تھا! جوش اور اُتساہ کے کارن اور ہر چیز اور ہر بات میں نیا پن لانے کی کوشش کے کارن ایک مزیدار گھٹنا ہوئی جس کا آج کے زمانے سے سیدھا تعلق ہے. فرانس کے اِنقلابی ساتھیوں نے اس کوشش میں کہ نئے فرانس میں کوئی بھی پرانا سامنت وادی نشان باقی نہ رہ جائے ندیوں، پہاڑوں اور شہروں تک کے نام بدل ڈالے اور اُنکے نئے نام رکھدئیے. اُس وقت تک لکھے اِتہاسوں، بھوگولوں، سائنس کی کتابوں اور ساہتیہ، کویتا وغیرہ میں بار بار آئے پرانے ناموں کی جگہ پر نئے نام رکھدئیے گئے.

کچھ دنوں بعد لوگوں کو محسوس ہونے لگا کہ اِس طرح سے جلدی جلدی میں پرانی چیزوں کے نام بدل کر اُنہوں نے بہت اچھا نہیں کیا. روز مرہ کے کاموں میں، دفتری کاغذات میں، پڑھائی لکھائی میں اور دوسرے دیشوں سے سمبندھ قائم کرنے میں دقت محسوس ہونے لگی. دھیرے دھیرے تجربے سے سیکھ کر پھر وہاں والوں نے اپنے پرانے ناموں کو ہی اِستعمال کرنا شروع کردیا.

और फिर उसने गहरे अँधेरे में ख़याल किया—जैसे वह मुस्करा रहे हैं और उसकी छाती पर रक्खा हुआ बोझ हलका हो गया है.

اور پھر اُس نے گہرے اندھیرے میں خیال کیا—جیسے وہ مسکرا رہے ہیں اور اُس کی چھاتی پر رکھا ہوا بوجھا ہلکا ہو گیا ہے۔

औरत चौंकी. मगर वह कुछ कहे, इसके पहले ही वह आदमी रास्ते पर जा पहुँचा.

* * * *

दोनों चुप चाप चले जा रहे थे. आगे वाला आदमी जल्दी-जल्दी चल रहा था. मगर पीछे वाले क चाल धीमी थी, मानो उसके पैर धरती पकड़ रही थी. एकाएक आगे वाले आदमी ने रात के उस तीसरे पहर की गहरी ख़ामोशी को तोड़ते हुए कहा—'असलम, बात क्या है ? इस तरह धीमी चाल क्यों कर रक्खी है ?'

'हुज़ूर, कलेजे पर एक ठण्ढा-सा बोझ रक्खा हुआ है !'

'बोझ ! कैसा बोझ ?'

'अब आपको क्या बतलाऊँ, आप सुनते कब हैं !'

'तभी उस लड़की के यहाँ तुम्हारी ज़बान मानो बन्द-सी.हो रही थी और अफ़सोस तुम्हारे चेहरे पर छाया हुआ था.'

'अफ़सोस की बात तो है ही. मेरा ख़लीफा—मेरा बादशाह बोझा ढोए, खाना पकाए और मैं चुप चाप देखा करूँ ! हुज़ूर, आप मेरी आक़बत क्यों बिगाड़ते है ?'

'मेरे प्यारे असलम—मेरे प्यारे साथी, तुम्हारा यह ख़याल महज़ पागलपन से भरा हुआ है अगर मैं अपना काम आप करता हूँ, तो इसमे तुम्हारी आकबत क्यों बिगड़ने लगी ? आकबत बिगड़ती है ग़ुलामी करने से, आक़बत बिगड़ती है ग़ुलामी करवाने से !'

असलम ने मन-ही-मन कहा—'अहा ! ख़लीफा हज़रत उमर कितने दरिया दिल हैं—कितने रिआया-परवर, कितने ग़रीब परवर !'

عورت چونکی۔ مگر وہ کچھ کہے' اِس کے پہلے ھی وہ آدمی راستے پر جا پہونچا۔

* * * *

دونوں چپ چاپ چلے جا رہے تھے آگے والا آدمی جلدی جلدی چل رہا تھا۔ مگر پیچھے والے کی چال دھیمی تھی مانو اُس کے پیر دھرتی پکڑ رھی تھی یکایک آگے والے آدمی نے رات کے اُس تیسرے پہر کی گہری خاموشی کو توڑتے ہوے کہا—'اسلم بات کیا ھے ؟ اِس طرح دھیمی چال کیوں کر رکھی ھے ؟'

'حضور کلیجے پر ایک ٹھنڈا سا بوجھ رکھا ہوا ھے !'

'بوجھ ! کیسا بوجھ ؟'

'اب آپ کو کیا بتلاؤں' آپ سنتے کب ھیں !'

'تبھی اُس لڑکی کے یہاں تمہاری زبان مانو بندسی ھو رھی تھی اور افسوس تمہارے چہرے پر چھایا ہوا تھا۔'

'افسوس کی بات تو ھے ھی۔ میرا خلیفہ—میرا بادشاہ بوجھا ڈھوئے' کھانا پکائے اور میں چپ چاپ دیکھا کروں ! حضور' آپ میری عاقبت کیوں بگاڑتے ھیں ؟'

'میرے پیارے اسلم—میرے پیارے ساتھی' تمہارا یہ خیال محض پاگل پن سے بھرا ہوا ھے۔ اگر میں اپنا کام آپ کرتا ھوں' تو اِسمیں تمہاری عاقبت کیوں بگڑنے لگی ؟ عاقبت بگڑتی ھے غلامی کرنے سے' عاقبت بگڑتی ھے غلامی کروانے سے !'

اسلم نے من ھی من کہا—اہا ! خلیفہ حضرت عمر کتنے دریا دل ھیں—کتنے رعایا پرور' کتنے غریب پرور !

उस आदमी ने चेहरा ऊपर उठाया. उसकी चमकीली आँखे और भी चमक उठीं, मानो उनमें ख़ुशी की एक लहर आ गई वह असलम के गहरी उदासी-भरे चेहरे पर एक भेद-भरी नज़र डालते हुए बोला—'उन्होने अब तक तुम्हारी खबर नही ली. इसे उन की ग़लती के सिवाय और क्या कहा जाए ? ख़ैर, मै उनको जानता हूँ. मिलने पर तुम्हारा सब हाल सुना दूँगा ! इन्शाअल्लाह, वह अब बराबर तुम्हारी ख़बर लेते रहेंगे और तुम्हे कोई तकलीफ न होने पायगी.'

इस तरह कुछ शान्ति रहते कुछ बाते होते और कुछ बच्चो की चहल-पहल चलते खाना पक गया. बच्चे खाने को बैठे. उस आदमी ने छोटे बच्चे को अपनी गोद मे बिठाया और उसे अपने हाथों खाना खिलाया.

जब बच्चे खा चुके तो वह आदमी खड़ा हो गया और बोला—'बेटी, अब हम लोग जाएँगे.'

औरत भी खड़ी हो गई और आँखो मे आँसू भर कर बोली—'अल्लाह आप का भला करे. मैं तो अल्लाह से दुआ माँगूगी कि वह आप को ख़िलाफत बख्शे. हज़रत उमर तो हरगिज़ इस दर्जे के लायक़ नहीं हैं.'

'बेशक, वह लायक़ नहीं हैं, मगर अब तो अल्लाह ने उनके कमज़ोर कन्धों पर ख़िलाफत का भारी बोझा रख ही दिया है और वह उसे ज्यों-त्यों कर ढो भी रहे हैं.' कहता हुआ वह आदमी बाहर निकल आया.

اُس آدمی نے چہرہ اُوپر اُٹھایا. اُس کی چمکتی آنکھیں اور بھی چمک اُٹھیں. مانو اُن میں خوشی کی ایک لہر آگئی. وہ اسلم کے گہری اُداسی بھرے چہرے پر ایک بھید بھری نظر ڈالتے ہوئے بولا—'اُنھوں نے اب تک تمہاری خبر نہیں لی. اِسے اُن کی غلطی کے سوائے اور کیا کہا جائے؟ خیر، میں اُن کو جانتا ہوں. ملنے پر تمہارا سب حال سنادوں گا! اِنشا اللہ، وہ اب برابر تمہاری خبر لیتے رہینگے اور تمہیں کوئی تکلیف نہ ہونے پائیگی.'

اس طرح کچھ شانتی رہتے، کچھ باتیں ہوتے اور کچھ بچوں کی چہل پہل چلتے کھانا پک گیا. بچے کھانے کو بیٹھے. اس آدمی نے چھوٹے بچے کو اپنی گود میں بٹھایا اور اُسے اپنے ہاتھوں سے کھانا کھلایا.

جب بچے کھا چکے تو وہ آدمی کھڑا ہو گیا اور بولا—'بیٹی اب ہم لوگ جائیں گے.'

عورت بھی کھڑی ہوگئی اور آنکھوں میں آنسو بھر کر بولی—'اللہ آپ کا بھلا کرے. میں تو اللہ سے دعا مانگوں گی کہ آپ کو خلافت بخشے. حضرت عمر تو ہرگز اِس درجے کے لائق نہیں ہیں.'

'بے شک وہ لائق نہیں ہیں، مگر اب تو اللہ نے اُن کے کمزور کندھوں پر خلافت کا بھاری بوجھا رکھ ہی دیا ہے اور وہ اسے جیسے تیسے کر ڈھو بھی رہے ہیں.' کہتا ہوا وہ آدمی باہر نکل آیا.

वह आदमी थाली मे आटा उँडेलते-उँडेलते बोला—'बेटी, जल्दी करो ! बाते फिर होती रहेंगी. बच्चे भूक से बेचैन हो रहे है. पहले उनको खाना मिलने की ज़रूरत है. मैं थोड़ी-सी मदद कर दूँगा तो घुल थोड़े ही जाऊँगा.'—और उसने आटा गूंधना शुरू कर दिया

औरत ने मसाला पीसते-पीसते कहा—'बाबा, जान पड़ता है, आप इन्सान की शकल मे फरिश्ते हैं. तभी तो आप मे हज़रत ईसा का यह रहम, यह प्रेम मौजूद है. आपने बिला वजह मेरे लिए तकलीफ उठाई—मुझ पर यह रहम किया. मैं किन लफ्ज़ो मे आपका शुक्रिया अदा करूँ—अल्लाह आपको इस नेकी का एवज़ देगा.'

आटा मसलते मसलते वह आदमी बोला—'बेटी, इसमे शुक्रिया अदा करने की कोई बात नही. इन्सान की ख़िदमत करना, इन्सान को इमदाद पहुँचाना—यह तो इन्सान का फ़र्ज़ है.'

औरत ने कुछ उदासी-भरी आवाज़ मे कहा—'एक आप हैं, और एक हज़रत उमर हैं. वह हमारे बादशाह हैं इस्लाम के ख़लीफा और दीन-दुनिया के मालिक कहलाते है. सुना है कि वह बड़े ग़रीब-परवर है. मगर मैंने तो उनकी ग़ुरबा-परवरी का कोई नमूना नहीं देखा—शायद आपने देखा हो.'

वह आदमी लापरवाही से बोला—'अरे, तो तुम खाना पका रही हो, या बातें कर रही हो ?'

मगर औरत ने ज़ोर देकर सवाल किया—'क्या हम जैसे ग़रीबो और मोहताजो की खोज-खबर लेना हज़रत उमर का फ़र्ज़ नही है ? माना कि हम ईसाई हैं, मगर क्या उन की रिआया नही हैं ?'

وہ آدمی تھالی میں آٹا اونڈیلتے اونڈیلتے بولا—'بیٹی جلدی کرو ! باتیں پھر ہوتی رہینگی. بچے بھوک سے بے چین ہو رہے ہیں. پہلے اُن کو کھانا ملنے کی ضرورت ہے. میں تھوڑی سی مدد کرونگا تو گھل تھوڑے ہی جاؤنگا. اور اُس نے آٹا گوندھنا شروع کر دیا.

عورت نے مسالا پیستے پیستے کہا—'بابا جان پڑتا ہے' آپ انسان کی شکل میں فرشتے ہیں. تبھی تو آپ میں حضرت عیسیٰ کا یہ رحم' یہ پریم موجود ہے' آپ نے بلا وجہ میرے لئے تکلیف اُٹھائی— مجھ پر یہ رحم کیا. میں کن لفظوں میں آپ کا شکریہ ادا کروں— اللہ آپ کو اس نیکی کا عوض دیگا.'

آٹا مسلتے مسلتے وہ آدمی بولا—'بیٹی، اِس میں شکریہ ادا کرنے کی کوئی بات نہیں انسان کی خدمت کرنا' اِنسان کو امداد پہنچانا—یہ تو اِنسان کا فرض ہے.'

عورت نے کچھ اُداسی بھری آواز میں کہا—'ایک آپ ہیں' اور ایک حضرت عمر ہیں. وہ ہمارے بادشاہ ہیں. اِسلام کے خلیفہ ہیں اور دین دنیا کے مالک کہلاتے ہیں. سنا ہے کہ وہ بڑے غریب پرور ہیں. مگر میں نے تو اُن کی غربا پروری کا کوئی نمونہ نہیں دیکھا— شاید آپ نے دیکھا ہو.'

وہ آدمی لاپرواہی سے بولا—'ارے تو تم کھانا پکا رہی ہو یا باتیں کر رہی ہو ؟'

مگر عورت نے زور دیکر سوال کیا—'کیا ہم جیسے غریبوں اور محتاجوں کی کھوج خبر لینا حضرت عمر کا فرض نہیں ہے ؟ مانا کہ ہم عیسائی ہیں' مگر کیا اُن کی رعایا نہیں ہیں ؟'

असलम चुप रह गया.

*   *   *   *

उम्मीद ने औरत और बच्चों मे धीरज की—शान्ति की लहर सी दौड़ा दी थी. जब खाने का ढेर-भरा सामान देखा, तो मारे खुशी के उनके चेहरे खिल उठे वह शख्स बोला—'असलम तुम बच्चों को खेल में लगाओ कुछ खजूर और छुहारे खिलाओ. तब तक मैं इस बेटी की इमदाद करता हूँ, ताकि खाना जल्द तैयार हो जाए और बच्चे जियादा देर तक भूके न रहे हाँ बेटी, तुम झटपट पानी और बर्तन वगैरा ले आओ. मैं आटा गूधकर रखता हूँ, तब तक तुम मसाला पीस डालो.'

असलम ने उस पर एक तज्जुब-भरी निगाह डाली. शायद मन मे कहा—'और सुनो मैं आटा गूंधने-लायक भी नही हूं!' मगर वह बोला कुछ नही. उसका चेहरा उतरा हुआ था फिर भी वह अपने काम मे जुट गया. बच्चों ने खजूर और छुहारे देखे तो वह उनसे उलझ गए

इधर वह आदमी हाडी के गरम पानी से जल्दी-जल्दी बर्तन धोने लगा औरत ने उससे कहा—'मेरे मेहरबान बुजुर्ग, अल्लाह के वास्ते यह गजब न कीजिए. खाना पकाना कोई मुश्किल काम नहीं है अभी दम-भर में पकाए लेती हूँ. आप मेहरबानी करके तशरीफ रखिए. मुझे यों कॉटो में न घसीटिए.'

اسلم چپ رہ گیا.

*   *   *   *

اُمید نے عورت اور بچوں میں دھیرج کی—شانتی کی لہر سی دوڑا دی تھی. جب کھانے کا ڈھیر بھرا سامان دیکھا تو مارے خوشی کے اُن کے چہرے کھل اُٹھے. وہ شخص بولا—' اسلم تم بچوں کو کھیل میں لگاؤ. کچھ کھجور اور چھوہارے کھلاؤ. تب تک میں اس بیٹی کی امداد کرتا ہوں، تاکہ کھانا جلد تیار ہو جائے اور بچے زیادہ دیر تک بھوکے نہ رہیں ہاں بیٹی، تم جھٹ پٹ پانی اور برتن وغیرہ لے آؤ. میں آٹا گوندھ کر رکھتا ہوں، تب تک تم مسالا پیس ڈالو.'

اسلم نے اُس پر ایک تعجب بھری نگاہ ڈالی شاید من میں کہا—اور سنو، میں آٹا گوندھنے لائق بھی نہیں ہوں! مگر وہ بولا کچھ نہیں. اس کا چہرہ اُترا ہوا تھا پھر بھی وہ اپنے کام میں جٹ گیا. بچوں نے کھجور اور چھوہارے دیکھے تو وہ اُن سے اُلجھ گئے

ادھر وہ آدمی ہانڈی کے گرم پانی سے جلدی جلدی برتن دھونے لگا. عورت نے اُس سے کہا—' میرے مہربان بزرگ' اللہ کے واسطے یہ غضب نہ کیجئے. کھانا پکانا کوئی مشکل کام نہیں ہے. ابھی دم بھر میں پکائے لیتی ہوں. آپ مہربانی کر کے تشریف رکھئے. مجھے یوں کانٹوں میں نہ گھسیٹئے.'

बोझा ढो दोगे. मगर क़यामत के दिन ? उस दिन तो तुम मेरा बोझा न उठा सकोगे जो आदमी अपना बोझा ढोने मे गफ़लत करता है, उसका नतीजा तुम अभी-अभी अपनी आँखो से देख चुके हो उफ़ ! नन्हे-नन्हे बच्चे अनाज के एक-एक दाने के लिये तरसा करें, और इस्लाम के ख़लीफ़ा को उनकी खबर भी न हो ! गुनाह की हद हो गई !'

असलम ने कहा—'मगर इसमे किसी का क्या क़सूर ?'

वह आदमी कुछ बिगडकर बोला—'किसी का कोई कुसूर नहीं ? क्या कहते हो मेरे साथी ? हुकूमत के पास खज़ाना किसका है ? रिआया का ! और हुकूमत किस लिये है ? रिआया की परवरिश के लिये ! उस हुकूमत पर लानत है जो रिआया की परवरिश नहीं करती. देर मत करो, थैला मेरी पीठ पर रख दो. वहाँ बच्चे छटपटा रहे होंगे—मेरी राह देख रहे होंगे.'

असलम ने एक आह भरी और थैला उसकी पीठ पर रख दिया.

दोनो बाहर आए. असलम माल-खाने का दरवाज़ा बन्द करने लगा और वह आदमी बोला—'असलम, उस लड़की के सामने मेरे बारे मे ज़रा अपनी ज़बान पर काबू किए रहना '

असलम ने कहा—'यह तो आप बहुत जब्र करते है जनाब ! न जिस्म से अपनी ख़िदमत करने दे, न ज़बान से अपनी तारीफ़ करने दें; तो फिर ऐ मेरे हज़रत, आख़िर मेरी यह ज़िन्दगी किस लिए है ?'

वह आदमी बोला—'ठीक ! तब तुम्हारी यही मंशा है कि जिस्म से मेरी ख़िदमत करो, ज़बान से मेरे गुन गाओ और मुझे खुदा की नज़रो में हक़ीर बनाओ. क्यो ? तब तुम बहुत अच्छे साथी हो—वाह !'

بوجھا ڈھو دوگے . مگر قیامت کے دن ؟ اُس دن تو تم میرا بوجھا نہ اُٹھا سکوگے . جو آدمی اپنا بوجھا ڈھونے میں غفلت کرتا ہے' اُس کا نتیجہ تم ابھی ابھی اپنی آنکھوں سے دیکھ چکے ہو . اُف ! ننھے ننھے بچے اناج کے ایک ایک دانے کے لئے ترسا کریں' اور اسلام کے خلیفہ کو اُن کی خبر بھی نہ ہو ! گناہ کی حد ہوگئی !'

اسلم نے کہا—'مگر اس میں کسی کا کیا قصور ؟'

وہ آدمی کچھ بگڑ کر بولا—'کسی کا کوئی قصور نہیں ؟ کیا کہتے ہو میرے ساتھی ؟ حکومت کے پاس خزانہ کس کا ہے ؟ رعایا کا ! اور حکومت کس لئے ہے ؟ رعایا کی پرورش کے لئے ! اُس حکومت پر لعنت ہے' جو رعایا کی پرورش نہیں کرتی . دیر مت کرو' تھیلا میری پیٹھ پر رکھ دو. وہاں بچے چھٹ پٹا رہے ہونگے—میری راہ دیکھ رہے ہونگے .'

اسلم نے ایک آہ بھری اور تھیلا اُس کی پیٹھ پر رکھ دیا .

دونوں باہر آئے . اسلم مال خانے کا دروازہ بند کرنے لگا اور وہ آدمی بولا—'اسلم' اُس لڑکی کے سامنے میرے بارے میں ذرا اپنی زبان پر قابو کئے رکھنا.'

اسلم نے کہا—'یہ تو آپ بہت جبر کرتے ہیں جناب ! نہ جسم سے اپنی خدمت کرنے دیں' نہ زبان سے اپنی تعریف کرنے دیں' تو پھر اے میرے حضرت' آخر میری یہ زندگی کس لئے ہے ؟'

وہ آدمی بولا—' ٹھیک ! تب تمھاری یہی منشا ہے کہ جسم سے میری خدمت کرو' زبان سے میرے گن گاؤ اور مجھے خدا کی نظروں میں حقیر بناؤ. کیوں ؟ تب تو تم بہت اچھے ساتھی ہو—واہ !

एक मकान के सामने पहुँचे आगे वाले आदमी ने किवाड़ खोले और भीतर जाकर चकमक के जरिये चराग़ जलाया. फिर वह जल्दी-जल्दी कई थैलियों मे तरह-तरह की खाने की चीज़े भरने लगा. दूसरे आदमी ने पास जाकर कहा—'मुझे दीजिए. मैं कुल काम किए देता हूँ.'

पहले आदमी ने जवाब दिया—'नहीं असलम, यह मेरा काम है.'

इस पर असलम कुछ न कह सका वह इस तरह खड़ा रह गया जैसे उस पर किसी ने जादू कर दिया हो.

जब सब थैलियाँ भर चुकी तो उस आदमी ने उनको एक बड़े थैले मे रखते-रखते आवाज़ दी—'असलम, मेहरबानी करके यह बोझा मेरी पीठ पर लाद दो'

यह आवाज़ सुनी. तो असलम मानो सोते से जाग उठा. लपक कर आगे बढ़ा. उसने देखा—उस आदमी की पेशानी पर पसीने की नन्ही नन्ही बूंदे झिलमिला रही है और आँखें आँसुओ मे डूबी हुई हैं. असलम ने बड़ी आजज़ी से कहा—'यह मेरा काम है लाइए मैं ले चलूं.'

वह आदमी बोला—'नहीं बिरादर. तुम्हे मेरा बोझा ढोने का हक़ नहीं है.'

असलम ने ज़ोर देकर कहा—'मेरे रहते आप बोझा उठाएँ—यह हरगिज़ नहीं हो सकता. लाइए—लाइए.'

वह आदमी दर्द-भरी आवाज़ मे बोला—'प्यारे असलम, तुम कैसे साथी हो! मुझ पर तरस खाओ. ज़िद मत करो. आज तुम मेरा

ایک مکان کے سامنے پہنچے۔ آگے والے آدمی نے کواڑ کھولے اور بھیتر جاکر چقماق کے ذریعے چراغ جلایا۔ پھر وہ جلدی جلدی کئی تھیلیوں میں طرح طرح کی کھانے کی چیزیں بھرنے لگا۔ دوسرے آدمی نے پاس جاکر کہا—'مجھے دیجئے۔ میں کل کام کئے دیتا ہوں۔'

پہلے آدمی نے جواب دیا—'نہیں اسلم' یہ میرا کام ہے'

اس پر اسلم کچھ نہ کہہ سکا۔ وہ اِس طرح کھڑا رہ گیا' جیسے اُس پر کسی نے جادو کردیا ہو۔

جب سب تھیلیاں بھر چکیں تو اُس آدمی نے ان کو ایک بڑے تھیلے میں رکھتے رکھتے آواز دی—'اسلم، مہربانی کرکے یہ بوجھا میری پیٹھ پر لاد دو۔'

یہ آواز سنی۔ تو اسلم مانو سوتے سے جاگ اُٹھا۔ لپک کر آگے بڑھا۔ اس نے دیکھا—اُس آدمی کی پیشانی پر پسینے کی ننھی ننھی بوندیں جھل ملا رہی ہیں اور آنکھیں آنسوؤں میں ڈوبی ہوئی ہیں اسلم نے بڑی عاجزی سے کہا—'یہ میرا کام ہے لائیے میں لے چلوں'

وہ آدمی بولا—'نہیں برادر تمھیں میرا بوجھا ڈھونے کا حق نہیں ہے۔'

اسلم نے زور دیکر کہا—'میرے رہتے آپ بوجھا اُٹھائیں – یہ ہرگز نہیں ہو سکتا۔ لائیے – لائیے'

وہ آدمی درد بھری آواز میں بولا—'پیارے اسلم' تم کیسے ساتھی ہو! مجھ پر ترس کھاؤ۔ ضد مت کرو۔ آج تم میرا

होगी. अगर हर्ज न हो, तो बतलाओ, तुम इस तरह फूट-फूट कर क्यों रो रही थीं ?'

'अब मैं आपको अपनी मुसीबत की कहानी क्या सुनाऊँ ! इस खुदग़रज़ दुनिया मे कौन किसकी सुनता है !'

'फिर भी !'

'अच्छी बात है ! सुन लीजिए. मेरे वह मासूम बच्चे—मेरे कलेजे के यह प्यारे-प्यारे टुकड़े आज सुबह से भूक-भूक पुकार रहे है, मगर घर में अनाज का दाना भी नही है चूल्हे पर ख़ाली हांडी चढ़ी है और मै बड़ी देर से इनको बहलाने की कोशिश कर रही हूं.जब मुझसे इनका दुख न देखा गया तो मै रो पड़ी.'

'उफ़ ! क्या तुम मेहनत-मज़दूरी नही करती ?'

'करती क्यो नही ! आज तीन दिन से शहर का चक्कर काट रही हूं, मगर न कहीं मज़दूरी लगती है, न कोई बात पूछता है '

'और इन बच्चो का बाप ?'

'वह कई दिन हुए, रोज़गार की तलाश मे बाहर गए है. अब तक वापिस नही आए. मैं क्या करूँ ?'

* * * *

'ख़ैर ! बच्चों को थोड़ी देर और बहलाओ. मैं अभी आया '

वह आदमी लम्बे-लम्बे क़दम बढ़ाता हुआ वहाँ से चल पड़ा.दूसरा आदमी भी उसके पीछे-पीछे हो लिया. रास्ते मे दोनो चुप थे. उनके पैरों की आवाज़ उस सन्नाटे में दूर-दूर तक गूंज रही थी और वह ऐसे बढ़े जा रहे थे. जैसे उनके पङ्ख निकल आए हों. थोड़ी देर बाद वह

ہوگی ۔ اگر حرج نہ ہو تو بتلاؤ تم اِس طرح پھوٹ پھوٹ کر کیوں رو رہی تھیں ؟'

'اب میں آپ کو اپنی مصیبت کی کہانی کیا سناؤں ؟ اس خود غرض دنیا میں کون کس کی سنتا ہے !'

'پھر بھی !'

'اچھی بات ہے ! سن لیجئے ۔ میرے یہ معصوم بچے – میرے کلیجے کے یہ پیارے پیارے ٹکڑے آج صبح سے بھوک بھوک پکار رہے ہیں، مگر گھر میں اناج کا دانا بھی نہیں ہے ۔ چولہے پر خالی ہانڈی چڑھی ہے اور میں بڑی دیر سے ان کو بہلانے کی کوشش کر رہی ہوں ۔ جب مجھ سے ان کا دکھ نہ دیکھا گیا تو میں رو پڑی'

'اُف ! کیا تم محنت مزدوری نہیں کرتیں ؟'

'کرتی کیوں نہیں ! آج تین دن سے شہر کا چکر کاٹ رہی ہوں مگر نہ کہیں مزدوری لگتی ہے نہ کوئی بات پوچھتا ہے ۔'

'اور ان بچوں کا باپ ؟'

'وہ کئی دن ہوئے روزگار کی تلاش میں باہر گئے ہیں ۔ ابتک واپس نہیں آئے۔ میں کیا کروں ؟'

'خیر ! بچوں کو تھوڑی دیر اور بہلاؤ۔ میں ابھی آیا'

* * * *

وہ آدمی لمبے لمبے قدم بڑھاتا ہوا وہاں سے چل پڑا دوسرا آدمی بھی اُس کے پیچھے پیچھے ہولیا ۔ راستے میں دونوں چپ تھے ۔ اُن کے پیروں کی آواز اُس سناٹے میں دور دور تک گونج رہی تھی اور وہ ایسے اُڑے جارہے تھے جیسے ان کے پنکھ نکل آئے ہوں۔ تھوڑی دیر بعد وہ

तक पकेगा तेरा खाना. यहाँ दम निकला जा रहा है. जल्दी पका प्यारी अम्मी !' औरत सर्द आहे भरती, हांडी में बार-बार चम्मच खड़बड़ाती और बच्चो को दिलासा देती है—'सब्र करो, घबराओ मत, अभी पका जाता है.'

दोनो आदमी साँस रोककर दरवाजे पर खड़े हो गए बड़ी देर हो गई मगर घर मे शान्ति न हुई. न हांडी चूल्हे से नीचे उतरी न बच्चों का चीखना-चिल्लाना बन्द हुआ आखिर औरत एक बारगी फूट-फूट कर रो पड़ी अब तो जो आदमी आगे खडा था, उसने फौरन किवाड़ो पर दस्तक लगाई

किवाड खुल गए औरत ने ओढ़नी के फटे दामन से आँसू पोछते हुए देखा— उसके सामने देव जैसा लम्बा-चौडा एक मर्द खडा है, उम्र पचास से ऊपर, पिचके हुए गाल, बढ़ी हुई घनी काली दाढ़ी. लम्बी-लम्बी मूछें, बडी-बडी चमकीली आँखें, निहायत रोबीला चेहरा. चराग़ की टिमटिमाती रोशनी उसकी शकल को और भी खौफनाक बना रही थी उसे देखते ही बच्चे सिटपिटा गए और न रोना भूल गई. उसका कलेजा दहल उठा वह दो कदम पीछे हटी और कांपती हुई आवाज़ मे बोली—'आप कौन हैं ? मैं एक गरीब मुसीबत ज़दा ईसाई औरत हूँ. मेरे पास कुछ नहीं है अल्लाह के वास्ते मुझ पर रहम कीजिए.'

आदमी एक बार ज़ोर से खाँसा मानो उसने अपने भारी गले को मीठा लोचदार बनाने की कोशिश की और कहा—'डरो मत बेटी ! मैं एक मामूली राहगीर हूँ. मेरे ज़रिये तुम्हारी कोई बुराई न

تک پکے گا تیرا کھانا ۔ یہاں دم نکلا جا رہا ہے ۔ جلدی پکا پیاری امی ! ' عورت سرد آہیں بھرتی ' ہانڈی میں بار بار چمچ کھڑکھڑاتی اور بچوں کو دلاسا دیتی ہے—' صبر کرو ' گھبراؤ مت ' ابھی پکا جاتا ہے '۔

دونوں آدمی سانس روک کر دروازے پر کھڑے ہوگئے ۔ بڑی دیر ہوگئی مگر گھر میں شانتی نہ ہوئی۔ نہ ہانڈی چولھے سے نیچے اتری ' نہ بچوں کا چیخنا چلانا بند ہوا ۔ آخر عورت ایک بارگی پھوٹ پھوٹ کر رو پڑی ۔ اب تو جو آدمی آگے کھڑا تھا اس نے فوراً کواڑوں پر دستک لگائی

کواڑ کھل گئے عورت نے اوڑھنی کے پھٹے دامن سے آنسو پونچھتے ہوئے دیکھا اس کے سامنے دیو جیسا لمبا چوڑا ایک مرد کھڑا ہے ' عمر پچاس سے اوپر پچکے ہوئے گال ' بڑھی ہوئی گھنی کالی داڑھی ' لمبی لمبی مونچھیں ' بڑی بڑی چمکیلی آنکھیں ' نہایت رعبیلا چہرہ چراغ کی ٹمٹماتی روشنی اسکی شکل کو اور بھی خوفناک بنا رہی تھی ۔ اُسے دیکھتے ہی بچے سٹپٹا گئے ۔ عورت رونا بھول گئی اس کا کلیجہ دہل اُٹھا ۔ وہ دو قدم پیچھے ہٹی اور کانپتی ہوئی آواز میں بولی—' آپ کون ہیں ؟ میں ایک غریب مصیبت زدہ عسائی عورت ہوں ۔ میرے پاس کچھ نہیں ہے ۔ اللہ کے واسطے مجھ پر رحم کیجئے '

آدمی ایکبار زور سے کھانسا ' مانو اُس نے اپنے بھاری گلے کو میٹھا لوچدار بنانے کی کوشش کی اور کہا—' ڈرو مت بیٹی ! میں ایک معمولی راہ گیر ہوں ۔ میرے ذریعے تمہاری کوئی برائی نہ

रिआया परवर

(भाई जहूर बख्श)

रात आधी से जियादा बीत चुकी थी. दिन की कड़ी गर्मी गुलाबी सर्दी के रूप मे बदल गई थी. ठण्ढी-ठण्ढी हवा धीमे-धीमे झोंके खाते हुए चल रही थी मदीने पर गहरे अंधेरे का पर्दा पड़ा हुआ था—हाथ को हाथ न सूझता था और सड़कों वगैरा पर जैसे एक सुनसान वीराने ने अपना राज जमा रक्खा था. मगर इस वक्त भी दो आदमी दबे पैरों आम रास्ते पर चले जा रहे थे—काले-काले लबादों से ढँके हुए, एक दूसरे के पीछे. थोड़ी देर बाद वह एक तंग गली मे घुसे और एक पुराने टूटे-फूटे से घर के सामने ठहर गए

नींद ने उस घर मे दाखिल होने से इनकार कर दिया था. आगे वाले आदमी ने किवाड़ों की दरार से झाँककर देखा—चरा़ग के धुंधले उजाले में एक जवान औरत चूल्हे के पास बैठी है, दुबला-पतला जिस्म, उतरा हुआ चेहरा, आँसुओं से भरी आँखे, मैले कुचैले तार-तार कपड़े. उसके सामने तीन बच्चे हैं. छोटा बच्चा जार-जार रो रहा है, जिसे बड़ी बहन बार-बार छाती से लगाती और पुचकार कर समझाती है—'मान जा भाई, मान जा ! देख, अम्मी खाना पका रही हैं. बस, अभी पका जाता है. हम सब मिल कर खाएँगे ' चूल्हे पर हांडी चढ़ी है. उसपर दूसरे बच्चे ने लालच-भरी निगाहे जमा रक्खी हैं. वह रह-रह कर मां पर बिगड़ पड़ता है—'मालूम नहीं, कब

رعایا پرور

(بھائی ظہور بخش)

رات آدھی سے زیادہ بیت چکی تھی . دن کی کڑی گرمی گلابی سردی کے روپ میں بدل گئی تھی . ٹھنڈی ٹھنڈی ہوا دھیمے دھیمے جھونکے کھاتے ہوئے چل رہی تھی . مدینے پر گہرے اندھیرے کا پردہ پڑا ہوا تھا ہاتھ کو ہاتھ نہ سوجھتا تھا اور سڑکوں وغیرہ پر جیسے ایک سنسان ویرانی نے اپنا راج جما رکھا تھا . مگر اس وقت بھی دو آدمی دبے پیروں عام راستے پر چلے جا رہے تھے . کالے کالے لبادوں سے ڈھکے ہوئے ، ایک دوسرے کے پیچھے . تھوڑی دیر بعد وہ ایک تنگ گلی میں گھسے اور ایک پرانے ٹوٹے پھوٹے سے گھر کے سامنے ٹھہر گئے .

نیند نے اُس گھر میں داخل ہونے سے انکار کر دیا تھا . آگے والے آدمی نے کواڑوں کی دراز سے جھانک کر دیکھا . چراغ کے دھندھلے اُجالے میں ایک جوان عورت چولہے کے پاس بیٹھی ہے ، دبلا پتلا جسم ، اُترا ہوا چہرہ ، آنسوؤں سے بھری آنکھیں ، میلے کچیلے تار تار کپڑے . اُس کے سامنے تین بچے ہیں . چھوٹا بچہ زار زار رو رہا ہے ، جسے بڑی بہن بار بار چھاتی سے لگاتی اور پچکار کر سمجھاتی ہے ـــ ' مان جا بھائی ' مان جا ! دیکھ امی کھانا پکا رہی ہیں . بس ' ابھی پکا جاتا ہے . ہم سب مل کر کھائیں گے . چولہے پر ہانڈی چڑھی ہے . اُس پر دوسرے بچے نے لالچ بھری نگاہیں جما رکھی ہیں وہ رہ رہ کر ماں پر بگڑ پڑتا ہے ـــ ' معلوم نہیں ' کب

दयानन्द और महात्मा गांधी ने इन्हीं तरीक़ों की पैरवी की है. अब इस रिवाज की मुख़ालिफ़त करना उन महात्माओं की आत्माओ को धोखा देना है

मुस्लिम देश भक्त

[लेखक श्री० रतन लाल बंसल]

इस किताब मे कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तो के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये है जिन्होने अंगरेज़ो के मनहूस क़दम यहां जमने के पहले ही उनके राज की बुराइयो का अन्दाज़ा कर लिया था और उनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमो ने सन् १८५७ से भी पहले से आज़ादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होंने हिन्दुस्तान और विदेशो में रहते हुए भी अंगरेज़ी हकूमत का मुक़ाबला किया. यह सब हाल पढ़कर आप दंग रह जायेंगे

किताब दोनों लिखावटो में छपी है. क़ीमत १ रुपया १२ आने.

मैनेजर, 'नया हिन्द,'
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

دیانند اور مہاتما گاندھی نے اِنھیں طریقوں کی پیروی کی ہے. اب اس رواج کی مخالفت کرنا اُن مہاتماؤں کی آتماؤں کو دھوکا دینا ہے.

مسلم دیش بھگت

[لیکھک — شری رتن لال بنسل]

اِس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھگتوں کے جیون کا حال اور اُنکے کارنامے بیان کئے گئے ہیں جنھوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ہی اُنکے راج کی برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور اِن کو ہندستان سے نکال بھگانے میں ہند کی بھلائی دیکھی تھی.

اِس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ہوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے سنہ ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادی کی لڑائی شروع کر رکھی تھی. اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر اُنہوں نے ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھی انگریزی حکومت کا مقابلہ کیا. یہ سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے.

کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپی ہے. قیمت ۱ روپیہ ۱۲ آنے

منیجر، 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ ـ الہ آباد

कलचर की बहुत बड़ी पैत्रिक सम्पत्ति (मीरास) मौजूद है. इसलिये हमारे स्वाभाविक उठान के लिये इसका सीखना बहुत ही जरूरी हैं. आशा की जाती है कि हमारी शिक्षा की नई स्कीम मे संस्कृत को इज्ज़त की जगह मिलेगी. लेकिन यह तै है कि संस्कृत हमारे आज कल के व्योहार की भाषा नही बन सकती. श्री महावीर और महात्मा बुद्ध के समय में ही संस्कृत केवल साहित्यिक भाषा रह गई थी, जनता की भाषा उस समय तक पाली मे बदल चुकी थी इन दोनो सुधारकों ने अपना संदेश जनता तक पहुँचाने के लिये पाली ही से काम लिया. सदियो बाद अशोक ने भी यही किया. यही पाली विकास की ओर बढ़ती हुई प्राकृत बनी, फिर अपभ्रंश बनी और आखिर में उत्तरी हिन्दुस्तान की बहुत सी भाषाये पैदा हो गई. संस्कृत इनदिनों में साहित्य, विज्ञान और राजाओ के फ़रमानो की ही भाषा रही. इस हालत मे हिन्दुस्तानी कलचर की एकता बनाये रखने मे इसका बड़ा असर पड़ा लेकिन जनता से काम पडने पर जनता की ही बोली काम में लाई गई. यहाँ तक कि तुलसी दास जी ने भी, जो संस्कृत के विद्वान थे, अपनी अमर कथा रामायन को संस्कृत मे न लिख कर हिन्दी ही मे लिखा. यहाँ पर पुस्तक के नाम को ही देखिये जो कि राम चरित मानस है. 'राम चरित्र' और 'मनुष्य' के बजाय 'राम चरित' और 'मानस' रक्खा गया है. और कौन यह कह सकता है कि भारत के इन महात्मा कवियो ने संस्कृत से काम न लेकर संस्कृत की कलचर को नुक़सान पहुंचाया. हमारे यह महात्मा तो हिन्दुस्तानी कलचर के आला नमूने थे. आज कल भी स्वामी

کلچر کي بہت بڑی پیترک سمپتی (میراث) موجود هے . اس لئے همارے سوابھاوک اُتھان کے لئے اِس کا سیکھنا بہت هي ضروری هے . آشا کي جاتی هے که هماری شکشا کي نئی اسکیم میں سنسکرت کو عزت کی جگہ ملیگی . لیکن یه طے هے که سنسکرت همارے آج کل کے بیوهار کی بھاشا نہیں بن سکتي . شری مهاویر اور مهاتما بدھ کے سمے میں هي سنسکرت کیول ساهتیک بھاشا رہ گئي تھي جنتا کي بھاشا اُس سمے تک پالي میں بدل چکي تھی . اِن دونوں سدھارکوں نے اپنا سندیش جنتا تک پہونچانے کے لئے پالي هي سے کام لیا . صدیوں بعد اشوک نے بھي یہي کیا . یہی پالي وکاس کي اور بڑھتی هوئي پراکرت بنی ' پھر اپ بھرنش بنی اور آخر میں اُتری هندستان کي بہت سي بھاشائیں پیدا هوگئیں . سنسکرت اُن دنوں میں ساهتیه ' وگیان اور راجاؤں کے فرمانوں کی هي بھاشا رهي اِس حالت میں هندستاني کلچر کی ایکتا بنائے رکھنے میں اِس کا بڑا اثر پڑا . لیکن جنتا سے کام پڑنے پر جنتا کي هی بولی کام میں لائی گئی . یہاں تک که تلسی داس جی نے بھی ' جو سنسکرت کے ودوان تھے ' اپنی امر کتھا راماین کو سنسکرت میں نه لکھ کر هندی هی میں لکھا یہاں پر پستک کے نام کو هی دیکھئے جو که رام چرت مانس هے ' رام چرتر' اور 'منشیه' کے بجائے 'رام چرت' اور ' مانس ' رکھا گیا هے . اور کون یه کہه سکتا هے که بھارت کے اِن مهاتما کویوں نے سنسکرت سے کام نه لیکر سنسکرت کی کلچر کو نقصان پہونچایا . همارے یه مهاتما تو هندستانی کلچر کے اعلی نمونے تھے. آج کل بھی سوامی

पाते हैं जो भाषा की रूप रेखा मे ढल जायँ और खप जायँ. जैसे हवाई जहाज़ मान लिया गया लेकिन तैयारा, जिसका मतलब भी वही है, नहीं माना गया. इसी तरह एडीटर और रेल है जो पसन्द किये गये लेकिन मुदीर और अयो मार्ग नही माने गये. हिन्दुस्तानी ने ऐसे शब्दों को नहीं अपनाया जो उसके स्वभाव मे दख़ल देते हो या गड़बड़ डालते हो.

इस में शक नही कि अगर हिन्दुस्तानी इसी ढंग पर तरक्की करती रही तो इसमे नये से नये विचार और पेचीदा से पेचीदा ख़याल, जिनको आज कल की भाषाओ में ज़ाहिर करने की जरूरत होती है, अच्छी तरह ज़ाहिर किये जा सकेंगे और इसका निजी रूप भी दूसरी भाषा के शब्द आ जाने के बावजूद कायम रहेगा इसी भाषा को देश की राष्ट्र भाषा मानना होगा क्योंकि यह जनता की बोली है. जनता ने इसे विकास दिया और जनता ने ही इसे इस्तेमाल किया. यही भाषा हमारी सरकारी भाषा हिन्दी को सुडौल बनायेगी और उसे मालामाल करेगी.

इस तरह के बनाये हुए कुछ शब्द भद्दे भी हो सकते है इसलिये हम अच्छे शब्दों की तलाश जारी रक्खेंगे और अच्छे शब्द मिल जाने पर पुराने शब्दों को बदला भी जा सकता है.

अब मैं कुछ शब्द इस बारे मे भी कहूंगी कि संस्कृत का हमारी राष्ट्र भाषा और हमारी क़ौमी ज़िन्दगी मे क्या स्थान है. संस्कृत का महत्व हमारे लिये उससे कहीं ज़्यादा है जो योरप-वासियो में लैटिन और यूनानी भाषा का है. यह वह भाषा है जिसमे हमारी

آ پاتے ھیں جو بھاشا کی روپ ریکھا میں ڈھل جائیں اور کھپ جائیں. جیسے ھوائی جہاز مان لیا گیا لیکن طیارہ جس کا مطلب بھی وھی ھے ' نہیں مانا گیا. اِسی طرح ایڈیٹر اور ریل ھیں جو پسند کئے گئے لیکن مدیر اور ایومارگ نہیں مانے گئے. ھندستانی نے ایسے شبدوں کو نہیں اپنایا جو اُس کے سبھاو میں دخل دیتے ھوں یا گڑبڑ ڈالتے ھوں.

اِس میں شک نہیں کہ اگر ھندستانی اِسی ڈھنگ پر ترقی کرتی رھی تو اِس میں نئے سے نئے وچار اور پیچیدہ سے پیچیدہ خیال ' جن کی آج کل کی بھاشاؤں میں ظاھر کرنے کی ضرورت ھوتی ھے ' اچھی طرح ظاھر کئے جاسکیں گے اور اِس کا نجی روپ بھی دوسری بھاشا کے شبد آ جانے کے باوجود قایم رھیگا. اِسی بھاشا کو دیش کی راشٹر بھاشا ماننا ھوگا کیونکہ یہ جنتا کی بولی ھے ' جنتا نے اِسے وکاس دیا ھے اور جنتا نے ھی اِسے اِستعمال کیا ھے یہ بھاشا ھماری سرکاری بھاشا ھندی کو سڈول بنائیگی اور اُسے مالا مال کریگی.

اِس طرح کے بنائے ھوے کچھ شبد بھدے بھی ھوسکتے ھیں اِس لئے ھم اچھے شبدوں کی تلاش جاری رکھیں گے اور اچھے شبد مل جانے پر پرانے شبدوں کو بدلا بھی جاسکتا ھے

اب میں کچھ شبد اِس بارے میں بھی کہوں گی کہ سنسکرت کا ھماری راشٹر بھاشا اور ھماری قومی زندگی میں کیا استھان ھے. سنسکرت کا مہتو ھمارے لئے اُس سے کہیں زیادہ ھے جو یورپ واسیوں میں لیٹن اور یونانی بھاشا کا ھے . یہ وہ بھاشا ھے جس میں ھماری

बुनियादी शब्दों में ही नये शब्दों के सही होने का प्रमाण मिल जाता है. जैसे बुनियादी शब्द 'एक' लीजिये. इससे एका, इकाई, अकेला बने. इन तीनो शब्दों के अर्थ की कल्पना 'एक' के अर्थ की कल्पना के साथ ही हो जाती है. ठीक ऐसे ही यूनियन के लिए 'इकावा' 'एक' से बनाया जा सकता है जो हम पर संघ के मुकाबले मे यूनियन का ज्यादा सही अर्थ जाहिर कर देता है 'सघ' जो हिन्दी मे इस्तेमाल होता है वह फेडरेशन के लिये ज्यादा सही जचता है न कि यूनियन के लिये. इन्ही असूलो के मातहत हिन्दुस्तानी मे सादे, आसान और अपने आप समझ मे आजाने वाले शब्द बनाये जा सकते हैं जैसे प्रेसीडेन्ट के लिये 'राजपति', पार्लियामेन्ट के लिये 'राज पंचायत', गवर्नर के लिए 'रियासत-पति', लेजिस्लेचर के लिये 'क़ानून-सभा', जियालोजी के लिये 'भू-विद्या', जूआलोजी के लिये 'प्रानी-विद्या', एरोनाटिक्स के लिये 'उडान-विद्या', मैटीरियलिज्म के लिये 'माटी-वाद' वगैरा.

और और भाषाओ से नये नये शब्दो को अपनाने के कारन हिन्दुस्तानी का बुनियादी शब्द कोश बराबर बढ़ रहा है. इस मामले में हिन्दुस्तानी, भाषा के विकास का स्वाभाविक और साइनटिफिक तरीक़ा अपना रही है. लेकिन यह न समझना चाहिये कि शब्दो को अपनाने का यह तरीक़ा बे असूल और बे सोचे समझे ढग से चल रहा है बल्कि चुनाव स्वाभाविक ढंग से हो रहा है क्योकि जनता खुद ही भाषा को अपनाने की भावना (जज्बे) से मजबूर होकर अनजाने ही ऐसा कर रही है और इस तरह केवल वही शब्द आ

بنیادی شبدوں میں ہی نئے شبدونکے' سہی ہونے کا پرمان مل جاتا ہے. جیسے بنیادی شبد 'ایک' لیجئے. اِس سے ایکا' اِکائی' اکیلا' بنے. اِن تینوں شبدونکے آرتھ کی کلپنا 'ایک' کے آرتھ کی کلپنا کے ساتھ ہی ہو جاتی ہے. ٹھیک ایسے ہی یونین کے لئے 'اکاوا' 'ایک' سے بنایا جا سکتا ہے جو ہم پر سنگھ کے مقابلے میں 'یونین' کا زیادہ سہی آرتھ ظاہر کردیتا ہے. 'سنگھ' جو ہندی میں استعمال ہوتا ہے وہ فیڈریشن کے لئے زیادہ سہی جچتا ہے نہ کہ یونین کے لئے. اِنہیں اُصولوں کے ماتحت ہندستانی میں سادے' آسان اور اپنے آپ سمجھ میں آجانے والے شبد بنائے جا سکتے ہیں جیسے پریسیڈنٹ کے لئے 'راج پتی' پارلیامنٹ کے لئے 'راج پنچایت' گورنر کے لئے 'ریاست پتی' لیجس لیچر کے لئے 'قانون سبھا' جیالوجی کے لئے 'بھو ودیا' زوآلوجی کے لئے 'پرانی ودیا' ایروناٹکس کے لئے 'اُڑان ودیا' میٹیریلزم کے لئے 'ماٹی واد' وغیرہ.

اور اور بھاشاؤں سے نئے نئے شبدوں کو اپنانے کے کارن ہندستانی کا بنیادی شبد کوش برابر بڑھ رہا ہے. اِس معاملے میں ہندستانی' بھاشا کے وکاس کا سوابھاوک اور سائنٹفک طریقہ اپنا رہی ہے. لیکن یہ نہ سمجھنا چاہئے کہ شبدوں کو اپنانے کا یہ طریقہ بے اُصول اور بے سوچے سمجھے ڈھنگ سے چل رہا ہے بلکہ چناو سوابھاوک ڈھنگ سے ہو رہا ہے. کیونکہ جنتا خود ہی بھاشا اپنانے کی بھاونا (جذبے) سے مجبور ہوکر انجانے ہی ایسا کر رہی ہے اور اِس طرح کیول وہی شبد

"जैसे संस्कृत का खूबसूरत और शानदार ढांचा थोड़ी सी धातुओं (मूल शब्दों) से तैयार किया गया है उसी तरह हिन्दुस्तानी में भी बहुत से बुनियादी शब्द ऐसे मौजूद हैं जिनसे इस भाषा का भी ऐसा ही खूबसूरत शब्द भंडार बन सकता है और वह हमारी जरूरतो को काफी होगा. क़ुदरती तौर पर बुनियादी शब्दो का यह समूह ज्यादा-तर संस्कृत से ही लिया गया है लेकिन धीरे धीरे समय गुज़रने पर इसमें और और भाषाओ के भी शब्द ले लिये गये हैं. ठीक ऐसा ही संस्कृत भाषा मे भी पुराने समय मे किया गया है और आज कल की जीती जागती तरक्की करने वाली भाषाओ मे भी ऐसा ही किया जा रहा है. इसी बुनियादी शब्द भंडार के आधार पर व्याकरन का सहारा लेते हुए नए शब्द बनाये जा सकते हैं. व्याकरन के यह असूल संस्कृत या फारसी से बिलकुल अलग है. नीचे की मिसाल यह बात साफ कर देगी. संस्कृत मे उन सज्ञाओ (इस्मो) से जिन के अन्त मे छोटा 'अ' हो विशेषण (सिफत) बनाने के लिये बहुत से अक्षरों मे से कोई एक अक्षर अन्त में जोड़ा जाता है. फारसी और अरबी के दूसरे असूल हैं लेकिन हिन्दुस्तानी मे आखिरी हरफ़ मे बड़ी 'ई' जोड देते हैं, जिससे हिन्दुस्तानी को आसान पसन्दी जाहिर है. मिसाल के लिए जैसे विधान से विधानी, क़ानून से कानूनी, अंग्रेज (पुर्तगाली शब्द है) से अंग्रेजी. इस असूल मे कभी भी कोई रद्दो बदल नहीं और कितनी सादगी है इसमे.

नये शब्दों को बनाने के लिये हिन्दुस्तानी अपने बुनियादी शब्दों की तरफ झुकती है और नये शब्दों को ऐसा सुडौल ढालती है कि

"جیسے سنسکرت کا خوبصورت اور شاندار ڈھانچا تھوڑی سی دھاتوؤں (مول شبدوں) سے تیار کیا گیا ہے اُسی طرح ہندستانی میں بھی بہت سے بنیادی شبد ایسے موجود ہیں جن سے اس بھاشا کا بھی ایسا ہی خوبصورت شبد بھنڈار بن سکتا ہے اور وہ ہماری ضرورتوں کو کافی ہوگا۔ قدرتی طور پر بنیادی شبدوں کا یہ سموہ زیادہ تر سنسکرت سے ہی لیا گیا ہے لیکن دھیرے دھیرے سمے گذرنے پر اِس میں اور اور بھاشاؤں کے بھی شبد لے لئے گئے ہیں۔ ٹھیک ایسا ہی سنسکرت بھاشا میں بھی پرانے سمے میں کیا گیا ہے اور آج کل کی جیتی جاگتی ترقی کرنے والی بھاشاؤں میں بھی ایسا ہی کیا جا رہا ہے۔ اِسی بنیادی شبد بھنڈار کے آدھار پر ویاکرن کا سہارا لیتے ہوئے نئے شبد بنائے جا سکتے ہیں۔ ویاکرن کے یہ اُصول سنسکرت یا فارسی سے بالکل الگ ہیں۔ نیچے کی مثال یہ بات صاف کردے گی۔ سنسکرت میں اُن سنگیاؤں (اِسموں) سے جن کے انت میں چھوٹا 'अ' ہو وشیشن (صفت) بنانے کے لئے بہت سے اکشروں میں سے کوئی ایک اکشر انت میں جوڑا جاتا ہے۔ فارسی اور عربی کے دوسرے اُصول ہیں لیکن ہندستانی میں آخری حرف میں بڑی (ई) جوڑ دیتے ہیں جس سے ہندستانی کی آسان پسندی ظاہر ہے۔ مثال کے لئے جیسے ودھان سے ودھانی، قانون سے قانونی، انگریز (پرتگالی شبد ہے) سے انگریزی۔ اس اُصول میں کبھی بھی کوئی رد و بدل نہیں اور کتنی سادگی ہے اس میں۔"

نئے شبدوں کو بنانے کے لئے ہندستانی اپنے بنیادی شبدوں کی طرف جھکتی ہے اور نئے شبدوں کو ایسا سڈول ڈھالتی ہے کہ

को लेख में बताया है कि भारत की राज भाषा तै हो जाने से अब 'हिन्दी' किसी ख़ास सूबे या लोगों के किसी ख़ास गिरोह या फ़िरक़े की भाषा न होगी, बल्कि सब प्रान्तों और हर गिरोह के लोग यहाँ तक कि वह भी, जिन की मातृ भाषा हिन्दी नही है, इस की तरक्की में भाग लेगे. अब इस भाषा में दूसरी भाषाओ के अलगाव के बजाय सभों का खपाव होगा और अपने शब्द भंडार की बढ़ौती के लिए वह आज़ादी से हिन्दुस्तान की तमाम भाषाओ के रूप, शैलियाँ और महावरे अपने मे हज़म करती रहेगी [जिन भाषाओ की सूची विधान की पट्टी (७—ए) मे दी गई है और जिनमें हिन्दुस्तानी और उर्दू भी शामिल हैं]

इस फ़ैसले मे 'सिवाय इसके कि संस्कृत पर कुछ ज्यादा ज़ोर दिया गया है और देवनागरी को ही महज़ सरकारी लिखावट माना गया है' सब कुछ वही है जैसा कि वह लोग 'जो भारत की एक राष्ट्र भाषा चाहते थे जो हिन्दुस्तानी कहलाती रही है' सदा से कोशिश करते रहे हैं. उस बोली का यह नाम बहुत पुराना है जो कि उत्तरी भारत की जनता मे ज्यादा तर लोगो मे बोली जाती है. यही बोली बुनियादी रूप मे पच्छिमी हिन्दी का वह रूप है जिसे खड़ी बोली कहते हैं. इस भाषा ने देहली, आगरा और उसके आस पास मे राज दरबार, अमीरों व सरदारो में (जिन मे हिन्दू और मुसलमान दोनो थे) बोले जाने वाले फ़ारसी और अरबी के बहुत से शब्दो को पचा लिया. योरप के लोगो के आने पर इस भाषा ने तेज़ी से योरप की भाषाओं के शब्दों को भी पचा लिया. असल में शुरू ही से यह भाषा

هوےلیکھ میں بتایا هے کہ بھارت کی راج بھاشا طے هو جانے سے آب ' هندی ' کسی خاص صوبے یا لوگوں کے کسی خاص گروہ یا فرقے کی بھاشا نہ هوگی ' بلکہ سب پرانتوں اور هر گروہ کے لوگ یہاں تک کہ وہ بھی ' جن کی ماتری بھاشا هندی نہیں هے ' اس کی ترقی میں بھاگ لینگے. اب اِس بھاشا میں دوسری بھاشاؤں کے الگاو کے بجاے سبھوں کا کھپاو هوگا اور اپنے شبد بھنڈار کی بڑھوتی کے لئے وہ آزادی سے هندستان کی تمام بھاشاؤں کے روپ ' شیلیاں اور محاورے اپنے میں هضم کرتی رهیگی. [جن بھاشاؤں کی سوچی ودھان کی پٹی (۷ – اے) میں دی گئی هے اور جن میں هندستانی اور اُردو بھی شامل هیں .]

اس فیصلے میں 'سواے اس کے کہ سنسکرت پر کچھ زیادہ زور دیا گیا هے اور دیوناگری کو هی محض سرکاری لکھاوٹ مانا گیا هے' سب کچھ وهی هے جیسا کہ وہ لوگ' 'جو بھارت کی ایک راشٹر بھاشا چاهتے تھے' جو هندستانی کہلاتی رهی هے سدا سے کوشش کرتے رهے هیں. اِس بولی کا یہ نام بہت پرانا هے جو کہ اُتری بھارت کی جنتا میں زیادہ تر لوگوں میں بولی جاتی هے. یہی بولی بنیادی روپ میں پچھمی هندی کا وہ روپ هے جسے کھڑی بولی کہتے هیں. اس بھاشا نے دهلی، آگرہ اور اُس کے آس پاس میں راج دربار ' امیروں و سرداروں میں (جن میں هندو اور مسلمان دونوں تھے) بولے جانے والے فارسی اور عربی کے بہت سے شبدوں کو پچا لیا' یوروپ کے لوگوں کے آنے پر اس بھاشا نے تیزی سے یوروپ کی بھاشاؤں کے شبدوں کو بھی پچا لیا. اصل میں شروع هی سے یہ بھاشا

भारत की राज भाषा

[श्रीमती रामेश्वरी नेहरू]

भारतीय विधान सभा ने हाल ही में हिन्दी को देश की राजभाषा करार दिया है. शायद इस समय यही फैसला सब से अच्छा था. पर सवाल यह है कि वह 'हिन्दी' जो राज भाषा बनने जा रही है, कैसी होगी और उसकी रूप-रेखा क्या रहेगी

खुश किस्मती से विधान बनाने वालों ने विधान की ही धारा (३०१—२) में निश्चित शब्दों में तय कर दिया है कि हिन्दी से उनका मतलब उस भाषा से है जिसमें भारत की मिली जुली कल्चर के तमाम पहलुओं को जाहिर किया जा सके और जिसमें उसके अपने स्वभाव और उसकी अपनी आत्मा को नुकसान पहुंचाये बिना भारत की तमाम भाषाओं हिन्दुस्तानी वगैरा के रूपों उनकी शैलियों और महावरों को शामिल किया जा सके और जिसमें जरूरत के समय आज़ादी के साथ पहले तो संस्कृत से और फिर तमाम दूसरी भाषाओं से शब्द अपनाये जा सकें और शामिल कर लिए जाय

इस अवलेख के उन फिकरों पर, जिनके नीचे लकीरें हैं खास तौर से ध्यान देने पर यह जाहिर है कि यह राज भाषा भारत की मिली जुली कल्चर के तमाम पहलुओं को जाहिर करने का खास जरिया होगी या दूसरे शब्दों में जैसा कि सूचना और ब्राडकास्टिङ्ग विभाग वज़ीर श्री आर० आर० दिवाकर ने हाल ही में अपने एक छपे

بھارت کی راج بھاشا

[شریمتی رامیشوری نہرو]

بھارتیہ ودھان سبھا نے حال ہی میں ہندی کو دیش کی راج بھاشا قرار دیا ہے شاید اِس سمے یہی فیصلہ سب سے اچھا تھا. پر سوال یہ ہے کہ وہ 'ہندی' جو راج بھاشا بننے جارہی ہے کیسی ہوگی اور اُسکی روپ ریکھا کیا رہیگی

خوش قسمتی سے ودھان بنانے والوں نے ودھان کی ہی دھارا (۳۰۱—۱) میں نشچت شبدوں میں طے کردیا ہے کہ ہندی سے اُن کا مطلب اُس بھاشا سے ہے جس میں بھارت کی ملی جلی کلچر کے تمام پہلوؤں کو ظاہر کیا جاسکے اور جس میں اس کے اپنے سبھاؤ اور اس کی اپنی آتما کو نقصان پہنچائے بنا بھارت کی تمام بھاشاؤں ہندستانی وغیرہ کے روپوں ان کی شیلیوں اور محاوروں کو شامل کیا جسکے اور جس میں ضرورت کے سمے آزادی کے ساتھ پہلے تو سنسکرت سے اور پھر تمام دوسری بھاشاؤں سے شبد اپنائے جاسکیں اور شامل کر لئے جائیں

اِس اولیکھ کے اُن فقروں پر جن کے نیچے لکیریں ہیں خاص طور سے دھیان دینے پر یہ ظاہر ہے کہ یہ راج بھاشا بھارت کی ملی جلی کلچر کے تمام پہلوؤں کو ظاہر کرنے کا خاص ذریعہ ہوگی یا دوسرے شبدوں میں جیسا کہ سوچنا اور براڈکاسٹنگ وبھاگ کے وزیر شری آر - آر - دیواکر نے حال ہی میں اپنے ایک چھپے

को जाहिर करने का जरिया हो सकती है और जो इतिहास के पिछले पाँच सौ साल से, अपने स्वभाव को हानि पहुँचाए बिना, हिन्दुस्तान की तमाम भाषाओं के शब्दों, शैलियों और रूपों को अपनाती और हजम करती रही है, तो वह हिन्दुस्तानी ही है.

फिर भी कुछ लोगों का खयाल है कि हिन्दुस्तानी सारे देश की भाषा होने के बावजूद ऊँचे विचारों और जिन्दगी के पेचीदा मसलों और पारिभाषिक (इस्तलाही) शब्दों के जाहिर करने का जरिया नहीं बन सकती. इसके लिए उर्दू या हिन्दी का सहारा लेना ही पड़ेगा लेकिन यह गलत खयाल है हिन्दुस्तानी में हर तरह के मौजूदा खयाल को प्रकट करने की योग्यता उस संगमरमर के टुकड़े की तरह है जिसे हम किसी भी रूप में तराश सकते हैं दुख इस बात का है कि हिन्दुस्तानी के संगमरमर को धीरे धीरे सन्तोष और सावधानी से तराशने के बजाय लोगों ने इसे फ़ारसी, अरबी और संस्कृत के तैयार गहनों और फ़िकरों से सजाने की कोशिश की. यह मेहनत से बचने की पालीसी थी जिसका नतीजा यह निकला कि जैसे संगमरमर के आधे तराशे हुए टुकड़े में (जो एक खूबसूरत मूर्ति बनने जा रहा था) जल्दी से हाथ, पैर और दूसरे अंग दूसरी जगह से लाकर जोड़ दिए गए हों और इस तरह एक भद्दी मूर्ति तैयार कर ली गई हो. आज ज़रूरत इस बात की है कि इस खूबसूरत और अधूरी मूर्ति से नकली और अलग से लगाए गए अङ्गों को निकाल दिया जाय और खुसरो, कबीर, मीरा, तुलसी और सूर की छेनियों से फिर से तराशा जाय. यह काम कैसे किया जाय इसे एक मशहूर विद्वान ने यों बताया है—

کو ظاہر کرنے کا ذریعہ ہو سکتی ہے اور جو اپنے اتہاس کے پچھلے پانچ سو سال سے اپنے سبھاؤ کو ہانی پہنچائے بنا ہندستان کی تمام بھاشاؤں کے شبدوں، شیلیوں اور روپوں کو اپناتی اور ہضم کرتی رہی ہے، تو وہ ہندستانی ہی ہے۔

پھر بھی کچھ لوگوں کا خیال ہے کہ ہندستانی سارے دیش کی بھاشا ہونے کے باوجود اونچے وچاروں اور زندگی کے پیچیدہ مسئلوں اور پاریبھاشک (اصطلاحی) شبدوں کے ظاہر کرنے کا ذریعہ نہیں بن سکتی۔ اس کے لئے اردو یا ہندی کا سہارا لینا ہی پڑیگا لیکن یہ غلط خیال ہے۔ ہندستانی میں ہر طرح کے موجودہ خیال کو پرکٹ کرنے کی یوگیتا اس سنگ مرمر کے ٹکڑے کی طرح ہے جسے ہم کسی بھی روپ میں تراش سکتے ہیں۔ دکھ اس بات کا ہے کہ ہندستانی کے سنگ مرمر کو دھیرے دھیرے سنتوش اور ساودھانی سے تراشنے کے بجائے لوگوں نے اسے فارسی عربی اور سنسکرت کے تیار گہنوں اور فقروں سے سجانے کی کوشش کی۔ یہ محنت سے بچنے کی پالیسی تھی جس کا نتیجہ یہ نکلا کہ جیسے سنگ مرمر کے آدھے تراشے ہوئے ٹکڑے میں (جو ایک خوبصورت مورتی بن نے جا رہا تھا) جلدی سے ہاتھ، پیر اور دوسرے انگ دوسری جگہ سے لاکر جوڑ دئے گئے ہوں اور اس طرح ایک بھدی مورتی تیار کرلی گئی ہو۔ آج ضرورت اس بات کی ہے کہ اس خوبصورت اور ادھوری مورتی سے نقلی اور الگ سے لگائے گئے انگوں کو نکال دیا جائے اور خسرو، کبیر، میرا، تلسی اور سور کی چھینیوں سے پھر سے تراشا جائے۔ یہ کام کیسے کیا جائے اسے ایک مشہور ودوان نے یوں بتایا ہے۔

अपने लोच और किसी हद तक छा जाने की शक्ति के कारन सारे देश की भाषा बन गई थी. हर आदमी इसको आसानी से अपना लेता है, समझ लेता है और बिना ज्यादा कोशिश के इस भाषा मे अपना भाव दूसरो पर प्रकट कर सकता है. बहुत सी जातियो और फ़िरक़ो की बोली बन जाने के कारन इस बोली की क़ुदरती तौर पर कई शैलियाँ बन गईं मुग़ल दरबार मे इस बोली मे फारसी और अरबी शब्दों की लरमार हो गई और वही इसका नाम उर्दू पड़ा. बाद मे एक दूसरे गिरोह ने फारसी और अरबी के शब्दो को संस्कृत से बदल दिया और भाषा का नाम हिन्दी रख दिया यही दोनो हिन्दुस्तानी के साहित्यिक रूप हैं इसके बाद दूसरे प्रान्तो के लोगो ने भी इसे इस्तेमाल करना शुरू कर दिया और हिन्दुस्तानी की अपनी अपनी खास शैलियो का विकास इन लोगो के ज़रिए हुआ हिन्दुस्तानी उर्दू का दूसरा नाम है. इसमें आधी ही सच्चाई है और उतनी ही सच्चाई इस कथन मे भी है कि हिन्दुस्तानी हिन्दी का दूसरा नाम है. हिन्दुस्तानी का बंगाली, मराठी और गुजराती से भी बहुत नज़दीक का सम्बन्ध है. इन तमाम भाषाओ का। शब्दावली बहुत हद तक मिलती जुलती है फरक़ केवल शब्दो की बाहरी रूप रेखा मे है. इस भाषा के दक्खिन मे फैलने से बहुत कुछ इस बात की उम्मीद है कि दक्खिनी भाषाओं के भी शब्द हिन्दुस्तानी मे आजायेंगे और कुछ ही समय में हिन्दुस्तानी और इन भाषाओं में भी बहुत कुछ समानता हो जायगी. इस लिए अगर हिन्दुस्तान की कोई ऐसी भाषा है जो सही तौर से भारत की मिली जुली कलचर के तमाम पहलुओं

اپنے لوچ اور کسی حد تک چھا جانے کی شکتی کے کارن سارے دیش کی بھاشا بن گئی تھی ہر آدمی اس کو آسانی سے اپنا لیتا ہے، سمجھ لیتا ہے اور بنا زیادہ کوشش کے اس بھاشا میں اپنا بھاؤ دوسروں پر پرکٹ کرسکتا ہے. بہت سی جاتیوں اور فرقوں کی بولی بن جانے کے کارن اس بولی کی قدرتی طور پر کئی شیلیاں بن گئیں مغل دربار میں اس بولی میں فارسی اور عربی شبدوں کی بھرمار ہوگئی اور وہیں اس کا نام اُردو پڑا. بعد میں ایک دوسرے گروہ نے فارسی اور عربی کے شبدوں کو سنسکرت سے بدل دیا اور بھاشا کا نام ہندی رکھ دیا یہی دونوں ہندستانی کے ساہتیک روپ ہیں اس کے بعد دوسرے پرانتوں کے لوگوں نے بھی اسے استعمال کرنا شروع کردیا اور ہندستانی کی اپنی اپنی خاص شیلیوں کا وکاس اُن لوگوں کے ذریعے ہوا. ہندستانی اردو کا دوسرا نام ہے، اس میں آدھی ہی سچائی ہے اور اُتنی ہی سچائی اس کتھن میں بھی ہے کہ ہندستانی ہندی کا دوسرا نام ہے. ہندستانی کا بنگالی، مراٹھی اور گجراتی سے بھی بہت نزدیک کا سمبندھ ہے. ان تمام بھاشاؤں کی شبداولی بہت حد تک ملتی جلتی ہے. فرق کیول شبدوں کی باہری روپ ریکھا میں ہے. اس بھاشا کے دکھن میں پھیلنے سے بہت کچھ اس بات کی اُمید ہے کہ دکھنی بھاشاؤں کے بھی شبد ہندستانی میں آ جائیں گے اور کچھ ہی سمے میں ہندستانی اور ان بھاشاؤں میں بھی بہت کچھ سمانتا ہو جائیگی. اسلئے اگر ہندستان کی کوئی ایسی بھاشا ہے جو صحیح طور سے بھارت کی ملی جلی کلچر کے تمام پہلوؤں

भरमार थी और इन कारखानो से चीज़ो का निकास ज़रूरत से कहीं ज़्यादा था. जब जङ्ग शुरू होगई तो मुल्कके सब साधन इस मशीनी पैदावार को कई गुना बढ़ाने मे लगा दिये गये. नतीजा यह कि अमरीका मे चीज़ो की तैयारी इतने बड़े पैमाने पर होगई कि अमरीका के हाकिमो को इन चीज़ो के खपाने की फ़िक्र सताने लगी. जर्मनी लड़ाई मे हारा, वह इस आर्थिक घुड़-दौड़ मे पीछे रह गया. अगर मैदान मे कोई रहा तो सिर्फ़ अमरीका.

लड़ाई के शुरू मे अमरीका जङ्ग से अलग रहा और उधार पट्टा की चाल से मित्र राष्ट्रो को लड़ाई का सामान देता रहा और उन मुल्कों मे जो रहा सहा सोना था उस को हासिल करके अपने खज़ानों मे जमा करने लगा. साथ ही उन मुल्कों से कच्चा सामान भी हासिल करता रहा. जङ्ग मे अमली तौर पर शामिल होने के बाद भी अमरीका का रवैया यही रहा. चीन का घरेलू लड़ाई मे अमरीका ने ज़बरदस्ती दख़ल दिया सिर्फ़ इसलिये कि अपने यहां तैयार हुए जङ्गी सामान और दूसरे सामान को चीन मे खपावे और चीन के सोने को अपने हाथ मे कर ले

नतीजा यह हुआ कि चीन, बरतानिया, फ्रांस, हालैंड, बिलजियम, यूनान, मिस्र, लक्समबर्ग और दूसरे मुल्को का ज़्यादातर 'सोना अमरीका के हाथ आगया. इस सौदे का नतीजा यह हुआ कि अमरीका के भंडार सोने चान्दी से भर गये.

अब अमरीका को यह फ़िक्र पड़ी कि इतना सोना जमा करके वह क्या करेगा. इस लिये उसने मार्शल प्लान के नाम से एक नया

بھرمار تھی اور اِن کارخانوں سے چیزوں کا نکس ضرورت سے کہیں زیادہ تھا. جب جنگ شروع ہوگئی تو ملک کے سب سادھن اِس مشینی پیداوار کو کئی گنا بڑھانے میں لگا دیئے گئے. نتیجہ یہ کہ امریکہ میں چیزوں کی تیاری اتنے بڑے پیمانے پر ہو گئی کہ امریکہ کے حاکموں کو اِن چیزوں کے کھپانے کی فکر ستانے لگی. جرمنی لڑائی میں ہارا، وہ اِس آرتھک گھوڑ دوڑ میں پیچھے رہ گیا. اگر میدان میں کوئی رہا تو صرف امریکہ.

لڑائی کے شروع میں امریکہ جنگ سے الگ رہا اور اُدھار پٹہ کی چال سے متر راشٹروں کو لڑائی کا سامان دیتا رہا. اور اُن ملکوں میں جو رہا سہا سونا تھا اُس کو حاصل کرکے اپنے خزانوں میں جمع کرنے لگا- ساتھ ہی اُن ملکوں سے کچا سامان بھی حاصل کرتا رہا. جنگ میں عملی طور پر شامل ہونے کے بعد بھی امریکہ کا رویہ یہی رہا- چین کی گھریلو لڑائی میں امریکہ نے زبردستی دخل دیا صرف اِس لئے کہ اپنے یہاں تیار ہوئے جنگی سامان اور دوسرے سامان کو چین میں کھپاوے اور چین کے سونے کو اپنے ہاتھ میں کرلے.

نتیجہ یہ ہوا کہ چین، برطانیہ، فرانس، ہالینڈ، بلجیم، یونان، مصر، لکسمبرگ اور دوسرے ملکوں کا زیادہ تر سونا امریکہ کے ہاتھ آگیا- اِس سودے کا نتیجہ یہ ہوا کہ امریکہ کے بھنڈار سونے چاندی سے بھر گئے.

اب امریکہ کو یہ فکر پڑی کہ اِتنا سونا جمع کرکے وہ کیا کرے گا. اِس لئے اُس نے مارشل پلان کے نام سے ایک نیا

इस समय की आर्थिक उलझन क्यों ?

(भाई राम सिंह जी रावल)

लगभग सारी दुनिया मे आम शहरी के सामने अगर, कोई मसला है तो रहने सहने, खाने पीने के खर्चे का—बडी लड़ाई से पहले खाने पीने की चीजों की जो कीमते थीं वह कहा चली गई और फिर लौटेंगी या नहीं यह सवाल हर आम शहरी के मुंह पर है. जो मुल्क जङ्ग मे हार गये या किसी दूसरे मुल्क के गुलाम थे उनके बाशिन्दो को और जो मुल्क हाकिम थे और हाकिम है या जो जङ्ग मे जीते उन मुल्कों के बाशिन्दों को भी बराबर की आर्थिक उलझने है.

इसकी वजह एक यह है कि दुनिया सरमायादारी का शिकार है और दूसरी वजह जो पहली ही वजह का कुदरती नतीजा है यह है कि दुनिया की ज्यादातर दौलत एक मुल्क मे जमा हो चुकी है और दुनिया की आर्थिक तराजू का एक पलड़ा बहुत ऊपर और दूसरा बहुत नीचे चला गया है

अब सवाल होता है यह कैसे हुआ ?

१९३९ की जङ्ग से पहले ही दुनिया मे कल-कारखानो ने काफी तरक्की करली थी. अमरीका और जर्मनी इस तरक्की मे सब से बड़े चढ़े थे. इन में अमरीका का नम्बर पहला था इन दोनो मुल्कों में मशीन ने इतनी तरक्की करली थी कि बड़े बड़े कारखानो की

اِس سمے کی آرتھک اُلجھن کیوں ؟

(بھائی رام سنگھ جی راول)

لگ بھگ ساری دنیا میں عام شہری کے سامنے اگر کوئی مسئلہ ہے تو رہنے سہنے کھانے پینے کے خرچے کا—بڑی لڑائی سے پہلے کھانے پینے کی چیزوں کی جو قیمتیں تھیں وہ کہاں چلی گئیں اور پھر لوٹیں گی یا نہیں یہ سوال ہر عام شہری کے منہ پر ہیں جو ملک جنگ میں ہار گئے یا کسی دوسرے ملک کے غلام تھے اُن کے باشندوں کو اور جو ملک حاکم تھے اور حاکم ہیں یا جو جنگ میں جیتے اُن ملکوں کے باشندوں کو بھی برابر کی آرتھک اُلجھنیں ہیں

اِس کی وجہ ایک یہ ہے کہ دنیا سرمایہ داری کا شکار ہے اور دوسری وجہ جو پہلی ہی وجہ کا قدرتی نتیجہ ہے یہ ہے کہ دنیا کی زیادہ تر دولت ایک ملک میں جمع ہو چکی ہے اور دنیا کی آرتھک ترازو کا ایک پلڑا بہت اُوپر اور دوسرا بہت نیچے چلا گیا ہے۔

اب سوال ہوتا ہے یہ کیسے ہوا ؟

سن ۱۹۳۹ کی جنگ سے پہلے ہی دنیا میں کل کارخانوں نے کافی ترقی کرلی تھی امریکہ اور جرمنی اِس ترقی میں سب سے بڑھے چڑھے تھے۔ اِن میں امریکہ کا نمبر پہلا تھا اِن دونوں ملکوں میں مشین نے اتنی ترقی کرلی تھی کہ بڑے بڑے کارخانوں کی

तर्ज़ का नया है और इन्सान को इन्सानी हक़ दिलाने का सब से अच्छा तरीका है. इसी मे हिन्दुस्तान की भलाई और बडाई का भेद छिपा है.

हमारा भला इसी मे है कि हम अपने देहातो मे घरेलू दस्तकारियो को खूब बढ़ाये अपने हर गांव को आर्थिक निगाह से स्वावलम्बी बनायें और सिवाय ख़ास ज़रूरी चीज़ो के बडी बडी मशीनो और कल कारख़ानो से जहां तक हो सके अपने मुल्क को बचा कर रक्खे. केवल इसी तरह हम अपने पैरो पर खड़े हो सकते है और गैरो की आर्थिक गुलामी से बच सकते है.

طرز کا نیا هے آور انسان کو انسانی حق دلانے کا سب سے اچھا طریقه هے . اِسی میں هندستان کی بھلائی آور بڑائی کا بھید چھپا هے .

همارا بھلا اسی میں هے که هم اپنے دیہاتوںمیں گھریلو دستکاریوں کو خوب بڑھائیں . اپنے هر گانوں کو آرتھک نگاه سے سواولمبی بنائیں اور سوائے خاص ضروری چیزوں کے بڑی بڑی مشینوں اور کل کارخانوں سے جہاں تک هوسکے اپنے ملک کو بچا کر رکھیں کیول اسی طرح هم اپنے پیروں پر کھڑے هو سکتے هیں اور غیروں کی آرتھک غلامی سے بچ سکتے هیں

ढोंग रचा. इस प्लान के मुताबिक़ अमरीका की हकूतम लड़ाई मे पिटे योरपी मुल्को को माली इम्दाद देती है यानी सोना उन्हे उधार दिया जाता है ताकि वह उसी सोने से अमरीका का तैयार किया हुआ माल ख़रीद सके. अपने इस असर को कायम रखने के लिये अमरीका ने एक और चाल चली है इस माली ताक़त के जोर से अपने डालर की क़ीमत बढ़ा दी है और दूसरे मुल्को को अपने सिक्को की क़ीमत घटा देने पर मजबूर कर दिया है.

इस तरह अमरीका दुनिया पर अपना आर्थिक राज बनाये रखना चाहता है. मन्शा यह है कि अमरीका के कल कारख़ाने बढ़ते जायें, उनकी पैदावार बढ़ती रहे और उनके कारीगर काम पर लगे रहें. यह सब कुछ होता रहे और दूसरे मुल्को का क़ुर्बानी से होता रहे. दूसरे मुल्क सदा ग़रीब रहे. अमरीका से क़र्ज़ लेते रहें और इसी क़र्ज़ से अमरीका की तैयार की हुई चोजें ख़रीदते रहे.

इस तरह को चालें बहुत दिनों नही चल सकती. तराज़ू के पलड़े हमेशा ही एक दूसरे से बहुत ज्यादा ऊँचे नीचे नहीं रह सकते. एक तरफ़ रूस का साम्यवाद और दूसरी तरफ़ हिन्दुस्तान की नई आज़ाद हकूमत और उधर चोन मे इन्क़लाब की कामयाबी—यह सब अमरीका की इस सरमाया दारी लूट को जिन्दा न रहने देंगी.

हिन्दुस्तान की भलाई इसी में है कि वह अमरीका की इन चालों के साथ हुशयारी से पेश आये और अमरीका से बराबरी के रिश्ते पर फ़ायदा उठाने की कोशिश करे हिन्दुस्तान के पास एक ही नुस्ख़ा है और वह गांधी जी का बताया हुआ. गांधी जी का समाजवाद अपनी

ڈھونگ رچا. اِس پلان کے مطابق امریکہ کی حکومت لڑائی میں پٹے یورپی ملکوں کو مالی امداد دیتی ہے یعنی سونا اُنھیں اُدھار دیا جاتا ہے تاکہ وہ اُسی سونے سے امریکہ کا تیار کیا ہوا مال خرید سکیں - اپنے اِس اثر کو قائم رکھنے کے لئے امریکہ نے ایک اور چال چلی ہے - اِس مالی طاقت کے زور سے اپنے ڈالر کی قیمت بڑھا دی ہے اور دوسرے ملکوں کو اپنے سکوں کی قیمت گھٹا دینے پر مجبور کردیا ہے .

اِس طرح امریکہ دنیا پر اپنا آرتھک راج بنائے رکھنا چاہتا ہے. منشا یہ ہے کہ امریکہ کے کل کارخانے بڑھتے جائیں اُن کی پیداوار بڑھتی رہے. اور اُن کے کاریگر کام پر لگے رہیں یہ سب کچھ ہوتا رہے. اور دوسرے ملکوں کی قربانی سے ہوتا رہے دوسرے ملک سدا غریب رہیں . امریکہ سے قرض لیتے رہیں اور اُسی قرض سے امریکہ کی تیار کی ہوئی چیزیں خریدتے رہیں .

اِسطرح کی چالیں بہت دنوں نہیں چل سکتیں . ترازو کے پلڑے ہمیشہ ہی ایک دوسرے سے بہت زیادہ اُونچے نیچے نہیں رہ سکتے. ایک طرف روس کا سامیہواد اور دوسری طرف ہندستان کی نئی آزاد حکومت اور اُدھر چین میں انقلاب کی کامیابی-یہ سب امریکہ کی اِس سرمایہ داری لوٹ کو زندہ نہ رہنے دینگی .

ہندستان کی بھلائی اِسی میں ہے کہ وہ امریکہ کی اِن چالوں کے ساتھ ہشیاری سے پیش آئے اور امریکہ سے برابری کے رشتہ پر فائدہ اُٹھانے کی کوشش کرے . ہندستان کے پاس ایک ہی نسخہ ہے اور وہ گاندھی جی کا بتایا ہوا . گاندھی جی کا سماج واد اپنی

वही मानते हैं कि सरकार आगे नहीं बढ़ी ? क्या उन नासमझ विदेशियों को यह पता नहीं कि वह अख़बार जनता के मुख ही तो होते हैं और किसी मुल्क की जनता उस मुल्क की सरकार का टांगा होती है. अगर वह यह कहेगी कि सरकार आगे नहीं बढ़ी तो दूसरे शब्दों में यही तो कहेगी कि वह ख़ुद आगे नहीं बढ़ी. अपने आगे न बढ़ने की बात कौन कहा करता है ? और अगर कोई कहता ही है तो वह अपनी नम्रता दिखाता होगा. और अगर कोई विदेशी यह कह ही बैठे कि अगर सरकार को टांगे मे बैठना न आता हो और वह सब की सब आगे ही बैठ जायें तो टॉगा क्वाड़ होजाने से आगे नहीं बढ़ पायगा या सब की सब पीछे को बैठ जायं तो टॉगा उलट जायगा और सरकार चारों ख़ाने चित गिर जायगी. इस मे जनता का क्या दोष है ? इस मे तो सरकार ही का दोष है कि वह जनता के टॉगे पर ठीक से बैठना नहीं जानती. हम विदेशियों की इस तरह की दलील को वितन्डा वादियों की दलील मानते हैं. हम दलीलों से क़ायल होने वाले आदमी नहीं, और फिर उन की दलीलों के जो उदाहरण का बेजा इस्तेमाल करते हैं.

विदेशी बुरा न मानें. हम नाराज़ नहीं होवे और बिगड़ते भी नहीं हैं. पर 'यह है मामला हमारी सरकार का. हम तुम्हारे बहकावे में नहीं आ सकते.

भगवान दीन

یہی مانتے هیں که سرکار آگے نہیں بڑھی؟ کیا اُن ناسمجھ ودیشیوں کو یہ پتا نہیں کہ وہ اخبار جنتا کے مکھه هی تو هوتے هیں اور کسی ملک کی جنتا اُس ملک کی سرکار کا تانگه هوتی هے اگر وہ یہ کہیے گی که سرکار آگے نہیں بڑھی تو دوسرے شبدوں میں یہی تو کہیے گی که وہ خود آگے نہیں بڑھی ! اپنے آگے نه بڑھنے کی بات کون کہا کرتا هے ؟ اور اگر کوئی کہتا هی هے تو وہ اپنی نمرتا دکھاتا هوگا . اور اگر کوئی ودیشی یہ کہه هی بیٹھے که اگر سرکار کو تانگے میں بیٹھنا نه آتا هو اور وہ سب کی سب آگے هی بیٹھ جائے تو تانگه دباؤ هوجانے سے آگے نہیں بڑھ پائے گا . یا سب کی سب پیچھے هی بیٹھ جائے تو تانگه اُلٹ جائیگا اور سرکار چاروں خانے چت گر جائیگی . اس میں جنتا کا کیا دوش هے ؟ اِس میں تو سرکار کا هی دوش هے که وہ جنتا کے تانگے پر ٹھیک سے بیٹھنا نہیں جانتی . هم ودیشیوں کی اِس طرح کی دلیل کو وتنڈاوادیوں کی دلیل مانتے هیں. هم دلیلوں سے قائل هونے والے آدمی نہیں ' اور پھر اُن کی دلیلوں کے جو اُداهرن کا بیجا اِستعمال کرتے هیں

ودیشی برا نه مانیں . هم ناراض نہیں هوتے اور بگڑتے بھی نہیں هیں . پر یہ هے معامله هماری سرکار کا هم تمہارے بہکاوے میں نہیں آسکتے .

بھگوان دین

क्या कोई अमरीकी, वर्तानवी, रूसी एक सौ चव्वालीस बरस की उम्र ख़ुदा के यहां से ले के आया है ? थोड़े शब्दों मे विदेशी हमारे अख़बारों के ज़रिये से हमारी सरकार के बारे मे कुछ नहीं जान सकते और हम तक तो उनकी पहुच ही नहीं हो सकती न जाने यह विदेशी अनजानकार अपने अपने देशों मे जाकर हिन्दुस्तान के बारे मे कैसे जो चाहे जो कुछ कह डालने की हिम्मत कर जाते हैं. शायद हमारे जानकारों की नकल करते हैं. पर उन्हें यह नहीं मालूम कि हिन्दुस्तानी जानकार उस बोली के जो अमरीका और बर्तानिया मे बोली जाती है, इतने माहिर है कि बरसों वहा के बड़े बड़े जानकारों को उनकी बोली की तालीम दे सकते हैं इतना ही नहीं उन्होंने सात समुन्दर पार की बोली में हिन्दुस्तान की करोड़ों जनता की ओर से हिन्दुस्तान की सरकार के लिए बिधान रच डाला है जो इस बात का सबूत है कि हिन्दुस्तान के सारे गॉव नहीं हिन्दुस्तान का बच्चा बच्चा उस बोली से परचित है और शक हो तो कोई अमरीकन और बरतानवी आकर किसी गॉव में देख सकता है कि किस तरह इतने छोटे बच्चे जिनका रेल मे टिकट नहीं लगता, वन. टू, थिरी कह कर अपने साथियों को दौड़ने का हुक्म देते हैं. कहां हम हिन्दुस्तानी और कहा अमरीका बर्तानिया और रूस वाले ! कहां सूरज कहां पट बीजना (जुगनू)

विदेशी ज़रा सोचें तो कि जब हमारे अख़बार वाले यह कहते हैं कि सरकार पन्द्रह अगस्त सन् ४७ से पहली जनवरी सन ५० तक ज़रा भी आगे नहीं बढ़ी वहीं की वहीं है तो क्या वह सचमुच

کیا کوئي امریکي، برطانوي، روسي ایک سو چوالیس برس کي عمر خدا کے یہاں سے لیکے آیا ہے ؟ تھوڑے شبدوں میں بدیشي ہمارے اخباروں کے ذریعہ سے ہماري سرکار کے بارے میں کچھ نہیں جان سکتے اور ہم تک تو اُن کی پہونچ ہي نہیں ہوسکتي نہ جانے یہ بدیشي انجان کار اپنے اپنے دیشوں میں جاکر ہندستان کے بارے میں کیسے جی چاہے جو کچھ کہہ ڈالنے کي ہمت کر جاتے ہیں. شاید ہمارے جانکاروں کي نقل کرتے ہیں پر اُنھیں یہ نہیں معلوم کہ ہندوستاني جان کار اُس بولي کے جو امریکہ اور برطانیہ میں بولی جاتي ہے، اتنے ماہر ہیں کہ برسوں وہاں کے بڑے بڑے جانکاروں کو اُن کی بولي کي تعلیم دے سکتے ہیں اتنا ہی نہیں اُنھوں نے سات سمندر پار کی بولي میں ہندستان کی کروڑوں جنتا کی اُور سے ہندستان کي سرکار کے لئے ودھان رچ ڈالا ہے جو اِس بات کا ثبوت ہے کہ ہندستان کے سارے گاؤں نہیں ہندستان کا بچہ بچہ اُس بولي سے پرچت ہے اور شک ہو تو کوئي امریکن اور برطانوي آکر کسي گاؤں میں دیکھ سکتا ہے کہ کس طرح اِتنے چھوٹے بچے جنکا ریل میں ٹکٹ نہیں لگتا' ون' ٹو' تھری کہکر اپنے ساتھیوں کو دوڑنے کا حکم دیتے ہیں کہاں ہم ہندستاني اور کہاں امریکہ' برطانیہ اور روس والے ! کہاں سورج اور کہاں پٹ بیجنا (جگنو)

بدیشي ذرا سوچیں تو کہ جب ہمارے اخبار والے یہ کہتے ہیں کہ سرکار پندرہ اگست سنہ ۴۷ سے پہلی جنوری سنہ ٥٠ تک ذرا بھی آگے نہیں بڑھی' وہیں کی وہیں ہے تو کیا وہ سچ مچ

कर बैठें तो वह बड़े नुकसान में रहे क्या हिन्दुस्तान घर के हम समझदार रहने वाले सरकार के बदलने की बात सोच सकते हैं? सरकार उसी लड़की की तरह से ख़ूब वाक़िफ़ है और सुनी अनसुनी किये अपने काम मे लगी हुई है. इतना ही नहीं अपने रिश्ते के बल पर कभी कभी वह रूठ कर बैठ जाने की धमकी भी दे बैठती है. हम सब तो सहम जाते है क्योंकि हम जानते हैं कि यह कच्ची-पक्की रोटी बना कर खिला तो देती है. और कहीं रूठ गई तो उन कच्ची रोटियो के लिये भी तरस जायेंगे. पर यह सब बातें हम अपने दिल मे रखते है, उसको ज़ाहिर नहीं करते. उससे तो हम बहादुरों का सा चेहरा बनाकर यही कहते रहते है कि हम उसकी बिलकुल परवाह नहीं करते और अगर वह रूठ जायगी. तो हम अपनी कच्ची पक्की ठोक लेंगे पर वह हमारी कमज़ोरी को ख़ूब समझती है और उसे वह बातें अच्छी तरह से याद है कि जब वह एक बार रूठी थी तो हम कितनी जल्दी उसे मनाने के लिए पहुँचे थे और वह भी मान तो जल्दी गई थी पर बहुत नख़रों के बाद

क्या यह सब बातें विदेशी समझते है ? और वह समझ भी कैसे सकते है ? अव्वल तो वह यहां की बोली नहीं जानते और अगर वह सीखने ही लगे तो सौ बरस की उम्र मे भी यहां की बोलियां नहीं सीख सकते यहां वैसे तो बहुत सी बोलियाँ है पर मोटी मोटी बोलियां भी कई है. अगर एक एक बोली के लिए बारह बरस दिये जायें तो अट्ठारह बोलियो के लिए १४४ बरस होते हैं

کر بیٹھیں تو وہ بڑے نقصان میں رھیں. کیا ھندستان گھر کے ھم سمجھدار رھنے والے سرکار کے بدلنے کی بات سوچ سکتے ھیں ؟ سرکار اُسی لڑکی کیطرح سے خوب واقف ھے اور سنی اَن سنی کئے اپنے کام میں لگی ھوئی ھے. اتنا ھی نہیں اپنے رشتہ کے بل پر کبھی کبھی وہ روٹھ کر بیٹھ جانے کی دھمکی بھی دے بیٹھتی ھے ھم سب تو سہم جاتے ھیں کیونکہ ھم جانتے ھیں کہ یہ کچی پکی روٹی بناکر کھلا تو دیتی ھے اور کہیں روٹھ گئی تو اُن کچی روٹیوں کے لئے بھی ترس جائیں گے پر یہ سب باتیں ھم اپنے دل میں رکھتے ھیں اُس کو ظاھر نہیں کرتے اُس سے تو ھم بہادروں کا سا چہرہ بناکر یہی کہتے رھتے ھیں کہ ھم اُس کی بالکل پرواہ نہیں کرتے اور اگر وہ روٹھ جائیگی تو ھم اپنی کچی پکی ٹھوک لیں گے پر وہ ھماری کمزوری کو خوب سمجھتی ھے اور اُسے وہ باتیں اچھی طرح سے یاد ھیں کہ جب وہ ایک بار روٹھی تھی تو ھم کتنی جلدی اُسے منانے کیلئے پہونچے تھے اور وہ بھی مان تو جلدی گئی تھی پر بہت نخروں کے بعد.

کیا یہ سب باتیں بدیسی سمجھتے ھیں ؟ اور وہ سمجھ بھی کیسے سکتے ھیں ؟ اول تو وہ یہاں کی بولی نہیں جانتے اور اگر وہ سیکھنے ھی لگیں تو سو برس کی عمر میں بھی یہاں کی بولیاں نہیں سیکھ سکتے. یہاں ویسے تو بہت سی بولیاں ھیں پر موٹی موٹی بولیاں بھی کئی ھیں. اگر ایک ایک بولی کیلئے بارہ برس دئے جائیں تو اٹھارہ بولیوں کے لئے ۱۴۴ برس ھوتے ھیں.

कहीं कच्ची होगी, सब्जी और दाल का भी यही हाल होगा. पर उसके भाई और बाप उसी कच्चे-पक्के खाने को खाकर ख़ुश होंगे और तारीफ करेंगे. और इस से उस लड़की का भला ही होगा. दो चार दिन मे अच्छी रोटी बनाना सीख जावगी. हो सकता है उसकी बड़ी बहन कुछ नाक भी सिकोड़े. पर ऐसा करने मे वह ज़रा ऊँच नीच सोचेगी और वह समझेगी कि अगर मैंने कुछ ऐब निकाले तो वह काम मेरे ही सिर पड़ेगा और यह कि मैं ही कौन खाना बनाना जानती हूँ इस लिए वह भी चुप रहने मे ही भला समझेगी. हां, उसकी सहेलिया हो सकता है कुछ ऐब निकालें पर वह भी सोच समझ कर चुप हो जाना ही ठीक समझेंगी पड़ोसी तक उस लड़की के हाथ का खाना खा कर ख़ुश हो होगे और तारीफ करेंगे. बस, यही हाल तो हमारी सरकार का है वह ख़ूब रुपये बर्बाद कर रही है वह बहुत से काम उठाती है और उनको अधूरा छोड़ देती है. कितने ही कामो का तरफ उसका ध्यान ही नहीं जाता. कितने ही कामो पर वह बेहद ज़ोर लगा देती है कभी कभी वह एक तरफ इतना ज्यादा लगाता है कि दूसरी तरफ वह देख ही नहीं पाती कि कितना नुक़सान हो रहा है. क्या इन सब बातो से सरकार की मां कांग्रेस और कांग्रेस माने हम सब हिन्दुस्तानी सरकार से बिगड़ते हैं? हम सब बेहद ख़ुश होते हैं. हम ख़ूब समझते हैं कि बिना नुक़सान किये कभी कोई काम नहीं सीखा जा सकता क्या किसी समझदार घर के आदमी एक लड़की के खाना बनाते वक्त ज्यादा नुक़सान कर देने से उसका खाना बनाना बन्द कर देते हैं? ऐसा

کہیں کچی ہوگی۔ سبزی اور دال کا بھی یہی حال ہوگا. پر اُس کے بھائی اور باپ اُسی کچے پکے کھانے کو کھاکو خوش ہونگے اور تعریف کریں گے. اور اِس سے اُس لڑکی کا بھلا ہی ہوگا. دو چار دن میں اچھی روٹی بنانا سیکھہ جائے گی. ہو سکتا ہے اُس کی بڑی بہن کچھہ ناک بھوں سکوڑے پر ایسا کرنے میں وہ ذرا اونچ نیچ سوچے گی. اور یہ سمجھے گی کہ اگر میں نے کچھہ عیب نکالے تو یہ کام میرے ہی سر پڑے گا اور یہ کہ میں ہی کون کھانا بنانا جانتی ہوں. اس لئے وہ بھی چپ رہنے میں ہی بھلا سمجھے گی. ہاں اُس کی سہیلیاں ہو سکتا ہے کچھہ عیب نکالیں پر وہ بھی سوچ سمجھہ کر چپ ہو جانا ہی ٹھیک سمجھیں گی. پڑوسی تک اُس لڑکی کے ہاتھہ کا کھانا کھاکر خوش ہی ہونگے اور تعریف کریں گے. بس یہی حال تو ہماری سرکار کا ہے. وہ خوب روپئے برباد کر رہی ہے. وہ بہت سے کام اُٹھاتی ہے اور اُن کو ادھورا چھوڑ دیتی ہے. کتنے ہی کاموں کیطرف اُس کا دھیان ہی نہیں جاتا. کتنے ہی کاموں پر وہ بیحد زور لگا دیتی ہے. کبھی کبھی وہ ایک طرف اتنی زیادہ لگتی ہے کہ دوسری طرف یہ دیکھہ نہیں پاتی کہ کتنا نقصان ہو رہا ہے کیا اِن سب باتوں سے سرکار کی ماں کانگریس اور کانگریس معنے ہم سب ہندستانی سرکار سے بگڑتے ہیں؟ ہم سب بے حد خوش ہوتے ہیں. ہم خوب سمجھتے ہیں کہ بنا نقصان کئے کبھی کوئی کام نہیں سیکھا جا سکتا. کیا کسی سمجھدار گھر کے آدمی ایک لڑکی کے کھانا بناتے وقت زیادہ نقصان کردینے سے اُس کا کھانا بنانا بند کردیتے ہیں؟ ایسا

तौ-भी कसर रह गई' वह सुनकर उसका बेटा उससे भी बढ़िया तमाशा करता है और बूढा उस तमाशे के बाद भी 'तौ-भी कसर रहगई' की फिर आवाज़ लगाता है. थोड़े शब्दों मे आख़िर तक वह अपनी ही बात पर डटा रहता है. यहाँ के अख़बार वाले जब भी अपनी सरकार की बुराई करते है तब वह न तो जी से सरकार का बुरा चाहते है और न उस काम को ही बुरा समझते है जिस की बुराई कर रहे होते है नट के लड़के की तरह से हिन्दुस्तानी सरकार यह ख़ूब समझती है इस लिए वह अख़बारो की बात को सुनकर भी अनसुनी कर देती है और अपने काम मे लग जाती है आख़िर सरकार मे और लोकशाही मे बेटी और मां का सम्बन्ध तो है ही, तो मा जो कुछ कहेगी वह बुरी नीयत से नहीं कहेगी शब्द भले ही चुभते हुए हो. पर उस चुभन से तो आगे बढ़ने के लिए उत्साह मिलता है इसलिए अख़बार जब राशनिंग की बुराई करते हैं तो सरकार चट कन्ट्रोल का तमाशा दिखा देती है और जब कन्ट्रोल की बुराई होती है तो कोई और ज़िम्मेदारी सरकार अपने सर लेकर नये तमाशे मे लग जाती है. विदेशी क्या समझ सकते है कि हिन्दुस्तानी किस तरह उत्साह बढ़ाते है और हिन्दुस्तानी सरकार किस तरह उत्साह हासिल करती है ?

किसी घर की मा मर जाने पर अगर उसकी लड़कियो मे से सब से छोटी लड़की खाना बनाने लगे तो वह पहले पहल बहुत सा आटा ख़राब करेगी, बहुत सा मसाला खिड़ायेगी, घी छिटकायेगी, दूध खिड़ायेगी, शक्कर बिखेरेगी, रोटी सेंकेगी तो कहीं जली होगी,

تو بھی کسر رہ گئی' یہ سن کر اُس کا بیتا اُس سے بھی بڑھیا تماشہ کرتا ہے اور بوڑھا اُس تماشے کے بعد بھی 'تو بھی کسر رہ گئی' کی پھر آواز لگاتا ہے. تھوڑے شبدوں میں آخر تک وہ اپنی ہی بات پر ڈٹا رہتا ہے. یہاں کے اخبار والے جب بھی اپنی سرکار کی برائی کرتے ہیں تب وہ نہ تو جی سے سرکار کا برا چاہتے ہیں اور نہ اُس کام کو ہی برا سمجھتے ہیں جس کی برائی کر رہے ہوتے ہیں نٹ کے لڑکے کی طرح سے ہندستانی سرکار یہ خوب سمجھتی ہے اِس لئے وہ اخباروں کی بات کو سن کر بھی اَن سنی کر دیتی ہے اور اپنے کام میں لگ جاتی ہے. آخر سرکار میں اور لوک شاہی میں بیٹی اور ماں کا سمبندھ تو ہے ہی' تو ماں جو کچھ کہے گی وہ بری نیت سے نہیں کہے گی شبد بھلے ہی چبھتے ہوئے ہوں. پر اُس چبھنے سے تو آگے بڑھنے کیلئے اُتساہ ملتا ہے اِس لئے اخبار جب راشننگ کی برائی کرتے ہیں تو سرکار جھٹ کنٹرول کا تماشہ دکھا دیتی ہے اور جب کنٹرول کی برائی ہوتی ہے تو کوئی اور ذمہ داری سرکار اپنے سر لیکر نئے تماشے میں لگ جاتی ہے. ودیشی کیا سمجھ سکتے ہیں کہ ہندستانی کس طرح اُتساہ بڑھاتے ہیں اور ہندستانی سرکار کس طرح اُتساہ حاصل کرتی ہے ؟

کسی گھر کی ماں مرجائے پر اگر اُسکی لڑکیوں میں سے سب سے چھوٹی لڑکی کھانا بنانے لگے تو وہ پہلے پہل بہت سا آٹا خراب کرے گی' بہت سا مسالہ کھڑائے گی' گھی چھٹکائے گی' دودھ کھڑائے گی' شکر بکھیرے گی' روٹی سینکے گی تو کہیں جلی ہوگی'

न खाय, दिल पर काबू रक्खें सरकार को क्यों मजबूर करें कि वह इतवार के दिन बाजार में नमक न आने दे या कम आने दे. पर सरकार की इस बेपरवाही से व्रत रखने वालों का कुछ बिगड़ा नहीं नमक के सौदागरों और दुकानदारों ने सरकार की इस बेपरवाही का मुंह तोड़ जवाब दिया और कुछ महीनों के लिये न सही तो कुछ दिनों के लिए ही नमक को बाजार में अगर नापैद नहीं कर दिया तो मुश्किल से मिलने वाला जरूर साबित कर दिया. यह दूसरी बात है कि फिर सौदागरों और सरकार में मुठभेड़ हुई पर इस से हम व्रत रखने वालों को क्या सरोकार

हां तो इस सन ४९ ने हम को गांधी जी की धर्म लीक पर खासा आगे बढ़ाया है

विदेशी हमें क्या समझें ?

दुनिया के सब मुल्क वालों को हम यह चेतावनी देना चाहते हैं कि वह हिन्दुस्तानी अखबारों के आधार पर हिन्दुस्तान की सरकार के बारे में अगर कोई राय बना बैठेंगे तो बड़ी भारी भूल करेंगे. राय बनाने से पहले उनको हिन्दुस्तान के रस्म-रिवाजों और बोलने के तरीकों से जानकारी हासिल करना जरूरी है

सब मुल्क वाले अपनी अपनी नोट बुक लेकर यह नोट करलें कि जब हिन्दुस्तान में नट का तमाशा होता है तो जो बूढ़ा जो आम तौर से तमाशा करने वालों का बाप होता है ढोल बजाने का काम करता है. वह अपने हर बेटे के तमाशे के बाद ढोल बजाकर तमाशा देखने वालों की तरफ इशारा करके कहता है, 'तौ-भी कसर रह गई,

نہ کھائیں، دل پر قابو رکھیں، سرکار کو کیوں مجبور کریں کہ وہ اتوار کے دن بازار میں نمک نہ آنے دے یا کم آنے دے. پر سرکار کی اِس بے پرواھی سے برت رکھنے والوں کا کچھ بگڑا نہیں. نمک کے سوداگروں اور دوکانداروں نے سرکار کی اِس بے پرواھی کا منھ توڑ جواب دیا اور کچھ مہینوں کے لئے نہ سہی تو کچھ دنوں کے لئے ھی نمک کو بازار میں اگر نا پید نہیں کردیا تو مشکل سے ملنے والا ضرور ثابت کردیا یہ دوسری بات ھے کہ پھر سوداگروں اور سرکار میں مٹھ بھیڑ ھوئی پر اِس سے ھم برت رکھنے والوں کو کیا سروکار.

ھاں تو اِس سنہ ۴۹ نے ھمکو گاندھی جی کی دھرم لیک پر خاصا آگے بڑھایا ھے

بدیشی ھمیں کیا سمجھیں ؟

دنیا کے سب ملک والوں کو ھم یہ چیتاونی دینا چاھتے ھیں کہ وہ ھندستانی اخباروں کے آدھار پر ھندستان کی سرکار کے بارے میں اگر کوئی رائے بنا بیٹھیں گے تو بڑی بھاری بھول کریں گے. رائے بنانے سے پہلے ان کو ھندستان کے رسم رواجوں اور بولنے کے طریقوں سے جانکاری حاصل کرنا ضروری ھے

سب ملک والے اپنی اپنی نوٹ بک لیکر یہ نوٹ کرلیں کہ جب ھندستان میں نٹ کا تماشہ ھوتا ھے تو جو بوڑھا جو عام طور سے تماشہ کرنے والوں کا باپ ھوتا ھے ڈھول بجانے کا کام کرتا ھے، وہ اپنے ھر بیٹے کے تماشے کے بعد ڈھول بجاکر تماشہ دیکھنے والوں کیطرف اِشارہ کرکے کہتا ھے "تو بھی کسر رہ گئی"

रक्खा था. गांधीजी ने आखिरी वाइसराय माउन्टबैटेन के नमक कर उठाने के लिए बड़े निहोरे किये. पर वह नमक कर उठवाने मे सफल न हुए. और मरते दम तक उन्हे नमक चखने को न मिला. चखना शब्द तो हमने चखने के लिए लिख दिया है. नमक जैसी पत्थर और निकम्मी चीज़ पर गांधीजी का जी क्या चलता ? नमक कर उठ भी जाता तो भी वह एक दिन चख कर अपने व्रत तोड़ने का नेग भर करते. खाने की आदत हरगिज़ न डालते. बेमतलब उस आदत को जिस पर पूरा काबू पा लिया था क्यो सर पर सवार होने का मौक़ा देते. खैर. गांधीजी की बात गांधीजी पर छोडिये. हम उनके भक्त नमक न खाने का भी अभ्यास कर रहे हैं. ऐसे आदमियो की तादाद कम नही है जो इतवार को नमक नही खाते. और इस तरह स्वर्ग के जीने पर एक पैडी आगे बढ़ जाते है और हम आज कल तो सरकार और सौदागरो की कृपा से दो दो पैड़ी चढ़ जाते है. क्यो कि पहले जो इतवार को नमक न खाते थे वह मीठा तो खा लेते थे. पर आज तो इतवार को दोनो ही व्रत अपने आप निभ जाते हैं. यह ठीक है कि सरकार ने नमक के मामले मे हमारी कोई मदद नहीं की, हां, इस साल के एकाध महीने में ऐसा शोर तो मचा था कि सरकार इस मामले मे भी मदद करने वाली है. पर उसने साफ इनकार कर दिया और कह दिया कि नही, नही. हम नमक की कमी करने मे किसी तरह भी व्रत रखने वालो की मदद नही कर सकते. यह क्या ? व्रत रखने वालो को चाहिए कि वह हर बात मे सरकार की मदद न चाहा करे. अगर वह इतवार को नमक नही खाते तो

رکھا تھا. گاندھی جی نے آخری وائسرائے ماؤنٹ بیٹن کے نمک کر اُٹھانے کے لئے بڑے نہورے کئے پر وہ نمک کر اُٹھوانے میں سپھل نہ ہوئے اور مرتے دم تک اُنہیں نمک چکھنے کو نہ ملا. چکھنا شبد تو ہم نے چکھنے کے لئے لکھ دیا ہے. نمک جیسے پتھر اور نکمی چیز پر گاندھی جی کا جی کیا چلتا؟ نمک کر اُٹھ بھی جاتا تو بھی وہ ایک دن چکھ کر اپنے برت توڑنے کا نیگ بھر کرتے. کھانے کی عادت ہرگز نہ ڈالتے. بے مطلب اُس عادت کو جس پر پورا قابو پا لیا تھا کیوں سر پر سوار ہونے کا موقع دیتے خیر گاندھی جی بات گاندھی جی پر چھوڑیئے. ہم اُنکے بھگت نمک نہ کھانے کا بھی ابھیاس کر رہے ہیں. ایسے آدمیوں کی تعداد کم نہیں ہے جو اتوار کو نمک نہیں کھاتے اور اِس طرح سورگ کے زینے پر ایک پیڑی آگے بڑھ جاتے ہیں اور ہم آج کل تو سرکار اور سوداگروں کی کرپا سے دو دو پیڑی چڑھ جاتے ہیں کیونکہ پہلے جو اتوار کو نمک نہ کھاتے تھے وہ میٹھا تو کھا لیتے تھے پر آج تو اتوار کو دونوں ہی برت اپنے آپ نبھ جاتے ہیں. یہ ٹھیک ہے کہ سرکار نے نمک کے معاملے میں ہماری کوئی مدد نہیں کی' ہاں اِس سال کے ایک آدھ مہینے میں ایسا شور تو مچا تھا کہ سرکار اِس معاملے میں بھی مدد کرنے والی ہے پر اُس نے صاف انکار کردیا اور کہہ دیا کہ نہیں نہیں ہم نمک کی کمی کرنے میں کسی طرح بھی برت رکھنے والوں کی مدد نہیں کر سکتے. یہ کیا؟ برت رکھنے والوں کو چاہئے کہ وہ ہر بات میں سرکار کی مدد نہ چاہا کریں اگر وہ اتوار کو نمک نہیں کھاتے تو

सकेंगे ? और अगर यह न निभ सका तो हम गांधी जी की राह से भटक कर नरक की राह पर आजायेंगे और हमें पता भी न चलेगा. शंका आप की ठीक है पर अव्वल तो इस 'ज्यादा नाज उगाओ' के सर्वेसर्वा यह कह रहे हैं कि अगले दो सालों में सौ पीछे दस से ज्यादा न उगाया जासकेगा यानी अगर अब हम सौ मन उगाते हैं तो फिर एक सौ दस मन उगा सकेंगे और उन्हीं का यह भी कहना है कि हिन्दुस्तान में सौ मन पीछे तीन मन नाज की कमी थी जिसके लिए बाहर की खुशामद करनी पड़ती थी तो हमारे पास ज्यादा रह गया सात मन सो उसके लिए कुछ तो हमारे चूहे कुछ गुदामों के कीड़े कुछ छीजन यह मदद करेंगे और अगर इसके बाद भी दो चार मन बच रहा तो सलामत रहें हमारी रेलें और हमारे पुराने और नये बने जहाज़ इसको ढो ढो कर ऐसी जगह पहुँचा देंगे जहां से वैसा ही नहीं मिलेगा, इतनी असीसें भी मिलेंगी कि उपवास के दिनों में उन्हीं से इतना पेट भर जाया करेगा कि भूक की तकलीफ याद भी न आसकेगी हो सकता है भगवान खुद हमारे व्रत की रक्षा करने के लिए दुनिया के ऐसे मुल्कों में जिन को हम दोस्त माने हुए हैं कोई ऐसी जरूरत पैदा करदें कि वहां हमको अनाज भेजना ही पड़े इस लिए 'ज्यादा नाज उगाओ' का डर हमें दिल से निकाल देना चाहिए.

अगर हम भूल नहीं कर रहे तो गांधीजी ने नमक छोड़ कर मरते दम तक उसे नहीं खाया. छोड़ा यों था कि वह गरीबों की सब से ज्यादा जरूरी चीज है और उसपर अंगरेजी राज ने कर लगा

१४

سکیں گے؟ اور اگر یہ نہ نبھ سکا تو ہم گاندھی جی کی راہ سے بھٹک کر نرک کی راہ پر آجائیں گے اور ہمیں پتہ بھی نہ چلے گا. شنکا آپ کی ٹھیک ہے پر اول تو اِس "زیادہ ناج اُگاؤ" کے سروے سروا یہ کہہ رہے ہیں کہ اگلے دو سالوں میں سو پیچھے دس سے زیادہ نہ اُگایا جا سکے گا یعنی اگر اب ہم سو من اُگاتے ہیں تو پھر ایک سو دس من اُگا سکیں گے اور اُنہیں کا یہ بھی کہنا ہے کہ ہندستان میں سو من پیچھے تین من ناج کی کمی تھی جس کے لئے باہر کی خوشامد کرنی پڑتی تھی، تو ہمارے پاس زیادہ رہ گیا سات من سو اُس کے لئے کچھ تو ہمارے چوہے، کچھ گوداموں کے کیڑے کچھ چھیجن یہ مدد کریں گے اور اگر اِس کے بعد بھی دو چار من بچ رہا تو سلامت رہیں ہماری ریلیں اور ہمارے پرانے اور نئے بنے جہاز، اِس کو ڈھو ڈھو کر ایسی جگہ پہونچا دیں گے جہاں سے ویسے ہی نہیں ملے گا اتنی اسیسیں بھی ملیں گی کہ اُپ واس کے دنوں میں اُنہیں سے اتنا پیٹ بھر جایا کرے گا کہ بھوک کی تکلیف یاد بھی نہ آسکے گی. ہو سکتا ہے بھگوان خود ہمارے برت کی رکشا کرنے کے لئے دنیا کے ایسے ملکوں میں جنکو ہم دوست مانے ہوئے ہیں کوئی ایسی ضرورت پیدا کردیں کہ وہاں ہم کو اناج بھیجنا ہی پڑے. اِس لئے "زیادہ اناج اُگاؤ" کا ڈر ہمیں دل سے نکال دینا چاہئے.

اگر ہم بھول نہیں کر رہے تو گاندھی جی نے نمک چھوڑ کر مرتے دم تک اُسے نہیں کھایا. چھوڑا یوں تھا کہ وہ غریبوں کی سب سے زیادہ ضروری چیز ہے اور اُس پر انگریزی راج نے کر لگا

का भी एक व्रत है. और हमें उसका पूरा ध्यान है. और हमारी सरकार को हम से भी ज्यादा और हमारी सरकार जब यह देखेगी कि हमारी लत छूट ही नहीं पाती तो गुड़ पर कोई भारी टैक्स लगा कर उसे बाजार में आने से अगर रोक नहीं देगी तो उस के आने जाने में कमी जरूर कर देगी. शक्कर गुड़ के बनाने वाले, ढोने वाले, बेचने वाले सब हमीं में से तो हैं. और सभी तो गांधी-भक्त हैं. वह भी इस काम में हमारी बड़ी मदद करते हैं. यानी इस के इतने दाम बढ़ा देते हैं कि वह हमारी पहुंच से परे हो जाता है. और फिर हम उसके पाने के लिये भूल से भी जेब में हाथ नहीं डालते. परमात्मा हमारी सरकार को और इन सब सौदागरों को जीते जी खूब सुखी रखे और मरने के बाद अच्छी गति दे और अगर वह मुसलमान हों तो अपने ही पास बुलाले. आखिर इन्होंने हमारे धर्म पालन में इतनी मदद की है तो क्या यह इतने के भी हक़दार नहीं हैं ?

दूसरी मिसाल

दूसरा काम गांधीजी करते थे सातवें आठवें दिन अन्न त्यागने का और कभी कभी तो वह पूरे इक्कीस दिन बिना अन्न के बिता देते थे. हम सब भी इसी कोशिश में लगे हुए हैं हमारी सरकार, हमारे किसान, हमारे सौदागर भाई इस काम में भी हमारी खूब मदद करते हैं. आप के मन में यह सवाल जोर मार रहा होगा कि सरकार ने तो 'खूब नाज उगाओ' का शोर मचा रखा है और अगर सचमुच किसान उसका कहना मान बैठे और साल दो साल में बहुत नाज पैदा हो गया तो वह कम खाने का व्रत कैसे निभा

کا بھی ایک برت ہے اور ہمیں اُس کا پورا دھیان ہے۔ اور ہماری سرکار کو ہم سے بھی زیادہ اور ہماری سرکار جب یہ دیکھے گی کہ ہماری لت چھوٹ ہی نہیں پاتی تو گڑ پر کوئی بھاری ٹیکس لگاکر اُسے بازار میں آنے سے اگر روک نہیں دیگی تو اُس کے آنے جانے میں کمی ضرور کردے گی. شکر گڑ کے بنانے والے، ڈھونے والے، بیچنے والے سب ہمیں میں سے تو ہیں. اور سبھی تو گاندھی بھکت ہیں وہ بھی اِس کام میں ہماری بڑی مدد کرتے ہیں. یعنی اِس کے اتنے دام بڑھا دیتے ہیں کہ وہ ہماری پہونچ سے پرے ہوجاتا ہے اور پھر ہم اُس کے پانے کے لئے بھول سے بھی جیب میں ہاتھ نہیں ڈالتے. پرماتما ہماری سرکار کو اور اِن سب سوداگروں کو جیتے جی خوب سکھی رکھے اور مرنے کے بعد اچھی گتی دے اور اگر وہ مسلمان ہوں تو اپنے ہی پاس بلالے آخر انہوں نے ہمارے دھرم پالن میں اتنی مدد کی ہے تو کیا یہ اتنے کے بھی حقدار نہیں ہیں ؟

دوسری مثال

دوسرا کام گاندھی جی کرتے تھے ساتویں آٹھویں دن اَن تیاگنے کا. اور کبھی کبھی تو وہ پورے اِکیس دن بنا اَن کے بتا دیتے تھے. ہم سب بھی اِسی کوشش میں لگے ہوئے ہیں ہماری سرکار، ہمارے کسان، ہمارے سوداگر بھائی اِس کام میں بھی ہماری خوب مدد کرتے ہیں آپ کے جی میں یہ سوال زور مار رہا ہوگا کہ سرکار نے تو 'خوب ناج اُگاؤ' کا شور مچا رکھا ہے اور اگر سچ مچ کسان اُس کا کہنا مان بیٹھے اور سال دو سال میں بہت ناج پیدا ہو گیا تو یہ کم کھانے کا برت کیسے نبھا

नहीं कि शक्कर मिलती नहीं थी बल्कि वह उस को तन्दुरुस्ती के लिए बुरा समझते थे पच्छिम के बहुत से विद्वानों ने तो शक्कर को सफ़ेद ज़हर का नाम दिया है बस, हम गांधी जी की इस बात पर पूरी तरह चलने की कोशिश में लगे हुए हैं. यह ठीक है कि हम बड़े हो गये हैं और कभी कभी मन डिग जाता है तो हफ़्ते में एक दो बार चोरी चोरी एकाध चुटकी मुंह में डाल लेते हैं पर अपनी संतानों को, जिनपर अगले भारत का पूरा बोझा पड़ेगा इस ज़हर के पास नहीं फटकने देते उन के रोने चिल्लाने की तरफ़ हम ज़रा भी ध्यान नहीं देते हम कोई नासमझ मां तो हैं नहीं जो बच्चे के रोने पीटने से दिल को पिघला लें और किसी तरह से पड़ोसी रईस या दोस्त मिनिस्टर के यहां से चुटकी दो चुटकी मांग लाकर बच्चे की ज़बान पर रख दें और उसको चुप कर के सस्ते छूट जायं और यों अपनी नासमझी से बच्चे को हमेशा के लिए बिगाड़ दें खैर, हमें अब गुड़ खाते खाते शक्कर के स्वाद की याद ही नहीं रही. और अब भूल-भटके कभी कहीं शक्कर पड़ा दूध मिल जाता है तो फीका सा मालूम होता है या बेस्वाद सा लगता है गुड़ का सा मज़ा शक्कर में हो भी कैसे सकता है? शक्कर में गुड़ जितने रसायन-तत्त्व (कीमियावी अजज़ा) रह भी कहां जाते हैं? और यह किसी से छिपा नहीं है कि हमारी सरकार ने इस काम में इस थोड़ी मदद की है पढ़ने वाले सवाल के लिए मुंह खोलने की जल्दी न करें गुड़ भी हम बहुत कम खाते हैं उसे भी धीरे धीरे हम छोड़ देंगे क्योंकि गांधी जी के ग्यारह व्रतों में से अस्वाद नाम

نہیں کہ شکر ملتی نہیں تھی بلکہ وہ اُس کو تندرستی کے لئے برا سمجھتے تھے پچھم کے بہت سے ودوانوں نے تو شکر کو سفید زہر کا نام دیا ہے بس ہم گاندھی جی کی اِس بات پر پوری طرح چلنے کی کوشش میں لگے ہوئے ہیں یہ ٹھیک ہے کہ ہم بڑے ہو گئے ہیں اور کبھی کبھی من ڈگ جاتا ہے تو ہفتہ میں ایک دو بار چوری چوری ایک آدھ چٹکی منہ میں ڈال لیتے ہیں پر اپنی سنتانوں کو جن پر اگلے بھارت کا پورا بوجھا پڑے گا اِس زہر کے پاس نہیں پھٹکنے دیتے ان کے رونے چلانے کی طرف ہم ذرا بھی دھیان نہیں دیتے ہم کوئی ناسمجھ ماں تو ہیں نہیں جو بچے کے رونے پیٹنے سے دل کو پگھلالیں اور کسی طرح سے پڑوسی رئیس یا دوست منسٹر کے یہاں سے چٹکی دو چٹکی مانگ لاکر بچے کی زبان پر رکھ دیں اور اس کو چپ کرکے سستے چھوٹ جائیں اور یوں اپنی ناسمجھی سے بچے کو ہمیشہ کے لئے بگاڑ دیں خیر ہمیں اب گڑ کھاتے کھاتے شکر کے سواد کی یاد ہی نہیں رہی اور اب بھولے بھٹکے کبھی کہیں شکر پڑا دودھ مل جاتا ہے تو پھیکا سا معلوم ہوتا ہے یا بے سواد سا لگتا ہے گڑ کا سا مزہ شکر میں ہو بھی کیسے سکتا ہے؟ شکر میں گڑ جتنے رسائن تتو (کیمیاوی اجزا) رہ بھی کہاں جاتے ہیں؟ اور یہ کسی سے چھپا نہیں ہے کہ ہماری سرکار نے اِس کام میں اِس سرس جی تھوڑ مدد کی ہے پڑھنے والے سوال کیلئے منہ کھولنے کی جلدی نہ کریں گڑ بھی ہم بہت کم کھاتے ہیں. اُسے بھی دھیرے دھیرے ہم چھوڑ دیں گے کیونکہ گاندھی جی کے گیارہ برتوں میں سے اسواد نام

डूबा कहो और इतनाही क्यो, मछली को जलतरोई कहो और बकरे को जीवन्त भाजी और उनकी यह सलाह हर तरह अच्छी है. दुनिया जब समझने और मानने की चीज है तब इस तरह से क्यो न समझी और मानी जाय जिससे अपने चित्त को सुख मिले

हम क्या करे ? हमे इसी तरह सोचने की आदत है इसीलिए हम उसी तरह लिखने पर मजबूर है

मुहावरों की मिसालें

गांधी जी है तो दुनिया भर के पर हमारे देश के होने के नाते हमारे सब से ज्यादा है और हम को ही उनके धर्म का सब से ज्यादा पालन करना ज़रूरी है. हम सब भी अपने को दो हिस्सो मे बाटे देते हैं एक वह जिन्हो ने गांधी जी का कहना माना, दूसरे वह जिन्हो ने कहना तो नही माना पर इस तरह से अपनी जिन्दगी बिताने की कोशिश की जिस तरह गांधी जी बिताते थे

कहना मानने वालो मे है वह जिन्हो ने हिन्दुस्तान की सरकार की बागडोर संभाली. और न कहना मानने वालो मे हम सब है. हम सब ऐसा जीवन बिताने मे लगे हुए है जैसा गाधी जी बिलाते थे. इसमे शक नहीं कि गांधी जी का कहना मानने वाला दूसरा दल हमे उस तरह का जीवन बिताने मे कोई रुकावट न डालकर ही अपनी तसल्ली नही कर लेता बल्कि हर तरह के ऐसे साधन जुटाने मे कोशिश करता है जिससे हमारा उस तरह का जीवन सुगमता से आगे की ओर लुढ़कता रहे

देखिये, गांधी जी गुड़ खाते थे, शक्कर नही खाते थे. इसलिए

ڈوبا کہو اور اتنا ہی کیوں مچھلی کو جل ترورئی کہو اور بکرے کو جیونت بھاجی. اور اُن کی یہ صلاح ہر طرح اچھی ہے. دنیا جب سمجھنے اور ماننے کی چیز ہے تب اِس طرح سے کیوں نہ سمجھی اور مانی جائے جس سے اپنے چت کو سکھ ملے

ہم کیا کریں ؟ ہمیں اِسی طرح سوچنے کی عادت ہے، اسی لئے ہم اسی طرح لکھنے پر مجبور ہیں

محاوروں کی مثالیں

گاندھی جی ہیں تو دنیا بھر کے پر ہمارے دیش کے ہونے کے ناتے ہمارے سب سے زیادہ ہیں اور ہم کو ہی اُن کے دھرم کا سب سے زیادہ پالن کرنا ضروری ہے۔ ہم سب بھی اپنے کو دو حصوں میں بانٹے دیتے ہیں. ایک وہ جنھوں نے گاندھی جی کا کہنا مانا دوسرے وہ جنھوں نے کہنا تو نہیں مانا پر اس طرح سے اپنی زندگی بتانے کی کوشش کی جس طرح گاندھی جی بتاتے تھے

کہنا ماننے والوں میں ہیں وہ جنھوں نے هندستان کی سرکار کی باگ ڈور سنبھالی اور نہ کہنا ماننے والوں میں ہم سب ہیں. ہم سب ایسا جیون بتانے میں لگے ہوئے ہیں جیسا گاندھی جی بتاتے تھے اسمیں شک نہیں کہ گاندھی جی کا کہنا ماننے والا دوسرا دل ہمیں اُس طرح کا جیون بتانے میں کوئی رکاوٹ نہ ڈال کر ہی اپنی تسلی نہیں کرلیتا بلکہ ہر طرح کے ایسے سادھن جٹانے میں کوشش کرتا ہے جس سے ہمارا اُس طرح کا جیون سگمتا سے آگے کی اور لڑھکتا رہے .

دیکھئے گاندھی جی گڑ کھاتے تھے . شکر نہیں کھاتے تھے . اِس لئے

हमे ताज्जुब ही होगा क्योंकि अब तक यूरप का कोई मुल्क एशिया से बिल्ली का नाटक खेले बिना नहीं हटा. दूध न मिलने पर दूध खिडाने की यूरप वालों की आदत ही पड गई है हिन्द-एशिया के बारे मे सब से अनोखी बात यह है कि वहा नेशनलिस्ट चीन बधाई देने पहुँचा और सब से पहले उसी ने हिन्द एशिया की रिपब्लिक को मान्यता दी, और इधर बर्मा लाल चीन को मान्यता दे चुका है. और यही है सन् ४९ का अनोखापन

हिन्दुस्तानी के नये मुहावरे

आइये, अब जरा हिन्दुस्तान की तरफ आइये

हम जब छोटे से थे और गेंद के खेल मे हार जाते थे तो हम यह कभी कह कर नहीं देते थे कि हम हार गये हम अपने जीतने वालों से यह कहा करते थे कि हमने आपको जिता दिया और इस तरह से हम अपनी और अपने दल वालों की झेंप ही नहीं मिटा देते थे पर जीतने वालों की खुशी मे से उछल कूद का एक अंश भी चुरा लेते थे और इसमे बुराई क्या था ? साधु और सन्त भी तो यही करते है. और हाँ सत्याग्रही भी तो यही करते हैं वह यह कब कहकर देते हैं कि सरकार ने हम को जेल भेज दिया. वह तो यह कहते हैं कि हम अपने आप जेल चले गये. और सरकार के कानूनों की इज्जत रखली और सचमुच सारे विद्वान और ज्ञान वान यही सबक तो हमें देगये हैं. उन्हीं का तो कहना है कि जिसे कोई हटी कहे तुम उसे स्थिरचित्त कहो. तुम घुन्ना को गम्भीर कहो. उड़ाउ को उदार कहो. भीकमंगे को साधु कहो. सनकी को भगवान भक्ति में

همیں تعجب هی هوگا کیونکه اب تک یورپ کا کوئی ملک ایشیا سے بلی کا ناٹک کھیلے بنا نہیں هٹا دودھ نه ملنے پر دودھ کھڑانے کی یورپ والوں کی عادت هي پڑ گئی هے. هند ایشیا کے بارے میں سب سے انوکھی بات یه هے که وهاں نیشنلسٹ چین بدهائی دینے پهونچا اور سب سے پہلے اُسي نے هند ایشیا کي ریپبلک کو مانیتادی اور اِدھر برما لال چین کو مانیتا دے چکا هے اور یہي هے سنه ۴۹ کا انوکھا پن.

هندستانی کے نئے محاورے

آئیے اب ذرا هندستان کیطرف آئیے

هم جب چھوٹے سے تھے اور گیند کے کھیل میں هار جاتے تھے تو هم یه کبھي کہکر نہیں دیتے تھے که هم هار گئے هم اپنے جیتنے والوں سے یه کہا کرتے تھے که هم نے آپ کو جتا دیا اور اِس طرح سے هم اپنی اور اپنے دل والوں کي جھینپ هي نہیں مٹا دیتے تھے پر جیتنے والوں کی خوشی میں سے اُچھل کود کا ایک انش بھي چرا لیتے تھے اور اِس میں برا ئی کیا تھا ؟ سادھو اور سنت بھی تو یہی کرتے هیں . اور هاں ستیاگرهی بھي تو یہي کرتے هیں وه یه کب کهه کر دیتے هیں که سرکار نے هم کو جیل بھیجدیا وه تو یه کہتے هیں که هم اپنے آپ جیل چلے گئے اور سرکار کے قانونوں کی عزت رکھ لي اور سچ مچ سارے ودوان اور گیان وان یہي سبق تو همیں دے گئے هیں . اُنھیں کا تو کہنا هے که جسے کوئی هٹی کہے تم اُسے ستھر چت کہو. تم گھنا کو گمبھیر کہو اُڑاو کو اُدار کہو بھیک منگے کو سادھو کہو. سنکي کو بھگوان بھکتی میں

एहसानमन्द नहीं होंगे ? कहीं शायद इसी वजह से तो नहीं बर्त्तानिया की बनाई कामनवेल्थ के मुल्क लंका में इकट्ठे हो रहे हैं? और कहीं इसी वजह से तो बर्मा की तरह उन्होंने जल्द बाज़ी नहीं की ? हो सकता है कि वह भी अरब की तरह किसी कलमे की तैयारी में हों. होता कि इन बर्त्तानियों और अमरीकियों को कोई भूरा डर भी होता. तो फिर माउ की तरह किसी हिन्दुस्तानी को भी कलमे में जगह मिलने का मौका रहता.

अनोखी देन

सन् ४९ अपने ढग का नया गुज़रा है. इसके आख़िरी महीने में तो इसका अनोखापन कमाल को पहुंच गया है हिन्द-एशिया आज़ाद हो गया है. रिपब्लिक बन गया है. डचों ने इतनी जल्दी कैसे कर दी यह समझ में नहीं आता. क्या उनको हिन्द-एशिया इतना भारी पड़ गया था कि अब गिरने की नौबत आ गई थी ? इधर यू० एन० ओ० का कहना है कि यह सब उसकी मदद से हुआ उसके काम हमसे छिपे हुए नहीं है उसके फ़ैसलों और उसके फ़ैसलों के ढग का हमे पूरा पता है हिन्द-एशिया के जल्दी आज़ाद होने में हमे तो यहीं दिखाई देता है कि अगर इस काम में थोड़ी और देर हुई होती तो हिन्द एशिया लाल हो गया होता और इसमें शक नहीं कि श्री स्वीकार्नो ने हिन्द-एशिया के लाल दल को भी अपनी बग़ल में लिया है पर वह डच फौजों के वहां रहते बग़ल में कुलबुलायगा। नहीं इस पर हमे शक है अगर हिन्द-एशिया में ६ महीने तक जो डच फौजों के हटने की मियाद है कोई उधम नहीं मचता तो

احسان مند نہیں ہونگے؟ کہیں شاید اِسی وجہ سے تو نہیں برطانیہ کی بنائی کامن ویلتھ کے ملک لنکا میں اکٹھا ہو رہے ہیں؟ اور کہیں اِسی وجہ سے تو برما کی طرح اُنھوں نے جلد بازی نہیں کی؟ ہوسکتا ہے کہ وہ بھی عرب کی طرح کسی کلمے کی تیاری میں ہوں ہوتا کہ اِن برطانیوں اور امریکیوں کو کوئی بھورا ڈر بھی ہوتا ۔ تو پھر ماؤ کی طرح کسی ہندستانی کو بھی کلمے میں جگہ ملنے کا موقع رہتا

انوکھی دین

سنہ ۴۹' اپنے ڈھنگ کا نیا گذرا ہے اِس کے آخری مہینے میں تو اِسکا انوکھا پن کمال کو پہونچ گیا ہے ہند ایشیا آزاد ہوگیا ہے. ریپبلک بن گیا ہے ڈچوں نے اتنی جلدی کیسے کردی یہ سمجھ میں نہیں آتا. کیا ان کو ہند ایشیا اتنا بھاری پڑ گیا تھا کہ اب گرنے کی نوبت آ گئی تھی؟ اِدھر یو این او کا کہنا ہے کہ یہ سب اُس کی مدد سے ہوا. اُس کے کام ہم سے چھپے ہوئے نہیں ہیں اُس کے فیصلوں اور اُس کے فیصلوں کے ڈھنگ کا ہمیں پورا پتہ ہے. ہند ایشیا کے جلدی آزاد ہونے میں ہمیں تو یہی دکھائی دیتا ہے کہ اگر اِس کام میں تھوڑی اور دیر ہوئی ہوتی تو ہند ایشیا لال ہوگیا ہوتا. اور اِس میں شک نہیں کہ شری سوی کارنو نے ہند ایشیا کے لال دل کو بھی اپنی بغل میں لیا ہے پر وہ ڈچ فوجوں کے وہاں رہتے بغل میں کلبلائے گا نہیں اسپر ہمیں شک ہے. اگر ہند ایشیا میں چھ مہینے تک جو ڈچ فوجوں کے ہٹنے کی میعاد ہے کوئی اُدھم نہیں مچتا تو

गोरों के पैग़म्बर

अरब का हर एक कबीला अपने अपने देवताओं से डरता था दूसरो के देवताओं से भी डरता था. सैकडो ही देवताओं से डरता था इस लिए काबे मे तीन सौ साठ बुत थे सभी की पूजा होती थी हज़रत मुहम्मद उस पूजा से कैसे बचते. वह भी उन्हीं मे शामिल हो गये. पैगम्बर होकर भी जी से नही तो रिवाज से ही उनकी पूजा करने का नाटक खेलते रहे वह उन बुतो मे रत्ती भर न डरते थे और उनको लकडी के टुकडे से ज्यादा न समझते थे. पर इससे क्या. अरब के सारे कबीले तो उन बुतो से डरते थे और सैकडो डरो को अपने दिल मे जगह दिए हुए थे हज़रत मुहम्मद को यह बरदाश्त न हुआ. उन्होने उन देवताओं के सब डर छीन कर एक खुदा के सुपुर्द कर दिये और अब अरब के सारे कबीले सिर्फ एक खुदा के बहुत बड़े डर से डरने लगे इसके लिए वह हज़रत मुहम्मद के बड़े एहसान मन्द थे और आज के दिन तक करोडो मुसलमान हज़रत मुहम्मद को अल्लाह के नाम के साथ साथ याद कर लेते हैं और क्यो न याद करले ? क्योंकि उन्होने उनके लिए ९९ डर मिटा कर एक डर ही रहने दिया ठीक इसी तरह से माउ जान और चचा शाम के सर पर पीला डर भी सवार था और लाल डर भी सवार था. अब माउ ने पीला डर एकदम मिटा दिया. सिर्फ लाल डर रह गया. क्या इसके लिए बर्तानिया और अमरीका वाले माउ के

گوروں کے پیغمبر

عرب کا هر ایک قبیلہ اپنے اپنے دیوتاؤں سے ڈرتا تھا دوسروں کے دیوتاؤں سے بھی ڈرتا تھا سیکڑوں هي دیوتاؤں سے ڈرتا تھا۔ اِس لئے کعبہ میں تین سو ساٹھ بت تھے سبھی کي پوجا هوتی تھی حضرت محمد اُس پوجا سے کیسے بچتے وہ بھی اُنمیں میں شامل هو گئے پیغمبر هو کر بھي جي سے نہیں تو رواج سے هی اُن کی پوجا کرنے کا ناٹک کھیلتے رھے وہ اُن بتوں سے رتی بھر نہ ڈرتے تھے اور اُن کو لکڑي کے ٹکڑے سے زیادہ نہ سمجھتے تھے پر اس سے کیا عرب کے سارے قبیلے تو اُن بتوں سے ڈرتے تھے اور سیکڑوں ڈروں کو اپنے دل میں جگہ دئے هوئے تھے حضرت محمد کو یہ برداشت نہ هوا۔ اُنھوں نے اُن دیوتاؤں کے سب ڈر چھین کر ایک خدا کے سپرد کردئے اور اب عرب کے سارے قبیلے صرف ایک خدا کے بہت بڑے ڈر سے ڈرنے لگے۔ اِس کے لئے وہ حضرت محمد کے بڑے احسان مند تھے اور آج کے دن تک کروڑوں مسلمان حضرت محمد کو اللہ کے نام کے ساتھ ساتھ یاد کرلیتے هیں اور کیوں نہ یاد کرلیں؟ کیونکہ اُنھوں نے اُن کے لئے ۹۹ ڈر مٹاکر ایک هی ڈر رهنے دیا ٹھیک اِسي طرح سے ماؤ جان اور چچا شام کے سر پر پیلا ڈر بھی سوار تھا اور لال ڈر بھی سوار تھا۔ اب ماؤ نے پیلا ڈر ایک دم مٹا دیا صرف لال ڈر رہ گیا۔ کیا اِس کے لئے برطانیہ اور امریکہ والے ماؤ کے

कैसा ठंडा मीठा पानी
सुथरा साफ कुंएं का पानी.
चार तरफ से बस्ती रोशन
पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्खिन
सारे खेत हरे हरियाले
ताल, तलैया नद्दी नाले.
पेड़ घनेरे ठंडे साये
घिर कर जैसे बादल आये.
फिर भी मन को चैन नहीं है
चैन कभी दिन रैन नहीं है
भेद यह क्या है साफ बतादूं ?
दुनिया का इन्साफ बतादूं ?
खेती का है काम अनोखा
काम का है इनआम अनोखा.
मेहनत का यह फल है न्यारा
भूसा मेरा, नाज तुम्हारा.

کیسا ٹھنڈا میٹھا پانی
ستھرا صاف کنوئیں کا پانی
چار طرف سے بستی روشن
پورب پچھم اُتر دکھن
سارے کھیت ہرے ہریالے
تال تلیاں ندی نالے
پیڑ گھنیرے ٹھنڈے سائے
گھر کر جیسے بادل آئے
پھر بھی من کو چین نہیں ہے
چین کبھی دن رین نہیں ہے
بھید یہ کیا ہے صاف بتادوں
دنیا کا انصاف بتادوں
کھیتی کا ہے کام انوکھا
کام کا ہے انعام انوکھا
محنت کا یہ پھل ہے پیارا
بھوسہ میرا ناج تمہارا

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—
ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ्फर हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

फ़रवरी १९५०

क्या कस से | सफा

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने .

मनेजर
'नया हिन्द'
१०, बाई का बाग, इलाहाबाद .

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر—
تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال،

فروری ۱۹۵۰

کیا کس سے | صفحہ

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال - باہر دس روپیہ سال
ایک پرچہ دس آنے

منیجر
'نیا ہند'
۱۰، بائی کا باغ، الٰہ آباد۔


नया हिन्द
نیا ہند

Registered No A—210.

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है

आखिर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद आक़िबत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नुम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. ढाई सौ सफ़ा की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपये डाक खर्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے.

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیس کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے.

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے.

کتاب ہندستانی زبان میں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے. پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ -

منیجر 'نیا ہند'

۴۸ - بائی کا باغ، الہ آباد

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.
Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Society, 48 Bai ka Bagh, Allahabad.

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कल्चर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) इसको फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ्रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस में मेल बढ़ाना.

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; —

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मज़हर अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ. महात्मा भगवान दीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिए.

सुन्दर लाल

सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरों की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक रुपया कम [illegible]

(۱) ایک ایسی ہندوستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں -

(۲) اسکو پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا -

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا -

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ— مسٹر عبد المجید خواجہ، وائس پریسیڈنٹ— ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس، سکریٹری پنڈت سندر لال،

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند - مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر مظہر علی سوختہ، شری بی - جی - کھیر، مسٹر ایس- کے- رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال،

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے -

سندر لال
سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی،
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے - " نیا ہند " کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا - الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ

के चुनाव हो जाने के बाद अगर विधान के मन्दिर की चोटी पर कलश चढ़ाया जाता तो ज्यादा ठीक रहता. यह बिना मन्दिर की चोटी पर कलश चढ़ाने का क्या मतलब ? न जाने क्यो अगरेजी राज की कीचड़ से उगे कन्सेम्बली के कमल मेम्बर सब कुछ कर धर जाने के लिये क्यों उत्सुक हैं ? वह यह क्यो नही सोचते कि इस तरीक़े से हुकूमत मे वह सब बुराइयां फिर ज्यो की त्यो बनी रहेंगी जो ईस्ट इन्डिया कम्पनी के राज से चली आ रही हैं. यह ठीक है कि नये चुनाव से भी वह बुराइयाँ सबकी सब दूर तो नहीं होगी पर मन की थोड़ी तसल्ली तो रहेगी और वह कुछ कम नहीं होती. हमारी राय मे तो यह जल्द बाजी ही होगी और उससे कोई ख़ास नफ़ा दिखाई नही देता नफ़ा न हो न सही, इसमें तो हमे बुराइयां और बढ़ती दिखाई दे रही हैं और यह भी दिखाई दे रहा है कि किस तरह कुछ इने गिने आदमी सत्ता को किसी तरह छोड़ना नहीं चाहते. उन्हे शायद यह भी विश्वास नही है कि जनता फिर उन्ही के हाथ में ही सत्ता की बागडोर देगी जब कि जनता सच्चे जी से उसी पर तुली हुई है और उनके इस नासीधे तरीकों से वह कुछ का कुछ सोचने लगती है.

क्या हो अच्छा हो अगर यह नया तमाशा उठा रक्खा जाय और नये विधान के अनुसार ही बुनियाद से चोटी तक नये विधान मन्दिर की इमारत खड़ी की जाय.

नागपुर भगवानदीन

کے چناؤ ہو جانے کے بعد اگر ودھان کے مندر کی چوٹی پر کلس چڑھایا جاتا تو زیادہ ٹھیک رہتا۔ یہ بنا مندر کی چوٹی پر کلس چڑھانے کا کیا مطلب ؟ نہ جانے کیوں انگریزی راج کے کیچڑ سے اُگے کنسیمبلی کے کمل میمبر سب کچھ کر دھر جانے کے لئے کیوں اُتسک ہیں ؟ وہ یہ کیوں نہیں سوچتے کہ اس طریقے سے حکومت میں وہ سب برائیاں پھر جیوں کی تیوں بنی رہیں گی جو ایسٹ انڈیا کمپنی کے راج سے چلی آ رہی ہیں۔ یہ ٹھیک ہے کہ نئے چناؤ سے بھی وہ برائیاں سب کی سب دور تو نہیں ہونگی پر من کی تھوڑی تسلی تو رہے گی اور وہ کچھ کم نہیں ہوتی ہماری رائے میں تو یہ جلد بازی ہی ہوگی اور اس سے کوئی خاص نفع دکھائی نہیں دیتا۔ نفع نہ ہو نہ سہی، اس میں تو ہمیں برائیاں اور بڑھتی دکھائی دے رہی ہیں اور یہ بھی دکھائی دے رہا ہو کہ کس طرح کچھ انے گنے آدمی ستا کو کسی طرح چھوڑنا نہیں چاہتے۔ انھیں شاید یہ بھی وشواس نہیں ہو کہ جنتا پھر انھیں کے ہاتھ میں ہی ستا کی باگ ڈور دے گی جب کہ جنتا سچے جی سے اسی پر تلی ہوئی ہو اور ان کے اس ناسیدھے طریقوں سے وہ کچھ کا کچھ سوچنے لگتی ہو۔

کیا ہی اچھا ہو اگر یہ نیا تماشہ اٹھا رکھا جائے اور نئے ودھان کے انوسار ہی بنیاد سے چوٹی تک نئے ودھان مندر کی عمارت کھڑی کی جائے۔

ناگپور

بھگوان دین

तब तक चाहे वह लटकन बने या सीस फूल खोटा सोना ही रहेगा. ठीक इसी तरह से कोई राजसत्ता उथल पुथल मे निकले बिना यानी इन्क़लाब की तैपन पाये बिना भले ही डिपेन्डेन्सी (पराधान रियासत) से डोमिनियन बन जाय या रिपब्लिक नाम धर ले, अपनी खोट से बरी नहीं हो सकती. इसलिये हिन्दुस्तान की डोमिनियन में आज ६ दिसम्बर सन् ४९ तक वह सारी बुराइयां ज्यों की त्यों बनी हुई हैं जो अंगरेज़ी राज में मौजूद थीं उनमे बढ़वारी हुई है घटती नहीं हुई. तसल्ली इतनी ही है कि हमारे सर पर हमारा ही थप्पड़ पड़ रहा है. पर अफ़सोस इतना ही है कि जिस तरह एक आदमी सपने में जब थप्पड़ उठा कर अपने दुश्मन के मारता है तो उसे एक छण के लिये तो तसल्ली होती है. यह ठीक है कि जागने पर उसे यह पता लगता है कि उसने जो थप्पड़ दुश्मन के गाल पर मारा था वह पड़ा था उसीके गाल पर. पर वैसी तसल्ली भी आज के राज के दुखों के बारे में नहीं हो पाती. यहाँ तो सोते जागते सीधा थप्पड़ अपने ही गाल पर पड़ता है. इसे भले ही कुछ बेबसी कहें या ला इलाज समझें पर वैसी बात है नहीं

सन् पचास की जनवरी की किसी तारीख़ को हिन्दुस्तानी डोमिनियन रिपब्लिक बन जायगी. और यह भी एक तमाशा ही होगा क्यों कि यह रिपब्लिक भी उस विधान के पूरे अमल मे आये बिना बनेगा जिस विधान ने उस रिपब्लिक की बुनियाद डाली है. हमारी समझ में नहीं आता कि नाम बदलने की इतनी जल्दी भी क्या थी ? जहाँ कई बरस डोमिनियन रहकर निकल गये थे वहाँ एक डेढ़ बरस और भी क्या बिगड़ता ? विधान के अनुसार नीचे

تب تک چاہے وہ لٹکن بنے یا سیس پھول کھوٹا سونا ہی رہے گا. ٹھیک اسی طرح سے کوئی راج ستا اتھل پتھل میں نکلے بنا یعنی انقلاب کی تپن پائے بنا بھلے ہی ڈپنڈنسی (پرادھین ریاست) سے ڈومینین بن جائے یا ریپبلک نام دھرے، اپنی کھوٹ سے بری نہیں ہو سکتی. اس لئے ہندستان کی ڈومینین میں آج ۶ دسمبر سنہ ۴۹ تک وہ ساری برائیاں جیوں کی تیوں بنی ہوئی ہیں جو انگریزی راج میں موجود تھیں. اُن میں بڑھواری ہوئی ہے گھٹتی نہیں ہوئی. تسلی اتنی ہی ہے کہ ہمارے سر پہ ہمارا ہی تھپڑ پڑ رہا ہے. پر افسوس اتنا ہی ہے کہ جس طرح ایک آدمی سپنے میں جب تھپڑ اٹھا کر اپنے دشمن کے مارتا ہے تو اُسے ایک چھن کے لئے تو تسلی ہوتی ہے. یہ ٹھیک ہے کہ جاگنے پر اُسے یہ پتا لگتا ہے کہ اُس نے جو تھپڑ دشمن کے گال پہ مارا تھا وہ پڑا تھا اُسی کے گال پر. پر ویسی تسلی بھی آج کے راج کے دکھوں کے بارے میں نہیں ہو پاتی. یہاں تو سوتے جاگتے سیدھا تھپڑ اپنے ہی گال پہ پڑتا ہے. اسے بھلے ہی کچھ بے بسی کہیں یا لا علاج سمجھیں پر ویسی بات ہے نہیں.

سنہ پچاس کی جنوری کی کسی تاریخ میں ہندستانی ڈومینین ریپبلک بن جائے گی. اور یہ بھی ایک تماشہ ہی ہوگا کیونکہ یہ ری پبلک بھی اُس ودھان کے پورے عمل میں آئے بنا بنے گی جس ودھان نے اُس ری پبلک کی بنیاد ڈالی ہے. ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ نام بدلنے کی اتنی جلدی بھی کیا تھی؟ جہاں کئی برس ڈومینین رہ کر نکل گئے تھے وہاں ایک ڈیڑھ برس اور بھی کیا بگڑتا؟ ودھان کے انوسار نیچے

चाल पूरी चल गई और जादू का काम कर गई. हिन्दुस्तानियों ने इसमें अपनी जीत समझी और लन्दन के पंडितों ने अपनी. जीत हुई लन्दन की. हिन्दुस्तानियों का तो मन बहलावा हुआ राज बदला पर बाज़ीगरी के ढंग से. हिन्दुस्तानियों को राज बदला हुआ दिखाई दिया पर वह निरी नज़रबन्दी थी. वही अफसर थे, वही राज का तरीक़ा था. वही ब्योपारी हथकंडे थे, वही सब कुछ था, सिर्फ़ नाम बदल गया था. कम्पनी का राज ही रानी का राज कहा जाने लगा था. यह तो था पहला तमाशा जिसको देखकर हिन्दुस्तानी ख़ुश हो गये पर अपना कोई दुख दूर न कर पाये. हो सकता है कुछ दुख बढ़ा ही हो क्योंकि कम्पनी राज की सारी बुराइयाँ रानी राज में ज्यों की त्यों बनी रहीं और रानी के नाम पर पहले के ज़ुल्म और भी ज़ोर के साथ और निडर होकर किये जाने लगे.

राज के सुधार के तमाशे हर बीसवें तीसवें वर्ष होते रहे. आख़िर बड़ी मेहनतों के बाद और बहुत से बलिदानों के बदलेमें सन् १९४७ की आज़ादी मिली. इस आज़ादी में अंगरेज़ तो हाथ धो कर अलग जा खड़ा हुआ पर अंगरेज़ी राज के ऐब सब ज्यों के त्यों जहाँ के तहाँ उसी तरह जड़ पकड़े रहे जैसे ईस्ट इन्डिया कंपनी के ज़माने में पकड़े हुए थे. जिस तरह खोट भरी सोने की अंगूठी ख़टकन का रूप लेकर लोगों की नज़र में पहले से नई तो हो जाती है, चमकने भी लगती है, शकल भी मनमोहक ले लेती है पर सोने के लिहाज़ से तो वह खोटे सोने की ही बनी रहती है और नाम ख़टकन रख लेती है. जब तक अंगूठी का सोना सुनार की घरिया में पड़कर आग की तपन के सहारे बथल पुथल का समामा न देख ले

چال پوری چل گئی اور جادو کا کام کر گئی۔ ہندستانیوں نے اس میں اپنی جیت سمجھی اور لندن کے پنڈتوں نے اپنی۔ جیت ہوئی لندن کی۔ ہندستانیوں کا تو من بہلاوا ہوا۔ راج بدلا پر بازی گری کے ڈھنگ سے۔ ہندستانیوں کو راج بدلا ہوا دکھائی دیا پر وہ نری نظر بندی تھی۔ وہی افسر تھے، وہی راج کا طریقہ تھا۔ وہی بیوپاری ہتھکنڈے تھے، وہی سب کچھ تھا، صرف نام بدل گیا تھا۔ کمپنی کا راج ہی رانی کا راج کہلانے لگا تھا۔ یہ تو تھا پہلا تماشہ جسے دیکھ کر ہندستانی خوش ہو گئے پر اپنا کوئی دکھ دور نہ کر پائے۔ ہو سکتا ہے کچھ دکھ بڑھا ہی ہو کیونکہ کمپنی راج کی ساری برائیاں رانی راج میں جیوں کی تیوں بنی رہیں اور رانی کے نام پر پہلے کے ظلم اور بھی زور کے ساتھ اور نڈر ہو کر کئے جانے لگے۔

راج کے سدھار کے تماشے ہر بیسویں تیسویں ورش ہوتے رہے۔ آخر بڑی محنتوں کے بعد اور بہت سے بلیدانوں کے بدلے میں سنہ ۱۹۴۷ کی آزادی ملی۔ اس آزادی میں انگریز تو ہاتھ دھو کر الگ جا کھڑا ہوا پر انگریزی راج کے عیب سب جیوں کے تیوں جہاں کے تہاں اسی طرح جڑ پکڑے رہے جیسے ایسٹ انڈیا کمپنی کے زمانے میں پکڑے ہوئے تھے۔ جس طرح کھوٹ بھری سونے کی انگوٹھی ٹکن کا روپ لیکر لوگوں کی نظروں میں پہلے سے نئی تو ہو جاتی ہے، چمکنے بھی لگتی ہے، شکل بھی منموہک لے لیتی ہے پر سونے کے لحاظ سے تو وہ کھوٹے سونے کی ہی بنی رہتی ہے اور نام ٹکن رکھ لیتی ہے۔ جب تک انگوٹھی کا سونا سنار کی گھریا میں پڑ کر آگ کی تپن کے سہارے اتھل پتھل کا زمانہ نہ دیکھ لے

था. वह उन्हीं के हाथों होता था.हिन्दुस्तान पर सीधी हुकूमत ईस्ट इन्डिया कम्पनी की थी और नाम की बादशाहत बहादुर शाह के हाथ में थी. ईस्ट इन्डिया कम्पनी इतना राज नहीं करती थी जितनी वह यहाँ की तिजारत को मटिया मेट करने मे जुटी रहती थी और यह बात न यहाँ के बादशाह से छिपी हुई थी, न और छोटे राजाओं से और न व्योपार में लगी प्रजा से. पर ईस्टइन्डिया कम्पनी हुकूमत के दफ्तरों पर कुछ इस तरह छा गई थी कि बादशाह हिन्दुस्तान को ईस्ट इन्डिया कम्पनी के चंगुल से निकालना चाहने पर भी न निकाल पा सकता था और बादशाह होते हुए भी क़िले के जेलख़ाने में बन्द था और पिजड़े के शेर की तरह ईस्ट इन्डिया कम्पनी पर फुन फुनाकर और तड़प कर चुप बैठ जाता था.

बादशाह की तड़प हिन्दुस्तानी सिपाहियों से छिपी न रह सकी. और बहुत जल्दी ही सारे सिपाहियों में एक रोटी घूम गई और कुछ ही दिनों में हिन्दू मुसलमान का भेद ही नहीं मिट गया बल्कि उनमें एक दांतकाटी क़ायम हो गई और जल्दी ही सब बादशाह के हरे भण्डे के नीचे जमा हो गये और ईस्ट इण्डिया कम्पनी को जिसके वह नौकर थे देश से निकाल बाहर करने पर तुल खड़े हुए. किसी वजह से उनकी मनचाही तो न हो सकी पर सारे देश में ईस्ट इन्डिया कम्पनी के ख़िलाफ़ बड़ी गहरी नफ़रत फैल गई जिसको किसी तरह मिटती न देखकर लन्दन के राजनीति के पंडितों ने यही ठीक समझा कि ईस्ट-इण्डिया कम्पनी का राज ख़तम किया जाय और उसी के झोंके में बादशाही राज को भी उड़ाकर रानी विक्टोरिया के राज की स्थापना हिन्दुस्तान में की जाय और उनकी यह

تھا۔ وہ انہیں کے ہاتھوں ہوتا تھا۔ ہندستان پر سیدھی حکومت ایسٹ انڈیا کمپنی کی تھی اور نام کی بادشاہت بہادر شاہ کے ہاتھ میں تھی۔ ایسٹ انڈیا کمپنی اتنا راج نہیں کرتی تھی جتنی وہ یہاں کی تجارت کو مٹیا میٹ کرنے میں جٹی رہتی تھی اور یہ بات نہ یہاں کے بادشاہ سے چھپی ہوئی تھی، نہ اور چھوٹے راجاؤں سے اور نہ بیوپار میں لگی پرجا سے۔ پر ایسٹ انڈیا کمپنی حکومت کے دفتروں پر کچھ اس طرح چھا گئی تھی کہ بادشاہ ہندستان کو ایسٹ انڈیا کمپنی کے چنگل سے نکالنا چاہنے پر بھی نہ نکال پا سکتا تھا اور بادشاہ ہوتے ہوئے بھی قلعے کے جیل خانے میں بند تھا اور پنجرے کے شیر کی طرح ایسٹ انڈیا کمپنی پر پھن پھنا کر اور تڑپ کر چپ بیٹھ جاتا تھا۔

بادشاہ کی تڑپ ہندستانی سپاہیوں سے چھپی نہ رہ سکی۔ اور بہت جلد ہی سارے سپاہیوں میں ایک روٹی گھوم گئی اور کچھ ہی دنوں میں ہندو مسلمان کا بھید ہی نہیں مٹ گیا بلکہ ان میں ایک دانتا کاٹی قائم ہو گئی اور جلد ہی سب بادشاہ کے ہرے جھنڈے کے نیچے جمع ہو گئے اور ایسٹ انڈیا کمپنی کو جسکے وہ نوکر تھے دیش سے نکال باہر کرنے پر تل کھڑے ہوئے۔ کسی وجہ سے ان کی من چاہی تو نہ ہو سکی پر سارے دیش میں ایسٹ انڈیا کمپنی کے خلاف بڑی گہری نفرت پھیل گئی۔ جس کو کسی طرح مٹتی نہ دیکھ کر لندن کے راج نیتی کے پنڈتوں نے یہی ٹھیک سمجھا کہ ایسٹ انڈیا کمپنی کا راج ختم کیا جائے اور اسی کے جھونکے میں بادشاہی راج کو بھی اڑا کر رانی وکٹوریہ کے راج کی استھاپنا ہندستان میں کی جائے اور ان کی =

है. यह ठीक है कि कुछ लोग उस हिन्दुस्तानी को उर्दू भी कहते हैं. पर ख्वाजा साहब तो उर्दू नाम वाली हिन्दुस्तानी भी नहीं बोले. वह जो बोले वह कहीं नहीं बोली जाती. और फिर वह निजी हैसियत से बोले कहाँ ? उन्होंने कई बार यह जताने की कोशिश की कि वह हिन्द के प्रतिनिधि हैं, हिन्दी हैं और उसी हैसियत से बोल रहे हैं.

रेडियो पर और वह भी विदेश के रेडियो से इस तरह की बातचीत ब्राडकास्ट हो तब हिन्दी वाले न भड़कें तो क्या करें ? और वह गुस्से में आकर गलत या सही संस्कृत की तरफ़ दौड़ने लगें तो दोष किसका ?

हमें उम्मीद है कि जिम्मेदार सरकारी वज़ीर इस ओर ध्यान देंगे और ऐसा कोई इन्तज़ाम कर देंगे कि आइन्दा किसी को ऐसी शिकायत न हो पाये.

नागपुर

भगवान दीन

•

एक और नया तमाशा

सन् १८५७ में दिल्ली में हिन्दुस्तान के शाही तख़्त पर हिन्दुस्तानी बादशाह बहादुर शाह था. मामूली जनता से लेकर हिन्दुस्तान के राजे महराजे और बर्तानिया से आई ईस्ट इन्डिया के अफ़सर उसी को राजा मानते थे. हां, ईस्ट इन्डिया कम्पनी के अफ़सर बहादुर शाह को नाम का राजा मानते थे और उन बाहर से गोरे और अन्दर से काले दिल वालों को वैसा मानने का हक़ था. क्योंकि हुकूमत के नाम पर उन दिनों हिन्दुस्तान में जो कुछ होता

ہے۔ یہ ٹھیک ہے کہ کچھ لوگ اس ہندستانی کو اُردو بھی کہتے ہیں۔ پر خواجہ صاحب تو اُردو نام والی ہندستانی بھی نہیں بولے وہ جو بولے وہ کہیں نہیں بولی جاتی۔ اور پھر وہ نجی حیثیت سے بولے کہاں؟ انھوں نے کئی بار یہ جتانے کی کوشش کی کہ وہ ہند کے پرتی ندھی ہیں، ہندی ہیں اور اسی حیثیت سے بول رہے ہیں۔

ریڈیو پر اور وہ بھی ودیش کے ریڈیو سے اس طرح کی بات چیت براڈکاسٹ ہو تب ہندی والے نہ بھڑکیں تو کیا کریں؟ اور وہ غصے میں آکر غلط یا صحیح سنسکرت کی طرف دوڑنے لگیں تو دوش کس کا؟

ہمیں امید ہے کہ ذمے دار سرکاری وزیر اس اور دھیان دینگے اور ایسا کوئی انتظام کر دیں گے کہ آئندہ کسی کو ایسی شکایت نہ ہو پائے۔

ناگپور

بھگوان دین

ایک اور نیا تماشہ

سنہ ۱۸۵۷ میں دلی میں ہندستان کے شاہی تخت پر ہندستانی بادشاہ بہادر شاہ تھا۔ معمولی جنتا سے لے کر ہندستان کے راجے مہاراجے اور برطانیہ سے آئی ایسٹ انڈیا کے افسر اسی کو راجہ مانتے تھے۔ ہاں، ایسٹ انڈیا کمپنی کے افسر بہادر شاہ کو نام کا راجا مانتے تھے اور اُن باہر سے گورے اور اندر سے کالے دل والوں کو ویسا ماننے کا حق تھا۔ کیونکہ حکومت کے نام پر اُن دنوں ہندستان میں جو کچھ ہوتا

सकते हैं. हमने सब से पहला सबक मकतब में मौलवी साहब से पढ़ा है और सब से पहली किताबें जो हमें पढ़ने को मिली थीं वह थीं 'हिकायते-लतीफ़', 'करीमा' और 'खालिक-बारी', यानी हमने बचपन से उर्दू ही नहीं फ़ारसी पढ़ी है. बाद में गुलिस्तां, बोस्तां और अनवार सहेली पढ़नी पड़ी थीं और उसी छोटे-मोटे ज्ञान के आधार पर हम यह कहते हैं कि यूनेस्को में हिन्द के नुमाइन्दे ख्वाजा गुलामुस्सैयदैन की १५ दिसम्बर सन १९४९ को रात के साढ़े आठ बजे बी० बी० सी० लन्दन से दी हुई बातचीत सोलहो आना उर्दू नहीं उर्दू-ए मुअल्ला थी यह क्या ? इसकी जिम्मेदारी किसके सर ? ऐसी उर्दू तो पाकिस्तान के किसी स्टेशन से भी मामूली कामों के लिए नहीं बोली जाती साहित्य की चर्चा में बेशक ऐसी उर्दू काम में आती है पर वह भी किसी तरह सौ फ़ीसदी उर्दू नहीं होती. असल में सौ फ़ीसदी उर्दू से कोई काम चल ही नहीं सकता यहाँ तक कि अच्छी शायरी भी नहीं हो सकती. अच्छी शायरी के लिये उर्दू जानने वाले या तो खालिस फ़ारसी से काम लेते हैं या चलती बहती हिन्दुस्तानी का सहारा लेते हैं तभी उसमें रवानी आती है. क्या अब हम ख्वाजा साहब की बातचीत के लिये बी० बी० सी०, लन्दन को जिम्मेदार ठहरायें ? उससे हमसे क्या सरोकार ? हम यह मानते हैं कि बी० बी० सी०, लन्दन ने बेशक यह भूल की और इससे ज्यादा हम उससे कह ही क्या सकते हैं ? पर सवाल तो यह है कि ख्वाजा साहब ने ऐसी भूल क्यों की ? अगर वह वहाँ निजी हैसियत से भी बोले होते तब भी हम तसल्ली नहीं मान सकते थे, क्योंकि उर्दू हिन्द की बोली नहीं है. हिन्द की बोली तो हिन्दुस्तानी

سکتے ہیں۔ ہم نے سب سے پہلا سبق مکتب میں مولوی صاحب سے پڑھا ہے اور سب سے پہلی کتابیں جو ہمیں پڑھنے کو ملی تھیں وہ تھیں 'حکایت لطیف' 'کریما' اور 'خالق باری' یعنی ہم نے بچپن سے اُردو ہی نہیں فارسی پڑھی ہے۔ بعد میں گلستاں بوستاں اور انوار سہیلی پڑھنی پڑی تھیں اور اُسی چھوٹے موٹے گیان کے آدھار پر ہم یہ کہتے ہیں کہ یونیسکو میں ہند کے نمائندے خواجہ غلام السیدین کی ۱۵ دسمبر ۱۹۴۹ کو رات کے ساڑھے آٹھ بجے بی بی سی لندن سے دی ہوئی بات چیت سولھوں آنہ اُردو نہیں اُردوئے معلیٰ تھی۔ یہ کیا؟ اس کی ذمہ داری کس کے سر؟ ایسی اُردو تو پاکستان کے کسی اسٹیشن سے بھی معمولی کاموں کے لئے نہیں بولی جاتی۔ ساہتیہ کی چرچا میں بیشک ایسی اُردو کام میں آتی ہے پر وہ بھی کسی طرح سو فیصدی اُردو نہیں ہوتی۔ اصل میں سو فیصدی اُردو سے کوئی کام چل ہی نہیں سکتا۔ یہاں تک کہ اچھی شاعری بھی نہیں ہو سکتی۔ اچھی شاعری کے لئے اُردو جاننے والے یا تو خالص فارسی سے کام لیتے ہیں یا چلتی بہتی ہندستانی کا سہارا لیتے ہیں۔ تبھی اُس میں روانی آتی ہے۔ کیا اب ہم خواجہ صاحب کی بات چیت کے لئے بی بی سی لندن کو ذمہ دار ٹھہرائیں؟ اُس سے ہم سے کیا سروکار؟ ہم یہ مانتے ہیں کہ بی بی سی، لندن نے بیشک یہ بھول کی اور اس سے زیادہ ہم اُس سے کہہ ہی کیا سکتے ہیں؟ پر سوال تو یہ ہے کہ خواجہ صاحب نے ایسی بھول کیوں کی؟ اگر وہ وہاں نجی حیثیت سے بھی بولے ہوتے تب بھی ہم تسلی نہیں مان سکتے تھے۔ کیونکہ اُردو ہند کی بولی نہیں ہے۔ ہند کی بولی تو ہندستانی

इसलिए हम लन्दन की हिन्दुस्तानी को सौ फीसदी हिन्दुस्तानी मानी कर भी तीन से पांच फ़ीसदी तक संस्कृत कह सकते हैं.

अब लीजिये कराची, लाहौर और ढाका की उर्दू को. इन स्टेशनों की उर्दू भी सौ फीसदी उर्दू नहीं होती. उसमें दस फीसदी ठेठ हिन्दी के शब्द रहते ही हैं. और एक दो फीसदी कभी कभी किसी प्रोग्राम में तत्सम संस्कृत के शब्द भी आ जाते हैं. ढाका के बंगाली प्रोग्राम को तो हम छोड़े ही देते हैं. कराची, लाहौर, ढाका तीनों स्टेशनों का उर्दू प्रोग्राम भी हिन्द के बहुत लोग समझ लेते हैं और नागपुर शहर के (क्योंकि आजकल हम नागपुर में हैं और वहीं से यह नोट लिख रहे हैं) अनपढ़ शहरी भी इन तीनों स्टेशनो के रूपकों को सुनकर खासा रस ले लेते हैं और रूपक को पूरी तरह समझने में बहुत कम टोटे में रहते हैं.

पर १५ दिसम्बर को रात के साढ़े आठ बजे बी० बी० सी० लन्दन ने जो प्रोग्राम ब्राडकास्ट किया और जिसको उसने उन ख्वाजा गुलामुस्सैयदैन से बोला हुआ बताया जो युनेस्को में हिन्द की तरफ से प्रतिनिधि होकर गये हुए हैं और जो हिन्द से अमरीका जाते वक्त पंडित जवाहर लाल जी के साथ थे और उन्हीं के साथ मिश्र की राजधानी क़ाहिरा में उतरे थे क्योंकि उन्होने रेडियो पर बातचीत के वक्त पन्द्रह दिसम्बर को इस बात की भी चर्चा की थी, इनकी बातचीत सौ फीसदी उर्दू मे थी जो न पाकिस्तान में बोली जाती है और न हिन्द मे. और जिसके बारे में हम हिम्मत के साथ कह सकते हैं कि वह ख्वाजा साहब की मादरी ज़बान भी नहीं. जो वह बोले थे उसे हम मजलिसी या बनावटी ज़बान ही कह

(९०)

اس لئے ہم لندن کی ہندستانی کو سو فیصدی ہندستانی مان کر بھی تین سے پانچ فیصدی تک سنسکرت کہہ سکتے ہیں۔

اب لیجئے کراچی، لاہور اور ڈھاکہ کی اُردو کو۔ ان اسٹیشنوں کی اُردو بھی سو فیصدی اُردو نہیں ہوتی۔ اُس میں دس فیصدی ٹھیٹھ ہندی کے شبد رہتے ہی ہیں۔ اور ایک دو فیصدی کبھی کبھی کسی پروگرام میں تتسم سنسکرت کے شبد بھی آجاتے ہیں۔ ڈھاکہ کے بنگالی پروگرام کو تو ہم چھوڑ ہی دیتے ہیں۔ کراچی، لاہور، ڈھاکہ تینوں اسٹیشنوں کا اُردو پروگرام بھی ہند کے بہت لوگ سمجھ لیتے ہیں اور ناگپور شہر کے (کیونکہ آج کل ہم ناگپور میں ہیں اور وہاں سے یہ نوٹ لکھ رہے ہیں) ان پڑھ شہری بھی ان تینوں اسٹیشنوں کے روپکوں کو سُن کر خاص رس لے لیتے ہیں اور روپک کو پوری طرح سمجھنے میں بہت کم ٹوٹے میں رہتے ہیں۔

پر ۱۵ دسمبر کو رات کے ساڑھے آٹھ بجے بی بی سی لندن سے جو پروگرام براڈکاسٹ کیا اور جس کا اُس نے اُن خواجہ غلام السیدین سے بولا ہوا بتایا جو یونیسکو میں ہند کی طرف سے پرتی ندھی ہوکر گئے ہوئے ہیں اور جو ہند سے امریکہ جاتے وقت پنڈت جواہر لال جی کے ساتھ تھے اور انھیں کے ساتھ مصر کی راج دھانی قاہرہ میں اترے تھے کیونکہ اُنھوں نے ریڈیو پر بات چیت کے وقت پندرہ دسمبر کو اس بات کی بھی چرچا کی تھی۔ اُن کی بات چیت سو فیصدی اُردو میں تھی جو نہ پاکستان میں بولی جاتی ہے اور نہ ہند میں۔ اور جس کے بارے میں ہم ہمّت کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ وہ خواجہ صاحب کی مادری زبان بھی نہیں۔ جو وہ بولے تھے اُسے ہم مجلسی یا بناوٹی زبان ہی کہہ

चलता है और जब तक हिन्दुस्तान के टुकड़े नहीं हुए थे तब तक सारे हिन्दुस्तान के लिए एक ही प्रोग्राम रहा करता था. पर हिन्दुस्तान के दो टुकड़े हो जाने पर न जाने किस दिन से बी० बी० सी० लन्दन ने अपने हिन्दुस्तानी प्रोग्राम को दो हिस्सों में बांट दिया है. एक पाकिस्तान के लिए और दूसरा हिन्द के लिए. पाकिस्तान के लिए वह उर्दू में बोलता है और हिन्द के लिए हिन्दुस्तानी में आज १६ दिसम्बर सन् १९४९ तक बी० बी० सी० लन्दन हिन्द के लिए जो प्रोग्राम ब्राडकास्ट करता है उसको हिन्दुस्तानी कहकर बताता है. उसे वह कब हिन्दी कहना शुरू कर देगा इसका पता नहीं. हमको यहाँ सिर्फ़ यह कहना है कि जो उर्दू का प्रोग्राम बी० बी० सी० लन्दन पाकिस्तान के लिए ब्राडकास्ट करता है वह दस फ़ीसदी हिन्दुस्तानी होता है और तीन से पांच फ़ीसदी तक ठेठ हिन्दी होता है उस को पाकिस्तानी और हिन्दी दोनों समझते हैं. यह हम इस आधार पर कह रहे हैं कि पाकिस्तान और हिन्द दोनों मुल्कों के शहरों से बी० बी० सी० लन्दन के पास सवाल पहुँचते हैं और वह उनके जवाब ब्राडकास्ट करता है.

हिन्द के लिए हिन्दुस्तानी में बी० बी० सी० लन्दन से जो प्रोग्राम ब्राडकास्ट किया जाता है उसको हमें सौ फ़ीसदी हिन्दुस्तानी ही कहना पड़ेगा. यह दूसरी बात है कि जबसे हिन्दुस्तान ने हिन्दी को दफ़्तरी बोली मान लिया है तब से बी० बी० सी० लन्दन के प्रोग्राम में ठेठ, चालू और रचे-पचे हिन्दी शब्दों की जगह कुछ कुछ संस्कृत के तत्सम शब्द जगह लेने लगे हैं और यह दिल्ली रेडियो की नक़ल है. और दिल्ली की नक़ल करने के लिए लन्दन मजबूर है.

چلتا ہے اور جب تک ہندستان کے ٹکڑے نہیں ہوئے تھے تب تک سارے ہندستان کے لئے ایک ہی پروگرام رہا کرتا تھا۔ پر ہندستان کے دو ٹکڑے ہو جانے پر نہ جانے کس دن سے بی۔بی۔سی لندن نے اپنے ہندستانی پروگرام کو دو حصوں میں بانٹ دیا ہے۔ ایک پاکستان کے لئے اور دوسرا ہند کے لئے۔ پاکستان کے لئے وہ اردو میں بولتا ہے اور ہند کے لئے ہندستانی میں۔ آج ۱۶ دسمبر سنہ ۴۹ء تک بی۔بی۔سی لندن ہند کے لئے جو پروگرام براڈکاسٹ کرتا ہے اس کو ہندستانی کہہ کر بتاتا ہے۔ اسے وہ کب ہندی کہنا شروع کر دے گا اس کا پتہ نہیں۔ ہم کو یہاں صرف یہ کہنا ہے کہ جو اردو کا پروگرام بی۔بی۔سی لندن پاکستان کے لئے براڈکاسٹ کرتا ہے وہ دس فیصدی ہندستانی ہوتا ہے اور تین سے پانچ فیصدی تک ٹھیٹھ ہندی ہوتا ہے۔ اس کو پاکستانی اور ہندی دونوں سمجھتے ہیں۔ یہ ہم اس آدھار پر کہہ رہے ہیں کہ پاکستان اور ہند دونوں ملکوں کے شہروں سے بی۔بی۔سی لندن کے پاس سوال پہنچتے ہیں اور وہ ان کے جواب براڈکاسٹ کرتا ہے۔

ہند کے لئے ہندستانی میں بی بی سی لندن سے جو پروگرام براڈکاسٹ کیا جاتا ہے اس کو ہمیں سو فیصدی ہندستانی ہی کہنا پڑے گا۔ یہ دوسری بات ہے کہ جب سے ہندستان نے ہندی کو دفتری بولی مان لیا ہے تب سے بی۔بی۔سی لندن کے پروگرام میں ٹھیٹھ، چالو اور رچے بچے ہندی شبدوں کی جگہ کچھ کچھ سنسکرت کے تتسم شبد جگہ لینے لگے ہیں اور یہ دلی ریڈیو کی نقل ہے۔ اور دلی کی نقل کرنے کے لئے لندن مجبور ہے۔

हमारी राय

कुछ तो ख़याल रखना चाहिये

रेडियो से जिस तरह दूसरे मुल्कों के लिए पश्तो, रूसी, जर्मन, चीनी, अंगरेज़ी में प्रोग्राम चलते हैं वैसे ही पाकिस्तान की ख़ातिर उर्दू में भी प्रोग्राम चलता है. हम से कोई पूछे तो हम इस उर्दू प्रोग्राम के बिलकुल ख़िलाफ़ हैं. पूर्वी और पच्छिमी दोनों पाकिस्तानों की आबादी का वह हिस्सा जो पाकिस्तानी उर्दू समझ लेता है वह दिल्ली से चले हुए सब हिन्दुस्तानी प्रोग्रामों को बहुत आसानी से समझ सकता है. हमने महीनों लाहौर को सुना है, उसके आसान और मुश्किल उर्दू के प्रोग्राम भी सुने हैं. उसके बल पर हम यह कह सकते हैं कि लाहौर की आसान से आसान उर्दू से भी दिल्ली के प्रोग्रामों की हिन्दुस्तानी ज्यादा आसान होती है और पूर्वी पच्छिमी पाकिस्तान में बड़ी अच्छी तरह समझी जा सकती है. फिर अलग उर्दू के प्रोग्राम की क्या ज़रूरत थी. यह कह कर हम सरकार को यह सलाह नहीं दे रहे हैं कि वह उर्दू का प्रोग्राम बन्द करदे या उसको आसान हिन्दुस्तानी में बदल दे. हम तो यह दलील किसी और ही नियत से दे रहे हैं.

बी ० बी ० सी लन्दन से मुद्दतों से हिन्दुस्तानी में एक प्रोग्राम

(۸۸)

ہماری رائے

کچھ تو خیال رکھنا چاہئے

ریڈیو سے جس طرح دوسرے ملکوں کے لئے پشتو، روسی، جرمن، چینی، انگریزی میں پروگرام چلتا ہے۔ ویسے ہی پاکستان کی خاطر اُردو میں بھی پروگرام چلتا ہے۔ ہم سے کوئی پوچھے تو ہم اس اُردو پروگرام کے بالکل خلاف ہیں۔ پوربی اور پچھمی دونوں پاکستانوں کی آبادی کا وہ حصہ جو پاکستانی اُردو سمجھ لیتا ہے وہ دلی سے چلے ہوئے سب ہندستانی پروگراموں کو بہت آسانی سے سمجھ سکتا ہے۔ ہم نے مہینوں لاہور کو سنا ہے، اس کے آسان اور مشکل اُردو کے پروگرام بھی سنے ہیں۔ اس کے بل پر ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ لاہور کی آسان سے آسان اُردو سے بھی دلی کے پروگراموں کی ہندستانی زیادہ آسان ہوتی ہے اور پوربی پچھمی پاکستان میں بڑی اچھی طرح سمجھی جا سکتی ہے: پھر الگ اُردو کے پروگرام کی کیا ضرورت تھی۔ یہ کہہ کر ہم سرکار کو یہ صلاح نہیں دے رہے ہیں کہ وہ اُردو کا پروگرام بند کردے یا اس کو آسان ہندستانی میں بدل دے۔ ہم تو یہ دلیل کسی اور ہی نیت سے دے رہے ہیں۔

بی۔ بی۔ سی لندن سے مدتوں سے ہندستانی میں ایک پروگرام

जहाँपनाह !···जहाँपनाह ! (और जोर से) जहाँपनाह ! जहाँपनाह !

[हुमायूँ हड़बड़ा कर उठता है. नेपथ्य का कोलाहल अब जल्दी जल्दी बढ़ता है.]

हुमायूँ—(घबरा कर) क्या, क्या हुआ, सिपहसालार ?

सिपहसालार—हुजूर, शेरखाँ ने एकाएक हम पर हमला किया है

हुमायूँ—(और घबरा कर, खड़े होते हुए, हमला ?...धोका... दगा ....फरेब ! (कुछ सभंलकर) उसकी फ़ौज तो महाथा चीरो के बलवाइयों को दबाने के लिये जा रही थी न ? हर रोज जा रही थी ?

सिपहसालार—वह सब फ़रेब था, जहाँपनाह, बड़े से बड़ा फरेब. थोड़ी थोड़ी फौज को कई दिनों से उस तरफ भेज और इस तरह की खबरें उड़वाकर, हमें धोके में रख रहा था.

हुमायूँ—(और अधिक घबड़ा कर) तो...तो हमारी फौज की तैयारी.........

सिपहसालार—मैं हुक्म तो दे आया हूँ, तैयारी के ढोल भी पिट रहे हैं. मगर .....मगर... ..

हुमायूँ—(अत्यन्त क्रोध से) मगर····मगर, क्या, हमें लड़ना है···बहादुरी...ज्यादा से ज्यादा दिलेरी के साथ लड़ना........

[हुमायूँ शीघ्रता से डेरे के बाहर निकलता है. सिपहसालार भी पीछे पीछे जाता है. अब बाहर का कोलाहल बहुत बढ़ गया है]

यवनिका

جہاں پناہ ..... جہاں پناہ (اور زور سے) جہاں پناہ! جہاں پناہ!

(ہمایوں ہڑبڑا کر اٹھتا ہے۔ اب نے پتھد کا کولاہل بڑھتا ہے)

ہمایوں — (گھبرا کر) کیا، کیا ہوا سپہ سالار؟

سپہ سالار — حضور شیر خاں نے یکایک ہم پر حملہ کیا ہے۔

ہمایوں — (اور گھبرا کر کھڑے ہوتے ہوئے) حملہ؟ ... دھوکہ ..... دغا .. . فریب! (کچھ سنبھل کر) اس کی فوج تو بہاجیروں کے بلوائیوں کو دبانے کے لئے جا رہی تھی نہ؟ ہر روز جا رہی تھی؟

سپہ سالار — وہ سب فریب تھا، جہاں پناہ، بڑے سے بڑا فریب۔ تھوڑی تھوڑی فوجوں کو کئی دنوں میں اس طرف بھیج اور اس طرح کی خبریں اڑا کر ہمیں دھوکے میں رکھ رہا تھا۔

ہمایوں — (کچھ اور گھبرا کر) تو ... تو ہماری فوج کی تیاری ...؟

سپہ سالار — میں حکم تو دے آیا ہوں۔ تیاری کے ڈھول بھی پٹ رہے ہیں مگر ... مگر

ہمایوں — (انتہائی کرودھ سے) اگر ..... مگر کیا ہمیں لڑنا ہے بہادری ... زیادہ سے زیادہ دلیری کے ساتھ لڑنا ..

(ہمایوں تیزی سے ڈیرے کے باہر نکلتا ہے۔ سپہ سالار بھی پیچھے پیچھے جاتا ہے اب باہر کا کولاہل بہت بڑھ گیا ہے)

یونیکا

अनेक प्रकार की बेश क़ीमती सजावट है. शमादान जल रहा है. जिसका प्रकाश हुमायूँ के मुख पर पड़ रहा है. हुमायूँ का वर्णन निरर्थक है. क्योंकि सभी उसके चित्रों को देख चुके हैं. नेपथ्य से गान की ध्वनि आ रही है.

गाना

पाँव पसारे सोने वाले दुश्मन है बेदार !
दुश्मन है बेदार ग़ाफ़िल, दुश्मन है बेदार !
जीवन दीप की जोत हवा है
नींद और मौत के बीच में क्या है ?
साँसों की दीवार है ग़ाफ़िल, साँसों की दीवार !
दुश्मन है बेदार ग़ाफ़िल दुश्मन है बेदार !
सोने वाले बेख़बरों पर, जागते रहने वाले अकसर
कर जाते हैं वार रे ग़ाफ़िल, कर जाते हैं वार
दुश्मन है बेदार, ग़ाफ़िल दुश्मन है बेदार
उठ अपनी शक्ती को जगाले, कोई तुझ पर हाथ न डाले
टोली के सरदार रे ग़ाफ़िल, टोली के सरदार
दुश्मन है बेदार, ग़ाफ़िल दुश्मन है बेदार

[नेपथ्य में एकाएक कोलाहल होता है. धीरे-धीरे कोलाहल बढ़ता है. लड़ाई के ढोल बजने लगते हैं. गान की ध्वनि इस कोलाहल में डूब जाती है. कुछ ही देर में डेरे के परदे को उठा कर हुमायूँ का सिपह सालार सैनिक वेष में आता है.]

सिपहसालार—(हुमायूँ के पलंग के निकट आकर ज़ोर से)

कोलाहल = शोर.

انیک پرکار کی بیش قیمتی سجاوٹ ہے۔ شمع دان جل رہا ہے جس کا پرکاش ہمایوں کے مکھ پر پڑ رہا ہے۔ ہمایوں کا ورنن نررتھک ہے کیونکہ سبھی اس کے چتروں کو دیکھ چکے ہیں۔ نے پتھ سے گان کی دھون آ رہی ہے۔

گیت

پاؤں پسارے سونے والے دشمن ہے بیدار
دشمن ہے بیدار غافل دشمن ہے بیدار
جیون دیپ کی جیوت ہوا ہے نیند اور موت کے بیچ میں کیا ہے
سانسوں کی دیوار ہے غافل سانسوں کی دیوار
دشمن ہے بیدار غافل دشمن ہے بیدار
سونے والے بے خبروں پر جاگتے رہنے والے اکثر
کر جاتے ہیں وار رے غافل کر جاتے ہیں وار
دشمن ہے بیدار غافل دشمن ہے بیدار
اٹھ اپنی شکتی کو جگا لے کوئی تجھ پہ ہاتھ نہ ڈالے
ٹولی کے سردار رے غافل ٹولی کے سردار
دشمن ہے بیدار غافل دشمن ہے بیدار

(نے پتھ میں یکایک کولاہل ہوتا ہے۔ دھیرے دھیرے کولاہل بڑھتا ہے۔ لڑائی کے ڈھول بجنے لگتے ہیں۔ گان کی دھونی اس کولاہل میں ڈوب جاتی ہے۔ کچھ ہی دیر میں ڈیرے کے پردے کو اٹھا ہمایوں کا سپہ سالار سینک ویش میں آتا ہے)

سپہ سالار — (ہمایوں کے پلنگ کے نکٹ آکر زور سے)

کولاہل = شور۔

निज़ाम—(चिट्ठी लेते हुए) भाई साहब गंगा किनारे शाट्या गाँव में हैं ?

सैनिक—जी हाँ ! और गंगा के किनारे ही चौसा उर्फ़ झूसा गाँव में बादशाह हुमायूँ मय अपने लश्कर के हैं. हमारे और मुग़ल लश्कर के बीच में सिर्फ़ थोरा नद्दी नाम का नाला है.

निज़ाम—तो किसी दिन भी जंग हो सकती है ?

सैनिक—किसी भी दिन हुज़ूर, हज़रते आला ने सब बातें सिलसिले वार सरकार के ख़त में लिखी हैं.

निज़ाम—तुम अच्छी तरह ठहरो. मैं ख़त अभी देखता हूँ.

[सैनिक का जिस दरवाज़े से वह आया था उसी ओर जाना, निज़ाम जिस ओर लाइ गई है उस ओर जाता है]

लघु-यवनिका

सातवाँ-दृश्य

स्थान—चौसा गाँव में हुमायूँ के शिविर में हुमायूँ का डेरा

समय—उषाकाल

[तीन तरफ़ डेरे के भीतर कपड़े की क़नातें दिखाई पड़ती हैं, जो बहुमूल्य रेशमी छपे हुए वस्त्र की हैं दरवाज़ों पर भी रेशमी पर्दे पड़े हैं. ज़मीन पर रंग बिरंगे क़ालीन हैं सोने के पाये की एक पलंग पर हुमायूँ शयन में मग्न है पलंग के निकट ही सोने के पायों की चौकियों पर पानदान आदि कुछ वस्तुएँ रखी हैं. डेरे में और भी

उषा काल = रात का पिछला पहर. शिविर = ख़ेमा. वस्त्र = कपड़ा. शयन = सोना. वस्तुएँ = चीज़ें.

نظام — (چٹھی لیتے ہوئے) بھائی صاحب گنگا کنارے شاٹیہ گاؤں میں ہیں ؟

سینک — جی ہاں اور گنگا کے کنارے ہی چوسا عرف جھوسا گاؤں میں بادشاہ ہمایوں مع اپنے لشکر کے ہیں۔ ہمارے اور مغل لشکر کے بیچ میں صرف تھورا ندی نام کا نالا ہے۔

نظام — تو کسی دن بھی جنگ ہو سکتی ہے ؟

سینک — کسی بھی دن حضور، حضرت اعلیٰ نے سب باتیں سلسلہ وار خط میں لکھی ہیں۔

نظام — تم اچھی طرح ٹھہرو میں خط ابھی دیکھتا ہوں۔

(سینک کا جس دروازے سے وہ آیا تھا اسی اور جانا نظام جس اور لاڈ گئی ہے اس اور جاتا ہے)

لگھو یونیکا

ساتواں درشیہ

استھان — چوسا گاؤں میں ہمایوں کے شیور میں ہمایوں کا ڈیرا۔

سمے — اوشا کال

(تین طرف ڈیرے کے بھیتر کپڑے کی قناتیں دکھائی پڑتی ہیں جو بہو مولیہ ریشمی چھپے ہوئے بستر کی ہیں دروازوں پر بھی ریشمی پردے پڑے ہیں زمین پر رنگ برنگے قالین ہیں سونے کے پائے کی ایک پلنگ پر ہمایوں شین میں مگن ہے پلنگ کے نکٹ ہی سونے کے پایوں کی چوکیوں پر پاندان آدی کچھ وستویں رکھی ہیں ڈیرے میں اور بھی

اوشا کال = رات کا پچھلا پہر، شیور = خیمہ، بستر = کپڑا، شین = سونا
وستویں = چیزیں۔

हिन्दुओं के निराकार की मुहब्बत है और उसमें मिलकर जिसे वह मुक्त होना कहते हैं, वह हो सकती है. लेकिन शक्ल वालो की मुहब्बत में दिलो का मिलना तो तब तक अधूरा ही रहता है, जब तक जिस्म भी न मिल जायँ. बग़ैर मुहब्बत के भी अगर शौहर और बीवी के जिस्मो का मिलना नापाक नही, वह गिराने वाली चीज नहीं, तो जिनमे सच्ची मुहब्बत है, और उस मुहब्बत की वजह से, जो एक दूसरे के नजदीक आने के लिये एक दूसरे से मिलना चाहते हैं, उनकी यह बातें नापाक और गिराने वाली कैसे कही जा सकती हैं ?

[अब निजाम लाड को गले लगाने के लिये हाथ बढ़ाता है.]

नेपथ्य से रहमान का स्वर—(जोर से) छोटे मियाँ ! छोटे मियाँ...कहाँ हो ?...क्या कर रहे हो ?

निजाम—(चौंककर, हाथ सिकोड़ते हुए, जोर से) कौन ?

नेपथ्य से रहमान का स्वर—(जोर से) हज़रते आलाका शाट्या गाँव से एक सवार आया है.

[क्रोध से तमतमाती लाड दालान में जाती है. दालान के दूसरी ओर निजाम जाकर दरवाजा खोलता है.]

[निज़ाम लम्बी साँस लेकर दुखित मुद्रा से नजर बाग़ मे लौट कर फूलों के पौधो को देखते हुए इधर उधर घूमता है, कुछ ही देर में जो दरवाज़ा निजाम ने खोला था, उससे रहमान के साथ वर्दी पहिने हुए एक सिपाही का आना सिपाही निजाम के पास आ, सलाम कर उसे एक चिट्ठी देता है.]

नेपथ्य = साइड. दुखित मुद्रा = ग़मगीन सूरत

ہندوؤں کے نراکار کی محبت ہے اور اس میں مل کر جسے وہ مُکت ہونا کہتے ہیں، وہ ہو سکتی ہے. لیکن شکل والوں کی محبت میں دلوں کا ملنا تو تب تک ادھورا ہی رہتا ہے، جب تک جسم بھی نہ مل جائیں بغیر محبت کے بھی اگر شوہر اور بیوی کے جسموں کا ملنا ناپاک نہیں، وہ گرانے والی چیز نہیں تو جن میں سچی محبت ہے اور اُس محبت کی وجہ سے جو ایک دوسرے کے نزدیک آنے کے لئے ایک دوسرے سے ملنا چاہتے ہیں اُن کی یہ باتیں ناپاک اور گرانے والی کیسے کہی جاسکتی ہیں؟

(اب نظام لاڈ کو گلے لگانے کے لئے ہاتھ بڑھاتا ہے)

نے پتھ سے رحمان کا سور (زور سے) چھوٹے میاں! چھوٹے میاں...... کہاں ہو؟ ...... کیا کر رہے ہو؟

نظام — (چونک کر ہاتھ سکوڑتے ہوئے زور سے) کون ؟

نے پتھ سے رحمان کا سور — حضرت اعلیٰ کا شاٹیا گاؤں سے ایک سوار آیا ہے۔

(کرودھ سے تمتماتی لاڈ دالان میں جاتی ہے. دالان کے دوسری اور نظام جاکر دروازہ کھولتا ہے)

(نظام لمبی سانس لے کر دُکھت مُدرا سے نظر باغ میں لوٹ کر پھولوں کے پودوں کو دیکھتے ہوئے ادھر اُدھر گھومتا ہے کچھ ہی دیر میں جو دروازہ نظام نے کھولا تھا۔ اس سے رحمان کے ساتھ وردی پہنے ہوئے ایک سپاہی کا آنا، سپاہی نظام کے پاس آ سلام کر اُسے ایک چٹھی دیتا ہے)

نے پتھ = سائڈ

निजाम—(गम्भीरता से विचारते हुए) उसे तो मैं नापाक नहीं समझता.

लाड—मैंने भी तुम्हें पहले पहल आगरे के उस बाग में देखा. उसके पहले मुहब्बत किसे कहते हैं, मैं जानती ही न थी. तुम्हे देखते ही एक अजीब किस्म की हलचल मेरे दिल मे मच गई. हम दोनों ने जब पहली मरतबा एक दूसरे को देखा था उसे कितना वक्त गुजर गया. तब से बस मेरे लिये तुम हो और तुम्हारे लिये मैं. इसके सिवा हम दोनों के लिये दुनिया में सब कुछ बेकार है.

[निजाम कुछ न कह, थोड़ा सा मुँह खोल लाड की ओर देखता रहता है. लाड उसकी तरफ देखती है. कुछ देर निस्तब्धता.]

लाड—तुमने तो मेरे देखने के बाद किसी से शादी ही नहीं की. मेरी दो शादियाँ बिना किसी मुहब्बत के जबरदस्ती हुई. चूँकि मेरी इस तरह की दो शादियाँ हो गई, सिर्फ इसलिये हम लोगों की मुहब्बत नापाक कैसे समझी जा सकती है ?

[निजाम फिर भी कुछ न कहकर उसी प्रकार की मुद्रा से लाड की ओर देखता है और लाड निजाम की तरफ. कुछ देर खामोशी]

लाड—सच्ची मुहब्बत के बाद एक दूसरे से मिलने, एक दूसरे से बात करने की ख्वाहिश तो कुदरती चीज है (आलिगन के लिये दोनो बाँहे फैला कर) और यह सब चीजे गिराती नहीं, एक दूसरे को करीब लाती हैं (बाँहों को सिकोड़) हमारे दिल एक दूसरे को चाहते हैं. लेकिन उनके जरिये तो हमारे जिस्म ही हैं (कुछ रुककर) निजाम, जिस मुहब्बत को तुम पाक कहते हो, वह ....वह शायद

आलिंगन = हम आगोशी.

نظام—(گمبھیرتا سے وچارتے ہوئے) اُسے تو میں ناپاک نہیں سمجھتا۔

لاڈ— میں نے بھی تمہیں پہلے پہل آگرے کے اُس باغ میں دیکھا۔ اس کے پہلے محبت کسے کہتے ہیں میں جانتی ہی نہ تھی۔ تمہیں دیکھتے ہی ایک عجیب قسم کی ہلچل میرے دل میں مچ گئی۔ ہم دونوں نے جب پہلی مرتبہ ایک دوسرے کو دیکھا تھا اُسے کتنا وقت گذر گیا۔ تب سے بس میرے لئے تم ہو اور تمہارے لئے میں۔ اس کے سوا ہم دونوں کے لئے دنیا میں سب کچھ بیکار ہے۔

(نظام کچھ نہ کہہ، تھوڑا سا منھ کھول لاڈ کی اور دیکھتا رہتا ہے۔ لاڈ اس کی طرف دیکھتی ہے۔ کچھ دیر نستبدھتا)

لاڈ— تم نے میرے دیکھنے کے بعد کسی سے شادی ہی نہیں کی۔ میری دو شادیاں بنا کسی محبت کے زبردستی ہوئیں چونکہ میری اس طرح کی دو شادیاں ہو گئیں صرف اس لئے ہم لوگوں کی محبت ناپاک کیسے سمجھی جا سکتی ہے؟

(نظام پھر بھی کچھ نہ کہہ کر اُسی پرکار کی مُدرا سے لاڈ کی اور دیکھتا ہے اور لاڈ نظام کی طرف ۔۔۔۔ کچھ دیر خاموشی)

لاڈ— سچی محبت کے بعد ایک دوسرے سے ملنے ایک دوسرے سے بات کرنے کی خواہش تو قدرتی چیز ہے (آلنگن کے لئے دونو باہیں پھیلا کر) اور یہ سب چیزیں گراتی نہیں ایک دوسرے کو قریب لاتی ہیں (باہوں کو سکوڑ) ہمارے دل ایک دوسرے کو چاہتے ہیں لیکن ان کے ذریعے تو ہمارے جسم ہی ہیں (کچھ رک کر) نظام! جس محبت کو تم پاک کہتے ہو ۔۔۔ وہ شاید

निज़ाम—(सर नीचा कर, फिर कुछ रुककर, सर उठाते हुए गम्भीरता से) भाभी यह बचपन नहीं है.

लाड—तब क्या है ?

निज़ाम—(लम्बी साँस लेकर) अगर ज़रा सी आवाज़ मुझे इस तरह डरा सकती है, तो फिर मैं वही बात कहूँगा—हमारी मुहब्बत पाक नहीं. हम गिर रहे हैं.

लाड—(कुछ क्रोध से) बार-बार........घूम फिर कर तुम यही सवाल उठाते हो. आज इसका आख़िरी फ़ैसला ही कर लिया जाय कि हमारी मुहब्बत कैसी है ?

[लाड निज़ाम का हाथ पकड़ कर उसे चबूतरे पर बिठाती है. और फिर ख़ुद बैठती है.]

लाड—पाक और नापाक मुहब्बत से तुम्हारा क्या मतलब है. निज़ाम ? (कुछ रुककर) तुमने पहले पहल मुझे आगरे में ही देखा था न ?

निज़ाम—(भर्राये हुए स्वर में) हाँ, आगरे में.

लाड—और मुझे देखते ही तुम्हारे दिल में मेरे लिये एक अजीब क़िस्म की हलचल पैदा हुई, जिसे तुम मुहब्बत कहते हो ?

निज़ाम—मेरी उस मुहब्बत का सुबूत तो आपकी वह तस्वीर है. बिना सच्ची मुहब्बत के बड़े से बड़ा मुसव्विर भी वैसी तस्वीर नहीं बना सकता.

लाड—उस वक़्त की उस मुहब्बत को तुम पाक समझते हो या नापाक ?

نظام — (سر نیچا کر، پھر کچھ رک کر، سر اٹھاتے ہوئے گمبھیرتا سے) بھابھی یہ بچپن نہیں ہے۔

لاڈ — تب کیا ہے ؟

نظام — (لمبی سانس لے کر) اگر ذرا سی آواز مجھے اس طرح ڈرا سکتی ہے تو پھر میں وہی بات کہوں گا — ہماری محبت پاک نہیں، ہم گر رہے ہیں۔

لاڈ — (کچھ کرودھ سے) بار بار ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ گھوم پھر کر تم یہی سوال اٹھاتے ہو۔ آج اس کا آخری فیصلہ ہی کر لیا جائے کہ ہماری محبت کیسی ہے ؟

(لاڈ نظام کا ہاتھ پکڑ کر اسے چبوترے پر بٹھاتی ہے اور پھر خود بیٹھتی ہے)

لاڈ — پاک اور ناپاک محبت سے تمہارا کیا مطلب ہے، نظام ؟ (کچھ رک کر) تم نے پہلے پہل مجھے آگرے میں ہی دیکھا تھا نہ ؟

نظام — (بھرّائے ہوئے سور میں) ہاں، آگرے میں۔

لاڈ — اور مجھے دیکھتے ہی تمہارے دل میں میرے لئے ایک عجیب قسم کی ہلچل پیدا ہوئی۔ جسے تم محبت کہتے ہو ؟

نظام — میری اس محبت کا ثبوت تو آپ کی وہ تصویر ہے۔ بنا سچی محبت کے بڑا سے بڑا مصور بھی ویسی تصویر نہیں بنا سکتا۔

لاڈ — اس وقت کی اس محبت کو تم پاک سمجھتے ہو یا ناپاک ؟

गीत

लाड—लाख हों बहते बीच में धारे.
दोनों एक दरिया के किनारे.
तुम हो हमारे हम हैं तुम्हारे !
दुख अपना दिल ही से कहेंगे,
जो भी पड़े हँस-हँस के सहेंगे,
जी लेंगे यादों के सहारे !
तुम हो हमारे हम हैं तुम्हारे !!

निज़ाम—हाथ न आया फूल तो क्या गम ?
लाड—गुल की ख़ुशबू गुल से नहीं कम.
निज़ाम—पाक मुहब्बत पाक नज़ारे.
दोनो—तुम हो हमारे हम हैं तुम्हारे !
दिल की मुहब्बत लब पे न आये.
देखो कोई उंगली न उठाये.
दिल ही दिल में दिल यह पुकारे,
तुम हो हमारे हम हैं तुम्हारे !

[इनके गाते हुए एक ओर कुछ खटका सा होता है. निज़ाम चौंककर सहम सा जाता है. उसके हाथ लाड की बाहुओं को छोड़ कर अलग हो जाते हैं. सामने से बिल्ली निकलती है. लाड गाना बंद कर हँस पड़ती है]

लाड—कितना बचपन है तुममे, निज़ाम ? नज़र बाग़ में बिल्ली वग़ैरा के सिवा और कौन आ सकता है ?

११

گیت

لاڈ—لاکھ ہوں بہتے بیچ میں دھارے
دونوں اک دریا کے کنارے
تم ہو ہمارے ہم ہیں تمہارے
دکھ اپنا دل ہی سے کہیں گے
جو بھی پڑے ہنس ہنس کے سہیں گے
جی لیں گے یادوں کے سہارے
تم ہو ہمارے ہم ہیں تمہارے

لاڈ—ہاتھ نہ آیا پھول تو کیا غم
نظام—گل کی خوشبو گل سے نہیں کم
لاڈ—پاک محبت پاک نظارے

دونوں—تم ہو ہمارے ہم ہیں تمہارے
دل کی محبت لب پہ نہ آئے
دیکھو کوئی انگلی نہ اٹھائے
دل ہی دل میں دل یہ پکارے
تم ہو ہمارے ہم ہیں تمہارے

(ان کے گاتے ہوئے ایک اور کچھ کھٹکا سا ہوتا ہے نظام چونک کر کچھ سہم سا جاتا ہے اس کے ہاتھ لاڈ کی باہوں کو چھوڑ کر الگ ہو جاتے ہیں۔ سامنے سے بلی نکلتی ہے لاڈ گانا بند کر ہنس پڑتی ہے۔)

لاڈ—کتنا بچپن ہے تم میں نظام؟ نظر باغ میں بلی وغیرہ کے سوا اور کون آ سکتا ہے؟

लाड—तो किसकी खता है ?

निजाम—तुम्हारी, भाभी की नक़ाब में छुपी हुई बानू, तुम्हारी.

लाड—हूँ ! तो क़सूर भाभी की नक़ाब में छुपी हुई बानू का है, तुम्हारा नहीं ?

निजाम—बानू मैंने तो जिन्दगी मे क़सूर एक ही मर्तबा किया था और उसकी सजा भी मुझे मिल चुकी है. याद है आगरे का वह दिन, जिस दिन मेरी रंग भरी प्याली ने आपके रंगीन दामन को छुआ था और......और आपकी सहेली ने अहलकार बनकर मुझे सजा दी थी.......

लाड—(बीच ही मे) तो मैं आज क़सूर वार हूँ दीजिये सजा अहलकार साहब.

निजाम—खता बड़ी है. लिहाजा सजा भी बड़ी होनी ही चाहिये. (बनावटी गम्भीर मुद्रा और कुछ ऊँचे स्वर मे) लाड बानू ! तुमने दूसरे का अहद तोड़ कर उसका दिल तोड़ा है. उसका दिल तड़प रहा है. तुम्हें एक गाना गाने की सजा दी जाती है.

लाड—(उठकर, बड़े अदब से तसलीम करते हुए) जो हुक्म.

[एक फूल के पौधे की ओर चलते हुए लाड गाती है. उसके पीछे-पीछे जाकर निजाम अपने दोनो हाथ प्रेम से उसकी बाहुओं पर रखता है. गाना बढ़ता है. अब गाने का एक चरण लाड और दूसरा निजाम गाते है.]

स्तंभित = मबहूत. विस्मय = ताज्जुब. अहद = प्रतिज्ञा.
गम्भीर मुद्रा = सञ्जीदा सूरत.

لاڈ— تو کس کی خطا ہے ؟

نظام— تمہاری، بھابھی کے نقاب میں چھپی ہوئی بانو تمہاری ۔

لاڈ— ہوں تو قصور بھابھی کی نقاب میں چھپی ہوئی بانو کا ہے ۔ تمہارا نہیں ؟

نظام— بانو میں— زندگی میں قصور ایک ہی مرتبہ کیا تھا اور اُس کی سزا بھی مجھے مل چکی ہے ۔ یاد ہے آگرے کا وہ دن، جس دن میری رنگ بھری پیالی نے آپ کے رنگین دامن کو چھوا تھا اور اور آپ کی سہیلی نے اہل کار بن کر مجھے سزا دی تھی ...

لاڈ— (بیچ ہی میں) تو میں آج قصور وار ہوں دیجئے سزا اہلکار صاحب

نظام— خطا بڑی ہے لہذا سزا بھی بڑی ہونی چاہیئے ۔
(بناوٹی گمبھیر مُدرا اور کچھ اونچے سور میں)
لاڈ بانو، تم نے دوسرے کا عہد توڑ کر اُس کا دل توڑا ہے ۔ اُس کا دل تڑپ رہا ہے ۔ تمھیں ایک گانا گانے کی سزا دی جاتی ہے ۔

لاڈ— (اُٹھ کر، بڑے ادب سے تسلیم کرتے ہوئے) جو حکم ۔

(ایک پھول کے پودے کی اور چلتے ہوئے لاڈ گاتی ہے اُس کے پیچھے پیچھے جا کر نظام اپنے دونوں ہاتھ پریم سے اُس کی باہوؤں پر رکھتا ہے ۔ گانا بڑھتا ہے ۔ اب گانا کا ایک چرن لاڈ اور دوسرا نظام گاتے ہیں)

ستمبھت = مبہوت ۔ وسمے = تعجب ۔ عہد = پرتگیا ۔ گمبھیر مُدرا = سنجیدہ صورت ۔

उसे देखता है परन्तु बुरक़े के कारन पहचान नहीं पाता निज़ाम मानव आकृति का पीछा करने के लिये उसी ओर घूमता है]

निज़ाम—(निकट पहुंच कर ज़ोर से) कौन ?

[वह आकृति ठिठक कर रुकती है. फिर भागने का सा उपक्रम करती है. निज़ाम दौड़ कर उसे पकड़ लेता है]

निज़ाम—(डाँट कर) कौन हो तुम ?

[आकृति अपने को छुड़ाने का उपक्रम करते हुए कन्धे हिलाती है. निज़ाम ज़बरदस्ती उसका मुख अपनी ओर कर बुरक़ा हटा देता है. लाड को देखकर निज़ाम स्तम्भित सा रह जाता है.]

निज़ाम—(कुछ देर पश्चात् विस्मय भरे स्वर में) आप ! .. आप इतनी रात गये कहाँ जा रही थीं. ?

लाड—और तुम ?

[दोनों एक दूसरे को एक टक देखने के पश्चात् खिल-खिला कर हँस पड़ते है. निज़ाम लाड का हाथ पकड़ कर चबूतरे की ओर ले जाता है दोनो चबूतरे पर बैठ जाते हैं]

निज़ाम—(प्रेम भरे स्वर में) बानू !

लाड—(मुस्कराते हुए) निज़ाम, तुम तो एक के बाद एक अपने सारे अहद तोड़ रहे हो. न मिलन का अहद न जाने कब का तोड़ डाला आज पहले न छूने का अहद छूकर तोड़ दिया और अब बानू कह रहे हो, क्या ख़ूब !

निज़ाम—मेरा हर अहद टूट जाता है भाभी. लेकिन इसमें मेरी ख़ता नहीं.

उपक्रम = तहमीद.

اُسے دیکھتا ہے، پرنتو برقعے کے کارن پہچان نہیں پاتا۔ نظام مانو آکرتی کا پیچھا کرنے کے لئے اُسی اور گھوما ہے)

نظام۔ (نکٹ پہنچ کر زور سے) کون ؟

[وہ آکرتی ٹھٹھک کر رکتی ہے ! پھر بھاگنے کا سا اُپکرم کرتی ہے۔ نظام دوڑ کر اُسے پکڑ لیتا ہے]

نظام۔ (ڈانٹ کر) کون ہو تم ؟

[آکرتی اپنے کو چھڑانے کا اُپکرم کرتے ہوئے کندھے ہلاتی ہے۔ نظام زبردستی اُس کا مکھ اپنی اور کر برقعہ ہٹا دیتا ہے۔ لاڈ کو دیکھ کر نظام ستمبھت سا رہ جاتا ہے]

نظام۔ (کچھ دیر پشچات وسمے بھرے سور میں) آپ، آپ اتنی رات گئے کہاں جا رہی تھیں۔ ؟

لاڈ۔ اور تم ؟

(دونوں ایک دوسرے کو ایک ٹک دیکھنے کے پشچات کھلکھلا کر ہنس پڑتے ہیں۔ نظام لاڈ کا ہاتھ پکڑ کر چبوترے کی اور لے جاتا ہے۔ دونوں چبوترے پر بیٹھ جاتے ہیں)

نظام (پریم بھرے سور میں) بانو !

لاڈ — (مسکراتے ہوئے) تم تو ایک کے بعد ایک اپنے سارے عہد توڑ رہے ہو۔ نہ ملنے کا عہد نہ جانے کب کا توڑ ڈالا۔ آج پہلے نہ چھونے کا عہد چھو کر توڑ دیا۔ اور اب بانو کہہ رہے ہو کیا خوب !

نظام۔ میرا ہر عہد ٹوٹ جاتا ہے۔ بھابی لیکن اس میں میری خطا نہیں۔

اُپکرم = تمہید

शेर शाह

(सेठ गोविन्द दास)

चौथा अंक

छटवाँ दृश्य

स्थान—रोहतासगढ़ के अन्दर का आगन

समय—रात्रि

[सारा दृश्य पूर्णचन्द्र के प्रकाश से आलोकित है. आंगन के तीन ओर दालानों का बाहरी भाग और उनके ऊपर की इमारतो के बाहरी हिस्से दृष्टि गोचर होते हैं. दालानों के खंभे और मेहराब चमेली की बेलो से ढके हुए हैं हरी हरी बल्लियों पर सफेद चमेली के फूल खिले हुए हैं, जो नीले आकाश मे जगह-जगह दिखाई पड़ते हुए तारों से स्पर्धा सी करते जान पड़ते हैं आँगन मे कुछ क्यारियों के कारन आंगन नजर बाग़ सा दिखाई देता है. क्यारियो के पौधे भी फूलो से लदे हुए हैं नजर बाग के एक ओर से क्यारियो के किनारे-किनारे निजाम आता है. दूसरी ओर दालान के एक दरवाजे से काला बुरक़ा पहने हुए एक मानव आकृति आती हुई दिखाई पड़ती है. यह उस ओर जाती है जहाँ से निजाम आया था निजाम

प्रकाश = रोशनी. आलोकित = रोशन. दृष्टि गोचर = नजर आते. स्पर्धा = मुक़ाबला. मानव आकृति = इन्सानी शबीह.

شیر شاہ

(سیٹھ گووند داس)

چوتھا انک

چھٹواں درشیہ

استھان — روہتاس گڑھ کے اندر کا آنگن۔

سمے — راتری۔

سارا درشیہ پورن چندر کے پرکاش سے آلوکت ہے۔ آنگن کے تین اور کے دالانوں کا باہری بھاگ اور ان کے اوپر کی عمارتوں کے باہری حصے درشٹی گوچر ہوتے ہیں۔ دالانوں کے کھمبے اور محرابیں چمیلی کی بیلوں سے ڈھکے ہوئے ہیں۔ ہری ہری بلیوں پر سفید چمیلی کے پھول کھلے ہوئے ہیں۔ جو نیلے آکاش میں جگہ جگہ دکھائی پڑتے ہوئے تاروں سے سپردھا سی کرتے جان پڑتے ہیں۔ آنگن میں کچھ کیاریوں کے کارن آنگن نظر باغ سا دکھائی دیتا ہے۔ کیاریوں کے پودے بھی پھولوں سے لدے ہوئے ہیں۔ نظر باغ کے ایک اور سے کیاریوں کے کنارے کنارے نظام آتا ہے۔ دوسری اور دالان کے ایک دروازے سے کالا برقعہ پہنے ہوئے ایک مانو آکرتی آتی ہوئی دکھائی پڑتی ہے۔ یہ اس اور جاتی ہے جہاں سے نظام آیا تھا۔ نظام

پرکاش = روشنی۔ آلوکت = روشن۔ درشٹی گوچر = نظر آتے۔ سپردھا = مقابلہ۔ مانو آکرتی = انسانی شبیہ

रास्ते को आज़माने जा रही है, जो दूसरों की जिन्दगी को ख़तरे में डालने के साथ खुद उसकी जिन्दगी को भी ख़तरे में डालने वाला है.

नोट—ज़ाहिर है यह लेख इस बारे में कांग्रेस वर्किंग कमेटी के आख़िरी 'खुलासे' के पहिले का लिखा हुआ है. हमें आशा है कि विद्वान लेखक की उस 'खुलासे' से तसल्ली हो गई होगी और उस दर्जे तक उन्हें अपना डर गलत दिखाई दे गया होगा—ऐडीटर

हिन्द के विधान

की

अंगरेज़ी हिन्दुस्तानी शब्दावली

(अंगरेज़ी नागरी लिखावट में)

जिसमें

हिन्द का जो नया विधान पास हो रहा है उसके लगभग चौदह सौ ख़ास ख़ास अंगरेज़ी शब्दों के लिए आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवान दीन और कुछ दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं.

शुरू में 'दो शब्द' लिखे हैं—काका कालेलकर, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, श्री मो० सत्यनारायण और पंडित सुन्दर लाल ने.

निकाली है—हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा ने

क़ीमत दो रुपै

मिलने का पता—मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़,
इलाहाबाद.

راستے کو آزمانے جا رہی ہے، جو دوسروں کی زندگی کو خطرے میں ڈالنے کے ساتھ ساتھ خود اُس کی زندگی کو بھی خطرے میں ڈالنے والا ہے۔

نوٹ۔ ظاہر ہے یہ لیکھ اس بارے میں کانگریس ورکنگ کمیٹی کے آخری 'خلاصے' کے پہلے کا لکھا ہوا ہے۔ ہمیں آشا ہے کہ ودوان لیکھک کی اِس 'خلاصے' سے تسلی ہو گئی ہوگی اور اُس درجے تک انہیں اپنا ڈر غلط دکھائی دے گیا ہوگا۔

—اڈیٹر

ہند کے ودھان

کی

انگریزی ہندستانی شبدوالی

(انگریزی ناگری لکھاوٹ میں)

جسمیں ہند کا جو نیا ودھان پاس ہو رہا ہے اسکے لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزی شبدوں کیلئے آسان ہندستانی شبد مہاتما بھگوان دین اور کچھ دوسرے ودوانوں نے سجھائے ہیں۔ شروع میں دو شبد لکھے ہیں—کاکا کالیکر، شریمتی رامیشوری نہرو، شری مو سیتہ نرائن اور پنڈت سندر لال نے۔ نکالی ہے—ہندستانی پرچار سبھا وردھا نے قیمت دو روپیہ

ملنے کا پتہ——— منیجر "نیا ہند"
۴۸، بائی کا باغ۔ الہ آباد

रोका जाय. जवाब सीधा है. चूँकि सोना चमकता है, इसलिए जो भी चमकता हो वह सब सोना नहीं हो जाता जमीयतुल उलमा शुरू से ही एक ऐसी संस्था रही है, जिसकी कलचर में क़ौमियत यानी हिन्दुस्तानियत का उससे कम स्थान नहीं रहा है जितना कांग्रेस के अन्दर. जमीयतुल उलमा के एक रहनुमा मौलाना मुहम्मद कासिम जो दारूल उलूम देव बन्द के बानी थे १८५७ के गदर मे हिस्सा ले चुके हैं.

जमीयत के एक दूसरे रहनुमा शेख़ुल हिन्द मौलाना हुसैन अहमद मदनी जग आज़ादी के सिलसिले में चार साल तक माल्टा टापू में कैद रहे थे. सब जानते हैं कि मौलाना मदनी कांग्रेस की कितनी ख़िदमत कर चुके हैं और आज भी उसके कितने वफ़ादार हैं.

इसी तरह जमीयतुल उलमा के दूसरे नेताओ का इतिहास है, जो कांग्रेसी नेताओ से किसी हालत में कम शानदार नहीं कहा जा सकता क्या यही इतिहास राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघ का भी है ?

कांग्रेस अपनी कमजोरी को क्यो छिपाती है ? क्यो नहीं वह साफ़-साफ़ कहती कि उसे अगले चुनाव में ख़तरा है, जिसकी वह पेशबन्दी कर रही है. पर जिस रास्ते पर वह जा रही है, वह रास्ता भी तो अजमाया जा चुका है. न सही हिन्दुस्तान मे, चीन में. क्या जनता को मुसीबत में रखने वाली कोमिन्टांग जैसी बड़ी संस्था और चांगकाई शेक जैसे राष्ट्री नेता की शान किरकिरी नहीं हो गई. कांग्रेस क्यों एक ऐसे

جواب سیدھا ہے۔ چونکہ سونا چمکتا ہے اس لئے جو بھی چمکتا ہے وہ سب سونا نہیں ہو جاتا۔ جمعیۃ العلما شروع سے ہی ایک ایسی سنستھا رہی ہے جس کی کلچر میں قومیت یعنی ہندستانیت کا اس سے کم استھان نہیں رہا ہے۔ جتنا کانگریس کے اندر جمعیۃ العلما کے ایک رہنما مولانا محمد قاسم جو دارالعلوم دیوبند کے بانی تھے۔ ۱۸۵۷ کے غدر میں حصہ لے چکے ہیں۔

جمعیۃ کے ایک دوسرے رہنما شیخ الہند مولانا حسین احمد مدنی جنگ آزادی کے سلسلے میں چار سال تک مالٹا ٹاپو میں قید رہے تھے۔ سب جانتے ہیں کہ مولانا مدنی کانگریس کی کتنی خدمت کر چکے ہیں اور آج بھی اس کے کتنے وفادار ہیں۔

اسی طرح جمعیۃ العلما کے دوسرے نیتاؤں کا اتہاس ہے۔ جو کانگریسی نیتاؤں سے کسی حالت میں کم شاندار نہیں کہا جا سکتا۔ کیا یہی اتہاس راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کا بھی ہے۔

کانگریس اپنی کمزوری کو کیوں چھپاتی ہے؟ کیوں نہیں وہ صاف صاف کہتی کہ اسے اگلے چناؤ میں خطرہ ہے، جس کی وہ پیش بندی کر رہی ہے۔

پر جس راستے پر وہ جا رہی ہے وہ راستہ بھی تو آزمایا جا چکا ہے۔ نہ سہی ہندستان میں، چین میں، کیا جنتا کو مصیبت میں رکھنے والی کومن تانگ جیسی بڑی سنستھا اور چیانگ کائی شیک جیسے راشٹری نیتا کی شان کرکری نہیں ہو گئی۔ کانگریس کیوں ایک ایسے

तजवीज की सियाही भी न सूखने पाई थी, कि विद्यार्थियो के एक जलसे में श्री गोविन्द सहाय की बुरी तरह खबर ली गई—कहा जाता है कि जान बच गई. महात्मा जी की हत्या पर इन लोगों की तरफ से जगह जगह खुशियाँ मनाई जाना और मिठाइयाँ बाँटना किसे भूला है

एक तरफ पंडित जवाहर लाल नेहरू अमरीका में कांग्रेस की जम्हूरियत पसन्दी का ऐलान कर रहे हैं और दूसरी तरफ ठीक उसी वक्त यहाँ फासिज्म की तैयारियाँ हो रही हैं. कांग्रेस के सदर डाक्टर पट्टाभी ने कहा है कि कांग्रेस वर्किंग कमेटी पर यह इलजाम लगाना गलत होगा कि उसने पंडित नेहरू की गैर मौजूदगी का फायदा उठाने के लिये संघ को कांग्रेस में शामिल होने देने वाली तजवीज बाद में रक्खी पर इस अहम मसले पर आखिरी फैसला करने से पहिले पंडित जी की राय का इन्तजार न करना किस बात का सबूत है ? और वह भी जब कि दो चार हफ्ते ठहर जाने से इस मामले में कोई नुकसान न हो सकता था कौन उम्मीद कर सकता है कि पंडित जी अमरीका से लौट कर अपनी सारी ताक़त इस तजवीज को बदलवाने में लगायेंगे या कांग्रेस वर्किंग कमेटी से इस्तीफा दे देंगे ? मसला मामूली नहीं है.

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मुकाबला कभी-कभी जमीयतुल उलमा से किया जाता है. कहा जाता है कि जब जमीयतुल उलमा को कल्चरी संस्था होते हुए भी कांग्रेस में शरीक होने का हक़ है तब संघ को क्यों

تجویز کی سیاہی بھی نہ سوکھنے پائی تھی کہ ودیارتھیوں کے ایک جلسے میں شری گوبند سہائے کی بری طرح خبر لی گئی۔ کہا جاتا ہے کہ جان بچ گئی۔ مہاتما جی کی ہتیا پر ان لوگوں کی طرف سے جگہ جگہ خوشیاں منائی جانا مٹھائیاں بانٹنا کسے بھولا ہے۔

ایک طرف پنڈت جواہر لال نہرو امریکہ میں کانگریس کی جمہوریت پسندی کا اعلان کر رہے ہیں اور دوسری طرف ٹھیک اسی وقت یہاں فاسزم کی تیاریاں ہو رہی ہیں۔ کانگریس کے صدر ڈاکٹر پٹابھی نے کہا ہے کہ کانگریس ورکنگ کمیٹی پر یہ الزام لگانا غلط ہوگا کہ اس نے پنڈت نہرو کی غیر موجودگی کا فائدہ اٹھانے کے لئے سنگھ کو کانگریس میں شامل ہونے دینے والی تجویز بعد میں رکھی۔ پر اس اہم مسئلے پر آخری فیصلہ کرنے سے پہلے پنڈت جی کی رائے کا انتظار نہ کرنا کس بات کا ثبوت ہے؟ اور وہ بھی جبکہ دو چار ہفتے ٹھہر جانے سے اس معاملے میں کوئی نقصان نہ ہو سکتا تھا۔

کون امید کر سکتا ہے کہ پنڈت جی امریکہ سے لوٹ کر اپنی ساری طاقت اس تجویز کو بدلوانے میں لگائیں گے یا کانگریس ورکنگ کمیٹی سے استعفیٰ دیدیں گے؟ مسئلہ معمولی نہیں ہے

راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کا مقابلہ کبھی کبھی جمعیتہ العلما سے کیا جاتا ہے۔ کہا جاتا ہے کہ جب جمعیتہ العلما کو کلچری سنستھا ہوتے ہوئے بھی کانگریس میں شریک ہونے کا حق ہے تب سنگھ کو کیوں روکا جائے

होने पर कोई ऐतराज नहीं होना चाहिये. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जरूर सांस्कृतिक संस्था है. पर वह कौन सी संस्कृति है जिसका वह हामी है. भारती संस्कृति का नहीं. राष्ट्रीय या क़ौमी संस्कृति की नहीं. वह हामी है हिन्दू संस्कृति का और हिन्दू संस्कृति भी उसके सबसे गये गुजरे (तंग फ़िरक़ा परस्त) मानी में. अगर वह किसी मानी में भारती संस्कृति (तमद्दुन) का समर्थक है, तो इस मानी में कि भारती के मानीही हिन्दू है और जो हिन्दू है वही भारती है. ऐसी हालत में फ़र्ज़ कीजिये कि कभी कांग्रेस मे इस तरह के फ़िरक़ा परस्तों का बहुमत हो जाय और फिर कभी कांग्रेस सरकार बने, तो क्या वह अपने को नेशनलिस्ट मानते हुए भी यह ऐलान नहीं कर सकती कि भारती सरकार हिन्दू सरकार है.

किसी संस्था के इतिहास को भुला कर उससे समझौता करना समझदारी नही है. हिटलर और फ़ासिस्टो के इतिहास को भूल कर उनसे समझौता कर के एक तरफ़ स्टालिन ने तो दूसरी तरफ़ ब्रिटेन ने देख लिया कि इस तरह की दोस्ती का क्या नतीजा होता है. गुरुडम या फ़ासिज़्म हर तरह की जम्हूरियत का दुश्मन है—उसका मिलिटरी संगठन अन्धा होता है, जिसे रास्ता बतलाने वाला एक गुरू संस्था की नकेल पकड़ कर जिस रास्ते चाहे ले जाता है और मिटा देता है. काग़ज़ पर विधान लिख देना ही काफ़ी नहीं होता. अगर यही काफ़ी होता तो हिटलर ने भी अपने को राष्ट्रीय (क़ौमी) समाजवादी कहा था और फ़ासिस्ट पार्टी के बुनियादी ऐलान मे जहाँ तहाँ समाजवाद का पुट दिया था. संघ के कामो और ऐलानो से कोई बच्चा ही धोका खा सकता है. अभी कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी की

ہونے پر کوئی اعتراض نہیں ہونا چاہئے۔ راشٹریہ سویم سیوک سنگھ ضرور سانسکرتک سنستھا ہے۔ پر وہ کون سی سنسکرتی ہے جس کا وہ حامی ہے؟ بھارتی سنسکرتی کا؟ نہیں راشٹریہ یا قومی سنسکرتی کا؟ نہیں وہ حامی ہے ہندو سنسکرتی کا اور ہندو سنسکرتی بھی اس کے سب سے گئے گزرے (تنگ فرقہ پرست) معنی میں۔ اگر وہ کسی معنی میں بھارتی سنسکرتی (تمدن) کا سمرتھک ہے تو اس معنی میں کہ بھارتی کے معنی ہی ہندو ہے اور جو ہندو ہے وہی بھارتی ہے۔ ایسی حالت میں فرض کیجئے کہ کبھی کانگریس میں اس طرح کے فرقہ پرستوں کا بہومت ہو جائے اور پھر کبھی کانگریس سرکار بنے تو کیا وہ اپنے کو نیشنلسٹ مانتے ہوئے بھی یہ اعلان نہیں کر سکتی کہ بھارتی سرکار ہندو سرکار ہے۔

کسی سنستھا کے اتہاس کو بھلا کر اس سے سمجھوتہ کرنا سمجھداری نہیں ہے۔ ہٹلر اور فاسسٹوں کے اتہاس کو بھول کر اس سے سمجھوتہ کرکے ایک طرف اسٹالن نے تو دوسری طرف برٹن نے دیکھ لیا کہ اس طرح کی دوستی کا کیا نتیجہ ہوتا ہے۔ گروڈم یا فاسزم ہر طرح کی جمہوریت کا دشمن ہے۔ اس کا ملیٹری سنگھٹن اندھا ہوتا ہے، جسے راستہ بتلانے والا ایک گرو سنستھا کی نکیل پکڑ کر جس راستے چاہے لے جاتا ہے اور مٹا دیتا ہے۔ کاغذ پر ودھان لکھ دینا ہی کافی نہیں ہوتا۔ اگر یہی کافی ہوتا تو ہٹلر نے بھی اپنے کو راشٹریہ (قومی) سماج وادی کہا تھا اور فاسسٹ پارٹی کے بنیادی اعلان میں جہاں تہاں سماج واد کا پٹ دیا تھا۔ سنگھ کے کاموں اور اعلانوں سے کوئی بچہ ہی دھوکہ کھا سکتا ہے۔ ابھی کانگریس ورکنگ کمیٹی کی

करोड़ का घाटा है—अगर सरकार के दिये हुए आंकड़ों का यकीन किया जाये तो, नहीं तो लोगों का खयाल है कि इस घाटे की रक़म कहीं ज्यादा है. कल कारखाने बन्द हो रहे हैं और बेकारों की तादाद पिछले दो बरस के मुकाबले में तीन लाख बढ़ गई है. पौंड पावने की रक़म घटकर आधे से कम रह गई है. रिजर्व बैंक का बजट ४५० करोड़ रुपये से १३५ करोड़ रुपया रह गया. रुपये की कीमत का गिरना मुल्क के माली संकट को और भी बढ़ा देता है. चोर बाज़ार का क़िस्सा अलग है. हमारे वज़ीर कभी कन्ट्रोल तोड़ते हैं, तो कभी लगाते हैं, पर देश की हालत पर काबू नहीं पा सकते. जो सरकार इस बहुमुखे अर्थ संकट के ज्वालामुखी पहाड़ पर बैठी हो और जिसे हर समय उस ज्वालामुखी के फट पड़ने का डर हो उसके लिये फासिस्ट बनने से बच सकना आसान काम नहीं है. राजनीति राजनीति है, यहाँ हकीकत की बात होनी चाहिये, भावुकता या जज़्बात की नहीं. और हकीकत यह है कि अगर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसी संस्था की तरफ कांग्रेस का यही रुख रहा तो कांग्रेस सरकार फ़ासिस्ट सरकार बने बिना नहीं रह सकती और फिर भारत की सरकार और पाकिस्तान की सरकारों में कोई बुनियादी फ़रक़ भी न रह जायेगा.

कई कांग्रेसी अख़बारों ने जैसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क़ानूनी क़रार दिये जाने का स्वागत किया था, वैसे ही वह कांग्रेस वर्किंग कमेटी के इस फ़ैसले का भी स्वागत कर रहे हैं. दलील यह है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अब राजनीतिक संस्था नहीं रहा, वह शुद्ध सांस्कृतिक संस्था है, इसलिये उसके मेम्बरों के कांग्रेस में शामिल

کروڑ کا گھاٹا ہے — اگر سرکار کے دیئے ہوئے آنکڑوں کا یقین کیا جائے تو، نہیں تو لوگوں کا خیال ہے کہ اس گھاٹے کی رقم کہیں زیادہ ہے۔ کل کارخانے بند ہو رہے ہیں اور بیکاروں کی تعداد پچھلے دو برس کے مقابلے میں تین لاکھ بڑھ گئی ہے۔ پونڈ پاونے کی رقم گھٹ کر آدھے سے کم رہ گئی۔ ریزرو بینک کا بجٹ ۴۵۰ کروڑ روپئے سے ۱۳۵ کروڑ روپیہ رہ گیا۔ روپئے کی قیمت کا گرنا ملک کے مالی سنکٹ کو اور بھی بڑھا دیتا ہے۔ چور بازار کا قصہ الگ ہے۔ ہمارے وزیر کبھی کنٹرول توڑتے ہیں تو کبھی لگاتے ہیں، پر دیش کی حالت پر قابو نہیں پا سکتے۔ جو سرکار اس بہومکھے ارتھ سنکٹ کے جوالا مکھی پہاڑ پر بیٹھی ہو اور جسے ہر سمے اس جوالا مکھی کے پھٹ پڑنے کا ڈر ہو، اس کے لئے فاسسٹ بننے سے بچ سکنا آسان کام نہیں ہے۔ راج نیتی راج نیتی ہے، یہاں حقیقت کی بات ہونی چاہئے، بھاوکتا یا جذبات کی نہیں۔ اور حقیقت یہ ہے کہ اگر راشٹریہ سویم سیوک سنگھ جیسی سنستھا کی طرف کانگریس کا یہی رخ رہا تو کانگریس سرکار فاسسٹ بنے بنا نہیں رہ سکتی اور پھر بھارت کی سرکار اور پاکستان کی سرکاروں میں کوئی بنیادی فرق بھی نہ رہ جائے گا

کئی کانگریسی اخباروں نے جیسے راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کے قانونی قرار دیئے جانے کا سواگت کیا تھا ویسے ہی وہ کانگریس ورکنگ کمیٹی کے اس فیصلے کا بھی سواگت کر رہے ہیں۔ دلیل یہ ہے کہ راشٹریہ سویم سیوک سنگھ اب راج نیتک سنستھا نہیں رہی، وہ شدھ سانسکرتک سنستھا ہے، اس لئے اس کے ممبروں کے کانگریس میں شامل

कांग्रेस और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ

(श्री ओंकारनाथ शास्त्री)

कांग्रेस सरकार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर से बैन हटाकर और उसके मेम्बरों को रिहा करके मुल्क के बहुत से सच्चे देशभक्तो के दिलों को काफी चोट पहुँचाई थी. अब कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने यह फ़ैसला कर दिया है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ के मेम्बर कांग्रेस मे शामिल हो सकते हैं. अपने इस काम से कांग्रेस ने यह सबूत दिया है कि उसमें 'जम्हूरियत पसन्द' लोग या तो हैं ही बहुत कम या उनकी आवाज नक्कारख़ाने मे तूती की आवाज है, ऐसा लगता है कि कांग्रेस में अब फ़िरक़ापरस्ती का बोलबाला है. इस तरह फ़ासिस्टवाद की तरफ़ बढ़ते हुए उसके क़दम आज़ादी पसन्द ताक़तों के लिये भारी ख़तरे का घन्टा है और इनक़लाबी ताकतों के लिये इससे बढ़कर चिंता की बात नही हो सकती. यो भी देश एक क़हत की हालत से गुज़र रहा है. कपड़ा, ग़ल्ला, तेल, चीनी, भाजी, दूध, घी, नमक कभी इतना पैसा देने पर मिलते हैं जितना देने को नहीं है, तो कभी पैसा देने पर भी नहीं मिलते. विदेशी व्यौपार में पौण्ड और रुपये की दर गिरने के पहिले ६५ करोड़ रुपये का घाटा था, अब प्रोफ़ेसर के० टी० शाह का ख़याल है कि यह घाटा ३०० करोड़ रुपये तक जायगा. सरकार के बजट में ४५

کانگریس اور راشٹریہ سویم سیوک سنگھ

(بھائی اونکار ناتھ شاستری)

کانگریس سرکار نے راشٹریہ سویم سیوک سنگھ پر سے بین ہٹا کر اور اس کے ممبروں کو رہا کرکے ملک کے بہت سے سچے دیش بھگتوں کے دلوں کو کافی چوٹ پہنچائی تھی۔ اب کانگریس ورکنگ کمیٹی نے یہ فیصلہ کر دیا ہے کہ راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کے ممبر کانگریس میں شامل ہو سکتے ہیں۔ اپنے اس کام سے کانگریس نے یہ ثبوت دیا ہے کہ اس میں جمہوریت پسند لوگ یا تو ہیں ہی بہت کم یا ان کی آواز نقارخانے میں طوطی کی آواز ہے۔ ایسا لگتا ہے کہ کانگریس میں اب فرقہ پرستی کا بول بالا ہے۔ اس طرح فاشسٹ واد کی طرف بڑھتے ہوئے اس کے قدم آزادی پسند طاقتوں کے لئے بھاری خطرے کا گھنٹہ ہے اور انقلابی طاقتوں کے لئے اس سے بڑھ کر چنتا کی بات نہیں ہو سکتی۔ یوں بھی دیش ایک قحط کی حالت سے گزر رہا ہے۔ کپڑا، غلہ، تیل، چینی، بھاجی، دودھ، گھی، نمک کبھی اتنا پیسہ دینے پر ملتے ہیں جتنا دینے کو نہیں ہے، تو کبھی پیسہ دینے پر بھی نہیں ملتے۔ ودیشی بیوپار میں پونڈ اور روپئے کی در گرنے کے پہلے ۶۵ کروڑ روپئے کا گھاٹا تھا، اب پروفیسر کے۔ ٹی۔ شاہ کا خیال ہے کہ یہ گھاٹا ۳۰۰ کروڑ روپئے تک جائے گا۔ سرکار کے بجٹ میں ۴۵

हुये और हमारे हुक्मरां गांधी जी के उसूलों से इतने दूर और इतने अलग जापड़े ! हैरत होती है, अफसोस होता है, गुस्सा आता है इस हालत को देखकर !

गांधी जी के देश वासियों को अब सोचना है कि उनका अगला क़दम क्या हो फ़िरक़ावाराना भावनायें कैसे खत्म हों, जनता की माली हालत कैसे सुधरे, जनता को उम्मीद और भरोसा कैसे हो, लोग सचमुच 'सर्वोदय' और 'रामराज' की ओर कैसे बढ़ें ? समाज की तरक़्की और सच्ची शान्ति के रास्ते पर चलने के लिये हमे आज जिस हिम्मत और आत्मविश्वास की जरूरत है, उसकी माग हम अपने राष्ट्रपिता बापू की अमर आत्मा से करते हैं

बापू का आशीर्वाद हमे सच्चाई, भाई चारे, प्रेम, शान्ति और बराबरी के रास्ते पर ले चले जिससे हम अपने को सचमुच बापू की गर्वीली औलाद होने का दावा कर सकें और खुल कर कह सकें—राष्ट्रपिता बापू ! तुम्हारी जय हो.

ہوئے اور ہمارے حکمراں گاندھی جی کے اصولوں سے اتنے دور اور اتنے الگ جا پڑے۔ حیرت ہوتی ہے۔ افسوس ہوتا ہے۔ غصہ آتا ہے اس حالت کو دیکھ کر۔

گاندھی جی کے دیش واسیوں کو اب سوچنا ہے کہ ان کا اگلا قدم کیا ہو۔ فرقہ وارانہ بھاؤنائیں کیسے ختم ہوں۔ جنتا کی مالی حالت کیسے سدھرے جنتا کو امید اور بھروسہ کیسے ہو۔ لوگ سچ مچ سرودے اور رام راج کی اور کیسے بڑھیں؟ سماج کی ترقی اور سچی شانتی کے راستے پر چلنے کے لئے ہمیں آج جس ہمت اور آتم وشواس کی ضرورت ہے اس کی مانگ ہم اپنے راشٹر پتا باپو کی امر آتما سے کرتے ہیں۔

باپو کا آشیرواد ہمیں سچائی، بھائی چارے، پریم، شانتی اور برابری کے راستے پر لے چلے جس سے ہم اپنے کو سچ مچ باپو کی گروِلی اولاد ہونے کا دعویٰ کر سکیں اور کھل کر کہہ سکیں ——— راشٹر پتا باپو تمہاری جے ہو۔

सरकारों से सिर्फ यही चाहते थे कि वह हिन्दुस्तान की हालत ऐसी बनादें जिससे हर इन्सान के लिये यह मुमकिन होसके कि वह अपनी हर तरह की रूहानी और जिस्मानी, समाजी और माली तरक़्क़ी कर सके और इस तरह हमारा देश सचमुच सत्य और अहिंसा के पाक उसूलों पर चलने वाला शानदार और मजबूत देश बन सके.

मगर १९४९ का पूरा साल अपनी नजरों के समाने रखिये और हुकूमतो और कांग्रेसी कार्य-कर्ताओ के कारनामो को अच्छी तरह देख जाइये, जहां तक उनका सम्बन्ध है, आपको शायद उम्मीद की एक किरन भी नजर न आयेगी. अगर आज देश मैं झगड़े नही हैं तो उसका कारण यह है कि जनता आपसी झगड़ों से ऊब चुकी है और उसे गांधीजी की कुर्बानी से अच्छा और गहरा सबक मिल चुका है. अगर आज देश मे सियासी उथल पुथल की कमी है तो उसका कारण यह है कि सरकार ने आर्डिनेन्सो और क़ानूनी शिकजों मे जनता की शहरी आज़ादी और विरोधियो के जिस्मों और ज़बानो को कस लिया है. साथ ही साथ चारो ओर फैली गहरी नाउम्मीदी और उदासी ने जैसे जनता की कमर ही तोड दी है—

'जिनपे तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे.'

जो लोग जनता के सेवक, साथी और रहबर थे वही अब हुक्मरां बन गये हैं. हुक्मरां बनते ही उन्होने अपने सारे पुराने इतिहास के पन्नों को भी बन्द कर दिया है और आज वह राजकाज को अपनी मर्ज़ी और स्वार्थों के मुताबिक़ चलाना ही अपना फर्ज़ समझने लगे हैं. गांधी के देश की ग़रीब और बेबस जनता जैसे सपनो की दुनिया में रह रही है. गांधी जी के देहान्त के दो साल भी पूरे न

سرکاروں سے صرف یہی چاہتے تھے کہ وہ ہندستان کی حالت ایسی بنادیں جس سے ہر انسان کے لئے یہ ممکن ہو سکے کہ وہ اپنی ہر طرح کی روحانی اور جسمانی سماجی اور مالی ترقی کرسکے اور اس طرح ہمارا دیش سچ مچ ستیہ اور اہنسا کے پاک اصولوں پر چلنے والا شاندار اور مضبوط دیش بن سکے۔

مگر ۱۹۴۹ء کا پورا سال اپنی نظروں کے سامنے رکھئے اور حکومتوں اور کانگریسی کاریہ کرتاؤں کے کارناموں کو اچھی طرح دیکھ جائیے جہاں تک ان کا سمبندھ ہے آپ کو شاید امید کی ایک کرن بھی نظر نہ آئے گی۔ اگر آج دیش میں جھگڑے نہیں ہیں تو اس کا کارن یہ ہے کہ جنتا آپسی جھگڑوں سے اوب چکی ہے اور اسے گاندھی جی کی قربانی سے اچھا اور گہرا سبق مل چکا ہے۔ اگر آج دیش میں سیاسی اتھل پتھل کی کمی ہے تو اس کا کارن یہ ہے کہ سرکار نے آرڈیننسوں اور قانونی شکنجوں میں جنتا کی شہری آزادی اور ورودھیوں کے جسموں اور زبانوں کو کس لیا ہے۔ ساتھ ہی ساتھ چاروں اور پھیلی گہری ناامیدی اور اداسی نے جیسے جنتا کی کمر ہی توڑ دی ہے۔

"جن پہ تکیہ تھا وہی پتے ہوا دینے لگے"

جو لوگ جنتا کے سیوک ساتھی اور رہبر تھے وہی اب حکمراں بن گئے ہیں۔ حکمراں بنتے ہی انھوں نے اپنے سارے پرانے اتہاس کے پنوں کو بھی بند کردیا ہے اور آج وہ راج کاج کو اپنی مرضی اور سوارتھوں کے مطابق چلانا ہی اپنا فرض سمجھنے لگے ہیں۔ گاندھی کے دیس کی غریب اور بےبس جنتا جیسے سپنوں کی دنیا میں رہ رہی ہے۔ گاندھی کے دیہانت کے دو سال بھی پورے نہ

से मेल खाती है ? क्या मुल्क और क़ौम ने इसी घड़ी और इसी दिन के लिये इतनी क़ुर्बानियां की थीं ? आज हमारे नेता और अधिकारी चाहे हमारी इस आलोचना को कड़ुवा और विरोधी समझें, मगर उनकी हैसियत उस इतिहासकार की नजरों मे क्या होगी जो गांधी जी की हत्या के बाद के हिन्दुस्तान के हाल को अपनी किताब में लिखेगा ? जब हिन्दुस्तान की बेजबान जनता की तबाही और बर्बादी की चर्चा वह अपनी किताब मे करेगा तो एक बार उसका क़लम कांप उठेगा, एक बार शायद उसे यक़ीन भी न होगा कि जिस हिन्दुस्तान की समाजी, सियासी और माली हालत का वह तजकिरा कर रहा है वह गांधी का देश है और उसकी रह-नुमाई गांधी के नाम की सौगन्ध खाने वाले लोग ही कर रहे हैं.

किसी भी देश की हालत और अच्छे शासन की तारीफ सिर्फ इस बात में नहीं है कि देश में अमन चैन है. अमन-चैन का यह नारा तो हमारे अँग्रेज हुक्मरां भी उठाया करते थे मगर गांधी जी ने उस शान्ति को 'मरघट की शान्ति' कहा था. इस मरघटी शान्ति से हमारे आज के शासक चाहें तो अपने को धोका देसकते हैं मगर उसके पीछे छिपी चिन्गारी को, जो कि किसी भी समय शोला बन कर भड़क सकती है, नजरंदाज करना खतरे से खाली नहीं है.

गांधी जी ने अपनी जिन्दगी के आखिरी दिनों में सर्वोदय समाज का सपना देखा था. सर्व का अर्थ है सब, पूरा या मुकम्मल. उदय का मतलब है विकास, जन्म या बढ़ती. यानी, सर्वोदय का सीधा और समझ में आने वाला अर्थ है इन्सान की हर तरह की तरक्क़ी और विकास. गांधी जी अपने कार्यकर्ताओं और कांग्रेसी

سے میل کھاتی ہے؟ کیا ملک اور قوم نے اِسی گھڑی اور اسی دن کے لئے اتنی قربانیاں کی تھیں؟ آج ہمارے نیتا اور ادھیکاری چاہے ہماری اِس آلوچنا کو کڑوا اور ورودھی سمجھیں مگر اُن کی حیثیت اُس اتہاس کار کی نظروں میں کیا ہوگی - جو گاندھی جی کی ہتیا کے بعد کے ہندستان کے حال کو اپنی کتاب میں لکھے گا؟ جب ہندستان کی بےزبان جنتا کی تباہی اور بربادی کی چرچا وہ اپنی کتاب میں کرے گا تو ایک بار اس کا قلم کانپ اٹھے گا، ایک بار شاید اُسے یقین بھی نہ ہوگا کہ جس ہندستان کی سماجی، سیاسی اور مالی حالت کا وہ تذکرہ کر رہا ہے وہ گاندھی کا دیش ہے اور اس کی رہنمائی گاندھی کے نام کی سوگندھ کھانے والے لوگ ہی کر رہے ہیں -

کسی بھی دیش کی حالت اور اچھے شاسن کی تعریف صرف اس بات میں نہیں ہے کہ دیش میں امن و چین ہے، اس چین کا یہ نعرہ تو ہمارے انگریز حکمراں بھی اٹھایا کرتے تھے، مگر گاندھی جی نے اُس شانتی کو 'مرگھٹ کی شانتی' کہا تھا - اس مرگھٹی شانتی سے ہمارے آج کے شاسک (حکمراں) چاہیں تو اپنے کو دھوکہ دے سکتے ہیں - مگر اُس کے پیچھے چھپی چنگاری کو جو کہ کسی بھی سمے شعلہ بن کر بھڑک سکتی ہے نظر انداز کرنا خطرے سے خالی نہیں ہے -

گاندھی جی نے اپنی زندگی کے آخری دنوں میں سروُدے سماج کا سپنا دیکھا تھا - سرو کا ارتھ ہے سب، پورا یا مکمل اُدے کا مطلب ہے وکاس جنم یا بڑھتی یعنی سرودے کا سیدھا اور سمجھ میں آنے والا ارتھ ہے انسان کی ہر طرح کی ترقی اور وکاس گاندھی جی اپنے کاریہ کرتاؤں اور کانگرسی

१९४९ का साल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं और कांग्रेसी-हुकूमतों के इम्तहान का साल रहा है. अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि दोनों अपने अपने इम्तहानों में बुरी तरह नाकामयाब हुए हैं. आज सच तो यह है कि जब यह लोग गांधी जी का नाम लेते हैं और उनके उसूलों की दोहाई देते हैं तो ऐसा लगता है कि वह गांधी जी और उनके नाम का मज़ाक़ उड़ा रहे हैं.

यह साल इस बात का सबूत रहा है कि कांग्रेस संस्था, कांग्रेस के कार्य कर्ता और कांग्रेसी सरकारें गांधी जी के उसूलों और उपदेशों से अपना नाता तोड़ चुके हैं.

जरूरत यह है कि हिन्दुस्तान के लोग अपने क़ौमी रहनुमाओं के ग़ैर-क़ौमी कामों से सबक़ लें, होशियार रहे और मज़बूती के साथ उन जन-वादी उसूलो के साथ चिपके रहें जिनके कारण गांधी जी की जान गई. अगर जनता ऐसा नहीं करती तो गांधी जी के उसूलों को अपने पैरों तले रौंद कर गांधी जी के हत्यारो के साथी और हमजोली देश की हुकूमत अपने हाथों में ले लेंगे. कांग्रेस की परम्परायें ख़त्म हो जायेंगी और गांधीवाद का, न्याय, शान्ति, प्रेम और सच्चाई का नाम लेवा भी कोई नहीं रह जावेगा.

१९४९ का यह लेखा जोखा हमें डराता है और साथ ही आगाह भी करता है कि १९५० के साल में उन ग़लतियों को न दोहराया जाय जिनके कारण हमारी क़ौमी जिन्दगी पतन (ज़वाल) की इस गहरी खाई में गिरी है !

यह पतन, यह तबाही, यह परेशानी, यह मुसीबत और यह नाकामीयाबी क्या महात्मा गांधी के स्वाधीन भारत के सपने

۱۹۴۹ء کا سال کانگریس کے کاریہ کرتاؤں اور کانگریسی حکومتوں کے امتحان کا سال رہا ہے۔ افسوس کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ دونوں اپنے اپنے امتحانوں میں بری طرح ناکامیاب ہوئے ہیں۔ آج سچ تو یہ ہے کہ جب یہ لوگ گاندھی جی کا نام لیتے ہیں اور اُن کے اصولوں کی دہائی دیتے ہیں تو ایسا لگتا ہے کہ وہ گاندھی جی اور اُن کے نام کا مذاق اڑا رہے ہیں۔

یہ سال اس بات کا ثبوت رہا ہے کہ کانگریس سنستھا، کانگریس کے کاریہ کرتا اور کانگریسی سرکاریں گاندھی جی کے اصولوں اور اُپدیشوں سے اپنا ناتا توڑ چکے ہیں۔

ضرورت یہ ہے کہ ہندستان کے لوگ اپنے قومی رہنماؤں کے غیر قومی کاموں سے سبق لیں، ہوشیار رہیں اور مضبوطی کے ساتھ اُن جن وادی اصولوں کے ساتھ چپکے رہیں جن کے کارن گاندھی جی کی جان گئی۔ اگر جنتا ایسا نہیں کرتی تو گاندھی جی کے اصولوں کو اپنے پیروں تلے روند کر گاندھی جی کے ہتیاروں کے ساتھی اور ہمجولی دیش کی حکومت اپنے ہاتھوں میں لے لیں گے۔ کانگریس کی پرمپرائیں ختم ہو جائیں گی اور گاندھی واد کا نیائے، شانتی، پریم اور سچائی کا نام لیوا بھی کوئی نہیں رہ جاوے گا۔

۱۹۴۹ء کا یہ لیکھا جوکھا ہمیں ڈراتا ہے اور ساتھ ہی آگاہ بھی کرتا ہے کہ ۱۹۵۰ء کے سال میں اُن غلطیوں کو نہ دہرایا جائے جن کے کارن ہماری قومی زندگی پتن (زوال) کی اس گہری کھائی میں گری ہے۔

یہ پتن، یہ تباہی، یہ پریشانی، یہ مصیبت اور یہ نا امیدی کیا مہاتما گاندھی کے سوادھین (آزاد) بھارت کے سپنے

और उसके सदर की सरकारी मिनिस्टरो और अफसरों के मुक़ाबले में क्या हैसियत है ? कांग्रेस के गांधी वादी कार्यकर्ताओं और विचारकों की आज क्या हैसियत है ? गांधीवादी सिद्धान्तों को सरकारी अमल में आज कहाँ तक लाया जा रहा है ? मुसलमानों, हरिजनो और किसानों-मजदूरों और गरीब जनता पर आज क्या बीत रही है ? आज क्या यह सच नहीं है कि लोग ऊबकर और परेशान होकर यह कहने लगे हैं कि इससे अच्छी तो अँग्रेज़ी सरकार ही थी ? यह हमारी मौजूदा सरकार की शिकायत है या तारीफ ?

१६४८ की ३० जनवरी को गांधी जी का ख़ून हुआ उस ख़ूनी को फांसी देने में देश का लाखो रुपया और इतना वक़्त बरबाद हुआ. मगर उस ख़ूनी के साथी, हमख़याल, हमजोली छुट्टा सांड की तरह घूम रहे हैं और अपना सगठन मज़बूत बना रहे हैं. अपने इस नापाक काम में उन्हें ऊंचे ऊंचे काँग्रेसी नेताओं और मिनिस्टरों तक से मदद मिलती है. क्या हमारा यह कहना सच नहीं है ? किसानो, मजदूरों, मुसलमानो और हरिजनो का हाल आज क्या है ? मुसलमानों की संस्कृति और उनकी इज्ज़त-आबरू पर हमला करके, उन पर अविश्वास करके, उनको हर तरह से ज़लील और परेशान करके, कांग्रेस मैनों और कांग्रेसी सरकारों ने क्या गांधीवादी होने का सबूत दिया है ?

महात्मा गांधी का नाम लेना और उनके उसूलों की क़समें खाना आसान बात है, मगर गांधी जी के बताये रास्ते पर चलना, न्याय, लोकतन्त्र और भाई चारे के उसूलों को सच्चे मानों में असली जामा पहनाना दूसरी बात है.

اور اس کے صدر کی سرکاری منسٹروں اور افسروں کے مقابلے میں کیا حیثیت ہے ؟ کانگریس کے گاندھی وادی کارکرتاؤں اور وچارکوں کی آج کیا حیثیت ہے ؟ گاندھی وادی سدھانتوں کو سرکاری عمل میں آج کہاں تک لایا جا رہا ہے ؟ مسلمانوں، ہریجنوں اور کسانوں، مزدوروں اور غریب جنتا پر آج کیا بیت رہی ہے ؟ آج کیا یہ سچ نہیں ہے کہ لوگ اوب کر اور پریشان ہو کر یہ کہنے لگے ہیں کہ اس سے اچھی تو انگریزی سرکار ہی تھی ؟ یہ ہماری موجودہ سرکار کی شکایت ہے یا تعریف ؟

۱۹۴۸ء کی ۳۰ جنوری کو گاندھی جی کا خون ہوا ۔ اس خونی کو پھانسی دینے میں دیش کا لاکھوں روپیہ اور اتنا وقت برباد ہوا مگر اس خونی کے ساتھی، ہم خیال، ہمجولی چھٹا سانڈ کی طرح گھوم رہے ہیں اور اپنا سنگھٹن مضبوط بنا رہے ہیں ۔ اپنے اس ناپاک کام میں انہیں اونچے اونچے کانگریسی نیتاؤں اور منسٹروں تک سے مدد ملتی ہے ۔ کیا ہمارا یہ کہنا سچ نہیں ہے ؟ کسانوں، مزدوروں مسلمانوں اور ہریجنوں کا حال آج کل کیا ہے ؟ مسلمانوں کی سنسکرتی اور ان کے عزت آبرو پر حملہ کر کے ان پر اوشواس کر کے ان کو ہر طرح سے ذلیل اور پریشان کر کے کانگریس مینوں اور کانگریسی سرکاروں نے کیا گاندھی وادی ہونے کا ثبوت دیا ہے ؟

مہاتما گاندھی کا نام لینا اور ان کے اصولوں کی قسمیں کھانا آسان بات ہے مگر گاندھی جی کے بتائے راستے پر چلنا نیائے لوک تنتر اور بھائی چارے کے اصولوں کو سچے معنوں میں عملی جامہ پہنانا دوسری بات ہے

इन्हीं की आजादी और भलाई के लिये लड़े भी थे और इन्हीं के हाथों में राजकाज की बागडोर भी सौंपना चाहते थे, क्योंकि गांधी जी की निगाहों में सचमुच यही लोग हिन्दुस्तान या भारतमाता थे.

गांधी जी न रहे तो उनका नाम लेकर हमारे नेताओं ने हजारों क़समें खाई और बार बार वायदे किये कि वह देश को, सरकार को और कांग्रेस को गांधी जी के बताये रास्ते पर ही ले चलेंगे. मगर गांधी जी के बाद हिन्दुस्तान मे जो कुछ हुआ वह इस बात का सबूत है कि हमारे नेताओ ने सिर्फ़ अपने फायदे के ही लिये गांधी जी का नाम इस्तेमाल किया, मगर वह गांधी जी के बताये रास्ते पर बिलकुल नहीं चले.

आज देश जितना ग़रीब है, उतना ग़रीब वह इसके पहले कभी भी नहीं था. आज लोगो के दिलो में जितनी निराशा है उतनी पहले कभी भी नहीं थी. आज कांग्रेस और नेताओ की ओर से जनता जितनी बेज़ार और बदगुमान है उतनी पहले कभी भी न थी. ज़िन्दगी की ज़रूरी चीजो की कमी और महँगाई, कपड़े-खाने की दिक़्क़त और तबाही, सारे देश मे फैली बेईमानी, चोर बाज़ारी, मुनाफ़ाख़ोरी और बदइन्तज़ामी चन्द अमीरो और सरकारी अफ़सरो को छोड़ कर बाक़ी सारी जनता को भूको मरने, नंगे रहने और बेइज़्ज़त होने के लिये मजबूर कर रही है. विरोधी विचारो और सुझाओ को दबाने, शहरी आज़ादी छीनने और जनता की ज़बान बन्द करने में सरकार आज जिस बेरहमी, बेहयाई और बेईमानी के साथ लगी हुई है वह भी अपनी मिसाल नहीं रखती. कम्युनिस्टों या सख़्त तबीयत संस्था के लोगों की तो बात ही छोड़िये, आज ख़ुद कांग्रेस

انھیں کی آزادی اور بھلائی کے لئے لڑے بھی تھے اور انھیں کے ہاتھوں میں راج کاج کی باگ ڈور بھی سونپنا چاہتے تھے، کیونکہ گاندھی جی کی نگاہوں میں سچ مچ یہی لوگ ہندستان یا بھارت ماتا تھے۔

گاندھی جی نہ رہے تو ان کا نام لے کر ہمارے نیتاؤں نے ہزاروں قسمیں کھائیں۔ اور بار بار وعدے کئے کہ وہ دیش کو، سرکار کو اور کانگریس کو گاندھی جی کے بتائے راستے پر ہی لے چلیں گے۔ مگر گاندھی جی کے بعد ہندستان میں جو کچھ ہوا وہ اس بات کا ثبوت ہے کہ ہمارے نیتاؤں نے صرف اپنے فائدے کے ہی لئے گاندھی جی کا نام استعمال کیا، مگر وہ گاندھی کے بتائے راستے پر بالکل نہیں چلے۔

آج دیش جتنا غریب ہے، اتنا غریب وہ اس کے پہلے کبھی بھی نہیں تھا۔ آج لوگوں کے دلوں میں جتنی نراشا ہے اتنی پہلے کبھی بھی نہیں تھی۔ آج کانگریس اور نیتاؤں کی اور سے جنتا جتنی بیزار اور بدگمان ہے اتنی پہلے کبھی بھی نہ تھی۔ زندگی کی ضروری چیزوں کی کمی اور مہنگائی، کپڑے کھانے کی دقت اور تباہی، سارے دیش میں پھیلی بے ایمانی، چوربازاری، منافع خوری اور بد انتظامی چند امیروں اور سرکاری افسروں کو چھوڑ کر باقی ساری جنتا کو بھوکوں مرنے ننگے رہنے اور بے عزت ہونے کے لئے مجبور کر رہی ہے۔ ورودھی وچاروں اور سجھاؤں کو دبانے، شہری آزادی چھیننے اور جنتا کی زبان بند کرنے میں سرکار آج جس بے رحمی، بے حیائی اور بے ایمانی کے ساتھ لگی ہوئی ہے وہ بھی اپنی مثال نہیں رکھتی۔ کمیونسٹوں یا سخت طبیعت سنستھا کے لوگوں کی تو بات ہی چھوڑیئے۔ آج خود کانگریس

रहने का मौक़ा न मिले तब क्या होगा ? फिर अगर इज़्ज़त के साथ रहने का मौक़ा मिलना ज़रूरी समझा जाय तो जनता की भाषा, रीति-रवाज, रहन-सहन, संस्कृति, धर्म वग़ैरा को कैसे नज़रन्दाज़ किया जा सकता है ? अगर यह सब कुछ है तो क्या यह ज़रूरी नहीं है कि जनता राजनैतिक तौर से आज़ाद हो जाय जिससे समाजी, माली और कलचरी आज़ादी के लिये सभी दरवाज़े खुल जायँ.

गांधी जी का तर्क (मतक़) इसी तरह चलता था, या, यों कहे कि गांधी जी जिन मसलों को उठाते थे उन मसलों में ही उनके हल भी छिपे रहते थे. उनके यहां मसला और हल को अलग करके नहीं देखा जा सकता.

इसीलिये गांधी जी ने आज़ाद हिन्दुस्तान की रिपबलिक के पहिले सदर के लिये क़ाबिल से क़ाबिल आदमी के बावजूद किसी हरिजन या किसान या औरत को ही रखने की राय दी. लोगों ने इस राय का मज़ाक उड़ाया मगर गांधी जी की नज़र में किसी हरिजन, या किसान या औरत की जो जगह थी वह किसी भी भारी भरकम नेता की न थी. ऐसा इसलिये नहीं कि वह भारी भरकम नेता से चिढ़ते थे बल्कि इसलिये कि वह समझते थे कि एक अनपढ़ देहाती किसान, या हरिजन या औरत समाज और धरती के बहुत नज़दीक रहने के कारन देश के विधान को ज़्यादा कामयाबी के साथ चला सकता है.

गांधी जी किसानों और मज़दूरों और औरतों और हरिजनों पर इन नेताओं से अधिक भरोसा करते थे. गांधी जी ज़िन्दगी भर

رہنے کا موقع نہ ملے تب کیا ہوگا؟ پھر اگر عزت کے ساتھ رہنے کا موقع ملنا ضروری سمجھا جائے تو جنتا کی بھاشا، ریت رواج، رہن سہن، سنسکرتی، دھرم وغیرہ کو کیسے نظر انداز کیا جا سکتا ہے؟ اگر یہ سب کچھ ہے تو کیا یہ ضروری نہیں ہے کہ جنتا راج نیتک طور سے آزاد ہو جائے جس سے سماجی، مالی اور کلچری آزادی کے لئے سبھی دروازے کھل جائیں۔

گاندھی جی کا ترک (منطق) اسی طرح چلتا تھا، یوں کہیں کہ گاندھی جی جن مسئلوں کو اٹھاتے تھے ان مسئلوں میں ہی ان کے حل بھی چھپے رہتے تھے۔ ان کے یہاں مسئلہ اور حل کو الگ کر کے نہیں دیکھا جا سکتا۔

اسی لئے گاندھی جی نے آزاد ہندستان کی ری پبلک کے پہلے صدر کے لئے قابل سے قابل آدمی کے باوجود کسی ہریجن یا کسان یا عورت کو ہی رکھنے کی رائے دی۔ لوگوں نے اس رائے کا مذاق اڑایا مگر گاندھی جی کی نظر میں کسی ہریجن یا کسان یا عورت کی جو جگہ تھی وہ کسی بھی بھاری بھرکم نیتا کی نہ تھی۔ ایسا اس لئے نہیں کہ وہ بھاری بھرکم نیتا سے چڑھتے تھے۔ بلکہ اس لئے کہ وہ سمجھتے تھے کہ ایک ان پڑھ دیہاتی کسان یا ہریجن یا عورت سماج اور دھرتی کے بہت نزدیک رہنے کے کارن دیش کے ودھان کو زیادہ کامیابی کے ساتھ چلا سکتا ہے۔

گاندھی جی کسانوں اور مزدوروں اور عورتوں اور ہریجنوں پر ان نیتاؤں سے ادھک بھروسا کرتے تھے۔ گاندھی جی زندگی بھر

अगर वह अपना भला चाहते हैं और ७ करोड़ हरिजनों को अपना दुश्मन नहीं बनाना चाहते तो वह अपना रवैया बदलें. साम्प्रदायिक फ़ैसले के हरिजनों वाले हिस्से के खिलाफ़ जब गांधी जी ने आमरण व्रत शुरू कर दिया तब अंग्रेजी सरकार ही नहीं कांप उठी थी, हिन्दू जाति के भी पांवों तले की धरती खिसक गई थी. गांधी जी का उपवास तब बन्द हुआ जब मैक्डोनल्ड ने अपना फ़ैसला वापस लिया और हिन्दू नेताओं ने वायदा किया कि वह हिन्दू जाति में इतना सुधार करेंगे कि वह हरिजनो के साथ अन्याय न करे. उसी समय हरिजन सेवक संघ का जन्म हुआ था और वह संघ आज तक अपना काम करता जा रहा है.

हिन्दू मुसलिम एकता, खादी, ग्रामोद्योग वग़ैरह जितने गांधी जी के प्रोग्राम थे सबकी यही ख़ूबी थी कि उनमें दोधारी चोट होती थी. यही नहीं, उनमें एक ख़ूबी यह भी थी कि इन नारों और प्रोग्रामों के ज़रिये गांधी जी देश की रहनेवाली जनता के नज़दीक भी पहुंच गये थे उनकी उँगली जनता की नब्ज़ पर हमेशा रहती थी. इन संस्थाओं के ज़रिये वह उनके दिलों की धड़कनों का अन्दाज़ा लगा लिया करते थे.

इन संस्थाओं के ज़रिये गांधी जी उन बुनियादी सवालों को भी हल करने की कोशिश करते थे जो सवाल सचमुच जनता के असली सवाल थे. जनता का असली सवाल आख़िर क्या है ? यही न कि उसे काम और खाना, कपड़ा और इज़्ज़त के साथ जीवन बिताने का मौक़ा दिया जाय. अगर जनता को काम न मिले तो खाना, कपड़ा और मकान कैसे मिलेगा ? अगर काम, खाना, कपड़ा, मकान सब मिल भी जाय मगर उसे इज़्ज़त, मर्यादा और ख़ुशी के साथ

(५४)

اگر وہ اپنا بھلا چاہتے ہیں اور سات کروڑ ہریجنوں کو اپنا دشمن نہیں بنانا چاہتے تو وہ اپنا رویہ بدلیں۔ سامپردائک فیصلہ کے ہریجنوں والے حصے کے خلاف جب گاندھی جی امرن برت شروع کردیا تب انگریزی سرکار ہی نہیں کانپ اٹھی تھی، ہندو جاتی کے بھی پاؤں تلے کی دھرتی کھسک گئی تھی۔ گاندھی جی کا اپ واس تب بند ہوا جب میک ڈانلڈ نے اپنا فیصلہ واپس لیا اور ہندو نیتاؤں نے وعدہ کیا کہ وہ ہندو جاتی میں اتنا سدھار کریں گے کہ وہ ہریجنوں کے ساتھ اتنا انیائے نہ کرے۔ اسی سمے ہریجن سیوک سنگھ کا جنم ہوا تھا اور وہ سنگھ آج تک اپنا کام کرتا جا رہا ہے۔

ہندو مسلم ایکتا، کھادی، گرامودیوگ وغیرہ جتنے گاندھی جی کے پروگرام تھے۔ سب کی یہی خوبی تھی کہ ان میں دو دھاری چوٹ ہوتی تھی۔ یہی نہیں ان میں ایک خوبی یہ بھی تھی کہ ان نعروں اور پروگراموں کے ذریعہ گاندھی جی دیش کی رہنے والی جنتا کے نزدیک بھی پہونچ گئے تھے۔ ان کی انگلی جنتا کی نبض پر ہمیشہ رہتی تھی۔ ان سنستھاؤں کے ذریعہ وہ ان کے دلوں کی دھڑکنوں کا اندازہ لگا لیا کرتے تھے۔

ان سنستھاؤں کے ذریعے گاندھی جی ان بنیادی سوالوں کو بھی حل کرنے کی کوشش کرتے تھے۔ جو سوال سچ مچ جنتا کے اصلی سوال تھے۔ جنتا کا اصلی سوال آخر کیا ہے؟ یہی نہ کہ اسے کام کام اور کھانا، کپڑا اور عزت کے ساتھ جیون بتانے کا موقع دیا جائے اگر جنتا کو کام نہ ملے تو کھانا، کپڑا اور مکان کیسے ملے گا؟ اگر کام، کھانا، کپڑا اور مکان سب مل بھی جائے مگر اسے عزت، مریادا اور خوشی کے ساتھ

कोई स्वार्थ न था, अपनी कोई इच्छा न थी, अपना कोई अरमान न था. जनता का स्वार्थ ही उनका स्वार्थ था, जनता की इच्छा ही उनकी अपनी इच्छा थी और जनता का अरमान ही उनका अपना अरमान था.

यही कारन है कि गांधी जी की आत्मा में बल था क्योंकि उसमें जनता की आत्मा का बल मिला हुआ था. उनके हौसले ऊँचे थे क्योंकि उनमें जनता के सारे हौसले शामिल थे उनकी छाती बड़ी चौड़ी थी क्योंकि उसमें सारे हिन्दुस्तान की जनता की हमदर्दी और प्रेम भरा हुआ था. उनकी नज़र साफ थी और बहुत दूर तक देख सकती थी क्योंकि उसमे सारे देश की दूरन्देशी और समझ समोई हुई थी.

महात्मा गांधी ने जिस हिम्मत और दिलेरी के साथ अंग्रेज़ी सरकार से लोहा लिया था उसी हिम्मत और दिलेरी के साथ उन्होंने समाज की बुराइयों पर भी हमला किया था. जहां वह सियासी ग़ुलामी को दूर करने के लिये किसी भी हद तक जाने के लिये तैयार थे, वहीं वह माली और समाजी बुराइयों को ख़त्म करने के लिये हर विरोधी ताक़त से भिड जाने को तैयार रहते थे. महात्मा गांधी की लड़ाई का यह बड़ा पैना और तीखा हथियार था जो एक ही चोट में दोनों ओर वार करता था.

मिसाल के लिये हरिजनों के मसले को लीजिये. एक ओर उन्होंने गोल मेज़ कान्फ्रेंस में जब सरकार को यह चुनौती दी कि अगर हरिजनों को हिन्दुओं से अलग किया गया तो वह जान की बाज़ी लगा देंगे तो दूसरी ओर उन्होंने हिन्दुओं से यह मांग की कि

کوئی سوارتھ نہ تھا۔ اپنی کوئی اچھا نہ تھی، اپنا کوئی ارمان نہ تھا۔ جنتا کا سوارتھ ہی اُن کا سوارتھ تھا، جنتا کی اچھا ہی اُن کی اپنی اچھا تھی۔ اور جنتا کا ارمان ہی اُن کا اپنا ارمان تھا۔ یہی کارن ہے کہ گاندھی جی کی آتما میں بل تھا کیوں کہ اُس میں جنتا کی آتما کا بل ملا ہوا تھا۔ اُن کے حوصلے اونچے تھے کیوں کہ اُن میں جنتا کے سارے حوصلے شامل تھے۔ اُن کی چھاتی بڑی چوڑی تھی کیوں اُس میں سارے ہندوستان کی جنتا کی ہمدردی اور پریم بھرا ہوا تھا۔ اُن کی نظر صاف تھی اور بہت دور تک دیکھ سکتی تھی کیونکہ اُس میں سارے دیش کی دور اندیشی اور سمجھ سموئی ہوئی تھی۔

مہاتما گاندھی نے جس ہمت اور دلیری کے ساتھ انگریزی سرکار سے لوہا لیا تھا۔ اُسی ہمت اور دلیری کے ساتھ انھوں نے سماج کی برائیوں پر بھی حملہ کیا تھا۔ جہاں وہ سیاسی غلامی کو دور کرنے کے لئے کسی بھی حد تک جانے کے لئے تیار تھے وہیں وہ مالی اور سماجی برائیوں کو ختم کرنے کے لئے ہر وِرودھی طاقت سے بھڑ جانے کو تیار رہتے تھے، مہاتما گاندھی کی لڑائی کا یہ بڑا پینا اور تیکھا ہتھیار تھا۔ جو ایک ہی چوٹ میں دونوں اور وار کرتا تھا۔

مثال کے لئے ہریجنوں کے مسئلے کو لیجئے ایک اور انھوں نے گول میز کانفرنس میں جب سرکار کو یہ چنوتی دی کہ اگر ہریجنوں کو ہندوؤں سے الگ کیا گیا تو وہ جان کی بازی لگا دیں گے تو دوسری اور انھوں نے ہندوؤں سے یہ مانگ کی کہ

یہی کارن ہے کہ گاندھی جی کی آتما میں بل تھا
کیوں کہ اُس میں جنتا کی آتما کا بل ملا ہوا تھا۔ اُن

१९४९ का लेखा-जोखा

[भाई श्रीकृष्णदास]

महात्मा गांधी के न रहने पर हिन्दुस्तान का क्या हाल होगा यह मैं अकसर सोचा करता था. और, जब सचमुच गांधी जी हमारे बीच न रहे और सारा देश यह कहकर रो पड़ा कि क़ौम यतीम हो गई, तब भी मैने यही सोचा कि अब देश की नैया कौन खेवेगा. ऐसा मैंने इसलिये नहीं सोचा था कि मुझे देश की जनता पर यक़ीन न था, या मुझे नेताओं की नेकनीयती पर भरोसा न था, बल्कि ऐसा मैंने इसलिये सोचा था कि महात्मा गांधी के व्यक्तित्व (शख़्सियत) मे सबको एक साथ मिलाकर ले चलने की जो ख़ास ख़ूबी थी वह किसी भी दूसरे नेता मे न थी. इसलिये बार बार दिल में यह सवाल उठता था कि तरह तरह के मज़हबों, ज़बानों, संस्कृतियों, इतिहासो और रीति रिवाजो वाले इस बड़े भारी मुल्क और बड़ी पुरानी और शानदार जनता की रहबरी कौन करेगा ?

महात्मा गांधी में सबसे बड़ी ख़ूबी यह थी कि उन्होने अपने को, अपनी हस्ती को, अपनी आत्मा और ख़ुदी को मिटा दिया था और इस तरह वह सचमुच जनता के एक ऐसे हिस्सा बन चुके थे जैसे समुद्र का एक हिस्सा बूंद होता है. इसीलिये गांधी जी का अपना

۱۹۴۹ء کا لیکھا جوکھا

(بھائی شری کرشن داس)

مہاتما گاندھی کے نہ رہنے پر ہندستان کا کیا حال ہوگا یہ میں اکثر سوچا کرتا تھا۔ اور جب سچ مچ گاندھی جی ہمارے بیچ نہ رہے اور سارا دیش یہ کہہ کر رو پڑا کہ قوم یتیم ہوگئی تب بھی میں نے یہی سوچا کہ اب دیش کی نیّا کون کھیوے گا۔ ایسا میں نے اس لئے نہیں سوچا تھا کہ مجھے دیش کی جنتا پر یقین نہ تھا یا مجھے نیتاؤں کی نیک نیتی پر بھروسہ نہ تھا۔ بلکہ ایسا میں نے اس لئے سوچا تھا کہ مہاتما گاندھی کے ویکتتو (شخصیت) میں سب کو ایک ساتھ ملا کر لے چلنے کی جو خاص خوبی تھی وہ کسی بھی دوسرے نیتا میں نہ تھی۔ اس لئے بار بار دل میں یہ سوال اٹھتا تھا کہ طرح طرح کے مذہبوں، زبانوں، سنسکرتیوں (کلچروں) اتہاسوں اور ریت رواجوں والے اس بڑے بھاری ملک اور بڑی پرانی اور شاندار جنتا کی رہبری کون کرے گا؟

مہاتما گاندھی میں سب سے بڑی خوبی یہ تھی کہ انھوں نے اپنے کو، اپنی ہستی کو، اپنی آتما اور خودی کو مٹا دیا تھا اور اس طرح وہ سچ مچ جنتا کے ایک ایسے حصہ بن چکے تھے جیسے سمندر کا ایک حصہ بوند ہوتا ہے۔ اسی لئے گاندھی جی کا اپنا

अकेला

(भाई रामजी दर)

सभ्य-समाज की असभ्य बातों से ऊब कर मैं अपने बागीचे के एक शान्त और एकान्त कोने मे, एक घने पेड़ की छाया तले, फूल, पत्तियो, चिड़ियो और तितलियो के बीच जा बैठा.

कुदरती हुस्न और वातावरण के असर से मन की थकान दूर हुई. एक अजोब नाकाबिले बयान आनन्द हासिल हुआ—नये भाव और विचार उमंडने लगे. लेकिन इतने ही मे मेरे एक गहरे दोस्त की नजर मुझ पर पड़ी —

"अरे भाई अकेले क्या कर रहे हो ? " सवाल मे ताज्जुब और मजाक की झलक थी

"मैं अकेला नही हूँ " मैने धीमे से पर गम्भीर आवाज मे

जवाब दिया

कुदरत ने भी उसी वक्त अपनी हस्ती का इशारा किया

मेरे मित्र भाषा-शास्त्र के बड़े पडित थे एक परोपकारी जीव थे. वह सामने की सड़क से किसी बहुत जरूरी काम से कहीं जा रहे थे.

मेरा जवाब सुन वह दो घड़ी रुके, अपने चारों ओर बड़े ध्यान से देखा. फिर ऊपर निगाह डाली मेरे अलावा मेरे मित्र को, और कोई जीव न दिखाई दिया हाँ पेडो की टहनियाँ मस्तानी पेग ले रही थी, उनके बेशुमार पत्ते आपस मे टकरा रहे थे चिडियाँ चहक और फुदक रही थी, तितलियाँ मडरा रही थी और फूल अपनी खुशबू पूरी आजादी मे फैला रहे थे मगर——

मेरे दुनयादार दोस्त को न तो मेरी सीधी-सादी बोली समझ मे आई और न कुदरत का साफ इशारा.

मेरे बेतुके और बेमानी जीवन पर तरस खाकर वह समाज-सुधार की पगडन्डी पर आगे बढ़ गये और मुझे "अकेला" छोड़ गये !!

اکیلا

(بھائی رام جی در)

سبھیہ سماج کی اسبھیہ باتوں سے اُوب کر میں اپنے باغیچے کی ایک شانت اور ایکانت کونے میں، ایک گھنے پیڑ کی چھایا تلے، پھول، پتّوں، چڑیوں اور تتلیوں کے بیچ جا بیٹھا۔

قدرتی حسن اور واتاورن کے اثر سے من کی تھکن دور ہوئی ایک عجیب ناقابل بیان آنند حاصل ہوا — نئے بھاؤ اور وچار اُمنڈنے لگے۔ لیکن اتنے ہی میں میرے ایک گہرے دوست کی نظر مجھ پر پڑی —

"ارے بھائی اکیلے کیا کر رہے ہو؟" سوال میں تعجب اور مذاق کی

جھلک تھی

"میں اکیلا نہیں ہوں" میں نے دھیمے سے پر گمبھیر آواز میں جواب دیا۔

قدرت نے بھی اسی وقت اپنی ہستی کا اشارا کیا۔

میرے متر بھاشا شاستر کے بڑے پنڈت تھے ایک پروپکاری جیو تھے وہ سامنے کی سڑک سے کسی بہت ضروری کام سے کہیں جا رہے تھے

میرا جواب سن وہ دو گھڑی رُکے، اپنے چاروں اور بڑے دھیان سے دیکھا، پھر اوپر نگاہ ڈالی۔ میرے علاوہ، میرے متر کو، اور کوئی جیو نہ دکھائی دیا۔ ہاں پیڑوں کی ٹہنیاں مستانی پینگ لے رہی تھیں، اُنکے بیشمار پتے آپس میں ٹکرا رہے تھے۔ چڑیاں چہک اور پھدک رہی تھیں تتلیاں منڈرا رہی تھیں اور پھول اپنی خوشبو پوری آزادی سے پھیلا رہی تھی مگر——

میرے دنیادار دوست کو نہ تو میری سیدھی سادی بولی سمجھ میں آئی اور نہ قدرت کا صاف اشارا۔

میرے بے تکے اور بے معنی جیون پر ترس کھا کر وہ سماج سدھار کی پگڈنڈی پر آگے بڑھ گئے اور مجھے "اکیلا" چھوڑ گئے !!

कड़का

(भाई नज्म आफन्दी)

रन में सुन लो मेरा कडका
मैं हूँ, हिन्दुस्तानी लड़का.
सूरज की आंखो का तारा
पूरब के दिल का मै पारा
चाँद है मेरा एक खिलौना
मेरे वतन की धूप है सोना.
ठंडी ठंडी नहरें मेरी
गर्म हवा की लहरें मेरी.
खेत में पनपी काया मेरी
धरती धरती माया मेरी.
परवत परवत चढ़ने वाला
आंधी ऐसा बढ़ने वाला
हिन्द का रोशन तारा हूँ मै
देस को अपने प्यारा हूँ मैं.
दोनो है शैदाई मेरे
हिन्दू मुस्लिम भाई मेरे.
जंग है जब अंगड़ाई लेती
आता हूँ मै छोड़ के खेती.
बिजली, बादल कोई न टोके
मेरा रस्ता कोई न रोके.
डर की परवा करता कब हूँ
हिन्दी हूँ मै डरता कब हूँ.

کڑکا

(بھائی نجم آفندی)

رن میں سُن لو میرا کڑکا
میں ہوں ہندستانی لڑکا
سُورج کی آنکھوں کا تارا
پورب کے دل کا میں پارا
چاند ہے میرا ایک کھلونا
میرے وطن کی دھوپ ہے سونا
ٹھنڈی ٹھنڈی نہریں میری
گرم ہوا کی لہریں میری
کھیت میں پنپی کایا میری
دھرتی دھرتی مایا میری
پربت پربت چڑھنے والا
آندھی ایسا بڑھنے والا
ہند کا روشن تارا ہوں میں
دیس کو اپنے پیارا ہوں میں
دونوں ہیں شیدائی میرے
ہندو مسلم بھائی میرے
جنگ ہے جب انگڑائی لیتی
آتا ہوں میں چھوڑ کے کھیتی
بجلی، بادل کوئی نہ ٹوکے
میرا رستہ کوئی نہ روکے
ڈر کی پروا کرتا کب ہوں
ہندی ہوں میں ڈرتا کب ہوں

" और मैंने आँखो से ख़ुशियाँ छलकाते हुए सर हिला दिया था, 'नहीं' तब उन्होने इस चीज की ओर इशारा करके हँस कर कहा था, ' यह, जब तुम बड़ी होगी, तो . ' "

" क्या वह यही चीज थी, अम्मू ?" कृष्णन ने पूछा.

" हाँ, यह वही सूटकेस था, जिसे चूड़ियों के बदले मैं ने उदास और भारी मन से दादा के चरणो मे भेंट कर दिया था, मुझे क्या मालूम कि दादा . " अम्मू कहते कहते सिसक पडी

" सचमुच अम्मू !" कृष्णन भी उदास होकर बोला—" मुझे तुम्हारे साथ पूरी हमदर्दी है. दादा ने तुम्हारे उस नन्हे दिल की कोमल भावनाओं के साथ बड़ा कठोर "

" नहीं, नहीं, ऐसा न कहिये ! ' अम्मू काँपती आवाज मे बीच ही मे बोल पड़ी—' एक की भावनाओं का कद्र से हजारों की भलाई का सवाल बहुत बड़ा है."

"اور میں نے آنکھوں سے خوشیاں چھلکاتے ہوئے سر ہلا دیا تھا' نہیں' تب انھوں نے اس چیز کی اور اشارا کر کے ہنس کر کہا تھا' یہ، جب تم بڑی ہوگی' تو.....' "

"کیا وہ یہی چیز تھی، امو؟" کرشن نے پوچھا.

"ہاں' یہ وہی سوٹ کیس تھا' جسے چوڑیوں کے بدلے میں نے اُداس اور بھاری من سے دادا کے چرنوں میں بھینٹ کر دیا تھا' مجھے کیا معلوم کہ دادا...." امو کہتے کہتے سسک پڑی.

"سچ سچ امو!" کرشن بھی اُداس ہو کر بولا — "مجھے تمھارے ساتھ پوری ہمدردی ہے. دادا نے تمھارے اُس ننھے دل کی کومل بھاؤناؤں کے ساتھ بڑا کٹھور...."

"نہیں، نہیں، ایسا نہ کہئے!" امو کانپتی آواز میں بیچ ہی میں بول پڑی — "ایک کی بھاؤناؤں کی قدر سے ہزاروں کی بھلائی کا سوال بہت بڑا ہے."

कमी का ज्ञान ही नहीं होता, बच्चो की ऊपरी ज़रूरतों को पूरी करके लोग समझ लेते हैं कि उन्हे और कुछ चाहिए ही नहीं. वह यह नहीं सोचते कि बच्चों के नन्हे, भोले भाले दिल मे भी कोई मीठा अरमान मचल उठता है, और जब वह उसे पूरा नही कर पाते, तो उनके कोमल दिल को कितनी गहरी चोट लगती है !"

"इसमे क्या शक है, अम्मू ? हॉ फिर ?" कृष्णन बोला.

"उस समय मुझे बड़ा दुख हुआ कि अब मे कैसे बिना चूड़ियाँ पहने दादा के पास जा सकूंगी. मन मे बस यही बात रह रह कर चुटकियां लेने लगी कि काश, इन चूड़ियो पर मेरा अधिकार होता-- यह मेरी होतीं,तो क्या अम्मा मुझे इन्हे दादा को देने से रोक सकती ? और यह विचार आना था कि एक सवाल मन मे आप ही आप उठ खड़ा हुआ कि क्या इस घर मे कोई ऐसी चीज़ नहीं, जिस पर पूरा-पूरा मेरा ही अधिकार हो, जिसे लेकर मैं दादा के पास जा सकूॅ. यह ख़याल आना था कि मै लेटी लेटी कमरे की हर चीज़ को ग़ौर से देखने लगी.

"घूमते घूमते मेरी ऑखे मेज़ पर जाकर रुक गई. मन ने कहा, 'बस, यही एक चीज़ है, जिसे तुम अपना कह सकती हो. उस चीज़ के साथ साथ मेरे गुज़रे हुए जीजा मेरी ऑखों मे ऑसू बन कर उतर आये और वह सीन मेरी भीगी ऑखो के सामने एक सपने की तरह खुल गया, जब वह इंगलैंड से अपनी पढ़ाई ख़तम करके वापस आये थे तो मुझे अपनी गोद में बिठा कर, मेरे गाल को थपथपाते हुए कहा था, 'जानती हो, अम्मू, तुम्हारे लिये क्या लाया हूं ?'

کی کا گیان ہی نہیں ہوتا، بچوں کی اوپری ضرورتوں کو پورا کرکے لوگ سمجھ لیتے ہیں کہ انھیں اور کچھ چاہئے ہی نہیں۔ وہ یہ نہیں سوچتے کہ بچوں کے ننھے، بھولے بھالے دل میں بھی کوئی میٹھا ارمان مچل اٹھتا ہے، اور جب وہ اسے پورا نہیں کر پاتے تو انکے کومل دل کو کتنی گہری چوٹ لگتی ہے!"

"اس میں کیا شک ہے، امّو؟ ہاں پھر؟" کرشنن بولا۔

"اس سے مجھے بڑا دکھ ہوا کہ اب میں کیسے بنا چوڑیاں پہنے دادا کے پاس جا سکوں گی۔ من میں بس یہی بات رہ رہ کر چٹکیاں لینے لگی کہ کاش، ان چوڑیوں پر میرا ادھیکار ہوتا —— یہ میری ہوتیں تو کیا امّاں مجھے انھیں دادا کے دینے سے روک سکتیں؟ اور یہ بچار آنا تھا کہ ایک سوال من میں آپ ہی آپ اٹھ کھڑا ہوا کہ کیا اس گھر میں کوئی ایسی چیز نہیں، جس پر پورا پورا میرا ہی ادھیکار ہو، جسے لیکر میں دادا کے پاس جا سکوں یہ خیال آنا تھا کہ میں لیٹی لیٹی کمرے کی ہر چیز کو غور سے دیکھنے لگی۔

"گھومتے گھومتے میری آنکھیں میز پر جا کر رک گئیں، میں نے کہا، بس یہی ایک چیز ہے، جسے تم اپنا کہہ سکتی ہو، اس چیز کے ساتھ ساتھ میرے گزرے ہوئے جیجا میری آنکھوں میں آنسو بن کر اتر آئے اور وہ سین میری بھیگی آنکھوں کے سامنے ایک سپنے کی طرح کھل گیا، جب وہ انگلینڈ سے اپنی پڑھائی ختم کرکے واپس آئے تھے تو مجھے اپنی گود میں بٹھا کر، میرے گال کو تھپتھپاتے ہوئے کہا تھا، جانتی ہو، امّو، تمھارے لئے کیا لایا ہوں'؟

दी. मैंने सोचा, कि अब मुझे ही बोलना चाहिए. मैंने उनका हाथ पकड़ कर पूछने का साहस किया—'क्यो, दादा, आपके हाथ मे तो चूड़ियाँ नहीं, फिर आप दूसरे के हाथो से उनकी सोने की चूड़ियाँ क्यों ले लेते हैं ?'

" 'ओह !' वह मेरा गाल छू कर बोले—'सोने की चूडियॉ मैं उन हाथों के लिए लेता हूँ, जिनको कॉच की भी कभी नसीब नही होतीं ! समझीं ?' दादा ने कहते-कहते मेरी ऑखों की ओर देखा फिर मुस्करा कर मेरा हाथ उठाते हुए कहा—''ला' तू भी दे अपनी चूड़ियाँ ! · अरे, तेरा हाथ तो खाली है ! क्या हुई तेरी चूडियॉ ?'

" 'अम्मा ने निकाल ली,' मै उदास होकर बोली

" 'अच्छा' जा, मॉग तो ला, मेरी अच्छी बिटिया !' मुझे गोद से उतार कर दादा ने कहा और मेरा मुँह चूम लिया. "मै दौड़ती हुई अम्मा के पास गई और चूडि याँ मॉगीं. लेकिन अम्मा ने मेरी जिद की परवा न की. उन्होंने यह कह कर मुझे टाल दिया. कि 'तू जाकर खेल. मैं अपनी चूडि यॉ बापू जी को दूँगी'

" मैं वहा से अपना टूटा दिल लिये अपने कमरे मे चारपाई पर आ गिरी. मन मसोस उठा और मैं फूट फूट कर रो उठी यह कह कर अचानक अम्मू चुप हो गई

" क्यो, तुम चुप क्यों हो गई ?" कृष्णन ने अचकचा कर कहा —" ओह, तुम तो. ."

" नहीं, नहीं," आंखो को आंचल से पोछ अम्मू एक ठण्डी सांस लेकर बोली—" लोग कहते हैं, कि बच्चो की दुनिया में कोई दुख नही होता, क्योंकि उन्हें कोई कमी नहीं खटकती या उन्हें किसी

دی. میں نے سوچا، کہ اب مجھے ہی بولنا چاہئے. میں نے اُنکا ہاتھ پکڑ کر پوچھنے کا ساہس کیا— کیوں، دادا، آپ کے ہاتھ میں تو چوڑیاں نہیں، پھر آپ دوسرے کے ہاتھوں سے اُنکی سونے کی چوڑیاں کیوں لے لیتے ہیں؟

"اوہ!" وہ میرا گال چھوکر بولے— سونے کی چوڑیاں میں اُن ہاتھوں کے لئے لیتا ہوں، جنکو کانچ کی بھی کبھی نصیب نہیں ہوتیں! سمجھیں؟' دادا نے کہتے کہتے میری آنکھوں کی اور دیکھا پھر مسکرا کر میرا ہاتھ اُٹھاتے ہوئے کہا—"لا' تو بھی دے اپنی چوڑیاں! ..... ارے، تیرا ہاتھ تو خالی ہے! کیا ہوئی تیری چوڑیاں؟"

"اماں نے نکال لیں' میں اُداس ہوکر بولی.

"اچھا جا، مانگ تو لا' میری اچھی بٹیا!' مجھے گود سے اُتار کر دادا نے کہا اور میرا منہ چوم لیا." میں دوڑتی ہوئی اماں کے پاس گئی اور چوڑیاں مانگیں. لیکن اماں نے میری ضد کی پروا نہ کی. انھوں نے یہ کہہ کر مجھے ٹال دیا، کہ تو جا کر کھیل، میں اپنی چوڑیاں باپو جی کو دوں گی'

"میں وہاں سے اپنا ٹوٹا دل لئے اپنے کمرے میں چارپائی پر آ گری. من مسوس اُٹھا اور میں پھوٹ پھوٹ رو اُٹھی" یہ کہہ کر اچانک امّو چپ ہوگئی.

"کیوں، تم چپ کیوں ہوگئیں؟" کرشن نے اچکچا کر کہا—"اوہ، تم تو...."

"نہیں، نہیں،" آنکھوں کو آنچل سے پونچھ امّو ایک ٹھنڈی سانس لیکر بولی—"لوگ کہتے ہیں، کہ بچّوں کی دنیا میں کوئی دُکھ نہیں ہوتا، کیونکہ انھیں کوئی کمی نہیں کھٹکتی یا انھیں کسی

पास जायगी ? चल, तेरा हाथ-मुँह तो धो दूँ.'

"अम्मा को क्या मालूम कि मेरे लिये उस वक़्त यह सब उतना जरूरी न था. पर मैं क्या करती ?

"अम्मा मुझे बना सँवार कर दादा के कमरे की ओर चलीं. मैं उमड़ती बेचैनी को दबाये बढ़ी कि अम्मा ने मेरे हाथों को पकड़ सोने की चूड़ियाँ निकाल लीं. देर न चाहते हुए भी मैं रुक कर पूछ बैठी—"यह क्यों ?" "'बेटी', मुझे डराती-सी अम्मा बोलीं—'दादा के यहाँ जो भी सोने की चूड़ियाँ पहन कर जाती है, उससे वह उसे ले लेते हैं. जा, अब तू दादा को देख आ.'

"मैं दादा के कमरे के दरवाजे पर पहुँचते ही झिझक गई. और खड़ी-खड़ी झाँकने लगी.

"तभी किसी ने पुकारा—'कौन है ?'

"मेरी आँखें शर्मा कर पीछे की ओर मुड़ीं कि एक आदमी ने मुझे कमरे में लाकर, बैठा दिया. अब दादा मेरे सामने थे. उनकी कितनी ही तस्वीरें मैं कई बार देख चुकी थी. मुझे क्या मालूम था कि यह वही दादा हैं. मेरी आँखें उन्हें देख देख कर शर्म से खुलती मुँदती रहीं उन्होंने मुझे अपनी गोद में खींच लिया और मेरे बालों को सहलाते हुए पूछा—'तुम्हारा नाम, बेटी ?'

"मैंने उनका मुँह देखते ही टूटी आवाज में कहा—'अम्मू'.

"'बहुत प्यारा नाम है. बेटी, भला, तेरे पिता ···'

"'डाक्टर साहब की यह पोती है," मेरे होंठ खुलने के पहले ही एक आदमी ने बता दिया. मुझे यह बहुत ही बुरा लगा. कि उन्होंने मुझे ही क्यों न बोलने दिया. इस बात ने मेरी झेंप मिटा

پاس جائے گی؟ چل تیرا ہاتھ منہ تو دھو دوں؛

"اماں کو کیا معلوم کہ میرے لئے اس وقت یہ سب اتنا ضروری نہ تھا۔ پر میں کیا کرتی؟

"اماں مجھے بنا سنوار کر دادا کے کمرے کی اور چلیں۔ میں امڑتی بے چینی کو دبائے بڑھی کہ اماں نے میرے ہاتھوں کو پکڑ سونے کی چوڑیاں نکال لیں۔ دیر نہ چاہتے ہوئے بھی میں رک کر پوچھ بیٹھی— "یہ کیوں؟" "بیٹی"، مجھے ڈراتی سی اماں بولیں— 'دادا کے یہاں جو بھی سونے کی چوڑیاں پہن کر جاتی ہے، اس سے وہ اسے لے لیتے ہیں۔ جا، اب تو دادا کو دیکھ آ'؛

"میں دادا کے کمرے کے دروازے پر پہنچتے ہی جھجک گئی۔ اور کھڑی کھڑی جھانکنے لگی۔

(٥٧)

"تبھی کسی نے پکارا— 'کون ہے؟'

"میری آنکھیں شرما کر پیچھے کی اور مڑیں کہ ایک آدمی نے مجھے کمرے میں لا کر، بیٹھا دیا۔ اب دادا میرے سامنے تھے۔ ان کی کتنی ہی تصویریں میں کئی بار دیکھ چکی تھی۔ مجھے کیا معلوم تھا کہ یہ وہی دادا ہیں۔ میری آنکھیں انہیں دیکھ دیکھ کر شرم سے کھلتی مندتی رہیں انھوں نے مجھے اپنی گود میں کھینچ لیا اور میرے بالوں کو سہلاتے ہوئے پوچھا— 'تمہارا نام، بیٹی؟'

"میں نے ان کا منہ دیکھتے ہی ٹوٹی آواز میں کہا— 'اموّ'؛

"بہت پیارا نام ہے۔ بیٹی، بھلا، تیرے پتا....'

"'ڈاکٹر صاحب کی یہ پوتی ہے'، میرے ہونٹ کھلنے کے پہلے ہی ایک آدمی نے بتا دیا۔ مجھے یہ بہت ہی برا لگا۔ کہ انھوں نے مجھے ہی کیوں نہ بولنے دیا۔ اس بات نے میری جھینپ مٹا

" उस शाम आया के साथ खेलने में मेरा जी बिलकुल न लगा. मन दादा ही में लगा रहा.

" खेल से लौटने पर अम्मा ने जबरदस्ती मुझे खिला पिला कर बिस्तर पर लिटा दिया. और न सोने पर गुस्सा होने की धमकी दी, फिर काम में लग गईं. उनके सामने तो मैंने आँखें बन्द कर लीं. लेकिन जैसे ही वह वहाँ से हटी, मेरी आँखे खुल गईं. फिर भी उठ बैठने की हिम्मत मुझमे नहीं थी. आँखें खोल, टक-टक ताकते हुए दादा के बारे में अपनी भोली कल्पनाओं के सहारे सोचते-सोचते न जाने कितना वक्त कट गया. कान दरवाज़े ही पर लगे थे कि किसी के आने की आहट मिले और मै उठ बैठूँ. पता नहीं, कब तक यो जागती रही और कब और कैसे इन्तजार करती हुई आखे बन्द हो गईं.

"सुबह हुई, तो दादा को देखने का सपना सँभाले उठ बैठी. सदा की तरह उस दिन कोई मेरे उठने का इन्तजार न कर रहा था. शायद सब भूले हुए थे. मैं आहिस्ता से बिस्तर से उठी यह सोचती हुई कि अभी-अभी चुपके से दादा को देख आऊँ. कमरे से आते ही आवाज सुन कर मैंने भाँप लिया कि किस कमरे में दादा हैं. कोने के कमरे में कुछ लोग बाते कर रहे थे. मैं समझ गई दादा उसी कमरे में हैं और धीरे-धीरे नन्हें-नन्हें डग भरती हुई उस कमरे की ओर बढ़ी. अभी कुछ ही बढ़ी हूंगी कि पीछे से अम्मा की आवाज आई—'अम्मू !' मैं एकाएक ठिठक गई. मेरी सहमी नजरें अम्मा की ओर मुड़ीं और मैं पसोपेश में मैं खड़ी की खड़ी रही. कि अम्मा ने आगे बढ़कर मुझे गोद में उठाते हुए कहा—'क्यों री, ऐसे ही दादा के

"اس شام آیا کے ساتھ کھیلنے میں میرا جی بالکل نہ لگا۔ من دادا ہی میں لگا رہا۔

"کھیل سے لوٹنے پر اماں نے زبردستی مجھے کھلا پلا کر بستر پر لٹا دیا۔ اور نہ سونے پر غصہ ہونے کی دھمکی دی، پھر کام میں لگ گئیں۔ ان کے سامنے تو میں نے آنکھیں بند کر لیں۔ لیکن جیسے ہی وہ وہاں سے ہٹیں، میری آنکھیں کھل گئیں۔ پھر بھی اٹھ بیٹھنے کی ہمت مجھ میں نہیں تھی۔ آنکھیں کھول ٹک ٹک تاکتے ہوئے دادا کے بارے میں اپنی بھولی کلپناؤں کے سہارے سوچتے سوچتے نہ جانے کتنا وقت کٹ گیا۔ کان دروازے ہی پر لگے تھے کہ کسی کے آنے کی آہٹ ملے اور میں اٹھ بیٹھوں۔ پتہ نہیں، کب تک یوں جاگتی رہی اور کب اور کیسے انتظار کرتی ہوئی آنکھیں بند ہو گئیں۔

(۵۵)

"صبح ہوئی، تو دادا کو دیکھنے کا سپنا سنبھالے اٹھ بیٹھی۔ سدا کی طرح اس دن کوئی میرے اٹھنے کا انتظار نہ کر رہا تھا۔ شاید سب بھولے ہوئے تھے۔ میں آہستہ سے بستر سے اٹھی یہ سوچتی ہوئی کہ ابھی ابھی چپکے سے دادا کو دیکھ آؤں۔ کمرے سے آتے ہی آواز سن کر میں نے بھانپ لیا کہ کس کمرے میں دادا ہیں۔ کونے کے کمرے میں کچھ لوگ باتیں کر رہے تھے میں سمجھ گئی دادا اسی کمرے میں ہیں اور دھیرے دھیرے ننھے ننھے ڈگ بھرتی ہوئی اس کمرے کی اور بڑھی۔ ابھی کچھ ہی بڑھی ہوں گی کہ پیچھے سے اماں کی آواز آئی — 'اکو!' میں ایکا ایک ٹھٹھک گئی۔ میری سہمی نظریں اماں کی اور مڑیں اور میں پس و پیش میں کھڑی کی کھڑی رہی، کہ اماں نے آگے بڑھ کر مجھے گود میں اٹھاتے ہوئے کہا — 'کیوں ری، ایسے ہی دادا

कर अम्मा के कमरे में पहुँची. मगर अम्मा वहां नहीं थीं. मैं कुछ घबराई सी महाराज से पूछने चौके की ओर बढ़ी तो देखती हूँ कि अम्मा कुछ बनाने में लगी हैं. मुझे अचरज हो आया कि अम्मा तो कभी चौके में नहीं आती, आज कौन सी ऐसी बात आ पड़ी, जो वह खुद खाना बना रही हैं. मै ज़्यादा देर तक अपने को रोक न सकी. दौड़कर अम्मा की गोद मे जा चढ़ी और उनका मुंह देखते ही पूछ पड़ी ' अम्मा, आज...? '

" 'बेटी आज रात को तेरे दादा आ रहे हैं,'' उन्हों ने कहा.

" 'दादा !' मैं अचरज मे पड़ कर बोली—' कौन दादा ? मैंने तो उन्हें पहले कभी नहीं देखा.'

" ' तू देखती कैसे ? वह यहाँ पहले आये ही कब ?' फिर मेरे गाल को उँगली से उसकाती हुई खुश होकर बोली—' बेटी, तेरे दादा बहुत अच्छे, बहुत बड़े आदमी हैं—बहुत बड़े ! समझी ?'

" 'तब तो मैं उनके साथ खूब खेलूंगी, और अम्मा, कल में स्कूल भी नहीं जाऊँगी ! ' और अम्मा की गोद से निकल कर मैं मारे खुशी के नाचने लगी.

" 'अच्छा, न जाना. अब जा कपड़े बदल ले.' अम्मा ने कहा.

"मैं वहाँ से हटते हटते यह पूछने से बाज़ न आई, कि दादा कितने बजे आ रहे हैं. और अम्मा ने जब बताया कि दस बजे, तो मेरी उमंग जैसे कुछ हल्की पड़ गई कि भला दस बजे रात तक मैं कैसे जागती रहूँगी. फिर भी वहाँ से क़स्द करके हटी कि आज दस बजे तक ज़रूर जागती रहूँगी, दादा को ज़रूर देखूँगी !

کر اماں کے کمرے میں پہنچی۔ مگر اماں وہاں نہیں تھیں۔ میں کچھ گھبرائی سی مہاراج سے پوچھنے چوکے کی اور بڑھی تو دیکھتی ہوں کہ اماں کچھ بنانے میں لگی ہیں۔ مجھے اچرج ہو آیا کہ اماں تو کبھی چوکے میں نہیں آتیں، آج کون سی ایسی بات آ پڑی، جو وہ خود کھانا بنا رہی ہیں۔ میں زیادہ دیر تک اپنے کو روک نہ سکی۔ دوڑ کر اماں کی گود میں جا چڑھی اور ان کا منھ دیکھتے ہی پوچھ پڑی، 'اماں، آج......؟'

"بیٹی آج رات کو تیرے دادا آ رہے ہیں،' انھوں نے کہا۔

"دادا!' میں اچرج میں پڑ کر بولی — 'کون دادا؟ میں نے تو انھیں پہلے کبھی نہیں دیکھا۔'

"'تو دیکھتی کیسے؟ وہ یہاں پہلے آئے ہی کب؟' پھر میرے گال کو انگلی سے اُسکاتی ہوئی خوش ہو کر بولیں — 'بیٹی، تیرے دادا بہت اچھے، بہت بڑے آدمی ہیں — بہت بڑے! سمجھی؟'

"تب تو میں ان کے ساتھ خوب کھیلوں گی، اور اماں، کل میں اسکول بھی نہیں جاؤں گی!' اور اماں کی گود سے نکل کر میں مارے خوشی کے ناچنے لگی۔

"اچھا، نہ جانا۔ اب جا کپڑے بدل لے،' اماں نے کہا۔

"میں وہاں سے ہٹتے ہٹتے یہ پوچھنے سے باز نہ آئی کہ دادا کتنے بجے آ رہے ہیں۔ اور اماں نے جب بتایا کہ دس بجے تو میری اُمنگ جیسے کچھ ہلکی پڑ گئی کہ بھلا دس بجے رات تک میں کیسے جاگتی رہوں گی۔ پھر بھی وہاں سے قصد کر کے ہٹی کہ آج دس بجے تک ضرور جاگتی رہوں گی، دادا کو ضرور دیکھوں گی!

"यह...यह...नहीं, नहीं," अम्मू तभी न जाने कैसे चीख उठी—"मेरा सर चकरा रहा है. चलिये, घर चलिये!" दोनों जल्दी से आ कर अपनी कार मे बैठ गये. सेठ जी उनका मुंह ताकते रह गये.

(३)

"उस समय तुम्हें अचानक क्या हो गया, अम्मू ?" कृष्णन ने पूछा.

"कुछ नहीं, योंही..." अम्मू ने बात टालनी चाही.

"नही, योही कैसे हो सकता है ? मैं देख रहा हूं, कि तुम तभी से बहुत उदास हो गई हो. कोई गूढ़ बात जरूर है. अगर तुम न बताना चाहो, तो..."

"नही, नही, ऐसा न कहिये। भला आप से कोई बात मैं छिपा ही कैसे सकती हूं ?" अम्मू ने सर हिला कर कहा.

"तो फिर कह ही डालो. जब तक मुझे मालूम न हो जायगा..."

"यों तो बात कुछ कहने के लायक़ नहीं है. फिर भी जब आप को इस के लिये इतनी परेशानी है, तो मैं सुनाये ही देती हूं." कह कर अम्मू ने आँखें मूंद लीं, जैसे वह कोई बीती बात याद कर रही हो. फिर कुछ देर बाद बोली—"उस समय मैं यहीं तीन... समझ लीजिये कि आठ साल की थी."

"अच्छा", कृष्णन ने ध्यान से सुनते हुए कहा.

"एक शाम की बात है. मैं अम्मा के साथ स्कूल से लौटी, तो मेरे घर के सामने कुछ लोगों की भीड़ लगी थी. उनकी आँखें खुशी से चमक रही थीं. मैं कुछ न समझ सकी और आँखें झपकाती दौड़

"یہ..... یہ..... نہیں، نہیں،" امّو تبھی نہ جانے کیسے چیخ اٹھی — "میرا سر چکرا رہا ہے۔ چلئے، گھر چلئے!" دونوں جلدی سے آ کر اپنی کار میں بیٹھ گئے۔ سیٹھ جی ان کا منھ تاکتے رہ گئے۔

(۳)

"اس سمے تمہیں اچانک کیا ہو گیا، امّو؟" کرشنن نے پوچھا۔

"کچھ نہیں، یونہی....." امّو نے بات ٹالنی چاہی۔

"نہیں، یونہی کیسے ہو سکتا ہے؟ میں دیکھ رہا ہوں، کہ تم تبھی سے بہت اداس ہو گئی ہو۔ کوئی گوڑھ بات ضرور ہے۔ اگر تم نہ بتانا چاہو، تو....."

"نہیں، نہیں، ایسا نہ کہئے! بھلا آپ سے کوئی بات میں چھپا ہی کیسے سکتی ہوں؟" امّو نے سر ہلا کر کہا۔

"تو پھر کہہ ہی ڈالو۔ جب تک مجھے معلوم نہ ہو جائے گا....."

"یوں تو بات کچھ کہنے کے لائق نہیں ہے۔ پھر بھی جب آپ کو اس کے لئے اتنی پریشانی ہے، تو میں سنائے ہی دیتی ہوں۔" کہہ کر امّو نے آنکھیں موند لیں، جیسے وہ کوئی بیتی بات یاد کر رہی ہو۔ پھر کچھ دیر بعد بولی— "اس سمے میں یہی قریب..... سمجھ لیجئے کہ آٹھ سال کی تھی۔"

"اچھا!" کرشنن نے دھیان سے سنتے ہوئے کہا۔

"ایک شام کی بات ہے۔ میں اماں کے ساتھ اسکول سے لوٹی، تو میرے گھر کے سامنے کچھ لوگوں کی بھیڑ لگی تھی۔ ان کی آنکھیں خوشی سے چمک رہی تھیں۔ میں کچھ نہ سمجھ سکی اور آنکھیں جھپکاتی دوڑ

"इसकी क़ीमत भी तो आपको काफ़ी..."

"जी, काफ़ी ही नहीं," बीच ही में सेठजी बोल उठे—"भला आपको क्या अन्दाज़ा हो सकता है"

"जी, यही," बड़ी हिम्मत करके कृष्णन ने कहा—"साठ-सत्तर रुपये तो लगे ही होंगे."

"बस ?" मुस्करा कर सेठ जी ने कहा.

"जी मेरा तो यही..."

"अन्दाज़ा है, क्यों ?...अजी जनाब, इस सूटकेस के लिये मैंने पूरे दस हज़ार दिये हैं." हर शब्द पर ज़ोर देकर सेठ जी ने कहा. 'अरे बाप रे!' कृष्णन भौंचक सा अम्मू का मुंह ताकने लगा. लेकिन अम्मू की आँखों मे अचरज से ज़्यादा कुछ और भरा था.

"क्यों, आप लोगों को अचरज हो रहा है न ?...और अगर मैं आप लोगों से कहूं," सेठ जी ने गम्भीर हो कर कहा—"कि जब मैंने यह सूटकेस लिया, उसी वक़्त एक सज्जन ने एक पाव सत्तू पूरे सत्रह सौ में लिया, तब आप क्या ख़याल करेंगे ?"

"जी, मेरा दिमाग़ ख़राब हो जायगा....लेकिन आपने यह लिया कहां से ?" अचरज में डूबा हुआ कृष्णन बोला. अम्मू की आंखों की उत्सुकता का रंग और गहरा हो गया. वह आंखें फैलाये सेठ जी की ओर कुछ उतावली सी देखने लगी. सेठ जी का चेहरा और भी गम्भीर हो गया. उन्होने धीरे धीरे कहा—"आप सोचते होंगे कि मैंने यह सूटकेस इतने दामों पर किसी दूकान से ख़रीदने की बेवकूफ़ी की होगी मगर ऐसा नहीं. मैंने यह सूटकेस बापूजी से ख़रीदा था. यह भी आप कहिये कि मुझे इतने दामों पर भी..."

"اس کی قیمت بھی تو آپ کو کافی......"

"جی، کافی ہی نہیں،" بیچ ہی میں سیٹھ جی بول اٹھے— "بھلا آپ کا کیا اندازہ ہو سکتا ہے"

"جی، یہی،" بڑی ہمت کر کے کرشنن نے کہا— "ساٹھ ستر روپئے تو لگے ہی ہوں گے۔"

"بس ؟" مسکرا کر سیٹھ جی نے کہا۔

"جی میرا تو یہی....."

"اندازہ ہے، کیوں ؟ ..... اجی جناب، اس سوٹ کیس کے لئے میں نے پورے دس ہزار دئے ہیں۔" ہر شبد پر زور دے کر سیٹھ جی نے کہا۔ 'ارے باپ رے!' کرشنن بھونچک سا اَمّو کا منہ تاکنے لگا۔ لیکن اَمّو کی آنکھوں میں اچرج سے زیادہ کچھ اور بھرا تھا۔

"کیوں، آپ لوگوں کو اچرج ہو رہا ہے نا ؟..... اور اگر میں آپ لوگوں سے کہوں،" سیٹھ جی نے گمبھیر ہو کر کہا— "کہ جب میں نے یہ سوٹ کیس لیا، اسی وقت ایک سجن نے ایک پاؤ ستّو پورے سترہ سو میں لیا، تب آپ کیا خیال کریں گے ؟"

"جی، میرا دماغ خراب ہو جائے گا...... لیکن آپ نے یہ لیا کہاں سے ؟" اچرج میں ڈوبا ہوا کرشنن بولا۔ اَمّو کی آنکھوں کی اُتسکتا کا رنگ اور گہرا ہو گیا۔ وہ آنکھیں پھیلائے سیٹھ جی کی اُور کچھ اُتاولی سی دیکھنے لگی۔ سیٹھ جی کا چہرا اور بھی گمبھیر ہو گیا۔ انھوں نے دھیرے دھیرے کہا— "آپ سوچتے ہوں گے کہ میں نے یہ سوٹ کیس اتنے داموں پر کسی دکان سے خریدنے کی بیوقوفی کی ہوگی مگر ایسا نہیں۔ میں نے یہ سوٹ کیس باپو جی سے خریدا تھا۔ وہ بھی بھاگیہ کہئے کہ مجھے اتنے داموں پر بھی....."

"हाँ, हाँ," खुश हो कर सेठजी ने कहा.

"यह उन्हीं की पोती हैं."

"अच्छा!" सेठजी की आँखे अम्मू की ओर उठ कर चमक उठी. अम्मू उठ कर बैठक मे इधर-उधर टंगी बेशकीमत तस्वीरें देखने लगी.

"अच्छा, तो मेरे लायक कोई सेवा?" सेठजी ने कहा.

"जी?" कृष्णन कुछ पसोपेश मे पड़ गया और जवाब देने के लिये उसने अम्मू की तरफ आँखे उठाईं.

तभी अम्मू पुकार उठी—"ज़रा इधर आइये!"

वह सेठजी से माफी माँग अम्मू के पास पहुंचा अम्मू की उंगलियाँ कोने मे रखे हुए एक सूटकेस पर थिरक रही थीं. कृष्णन को याद आया, कि यह वही सूटकेस है, जिसे उस दिन उसने स्टेशन पर देखा था. उसने कहा—"क्या है, अम्मू?"

"देखिये!" अम्मू ने धीरे से कहा.

"उम्दा है" कृष्णन ने कहा.

"ज़रा सेठजी से पूछिये कि उन्होने यह कहाँ से लिया?" अम्मू ने सेठजी की ओर देखते हुए कहा.

दोनों को सूटकेस के पास देख कर सेठजी का चेहरा दमक उठा. सेठजी के पास आकर कृष्णन ने कहा—"अम्मू को आपका वह सूटकेस बहुत पसन्द आया."

"वह चीज़ ही ऐसी है, साहब! शायद ही कोई ऐसा हो, जो इस कमरे में आये, और सूटकेस की तरफ न खिंचे." सेठजी ने आँखों से खुशी छलकाते हुए कहा.

"ہاں، ہاں،" خوش ہو کر سیٹھ جی نے کہا.

"یہ انھیں کی پوتی ہیں."

"اچھا!" سیٹھ جی کی آنکھیں اَمّو کی اور اٹھ کر چمک اٹھیں. اَمّو اٹھ کر بیٹھک میں ادھر اُدھر ٹنگی بیش قیمت تصویریں دیکھنے لگی.

"اچھا، تو میرے لائق کوئی سیوا؟" سیٹھ جی نے کہا!

"جی؟" کرشنن کچھ پس و پیش میں پڑ گیا اور جواب دینے کے لئے اس نے اَمّو کی طرف آنکھیں اٹھائیں.

تبھی اَمّو پکار اُٹھی — "ذرا ادھر آیئے!"

وہ سیٹھ جی سے معافی مانگ اَمّو کے پاس پہنچا، اَمّو کی انگلیاں کونے میں رکھے ہوئے ایک سوٹ کیس پر تھرک رہی تھیں. کرشنن کو یاد آیا کہ یہ وہی سوٹ کیس ہے، جسے اس دن اس نے اسٹیشن پر دیکھا تھا. اس نے کہا "کیا ہے. اَمّو؟"

"دیکھئے!" اَمّو نے دھیرے سے کہا.

"عمدہ ہے،" کرشنن نے کہا.

"ذرا سیٹھ جی سے پوچھئے کہ انھوں نے یہ کہاں سے لیا؟" اَمّو نے سیٹھ جی کی اُور دیکھتے ہوئے کہا.

دونوں کو سوٹ کیس کے پاس دیکھ کر سیٹھ جی کا چہرہ دمک اٹھا. سیٹھ جی کے پاس آکر کرشنن نے کہا — "اَمّو کو آپ کا وہ سوٹ کیس بہت پسند آیا."

"وہ چیز ہی ایسی ہے، صاحب! شاید ہی کوئی ایسا ہو. جو اس کمرے میں آئے، اور سوٹ کیس کی طرف نہ کھنچے." سیٹھ جی نے آنکھوں سے خوشی چھلکاتے ہوئے کہا.

"अरे, उस सूटकेस मे कुछ है भी, या अदद ही शुमार किये जाते हो?" टोपी को सर पर ठीक करते हुए बाबूजी बोले.

कुली ने सूटकेस उठाकर देखा, तो सचमुच वह खाली था. उसे अपनी नादानी पर कुछ झेंप सी आ गई वह आँखें झपकाता बोला.

"अच्छा, बाबूजी, छै आने ही दीजियेगा"

"अच्छा, चल उठा. बिस्तर और यह बकस तू ले. यह सूटकेस मैं खुद ले चलूंगा." कह कर बाबूजी ने वह सूटकेस उठा लिया.

अब कहीं अम्मू की आँखों का सपना टूटा. उसकी उठी पलकें झुक गईं. उसने ब्लाउज़ की आस्तीन से रूमाल निकाल कर भीगी आँखे पोछीं. फिर कृष्णन की ओर देख कर कहा—"वह आये?"

"नहीं," कृष्णन ने जवाब दिया.

"अच्छा, सुनिये! ज़रा . देखिये न वह... वह जो सूटकेस लटकाये जा रहे हैं न! उनका पता मालूम कर लीजिये!" अम्मू ने कहा.

कृष्णन उधर लपका, तो अम्मू भी होंठ चबाती न जाने क्या सोचती उसके पीछे हो ली.

(२)

"आइये, आइये! बैठिये!" सेठ जी ने सामने कोचों की ओर इशारा कर के कहा.

कृष्णन और अम्मू बैठ गये, तो सेठजी ने कहा—"आप..."

"जी मेरा नाम कृष्णन है. यहाँ सेक्रेटैरियेट में काम करता हूँ. और यह मेरी पत्नी हैं. आप डाक्टर राजन को जानते हैं न?"

"ارے، اس سوٹ کیس میں کچھ ہے بھی، یا عدد ہی شمار کئے جاتے ہو؟" ٹوپی کو سر پر ٹھیک کرتے ہوئے بابو جی بولے.

قلی نے سوٹ کیس اٹھا کر دیکھا، تو سچ مچ وہ خالی تھا. اُسے اپنی نادانی پر کچھ جھینپ سی آ گئی. وہ آنکھیں جھپکاتا بولا.

"اچھا، بابو جی، چھ آنے ہی دیجئے گا."

"اچھا، چل اُٹھا. بستر اور بکس تو لے. یہ سوٹ کیس میں خود لے چلوں گا." کہہ کر بابو جی نے وہ سوٹ کیس اٹھا لیا.

اب کہیں اَمّو کی آنکھوں کا سپنا ٹوٹا. اس کی اُٹھی پلکیں جھک گئیں. اس نے بلاؤز کی آستین سے رومال نکال کر بھیگی آنکھیں پونچھیں. پھر کرشنن کی اور دیکھ کر کہا—"وہ آئے؟"

"نہیں،" کرشنن نے جواب دیا.

"اچھا، سنئے! ذرا...... دیکھئے نا وہ........ وہ جو سوٹ کیس لٹکائے جا رہے ہیں نا! اُن کا پتہ معلوم کر لیجئے!" اَمّو نے کہا

کرشنن ادھر لپکا، تو اَمّو بھی ہونٹ چباتی نہ جانے کیا سوچتی اس کے پیچھے ہو لی.

(۲)

"آئیے، آئیے! بیٹھئے!" سیٹھ جی نے سامنے کوچوں کی اور اشارہ کر کے کہا.

کرشنن اور اَمّو بیٹھ گئے، تو سیٹھ جی نے کہا—"آپ....."

"جی میرا نام کرشنن ہے. یہاں سکریٹریٹ میں کام کرتا ہوں. اور یہ میری پتنی ہیں. آپ ڈاکٹر راجن کو جانتے ہیں نا؟"

सूटकेस

(बहन राजरानी)

" अम्मू " पुकारता हुआ कृष्णन आगे बढ़ा.

'उफ, अजीब है यह अम्मू भी ! कितना मना करके गया कि यहाँ से न हटना, लेकिन अम्मू जो ठहरी ! न जाने मुझे परेशान करने में उसे कौन सा मजा मिलता है ? इस भीड़-भाड़ में उसे कहाँ-कहाँ खोजता फिरूँ ? ' अपने मे ही बुदबुदाता कुछ झुँझला-सा गया कृष्णन. अचानक पुल के पास वह खड़ी नजर आ गई. लपक कर वह उसके पास गया और उस से बोला—" मालूम होता है वह नहीं आये " लेकिन अम्मू का सारा ध्यान उसकी घूरती आँखों से निकल कर एक पड़े हुए सूटकेस पर ठहर गया था.

" अम्मू ! " उसकी तवज्जह अपनी ओर करने के लिये कृष्णन जरा जोर से बोला.

मगर खोई हुई अम्मू खोई ही रही. कृष्णन उसे यों ताकता रहा जैसे उसकी समझ में न आ रहा हो कि वह क्या करे.

" बाबूजी, दस आने पैसे होंगे."

" अरे, सामान भी देखता है, या पैसे ही गिनना जानता है ? " माथे की गांधी टोपी उतार, रूमाल से झाड़ते हुए बोले बाबूजी.

" दो इतने बड़े-बड़े बकस, एक इतना बड़ा बिस्तर, बाबूजी, तीन अदद के क्या दस आने भी नहीं मिलेंगे ? "

سوٹ کیس

(بہن راج رانی)

" اَمّو " پکارتا ہوا کرشن آگے بڑھا.

'اُف، عجیب ہے یہ اَمّو بھی ! کتنا منع کر کے گیا تھا کہ یہاں سے نہ ہٹنا، لیکن اَمّو جو ٹھہری ! نہ جانے مجھے پریشان کرنے میں اُسے کون سا مزا ملتا ہے؟ اس بھیڑ بھاڑ میں اُسے کہاں کہاں کھوجتا پھروں ؟' اپنے میں ہی بُدبُداتا کچھ جھنجھلا سا گیا کرشن . اچانک پُل کے پاس وہ کھڑی نظر آ گئی . لپک کر وہ اس کے پاس گیا اور اس سے بولا " معلوم ہوتا ہے وہ نہیں آئے " لیکن اَمّو کا سارا دھیان اس کی گھورتی آنکھوں سے نکل کر ایک پڑے ہوئے سوٹ کیس پر ٹھہر گیا تھا .

" اَمّو ! " اُس کی توجہ اپنی اُور کرنے کے لئے کرشن ذرا زور سے بولا .

مگر کھوئی ہوئی اَمّو کھوئی ہی رہی . کرشن اُسے یوں تاکتا رہا جیسے اس کی سمجھ میں نہ آ رہا ہو کہ وہ کیا کرے .

" بابوجی ، دس آنے پیسے ہوں گے "

" ارے ، سامان بھی دیکھتا ہے ، یا پیسے ہی گننا جانتا ہے ؟ " ماتھے کی گاندھی ٹوپی اُتار ، رومال سے جھاڑتے ہوئے بولے بابوجی .

" دو اتنے بڑے بڑے بکس ، ایک اتنا بڑا بستر . بابوجی ، تین عدد کے کیا دس آنے بھی نہیں ملینگے ؟ "

हिन्द वासी

(भाई विकार खलील शाहपुरी)

हिन्दोस्तान आओ पहला तुम्हे दिखाये
इन हिन्द वासियो का कुछ माजरा सुनाये

हिन्दू भी और मुसलमां कैसे मिले जुले थे
मालूम होते आपस मे यह सदा भले थे

आपस मे भाई भाई बनकर सदा विचरते*
जान इनपे वारते वह यह उनपे दिल से मरते

जब साथ में कभी यह बाहर सफर को जाते
भाई पने का नक्शा हर जा पे थे दिखाते.

जब राह मे कही यह पनघट पे बैठ जाते
वह हाथ पैर धोते और यह वज़ू बनाते

वह ध्यान मे मगन है सजदे मे यह झुके है
दो शक्ल से यह गोया पूजा मे अब लगे है.

आपस मे दोनो मिलकर खाते खिलाते चलते
गोदी मे प्रेम देवी के थे सदा टहलते

आपस मे पासबा थे यह देशबन्धु दोनो
लहरो मे बस मगन थे यह प्रेम सिन्धु दोनो

आपस मे दोनों हरदम हम साया बन के रहते
वह इनपे नाज़ करते यह उनके नाज़ सहते

थे जानने से कासिर आपस की यह लड़ाई
थे एक दूसरे की करते सदा भलाई

* रहते बसते

هند واسي

(بهائي وقار خليل شاه پوری)

هنـــدوســـتان آؤ پهلا تمهیں دکهـــائیں
ان هند واسیوں کا کچھ مـــاجرا ســـنائیں

هنـــدو بهـــی اور مسلماں کیسے ملے جلے تھے
معلـــوم هوتے آپســـں میں یہ سدا بهلے تھے

آپس میں بهائی بهائی بنکر ســـدا *بچرتے
جـــان ان پہ وارتے وہ یہ اُن پہ دل سے مرتے

جب ساتھ میں کبھی یہ باهر سفر کو جاتے
بهـــائی پنے کا نقشہ هر جـــا پہ تھے دکھاتے

جب راہ میں کہیں یہ پنگھٹ پہ بیٹھ جاتے
وہ هـــاتھ پیـــر دهـــوتے اور یہ وضـــو بناتے

وہ دهیان میں مگن هیں سجدے میں یہ جھکے هیں
دو شکل سے یہ گویا پوجا میں اب لگے هیں

آپس میں دونوں مل کر کھاتے کھلاتے چلتے
گودي میں پریم دیـــوی کے تھے ســـدا ٹہلتے

آپس میں پاسباں تھے یہ دیش بندهو دونوں
لہروں میں بس مگن تھے یہ پریم سندهودونوں

آپس میں دونوں هـــردم هـــم سایہ بن کے رهتے
وہ اِن پہ ناز کـــرتے یہ اُن کے نـــاز سهتے

تھے جـــاننے سے قـــاصر آپس کـــی یہ لڑائي
تھے ایک دوســـرے کـــي کـــرتے سدا بهلائي

* رهتے بستے –

यह महात्मा की आत्मा बुलन्द हो जाने का महीना है और सन्सार के झंडे झुक जाने का.

यह अहिंसा का ख़ून मे नहाने का महीना है और महात्मा का आग मे जल जाने का.

यह फिरक़ा कवारों के घर घर घी के चिराग जलाने का महीना है और मिठाई बताशे बाटने का

यह फिरकावारो की पकड धकड़ का महीना है और कातिल की गिरफतारी का

यह हिन्दुस्तान के दुर्भाग्य का महीना है और राजघाट पर कौमी मिलाप का

यह हिन्द पर गम के बादल छा जाने का महीना है और फिज़ा का शोक स देश बरसाने का

यह बूढे बाप की जवान उम्मीदो का महीना है और जवान उम्मीदों के खून होने का

यह गीता और कुरान के प्रेमी की जान जाने का महीना है और "प्रार्थना" बन्द हो जाने का

यह साज़िश का पर्दा चाक हो जाने का महीना है और हिन्दू मुस्लिम फ़साद रुक जाने का

यह बापू के "नये विधान" के जन्म लेने का महीना है और बापू के जीवन खत्म होने का.

प्रथम यह सदेश और पैगाम का महीना है,
आखिर यह विधान और बलिदान का महीना है

—:०:—

یه مھاتما کی آتما بلند ھوجانے کا مھینه ھے اور سنسار کے جھنڈے جھک جانے کا.

یه اھنسا کا خون میں نہانے کا مھینه ھے اور مھاتما کا آگ میں جل جانے کا.

یه فرقه واروں کے گھر گھر گھی کے چراغ جلانے کا مھینه ھے اور مٹھائی بتاشے بانٹنے کا

یه فرقه واروں کی پکڑ دھکڑ کا مھینه ھے اور قاتل کی گرفتاری کا

یه ھندستان کے درںھاگیه کا مھینه ھے اور راج گھاٹ پر قومی ملاپ کا.

یه ھند پر غم کے بادل چھا جانے کا مھینه ھے اور فضا کا شوک سندیش برسانے کا.

یه بوڑھے باپ کی جوان امیدوں کا مھینه ھے اور جوان امیدوں کے خون ھونے کا.

یه گیتا اور قرآن کے پریمی کی جان جانے کا مھینه ھے اور "پراتھنا" بند ھوجانے کا

یه سازش کا پردہ چاک ھو جانے کا مھینه ھے اور ھندو مسلم فساد رک جانے کا.

یه باپو کے "نئے ودھان" کے جنم لینے کا مھینه ھے اور باپو کے جیون ختم ھونے کا

پرتھم یه سندیش اور پیغام کا مھینه ھے.
آخر یه ودھان اور بلیدان کا مھینه ھے

विधान और बलिदान का महीना

(भाई अब्दुल हलीम असारी)

क्या जनवरी केवल सदेशो और पैगामो का ही महीना है ?

क्या खबर है ? यह और किन किन चीजों का महीना है

प्रथम यह जीवन पर रोशनी डालने का महीना है और उत्तम भविष्य की खबर सुनाने वाला.

शान्ति का सदेसा लाने वाला भी, क्रान्ति का पैगाम देने वाला भी.

भूत काल को पीछे छोडकर, वर्त्तमान काल मे कदम रखने वाला, और भविष्य काल का प्रोग्राम लाने वाला

और याद रहे कि यह जनवरी का महीना :

एक प्रेम-पुजारी पर गालो की आवाजो का महीना है और बहुत से सियासी राजो का.

यह साम्प्रदायिक साजिश का महीना है और क़ौमी काविश का.

यह धार्मिक अदावत का महीना है और राष्ट्रीय बगावत का

यह इन्तक़ाम की तलवार बेनयाम होने का महीना है और जालिम के वार का.

यह क्रोध और विरोध की आग भड़कने का महीना है और सन्तोष की छाती फट जाने का.

यह क़ौम के बाप पर चोट का महीना है और बेटे के हाथ से बाप की मौत क .

यह महात्मा के आख़री बार 'राम-राम' कहने का महीना है और फिर स्थायी (दायमी) आराम फ़रमाने का.

ودھان اَور بلیدان کا مہینہ

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

کیا جنوری کیول سندیسوں اَور پیغاموں کا ہی مہینہ ہے ؟

کیا خبر ہے ؟ یہ اور کن کن چیزوں کا مہینہ ہے –

پرتھم یہ جیون پر روشنی ڈالنے کا مہینہ ہے اور اُتم بھوشیہ کی خبر سنانے والا .

شانتی کا سندیسہ لانے والا بھی، کرانتی کا پیغام دینے والا بھی.

بھوت کال کو پیچھے چھوڑ کر وردمان کال میں قدم رکھنے والا اور بھوشیہ کال کا پروگرام لانے والا .

اَور یاد رہے کہ یہ جنوری کا مہینہ :

ایک پریم پجاری پر گولی کی آوازوں کا مہینہ ہے اَور بہت سے سیاسی رازوں کا .

یہ سامپردایک سازش کا مہینہ ہے اَور قومی کاوش کا.

یہ دھارمک عداوت کا مہینہ ہے اَور راشٹریہ بغاوت کا .

یہ انتقام کی تلوار بے نیام ہونے کا مہینہ ہے اَور ظالم کے وار کا.

یہ کرودھ اَور وِرودھ کی آگ بھڑکنے کا مہینہ ہے اَور سنتوس کی چھاتی پھٹ جانے کا .

یہ قوم کے باپ پر چوٹ کا مہینہ ہے . اور بیٹے کے ہاتھ سے باپ کی موت کا .

یہ مہاتما کے آخری بار "رام رام" کہنے کا مہینہ ہے اَور پھر ستھائی (دائمی) آرام فرمانے کا

वर्मा और दुर्जनो हिन्दी के बड़े लेखक हिन्दी जानते हैं, अंग्रेजी जानते है लेकिन यह भी लहक और हुमक उनके दिल मे उठती है कि वह उर्दू भी सीख ले तो कितना अच्छा हो. मारिये उनको, रोकिये रोकिये, ऐसा होने न दीजिये. तीन टिकट महा बिकट. मैं हिन्दी प्रेमियो से पूछता हूँ कि क्या आप यह चाहते है कि चाहे सूरज पच्छिम से उगे लेकिन हमारे स्कूलो, कालिजो से हिन्दी अंग्रेजी उर्दू तीनो साहित्य के ज्ञानी पैदा न हो ?

पञ्जाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गाधी की सलाह से अक्तूबर सन '४७ मे पच्छिमी और पूर्वी पजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान मे उन्होने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगो को भुगतने पड रहे है उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है आखीर मे आजकल की मुसीबतो को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये है. हमे विश्वास है कि पजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने मे इस बयान से बडी मदद मिलेगी

किताब उर्दू और नागरी दोनो लिखावटो मे मिल सकती है, क़ीमत चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द'
४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद.

ورما اور درجنوں ہندی کے بڑے لیکھک ہندی جانتے ہیں' انگریزی جانتے ہیں لیکن یہ بھی لہک اور ہمک ان کے دل میں اٹھتی ہے کہ وہ اردو بھی سیکھ لیں تو کتنا اچھا ہو۔ ماریئے ان کو – روکئے روکئے' ایسا ہونے نہ دیجئے – تین ٹکٹ مہا بکٹ ۔ میں ہندی پریمیوں سے پوچھتا ہوں کہ کیا آپ یہ چاہتے ہیں کہ چاہے سورج پچھم سے اگے لیکن ہمارے اسکولوں کالجوں سے ہندی انگریزی اردو تینوں ساہتیہ کے گیانی پیدا نہ ہوں ؟

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے ' مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سنہ ۱۹۴۷ء میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورا کیا تھا اِس چھوٹے سے بیان میں انہوں نے وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں اُن کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے آخیر میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کیلئے ' کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں ۔ ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اِس بیان سے بڑی مدد ملے گی

کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے قیمت چار آنہ ۔

'نیا ہند'
۴۸ ' بائی کا باغ ' اِلہ آباد ۔

के लिये रोटी या जीने मरने का सवाल बना चुकने के बाद भी, आप का पेट नही भरा तो आप उर्दू से (नागरी लिपि मे भी उर्दू से) इतना डरते क्यो है ? सौ फीसदा के लिये हिन्दी लाज़मी बना चुकने के बाद पन्द्रह बीस फी सदी लड़के लड़कियो के लिये उर्दू भी सीखने का इन्तज़ाम करते हुए, उर्दू सीखने की इजाज़त देते हुए आप इतना घबराते और डरते क्यों हैं ? हिन्दी सब पर लाज़मी कर के आप यह बेईमानी क्यो कर रहे है कि अगर उर्दू भी सीखोगे तो हम तुम्हे स्कूल मे अंग्रेज़ी पढ़ने न देंगे ? मै हिन्दी प्रेमियो से पूछता हूँ कि इस बात को नामुमकिन बना देना कि आज़ाद भारत के स्कूलो और कालिजो मे कोई हिन्दी के साथ साथ उर्दू और अंग्रेज़ी भी सीख सके राम राज है या रावन राज. एक साहित्य के प्रेमी होकर दूसरे साहित्य से इतना डरना, इतना घबराना, इतना कांपना एक ऐसी बुज़दिली है जिसकी मिसाल आप ही बताइये हम कहां ढूंडे ? आप के स्कूलो मे हम सब कुछ सीख सकते है लेकिन उर्दू अंग्रेज़ी भी हिन्दी के साथ साथ नही सीख सकते ? क्या आप चाहते हैं कि प्रेमचन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, बाल मुकुन्द गुप्त, आर्य समाज और सनातन धर्म के अनगिनत प्रचारक, राय देवी प्रसाद पूर्ण, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, श्री पद्मसिंह शर्मा, श्री रामविलास शर्मा, बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन, डाक्टर बाबू राम सक्सेना, श्री अज़ीम बेग चग़ताई, पंडित सुन्दर लाल जी, आचार्य नरेन्द्र देव और पंडित मदन मोहन मालवीय ऐसे आदमी अब देश मे पैदा न होने पायें क्योकि यह लोग हिन्दी उर्दू और अंग्रेज़ी तीनो भाषायें जानते हैं ? श्री सुमित्रा नन्दन पन्त, श्री बच्चन जी, श्री राम कुमार

کے لئے روٹی یا جینے مرنے کا سوال بنا چکنے کے بعد بھی آپ کا پیٹ نہیں بھرا تو آپ اردو سے (ناگری لپی میں بھی اردو سے) اتنا ڈرتے کیوں ھیں ؟ سو فیصدی کے لئے هندی لازمی بنا چکنے کے بعد پندرہ بیس فی صدی لڑکے لڑکیوں کے لئے اردو بھی سیکھنے کا انتظام کرتے ھوئے، اردو سیکھنے کی اجازت دیتے ھوئے آپ اتنا گھبراتے اور ڈرتے کیوں ھیں ؟ هندی سب پر لازمی کرکے آپ یہ بے ایمانی کیوں کر رھے ھیں کہ اگر اردو بھی سیکھو گے تو ھم تمھیں اسکول میں انگریزی پڑھنے نہ دیں گے ؟ میں هندی پریمیوں سے پوچھتا ھوں کہ اس بات کو ناممکن بنا دینا کہ آزاد بھارت کے اسکولوں اور کالجوں میں کوئی هندی کے ساتھہ ساتھہ اردو اور انگریزی بھی سیکھہ سکے رام راج ھے یا راون راج ؟ ایک ساھتیہ کے پریمی ھوکر دوسرے ساھتیہ سے اتنا ڈرنا اتنا گھبرانا، اتنا کانپنا ایک ایسی بزدلی ھے جس کی مثال آپ ھی بتائیے ھم کہاں ڈھونڈیں ؟ آپکے اسکولوں میں ھم سب کچھہ سیکھہ سکتے ھیں لیکن اردو انگریزی بھی هندی کے ساتھہ ساتھہ نہیں سیکھہ سکتے؟ کیا آپ چاھتے ھیں کہ پریم چند، سوامی شردھا نند، لالہ لاجپت رائے، بالمکند گپت آریہ سماج اور سناتن دھرم کے ان گنت پر چارک، رائے دیبی پرساد پورن، بابو راجندر پرساد، شری پدم سنگھہ شرما، شری رام بلاس شرما، بابو پرشوتم داس ٹنڈن، ڈاکٹر بابو رام سکسینا، شری عظیم بیگ چغتائی، پنڈت سندر لال جی، آچاریہ نریندر دیو اور پنڈت مدن موھن مالوی ایسے آدمی اب دیش میں پیدا نہ ھونے پائیں کیوں کہ یہ لوگ هندی، اردو اور انگریزی تینوں بھاشائیں جانتے ھیں ؟ شری سمترا نندن پنت، شری بچن جی شری رام کمار

सिजल उर्दू नागरी हर्फों में भी न पढ़ा कर, ऐसी उर्दू को कोर्स में न शामिल करके अपने बाल बच्चो को गॅवार तो न बनाओ . पंडित बन कर भी तो गॅवार रहेंगे हमारे बच्चे अगर खड़ी बोली हिन्दी का वह निखार उन्होने नही देखा जो उर्दू ही मे मिलती है. हिन्दी प्रेमियो से यह पूछूॅ कि न पूछूॅ कि भैया मेरी बात, मेरे प्रस्ताव में हिन्दी का कल्यान है या नही ? क्या उर्दू से डर कर उसकी परछाईं तक न पड़ने देना हिन्दी की सेवा है ? गॅवरपन का सैलाब आ चला है. उर्दू से जाहिल बना कर हम जैसे पढ़ने वाले ऊॅचे दर्जो में भेज रहे हैं उन का गॅवरपन देख कर, उनकी फूहड़ बोली सुन कर हिन्दी के समझदार पढाने वाले घबरा जाते है. हिन्दी बोलना क्या प्रसाद, पन्त, निराला या मैथिली शरण गुप्त हमारे बच्चो को सिखा सकते है ? उनकी रचनाओं को हिन्दी बोल चाल से, टकसाली हिन्दी से क्या वास्ता. यह हिन्दी तो उर्दू ही शायर हिन्दी पढ़ने वाले बच्चो को सिखा सकते हैं क्योंकि उनकी रचनाओं में साँचे मे ढली हुई खडी बोली हमे मिलती है—मिसालें आप के सामने हैं क्या आप सोच समझ कर कुछ फैसला करेंगे या अपने झूटे डर को अकड़, नफरत, गुस्से, छूत छात और जबरदस्ती के पर्दे में छिपाते रहेंगे. रखिये उर्दू से बच्चो को जाहिल और बनाइये उन्हें गॅवार और गूंगा.

मैं हिन्दी प्रेमियों से पूछता हूं कि अगर, आप जिसे हिन्दी भाषा और साहित्य समझते हैं उसका जानना और पढ़ना और दफ्तर या सरकारी कामों में उसे बरतना या ब्योहार में लाना सब के लिये लाज़िमी बना चुकने के बाद भी, हिन्दी में इम्तेहान पास करना सब

سجل اُردو ناگری حرفوں میں بھی نہ پڑھاکر ، ایسی اُردو کو کورس میں نہ شامل کرکے اپنے بال بچوں کو گنوار تو نہ بناؤ ۔ پنڈت بنکر بھی تو گنوار رہیں گے ہمارے بچے اگر کھڑی بولی ہندی کا وہ نکھار انہوں نے نہیں دیکھا جو اُردو ہی میں ملتی ہے ۔ ہندی پریمیوں سے یہ پوچھوں کہ نہ پوچھوں کہ بھیا میری بات ، میرے پرستاؤ میں ہندی کا کلیان ہے یا نہیں ؟ کیا اُردو سے ڈر کر اس کی پرچھائیں تک نہ پڑنے دینا ہندی کی سیوا ہے ۔ گنورپن کا سیلاب آچلا ہے ۔ اُردو سے جاہل بناکر ہم جیسے پڑھنے والے اونچے درجوں میں بھیج رہے ہیں ان کا گنورپن دیکھکر ، انکی پھوہڑ بولی سن کر ہندی کے سمجھدار پڑھانے والے گھبرا جاتے ہیں ۔ ہندی بولنا کیا پرسادم پنتم نرالا یا میتھلی شرن گپت ہمارے بچوں کو سکھا سکتے ہیں ؟ ان کی رچناؤں کو ہندی بول چال سے ' ٹکسالی ہندی سے کیا واسطہ ۔ یہ ہندی تو اُردو ہی شاعر ہندی پڑھنے والے بچوں کو سکھا سکتے ہیں کیونکہ ان کی رچناؤں میں سانچے میں ڈھلی ہوئی کھڑی بولی ہمیں ملتی ہے ۔ مثالیں آپ کے سامنے ہیں ۔ کیا آپ سوچ سمجھکر کچھ فیصلہ کریں گے یا اپنے جھوٹے ڈر کو اکڑ' نفرت 'غصے' چھوت چھات اور زبردستی کے پردے میں چھپاتے رہیں گے ۔ رکھئے اردو سے بچوں کو جاہل اور بنائیے انہیں گنوار اور گونگا ۔

میں ہندی پریمیوں سے پوچھتا ہوں کہ اگر آپ جسے ہندی بھاشا اور ساہتیہ سمجھتے ہیں اس کا جاننا اور پڑھنا اور دفتر یا سرکاری کاموں میں اسے برتنا یا بیوہار میں لانا سب کے لئے لازمی بنا چکنے کے بعد بھی' ہندی میں امتحان پاس کرنا سب

मतलब पूछना पड़े. अगर ग्यारह बारह सौ ऐसे शब्द आप साल दो साल मे सीखले तो उर्दू अदब (साहित्य) का एक बहुत थोड़ा सा हिस्सा छोड़ कर पूरा उर्दू अदब आपके लिये पानी हो जायगा.

मैं आपसे यह भी पूछता हूँ कि जिस तरह के नमूने आज आपके सामने आये अगर हिन्दी मे एफ० ए० या बी० ए० का पूरा कोर्स इसी तरह या इस से मिलती जुलती भाषा मे तैयार कर दिया जाय तो पढ़ने वालो को ज्यादा आसानी होगी या जैसी हिन्दी किताबे आजकल कोर्स मे है ? और हिन्दी किस तरह की किताबो से आयेगी ? खड़ी बोली का निखार कहाँ नजर आता है ? जिस तरह की हिन्दी इन मिसालों और नमूनो मे नज़र आती है वैसी ही मुहावरेदार हिन्दी लिखते हुए अगर हिन्दी के शायर मौक़े से कुछ संस्कृत शब्द इसी सफ़ाई से, इसी हलके फुलके अन्दाज़ से लाते जिस तरह ऊपर के नमूनो मे अरबी फ़ारसी शब्द आते हैं तो मैं उनके क़लम चूम लेता. लेकिन हुआ क्या, एफ० ए०, बी० ए०, एम० ए० में उर्दू लेने वाले तो अपनी किताबो का आनन्द उठाते हैं और उन्ही दर्जों मे हिन्दी लेने वाले घोटते और घोखते रहते हैं संस्कृत शब्दो के अर्थ.

बाबा, दोनो तरह की हिन्दी की रक्षा करो. शुरू ही से नागरी लिपि में ऐसा कोर्स बनाओ कि संस्कृत वाली हिन्दी और वह हिन्दी जिसे उर्दू कहते हो, दोनों सिखाई जाये. दोनो के नमूने एक ही किताब मे दो. ऐसा शुरू से एम० ए० तक के कोर्स में करदो. बहुत कठिन हिन्दी कोर्स मे शामिल करना चाहिते हो तो करो. बहुत कठिन उर्दू कोर्स मे शामिल न करना चाहो न करो. लेकिन नर्म और

مطلب پوچھنا پڑے. اگر گیارہ بارہ سو ایسے شبد آپ سال دو سال میں سیکھ لیں تو اُردو ادب (ساھتیہ) کا ایک بہت تھوڑا حصہ چھوڑ کر پورا اُردو ادب آپ کے لئے پانی ہوجائے گا ۔

میں آپ سے یہ بھی پوچھتا ہوں کہ جس طرح کے نمونے آج آپ کے سامنے آئے اگر هندی میں ایف ۔ اے یا بی ۔ اے کا پورا کورس اسی طرح یا اِس سے ملتی جلتی بھاشا میں تیار کردیا جائے تو پڑھنے والوں کو زیادہ آسانی ہوگی یا جیسی هندی کتابیں آج کل کورس میں ہیں ؟ اور هندی کس طرح کی کتابوں سے آئے گی ؟ کھڑی بولی کا نکھار کہاں نظر آتا ہے ؟ جس طرح کی هندی ان مثالوں اور نمونوں میں نظر آتی ہے ویسی ہی محاورےدار هندی لکھتے ہوئے اگر هندی کے شاعر موقع سے کچھ سنسکرت شبد اسی صفائی سے، اسی ہلکے پھلکے انداز سے لاتے جس طرح اوپر کے نمونوں میں عربی فارسی شبد آئے ہیں تو میں ان کے قلم چوم لیتا ۔ لیکن ہوا کیا ۔ ایف ۔ اے، بی ۔ اے، ایم ۔ اے، میں اُردو لینے والے تو اپنی کتابوں کا آنند اُٹھاتے ہیں اور انہیں درجوں میں هندی لینے والے گھوٹتے اور گھوکھتے رہتے ہیں سنسکرت شبدوں کے ارتھ ۔

بابا، دونوں طرح کی هندی کی رکشا کرو ۔ شروع ہی سے ناگری لپی میں ایسا کورس بناؤ کہ سنسکرت والی هندی اور وہ هندی جسے اُردو کہتے ہو، دونوں سکھائی جائیں ۔ دونوں کے نمونے ایک ہی کتاب میں دو ۔ ایسا شروع سے ایم ۔ اے تک کے کورس میں کردو ۔ بہت کٹھن هندی کورس میں شامل کرنا چاہتے ہو تو کرو ۔ بہت کٹھن اُردو کورس میں شامل نہ کرنا چاہو نہ کرو لیکن نرم اور

कहते तो इतने ही रचे हुए भाव और विचार प्रकट करने वाले नमूने पिछले सौ बरस की हिन्दी शायरी से ढूँढ लाइये जिनमे ढाई हज़ार शब्द इसी सजावट से आये हो और जिनमे एक डेढ़ फीसदी ही ऐसे शब्द आये हो जिन्हे पूछना पड़े पूछूँ कि न पूछूँ ? आप जैसा कहे

पचीस सौ शब्दो के इन नमूनो मे चौबीस सौ के लगभग शुद्ध हिन्दी शब्द आये है हिन्दी कविता जैसी सौ बरस या पचास बरस से लिखी जा रही है उस से ढाई हज़ार शब्दो के दस बीस पचास नमूने निकालिये तो जिनमे चौबीस सौ शब्द शुद्ध हिन्दी के हो. हिन्दी कौन लिख रहा है ? हिन्दी वाले या उर्दू वाले ? क्या आपका यही हिन्दी प्रेम है कि जिस साहित्य मे पचानवे फीसदी सुन्दर और शुद्ध हिन्दी हो उसे मिटा कर उस हिन्दी को फैलायें और रिवाज दे जिसमे साठ सत्तर फीसदी शुद्ध हिन्दी है और पाँच फी सदी भी सुन्दर हिन्दी नही ?

१८०

कभी आप यह सोच सके कि उर्दू वालो ने खड़ी बोली हिन्दी टकसाली हिन्दी मे कितना महान साहित्य आपको दिया है और आपकी मातृ भाषा की कितनी बडी सेवा की है ? मै फिर कहता हूँ कि लाखो सफे उर्दू शायरी और नस्र (गद्य) के इसी नर्म भाषा मे है जिसके नमूने मै आप को दिखा चुका हूँ मानता हूँ कि कठिन अरबी फारसी शब्द भी उर्दू वाले लाते है लेकिन निन्नानवे फीसदी उर्दू पढ़ने वालो मे उर्दू साहित्य का यह हिस्सा समझा नहीं जाता फिर भी उन कठिन फारसी अरबी शब्दो की संख्या भी बहुत ज्यादा नहीं है. अगर आप घबरा के और हड़बड़ा के हिसाब न लगायें. आज के नमूनों या मिसालों में बीस बाइस ऐसे शब्द मिले जिनका

کہئے تو اتنے ہی رچے ہوئے بھاؤ اور وچار پرگٹ کرنے والے نمونے پچھلے سو برس کی ہندی شاعری سے ڈھونڈھ لائیے جن میں ڈھائی ہزار شبد اسی سجاوٹ سے آئے ہوں اور جن میں ایک ڈیڑھ فی صدی ہی ایسے شبد آئے ہوں جنہیں پوچھنا پڑے - پوچھوں کہ نہ پوچھوں ؟ آپ جیسا کہیں -

پچیس سو شبدوں کے ان نمونوں میں چوبیس سو کے لگ بھگ شدھ ہندی شبد آئے ہیں - ہندی کویتا جیسی سو برس یا پچاس برس سے لکھی جا رہی ہے اس سے ڈھائی ہزار شبدوں کے دس بیس پچاس نمونے نکالئے تو جن میں چوبیس سو شبد شدھ ہندی کے ہوں - ہندی کون لکھ رہا ہے ؟ ہندی والے یا اُردو والے ؟ کیا آپ کا یہی ہندی پریم ہے کہ جس ساہتیہ میں پچانوے فی صدی سندر اور شدھ ہندی ہو اُسے مٹاکر اس ہندی کو پھیلائیں اور رواج دیں جس میں ساٹھ ستر فی صدی شدھ ہندی ہے اور پانچ فی صدی بھی سندر ہندی نہیں ؟

کبھی آپ یہ سوچ سکے کہ اُردو والوں نے کھڑی بولی ہندی، ٹکسالی ہندی میں کتنا مہان ساہتیہ آپ کو دیا ہے اور آپ کی ماتری بھاشا کی کتنی بڑی سیوا کی ہے ؟ میں پھر کہتا ہوں کہ لاکھوں صفحے اُردو شاعری اور نثر (گدیہ) کے اُسی نرم بھاشا میں ہیں جس کے نمونے میں آپ کو دکھا چکا ہوں - مانتا ہوں کہ کٹھن عربی فارسی شبد بھی اُردو والے لاتے ہیں لیکن ننانوے فی صدی اُردو پڑھنے والوں میں اُردو ساہتیہ کا یہ حصہ سمجھا نہیں جاتا۔ پھر بھی اُن کٹھن فارسی عربی شبدوں کی سنکھیا بھی بہت زیادہ نہیں ہے، اگر آپ گھبرا کے اور ہڑ بڑا کے حساب نہ لگائیں۔ آج کے نمونوں یا مثالوں میں بیس بائیس ایسے شبد ملے جن کا

रो के हमारा नाम जो लेगा दिलके दर्द से काम जो लेगा
टूट पड़ेंगे अर्श से तारे उठ मेरे काली कमली वाले
(खुदा हज़रत मुहम्मद को नमाज के लिये जगा रहा है) शाद

ऊपर ६० नमूने पेश किये गये है इन मे लगभग पचीस सौ शब्द हैं और दो सौ से ऊपर मिसरे (पंक्तियाँ) है. यह सब बाते ध्यान मे रखते जाइये अब इनमे वह शब्द कौन है जो अनपढ़ आदमी नही जानते ? वह शब्द यह है :—

(१) कोहकन (पहाड़खोदने वाला. फरहाद. (जिसने अपनी प्रेमिका शीरीं के लिये पहाड़ खोदकर नहर निकाली थी) (२), समन्द (घोडा), (३) अरजुमन्द (माननीय या सम्मानित). (४) वहशत (परेशानी) (५) बदकार (पापी), (६) दहकान (देहाती). (७) खाम (कच्चा), (८) हंगाम (समय), (९) गद्दार (बागी या बगावत करने वाला). (१०) सुबहे नौ (नई सुबह), (११) परस्तार (पुजारी). (१२) नक्श (चिन्ह, निशानी), (१३) मुलहिद (धर्म से इनकार करने वाला), (१४) तक़सीर (कसूर, अपराध). (१५) ज़ेहन (समझ), (१६) महरम (अंगिया), (१७) फ़ुग़ाँ (चीत्कार). (१८) मआल (नतीजा. परिणाम), (१९) साज़े हयात (जीवन का साज). (२०) जबीने चर्ख़ (आकाश का ललाट) (२१) निज़ामे कायनात (ससार के नियम कायदे)

मैं हिन्दी प्रेमियों से पूछता हूँ कि इसे जादू नही कहियेगा तो क्या कहियेगा ? दो सौ मिसरे जिनमे पचीस सौ या ढाई हज़ार शब्द आये हैं उनमे कुल बीस बाईस ऐसे शब्द आना जिनका मतलब पूछना पड़े और वह भी इतने नर्म और मधुर, अगर इसे आप जादू नहीं मानते, अगर इसे हिन्दी शब्दो की अमृत बरखा नहीं

روکے ھمارا نام جو لے گا   دل کے درد سے کام جو لے گا
ٹوٹ پڑیں گے عرش سے تارے   اٹھ مرے کالی کملی والے
(خدا حضرت محمد کو نماز کے لئے جگا رھا ھے) 'شاد'

اوپر ۶۰ نمونے پیش کئے گئے ھیں - ان میں لگ بھگ پچیس سو شبد ھیں اور دو سو سے اوپر مصرعے (پنکتیاں) ھیں - یہ سب باتیں دھیان میں رکھتے جائیے - اب ان میں وہ شبد کون ھیں جو ان پڑھ آدمی نہیں جانتے ؟ وہ شبد یہ ھیں :—

(۱) کوھکن، پہاڑ کھودنے والا فرھاد (جس نے اپنی پریمیکا شیریں کے لئے پہاڑ کھود کر نہر نکالی تھی) (۲) سمند (گھوڑا) (۳) ارجمند (مان یوگیہ یا سنمانت) (۴) وحشت (پریشانی) (۵) بدکار (پاپی) (۶) دھقان (دیہاتی) (۷) خام (کچا) (۸) ھنگام (سمے) (۹) غدار (باغی یا بغاوت کرنے والا) (۱۰) صبح نو (نئی صبح) (۱۱) پرستار (پجاری) (۱۲) نقش (چنھ، نشانی) (۱۳) ملحد (دھرم سے انکار کرنے والا) (۱۴) تقصیر (قصور، اپرادھ) (۱۵) ذھن (سمجھ) (۱۶) محرم (انگیا) (۱۷) فغاں (چتکار) مآل (نتیجہ، پرینام) (۱۹) ساز حیات (جیون کا ساز) (۲۰) جبین چرخ (آکاش کا للاٹ) (۲۱) نظام کائنات (سنسار کے نیم یا قاعدے) —

میں ھندی پریمیوں سے پوچھتا ھوں کہ اسے جادو نہیں کہئے گا تو کیا کہئے گا ؟ دو سو مصرعے جن میں پچیس سو یا ڈھائی ھزار شبد آئے ھیں ان میں کل بیس بائیس ایسے شبد آنا جن کا مطلب پوچھنا پڑے اور وہ بھی اتنے نرم اور مدھر اگر اسے آپ جادو نہیں مانئے، اگر اسے ھندی شبدوں کی امرت برکھا نہیں

भरी भरी घटाओं में फ़िज़ा की वह उदाहटें
धुली हुई हवा में ज़ुल्फ़े शब की थरथराहटें
गजर से पहले कायनात की वह कुन्मुनाहटे
वह पौ फटी जबीने चर्ख़ की वह जगमगाहटे
कुछ ऊदी बदलियो मे धूप की वह मुस्कुराहटे
शिगूफ़ा छोड़ती जवानियो की अचपलाहटे
लबो की पंखड़ी पे तारो की वह झिलमिलाहटे
वह मद मे डूबे सीनो की रसीली गुनगुनाहटे
निगाहे शर्मसार की किरन की लपलपाहटे
समय के चादरो की वह ख़मोश सरसराहटे
हवाये इन्क़लाब के परो की फड़फड़ाहटे
चिराग़े ज़िन्दगी की वह उदास टमटमाहटे
ज़मीन की तहो मे ज़लज़लो की गड़गड़ाहटे
निज़ामे कायनात की रगो की सन्सनाहटे

कथा कली के लोच मे
फ़िज़ा की नर्म साँस मे
हर एक ग़म और शादी मे
हयात ढूंढते चलो

कलाइयो की मोच मे
हर एक खटकती फाँस मे
'फ़िराक़' वादी वादी मे
हयात ढूंढते चलो

(तलाश हयात) लेखक

(६०) उठ मेरे काली कमली वाले रात चली है जोगिन होकर
ओस से अपने मुँह को धोकर लट छटकाये बाल सँवारे
उठ मेरी काली कमली वाले

بھری بھری گھٹاؤں میں فضا کی وہ اُداھٹیں
دھلی ہوئی ہوا میں زلف شب کی تھرتھراھٹیں
گجر سے پہلے کائنات کی وہ کنمناھٹیں
وہ پو پھٹی جبین چرخ کی وہ دگمگاھٹیں
کچھ اودی بدلیوں میں دھوپ کی وہ مسکراھٹیں
شگوفہ چھوڑتی جوانیوں کی اچپلاھٹیں
لبوں کی پنکھڑی پہ تاروں کی وہ جھلملاھٹیں
وہ مد میں ڈوبے سینوں کی رسیلی گنگناھٹیں
نگاہ شرمسار کی کرن کی لپلپاھٹیں
سمے کی چادروں کی وہ خموش سرسراھٹیں
ہوائے انقلاب کے پروں کی پھڑ پھڑاھٹیں
چراغ زندگی کی وہ اداس ٹمٹماھٹیں
زمین کی تہوں میں زلزلوں کی گڑگڑاھٹیں
نظام کائنات کی رگوں کی سنسناھٹیں

کتھا کلی کے لوچ میں
فضا کی نرم سانس میں
ہر ایک غم اور شادی میں
حیات ڈھونڈھتے چلو

کلائیوں کی موچ میں
ہر اک کھٹکتی پھانس میں
'فراق' وادی وادی میں
حیات ڈھونڈھتے چلو

(تلاش حیات) لیکھک

(۶۰) اُٹھ میرے کالی کملی والے رات چلی ہے جوگن ہوکر
اوس سے اپنے منہ کو دھو کر لٹ چھٹکائے بال سنوارے
اُٹھ میرے کالی کملی والے

मेरे प्यारे वतन !
मेरे अच्छे वतन !
अब तू ख़ुद ही बता
मैं तेरा कौन हूँ ? (मैं तेरा कौन हूँ) ज़हूर नज़र

(५७) तुम्हारे सपूतो ने ए माओ बहनो
जो कल तक थे मासूम और भोले भाले
तुम्हारे ही महरम पे क्यो हाथ डाला
यही थे तुम्हारी फ़ुग़ां सुनने वाले
अगर जानती थी मआले मोहब्बत
तो क्यो अपने ही दूध से नाग पाले ?

(आज़ादी के बाद) अख़तरुल ईमान

(५८) मेरे प्यारो मेरी छाती से लिपटने वालो
आग वह दिलमे लगी है कि मै ही जान्ती हूँ
यो मेरी कोख जली है कि मैं ही जान्ती हूँ
मेरे बच्चो मेरे नामूस के पहरेदारो
देखो नेज़ो पे तुम्हारे है यह किसकी लाशे
तुमने ख़ुद लूट लिया अपनी ही बहनो का सुहाग
मांग मे झोंक दी सेंदूर की जगह तुमने आग

(मां) वामिक़ जौनपुरी

(५९) हिन्द के घूंघटों तले, कैसी सुहानी आग है.
सुबह को मां के माथे पर, आज नया सुहाग है.
नीले गगन की चोटियाँ, तुमको बुलारही हैं आज.
सारे हयात, वादियाँ, तुमको सुना रही हैं आज.

میرے پیارے وطن !
میرے اچھے وطن !
اب تو خود ھی بتا
میں ترا کون ھوں ؟ (میں ترا کون ھوں ؟) ظہور نظر

(۵۷) تمہارے سپوتوں نے اے ماؤ بہنو
جو کل تک تھے معصوم اور بھولے بھالے
تمہارے ھی محرم پہ کیوں ھاتھ ڈالا
یہی تھے تمہاری فغاں سننے والے
اگر جانتی تھیں مآل محبت
تو کیوں اپنے ھی دودھ سے ناگ پالے

(آزادی کے بعد) اختر الایمان

(۵۸) میرے پیارو میری چھاتی سے لپٹنے والو
آگ وہ دل میں لگی ھے کہ میں ھی جانتی ھوں
یوں مری کوکھ جلی ھے کہ میں ھی جانتی ھوں
میرے بچو میرے ناموس کے پہرےدارو
دیکھو نیزوں پہ تمہارے ھیں یہ کس کی لاشیں
تم نے خود لوٹ لیا اپنی ھی بہنوں کا سہاگ
مانگ میں جھونک دی سیندور کی جگہ تم نے آگ

(ماں) 'وامق' جونپوری

(۵۹) ھند کے گھونگھٹوں تلے کیسی سہانی آگ ھے
صبح کو ماں کے ماتھے پر آج نیا سہاگ ھے
نیلے گگن کی چوٹیاں تم کو بلا رھی ھیں آج
سارے حیات وادیاں تم کو سنا رھی ھیں آج

बाहिर में यह फोड़ा सुर्ख़ सही अन्दर का मवाद अब खाम नहीं
ऐ दोस्त अभी आराम न कर आराम का यह हङ्गाम नहीं
(ऐ दोस्त अभी आराम न कर) एहसान दानिश

(५६) मेरे प्यारे वतन !
मेरे अच्छे वतन !
लोग कहते है मै तेरा गद्दार हूँ
अपने घर की सियह् रात को छोड़ कर अजनबी सुब्हे
नौ का परिस्तार हूं
गैर का नक्श हूँ, सायए रूस हूं
दुश्मने दी हूँ मुलहिद हूँ, जासूस हूँ
इस तरह के बनाये, तराशे हुए और भी कितने ही तेज़ इलजाम है
जिस तरफ़ भी निगाहे उठाता हूँ मैं तोहमतो के चमकते हुए दाम हैं
और मेरा जुर्म, मेरी खता, मेरी तकसीर
अगर कोई है तो फ़क़त यह——कि मैं
लहलहाते हुए खेत की मेड पर भूक की लू मे
दहकाँ को जलता हुआ देख सकता नहीं
शोर करते हुए कारखानो की बदबू मे
मजदूर को खून उगलता हुआ देख सकता नहीं
फाइलो से सजे दफ़्तरों के क्लर्कों को
तन्ख्वाह के ग़म मे घुलता हुआ देख सकता नहीं
ज़ेहनो दिल, इल्मोफ़न, नग़मओ शेर पर
सेफ़्टी ऐक्ट का आरा चलता हुआ देख सकता नहीं

ظاهر میں یہ پھوڑا سرخ سہی اندر کا مواد اب خام نہیں
اے دوست ابھی آرام نہ کر آرام کا یہ هنگام نہیں
(اے دوست ابھی آرام نہ کر) 'احسان دانش'

(۵۹) میرے پیارے وطن !
میرے اچھے وطن !
لوگ کہتے هیں میں تیرا غدار هوں
اپنے گھر کی سیہ رات کو چھوڑ کر اجنبی صبح نو کا پرستار هوں
غیر کا نقش هوں، سایہ روس هوں
دشمن دیں هوں، ملحد هوں، جاسوس هوں
اس طرح کے بنائے تراشے هوئے، اور بھی کتنے هی تیز الزام هیں
جس طرف بھی نگاهیں اٹھاتا هوں میں تہمتوں کے چمکتے هوئے دام هیں
اور مرا جرم، میری خطا میری تقصیر
اگر کوئی ہے تو فقط یہ ——کہ میں
لہلہاتے هوئے کھیت کی مینڈ پر بھوک کی لو میں
دهقان کو جلتا هوا دیکھ سکتا نہیں
شور کرتے هوئے کارخانوں کی بدبو میں
مزدور کو خون اگلتا هوا دیکھ سکتا نہیں
فائلوں سے سجے دفتروں کے کلرکوں کو
تنخواہ کے غم میں گھلتا هوا دیکھ سکتا نہیں
ذهن و دل، علم و فن، نغمہ و شعر پر
سیفٹی ایکٹ کا آرا چلتا هوا دیکھ سکتا نہیں

(५३) दौलत के आगे सर टेकें बड़े बड़े गम्भीर
ज़र के आगे भाव बतायें बड़े बड़े सरदार
नादां बैठे कश्ती मे और दाना ग़ोते खाय
कुत्ता सोये गद्दी पर और टहले चौकीदार
आदम का बांका बेटा और भड़ुएपन का रूप
हव्वा की सुन्दर बेटी और रंडी का व्यौहार
शेर के मुंह मे सर दे दे और नाग के बिल मे हाथ
पेट पुराना पापी है इस पापी से हुशियार
पेट बड़ा बदकार
पेट बड़ा बदकार है बाबा
पेट बड़ा बदकार
(पेट बड़ा बदकार) जोश मलीहाबादी

(५४) किस जादूगर का यह घर है
बङ्गला देस एक रङ्गभवन
घने घने बाँसो के जङ्गल
जिन मे हवायें गाती मङ्गल
हरे भरे सब खेत और बन
कृष्ण-वर्ण से भी कुछ गहरी
जिसकी धरती और गगन
(रूप बङ्गाल) डाक्टर मसऊद हुसैन

(५५) इन्सां का शिकारी इन्सां है, दिन रात इसी का रोना है
मज़दूर की चर्बी चांदी है दहकान की हड्डी सोना है
तहज़ीब के गीले दामन से इस दाग़ को जल्दी धोना है

(۵۳) دولت کے آگے سر ٹیکیں بڑے بڑے گمبھیر
زر کے آگے بھاؤ بتائیں بڑے بڑے سردار
ناداں بیٹھے کشتی میں، اور دانا غوطے کھائے
کتا سوئے گدی پر اور ٹہلے چوکیدار
آدم کا بانکا بیٹا اور بھڑوے پن کا روپ
حوا کی سندر بیٹی اور رنڈی کا بیوہار
شیر کے منه میں سر دے دے اور ناگ کے بل میں ہاتھ
پیٹ پرانا پاپی هے اس پاپی سے هشیار
پیٹ بڑا بدکار
پیٹ بڑا بدکار هے بابا
پیٹ بڑا بدکار (پیٹ بڑا بدکار) جوش ملیح آبادی

(۵۴) کس جادوگر کا یه گھر هے
بنگله دیس، اک رنگ بھون
گھنے گھنے بانسوں کے جنگل
جن میں هوائیں گاتی منگل
هرے بھرے سب کھیت اور بن!
کرشن ورن سے بھی کچھ گہری
جس کی دھرتی اور گگن (روپ بنگال) ڈاکٹر مسعود حسین

(۵۵) انساں کا شکاری انساں هے، دن رات اسی کا رونا هے
مزدور کی چربی چاندی هے، دهقان کی هڈی سونا هے
تهذیب کے گیلے دامن سے اس داغ کو جلدی دھونا هے

(४८) दुनिया से अलग जा के कहीं सर फोड़ो
या जीते ही जी मुर्दों से नाता जोड़ो
क्यों ठोकरें खाने को पड़े हो बेकार
बढ़ना है बढ़ो नहीं तो रस्ता छोड़ो   'रुबाई' यगाना

(४९) कहते हैं कि शैताँ कभी सोता ही नहीं
इन्सान से गाफ़िल कभी होता ही नहीं
मुल्ला भी मगर कम नहीं हुशयारी में
मौक़ा कोई हाथ आगे तो खोता ही नहीं
'रुबाई' यगाना

(५०) घर बोलता है आज दलिद्दर भागा
दुख दर्द के मारों का नसीबा जागा
दिन काटे हैं गिन गिन के इसी दिन के लिये
साजन आते हैं रास्ता दे कागा
'रुबाई' यगाना

(५१) गम के दरिया की थाह मिलती ही नहीं
दुनिया मे कहीं पनाह मिलती ही नहीं.
आगे बढ़ना बहुत ही मुशकिल है 'फ़ुसूँ'
पीछे हटने की राह मिलती ही नहीं   रुबाई' फ़ुसूँ

(५२) एक रात भी कम्बख़्त सुहानी नहीं आती
नींद आय कोई एसी कहानी नहीं आती.
वहशत मे कोई बात बनानी नहीं आती
क़ाबू में किसी तरह जवानी नहीं आती.
कमसिन के लिये मौत है शौहर का बुढ़ापा.
(बूढ़ा शौहर) जोश मलीहाबादी

(۴۸) دنیا سے الگ جاکے کہیں سر پھوڑو
یا جیتے ہی جی مردوں سے ناتا جوڑو
کیوں ٹھوکریں کھانے کو پڑے ہو بیکار
بڑھنا ہے بڑھو نہیں تو رستا چھوڑو   'رباعی' یگانہ

(۴۹) کہتے ہیں کہ شیطاں کبھی سوتا ہی نہیں
انسان سے غافل کبھی ہوتا ہی نہیں
ملا بھی مگر کم نہیں ہشیاری میں
موقع کوئی ہاتھ آئے تو کھوتا ہی نہیں   'رباعی' یگانہ

(۵۰) گھر بولتا ہے آج دلدر بھاگا
دکھ درد کے ماروں کا نصیبا جاگا
دن کاٹے ہیں گن گن کے اسی دن کے لئے
ساجن آتے ہیں راستہ دے کاگا   'رباعی' یگانہ

(۵۱) غم کے دریا کی تھاہ ملتی ہی نہیں
دنیا میں کہیں پناہ ملتی ہی نہیں
آگے بڑھنا بہت ہی مشکل ہے 'فسوں'
پیچھے ہٹنے کی راہ ملتی ہی نہیں   'رباعی' فسوں

(۵۲) اک رات بھی کمبخت سہانی نہیں آتی
نیند آئے کوئی ایسی کہانی نہیں آتی
وحشت میں کوئی بات بنائی نہیں آتی
قابو میں کسی طرح جوانی نہیں آتی
کم سن کے لئے موت ہے شوہر کا بڑھاپا
(بوڑھا شوہر) جوش ملیح آبادی

(४१) किस तरह बन में आँख के तारे को भेज दूँ
जोगी बना के राज दुलारे को भेज दूँ

(राम बनवास) चकबस्त

(४२) आराम को तरस गये जबसे छुटा है घर
किन आफतो मे पाँच महीने हुए बसर.

"मर्सिया' अनीस

(४३) यह आँधियाँ, यह गर्मी के अय्याम, यह सफ़र
दिन भर चले हैं धूप मे जागे हैं रात भर

'मर्सिया' अनीस

(४४) क्या क्या चमक दिखाती थी सर काट काट के
तनती थी बस तनो से जमी पाट पाट के.

(तलवार की तारीफ) अनीस

(४५) पानी वह ख़ुद पिये हुए थी घाट घाट के
दम और बढ़ गया था लहू चाट चाट के.

(तलवार की तारीफ) अनीस

(४६) दो दिन से बेज़बाँ पे जो था आबोदाना बन्द
दरिया को हिनहिना के लगा देखने समन्द.
हर बार काँपता था सिमटता था बन्द बन्द
चुमकारते थे हज़रते अब्बास अर्जुमन्द

(४७) तड़पाता था जिगर को जो शोर आबशार का
गर्दन फिरा के देखता था मुँह सवार का. अनीस

हज़रत अब्बास जब नहर के पास पहुंचे है तो घोड़ा जो कई दिन का प्यासा था पानी देख कर बेताब होगया है लेकिन हज़रत अब्बास उसे पानी पीने से रोकते हैं उसी हालत की तसवीर ऊपर के तीन शेरों में खींची गई है.

(۴۱) کسطرح بن میں آنکھ کے تارے کو بھیج دوں
جوگی بنا کے راج دلارے کو بھیج دوں

(رام بن باس) چکبست

(۴۲) آرام کو ترس گئے جب سے چھٹا ہے گھر
کن آفتوں میں پانچ مہینے ہوئے بسر

'مرثیہ' انیس

(۴۳) یہ آندھیاں یہ گرمی کے ایام یہ سفر
دن بھر چلے ہیں دھوپ میں جاگے ہیں رات بھر

' مرثیہ ' انیس

(۴۴) کیا کیا چمک دکھاتی تھی سر کاٹ کاٹ کے
تلتی تھی بس تنوں سے زمیں پاٹ پاٹ کے

(تلوار کی تعریف) انیس

(۴۵) پانی وہ خود پئے ہوئے تھی گھاٹ گھاٹ کے
دم اور بڑھ گیا تھا لہو چاٹ چاٹ کے

(تلوار کی تعریف) انیس

(۴۶) دو دن سے بےزباں پہ جو تھا آب و دانہ بند
دریا کو ہنہنا کے لگا دیکھنے سمند
ہربار کانپتا تھا سمٹتا تھا بند بند
چمکارتے تھے حضرت عباس ارجمند

(۴۷) تڑپاتا تھا جگر کو جو شور آبشار کا
گردن پھرا کے دیکھتا تھا منھ سوار کا انیس

حضرت عباس جب نہر کے پاس پہنچے ہیں تو گھوڑا جو کئی دن کا پیاسا تھا پانی دیکھکر بیتاب ہو گیا ہے لیکن حضرت عباس اسے پانی پینے سے روکتے ہیں۔ اسی حالت کی تصویر اوپر کے تین شعروں میں کھینچی گئی ہے۔

(३१) तमन्नाओं मे उलझाया गया हूँ
खिलौने दे के फुसलाया गया हूँ. — शाद

(३२) मत सहल हमे जानो फिरता है फलक बरसो
तब खाक के पर्दे से इन्सान निकलते है. — मीर

(३३) मौत एक गीत रात गाती थी
जिन्दगी झूम झूम जाती थी — लेखक

(३४) न समझोगे तो मिट जाओगे ए हिन्दोस्ताँ वालो
तुम्हारी दास्ताँ तक भी न होगी दास्तानो मे — एकबाल

(३५) पत्थर की मूरतो मे कहता है तू खुदा है
खाके वतन का मुझको हर जर्रा देवता है
"नयाशिवाला" एकबाल

(३६) भर आये फूल के आँसू पयामे शबनम मे
कली का नन्हा सा दिल खून हो गया गम मे — एकबाल

(३७ अब तो घबराके यह कहते है कि मर जायेंगे
मर के भी चैन न पाया तो किधर जायेंगे — जौक

(३८) आती है मद भरे सङ्गीत की लपटे साकी
आग, आकाश के सीने मे वह दहकाती हुई
उङ्गलियाँ साज के पर्दों पे रवाँ है साकी
इस जवाँ रात के दिल की कसक उकसाती हुई
(रैन सङ्गीत) लेखक

(३९) जनाजा कौम का घर से तेरे निकलता है
सुहाग हिन्द का तेरी चिता मे जलता है
(गोखले) चकबस्त

(४० अगर नहाये तो अपने लहू की गङ्गा में
पढ़ी नमाज तो उजड़े घरो के सहरा में.
(दक्खिनी अफरीका) चकबस्त

(۳۱) تمناؤں میں الجھایا گیا ھوں
کھلونے دے کے پھسلایا گیا ھوں — شاد

(۳۲) مت سہل ھمیں جانو پھرتا ھے فلک برسوں
تب خاک کے پردے سے انسان نکلتے ھیں — میر

(۳۳) موت اک گیت رات گاتی تھی
زندگی جھوم جھوم جاتی تھی — لیکھک

(۳۴) نہ سمجھوگے تو مٹ جاؤگے اے ھندوستاں والو
تمہاری داستاں تک بھی نہ ھوگی داستانوں میں — اقبال

(۳۵) پتھر کی مورتوں میں کہتا ھے تو خدا ھے
خاک وطن کا مجھکو ھر ذرہ دیوتا ھے
"نیاشوالہ" اقبال

(۳۶) بھر آئے پھول کے آنسو پیام شبنم سے
کلی کا ننھا سا دل خون ھوگیا غم سے — اقبال

(۳۷) ابتو گھبرا کے یہ کہتے ھیں کہ مرجائینگے
مر کے بھی چین نہ پایا تو کدھر جائینگے — ذوق

(۳۸) آتی ھیں مد بھرے سنگیت کی لپٹیں ساقی
آگ آکاش کے سینے میں وہ دھکاتی ھوئی
انگلیاں ساز کے پردوں پہ رواں ھیں ساقی
اس جواں رات کے دل کی کسک اُکساتی ھوئی
(رین سنگیت) لیکھک

(۳۹) جنازہ قوم کا گھر سے ترے نکلتا ھے
سہاگ ھند کا تیری چتا میں جلتاھے
(گوکھلے) چکبست

(۴۰) اگر نہائے تو اپنے لہو کی گنگا میں
پڑھی نماز تو اُجڑے گھروںکے صحرا میں
(دکھنی افریقہ) چکبست

(२०) मंज़िलें दूर हुई जाती हैं, हिम्मतें चूर हुई जाती हैं. 'उमर'

(२१) कुछ मेरी नज़र ने उठके कहा कुछ उनकी नज़र ने झुकके कहा
झगड़ा जो न चुकता बरसों में वो होगया बातों बातों में. रज़ा

(२२) कमर बाँधे हुए चलने को याँ सब यार बैठे हैं
बहुत आगे गये बाक़ी जो हैं तैयार बैठे हैं. इन्शा

(२३) पत्ता पत्ता बूटा बूटा हाल हमारा जाने है
जाने न जाने गुल ही न जाने बाग़ तो सारा जाने है
मीर

(२४) ज़ुल्फ़ में फंस के 'फ़ुसूं' अब है यह वहशत कैसी
साँप जब काट चुका सीखने मन्तर बैठे. फ़ुसूं

(२५) 'फ़िराक़' तूही मुसाफ़िर है तूही मंज़िल भी
किधर चला है मुहब्बत की चोट खाये हुए. लेखक

(२६) मैं जो मर जाऊँ तेरी जान से दूर
जाके रहियो न इस मकान से दूर.
मसनवी "ज़हरे इश्क़" मिर्ज़ा शौक़

(२७) रूह भटकेगी गर न पायेगी
ढूंढने किस तरफ़ को जायेगी.
मसनवी "ज़हरे इश्क़" मिर्ज़ा शौक़

(२८) ज़मीं पे नूर के पुतलों ने क्यों ढई दी है
कफ़न मिले तो समझना धनी थे किस्मत के. यगाना

(२९) पहाड़ काटने वाले ज़मीं से हार गये
इसी ज़मीन में दरिया समाये हैं क्या क्या. यगाना

(३०) साक़िया याँ चल रहा है चल चलाव
जब तलक बस चल सके साग़र चले. दर्द

(۲۰) منزلیں دور ھوتی جاتی ھیں
ھمتیں چور ھوتی جاتی ھیں 'عمر'

(۲۱) کچھ میری نظر نے اُٹھ کے کہا کچھ انکی نظر نے جھک کے کہا
جھگڑا جو نہ چکتا برسوں میں طے ھوگیا باتوں باتوں میں
'رضا'

(۲۲) کمر باندھے ھوئے چلنے کو یاں سب یار بیٹھے ھیں
بہت آگے گئے باقی جو ھیں تیار بیٹھے ھیں 'انشا'

(۲۳) پتا پتا بوٹا بوٹا حال ھمارا جانے ھے
جانے نہ جانے گل ھی نہ جانے باغ توسارا جانے ھے 'میر'

(۲۴) زلف میں پھنس کے فسوں اب ھے یہ وحشت کیسی
سانپ جب کاٹ چکا سیکھنے منتر بیٹھے 'فسوں'

(۲۵) فراق تو ھی مسافر ھے تو ھی منزل بھی
کدھر چلا ھے محبت کی چوٹ کھائے ھوئے (لیکھک)

(۲۶) میں جو مرجاؤں تیری جان سے دور
جاکے رھیو نہ اس مکاں سے دور
'مثنوی زھر عشق' مرزا شوق

(۲۷) روح بھٹکے گی گو نہ پائے گی
ڈھونڈنے کس طرف کو جائیگی
مثنوی 'زھر عشق' مرزا شوق

(۲۸) زمیں پہ نور کے پتلوں نے کیوں دھئی دی ھے
کفن ملے تو سمجھنا دھنی تھے قسمت کے 'یگانہ'

(۲۹) پہاڑ کاٹنے والے زمیں سے ھار گئے
اسی زمین میں دریا سمائے ھیں کیا کیا یگانہ

(۳۰) ساقیا یاں لگ رھا ھے چل چلاؤ
جب تلک بس چل سکے ساغر چلے 'درد'

(९) ज़माने के हाथों से चारा नहीं है
ज़माना हमारा तुमहारा नहीं है.   इबरत

(१०) बोले वह देखकर मुझे यों शबे माहताब में
देखो कहीं पकड़ न ले चाँदनी रात चोर को.   इबरत

(११) एक मोहब्बत थी मिट गई यारब
तेरी दुनिया मे अब धरा क्या है.   अख़्तर शीरानी

(१२) चाहिये अच्छों को जितना चाहिये
वह अगर चाहें तो फिर क्या चाहिये.   ग़ालिब

(१३) झूमती जब कभी मतवाली घटा आई है
याद क्या क्या तेरी मस्ताना अदा आई है.   जलील

(१४) 'ग़ालिब' बुरा न मान जो कोई बुरा कहे
ऐसा भी कोई है कि सब अच्छा कहें जिसे.   ग़ालिब

(१५) काबा सुन्ते हैं कि घर है बड़े दाता का 'रियाज़'
. ज़िन्दगी है तो फ़क़ीरों का भी फेरा होगा.   रियाज़

(१६) तुम मेरे पास होते हो गोया
जब कोई दूसरा नही होता.   मोमिन

(१७) एक टीस जिगर मे उठती है एक दर्द सा दिल में होता है
हम रातों को बैठ के रोते हैं जब सारा आलम सोता है.   मीर

(१८) बिगाड़ कर बनायेजा उभार कर मिटाये जा
कि मैं तेरा चिराग़ हूं जलाये जा बुझाये जा.   जोश मलीहाबादी

(१९) मुद्दतें होगई हैं चुप रहते
कोई सुनता तो हम भी कुछ कहते.   मुज़्तर

(٩) زمانے کے هاتھوں سے چارا نہیں ہے
زمانه همارا تمہارا نہیں ہے   عبرت

(١٠) بولے وہ دیکھکر مجھے یوں شب ماهتاب میں
دیکھو کہیں پکڑ نه لے چاندني رات چور کو   عبرت

(١١) اک محبت تھی مٹ گئی یارب
تیری دنیا میں اب دھرا کیا ہے   اختر شیرانی

(١٢) چاهئے اچھوں کو جتنا چاهئے
وہ اگر چاهیں تو پھر کیا چاهئے   غالب

(١٣) جھومتي جب کبھي متوالي گھٹا آتي ہے
یاد کیا کیا تری مستانه ادا آتی ہے   جلیل

(١٤) ' غالب ' برا نه مان جو کوئی برا کہے
ایسا بھی کوئی ہے که سب اچھا کہیں جسے   غالب

(١٥) کعبه سنتے هیں که گھر ہے بڑے داتا کا 'ریاض'
زندگی ہے تو فقیروں کا بھی پھیرا هوگا   ریاض

(١٦) تم مرے پاس هوتے هو گویا
جب کوئي دوسرا نہیں هوتا   مومن

(١٧) اک ٹیس جگر میں اٹھتي ہے اک درد سا دل میں هوتا ہے
هم راتوں کو بیٹھ کے روتے هیں جب سارا عالم سوتا ہے
میر

(١٨) بگاڑ کر بنائے جا ابھار کر مٹائے جا
که میں ترا چراغ هوں جلائے جا بجھائے جا
جوش ملیح آبادی

(١٩) مدتیں هوگئي هیں چپ رہتے
کوئي سنتا تو هم بھی کچھ کہتے   مضطر

आप से यह कह दूँ कि एक एक शेर में यह बात ध्यान से देखते जाइये कि शब्द किस तरह चुने गये हैं. जुमले (वाक्य) हमारी आप की बोल-चाल से कितना मिलते हैं. । भाव और विचार कैसे हैं. जीवन को संवारने मे यह शेर कितनी मदद कर सकते हैं. इनमे गम्भीरता और रस कितना है ? बहुत शान्ति से पढ़िये.

(१) मर गया कोहकन यही कहकर
आँख ओझल पहाड़ ओझल है. — मीर

(२) ग़म के टहोके कुछ हो बला से आके जगा तो जाते हैं
हम है मगर वह नींद के माते जागते ही सो जाते हैं. — फ़ानी

(३) दिल का उजड़ना सहल सही बसना सहल नही ज़ालिम
बस्ती बसना सहल नही बस्ते बस्ते बस्ती है. — फ़ानी

(४) बात क्या आदमी की बन आई,
आस्माँ से ज़मीन नपवाई. — मीर

(५) यह सुहानी उदास तनहाई,
लेती है पिछली रात अंगड़ाई. — लेखक

(६) रात दिन चक्कर में हैं सात आसमाँ
हो रहेगा कुछ न कुछ घबरायें क्या.
लाग हो गर कुछ तो हम समझे लगाव
जब न हो कुछ भी तो धोका खायें क्या. — ग़ालिब

(७) इधर आँख झपकी उधर ढलगई वह
जवानी भी एक धूप थी दोपहर की. — इशरत

(८) बलबाजू के ज़ोर कमर के, माँ की उमंग घमंड पिदर के
सुख आँखों के नूर नज़र के, चैन हमारे सारे घर के
सो जा भोले भाले बच्चे — (लोरी) इशरत

آپ سے یہ کہدوں کہ ایک ایک شعر میں یہ بات دھیان سے دیکھتے جائیے کہ شبد کس طرح چنے گئے ہیں' جملے (واکیہ) ہماری آپ کی بول چال سے کتنا ملتے ہیں' بھاؤ اور وچار کیسے۔ ہیں جیون کو سنوارنے میں یہ شعر کتنی مدد کر سکتے ہیں۔ ان میں گمبھیرتا اور رس کتنا ہے ؟ بہت شانتی سے پڑھئے

(۱) مرگیا کوہکن یہی کہکر   آنکھ اوجھل پہاڑ اوجھل ہے — میر

(۲) غم کے ٹہوکے کچھ ہوں بلا سے آکے جگا تو جاتے ہیں
ہم ہیں مگر وہ نیند کے ماتے جاگتے ہی سوجاتے ہیں — فانی

(۳) دل کا اجڑنا سہل سہی بسنا سہل نہیں ظالم
بستی بسنا سہل نہیں بستے بستے بستی ہے — فانی

(۴) بات کیا آدمی کی بن آئی
آسماں سے زمین نپوائی — میر

(۵) یہ سہانی اداس تنہائی
لیتی ہے پچھلی رات انگڑائی — (لیکھک)

(۶) رات دن چکر میں ہیں سات آسماں
ہو رہے گا کچھ نہ کچھ گھبرائیں کیا
لاگ ہو گر کچھ تو ہم سمجھیں لگاؤ
جب نہ ہو کچھ بھی تو دھوکا کھائیں کیا — غالب

(۷) ادھر آنکھ جھپکی ادھر ڈھل گئی وہ
جوانی بھی اک دھوپ تھی دوپہر کی — عشرت

(۸) بل بازو کے زور کمر کے ماں کی امنگ' گھمنڈ پدر کے
سکھ آنکھوں کے نور نظر کے چین ہمارے سارے گھر کے
سو جا بھولے بھالے بچے — (لوری) عشرت

नीचे मैं उर्दू शायरी से कुछ मिसालें पेश करता हूँ. यह नमूने दो सवा दो सौ बरस की उर्दू शायरी से लिये गये हैं. हर तरह की शायरी पेश की गई है. पचास हज़ार से ज्यादा ऐसे शेर उर्दू शायरी में मिलेंगे. उर्दू शायरों ने सिर्फ़ फुटकर शेर नर्म भाषा में नहीं कहे हैं, किताबो की किताबें इसी भाषा मे लिख कर क़लम डाल दिया है. अगर कोई पूछे कि उर्दू लिपि मे इतनी नर्म हिन्दी उन्होंने क्यो लिखी तो मलिक मुहम्मद जायसी ने और रसखान ने उर्दू लिपि मे अपनी रचनायें क्यो लिखी? यह तो आदत की बात है. आपने जैसे जायसी और रसखान को नागरी मे छाप लिया वैसे ही एक लाख पन्ने उर्दू लिपि मे छपे साहित्य को नागरी लिपि में छाप लीजिये और इस तरह नागरी पढ़ने वालो के लिये सोने और जवाहरात की खान खोल दीजिये. मै जो नमूने हाज़िर कर रहा हूँ उनमे बहुत थोड़े ऐसे फ़ारसी अरबी शब्द आये हैं जिन्हें हिन्दी जानने वाले नहीं जानते. ज्यादातर तो ऐसे फ़ारसी अरबी शब्द आये हैं जो बच्चे और अनपढ़ भी बोलते हैं.

ज़रा ठहर ठहर कर इन नमूनो को पढ़िये, धीरे धीरे इन्हे गुनगुनाइये। भाषा की सुन्दरता और सुगमता को दिल मे उतरने दीजिये. इन्हें पढ़ लीजिये बार बार पढ़ लीजिये. धर्म के मैदान मे कबीर और नानक ने जिस तरह राम रहीम को मिलाया था क्या इसी तरह उर्दू शायरों ने हिन्दी, फ़ारसी को इस तरह घुला मिला नहीं दिया कि हिन्दू मुसलमान दोनों झूम उठें. इन नमूनों को पढ़ लीजिये, गुनगुना लीजिये, गा लीजिये, दिल में उतार लीजिये इसके बाद आप से कुछ बातें पूछूँगा. पहले से क्यों पूछूं. लगे हाथों

نیچے میں اردو شاعری سے کچھ مثالیں پیش کرتا ہوں۔ یہ نمونے دو سوا دوسو برس کی اردو شاعری سے لئے گئے ہیں ہر طرح کی شاعری پیش کی گئی ہے۔ پچاس ہزار سے زیادہ ایسے شعر اردو شاعری میں ملینگے۔ اردو شاعروں نے صرف پھٹکر شعر نرم بھاشا میں نہیں کہے ہیں، کتابوں کی کتابیں اِسی بھاشا میں لکھکر قلم ڈال دیا ہے۔ اگر کوئی پوچھے کہ اُردو لپی میں اتنی نرم ہندی انہوں نے کیوں لکھی تو ملک محمد جایسی نے اور رسکھان نے اردو لپی میں اپنی رچنائیں کیوں لکھیں، یہ تو عادت کی بات ہے آپ نے جیسے جایسی اور رس کھان کو ناگری میں چھاپ لیا ویسے ہی ایک لاکھ پنّے اُردو لپی میں چھپے ساھتیہ کو ناگری لپی میں چھاپ لیجئے اور اس طرح ناگری پڑھنے والوں کے لئے سونے اور جواہرات کی کھان کھول دیجئے۔ میں جو نمونے حاضر کر رہا ہوں ان میں بہت تھوڑے ایسے فارسی عربی شبد ائے ہیں جنہیں ہندی جاننے والے نہیں جانتے زیادہ‌تر تو ایسے فارسی عربی شبد آئے ہیں جو بچے اور ان‌پڑھ بھی بولتے ہیں۔

ذرا ٹھہر ٹھہر کر ان نمونوں کو پڑھئے، دھیرے دھیرے انہیں گن گنائیے۔ بھاشا کی سندرتا اور سگمتا کو دل میں اترنے دیجئے انہیں پڑھ لیجئے بار بار پڑھ لیجئے۔ دھرم کے میدان میں کبیر اور نانک نے جس طرح رام رحیم کو ملایا تھا کیا اسی طرح اُردو شاعروں نے ہندی، فارسی کو اس طرح گھلا ملا نہیں دیا کہ ہندو مسلمان دونوں جھوم اُٹھیں۔ ان نمونوں کو پڑھ لیجئے، گن گنا لیجئے، گا لیجئے دل میں اُتار لیجئے اس کے بعد آپ سے کچھ باتیں پوچھوں گا پہلے سے کیوں پوچھوں۔ لگے ہاتھوں

टूटी. यह तो ऐसाही है कि खाने की आज़ादी है लेकिन मुंह नही खोलने दिया जायेगा. सोचिये हिन्दी प्रेम के नाम पर यह कितनी बड़ी नीचता है. यह हिन्दी का प्रचार करते हुए उर्दू से डरना है या नही ? समझे आप ? अरे बाबा संस्कृत से लदी हुई हिन्दी सब को पढ़ाओ, ऐसी हिन्दी मे कोई फेल हो तो दरजा न दो (हालाँकि ऐसा करना हिन्दुओ और हिन्दी प्रेमियो की भी मुसीबत करदेगा) लेकिन अगर यह शर्त पूरी करके कोई उर्दू भी पढ़ना चाहता है तो आप के चेहरे पर हवाइयाँ क्यो उड़ने लगती हैं ?

भारत की भाषाओ में जो भाषा खड़ी बोली हिन्दी या प्रेमचन्द की हिन्दी या सहल और मं नया टकसाली हिन्दी से सब से ज्यादा मिलती है वह उर्दू है. जितने हिन्दी शब्द हिन्दी कोश (लुग़त) मे हैं, जितने मुहावरे या टकसाली टुकड़े हिन्दी में है वह एक एक करके सब के सब यही नहीं कि उर्दू में हैं बल्कि वह उर्दू में पहले आये और इतनी बड़ी तादाद में आये कि आज तक हिन्दी लेखको के यहाँ नहीं आये न उस ख़ूबसूरती और सुघड़ापे के साथ आये—क्या अन्धेर है ! जिस उर्दू में हिन्दी साहित्य से दस गुना बीस गुना हिन्दी शब्द और मुहावरे नगीने की तरह जगमगा रहे हो, जिस उर्दू को सीख कर प्रेमचन्द और बालमकुन्द गुप्त ने हिन्दी की देवी को सोलहों सिंगार से सजा दिया, जिस उर्दू साहित्य का बड़ा हिस्सा नागरी में छपते ही सभी हिन्दी जानने वालो की समझ मे आजाता है और जिसे सुनकर अनपढ़ हिन्दू मुसलमान सभी झूम उठते हैं उसी उर्दू को मिटाया जा रहा है !

توٹی - یہ تو ایسا ھی ھے کہ کھانے کی آزادی ھے لیکن منہ نہیں کھولنے دیا جائے گا - سوچئے ھندی پریم کے نام پر یہ کتنی بڑی نیچتا ھے - یہ ھندی کا پرچار کرتے ھوئے اُردو سے ڈرنا ھے یا نہیں ؟ سمجھے آپ ؟ ارے بابا سنسکرت سے لدی ھوئی ھندی سب کو پڑھاؤ ' ایسی ھندی میں کوئی فیل ھو تو درجہ نہ دو (حالانکہ ایسا کرنا ھندوؤں اور ھندی پریمیوں کی بھی مصیبت کردے گا) لیکن اگر یہ شرط پوری کرکے کوئی اُردو بھی پڑھنا چاھتا ھے تو آپ کے چہرے پر ھوائیاں کیوں اُڑنے لگتی ھیں ؟

بھارت کی بھاشاؤں میں جو بھاشا کھڑی بولی ھندی یا پریم چند کی ھندی یا سہل اور نرم یا ٹکسالی ھندی سے سب سے زیادہ ملتی ھے وہ اُردو ھے - جتنے ھندی شبد ھندی کوش (لغت) میں ھیں ' جتنے محاورے یا ٹکسالی ٹکڑے ھندی میں ھیں وہ ایک ایک کرکے سب کے سب یہی نہیں کہ اردو میں ھیں بلکہ وہ اردو میں پہلے آئے اور اتنی بڑی تعداد میں آئے کہ آج تک ھندی لیکھکوں کے یہاں نہیں آئے نہ اس خوبصورتی اور سگھڑاپے کے ساتھ آئے - کیا اندھیر ھے ؟ جس اردو میں ھندی ساھتیہ سے دس گنا بیس گنا ھندی شبد اور محاورے نگینے کی طرح جگمگا رھے ھوں ' جس اردو کو سیکھکر پریمچند اور بالمکند گپت نے ھندی کی دیوی کو سولہوں سنگار سے سجادیا ' جس اردو ساھتیہ کا بڑا حصہ ناگری میں چھپتے ھی سبھی ھندی جاننے والوں کی سمجھ میں آجاتا ھے اور جسے سن کر ان پڑھ ھندو مسلمان سبھی جھوم اُٹھتے ھیں اسی اردو کو مٹایا جارھا ھے —

सिखाता कि हम मुशकिल हिन्दी, रट्टू हिन्दी या किताबी हिन्दी, जटिल और कठिन हिन्दी का प्रचार करे. किसी को कठिन हिन्दी लिखने पढ़ने का शौक़ हो तो हम आप उसे रोकेंगे भी नही. हमें हिन्दी भाषा और सहज और नर्म हिन्दी साहित्य का देश भर में प्रचार करना है न कि कठिन हिन्दी का. यही हो सकता है और होना भी यही चाहिये. जिन लोगों मे उर्दू का प्रचार है वह भी एक आध फ़ी सदी को छोड़ कर सहल और नर्म उर्दू ही लिखते पढ़ते है यह और बात है कि सहल और नर्म उर्दू मे या यो कहिये कि प्रेम चन्द की उर्दू मे बहुत ऊंचा साहित्य बन चुका है, बहुत ऊँचा, बहुत सिजिल, बहुत रचा हुआ साहित्य!

नर्म और मुहाविरेदार टकसाली हिन्दी का प्रेमी न उर्दू से डरता है न उसे उर्दू से डरने की ज़रूरत है. उर्दू से डरता है वह आदमी जो बीहड़ या रट्टू हिन्दी का सपना देख रहा है. आप पूछते क्यो नही कि हिन्दी प्रेमी उर्दू से कहां और कब डर रहे हैं ? अगर आप स्कूलों में हर हिन्दू मुसलमान को हिन्दी पढने पर मजबूर करते हैं तो मैं इसे उर्दू से डरना नहीं कहता. यह तो होना चाहिये. लेकिन हिन्दी पढ़ते और सीखते हुए हम और सब कुछ सीख सकते हैं उर्दू नही सीख सकते, ऐसा क़ायदा क़ानून या निसाब (पाठ क्रम) बना देना उर्दू से डरना नहीं तो क्या है ? स्कूलों, कालिजो में उर्दू डिपार्टमेन्ट बन्द किये जा रहे हैं, उर्दू पढ़ाने वाले बीसो बरस नौकरी करने के बाद निकाले जा रहे हैं. छठे या सातवें दरजे में अगर कोई मुसीबत का मारा उर्दू लेना चाहे तो कभी भी नहीं ले सकता. चलो सांप भी मरा लाठी भी नहीं

سکھاتا کہ ہم مشکل ہندی، رٹو ہندی یا کتابی ہندی، جٹل اور کٹھن ہندی کا پرچار کریں - کسی کو کٹھن ہندی لکھنے پڑھنے کا شوق ہو تو ہم آپ اسے روکیں گے بھی نہیں - ہمیں ہندی بھاشا اور سہج اور نرم ہندی ساہتیہ کا دیش بھر میں پرچار کرنا ہے نہ کہ کٹھن ہندی کا - یہی ہو سکتا ہے اور ہونا بھی یہی چاہئے - جن لوگوں میں اُردو کا پرچار ہے وہ بھی ایک آدھ فی صدی کو چھوڑ کر سہل اور نرم اُردو ہی لکھتے پڑھتے ہیں - یہ اور بات ہے کہ سہل اور نرم اُردو میں یا یوں کہئے کہ پریم چند کی اُردو میں بہت اونچا ساہتیہ بن چکا ہے، بہت اونچا، بہت سجل بہت رچا ہوا ساہتیہ -

نرم اور محاورے دار ٹکسالی ہندی کا پریمی نہ اُردو سے ڈرتا ہے نہ اسے اُردو سے ڈرنے کی ضرورت ہے - اُردو سے ڈرتا ہے وہ آدمی جو بیہڑ یا رٹو ہندی کا سپنا دیکھ رہا ہے - آپ پوچھتے کیوں نہیں کہ ہندی پریمی اُردو سے کہاں اور کب ڈر رہے ہیں ؟ اگر آپ اسکولوں میں ہر ہندو مسلمان کو ہندی پڑھنے پر مجبور کرتے ہیں تو میں اسے اُردو سے ڈرنا نہیں کہتا - یہ تو ہونا چاہئے لیکن ہندی پڑھتے اور سیکھتے ہوئے ہم اور سب کچھ سیکھ سکتے ہیں اُردو نہیں سیکھ سکتے ایسا قاعدہ قانون یا نصاب (پاٹھہ کرم) بنا دینا اُردو سے ڈرنا نہیں ہے تو کیا ہے - اسکولوں کالجوں میں اُردو ڈپارٹمنٹ بند کئے جا رہے ہیں - اُردو پڑھانے والے بیسوں برس نوکری کرنے کے بعد نکالے جا رہے ہیں - چھٹے یا ساتویں درجے میں اگر کوئی مصیبت کا مارا اُردو لینا چاہے تو کبھی بھی نہیں لے سکتا - چلو سانپ بھی مرا لاٹھی بھی نہیں

उर्दू के हाथों हिन्दी का हक़ मारे जाने का डर कभी नहीं था. एक भ्रम खड़ा करके हल्ला बोल दिया गया था. लोग 'भूत भूत' चिल्लाने लगे. भगदड़ मच गई लेकिन बाबा अब तो वह डर नहीं रहा. फिर आप क्यों डरपोक बने हुए हैं ? अब ललकार पुकार क्यों मची हुई है ? बेकार और बे ज़रूरत डाट डपट या बचाव की तय्यारी इस बात की साफ़ चुगली खा रही है कि अभी डर नहीं निकला. सब से बड़ा दुशमन डर है. बे कारन के डरना घातक साबित होता है. ऐसा डर झीक झीक कर मरने का पैग़ाम है. ऐसा डर बहुत मनहूस लच्छन है.

हर भारतवासी को हिन्दी जानना चाहिये, वह हिन्दी जो प्रेमचन्द जानते और लिखते थे. जो हिन्दी गुप्त जी, निराला जी, प्रसाद जी, पन्त जी या महा देवी जी के यहां मिलती है उसे सीखने या न सीखने की आज़ादी हर आदमी को होनी चाहिये क्योंकि यह हिन्दी प्रेमचन्द भी नहीं जानते थे. राजपाट का सारा कारबार उसी हिन्दी से चलेगा जो प्रेमचन्द जानते थे. प्रेमचन्द की ही हिन्दी राजेन्द्र बाबू और ज्यादातर हमारे नेता और हमारी राजसभाओं के मेम्बर या निन्नानबे फ़ी सदी हिन्दी पढ़ने वाले जानते हैं. उपन्यासों, कहानियों, नाटकों और हिन्दी कविता के भी बहुत बड़े हिस्से की हिन्दी प्रेमचन्द ही की हिन्दी होगी. विज्ञान, दर्शन और तमाम विद्याओं की हिन्दी भी प्रेमचन्द ही की हिन्दी होगी. रही बात इस्तिलाहों (पारिभाषिक शब्दों) की सो उन्हें भी हम गुप्त जी से लेकर आज तक के हिन्दी कवियों से नहीं पा सकते और सुगम से सुगम शब्द ही हम

اُردو کے ہاتھوں ہندی کا حق مارے جانے کا ڈر کبھی نہیں تھا - ایک بھرم کھڑا کرکے ہلا بول دیا گیا تھا - لوگ ' بھوت بھوت ' چلانے لگے - بھگدڑ مچ گئی - لیکن بابا اب تو وہ ڈر نہیں رہا پھر آپ کیوں ڈرپوک بنے ہوئے ہیں ؟ اب للکار پکار کیوں مچی ہوئی ہے ؟ بیکار اور بے ضرورت ڈانٹ ڈپٹ یا بچاؤ کی تیاری اس بات کی صاف چغلی کھا رہی ہے کہ ابھی ڈر نہیں نکلا - سب سے بڑا دشمن ڈر ہے - بے کارن کے ڈرنا گھاتک ثابت ہوتا ہے - ایسا ڈر جھینک جھینک کر مرنے کا پیغام ہے - ایسا ڈر بہت منحوس لچھن ہے -

ہر بھارت باسی کو ہندی جاننا چاہئے . وہ ہندی جو پریم چند جانتے اور لکھتے تھے . جو ہندی گپت جی' نرالا جی' پرساد جی' پنت جی یا مہادیوی جی کے یہاں ملتی ہے اُسے سیکھنے یا نہ سیکھنے کی آزادی ہر آدمی کو ہونی چاہئے کیونکہ یہ ہندی پریم چند بھی نہیں جانتے تھے - راج پاٹ کا سارا کاربار اسی ہندی سے چلے گا جو پریم چند جانتے تھے . پریم چند کی ہی ہندی راجندر بابو اور زیادہ تر ہمارے نیتا اور ہماری راج سبھاؤں کے ممبر یا ننانوے فی صدی ہندی پڑھنے والے جانتے ہیں . اُپنیاسوں ' کہانیوں ' ناٹکوں اور ہندی کویتا کے بھی بہت بڑے حصے کی ہندی پریم چند ہی کی ہندی ہوگی - وگیان ' درشن اور تمام ودیاؤں کی ہندی بھی پریم چند ہی کی ہندی ہوگی - رہی بات اصطلاحوں (پاریبھاشک شبدوں) کی سو انہیں بھی ہم گپت جی سے لیکر آج تک کے ہندی کویوں سے نہیں پا سکتے اور سگم سے سگم شبد ہی ہم

मैं हिन्दी प्रेमियों से पूछता हूँ

(भाई रघुपति सहाय 'फ़िराक़')

यह लेख मैं ज़रा समझदार आदमियों के लिये लिख रहा हूँ. इसका मतलब यह नहीं कि अगर आप हिन्दी प्रेमी हैं और यह लेख पढ़ रहे हैं तो आप समझदार आदमी नहीं. मेरा कहना यह है कि अगर मेरी या अपनी बदनसीबी से आपकी नज़र इस लेख पर पड़ जाय तो इसे ज़रा सूझ बूझ के साथ पढ़िये. कहने वाले से सुनने वाला सरेख होना चाहिये.

पढ़ने लिखने के मामले मे अब हम पर अंग्रेज़ हुक्म नही लगा सकता, न अब यहा मुसलमानी राज है अब हिन्दी उर्दू के सवाल को हम जिस तरह ग़ुलामी या मुसीबत के ज़माने में सोचते थे उस तरह इस सवाल पर अगर हम आज भी सोचेंगे या आइन्दा भी सोचेंगे तो हम बड़ा धोका खायेंगे. लड़ना झगड़ना इतनी बड़ी मुसीबत नहीं जितनी बड़ी मुसीबत है लड़ने झगड़ने की आदत पड़ जाना. लड़ झगड़ लेना और बात है. बैर और दुश्मनी, नफ़रत और कपट रखना दूसरी बात है और बड़ी घातक और भयानक बात है. अन्ध क्रोध की आग मे हम कहीं ख़ुद न जल जायें आज़ाद होकर भी अगर हम ग़ुलामो की तरह सोचेंगे तो हमारा कहीं ठिकाना न लगेगा. सब कुछ पाकर अगर हम अब भी लाग डाट और पट्टीदारी के भाव के शिकार बने रहे तो हम सब कुछ खो बैठेंगे.

میں هندي پریمیوں سے پوچھتا هوں

(بھائی رگھوپتی سہائے ' فراق ')

یہ لیکھ میں ذرا سمجھدار آدمیوں کے لئے لکھ رها هوں - اس کا مطلب یہ نہیں کہ اگر آپ هندی پریمی هیں اور یہ لیکھ پڑھ رہے هیں تو آپ سمجھدار آدمي نہیں - میرا کہنا یہ هے کہ اگر میری یا اپنی بدنصیبی سے آپ کی نظر اس لیکھ پر پڑ جائے تو اسے ذرا سوجھ بوجھ کے ساتھ پڑھئے - کہنے والے سے سننے والا سریکھ هونا چاهئے -

پڑھنے لکھنے کے معاملے میں اب هم پر انگریز حکم نہیں لگا سکتا - نہ اب یہاں مسلمانی راج هے - اب هندی اُردو کے سوال کو هم جس طرح غلامی یا مصیبت کے زمانے میں سوچتے تھے اُس طرح اس سوال پر اگر هم آج بھی سوچیں گے یا آئندہ بھی سوچیں گے تو هم بڑا دھوکا کھائیں گے - لڑنا جھگڑنا اتنی بڑی مصیبت نہیں جتنی بڑی مصیبت هے لڑنے جھگڑنے کی عادت پڑ جانا - لڑ جھگڑ لینا اور بات هے - بیر اور دشمنی نفرت اور کپٹ رکھنا دوسري بات هے اور بڑی گھاتک اور بھیانک بات هے - اندھ کرودھ کی آگ میں هم کہیں خود نہ جل جائیں - آزاد هوکر بھی اگر هم غلاموں کی طرح سوچیں گے تو همارا کہیں ٹھکانا نہ لگے گا - سب کچھ پاکر اگر هم اب بھی لاگ ڈاٹ اور پٹی داری کے بھاو کے شکار بنے رهے تو هم سب کچھ کھو بیٹھیں گے -

हम से हमारा नशा छीन कर, खुद आनन्द कभी नही पा सकता. उसे तो किसी और नशे की जरूरत है. हमे खा कर वह हमे नष्ट करता है और अपने आप को भी.''

तम्बाकू की पौदो के ज्ञान भरी और गहरी बात सुनकर मैं शर्मिन्दा हुआ, तम्बाकू की ओर मेरा मान बढ़ा.

बिदा होते वक्त पौदों ने मुझसे विन्ती की—''कृपा करके हमारा सदेसा अपनी बिरादरी मे पहुँचा दीजियेगा.''

मैंने ऐसा करने की हामी भरली

आज के शहीद

(सम्पादक श्री रतन लाल बंसल)

आज के शहीद में उन बहादुरो की कहानियाँ हैं जिन्होने विदेशी हाकिमो की फैलाई फूट की आग मे इन्सानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान कुरबान कर दी, उन वीरो की कहानियाँ है जिन्होने फूट और नफरत के अंधेरे मे रोशनी बनकर दूसरो को रास्ता दिखाया.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब

सुन्दर जिल्द और आर्ट पेपर पर छपी आठ स्वीरो के साथ इस किताब का दाम सिर्फ ढाई रुपया रक्खा गया है. किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटो मे मिल सकती है.

मैनेजर 'नया हिन्द'
४८ बाई का बाग, इलाहाबाद.

ہم سے ہمارا نشہ چھین کر، خود آنند کبھی نہیں پا سکتا. اُسے تو کسی اور نشے کی ضرورت ہے. ہمیں کھاکر وہ ہمیں نشت کرتا ہے اور اپنے آپ کو بھی.''

تمباکو کی پودوں کی گیان بھری اور گہری بات سنکر میں شرمندہ ہوا ' تمباکو کی اُور میرا مان بڑھا.

بدا ہوتے وقت پودوں نے مجھ سے بنتی کی—'' کرپا کرکے ہمارا سندیسہ اپنی برادری میں پہنچا دیجئیگا.''

میں نے ایسا کرنے کی حامی بھرلی.

آج کے شہید

(سمپادک شری رتن لال بنسل)

آج کے شہید میں اُن بہادروں کی کہانیاں ہیں جنہوں نے بدیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں انسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کردی' اُن ویروں کی کہانیاں ہیں جنھوں نے پھوٹ اور نفرت کے اندھیرے میں روشنی بنکر دوسروں کو راستہ دکھایا.

ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب

سندر جلد اور آرٹ پیپر پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ رکھا گیا ہے. کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے.

منیجر ' نیا ھند '
۴۸ بائی کا باغ ' الہ آباد

एक संदेसा

[भाई रामजी दर]

अपने जीवन में मैं पहली बार तम्बाकू के खेत मे सौभाग्य से चहल क़दमी के लिये गया. शुरू शुरू मे तम्बाकू की पत्तियों की मंद गंध नागवार मालूम हुई पर उन हरे हरे छोटे पौदो की फैली हुई क़तारो मे एक खिचाव था.

उनकी बू मन मे नफ़रत पैदा करती—उनका रूप भाता.

उसी वक़्त मुझे ख़याल आया कि तम्बाकू के इस्तेमाल से आदमी को कितना नुक़सान पहुँचा है.

'क्या इसमे तम्बाकू के पौदे का दोष है?' मैंने अपने आप सवाल किया.

पौदों ने मेरे मन के भाव को ताड़ कर कहा: "महानुभाव, इस मे हमारा दोष नाम को भी नही है अगर इजाज़त हो तो हम कुछ अर्ज़ करें."

"ज़रूर"—इतना कह कर मैंने बड़े ध्यान से पौदो की कथा सुनी.

पौदे बोले—"सुनिये. आप मनुष्य के प्रतिनिधि हैं. आप अपने दिमाग़ और समझ बूझ की वजह से सब जीवों में श्रेष्ट हैं. हम इन ख़ूबियों से महरूम हैं—लेकिन हमारे और आप के जीवन की आख़िरी मंज़िल एक है—और वह है आनन्द प्राप्त करना. आनन्द एक क़िस्म का नशा है. हमारा नशा तम्बाकू का आनन्द है. आदमी

ایک سندیسہ

[بھائی رام جی در]

اپنے جیون میں میں پہلی بار تمباکو کے کھیت میں سوبھاگیہ سے چہل قدمی کے لئے گیا. شروع شروع میں تمباکو کی پتیوں کی مند گندھ نا گوار معلوم ہوئی پر اُن ہرے ہرے چھوٹے پودوں کی پھیلی ہوئی قطاروں میں ایک کھینچاو تھا.

اُنکی بو من میں نفرت پیدا کرتی—اُنکا روپ بھاتا

اُسی وقت مجھے خیال آیا کہ تمباکو کے استعمال سے آدمی کو کتنا نقصان پہنچا ہے

'کیا اس میں تمباکو کے پودے کا دوش ہے؟' میں نے اپنے آپ سوال کیا.

پودوں نے میرے من کے بھاؤ کو تاڑ کر کہا: "مہانوبھاؤ' اِس میں ہمارا دوش نام کو بھی نہیں ہے. اگر اِجازت ہو تو ہم کچھ عرض کریں."

"ضرور"—اِتنا کہکر' میں نے بڑے دھیان سے پودوں کی کتھا سنی.

پودے بولے—"سنئے' آپ منش کے پرتلیندھی ہیں. اپنے دماغ اور سمجھ بوجھ کی وجہ سے سب جیووں میں شریشٹ ہیں. ہم اِن خوبیوں سے محروم ہیں—لیکن ہمارے اور آپ کے جیون کی آخری منزل ایک ہے—اور وہ ہے آنند پراپت کرنا. آنند ایک قسم کا نشہ ہے. ہمارا نشہ تمباکو کا آنند ہے. آدمی

अपने देश वासियो से ललकार कर कहना ही होगा. आओ हम सब एक होकर सच्ची आजादी के लिए लड़ें। बापू के हत्यारे के सरपस्तों को खत्म करें. बापू ने हम लोगो को सत्य और अहिंसा का जो रास्ता बतलाया है, आओ हम सब उस रास्ते पर चलें.

बापू का देश तभी सच्चे मानो मे आज़ाद होगा जब बापू के देश वासी भाई भाई की तरह रहना सीखेंगे.

बापू की हत्या वाली सांझ हमे इसी के लिए आगाह कर रही है. बापू की हत्या का यही एक मात्र बदला है. बापू के मासूम ख़ून की एक एक बूँद हमको चुनौती दे रही है.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

लेखक—पंडित सुन्दर लाल

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ा परस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मजहबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने, आख़िर में देश-पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच मे न रहने दिया ! कीमत बारह आना.

किताब नागरी और उर्दू लिखावटों मे अलग अलग मिल सकती है.

मैनेजर 'नया हिन्द'
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

اپنے دیش واسیوں سے للکار کر کہنا هي هوگا ' آؤ هم سب ایک هوکر سچي آزادي کے لئے لڑیں ! باپو کے هتیارے کے سرپرستوں کو ختم کریں – باپو نے هم لوگوں کو ستیہ اور اهنسا کا جو راستہ بتلایا هے ' آؤ هم سب اس راستے پر چلیں ۔

باپو کا دیش تبھي سچے معنوں میں آزاد هوگا جب باپو کے دیش واسي بھائي بھائي کي طرح رهنا سیکھیں گے ۔

باپو کي هتیا والي شام همیں اسي کے لئے آگاہ کر رهي هے ۔ باپو کي هتیا کا یهي ایک ماتر بدلا هے ۔ باپو کے معصوم خون کي ایک ایک بوند هم کو چنوتي دے رهي هے ۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

لیکھک — پنڈت سندر لال

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی ' مذهبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج ' جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو همارے بیچ میں نہ رهنے دیا ! قیمت بارہ آنہ

کتاب ناگری اور اُردو لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی هے ۔

منیجر " نیا هند "
۴۸ بائی کا باغ ' الہ آباد

गांधी, आज़ादी की लड़ाई के प्रतीक (नमूना) थे. गांधी, कांग्रेस के प्राण थे. गांधी, ग़रीब हड्डी के ढाचो वाले किसानो की आँखो की रोशनी थे. गांधी निपूती नारियो के पुत्र थे. गांधी लुटी लाज वाली बहनों की लाज थे. गांधी विधवा ललनाओ के सुहाग थे. गांधी भूके नंगे मासूम बच्चो की पवित्र आत्मा थे तभी तो उनके लिये सारा देश रो रहा था.

भारत माता ने मोहन को जन्म दिया भारत माता ने मोहन को बनाया. भारतमाता ने मोहन को शक्ति दी. वही मोहन हमारी जनता के, राष्ट्र के पिता हुए, और इसी भारत के एक अभागे कायर ने अपने बाप को क़त्ल किया.

* * * *

बापू की हत्या को पूरे दो बरस हो गये लोगो ने बापू की यादगारें बनवाईं, उनके नाम पर पैसे इकट्ठे किये और उनकी कसमे भी खाईं. मगर ३० जनवरी १९४८ की शाम को जो भयानक हालत थी, जो ना उम्मीदी, उदासी और बे बसी चारो ओर छाई हुई थी, वही आज भी ज्यो की त्यो बनी हुई है. वही भयानक मन्ज़र, वही क़ब्रिस्तानी सन्नाटा, वही मुर्दनी बापू न रहे, बापू का हत्यारा भी न रहा, मगर बापू की पाक यादगार भी जैसे हल्की और कमज़ोर पड़ती जा रही है. क्या इसी मुर्दनी और निराशा के लिये बापू ने सारी ज़िन्दगी कोशिश की थी. क्या यही बापू का आख़िरी पयाम था? नहीं, नहीं बिलकुल नहीं.

बापू को याद करके, बापू के आशीर्वाद पर भरोसा करके, बापू की हत्या के लिए ज़िम्मेदार ताक़तों से हमे जंग करनी ही होगी.

گاندھی آزادی کی لڑائی کے پرتیک (نمونہ) تھے ۔ گاندھی کانگریس کے پران تھے ۔ گاندھی ، غریب ہڈی کے ڈھانچوں والے کسانوں کی آنکھوں کی روشنی تھے ۔ گاندھی نپوتی ناریوں کے پتر تھے ۔ گاندھی لٹی لاج والی بہنوں کی لاج تھے ۔ گاندھی ودھوا للناؤں کے سہاگ تھے ۔ گاندھی بھوکے ، ننگے ، معصوم بچوں کی پوتر آتما تھے ۔ تبھی تو انکے لئے سارا دیش رو رہا تھا ۔

بھارت ماتا نے موہن کو جنم دیا بھارت ماتا نے موہن کو بنایا ۔ بھارت ماتا نے موہن کو شکتی دی وہی موہن ہماری جنتا کے ، راشٹر کے پتا ہوئے ، اور اسی بھارت کے ایک ابھاگے کایر نے اپنے باپ کو قتل کیا ۔

* * * *

باپو کی ہتیا کو پورے دو برس ہوگئے لوگوں نے باپو کی یادگاریں بنوائیں ، انکے نام پر پیسے اکٹھے کئے اور انکی قسمیں بھی کھائیں ۔ مگر ۳۰ جنوری سنہ ۱۹۴۸ع کی شام کو جو بھیانک حالت تھی ، جو ناامیدی ، اداسی اور بیبسی چاروں اور چھائی ہوئی تھی ، وہی آج بھی جیوں کی تیوں بنی ہوئی ہے ۔ وہی بھیانک منظر ، وہی قبرستانی سناٹا وہی مردنی ۔ باپو نہ رہے ، باپو کا ہتیارا بھی نہ رہا ، مگر باپو کی پاک یادگار بھی جیسے ہلکی اور کمزور پڑتی جارہی ہے کیا اسی مردنی اور نراشا کے لئے باپو نے ساری زندگی کوشش کی تھی ۔ کیا یہی باپو کا آخری پیام تھا ؟ نہیں ، نہیں ، بالکل نہیں ۔

باپو کو یاد کرکے ، باپو کے آشیرواد پر بھروسہ کرکے ، باپو کی ہتیا کے لئے ذمے دار طاقتوں سے ہمیں جنگ کرنی ہی ہوگی ۔

और दबोचे जा रहा है.

हम लोग लाइट बुझा कर चारपाई पर लेट गये और नीद की राह देखने लगे, लेकिन नीद नहीं आई. सारी रात आँखो ही आँखों मे बीती. रह रह के यही याद आता कि बापू मनु और आभा के कन्धे पर हाथ रखे भीड़ के अन्दर से प्रार्थना सभा मे जा रहे है. उसी दम उस ज़ालिम हत्यारे की गोली की आवाज़ आती है. मैं चौंक पड़ती, क्या सच मुच बापू मार दिय गये ? क्या सचमुच उसने गोली चलाई ? विश्वास नही हो रहा था लेकिन विशवास करना ही पड़ा. मुझे सपने मे भी ध्यान नहीं था कि बापू को कोई मारेगा. अभी-अभी बापू के मरने के चार रोज़ पहले जन नाट्य संघ का प्रदर्शन हुआ था, उसमे यही दिखाया गया था कि बापू को मारने एक गुण्डा जाता है लेकिन मार नही पाता. वह बापू के पास जाता है मगर छुरा नही उठा पाता फिर बापू का यह हत्यारा कितना बड़ा गुण्डा था!

बापू को उस आदमी ने मारा जो उनके सम्पर्क मे रह चुका था. लेकिन बापू को वही अकेला नहीं मार सकता था. उसके पीछे बहुतों का हाथ था. बड़े-बड़े सेठ साहुकारों, राजाओ, महाराजाओ का हाथ था. बापू को अगर चाहते तो अंग्रेज भी मार सकते थे. नवाखाली में जब बापू गये तो वहाॅं भी मुसलमान मार सकते थे. लेकिन नहीं बापू को कोई नहीं मार सका. बापू सबको इतने प्यारे थे कि उनपर कोई भी हाथ नही उठा सकता था. बापू भी सबको उसी तरह प्यार करते थे जैसे मां अपने बच्चो को प्यार करती है.

اور دبوچے جا رہا ہے .

ہم لوگ لائٹ بجھاکر چارپائی پر لیٹ گئے اور نیند کی راہ دیکھنے لگے . لیکن نیند نہیں آئی ساری رات آنکھوں ہی آنکھوں میں بیتی . رہ رہ کے یہی یاد آتا کہ باپو منو اور آبھا کے کندھے پر ہاتھ رکھے بھیڑ کے اندر سے پرارتھنا سبھا میں جارہے ہیں . اُسی دم اُس ظالم ہتیارے کی گولی کی آواز آتی ہے . میں چونک پڑتی ، کیا سچ مچ باپو مار دئے گئے ؟ کیا سچ مچ اس نے گولی چلائی ؟ وشواس نہیں ہو رہا تھا لیکن وشواس کرنا ہی پڑا . مجھے سپنے میں بھی دھیان نہیں تھا کہ باپو کو کوئی ماریگا . ابھی ابھی باپو کے مرنے کے چار روز پہلے جن ناٹیہ سنگھ کا پردرشن ہوا تھا ، اس میں یہی دکھایا گیا تھا کہ باپو کو مارنے ایک گنڈہ جاتا ہے لیکن مار نہیں پاتا . وہ باپو کے پاس جاتا ہے مگر چھرا نہیں اُٹھا پاتا . پھر باپو کا یہ ہتیارا کتنا بڑا گنڈا تھا !

باپو کو اُس آدمی نے مارا جو ان کے سمپرک میں رہ چکا تھا . لیکن باپو کو وہی اکیلا نہیں مار سکتا تھا . اُسکے پیچھے بہتوں کا ہاتھ تھا . بڑے بڑے سیٹھ ساہوکاروں ، راجاؤں ، مہاراجاؤں کا ہاتھ تھا . باپو کو اگر چاہتے تو انگریز بھی مار سکتے تھے . نوا کھالی میں جب باپو گئے تو وہاں بھی مسلمان مار سکتے تھے . لیکن نہیں ، باپو کو کوئی نہیں مار سکا . باپو سبکو اتنے پیارے تھے کہ اُن پر کوئی بھی ہاتھ نہیں اُٹھا سکتا تھا . باپو بھی سب کو اسی طرح پیار کرتے تھے جیسے ماں اپنے بچوں کو پیار کرتی ہے .

संसार का कुछ खोया-खोया सा लग रहा था. हिन्दुस्तान का सब कुछ लुटा-लुटा सा मालूम पड़ रहा था.

मैंने सोचा, क्या सच मुच बापू की हत्या हुई ? क्या सच मुच बापू मार दिये गये ? क्या सच-मुच मानवता की हत्या हुई ? क्या सच-मुच सत्य की हत्या, अहिंसा की हत्या, एकता की हत्या, हिन्दुस्तान की हत्या और आज़ादी की हत्या हुई ? और जिसने हमें आज़ादी दिलाई, जिसने हमे एकता का पाठ पढ़ाया, जिसने हमे सत्य और अहिंसा का रास्ता दिखाया, उसकी हत्या हुई. निपूती नारियो, विधवा ललनाओ, गरीब हड्डी के ढाचो, लुटी लाज वाली बहनो, भूखे नंगे मासूम बच्चो के बाप की हत्या हुई ? भारत माता के लाडले लाल की हत्या हुई ?

वह आज़ादी जो अभी १५ अगस्त को मिली है, वह टिमटिमाता दीपक जो अभी-अभी जला था बुझ गया ! उसे एक क्रूर हत्यारे ने बुझाया. वह बुझ गया लेकिन उस दीपक की लौ की ज्योति हम लोगो के हृदय के अन्दर और आंखो मे वैसे ही जगमगा रही है. वह दीप अमर है वह ज्योति अमर है. उसे कौन बुझा सकता है ?

कभी-कभी उस उदास खामोशी को भंग करने वाली मोटरो से आवाज़े आती—हिन्दुस्तान को एक बहुत बड़े संकट का सामना करना होगा. कभी सायकिलो से आवाज आती—हिन्दुस्तान पर बहुत बड़ी आफ़त आने वाली है. किसी के मुँह से हाय निकलती, कोई कहता हम लोग अनाथ हो गये.

लाइट जला कर जब हम लोग बैठे-तो मालूम हो रहा था कि जलते हुऐ बल्ब को अंधकार का पर्दा चारो ओर से घेर रहा है

سنسار کا کچھ کھویا کھویا سا لگ رہا تھا . ھندستان کا سب کچھ لٹا لٹا سا معلوم پڑ رہا تھا .

میں نے سوچا کیا سچ مچ باپو کی ھتیا ھوئی ؟ کیا سچ مچ باپو مار دئے گئے ؟ کیا سچ مچ مانوتا کی ھتیا ھوئی ؟ کیا سچ مچ ستیہ کی ھتیا ' اھنسا کی ھتیا ' ایکتا کی ھتیا ' ھندستان کی ھتیا اور آزادی کی ھتیا ھوئی ؟ اور جس نے ھمیں آزادی دلائی ' جس نے ھمیں ایکتا کا پاٹھ پڑھایا ' جس نے ھمیں ستیہ اور اھنسا کا راستہ دکھایا ' اُسکی ھتیا ھوئی . نپوتی ناریوں ' ودھوا للناؤں ' غریب ھڈی کے ڈھانچوں ' لٹی لاج والی بہنوں ' بھوکے ننگے معصوم بچوں کے باپ کی ھتیا ھوئی ؟ بھارت ماتا کے لاڈلے لال کی ھتیا ھوئی ؟

وہ آزادی جو ابھی ۱۵ اگست کو ملی ھے ' وہ ٹمٹماتا دیپک جو ابھی ابھی جلا تھا بجھ گیا ! اُسے ایک کرور ھتیارے نے بجھایا . وہ بجھ گیا لیکن اس دیپک کی لو کی جیوتی ھم لوگوں کے ھردے کے اندر اور آنکھوں میں ویسے ھی جگمگا رھی ھے . وہ دیپ امر ھے وہ جیوتی امر ھے . اسے کون بجھا سکتا ھے ؟

کبھی کبھی اس اُداس خاموشی کو بھنگ کرنے والی موٹروں سے آوازیں آتیں — ھندستان کو ایک بہت بڑے سنکٹ کا سامنا کرنا ھوگا . کبھی سائکلوں سے آواز آتی . ھندوستان پر بہت بڑی آفت آنے والی ھے . کسی کے منھہ سے ھائے نکلتی ' کوئی کہتا ھم لوگ اناتھ ھو گئے .

لائٹ جلا کر جب ھم لوگ بیٹھے تو معلوم ھو رھا تھا کہ جلتے ھوئے بلب کو اندھکار کا پردہ چاروں اور سے گھیر رھا ھے

३० जनवरी की वह डरावनी सांझ

(बहिन सरोजनी दास)

३० जनवरी १९४८ की वह भयानक साँझ ! हम लोगो ने सोचा कुछ दूर टहल आवे. ज्यो ही फाटक के बाहर हुए कि एक दोस्त घबराये हुए आये और भर्राई हुई आवाज़ मे बोले—"गाँधी जी का स्वर्गवास हो गया." हम लोग सुन कर सन्न रह गये. आपस में एक दूसरे का मुँह देखने लगे. फिर उन्ही मित्र ने कहा—"बापू की हत्या हो गई" हालाँ कि हम लोगो को कभी भी बापू के साथ रहने का अवसर नहीं मिला था. फिर भी हम लोगो के हृदय को कितनी चोट पहुंची थी. दूसरे सब लोग तो अखबार के दफ्तर की ओर भागे मगर मैं उसी फाटक पर खड़ी रही. सड़क बिलकुल सूनी हो गई थी ऊपर आकाश में मुसीबत के काले-काले बादल मंडला रहे थे. जैसे लग रहा था, संसार सूना हो गया है. हिन्दुस्तान अनाथ हो गया है. प्रकृति अंधेरे में मुंह ढाँपे बापू के लिये रो रही है. जैसे लग रहा था, पेड़ रो रहे हैं, रोते-रोते उनकी पत्तियाँ झड़ गई है. हरा भरा खेत रो रहा है, खलिहान रो रहा है. नदियाँ भी अपना आँचल फैलाये हुए पागलो की भाँति बड़े-बड़े पत्थरों से टकराती हुई, ऊँचे-ऊँचे पहाड़ो और कन्दराओं से होती हुई, बापू को ढँकने के लिये दौड़ी आ रही हैं. बड़ी भयावनी लग रही थी वह रात. चाँदनी रहते हुए भी जैसे अमावस की काली रात खाने के लिए दौड़ी आरही थी !

۳۰ جنوری کی وہ ڈراونی سانجھ

(بہن سروجنی داس)

۳۰ جنوری ۱۹۴۸ع کی وہ بھیانک سانجھ ! ہم لوگوں نے سوچا کچھ دور ٹہل آویں. جیوں ہی پھاٹک کے باہر ہوے کہ ایک دوست گھبرائے ہوے آئے اور بھرائی ہوئی آواز میں بولے—"گاندھی جی کا سورگواس ہو گیا." ہم لوگ سنکرسن رہ گئے. آپس میں ایک دوسرے کا منہہ دیکھنے لگے. پھر انہیں متر نے کہا—"باپو کی ہتیا ہو گئی." حالانکہ ہم لوگوں کو کبھی بھی باپو کے ساتھ رہنے کا اوسر نہیں ملا تھا، پھر بھی ہم لوگوں کے ہردے کو کتنی چوٹ پہونچی تھی. دوسرے سب لوگ تو اخبار کے دفتر کی اور بھاگے مگر میں اسی پھاٹک پر کھڑی رہی. سڑک بالکل سونی ہو گئی تھی. اوپر آکاش میں مصیبت کے کالے کالے بادل منڈلا رہے تھے. جیسے لگ رہا تھا، سنسار سونا ہوگیا ہے. ہندستان اناتھ ہو گیا ہے. پرکرتی اندھیرے میں منہہ ڈھانپے باپو کے لئے رو رہی ہے. جیسے لگ رہا تھا، پیڑ رو رہے ہیں، روتے روتے انکی پتیاں جھڑ گئی ہیں. ہرا بھرا کھیت رو رہا ہے، کھلیہان رو رہا ہے. ندیاں بھی اپنا آنچل پھیلائے ہوے پاگلوں کی بھانتی بڑے بڑے پتھروں سے ٹکراتی ہوئی، اونچے اونچے پہاڑوں اور کندراؤں سے ہوتی ہوئی باپو کو ڈھکنے کے لئے دوڑی آرہی ہیں. بڑی بھیاونی لگ رہی تھی وہ رات! چاندنی رہتے ہوے بھی جیسے اماوس کی کالی رات کھانے کے لئے دوڑی آرہی تھی.

अंधेरा इस बुरी तरह से छाया रहता और इतनी देर तक छाया रहता ?

ईश्वर करे हमारी यह धारणा झूटी साबित हो या कोई झूटी साबित करदे.

हे सत्याग्रह-दीप, किसी तरह जल न पड़ो !

—भगवान दीन

मुस्लिम देश भक्त

[लेखक श्री० रतन लाल बंसल]

इस किताब मे कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तो के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये हैं जिन्होने अंगरेजो के मनहूस क़दम यहां जमने के पहले ही उनके राज की बुराइयों का अन्दाजा कर लिया था और उनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमो ने सन् १८५७ से भी पहले से आजादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होने हिन्दुस्तान और विदेशो मे रहते हुए भी अंगरेजी हकूमत का मुक़ाबला किया. यह सब हाल पढ़कर आप दग रह जायँगे किताब दोनो लिखावटो मे छपी है कीमत १ रुपया १२ आने.

मैनेजर, 'नया हिन्द,'
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

اندھیرا اِس بری طرح سے چھایا رھتا اور اتنی دیر تک چھایا رھتا ؟

ایشور کرے ھماری یہ دھارنا جھوٹی ثابت ھو یا کوئی جھوٹی ثابت کردے۔

ھے ستیہ گرہ دیپ' کسی طرح جل پڑو !

بھگوان دین

مسلم دیش بھگت

[لیکھک — شری رتن لال بنسل]

اِس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھگتوں کے جیون کا حال اور اُنکے کارنامے بیان کئے گئے ھیں جنھوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ھی اُنکے راج کی برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور اِن کو ھندستان سے نکال بھگانے میں ھند کی بھلائی دیکھی تھی ۔

اِس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ھوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے سنہ ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادی کی لڑائی شروع کر رکھی تھی۔ اپنی جان ھتھیلی پر رکھ کر اُنھوں نے ھندستان اور ودیشوں میں رھتے ھوئے بھی انگریزی حکومت کا مقابلہ کیا۔ یہ سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے۔

کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپی ھے۔ قیمت ۱ روپیہ ۱۲ آنے

مینیجر 'نیا ھند'
۴۸ بائی کا باغ ـ الہ آباد

सत्य और अहिंसा का सबसे बड़ा पुजारी मानते हैं पर अन्याय होते हुए देख कर या तो आंख बचा कर निकल जाते है या इस कोशिश मे रहते है कि कोई अन्याय उनकी आंखो के सामने ही न आने पाये और फिर प्रकृति उसी अन्याय को उनकी गर्दन पर सवार करा देती है और उनका स्वभाव बना देती है. और फिर वही उस अन्याय मे रस लेने लगते हैं और उन्हे फिर इतना रस आने लगता है कि वह यह पुकार उठते हैं कि अन्याय का बेमतलब ही अन्याय नाम रख छोड़ा है. वह न किसी को सताता है न किसी को दुख देता है. वह तो सब की भलाई के लिए है. हां, यह ठीक है कि उनका कहना उस नासमझ मा जैसा ही होता है जो पहले अफ़ीम की बेहद बुराई करती थी और फिर अपने बच्चे को अफ़ीम की आदत डाल कर यह कहने लगी कि लोगों ने अफ़ीम को योंही बदनाम कर रक्खा है वह तो किसी का भी नुकसान नहीं करती, बच्चे का भला करती है क्योंकि उसे आराम के साथ सुलाती है. मां का भला करती है क्योंकि उसको आराम के साथ काम मे लगने का मौक़ा देती है बस सत्याग्रही यह सोच लें कि वह अब उस मंजिल तक आ पहुँचे है जहाँ अन्याय देख कर कतराने का काम होता है. और अब वह मंजिल दूर नहीं है जब अन्याय मे सत्य और अहिंसा के उपदेशों का रस मिलने लगेगा.

दीपक रोज़ बुझते हैं. पर आम तौर से ऐसे वक्त बुझते हैं कि फिर दस बारह घंटे उनके जलने की ज़रूरत नहीं रहती. क्या हिन्दुस्तान का सत्याग्रह-दीप शाम को ही बुझ गया था? या रात के बारह बजे बुझा था? सुबह तो हरगिज़ नहीं बुझा था. नहीं तो क्या

ستیہ اور اہنسا کا سب سے بڑا پجاری مانتے ہیں پر انیائے ہوتے ہوئے دیکھکر یا تو آنکھ بچاکر نکل جاتے ہیں یا اِس کوشش میں رہتے ہیں کہ کوئی انیائے اُن کی آنکھوں کے سامنے ہی نہ آنے پائے اور پھر پرکرتی اُسی انیائے کو اُن کی گردن پر سوار کرادیتی ہے اور اُن کا سوبھاؤ بنا دیتی ہے اور پھر وہی اُس انیائے میں رس لینے لگتے ہیں اور اُنہیں پھر اتنا رس آنے لگتا ہے کہ وہ یہ پکار اُٹھتے ہیں کہ انیائے کا بے مطلب ہی انیائے نام رکھ چھوڑا ہے. وہ نہ کسی کو ستاتا ہے نہ کسی کو دکھ دیتا ہے وہ تو سبکی بھلائی کے لئے ہے. ہاں یہ ٹھیک ہے کہ اُن کا کہنا اُس نا سمجھ ماں جیسا ہی ہوتا ہے جو پہلے افیم کی بے حد برائی کرتی تھی اور پھر اپنے بچے کی افیم کی عادت ڈالکر یہ کہنے لگے کہ لوگوں نے افیم کو یوں ہی بدنام کر رکھا ہے. وہ تو کسی کا بھی نقصان ہی نہیں کرتی، بچے کا بھلا کرتی ہے کیونکہ اُسے آرام کے ساتھ سلاتی ہے. ماں کا بھلا کرتی ہے کیونکہ اُس کو آرام کے ساتھ کام میں لگنے کا موقعہ دیتی ہے. بس ستیاگرہی یہ سوچ لیں کہ وہ اب اُس منزل تک آپہنچے ہیں جہاں انیائے دیکھکر کترانے کا کام ہوتا ہے اور اب وہ منزل دور نہیں ہے جب انیائے میں ستیہ اور اہنسا سے اُپدیشوں کا رس ملنے لگے گا

دیپک روز بجھتے ہیں. پر عام طور سے ایسے وقت بجھتے ہیں کہ پھر دس بارہ گھنٹے اُنکے جلنے کی ضرورت نہیں رہتی. کیا ہندستان کا ستیاگرہ دیپ شام کو ہی بجھ گیا تھا؟ یا رات کے بارہ بجے بجھا تھا؟ صبح تو ہرگز نہیں بجھا تھا. نہیں تو کیا

दावा करता है. और दावा करके ही नहीं रह जाना चाहता, सब की भलाई में लगने की तैयारी कर रहा है और अपनी शक्ति के माफ़िक़ भलाई कर भी रहा है. क्या वह यह नहीं समझता कि अन्याय उस सीमा को लांघ चुका है जब या तो उसे सत्याग्रही अपनी सीमा के अन्दर कर सकता है या फिर अन्धबली उसे शिव जी का नाच नचा सकता है ? यों तो सत्याग्रही को कभी ठाली बैठने का हक़ नहीं है पर अगर सत्याग्रही ऐसे नाज़ुक मौक़े को भी हाथ से खोदे तब तो हम यही कहेंगे कि वह किसी भारी मोह मे फंस गया है और उसे अब किसी कृष्ण भगवान के उपदेश की ज़रूरत है.

अकेले सत्याग्रह किया जा सकता है. और हो सकता है कहीं कहीं हो भी रहा हो. पर उस सत्याग्रह का मोल इतना ही है जितना अन्धेरी कोठरी मे एक दियासलाई के जल उठने का. वही दियासलाई अगर किसी तेल भरे दिये की बत्ती जलादे तो उस बत्ती का मोल बहुत ज़्यादा होता है. और अगर वही दियासलाई किसी गेस-सॉट से जुड़ी बत्ती को जलादे तो उस गैस बत्ती का मोल तो बेहद होता है. ठीक इसी तरह किसी मामूली संगठन से हुक्म पाकर एक सत्याग्रही भी बहुत देर तक अन्याय का मुकाबला कर सकता है और किसी बड़े संगठन से हुक्म पाकर तो वह इतना काम कर जायगा जिसका अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता.

सत्य और अहिंसा के पुजारियों को चाहिये कि इस समय हिन्दुस्तान को बुरे दिनो से बचाने की कोशिश करें फिर वह सत्य और अहिंसा के पुजारी कहीं भी किसी रूप मे भी संगठित क्यों न हों. क्या वह यह चाहते हैं कि उन जैनो की तरह से बदनाम हों जो अपने आपको

دعوا کرتا ہے. اور دعوا کرکے ہی نہیں رہ جانا چاہتا، سبکی بھلائی میں لگنے کی تیاری کر رہا ہے اور اپنی شکتی کے موافق بھلائی کر بھی رہا ہے. کیا وہ یہ نہیں سمجھتا کہ انیائے اُس سیما کو لانگھ چکا ہے جب یا تو اُسے ستیا گرہی اپنی سیما کے اندر کرسکتا ہے یا پھر اندھ بلی اُسے شِو جی کا ناچ نچا سکتا ہے ؟ یوں تو ستیا گرہی کو کبھی ٹھالی بیٹھنے کا حق نہیں ہے پر ستیا گرہی ایسے نازک موقع کو بھی ہاتھ سے کھودے تب تو ہم یہی کہیں گے کہ وہ کسی بھاری موہ میں پھنس گیا ہے اور اُسے اب کسی کرشن بھگوان کے اُپدیش کی ضرورت ہے .

اکیلے ستیاگرہ کیا جا سکتا ہے کہیں کہیں ہو بھی رہا ہو. پر اُس ستیاگرہ کا مول اتنا ہی ہے جتنا اندھیری کوٹھری میں ایک دیا سلائی کے جل اُٹھنے کا. وہی دیا سلائی اگر کسی تیل بھرے دیئے کی بتی جلادے تو اُس بتی کا مول بہت زیادہ ہوتا ہے. اور اگر وہی دیا سلائی کسی گیس پلانٹ سے جڑی بتی کو جلادے تو اُس گیس بتی کا مول تو بے حد ہوتا ہے. ٹھیک اسی طرح کسی معمولی سنگٹھن سے حکم پاکر ایک ستیا گرہی بھی بہت دیر تک انیائے کا مقابلہ کر سکتا ہے اور کسی بڑے سنگٹھن سے حکم پاکر تو وہ اتنا کام کرجائیگا جسکا اندازہ نہیں لگایا جاسکتا

ستیہ اور اہنسا کے پجاریوں کو چاہئے کہ اس سمے ہندستان کو برے دنوں سے بچانے کی کوشش کریں. پھر وہ ستیہ اور اہنسا کے پجاری کہیں بھی کسی روپ میں بھی سنگٹھت کیوں نہ ہوں. کیا وہ یہ چاہتے ہیں کہ اُن جینوں کی طرح سے بدنام ہوں جو اپنے آپکو

गन्नो में ही बहुत रस निकल आयगा और जल्दी शान्ति कायम हो जायगी. इस तरह देश का नुक़सान कम से कम होगा और जीत सत्य की होगी. इसलिये शान्ति बहुत दिनो तक टिकी रहेगी. हिंसा-अहिंसा-मिले न्याय मे जनता की जान पर आ बनेगी, बहुतो की जान जोखम मे रहेगी, सरकार को कम जोखन तो न होगी पर सत्याग्राहियों के मुक़ाबले मे बहुत कम जोखम होगी. इस आन्दोलन मे ज्वार के फटेरे ज्यादा पिलेगे, भूल से कुछ गन्ने भी पिल जायेगे. आख़िर मे शान्ति की स्थापना होगी जो बहुत थोड़ी देर टिक पायेगी. इसमे देश पहले से ज्यादा टोटे मे रहेगा. अन्याग-भड़क-मिले अन्धबल के उठ खड़े होने पर सारा देश जोखम मे पड़ेगा न जनता बचेगी न सरकार, न भले बचेंगे न बुरे. हाँ, इस हुल्लड़ के बाद बहुत जल्दी शान्ति की स्थापना होगी. पर हो सकता है कि उस शान्ति के पांव जमते जमते फिर अशान्ति आ कूदे. क्योंकि शान्ति हमेशा भलो का सहारा चाहती है और भले इतनी जल्दी हाथ नहीं लगते. इसलिये हुल्लड़ के बाद की शान्ति कभी भी टिकाऊ नहीं होती.

अब हम सीधे और साफ़ साफ़ उन लोगों से पूछना चाहते हैं जो अपने आप को सत्य और अहिंसा का ठेकेदार समझते हैं (यहाँ हम ठेकेदार लफ़्ज़ न चिढ़ कर कह रहे हैं, न चिढ़ाने के लिये कह रहे हैं. हां, ठेकेदार लफ़्ज़ बेशक भारी और खटकने वाला है पर उन ठेकेदारों के प्रति हमारा प्रेम कहाँ कम है ? और वह भी तो हमारे मन को बुरी तरह खसोट रहा है. उस कसक से भारी और चुभता शब्द तो निकलेगा ही) और जिन्होंने सत्य और अहिंसा के नाम पर एक ऐसा संगठन तैयार किया है जो सब की भलाई का

گنوں میں هی بہت رس نکل آئے گا اور جلدی شانتی قائم هو جائیگی . اِس طرح دیش کا نقصان کم سے کم هوگا اور جیت ستیہ کی هوگی . اِس لئے شانتی بہت دنوں تک ٹکی رهے گی هنسا اهنسا ملے نیائے میں جنتا کی جان پر آبنے گی ' بہتوں کی جان جوکھم میں رهے گی سرکار کو کم جوکھم تو نہ هوگی پر ستیاگرهیوں کے مقابلے میں بہت کم جوکھم هوگی . اِس آندولن میں جوار کے پھٹیرے زیادہ پلیں گے بھول سے کچھ گنّے بھی پل جائیں گے . آخر میں شانتی کی استھاپنا هوگی جو بہت تھوڑی دیر تک پائے گی . اِس میں دیش پہلے سے زیادہ ٹوٹے میں رهے گا انیائے بھڑک ملے اندھ بل کے اٹھ کھڑے هونے پر سارا دیس جوکھم میں پڑے گا ' نہ جنتا بچے گی نہ سرکار ' نہ بھلے بچیں گے نہ برے . هاں ' اس هلڑ کے بعد بہت جلدی شانتی کی استھاپنا هوگی . پر هو سکتا هے کہ اُس شانتی کے پاؤں جمتے جمتے پھر اشانتی آ کودے . کیونکہ شانتی همیشہ بھلوں کا سہارا چاهتی هے اور بھلے اتنی جلدی هاتھ نہیں لگتے. اسلئے هلڑ سے بعد کی شانتی کبھی بھی ٹکاؤ نہیں هوتی.

اب هم سیدھے اور صاف صاف اُن لوگوں سے پوچھنا چاهتے هیں جو اپنے آپکو ستیہ اور اهنسا کا ٹھیکیدار سمجھتے هیں. (یہاں هم ٹھیکیدار لفظ نہ چڑھکر کہہ رهے هیں نہ چڑھانے کے لئے کہہ رهے هیں. هاں ' ٹھیکیدار لفظ بیشک بھاری اور کھٹکنے والا هے پر اُن ٹھیکیداروں کے پرتی همارا پریم کہاں کم هے ؟ اور وہ بھی تو همارے من کو بری طرح کھسوٹ رها هے. اُس کسک سے بھاری اور چبھتا شبد تو نکلے گا هی.) اور جنہوں نے ستیہ اور اهنسا کے نام پر ایسا سنگٹھن تیار کیا هے جو سبکی بھلائی کا

देखती थी, आनन्द लेती थी, रोकती थी तो तमाशे मे जोर लाने के लिए रोकती थी. जिस अन्याय मे जनता आनंद ले वह फिर न्याय की कोटि को पहुंच जाता है. फारसी की एक कहावत है "बहुतो का एक साथ मरना तमाशे का रूप ले लेता है" और उस कहावत पर हम बिहार के भूकम्प के तजरबे के बल पर सचाई की मुहर लगाने को तैयार हैं. ऐसे मौको पर आदमी अपने एक का रोना क्या उसके सामने रोये जो पहले ही से पांच का रोना रो रहा है ? और वह पांच वाला क्या उस एक वाले के सामने रोये जिसको रोते अभी एक मिनट नही हुआ कि वह एक वाला दस का रोना रोने लगता है ? ऐसे मौको पर हँसना ही ठीक होता है और लोग हँसते ही देखे गये है. पर आज तो न बिहार का भूकम्प है और न अराजकता है जिसमे जनता खुले हाथो बदला लेने के लिए आज़ाद होती है. इस व़क्त तो उसकी तसल्ली सत्य, अहिंसा से जन्मा सत्याग्रह कर सकता है या न्याय और सरकार से जन्मी तलवार कर सकती है. इन दोनो में से अगर कोई भी उसकी तसल्ली न कर सका तो फिर अन्याय और भड़क से उठी तलवार बहुत जल्दी उसकी मदद के लिए मैदान मे आ कूदेगी. प्रकृति ऐसे मामलो मे ज्यादा इन्तजार नही किया करती. इस व़क्त सब के लिए मौका है. अहिंसा के लिए हिंसा-अहिंसा-मिले न्याय के लिए और अन्याय-भड़क-मिले अन्धबल के लिए. जो इस मौके से फायदा उठायेगा वही आगे बढ़ जायगा हाँ, सत्याग्रह मे जनता के लिए कम जोखम है, सरकार के लिए कोई जोखम नही, सत्याग्रहियो के लिये बहुत बड़ी जोखम है और जान जोखम भी है. यह ठीक है कि उसमें गन्ने पेले जायेगे पर थोड़े

دیکھتی تھی ' آنند لیتی تھی ' روکتی تھی تو تماشہ میں زور لانے کے لئے روکتی تھی . جس انیائے میں جنتا آنند لے وہ پھر نیائے کی کوٹی کو پہنچ جاتا ہے . فارسی کی ایک کہاوت ہے — '' بہتوں کا ایک ساتھ مرنا تماشے کا روپ لے لیتا ہے . ' اور اُس کہاوت پر ہم بہار کے بھونچال کے تجربے کے بل پر سچائی کی مہر لگانے کو تیار ہیں . ایسے موقعوں پر آدمی اپنے ایک رونا کیا اُسکے سامنے روئے جو پہلے ہی سے پانچ کا رونا رو رہا ہے ؟ اور وہ پانچ والا کیا اُس ایک والے کے سامنے روئے جسکو روتے ابھی ایک منٹ نہیں ہوا کہ وہ ایک والا دس کا رونا رونے لگتا ہے ؟ ایسے موقعوں پر ہنسنا ہی ٹھیک ہوتا ہے اور لوگ ہنستے ہی دیکھے گئے ہیں . پر آج تو نہ بہار کا بھونچال ہے اور نہ اراجکتا ہے جسمیں جنتا کھلے ہاتھوں بدلہ لینے کے لئے آزاد ہوتی ہے . اُس وقت تو اُسکی تسلی ستیہ اہنسا سے جنما ستیاگرہ کرسکتا ہے یا نیائے اور سرکار سے جنمی تلوار کرسکتی ہے . ان دونوں میں سے اگر کوئی بھی اُسکی تسلی نہ کرسکا تو پھر انیائے اور بھڑک سے اُٹھی تلوار بہت جلدی اُسکی مدد کے لئے میدان میں آ کودیگی . پرکرتی ایسے معاملوں میں زیادہ انتظار نہیں کیا کرتی . اس وقت سب کے لئے موقعہ ہے . اہنسا کے لئے ' ہنسا اہنسا ملے نیائے کے لئے اور انیائے بھڑک ملے اندھ بل کے لئے . جو اِس موقعہ سے فائدہ اُٹھائیگا وہی آگے بڑھ جائیگا ہاں ' ستیاگرہ میں جنتا کے لئے کم جوکھم ہے ' سرکار کے لئے کوئی جوکھم نہیں ' ستیاگرہیوں کے لئے بہت بڑی جوکھم ہے ' اور جان جوکھم بھی ہے . یہ ٹھیک ہے کہ اُس میں گنّے پیلے جائینگے پر تھوڑے

आज तो वह वक्त कैसे भी नहीं है. अन्याय जड़ तो पकड़े हुए है कई सदियों से, पर आज तो वह इतना फल फूल रहा है कि दस बीस और सौ दो सौ आदमी ही नहीं, करीब करीब सब अखबार वाले, यहाँ तक कि सरकार के जिम्मेदार अफसर और वह तक जिनके हाथ में आज हुकूमत की बागडोर है, खुले खुले प्लेट-फार्मों और रेडियो से सीधे नासीधे उसकी बढ़वारी को कुबूल कर रहे हैं. अगर इस व़क्त अन्याय के ख़िलाफ़ अहिंसा का हथियार, सत्याग्रह काम में न लाया गया तो हिंसा का हथियार, ख़ूनी क्रांति आपों-आप जगह ले-लेगी अगर अन्याय को अधर्म भी कहा जा सकता है तो गीता के अनुसार हमारी राय में भगवान के अवतार लेने का यही व़क्त है. खुल्लम खुल्ला इतने बड़े पैमाने पर सरकार को चुनौती देने वाले अन्याय ने कभी जन्म लिया हो, हमें याद नहीं पड़ता.

आज़ादी से पहले के अन्याय के साथ इस अन्याय की तुलना नहीं की जा सकती. वह अपने किस्म का अलग अन्याय था. उसमें कभी अन्यायी भी अन्याय का शिकार होता था. उस व़क्त तो एक तरह की अराजकता फैली हुई थी. अराजकता में जनता अन्याय का बदला लेने के लिए खुली रहती है इसलिए वह अन्याय अखरता नहीं है. उससे बचने के लिए ईश्वर से बहुत कम मदद मांगी जाती है. उस व़क्त तो हथियारों की पूजा होती है और गुण्डा देव की मन्नतें मानी जाती हैं. ईश्वर की ज़रूरत न होने से ईश्वर के अवतार का वह व़क्त नहीं हो सकता. और फिर हिन्दुस्तान के उस तमाशे के पीछे एक ताक़त थी और वह ताक़त खड़ी खड़ी उस तमाशे को।

آج تو وہ وقت کیسے بھی نہیں ہے. انیائے جڑ تو پکڑے ہوئے ہے کئی صدیوں سے' پر آج تو وہ اتنا پھل پھول رہا ہے کہ دس بیس اور سو دوسو آدمی ہی نہیں' قریب قریب سب اخبار والے' یہاں تک کہ سرکار کے ذمہ‌دار افسر اور وہ تک' جنکے ہاتھ میں آج حکومت کی باگ ڈور ہے' کھلے کھلے پلیٹ فارموں اور ریڈیو سے سیدھے نا سیدھے اسکی بڑھواری کو قبول کرا رہے ہیں. اگر اس وقت انیائے کے خلاف اہنسا کا ہتھیار' ستیاگرہ کام میں نہ لایا گیا تو ہنسا کا ہتھیار' خونی کرانتی آپوں آپ جگہ لے لیگی اگر انیائے کو ادھرم بھی کہا جا سکتا ہے تو گیتا کے انوسار ہماری رائے میں بھگوان کے اوتار لینے کا یہی وقت ہے کھلم کھلا اتنے بڑے پیمانے پر سرکار کو چنوتی دینے والے انیائے نے کبھی جنم لیا ہو' ہمیں یاد نہیں پڑتا

آزادی سے پہلے کے انیائے کے ساتھ اس انیائے کی تلنا نہیں کی جا سکتی. وہ اپنے قسم کا الگ انیائے تھا. اُس میں کبھی انیائی بھی انیائے کا شکار ہوتا تھا اُس وقت تو ایک طرح کی اراجکتا پھیلی ہوئی تھی. اراجکتا میں جنتا انیائے کا بدلہ لینے کے لئے کھلی رہتی ہے. اس لئے وہ انیائے اکھرتا نہیں ہے. اُس سے بچنے کے لئے ایشور سے بہت کم مدد مانگی جاتی ہے اُس وقت تو ہتھیاروں کی پوجا ہوتی ہے اور گنڈا دیو کی منتیں مانی جاتی ہیں. ایشور کی ضرورت نہ ہونے سے ایشور کے اوتار کا وہ وقت نہیں ہو سکتا. اور پھر ھندستان کے اُس تماشے کے پیچھے ایک طاقت تھی اور وہ طاقت کھڑی کھڑی اُس تماشے کو

को यह दूसरी शर्त निभाये बिना उसपर असर ही नही पड़ता जिस के खिलाफ़ सत्याग्रह किया जाय. अंगरेजो के खिलाफ़ हिन्दुस्तान ने सत्याग्रह करके उनका ज़रा भी बाल बांका नहीं होने दिया और अच्छी तरह से उन्हें घर पहुँचा दिया और सैकड़ो आफ़तो से बचा दिया. यहाँ तक कि हिन्दुस्तान के आखिरी वाइसराय माउन्टबेटेन को ' माउन्टबेटेन की जय ' के साथ बम्बई के बाजारों से जलूस निकाल कर आराम के साथ जहाज में बैठा दिया और घर पहुँचा दिया. सत्याग्रही मे जब ऐसी भावनाएँ नही होती तभी वह सत्याग्रह करने की हिम्मत नही करता. इस समय जो अन्याय फैले हुए हैं और उन अन्यायो के जो कारण हैं उनके खिलाफ़ सत्याग्रह करना उनकी जान जोखम मे डालना है. उस आदमी की कहानी से कौन वाक़िफ़ नहीं है जिसने फांसी चढ़ते समय आखिरी मुलाक़ात के वक़्त अपनी मां का कान इस लिए कुतर लिया था कि उसने उसको पहली चोरी करते हुए न डांटा डपटा था, न उस चोरी के माल को घर में रखने के खिलाफ़ सत्याग्रह ही किया था. ठीक इसी तरह वह लोग जो आज के अन्यायो के सीधे नासीधे कारन बने हुए हैं कभी न कभी आफ़त मे पड़ने पर उन सच्चे दोस्तो और रिश्तेदारो के कान कुतरने के हर तरह हक़दार हो जायेंगे जो आज अन्यायो के खिलाफ़ सत्याग्रह करने को किसी झिझक के कारन उस मुद्दत तक टालने की सोचते हैं जब इस कहावत का वक़्त आ जायगा कि ' अब पछताये होत क्या, जब चिड़ियां चुग गईं खेत '.

सूरज की तरह सत्याग्रही जमात के लिए कभी ऐसा वक़्त नहीं आ सकता जब सत्याग्रह करने की ज़रूरत ही न रह जाय. और

کی یہ دوسری شرط نبھائے بنا اُس پر اثر ہی نہیں پڑتا جس کے خلاف ستیاگرہ کیا جائے. انگریزوں کے خلاف ہندستان نے ستیاگرہ کرکے اُن کا ذرا بھی بال بانکا نہیں ہونے دیا اور اچھی طرح سے اُنہیں گھر پہنچا دیا اور سیکڑوں آفتوں سے بچا دیا. یہاں تک کہ ہندستان کے آخری وائسرائے ماؤنٹ بیٹن کو 'ماؤنٹ بیٹن کی جے' کے ساتھ بمبئی کے بازاروں سے جلوس نکال کر آرام کے ساتھ جہاز میں بٹھا دیا اور گھر پہنچا دیا ستیاگرہی میں جب ایسی بھاؤنائیں نہیں ہوتیں تبھی وہ ستیاگرہ کرنے کی ہمت نہیں کرتا. اس سمے جو انیائے پھیلے ہوئے ہیں اور اُن انیایوں کے جو کارن ہیں اُن کے خلاف ستیاگرہ کرنا اُن کی جان جوکھم میں ڈالنا ہے اُس آدمی کی کہانی سے کون واقف نہیں ہے جس نے پھانسی چڑھتے سمے آخری ملاقات کے وقت اپنی ماں کا کان اس لئے کتر لیا تھا کہ اُس نے اُس کو پہلی چوری کرتے ہوئے نہ ڈانٹا ڈپٹا تھا، نہ اُس چوری کے مال کو گھر میں رکھنے کے خلاف ستیاگرہ ہی کیا تھا. ٹھیک اسی طرح وہ لوگ جو آج کے انیایوں کے سیدھے یا سیدھے کارن بنے ہوئے ہیں، کبھی نہ کبھی آفت میں پڑنے پر اُن سچے دوستوں اور رشتہ داروں کے کان کترنے کے ہر طرح حقدار ہوجائیں گے. جو آج انیایوں کے خلاف ستیاگرہ کرنے کو کسی جھجھک کے کارن اُس مدت تک ٹالنے کی سوچتے ہیں جب اُس کہاوت کا وقت آ جائیگا کہ 'اب پچھتائے ہوت کیا جب چڑیاں چگ گئیں کھیت.'

سورج کی طرح ستیاگرہی جماعت کے لئے کبھی ایسا وقت نہیں آ سکتا جب ستیاگرہ کی ضرورت نہ رہ جائے اور

जलाने वाले के उठ जाने से हिन्दुस्तान के वातावरण मे इतना आक्सिजन ही नही रह गया जितने की समाज-सत्याग्रह-दीप जलने के लिये जरूरत होती है. भले ही कुछ सत्याग्रह-दर्शन के महापंडित उपदेशो की दियासलाई रगड़ रगड़ कर उस दीप की बत्ती को जलाने की कोशिश करें पर आक्सिजन के बिना वह भड़क कर रह जायगी न खुद जलेगी. न बत्ती को मिलका सकेगी

कुछ लोग यह कह सकते हैं कि अब सत्यग्रह की जरूरत नही. पर ऐसा कहने वाले यह नही सोचते कि यह साबित करने की जिम्मेदारी उनके सर आजायगी कि अब हिन्दुस्तान मे कोई अन्याय नही रहा और क्या वह ऐसा साबित कर सकेंगे ? सत्याग्रह की पहलेसे अब ज्यादा जरूरत है और अब सत्याग्रह जनता के लिये ज्यादा आसान है. सत्याग्रह की सबसे पहली शर्त है उसको प्यार करना जिसके खिलाफ सत्याग्रह किया जाय. विदेशी सरकार के रहते यह गिने चुने समझदारों का काम था क्योंकि विदेशियो को प्यार करना और फिर उन विदेशियो को प्यार करना जिन्होने हमारी धन-धरती हरली हो, हरेक का काम नही. पर आज तो सरकार अपने भाइयों की है और सैकड़ो के गुरुभाइयों की है. फिर उनसे जो थोड़ा बहुत प्यार है उसे और बढ़ा कर सत्याग्रह करने मे पहले से कहीं ज्यादा आसानी हो सकती है. इस समय सवाल प्यार के न होने या प्यार की कमी का नहीं है पर सवाल है सत्याग्रह की दूसरी शर्त पूरी करने का और वह है अपना सुख त्यागने का. अपने तन, धन, जन को जोखम में डालने का. क्योंकि सत्याग्रह

جلانے والے کے اُٹھ جانے سے هندستان کے واتاورن میں اتنا آکسیجن هی نہیں رہ گیا جتنے کی سماج ستیاگرہ دیپ جلنے کے لئے ضرورت هوتی هے. بھلے هی کچھ ستیاگرہ درشن کے مہا پنڈت اُپدیشوں کی دیاسلائی رگڑ رگڑ کر اُس دیپ کی بتی کو جلانے کی کوشش کریں پر آکسیجن کے بنا وہ بھڑک کر رہ جائیگی' نہ خود جلے گی نہ بتی کو ملا سکے گی

کچھ لوگ یہ کہہ سکتے هیں کہ اب ستیاگرہ کی ضرورت نہیں. پر ایسا کہنے والے یہ نہیں سوچتے کہ یہ ثابت کرنے کی ذمہداری اُن کے سر آجائیگی کہ اب هندستان میں کوئی انیائے نہیں رہا اور کیا وہ ایسا ثابت کر سکیں گے ؟ ستیاگرہ کی پہلے سے اب زیادہ ضرورت هے' اور اب ستیاگرہ جنتا کے لئے زیادہ آسان هے. ستیاگرہ کی سب سے پہلی شرط هے اُس کو پیار کرنا جسکے خلاف ستیاگرہ کیا جاے. ودیشی سرکار کے رهتے یہ گنے چنے سمجھداروں کا کام تھا کیونکہ ودیشیوں کو پیار کرنا اور اُن ودیشیوں کو پیار کرنا جنھوں نے هماری دھن دھرتی هرلی هو' هر ایک کا کام نہیں. پر آج تو سرکار اپنے بھائیوں کی هے اور سیکڑوں کے گرو بھائیوں کی هے. پھر ان سے جو تھوڑا بہت پیار هے اُسے اور بڑھا کر ستیاگرہ کرنے میں پہلے سے کہیں زیادہ آسانی هوسکتی هے اس سمے سوال پیار کے نہ هونے یا پیار کی کمی کا نہیں هے' پر سوال هے ستیاگرہ کی دوسری شرط پوری کرنے کا اور وہ هے اپنا سکھ تیاگنے کا. اپنے تن' دھن' جن کو جوکھم میں ڈالنے کا. کیونکہ ستیاگرہ

वाले की मन्शा सभी तरह के अन्यायों के खिलाफ सत्याग्रह करने की थी. यह दूसरी बात है कि उसकी पहली नजर सरकार के अन्यायों पर पड़ी क्योंकि उसके अन्यायों से हिन्दुस्तान का बच्चा बच्चा दुखी था. असलमे सत्याग्रही सरकार, समाज और व्यक्ति के अन्याय मे कोई भेद नहीं करता तभी तो हिन्दुस्तान मे जब सरकार के खिलाफ सत्याग्रह ढीला पड़ जाता था तो वह दूसरी तरफ जोरदार हो जाता था यानी पूंजी पतियों के अन्यायों की तरफ और पुरोहितों के अन्यायों की तरफ ,उसका जोर बढ़ जाता था. और आज़ादी मिलने पर वही सत्याग्रह धर्मान्धों से जा भिड़ा. कुछ भी सही. उसने शुरू होने के दिन से उस दिन तक कभी चैन नहीं लिया जब तक हिन्दुस्तान से वही नही चल बसा जिसने सत्याग्रह-दीप जलाया था. अब या तो यह समझिये कि सत्याग्रह-दीप बुझ गया और बुझा इस वजह से कि जिसने इसे जलाया था वही इस दीप का तेल था और हम सब उस के साथी निरी बत्ती और मिट्टी के दिये थे या अगर हम यह समझें कि हम तेल है तो फिर वही मिट्टी का दिया रुई की बत्ती और जलती हुई ज्योति था. कुछ भी मानिये, सत्याग्रह-दीप जलाने वाला वह कुछ ऐसी चीज जरूर था जिसकी वजह से सत्याग्रह-दीप जलता और प्रकाश देता था. उस के उठ जाने से वह एकदम बुझ गया. हो सकता है आज का सर्वोदय-समाज यह दावा करे कि वह तेल है. बत्ती है. दिया है और सब कुछ है. वह सब कुछ सही पर जलती हुई 'ज्योति' हरगिज नहीं है क्यों नहीं है ? क्या कमी है ? इसका जवाब हम देने के खातिर दिये देते हैं कि उस दीप

والے کی منشا سبھی طرح کے انیایوں کے خلاف ستیاگرہ کرنے کی تھی. یہہ دوسری بات ہے کہ اُس کی پہلی نظر سرکار کے انیایوں پر پڑی کیونکہ اُس کے انیایوں سے ہندستان کا بچہ بچہ دکھی تھا. اصل میں ستیاگرہی سرکار، سماج اور ویکتی کے انیائے میں کوئی بھید نہیں کرتا تبھی تو ہندستان میں جب سرکار کے خلاف ستیاگرہ ڈھیلا پڑ جاتا تھا تو وہ دوسری طرف زور دار ہو جاتا تھا یعنی پونجی پتیوں کے انیایوں کی طرف اور پروہتوں کے انیایوں کی طرف اُسکا زور بڑھ جاتا تھا اور آزادی ملنے پر وہی ستیاگرہ دھرماندھوں سے جا بھڑا کچھ بھی سہی' اُس نے شروع ہونے کے دن سے اُس دن تک کبھی چین نہیں لیا جب تک ہندستان سے وہی نہیں چل بسا جس نے ستیاگرہ دیپ جلایا تھا. اب یا تو یہ سمجھئے کہ ستیاگرہ دیپ بجھ گیا اور بجھا اِس وجہ سے کہ جس نے اسے جلایا تھا وہی اس دیپ کا تیل تھا اور ہم سب اُس کے ساتھی نری بتی اور مٹی کے دیئے تھے یا اگر ہم یہ سمجھیں کہ ہم تیل ہیں تو وہی مٹی کا دیا روئی کی بتی اور جلتی ہوئی جیوتی تھا کچھ بھی مانئے' ستیاگرہ دیپ جلانے والا وہ کچھ ایسی چیز ضرور تھی جسکی وجہ سے ستیاگرہ دیپ جلتا اور پرکاش دیتا تھا اُس کے اُٹھ جانے سے وہ ایک دم بجھ گیا. ہو سکتا ہے آج کا سرودیے سماج یہ دعوا کرے کہ وہ تیل ہے' بتی ہے' دیا ہے اور سب کچھ ہے. وہ سب کچھ سہی پر جلتی ہوئی جیوتی' ہرگز نہیں ہے. کیوں نہیں ہے؟ کیا کمی ہے؟ اسکا جواب ہم دینے کے خاطر دیئے دیتے ہیں کہ اُس دیپ

जगह बदलते रहते हैं. फिर सत्य भक्त का काम कैसे खतम होसकता है और फिर किसी देश मे कोई एकदिन भी कैसे ऐसा होसकता है जब सत्याग्रही को सत्याग्रह की जरूरत न रहे ?

छोटे मोटे रूप मे हिन्दुस्तान मे ही नही हर देश मे हमेशा से सत्याग्रह होते आये हैं. राज-सत्ता के खिलाफ सामुहिक (इजतमाई) सत्याग्रह की बात पहले पहल हिन्दुस्तान को ही सूझी. वह शुरू किया गया. लोगो की शक्ति के अनुसार वह समय समय पर कम ज्यादा किया गया. यहाँ तक कि कभी कभी वह इतना कम कर दिया गया कि बटकर सिर्फ एक के लिये रह गया. यहाँ यह याद रहे कि वह एक का सत्याग्रह भी प्रह्लाद और मीरा के सत्याग्रह से कई गुना ज्यादा जोरदार था क्योंकि उस एक की पीठ पर हिन्दुस्तान का सारा समाज था. इस वास्ते हिन्दुस्तान की बेहद मजबूत विदेशी सरकार उस एक के साथ भी सख्ती करने मे ऊँच नीच का ध्यान रखती थी जबकि प्रह्लाद और मीरा की सरकार को इतना ज्यादा सोचने और समझने की जरूरत नही थी. हिन्दुस्तान मे सत्याग्रह शुरू होने के दिन से भली-बुरी आजादी मिलने के दिन तक किसी न किसी रूप में जरूर बना रहा. और यह बना रहा सरकार के अन्यायों के खिलाफ, सरकार के खिलाफ नही. अगर वह सरकार के खिलाफ था तो केवल इसलिये कि सरकार विदेशी थी और विदेशी सरकार का हमारे देशपर हुकूमत करना अन्याय था. इसलिये वह सरकार के खिलाफ होते हुए भी अन्याय के खिलाफ ही था. यहाँ यह याद रहे कि सत्याग्रह के हिन्दुस्तान में दीप जलाने

جگہ بدلتے رہتے ہیں. پھر ستیہ بھکت کا کام کیسے ختم ہو سکتا ہے اور پھر کسی دیش میں کوئی ایک دن بھی کیسے ایسا ہو سکتا ہے جب ستیا گرہ کی ضرورت نہ رہے ؟

چھوٹے موٹے روپ میں ہندستان میں ہی نہیں ہر دیش میں ہمیشہ سے ستیا گرہ ہوتے آئے ہیں. راج ستا کے خلاف ساموہک (اجتماعی) ستیا گرہ کی بات پہلے پہل ہندستان کو ہی سوجھی اور وہ شروع کیا گیا لوگوں کی شکتی کے انوسار وہ سمے سمے پر کم یا زیادہ کیا گیا یہاں تک کہ کبھی کبھی وہ اتنا کم کردیا گیا کہ گھٹکر صرف ایک کے لئے رہ گیا. یہاں یہ یاد رہے کہ وہ ایک کا ستیا گرہ بھی پرہلاد اور میرا کے ستیا گرہ سے کئی گنا زیادہ زور دار تھا کیونکہ اس ایک کی پیٹھ پر ہندستان کا سارا سماج تھا. اس واسطے ہندستان کی بیحد مضبوط ودیشی سرکار اس ایک کے ساتھ بھی سختی کرنے میں اونچ نیچ کا دھیان رکھتی تھی جبکہ پرہلاد اور میرا کی سرکار کو اتنا زیادہ سوچنے اور سمجھنے کی ضرورت نہیں تھی ہندستان میں ستیاگرہ شروع ہونے کے دن سے بھلی بری آزادی ملنے کے دن تک کسی نہ کسی روپ میں ضرور بنا رہا. اور یہ بنا رہا سرکار کے انیایوں کے خلاف سرکار کے خلاف نہیں. اگر وہ سرکار کے خلاف تھا تو کیول اس لئے کہ سرکار ودیشی تھی اور ودیشی سرکار کا ہمارے دیش پر حکومت کرنا انیائے تھا. اسلئے وہ سرکار کے خلاف ہوتے ہوئے بھی انیائے کے خلاف ہی تھا. یہاں یہ یاد رہے کہ ستیا گرہ کے ہندستان میں دیپ جلانے

ख़याल से नामुनासिब उपदेश समझाजाता. यही हाल अचौर्य और अपरिग्रह का है. जीवन-रक्षा का दूसरा पहलू है चोरी और ममता का दूसरा पहलू है परिग्रह. चोरी और परिग्रह हिंसा की तरह जीवन के लिये बेहद जरूरी हैं. इसलिये जब जब गुरुजन या महापुरुष चोरी न करने की बात करते है तब तब जीवन-रक्षा को कम करने का उपदेश देते है और परिग्रह कम करने मे ममता घटाने का पाठ छिपा रहता है. यो अचौर्य और अपरिग्रह नकारात्मक ही हो सकते थे और सत्य और ब्रह्मचर्य ही ऐसे थे जिनके नकारात्मक होने की जरूरत नही थी. उन दोनो मे से भी ब्रह्मचर्य अपने माने वह नही रखता जो आम दुनिया ने समझ रक्खे हैं. असल मे वह सत्य यानी परमेश्वर की व्याख्या-मात्र है. उसे सत्य का अंगही समझना चाहिये यह सब हम इस लिये लिख रहे है कि हम यह कहना चाहते है कि जो सत्य का भक्त है उस का जीवन कर्ममय मिलेगा. उसे सूरज की तरह पल-पल और पग-पग पर अंधेरे से भिड़ना होगा और उसे दूर करना होगा सूरज हमारी नजरमे निकलने के बाद भलेही बारह घंटे मे डूबता हो पर असलमे तो वह पल-पल पर निकलता और पल-पल पर डूबता है. यह किस को नही मालूम कि जब वह हिन्दुस्तानियो के लिये निकलता है तब वह अमरीका वालो के लिये डूबता है यानी जब वह हिन्दुस्तान के अन्धेरे को भगाता है तब अन्धेरा भागकर अमरीका पर धावा बोल देता है. सूरज हम सब को सबक दे रहा है कि प्रकाशवान् आत्मा को यानी सत्य भक्त को हमेशा सत्याग्रह करते रहना पड़ेगा. क्योंकि अन्धेरा और अन्याय यह दुनिया से कभी जाने वाले नहीं हैं. सिर्फ

خیال سے نا مناسب اُپدیش سمجھا جاتا. یہی حال اچوریہ اور اپریگرہ کا ہے. جیون رکشا کا دوسرا پہلو ہے چوری اور ممتا کا دوسرا پہلو ہے، پریگرہ. چوری اور پریگرہ ہنسا کی طرح جیون کے لئے بے حد ضروری ہیں اسلئے جب جب گروجن یا مہا پرش چوری نہ کرنے کی بات کہتے ہیں، تب تب جیون رکشا کو کم کرنے کا اُپدیش دیتے ہیں اور پری گرہ کم کرنے میں ممتا گھٹانے کا پاٹھ چھپا رہتا ہے. یوں اچوریہ اور اپریگرہ نکار اتمک ہی ہو سکتے تھے اور ستیہ اور برہمچریہ ہی ایسے تھے جن کے نکار اتمک ہونے کی ضرورت نہیں تھی. اُن دونوں میں سے بھی برہمچریہ اپنے معنے وہ نہیں رکھتا جو عام دنیا نے سمجھ رکھے ہیں! اصل میں وہ ستیہ یعنی پرمیشور کی ویاکھیا ماتر ہے اُسے ستیہ کا انگ ہی سمجھنا چاہئے. یہ سب ہم اِس لئے لکھ رہے ہیں کہ ہم یہ کہنا چاہتے ہیں کہ جو ستیہ کا بھکت ہے اُسکا جیون کرم مے ملے گا اُسے سورج کی طرح پل پل اور پگ پگ پر اندھیرے سے بھڑنا ہوگا اور اُسے دور کرنا ہوگا. سورج ہماری نظر میں نکلنے کے بعد بھلے ہی بارہ گھنٹے بعد ڈوبتا ہو پر اصل میں تو وہ پل پل پر نکلتا اور پل پل پر ڈوبتا ہے. یہ کس کو نہیں معلوم کہ جب وہ ہندستانیوں کے لئے نکلتا ہے تب وہ امریکہ والوں کے لئے ڈوبتا ہے یعنی جب وہ ہندستان کے اندھیرے کو بھگاتا ہے تب اندھیرا بھاگ کر امریکہ پر دھاوا بول دیتا ہے. سورج ہم سب کو سبق دے رہا ہے کہ پرکاش وان آتما کو یعنی ستیہ کو ہمیشہ ستیہ بھکت گرہ کرتے رہنا پڑے گا کیونکہ اندھیرا اور انیائے یہ دنیا سے کبھی جانے والے نہیں ہیں. صرف

वह तोतों को गोपन से मार गिराता है. यह ठीक है कि हिरन और तोतो के मारने मे इतना प्रेम नहीं चमकता जितना बलि देने मे. वह जरूर चमकता अगर हिरन और तोते उसके पालतू पशु, पक्षी होते. हां पौदे को उखाड़ते हुए देख कर वह अपने प्यारे बेटे को धमकाता है और उखाड़ने पर चपतियाता है. अपने पालतू जानवरो को खेत का नुकसान करने पर काफ़ी सजा देता है. इसलिये हिंसा प्रेम का एक पहलू-मात्र ही रह जाती है फिर कहिये, 'प्रेम करो' कहने से हिंसा कैसे छुड़ाई जा सकती है. प्रेम करने की बात कहना हिंसा का उपदेश देना है. देश-प्रेम मे आकर हिंसा का कौनसा काम है जिस के लिये मनुष्य तैयार नही हो सकता ? धन, धरती और धर्म-पत्नी को ख़ातिर ही तो सारी लड़ाइयाँ रची जाती है. फिर प्रेम को अहिंसा को जगह देकर रिषो किस तरह हिंसा न करने का सबक़ देसकते थे? अहिंसा अपनाने के सिवा कोई दूसरी राह ही न थी. अहिंसा के माने हैं हिंसा न करना. जब भी कोई रिषी यह कहता है कि हिंसा न करो तब वह यह कहता ही है कि दुनिया से प्रेम कम करो. प्रेम कम किये बग़ैर हिंसा करने मे कमी हो ही नही सकती. हिंसा छोड़ने की तो बात ही क्या ? देह रहते हुए और देह से लगावमात्र का प्रेम रहते हुए हिंसा पूरी तरह कभी नहीं छुट सकती. क्यों कि देह के लिये खाने का सामान जुटाना ही पड़ेगा और खाने का सामान हिंसा किये बिना जुटाया नही जा सकता. अब जब प्रेम और हिंसा का जोड़ा है तब अहिंसा का ही उपदेश दिया जा सकता है. अहिंसा की जगह प्रेम न करने का भी उपदेश दिया जा सकता था, पर वह दुनियादारो को खटकता और धर्म के

وہ طوطوں کو گوپن سے مار گراتا ہے ۔ یہہ ٹھیک ہے کہ ہرن اور طوطوں کے مارنے میں اتنا پریم نہیں چمکتا جتنا بلی دینے میں ۔ وہ ضرور چمکتا اگر ہرن اور طوطے اُسکے پالتو پشو پکشی ہوتے ۔ ہاں پودے کو اُکھاڑتے ہوئے دیکھکر وہ اپنے پیارے بیٹے کو دھمکاتا ہے اور اُکھاڑنے پر چپتیاتا ہے. اپنے پالتو جانوروں کو کھیت کا نقصان کرنے پر کافی سزا دیتا ہے. اسلئے ہنسا پریم کا ایک پہلو ماتر ہی رہ جاتی ہے ۔ پھر کہئے پریم کرو کہنے سے ہنسا کیسے چھوڑائی جاسکتی ہے پریم کرنے کی بات کہنا ہنسا کا اُپدیش دینا ہے دیش پریم میں آکر ہنسا کا کون سا کام ہے جس کے لئے منشیہ تیار نہیں ہوسکتا ؟ دھن ، دھرتی اور دھرم پتنی کی خاطر ہی تو ساری لڑائیاں رچی جاتی ہیں. پھر پریم کو اہنسا کی جگہہ دے کر رشی کس طرح ہنسا نہ کرنے کا سبق دے سکتے تھے ؟ اہنسا اپنانے کے سوا کوئی دوسری راہ ہی نہ تھی اہنسا کے معنی ہیں ہنسا نہ کرنا جب بھی کوئی رشی یہہ کہتا ہے کہ ہنسا نہ کرو تب وہ یہہ کہتا ہے کہ دنیا سے پریم کم کرو پریم کم کئے بغیر ہنسا کرنے میں کمی ہو ہی نہیں سکتی. ہنسا چھوڑنے کی تو بات ہی کیا ؟ دیہہ رہتے ہوئے اور دیہہ سے لگاؤ ماتر کا پریم رہتے ہوئے ہنسا پوری طرح کبھی نہیں چھٹ سکتی کیونکہ دیہہ کے لئے کھانے کا سامان جٹانا ہی پڑے گا اور کھانے کا سامان ہنسا کئے بنا جٹایا نہیں جاسکتا اب جب پریم اور ہنسا کا جوڑا ہے تب اہنسا کا ہی اُپدیش دیا جاسکتا ہے ۔ اہنسا کی جگہہ پریم نہ کرنے کا بھی اُپدیش دیا جاسکتا تھا ، پر وہ دنیا داروں کو کھٹکتا اور دھرم کے

रूपी सिक्के के प्रेम और हिंसा दो पहलू हैं. इसलिये अहिंसा का बदल प्रेम किसी तरह नहीं हो सकता. जो ऐसा मानते हैं उन्हीं का यह कहना है कि अहिंसा का मतलब है हिंसा न करना. इस अहिंसा गुन के ज़रिये वह जीव रूपी सिक्के के दोनों पहलुओं को एक साथ घिसना चाहते हैं और जीव को हलका बनाना चाहते हैं. हिंसा न करने से प्रेम आपो आप घटेगा. यह उड़ा देने की बात नहीं है. सचमुच गहरी बात है. हिंसा की जड़ में प्रेम रहता ही है. बलिदान और कुरबानी की बुनियाद ईश्वर के प्रेम पर नहीं है तो किस पर है ? बक़रीद की क़ुरबानी की कथा मे प्रेम की परीक्षा लिये जाने का ज़िक्र है. काली पर बलिदान करने वालों को देखिये, वह कितने प्रेम से भरे हुए मिलेंगे. उन मे उस देवी के लिये ही प्रेम उमड़ता नहीं मिलेगा जिसको बलि दी जा रही है, उनमे उसके लिये भी प्रेम की बहुत बड़ी मात्रा मिलेगी जिसकी बलि दी जारही है. जीव-रक्षिणी सभा के मेम्बरों को बलि का सिर कटता ही देखने को मिलता है. उन सब के सामने वह श्रम (मेहनत और प्यार कहाँ होता है जिस श्रम और प्यार से उस बलि को पाला गया होता है. बलि देने वाले न पशु को मारते हैं और न उसकी जान लेते हैं ; वह तो बलि देते हैं. वह आयेदिन अपने बच्चों के साथ बड़े प्रेम से यह कहते मिलेंगे 'मैं तुझ पर बलि जाऊँ,' अब कहिये कि क्या बलि की हिंसा प्रेम का ही दूसरा रूप नहीं है ? किसान अपनी खेती से प्रेम करता है तभी तो उस हिरन की जान लेता है जो निकलती हुई कोंपल को कुतर कुतर कर खाता है. माली अपने फलों को प्यार करता है और क्यों न प्यार करे ? वह उसकी रोज़ी है. तभी तो

روپی سکے کے پریم اور ہنسا دو پہلو ہیں. اس لئے اہنسا کا بدل پریم کسی طرح نہیں ہوسکتا. جو ایسا مانتے ہیں انہیں کا یہ کہنا ہے کہ اہنسا کا مطلب ہے ہنسا نہ کرنا. اس اہنسا گن کے ذریعہ وہ جیو روپی سکے کے دونوں پہلوؤں کو ایک ساتھ گھسنا چاہتے ہیں اور جیو کو ہلکا بنانا چاہتے ہیں. ہنسا نہ کرنے سے پریم آپوں آپ گھٹیگا یہ اُڑادینے کی بات نہیں ہے. سچ مچ گہری بات ہے ہنسا کی جڑ میں پریم رہتا ہی ہے. بلیدان اور قربانی کی بنیاد ایشور کے پریم پر نہیں ہے تو کس پر ہے ؟ بقرعید کی قربانی کی کتھا میں پریم کی پریکشا لئے جانے کا ذکر ہے . کالی پر بلیدان کرنے والوں کو دیکھئے وہ کتنے پریم سے بھرے ہوئے ملیں گے . ان میں اُس دیوی کے لئے ہی پریم اُمڑتا نہیں ملے گا جسکو بلی دی جارہی ہے اُن میں اسکے لئے بھی پریم کی بہت بڑی ماترا ملے گی جسکی بلی دی جارہی ہے . جیورکشنی سبھا کے ممبروں کو بلی کا سر کٹتا ہی دیکھنے کو ملتا ہے . اُن سب کے سامنے وہ شرم (محنت) اور پیار کہاں جس شرم اور پیار سے اُس بلی کو پالا گیا ہوتا ہے بلی دینے والے پشو کو مارتے ہیں اور نہ اُسکی جان لیتے ہیں وہ بلی دیتے ہیں . وہ آئےدن اپنے بچوں کے ساتھ بڑے پریم سے یہ کہتے ہوئے ملیں گے . میں تجھ پر بلی جاؤں : اب کہئے کہ کیا بلی کی ہنسا پریم کا ہی دوسرا روپ نہیں ہے ؟ کسان اپنی کھیتی سے پریم کرتا ہے تبھی تو اُس ہرن کی جان لیتا ہے جو نکلتی ہوئی کونپل کو کتر کتر کر کھاتا ہے . مالی اپنے پھلوں کو پیار کرتا ہے اور کیوں نہ پیار کرے ؟ وہ اس کی روزی ہے تبھی تو

की बात का जवाब यही है कि अंधेरे को प्रकाश से डर कर या कहीं छिपकर ही रहना पड़ता है या प्रकाश के सगे सहोदर दीप बरतन की आड़ लेनी पड़ती है. उसी तरह झूट और अन्याय को भी कहीं छिपकर रहना पड़ेगा या सत्य वादी के किसी सगे सहोदर की आड़ लेनी पड़ेगी, पर इस बीसवीं सदी में तो प्रकाश की ऐसी कुप्पियां बन गई हैं जिनकी वजह से अंधेरे को कहीं छिपने की जगह नहीं मिलती यानी प्रकाश के सगे सहोदर भी इतने प्रकाशवान हो गये है कि उन की शरन लेते हुए भी अंधेरा थर थर कांपता है. उसी तरह सत्य वादी के सगे सहोदर भी कम से कम इतने सत्य वादी होने ज़रूरी हैं कि झूट और अन्याय उन को शरन न ले सकें और उनके पास जाते हुए ऐसे ही थर थर कांपे जैसे अंधेरा लालटेन की चिमनी के पास जाते हुए काँपता है. असलमें हम यह कहना चाहते है कि सत्य के साथ आग्रह शब्द कुछ ढीला सा ही जचता है.

सत्य, अहिंसा, अचौर्य, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य इन पांच गुनों में तीन नकारात्मक क्यों ? क्या हमारे रिषियों के पास इनके लिये सत्य, ब्रह्मचर्य जैसे शब्द न थे ? तो क्या फिर उन्होंने जान बूझ कर इनको नकारत्मक बनाया ? कुछ विद्वान् पिछली बात से सहमत हैं. उनका कहना है कि 'अहिंसा की जगह 'प्रेम' ले सकता था पर हमारे रिषि अहिंसा को अलग और प्रेम को अलग समझते थे. दुनिया में जितने प्रेमी हैं उनमे से शायद ही कोई ऐसा मिले। जो हिंसा से परहेज़ करता-हो प्रेम और हिंसा इन दोनो का राग और द्वेष जैसा सम्बन्ध है. जैसे राग के लिये द्वेष ज़रूरी है वैसे ही जीव

کی بات کا جواب یہی ہے کہ اندھیرے کو پرکاش سے ڈر کر یا کہیں چھپکر ہی رهنا پڑتا ہے یا پرکاش کے سگے سہودر دیپ برتن کی آڑ لینی پڑتی ہے. اُسی طرح جھوٹ اور انیائے کو بھی کہیں چھپکر رهنا پڑے گا یا ستیہ وادی کے کسی سگے سہودر کی آڑ لینی پڑے گی' پر اس بیسویں صدی میں تو پرکاش کی ایسی کپیاں بن گئی ہیں جن کی وجہ سے اندھیرے کو کہیں چھپنے کی جگہ نہیں ملتی یعنی پرکاش کے سگے سہودر بھی اتنے پرکاش وان ہوگئے ہیں کہ اُن کی شرن لیتے ہوئے بھی اندھیرا تھر تھر کانپتا ہے. اُسی طرح ستیہ وادی کے سگے سہودر بھی کم سے کم اتنے ستیہ وادی ہونے ضروری ہیں کہ جھوٹ اور انیائے اُن کی شرن نہ لے سکیں اور اُن کے پاس جاتے ہوئے ایسے ہی تھرتھر کانپیں جیسے اندھیرا لالٹین کی چمنی کے پاس جاتے ہوئے کانپتا ہے. اصل میں ہم یہ کہنا چاہتے ہیں کہ ستیہ کے ساتھ آگرہ شبد کچھ ڈھیلا سا ہی جچتا ہے.

ستیہ' اہنسا' اچوریہ' اپریگرہ اور برہمچریہ ان پانچ مول گنوں میں تین نکارآتمک کیوں ؟ کیا ہمارے رشیوں کے پاس اِن کے لئے ستیہ' برہمچریہ جیسے شبد نہ تھے ؟ تو کیا پھر اُنھوں نے جان بوجھکر ان کو نکارآتمک بنایا ؟ کچھ ودوان پچھلی بات سے سہمت ہیں. اُن کا کہنا ہے کہ 'اہنسا' کی جگہ 'پریم' لے سکتا تھا پر ہمارے رشی اہنسا کو الگ اور پریم کو الگ سمجھتے تھے. دنیا میں جتنے پریمی ہیں اُن میں سے شاید ہی کوئی ایسا ملے جو ہنسا سے پرہیز کرتا ہو. پریم اور ہنسا اِن دونوں کا راگ اور دویش جیسا سمبندھ ہے. جیسے راگ کے لئے دویش ضروری ہے ویسے ہی جیو

सत्याग्रह

सत्याग्रह अब हिन्दुस्तानी शब्द नहीं रहगया. सारी दुनिया इसे जानती है, बोलती है और यह समझती है कि इसका क्या मतलब है. इस्तेमाल से इस शब्द मे इतना बल आगया है कि अब इसके दो टुकड़े 'सत्य' और 'आग्रह' पर विचार करने की जरूरत ही नहीं रहगई. 'आग्रह' शब्द 'सत्य' के लिये कितना भारी पड़ता है इसे 'सत्य' को स्वयं सोचने का ख़याल नहीं आता. सत्य आग्रह को अपने तन पर लादे हुए घूम रहा है और किसी तरह का भारीपन महसूस नहीं करता. जिस तरह प्रकाश अंधेरे को दूर करने मे ज़रा भी ज़ोर नहीं लगाता और दूर कर देता है, न अन्धेरे को जमने के आग्रह की सूझती है और न प्रकाश को उसका सामना करने के आग्रह की. बस प्रकाश आया, अंधेरा चल दिया. उसी तरह सत्य को झूट और अन्याय भगाने में ज़ोर लगाने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिये. उन दोनों को देखते ही चल देना चाहिये. अगर झूट और अन्याय सत्य के आगे जमने की सोचें तो इसमें न उनका दोष है और न वह आग्रही है. इसमें तो दोष सत्य का ही है. वह सत्य सत्य ही नहीं है जिसके आते ही झूट और अन्याय चलते नज़र न आयें, अगर वह डटते हैं तो झूट को अझूट मे और अन्याय को न्याय मे बदलना ही पड़ेगा. अगर ऐसा नहीं होता तो सत्य सत्य नहीं, ज़रूर असत्य सत्य का बाना पहन कर आया है. सत्य को झूट और अन्याय दूर करने में ज़ोर लगाने की ज़रूरत कैसी ? सत्य और अन्याय में प्रकाश और अन्धेरे का रिश्ता है. दिया तले अंधेरे

ستیاگرہ

ستیاگرہ اب ہندستانی شبد نہیں رہ گیا - ساری دنیا اسے جانتی ہے، بولتی ہے اور یہ سمجھتی ہے کہ اس کا کیا مطلب ہے- استعمال سے اس شبد میں اتنا بل آ گیا ہے کہ اب اس کے دو ٹکڑے 'ستیہ' اور 'آگرہ' پر وچار کرنے کی ضرورت ہی نہیں رہ گئی - 'آگرہ' شبد 'ستیہ' کے لئے کتنا بھاری پڑتا ہے اسے ستیہ کو سوئیم سوچنے کا خیال نہیں آتا. ستیہ آگرہ کو اپنے تن پر لادے ہوئے گھوم رہا ہے اور کسی طرح کا بھاری پن محسوس نہیں کرتا - جس طرح پرکاش اندھیرے کو دور کرنے میں ذرا بھی زور نہیں لگاتا اور دور کر دیتا ہے، نہ اندھیرے کو جمنے کے آگرہ کی سوجھتی ہے اور نہ پرکاش کو اس کا سامنا کرنے کے آگرہ کی بس پرکاش آیا، اندھیرا چل دیا. اسی طرح ستیہ کو جھوٹ اور انیائے بھگانے میں زور لگانے کی ضرورت نہیں ہونی چاہئے. ان دونوں کو دیکھتے ہی چل دینا چاہئے. اگر جھوٹ اور انیائے ستیہ کے آگے جمنے کی سوچیں تو اس میں نہ ان کا دوش ہے اور نہ وہ اگرہی ہیں - اس میں تو دوش ستیہ کا ہی ہے. وہ ستیہ ستیہ ہی نہیں ہے جسکے آتے ہی جھوٹ اور انیائے چلتے نظر نہ آئیں - اگر وہ ڈٹتے ہیں تو جھوٹ کو اجھوٹ میں اور انیائے کو نیائے میں بدلنا ہی پڑے گا. اگر ایسا نہیں ہوتا تو ستیہ ستیہ نہیں، ضرور استیہ ستیہ کا بانا پہن کر آیا ہے. ستیہ کو جھوٹ اور انیائے دور کرنے میں زور لگانے کی ضرورت کیسی ؟ ستیہ اور انیائے میں پرکاش اور اندھیرے کا رشتہ ہے - دیا تلے اندھیرے

आया था इक ज्ञानी
सुन लो एक कहानी !

जब अंधियारे मे टकराते
भाई भाई भी लड़ जाते,
ऐसे मे वह दीप जलाता,
सबको सीधी राह बताता,
सीधी राह बताने वाली

उसकी सच्ची बानी
सुन लो एक कहानी !

दीप को सूरज बनजाना था,
सारे जग को चमकाना था.
अंधियारे से होड़ ली उसने,
यह धरती भी छोड़ दी उसने.
सत्यका उसने मार्ग दिखाकर,

स्वर्ग लोक की ठानी.
सुन लो एक कहानी !

फैली वह बानी कुल जग मे,
उस का दीप जला हर मग मे.
सत्य है भगवन सत्य खुदा है,
सत्य का पालन ही पूजा है.
उस से सीखो दुनिया वालो

एका और कुर्बानी,
सुन लो एक कहानी !

آیا تھا اک گیانی
سن لو ایک کہانی

جب اندھیارے میں ٹکراتے
بھائی بھائی بھی لڑجاتے
ایسے میں وہ دیپ جلاتا
سب کو سیدھی راہ بتاتا
سیدھی راہ بتانے والی

اُس کی سچی بانی
سن لو ایک کہانی

دیپ کو سورج بن جانا تھا
سارے جگ کو چمکانا تھا
اندھیارے سے ھوڑ لی اُس نے
یہ دھرتی بھی چھوڑدی اس نے
ستیہ کا اس نے مارگ دکھاکر

سورگ لوک کی ٹھانی
سن لو ایک کہانی

پھیلی وہ بانی کل جگ میں
اُس کا دیپ جلا ہر مگ میں
ستیہ ہے بھگون ستیہ خدا ہے
ستیہ کا پالن ہی پوجا ہے
اُس سے سیکھو دنیا والو

ایکا اور قربانی
سن لو ایک کہانی

नया हिन्द / نیا ہند

जिल्द ८ जनवरी '५० नम्बर १

جلد ۸ جنوری ۵۰ نمبر ۱

जात आदमी, प्रेम धर्म है हिन्दुस्तानी बोली
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिए प्रेम की झोली

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

एक कहानी

(भाई चरनसरन नाज़)

सुन लो एक कहानी !

सारी धरती कांप रही थी
मानवता भी हाप रही थी
भोर मे भी था घोर अंधेरा
दूर हो जैसे नाज़ सवेरा
ऐसे मे इक दीप जलाये

ایک کہانی

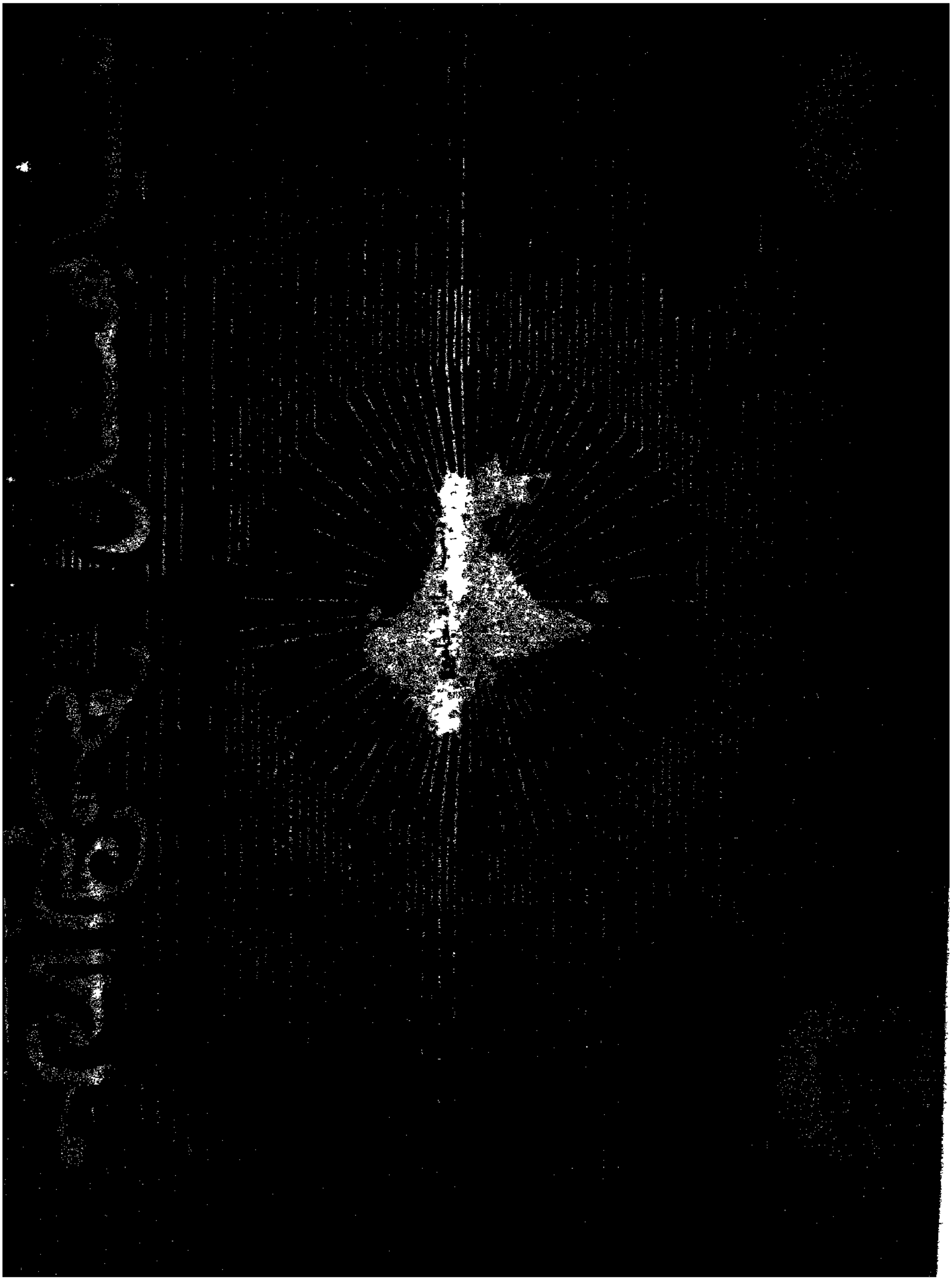
(بھائی چرن سرن 'ناز')

سن لو ایک کہانی

ساری دھرتی کانپ رہی تھی
مانوتا بھی ہانپ رہی تھی
بھور میں بھی تھا گھور اندھیرا
دور ہو جیسے ناز سویرا
ایسے میں ایک دیپ جلائے

जनवरी १९५०

جنوری ۱۹۵۰



صفحہ

صفحہ

چ

ر

س

ش

"نیا ھند"

جلد ۸

(جنوری سن ۱۹۵۰ سے جون سن ۱۹۵۰)

لیکھک اور اُن کے مضمون

الف

صفحہ

صفحہ

ب

پ

ت

सफा

सफा

"नया हिन्द"

जिल्द - ८

(जनवरी सन् १९५० से जून सन् १९५०)

लेखक और उनके मज़मून